जग-दीपिका

(देवार्चनानुष्ठान प्रयोगः)



संपादक-संकलनकर्ता पं. राजेश जगदीश शास्त्री (दीक्षित)

जग-दीपिका

(देवार्चनानुष्ठान प्रयोगः) संपादक-संकलनकर्ता पं. राजेश जगदीश शास्त्री (दीक्षित)

© सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण : २०१६

प्रकाशक : पं. राजेश जगदीश शास्त्री (दीक्षित)

मु.पो. - मोहनवाड़ी, वाया - नवलगढ़

जिला - झुन्झुनूं (राजस्थान) • मालाड (मुम्बई)-४०००९७

मो.: ०९८२०३९९६२८

Email: shastridhirajrajesh77@gmail.com

अक्षर संयोजन : अमन लेजर प्रिंट्स

मीरा रोड (पूर्व), ठाणे

फोन: ०२२-२८१०३३०३

मुद्रक : सुनील एंटरप्राइजेज

मालाड (प.), मुंबई-४०००९७

सप्रेम भेंट

आशीर्वचन

परम् हर्ष का विषय है कि राजस्थान के विद्वान-प्रसूता शेखावाटी अञ्चल स्थित झुन्झुनू जिले के मोहनवाड़ी ग्राम निवासी तथा वर्तमान मुम्बई प्रवासी चि. पं. राजेश शास्त्री ब्राह्मण बालकों के पौरोहित्य कर्म में सरलतम प्रवेश के लिए 'जग-दीपिका' (देवार्चनानुष्ठान प्रयोग:) नामक ग्रन्थ का संयोजन एवं प्रकाशन कर रहे हैं। यह ग्रन्थ नाम के अनुसार ही कर्मकाण्ड जगत् को देदीप्यमान कर रहा है। चि. राजेश मेरे स्नेहिल शिष्य रहे हैं। इन्होंने संस्कृत महाविद्यालय, चिराना तथा ऋषिकुल विद्यापीठ, लक्ष्मणगढ़ में मेरे सात्रिध्य में अध्ययन किया है। इनका यह प्रयास सराहनीय होने के साथ ही माता-पिता व गुरुजनों को गर्वित करने वाला है। अपने पुनीत उद्देश्य में यशस्वी होने के साथ ही मैं इनके सुखद भविष्य की कामना करता हूँ।

amaman sent

- भगवानदास स्वामी

भूतपूर्व प्राचार्य श्री ऋषिकुल ब्रह्मचर्याश्रम आचार्य संस्कृत महाविद्यालय लक्ष्मणगढ़ (जि. सीकर)

जग-दीपिका ————
· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
<u> </u>



अजास्यः पीतवर्णः स्यात् यजुर्वेदोऽक्षसूत्र घृक्।। वामे कुलिश पाणुिस्तु भूतिदो मंगलप्रदः।।□।।

वेदोऽरिवलो धर्म मूलम् ।

सेठ पीरामल वेदाश्रम, बगड़

शुभाशीर्वाद

परम् हर्ष का विषय है कि मोहनवाड़ी ग्राम वास्तव्य तथा मुम्बई प्रवासी पं. श्री राजेश शास्त्री अपने पिताजी स्व. श्री जगदीश प्रसाद शास्त्री की पुण्य स्मृति में 'जग–दीपिका' नामक ग्रन्थ का प्रकाशन कर रहे हैं। यह अपने नाम के अनुसार ही इस पौरोहित्य जगत् को प्रकाशमान करने वाला ग्रन्थ है। यह अपने आप में एक सम्पूर्ण संकलन है। इसमें सनातन वैदिक धर्म के समस्त नित्य, नैमित्तिक व काम्य प्रयोगों का संग्रह है। पं. श्री चतुर्थीलालजी के निबन्धों से सामिप्य ही इस ग्रन्थ की प्रमाणिकता है।

ईश्वर से आपकी सफलता की कामना के साथ ही शुभाशीर्वाद!

- सेठ पीरामल वेदाश्रम, बगड़ = जग-दीपिका =



जग-दीपिका

विषयानुक्रमणिका

विषयः	पृष्ठः	विषय:	पृष्ठः
• श्रीसङ्कष्टनाशनगणेशस्तोत्रम्	११	• मण्डपद्वार पूजनम्	६४
• श्रीसङ्कटमोचनगणेशपञ्चकम्	१२	• अथ देव पूजा प्रकरण	૭५
• श्रीसरस्वतीद्वादशनामस्तोत्रम्	१३	अथ आचमनम्	૭५
• अथ सरस्वतीस्तोत्रम्	१४	शिखा बन्धनम्	૭५
• मङ्गलगीतम्	१५	पवित्री धारणम्	૭૫
• श्रीकालिकाषट्कम्	१६	अथ आसन	૭५
• श्रीगुरुतत्त्वविवेचनस्तोत्रम्	१६	मङ्गल तिलकं	७६
• अथ मङ्गलाचरण	१७	अथ ग्रन्धिबंधनम्	७६
• नवग्रह मङ्गलाष्टकम्	१८	स्वस्तिवाचनं	७६
• देवपूजा अनुष्ठान विषय चर्चा	१९	शान्ति (भद्र) सूक्तं	99
• शास्त्रीय दृष्टान्त	२१	देवादि नमस्कार मंगलश्लोक	99
• अथ मुद्रालक्षणम्	२३	अथ कर्मपात्र अर्चनम्	७९
• पूजा के विविध उपचार	२५	दीप पूजनम्	८०
• यज्ञमण्डप सम्बन्धी विविध विषयों	२६	दिग्रक्षणम्	८०
का विचार		अथ संकल्पः	८१
• अथ दश विध स्नान प्रयोग	३१	• अङ्गन्यास	८२
• प्रायश्चितम्	४६	शंखपूजनम्	८५
• सर्वप्रायश्चितसङ्कल्पः	88	अथ घण्टा पूजनम्	८५
• नारी-प्रायश्चितसङ्कल्पः	३५	अथ भैरव ध्यानं पूजनम्	८५
• संध्या प्रकरण (संक्षेप में)	३६	हनुमद्पूजनम्	८५
• तर्पण प्रयोग	४५	• अथगणेशाम्बिकापूजनम्	८६
• पञ्चबलि विधि	५२	• अथकलश (वरुण) स्थापना पूजनम्	९५
• जलयात्रा विधान	५२	• अथ - पुण्याहवाचनम्	99
• भूमि पूजनम्	५६	• अथषड्विनायकार्चनम्	१०३
• मण्डप प्रवेश:	40	• अथ षोडश मातृकापूजनम्	१०३
• मण्डप पूजन प्रारम्भः	६०	• अथ वसोर्द्धारा (सप्त घृत मातृका) पूजनम्	१०५
• तोरण पूजनम्	६२	अथ आयुष्य मन्त्र जप	१०७

9

— जग-दीपिका =

जग-दाापका —			
विषय:	पृष्ठः	विषय:	पृष्ठः
• अथ साङ्कल्पिक विधिना नान्दी –	१०७	• शिवपीठपूजनम्	१६२
श्राद्धप्रयोग:		• श्रीरामपीठपूजनम्	१६३
• अथाचार्यादि वरणम्	१११	• हनुमत्पीठपूजनम्	१६४
• अथ रक्षाविधानम्	११३	• कालभैरवपीठपूजनम्	१६४
• अथ गृह प्रतिष्ठादि वास्तु शान्ति	११४	• लक्ष्मीनारायणपीठपूजनम्	१६५
पूजन प्रयोगः		• सूर्यपीठपूजनम्	१६६
 अथ एकाशीतिपद वास्तुमण्डल देवता स्थापनम् 	११६	• चतुर्लिङ्गतोभद्र मण्डल पूजनम्	१६७
नाम मंत्रैण एकाशीति वास्तु	१२६	त्रिचत्वारिंशद रेखात्मक द्वादशलिङ्	_{रृतोभद्र}
मण्डल स्थापना पूजनम्	• • •	मण्डल देवता स्थापनम्	
• अथाग्न्युत्तारणप्राण प्रतिष्ठाप्रयोगः	१२९	 अथ (३४) चतुिस्त्रंशद्रेखात्मकं द्वादशिलंगतोभद्र मण्डल देवता स्थापनम् 	१६९
• वास्तु मूर्ति पूजनम्	१३०	• अथ गौरी तिलक मण्डलस्थ	१७१
ध्वजा स्थापना (रोहणं)	१३१	देवानां स्थापनं पूजनं	, , ,
• गर्त मध्ये वास्तु स्थापना	१३१	• अथ दुर्गा याग विधानम्	१७५
द्वारशाखा पूजनम्, गृहप्रवेश	१३२	उपरोक्त नवविधिना दुर्गापाठ भावार्थ	१७६
• अथ चतुःषष्ठियोगिनी पूजनम्	१३४	• अथ सार्द्ध नवचण्डी विधान	१७६
नाम मन्त्रैण	१४०	• अथ पुरश्चरणप्रकारः दुर्गाप्रदीपे	१७७
• पञ्चाशत्क्षेत्रपालदेवता पूजनम्	१४१	अथ कात्यायनीतंत्रोक्त विधि भाषा	१७७
• अथ चतुःषष्टि भैरव स्थापनम्	१४३	• अथ शतचण्डी सहस्र चण्डी विधानं	१७९
• अथ नवग्रहस्थापनम् पूजनम्	१४३	• श्री जगदम्बा पूजन प्रयोगः	१८१
अथ अधिदेवतानां स्थापनं पूजनम्		• एकादशन्यासः	१८२
अथ प्रत्यधिदेवतानां स्थापनम् पूजन	ाम्	• अथ देवीकलामातृकान्यासः	१८५
अथ पञ्चलोक देवतानां स्थापनम् पू	जनम्	• अथ पात्रासादनम् प्रयोगः	१८६
अथ दशदिक्पालानां स्थापनं पूजनग	Ą	• अथ पीठ पूजा	१८८
• अथ सर्वतोभद्रमंडल देवता स्थापनं पूजनम्	१५४	• अथ यंत्रदेवतास्थापनम्	१८९
सर्वतोभद्र मंडल देवता नाम मन्त्रः	१६०	• देवी दुर्गा पूजा	१९०
• प्रधानदेव यज्ञेश्वर कलश स्थापनम्	१६१	• अथावरण पूजा	१९५
• गणपतिपीठपूजनम्	१६१	• अथ बलिदानम्	२०१
• विष्णुपीठपूजनम्	१६२	• बटुक एवं कुमारिकापूजनम्	२०२

जग-दीपिका ————			
विषयः	पृष्ठः	विषय:	पृष्ठः
• श्री जगदम्बा राजोपचार पूजा प्रयोग:	२०३	• एकतन्त्रेण नवग्रहबलिः	२८२
• बलिदानं	२१०	• अथ दुर्गा याग कूष्माण्ड बलिदानम्	२८२
• शतचण्डी सम्पुटित पाठ संकल्पः	२११	क्षेत्रपाल बलिदानं	२८३
• श्री दुर्गा याग में विशेष हवन विधानम्	२११	• पूर्णाहुति	२८४
• अथ यवाक्कुंर विधानम्	२१४	• वसोर्धारा होम:	२८६
• श्री महालक्ष्मी पूजनम्	२१६	• पूर्णपात्रं	२८७
• अथ श्री विष्णु	२२३	• अथ दशांशतर्पणमार्जनविधिः	२८८
(सत्यनारायण, शालिग्राम) पूजनम्		• अभिषेक विधिः	२८८
• अथ शिव पूजनम्	२२९	• श्रेयोदानविधिः मंगलस्नानम्	२८९
• श्री पार्थिव शिवपूजनम्	२३९	• अथ दक्षिणादान विधि:	२८९
शिव पूजा (महिम्न स्तोत्र के द्वारा)	२४१	• अथ ब्राह्मणभोजन संकल्पः	२९०
• अथ रुद्रयाग स्वाहाकार मंत्रा:	२४३	• गोदान संकल्पः	२९०
• अथ मृत्युञ्जय यंत्रार्चनम्	२५१	• अथ भूयसीदक्षिणासंकल्पः	२९०
• अथ मृत्युञ्जय (महामृत्यञ्जय) मन्त्र: प्रयोग	२५३	• अथ छायापात्रदानम्	२९०
• शतरुद्रियम्	२५६	• उत्तरपूजनम्	२९१
• अथ नूतन गृहादीनां शिलास्थापन विधि	२५७	• अथाशीर्वाद:	२९१
• अथ गण्डान्त नक्षत्र शान्तिः	२५९	• गंगादिनदीस्नानार्थं हेमाद्रिसङ्कल्पः	२९३
• अथ वैधृति शान्ति प्रयोगः	२६५	• तुलादान विधानम्	२९५
• अथ व्यतीपात योग शान्तिः	२६५	• अथ शास्त्रीयगोदान विधि	२९८
• अथ त्रिखल शान्ति प्रयोगः	२६६	• अथ कार्तवीर्याजुन अनुष्ठान प्रयोगः	३०१
• अथ दर्श (अमावस्या) शान्ति विधि:	२६९	• अथायुष्याभिवृद्धये जन्मोत्सवविधिः	303
• सिनीवाली कुहूशांति:	२७०	• अथ विष्णुप्रतिमा विवाह विधि:	४०६
• अथ हवन प्रकरण	२७१	• अथ नामकरणसंस्कारः	३०६
कुंडस्थदेवतापूजन प्रयोग:		• अथ सूर्यादिग्रह शान्ति प्रयोगः	७०६
• अथ पञ्चभूसंस्कारपूर्वकाग्निप्रतिष्ठापन प्रयोगः	२७३	• अथ श्रीसूक्त प्रयोग	३१०
• कुशकण्डिकाः	२७५	• अथ श्री कनकधारा स्तोत्र	३१५
• अथ सर्वप्रायश्चित्त संज्ञक पञ्चवारुणहोम:	२७८	• अथ विष्णुसहस्रनामस्तोत्र अनुष्ठान	380
बलिदानम्	२८०	विधानम्	
		I	

		\sim	
जग	ा–ढा	ापका	Γ

	जाग-व	(II u chi)	
विषय:	पृष्ठः	विषयः	पृष्ठः
• अथ गायत्री याग विधान	३१७	• अथ शिव अनुष्ठान प्रयोग	८४ ६
• अथ वाल्मीकि रामायण अनुष्ठान विधिः	३२२	• श्री शिवमानस पूजा	३४९
• पति-पत्नी में विरोध एवं भेदभाव को	३२२	• श्री शिवमहिम्नः स्तोत्रम्	३५०
दूर करने के लिए फलदायक अनुष्ठान		• शिवताण्डवस्तोत्रम्	३५३
• अथ श्रीविपरीतप्रत्यङ्गिरा	३२२	• लिङ्गाष्टकम्	३५६
• श्रीगुरुस्तोत्रम्	३२४	• श्रीरुद्राष्टकम्	३५६
• दक्षिणामूर्त्यष्टकम्	३२४	• द्वादशज्योतिर्लिङ्गस्तोत्रम्	३५७
• गणेशपञ्चरत्नम्	३२५	• शिवरामाष्टक	३५८
• संकष्टहरणं गणेशाष्टकम्	३२६	• दारिद्रयदहनशिवस्तोत्रम्	३५९
• अथ ऋण हरण स्तोत्र	३२७	• श्री शिवस्तुतिः	३६०
• आदित्य हृदयस्तोत्रम्	३२८	• बिल्वाष्टकम्	३६०
• अथ सद्य आरोग्यकरं	३३०	• अमोघशिवकवचम्	३६१
सूर्यार्घ्यदानविधानम्		• श्री रामाष्टकम्	३६४
• चाक्षुषोपनिषद् (चाक्षुषी विद्या)	३३१	• श्री राम स्तुति	३६४
• श्रीबटुकभैरव - अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्	३३२	• श्री राम अवतार	३६५
• श्रीकालभैरवाष्टकम्	338	• श्रीरामचन्द्र स्तुति	३६६
• अन्नपूर्णास्तोत्रम्	३३४	• गजेन्द्रमोक्ष स्तोत्रं	३६६
• भगवती स्तुति	३३५	• मधुराष्टकम्	३६८
• अथ विन्ध्येश्वरीस्तोत्रम्	३३६	• श्रीकृष्णाष्टकम्	३६९
• भवान्यष्टकम्	३३६	• श्रीकृष्ण स्तुति	₹\. ₹%o
• संकटास्तुतिः	३३७	• श्री कृष्णावतार	₹ 9 0
• श्री इन्द्राक्षी कवच	३३९	• प्रमाण संग्रह	३७१-४१२
• अपराजिता स्तोत्रम्	३४०	श्री गणपतिजी की आरती	\$\$5-5 \$ \$\$
• श्री जगदम्बा स्तुति	३४२	• श्री भगवान विष्णुजी की आरती	४१४
• देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रम्	इ४इ	• श्री महालक्ष्मीजी की आरती	४१५
• विजय सूक्तं	४४६	• श्री शिव शंकरजी की आरती	४१६
.			



श्रीसङ्कष्टनाशनगणेशस्तोत्रम्

प्रणम्य शिरसा देवं गौरीपुत्रं विनायकम्। भक्तवासं स्मरेन्नित्यमायुष्कामार्थसिद्धये।।१।। प्रथमं वक्रतुण्डं च एकदन्तं द्वितीयकम्। तृतीयं कृष्णपिङ्गाक्षं गजवक्त्रं चतुर्थकम्।।२।। लम्बोदरं पञ्चमं च षष्ठं विकटमेव च। सप्तमं विघ्नराजेन्द्रं धूम्रवर्णं तथाष्टमम्।।३।। नवमं भालचन्द्रं च दशमं तु विनायकम्। एकादशं गणपतिं द्वादशं तु गजाननम्।।४।। द्वादशैतानि नामानि त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः। न च विघ्नभयं तस्य सर्वसिद्धिकरं परम्।।५।। विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम्। पुत्रार्थी लभते पुत्रान् मोक्षार्थी लभते गतिम्।।६।। जपदे गणपतिस्तोत्रं षड्भिर्मासै: फलं लभेत्। संवत्सरेण सिद्धिं च लभते नात्र संशय:।।७।। अष्टभ्यो ब्राह्मणेभ्यश्च लिखित्वा यः समर्पयेत्। तस्य विद्या भवेत् सर्वा गणेशस्य प्रसादतः।।८।।



।।श्रीसङ्कटमोचनगणेशपञ्चकम्।।

वयं दुःखदीनाः दयाधारहीनाः भवाब्धौ विमग्नाः दुराचारलीनाः। सदा शाश्वतं देवदेवं प्रजेशं गुरुं दुःखहत्यै गणेशं नमामः।।१।।

न विद्या न वाणी वपुनैव शुद्धं मनो मे विलासे सुदक्षं प्रवृद्धम्। प्रभुं प्राणनाथं प्रपञ्चाश्रयं तं विभुं विघ्नराजं गणेशं स्मराम:।।२।।

यदीया कृपा भक्तिवैराग्यकर्त्री प्रबोधं प्रकामं सुचित्ते च धर्त्री। सदा सौख्यमूलं प्रभावानुकूलं तमेभाननं वै गणेशं भजाम:।।३।।

जगज्जालमालावृतोहं विमुग्धः सदोद्विग्रचित्तो विमुक्तयै प्रलुब्धः। अनाथं स्वयं लोकमध्ये विचिन्त्य प्रियाणां प्रियं वै गणेशं व्रजामः।।४।।

न पुण्यं न दानं व्रतं नैव किञ्चित्र यज्ञं न शीलं तपो नो कथञ्चित्। न ज्ञानं न गानं न सद्भावशक्तिः वयं केवलं गं गणेशं वदामः।।५।।

।।गणेशपञ्चकं नित्यं विद्याविभवहेतवे। पठामि शान्तचित्तेन श्रद्धयाऽमलया तथा।।

0



श्रीसरस्वतीद्वादशनामस्तोत्रम्

प्रथमं भारती नाम द्वितीयं च सरस्वती। तृतीयं शारदा देवी चतुर्थं हंसवाहिनी।।

पञ्चमं जगती ख्याता षष्ठं वागीश्वरी तथा। सप्तमं कुमुदी प्रोक्ता अष्टमं ब्रह्मचारिणी।।

नवमं बुधमाता च दशमं वरदायिनी। एकादशं चन्द्रकान्तिर्द्वादशं भुवनेश्वरी।।

द्वादशैतानि नामानि त्रिसंध्यं यः पठेन्नरः। जिह्वाग्रे वसते नित्यं ब्रह्मरूपा सरस्वती।।

सरस्वती महाभागे विद्ये कमल लोचने। विश्वरूपे विशालिक्ष विद्यां देहि नमोस्तुते।।

अथ सरस्वतीस्तोत्रम्

शुक्लां ब्रह्मविचारसारपरमामाद्यां जगद्व्यापिनीं वीणापुस्तकधारिणीमभयदां जाङ्यान्धकारापहाम्। हस्ते स्फाटिकमालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थितां वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिंप्रदां शारदाम्।। या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना। या ब्रह्माच्युतशङ्करप्रभृतिभिंदेवै: सदा वन्दिता सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाङ्यापहा।।

रविरुद्रिपतामहविष्णुनुतं हरिचन्दन कुंकुमपङ्कयुतम्। मुनिवृन्दगणेन्द्रसमानयुतं तव नौमि सरस्वति पादयुगम्।।१।। शशिशुद्धस्थाहिमधामयुतं शरदम्बर बिम्बसमानकरम्। बहुरत्नमनोहरकान्तियुतं तव नौमि सरस्वित पादयुगम्।।२।। कनकाब्जविभूषितभृतिभवं भवभावविभाषितभिन्नपदम्। प्रभुचित्तसमाहितसाधुपदं तव नौमि सरस्वित पादयुगम्।।३।। भवसागरमज्जनभीतिनुतं प्रतिपादितसन्ततिकारमिदम्। विमलादिकशुद्धविशुद्ध पदं तव नौमि सरस्वति पादयुगम्।।४।। मतिहीनजनाश्रयपादमिदं सकलागमभाषितभिन्नपदम्। परिपूरितविश्वमनेकभवं तव नौमि सरस्वति पादयुगम्।।५।। परिपूर्णमनोरथधामनिधिं परमार्थविचारविवेकविधिम्। सुरयोषितसेवितपादतलं तव नौमि सरस्वति पादयुगम्।।६।। सुरमौलिमणिद्यतिश्भकरं विषयादिमहाभयवर्णहरम्। निजकान्तिविलेपितचन्द्रशिवं तव नौमि सरस्वित पादयुगम्।।७।। गुणगौरवगर्वितसत्यपदम्। गुणनैककुलस्थितीभीतिपदं कमलोदरकोमलपादतलं तव नौमि सरस्वति पादयुगम्।।८।। त्रिसन्ध्यं यो जपेन्नित्यं जले वापि स्थले स्थित:। पाठमात्राद् भवेत्प्राज्जो ब्रह्मनिष्ठ: पुन: पुन:।।९।।

मङ्गलगीतम्

श्रितकमलाकुचमण्डल धृतकुण्डल ए। कलितललितवनमाल जय जय देव हरे।।१।। दिनमणिमण्डलमण्डल भवखण्डन मुनिजनमानसहंस जय जय देव हरे।।२।। कालियविषधरगञ्जन जनरञ्जन यदुकुलनलिनदिनेश जय जय देव हरे।।३।। मधुमुरनरकविनाशन गरुडासन ए। सुरकुलकेलिनिदान जय जय देव हरे।।४।। अमलकमलदललोचन भवमोचन ए। त्रिभुवनभवननिधान जय जय देव हरे।।५।। जितदूषण जनकसुताकृतभूषण समरशमितदशकण्ठ जय जय देव हरे।।६।। अभिनवजलधरसुन्दर धृतमन्दर ए। श्रीमुखचन्द्रचकोर जय जय देव हरे।।७।। तव चरणे प्रणता वयमिति भावय ए। कुरु कुशलं प्रणतेषु जय जय देव हरे।।८।। श्री जयदेवकवेरुदितमिदं कुरुते मुदम्। मङ्गलमञ्जलगीत जय जय देव हरे।।९।।

इति श्रीजयदेवविरचितं मङ्गलगीतं सम्पूर्णम्।

।।श्रीकालिकाषट्कम्।।

कपालमालधारिणी समस्तदुःखहारिणी विचित्रवेषचारिणी भवेशवंशतारिणी।
सदैवसौख्यसाधिनी समुज्जवले स्वयम्प्रभे नगाधिराजबालिके नमामि देवि कालिके।।१।।
मृगेन्द्रसूनुवाहिनी मयङ्कभालशोभिनी प्रचण्डचण्डमुण्डदैत्यवंशमूलमर्दिनी।
अनीतिभीतिनाशिनी सुपद्मपुष्पमालिके नगाधिराजबालिके नमामि देवि कालिके।।२।।
महासुरासुरेन्द्रयक्षिकत्ररैः सुपूजिते महेशदेवतेशकेशिनिर्नमेषवीक्षिते।
महादयोदयोज्वले समग्रजीवपालिके नगाधिराजबालिके नमामि देवि कालिके।।३।।
निराकृतः सुरैरहं समागतस्त्वदन्तिके सकामकोपलोभमोहमत्सरैः प्रदूषितः।
विशोध्य बालकं प्रदेहि शं सुरेन्द्रलालिके नगाधिराजबालिके नमामि देवि कालिके।।४।।
विरक्तबीजसदृशाः हि दानवाः दलन्ति कौ न सन्ति सक्षमाः सुराः सुरक्षणे सनातनम्।
स्वयं करोतु रक्षणं समन्ततः सुमालिके नगाधिराजबालिके नमामि देवि कालिके।।५।।
सुपञ्चचामरे शुभे विलक्षणे विलिख्य वै स्तुतिं शुभां मनोरमां समस्तिसिद्धदायिकाम्।
सुभावसंयुतामिमां कृपाकटाक्षहेतवे समर्पयामि सादरं भवानिपादपद्मयोः।।६।।
।।षड्विकारप्रणाशाय षडैश्वर्यसुलब्धये। करोति त्र्यम्बकः प्रीत्या पद्यैः षड्भिः स्तुतिं शुभाम्।।

।।श्रीगुरुतत्त्वविवेचनस्तोत्रम्।।

सकले भुवने न गुरोरधिकं गुरुतत्त्वमनन्ततया कथितम्।।(ध्रुव॰) विधिविष्णुशिवाः गुरुदेवपराः गुरुदेवकृपावशगं सकलम्। गुरुतत्त्वमनन्ततया कथितं सकले भुवने न गुरोरधिकम्।।१।। तिमिरान्धहरं भुविशोकहरं शुभदं सुखदं ननु सौख्यकरम्। करुणाकरकीर्तिकला कलितं गुरुतत्त्वमनन्ततया कथितम्।।२।। सुरभावकरं हृदये सततं पशुता हृदयादपयाति च वै। परिपूर्णतमं जगदीश्वरं गुरुतत्त्वमनन्ततया कथितम्।।३।। प्रतिमा च हरेः भुवने लिसतं जिनचक्रहरं विधिबोधपरम्। भवभेदकरं श्रुतिसारिमदं गुरुतत्त्वमनन्ततया कथितम्।।४।। नररूपधरं सरलं विरलं वृषभध्वजमूर्तिरतं सकलम्। प्रणमामि मनोहरमीशमजं गुरुतत्त्वमनन्ततया कथितम्।।५।।

अथ मङ्गलाचरण (परिवर्द्धित मङ्गलाष्टकम्)

हेरम्बः सुरपूजितो गुणमयो लम्बोदरः श्रीयुतः श्रीशुण्डो गजकर्णको गजमुखो गंभीरिवद्योगुणी। गौर्याः पुत्रगणेश्वरो हरसुतो गोविंदपूजाकृतो। यात्राजन्म-विवाहकार्य समये कुर्यात्सदा मङ्गलम्।।१।। श्रीमत्पङ्कजिवष्टरो हरिहरौ वायुर्महेन्द्रोऽनलश्चन्द्रो भास्करिवत्तपालवरुण-प्रेतिधिपो नैऋितः। प्रद्युम्नो नलकूबरः सुरगजिश्चन्तामिणः कौस्तुभः। स्वामी शिवतधरश्च लाङ्गलधरः कुर्वन्तु नो मङ्गलम्।।२।। गङ्गागोमित-गोपितर्गणपित-गोविन्दगोवर्धनो गीता-गोमय-गौरिजो-गिरिसुता-गंगाधरो गौतमः। गायत्री गरुडो गदाधरगया गम्भीरगोदावरी गंधर्वग्रहगोपगोकुलगणाः कुर्वन्तु नो。।।३।। नेत्राणां त्रितयं शिवं पशुपितमिग्नत्रयं पावनं यत्तद्विष्णुपदत्रयं त्रिभुवनं ख्यातं च रामत्रयम्। गंगावाहपथत्रयं सुविमलं वेदत्रयं ब्राह्मणं संध्यानां त्रितयं द्विजैरिप युतं कुर्वन्तु नो。।।४।। बाल्मीिकः सनकः सनन्दनमुनिर्व्यासो विसष्ठो भृगुर्जाबालिर्जमदिग्नरामजनका गर्गागिरोगौतमाः। मान्धाता भरतो नृपश्च सगरो धन्यो दिलीपो नृपः पुण्यो धर्मसुतो ययाति–नहुषः कुर्वन्तु नो。।।५।। गौरी श्रीरिदितः सुपर्णजननी कद्वर्महेन्द्रप्रिया सावित्री च सरस्वती च सुरिभः सत्यव्रताऽरुन्धती! सत्या जाम्बवती च रुक्मभिगिनी स्वाहा पितॄणां प्रिया वेला चाम्बुनिधेः समीनमकराः कुर्वन्तु नो。।।६।।

शेषस्तक्षककालकूटकुमुदाः पद्मा तथा वासुिकर्यः कर्कोटकशंखपद्मक इति ख्याताश्च ये पन्नगाः। अन्ये काननगह्वरेषु जलधौ ये चान्तिरक्षस्थितास्ते प्रातः स्मरणेन च प्रतिदिनं कुर्वन्तु नोः।।।।।

गङ्गा सिन्धु सरस्वती च यमुना गोदावरी नर्मदा काबेरी सरयू महेन्द्रतनया चर्मण्वती वेणिका। क्षिप्रा वेत्रवती महासुरनदी ख्याता गया गण्डकी। पूर्णाः पूर्णजलैः समुद्रसिहताः कुर्वन्तुः।।८।। लक्ष्मीः कौस्तुभपारिजातकसुरा धन्वन्तरिश्चन्द्रमाः गावः कामदुधाः सुरेश्वरगजो रंभादिदेवाङ्गनाः। अश्वः सप्तमुखस्तथा हरिधनु शंखो विषश्चामृतं रत्नानीह चतुर्दश प्रतिदिनं कुर्वन्तु नोः।।९।। ब्रह्मज्ञानरसायनं श्रुतिकथा सद्वैद्यकं ज्योतिषं व्याकरणं च धनुर्धरं जलतरं मंत्राक्षरं वैदिकम्। कोकं वाहनवाजिनं नटनृतं संबोधनं चातुरी विद्यानाम चतुर्दशप्रतिदिनं कुर्वन्तुः।।१०।। ब्रह्मा वेदपतिः शिवः पशुपतिः सूर्यो ग्रहाणां पतिः शक्रो देवपतिर्नलो नरपतिः स्कन्दश्च सेनापतिः। विष्णुर्यज्ञपतिर्यमः पितृपतिस्तारापतिश्चन्द्रमाः इत्येते पतयः सुपर्णसहिताः। कुर्वन्तु नोः।।११।।

अश्वत्थो वटचन्दनौ सुरतरुर्मन्दारकल्पद्रुमौ जम्बू-निम्ब-कदम्ब चूतसरला वृक्षाश्च ये क्षीरिण:। स्वर्गे ये पारिजातकसुरा वैभाजिते राजिते रम्ये चैत्ररथे च नन्दनवने कुर्वन्तु नोः।।१२।। ।।इति मङ्गल स्तव:।।

नवग्रह मङ्गलाष्ट्रकम्

भास्वान्काश्यपगोत्रजोऽरुणरुचिर्यः सिंहराशीश्वरः षट्त्रिस्थो दशशोभनो गुरुशशी भौमेषु मित्रं सदा। शुक्रो मंदिरपुः कलिङ्गजिनतश्चाग्नीश्वरो देवते मध्ये वर्तुलपूर्विदिग्दिनकरः कुर्यात्सदा मङ्गलम्।।१।।

चन्द्रः कर्कटकप्रभुः सितिनभश्चात्रेयगोत्रोद्भवश्चाग्नेयश्चतुरस्रवारुणमुखश्चापोप्यु-माधीश्वरः। षट्सप्ताग्निदशैकशोभनफलो शौरिः प्रियोऽर्कोगुरुः स्वामी यामुन देशजो हिमकरः कुर्य्यात्सदा मङ्गलम्।।२।।

भौमो दक्षिणदिक्त्रिकोणयमदिग्विष्नेश्वरो रक्तभः स्वामी वृश्चिकमेषयोः सुरगुरश्चार्कः शशी सौहदः। ज्ञोरिः षड्त्रिफलप्रदश्च वसुधास्कन्दौ क्रमाद्देवते भारद्वाजकुलोद्भवः क्षितिसुतं कुर्याः।।३।।

सौम्योदङ्मुखपीतवर्णमगधश्चात्रेयगोत्रोद्भवो बाणेशानिदशः सुहृच्छिनिभृगुः शत्रुः सदा शीतगुः। कन्ययुग्मपितदशाष्ट्रचतुरः षण्नेत्रकः शोभनो विष्णुः पौरुषदेवते शिशसुतः कुर्याः।।४।। जीवश्चाङ्गिरगोत्रजोत्तरमुखो दीर्घोत्तरासंस्थितः पीतोऽश्वत्थसिमद्धिसंधु-जिनतश्चापोऽथमीनाधिपः। सूर्येन्दुक्षितिजिप्रयो बुधिसतौ शत्रू समश्चापरे सप्तांक्कद्विभवः शुभः सुरगुरुः कुर्याः।।५।।

शुक्रो भार्गवगोत्रजः सितिनभः प्राचीमुखः पूर्विदक्पञ्चांको वृषभस्तुलाधिपमहाराष्ट्राधिपोदुम्बरः। इन्द्राणां मघवानुभौ बुधशनी मित्रार्कचन्द्रौ रिपू षष्ठो द्विर्दशवर्जितो भृगुसुतः कुयाः।।६।। मन्दः कृष्णिनभस्तु पश्चिममुखः सौराष्ट्रकः काश्यपः स्वामी नक्रभकुंभयोर्बुधिसतौ मित्रे समश्चाङ्गिराः। स्थानं पश्चिमदिक् प्रजापितयमौ देवौ धनुष्यासनः षट्त्रिस्थः शुभकृच्छनी रिवसुतः कुर्यात्सदा मङ्गलम।।७।।

राहुः सिंहलदेशजश्च निर्ऋितः कृष्णांगशूर्पासनो यः पैठीनसिगोत्रसंभवसिमद् दूर्वामुखो दक्षिणः। यः सर्पाद्यधिदैवते च निर्ऋितः प्रत्याऽधिदेवः सदा षट्त्रिस्थः शुभ कृच्च सिंहिकसुतः कुर्यात्सदा मङ्गलम्।।८।।

केतुर्ज्जीमिनिगोत्रजः कुशसिमद् वायव्यकोणेस्थित-श्चित्रांगध्वजलाञ्छनो हिमगुहो यो दक्षिणाशामुखः। ब्रह्मा चैव सचित्रचित्रसहितः प्रत्याधिदेवः सदा षट्त्रिस्थः शुभकृच्च बर्बरपितः कुर्यात्सदा मङ्गलम्।।९।।

इत्येतद्वहमंगलाष्टकिमदं लोकोपकारप्रदं पापौघप्रशमनं महच्छुभकरं सौभाग्यसंवर्धनम्। य: प्रात: शृणुयात्पठत्यनुदिनं श्रीकालिदासोदितं स्तोत्रं मंगलदायकं शुभकरं प्राप्नोत्यभीष्ट फलम्।।१०।।

।।देवपूजा अनुष्ठान विषय चर्चा।।

आचारः फलते धर्ममाचारः फलते धनम्। आचारा च्छ्रियमाप्नोति आचारो हन्त्य लक्षणम्।। आचारहीनः पुरुषो लोके भवति निन्दितः। परत्र च सुखी न स्यात् तस्मादाचारवान् भवेत्।।

- १. देवपूजा अनुष्ठान में विप्र यजमान के लिए अभिष्ट चिन्तन करे।
- २. यजमान स्थिरचेता: भव: एवं कंजूसी नहीं करे।
- ३. देवताओं को हिरण्य दक्षिणा अवश्य अर्पण करे। देव दक्षिणा में रजत दक्षिणा का निषेध है।
- ४. पितृ कर्म (श्राद्ध) में रजत दक्षिणा विशेष ग्राह्य है।
- ५. पत्रं वा यदि वा पुष्पं फलं नेष्टमधो मुखम्। यथोत्पन्नं तथा देयं बिल्व पत्रमधोमुखम्।। अक्षत तीन बार धोकर चढाना चाहिए।
- ६. मध्यमानामिका मध्ये पुष्पं संग्राह्म पूजयेत्। अंगुष्ठ तर्जनीभ्यान्तु निर्माल्य मपनोदयेत्।।
- दीपं दिक्षणतो दद्यात् पुरतो वा न वामतः।
 दीपं स्पृष्ट्वा तु यो देवि मम कर्माणि कारयेत्।
 तस्यापराधाद्वै भूमे पापं प्राप्नोति मानवः।। (वराह पुराण १३६-१)
- ८. दीपक को दीपक से जलाने पर मनुष्य दिरद्र एवं रोगी होता है।
- ९. जल में गंगाजल नहीं मिलावे अत: गंगाजल में जल मिलाना चाहिए।
- १०. गणेशजी को तुलसी, दुर्गाजी को दूर्वा, सूर्य को बिल्वपत्र, एवं विष्णु को आक धतूरा व चावल नहीं चढ़ावे। शिवजी को कुन्द व तुलसी चढ़ाना निषेध है, परन्तु सूर्य को डण्डी तोड़कर बिल्वपत्र अर्पण करना कुछ लोगों का मत है।
- ११. कुशा के अग्रभाग से देवताओं पर जल नहीं छोड़े।
- १२. ताम्रपात्र में चन्दन नहीं रखे एवं चर्मपात्र में गंगाजल रखना निषेध है।
- १३. स्त्री को आचमन नहीं करना चाहिए एवं नैत्रोदक स्पर्श करे।
- १४. प्रतिमा पट्ट यन्त्राणां नित्य स्नानं न कारयेत्। कारयेत्पर्व दिवसे यथा मल निवारणम्।
- १५. यन्त्र व मूर्ति को अंगूठे से नहीं मले (पोंछना नहीं चाहिए)।
- १६. सूतक एवं मंगल कार्य पूजादि में गोपिचन्दन का प्रयोग नहीं करे। (काम में नहीं लेना चाहिए)।
- १७. अनामिका अंगुली से देवता व ऋषियों को तर्जनी से पितृ अर्चनम् स्वयं मध्यमा से तिलक लगावे।
- १८. विना भस्म त्रिपुण्ड्रेण विना रुद्राक्षमालया। पूजितोऽपि महादेवो न स्यात्तस्य फलप्रदः।। तस्मान्मृदापि कर्तव्यं ललाटे वै त्रिपुण्ड्रकम्।

- १९. संध्याविषय माला जप विधि प्रातर्नाभौ करं कृत्वा मध्याह्ने ह्रदि संस्थितम्। सांय जपेच्च नासाग्रे ह्येतत् जप विधिः स्मृतः।।
- २०. अप्रोक्षित जप स्थानाच्छक्रो हरित तज्जपम्। तन्मृदा-लक्ष्म कुर्वीत ललाटे तिलकाकृति।।
- २१. पादशेषं पीतशेषं सन्ध्याशेषं तथैव च। शुनो मूत्र समं तोयं पीत्वा चान्द्रायणं चरेत्।।
- २२. सन्ध्या स्नानं जपश्चैव देवतानां च पूजनम्। वैश्वदेवं तथातिथ्यं षट्कर्माणि दिने दिने।
- २३. उपचारेषु सर्वेषु यत्किञ्चिद् दुर्लभं भवेत्। तत्सर्वं मनसाध्यात्वा पुष्पक्षेपेण कल्पयेत् यथा अमुक द्रव्यं मनसा परिकल्पयामि।
- २४. पुण्याहवाचन विषय परिदने मुख्यकर्मारम्भश्चेतदात्रश्वः करिष्मायणेति पदमनुष्ठेयम्।
- २५. ''विधुरो मृतभार्यो भार्यान्तरोपादानासमर्थश्च'' तद्भिन्ना अविधुरा:।
- २६. आसनाद्युपचारफलम् आवाहनन्तु यो दद्यात्स च क्रतुफलं लभेत्। आसनं रुचिर दत्वा शतक्रतुत्व माप्नुयात्।। पाद्येन पातकं हन्याद अर्घेणाप्नोत्यनर्घताम्। ततश्चाचमनं दत्वा सुचितः सुखितां व्रजेत्।। स्नानं व्याधिमयं हन्याद् वस्त्रेणायुष्य वर्द्धनम्। उपवीतन्तु यो दद्याद ब्रह्मवेतृत्वमेवच।। भूषणानि च यो दद्यादनापद्यमाप्नुयात्। गन्धेन लभते काम मक्षतै रक्षतं भवेत्।। नाना-पुष्प प्रदानेन स्वर्गे राज्यमवाप्नुयात्। धूपो दहित पापानि दीपो मृत्यु विनाशनः। सर्वमानस्तु नैवेद्यं दत्वा तृप्तिरतो भवेत्। मुखवासन दानेन कीर्तिमान् भवित ध्रुवम्।। नीराजनेन शुद्धात्मा दर्पणेन प्रकाशयेत्। फलदः पुत्रवान्मर्त्यस्ताम्बूलात्स्वर्ग-माप्नुयात्।। प्रदक्षिणान्तु यः कुर्यात्पापं हन्ति पदे पदे। दण्ड प्रणामं यः कुर्याद् देव मुदिश्य सिन्नधौ।। वर्षाणि वसते स्वर्गे देहान्ते रेणु संख्यया। स्तोत्रेण दिव्यदेहोऽपि वाग्मी भवित तत्क्षणाम्। पुराण पठनेनैव सर्व पाप क्षयो भवेत्। सर्वकामान् सिद्धिऽर्थञ्च दक्षिणां समर्पयेत् (कर्मठ गुरु)।
- २७. मूर्खोवदित विष्णाय विज्ञोवदित विष्णवे। द्वयोरिप समं पुण्यं भावग्राही जनार्दनः।।
- २७. देवे तीर्थे द्विजे मन्त्रे दैवेज्ञे भेषजे गुरौ। यादृशी भावना यस्य सिद्धिर्भवित तादृशी।।

श्री गणेशाय नमः

यज्ञ अनुष्ठान में देवादि पूजा क्रम - मण्डपादि करणे - गणेशादि पूजा - भूमि पूजा, भूमिप्रोक्षणम् - मण्डपरचना - कुण्डादिरचना - प्रायश्चित संकल्प एवं गोदानादि - दश विध स्नानम् (गंगादि नदी में) - जलयात्रा विधानम् - देवादिपूजा प्रारम्भ, शान्ति पाठ (भद्रसूक्तं) - स्वस्तिवाचनम् - भूत शुद्धि - आचमनम् - प्राणायाम् - देवादि नमस्कार-

मंगल श्लोक - आसन पूजा - दीप पूजनम् - शंख - घण्टा - भैरव - हनुमद् पूजनम्-कर्माङ्ग कलशार्चनम्।।

प्रधान संकल्प - श्री गणेशाम्बिका पूजनम् - वरुण पूजनम् - पुण्याहवाचनम् - षड्विनायक पूजा - मातृका स्थापनम् - वसोधीरा पूजनम् - आयुष्य मन्त्र जपः - नांदीश्राद्धम् - आचार्यादिवरणः प्रयोग - रक्षाविधानम् - भूमि पूजा - मण्डप प्रवेश - पञ्चगव्य प्रोक्षण - मण्डपाङ्ग वास्तु पूजनम् एवं बिलदानम् - मण्डपपूजा - तोरण - द्वार पूजा - योगिनी स्थापनम् - क्षेत्रपाल स्थापनम् - कुण्ड पूजा - अग्नि स्थापनम् (हवनात्मक याग में) - नवग्रह - अधिदेवता - प्रत्यिधदेवता - दशिदक्पाल - स्थापनम् - असङ्ख्यात रुद्र कलश स्थापनम् - सर्वतोभद्रमण्डल स्थापनम् - कुशकिण्डका - पीठपूजा - प्रधान देव यन्त्र पूजा - प्रधान यज्ञेश्वर पूजनम् - आवरण पूजा - राजोपचारपूजा- हवन दशांश - पूर्णाहूति - तर्पण - अभिषेक (मार्जन) - ब्राह्मण भोजनम्।

(नोट : किसी-किसी ग्रन्थ में क्षेत्रपाल पूजा के बाद मण्डप पूजा का विधान लिखा है।)

शास्त्रीय दृष्टान्त

आदित्य पुराण के कहे हुए **पंच रत्नों को** बताते हैं – सोना, चांदी, मोती, मूंगा और लाजवर्दी ये पांच रत्न कहें हैं। समयप्रदीप ग्रन्थ में रखे हुए कालिकापुराण के कहे हुए पंचरत्न – सोना, हीरा, नीलम, पुखराज और मोती ये हैं रत्न शास्त्रवेता इन्हें पांच रत्न मानते हैं। मूलश्लोक में जो कुलिश शब्द आया है उसका हीरा अर्थ है। स्मृत्यन्तर में लिखा है कि, सब रत्नों के अभाव में सब जगह सोने की योजना कर दे। विष्णुधर्मोत्तर में कहा है – मुक्ता, सोना, वैदूर्य्य, पद्मराग, पुष्पराग, गोमेद, नील, गारुत्मत और प्रवाल ये महारत्न कहे गये हैं।

पंचपल्लव - हेमाद्रि में ब्रह्माण्ड पुराण से कहा है कि, पीपल, गूलर, प्लक्ष, आम और वर की डारें पंच पल्लव कहाती हैं। इस श्लोक में पंचभंगा ऐसा पाठ आया है जिसका पंचपल्लव अर्थ है, ये सब कामों में उपयुक्त है।

मधुरत्रय - मदन रत्न ग्रन्थ में कात्यायन का वचन है कि घी, दूध और सहत इन तीनों को मधुरत्रय कहते हैं। षड्रस - मदन रत्न ग्रन्थ में ही भविष्य का वचन रखा है कि, हे राजेन्द्र! मधुर, अम्ल, लवण, कषाय, तिक्त, कटुक ये छ: रस कहे गये हैं। चतुःसम- गरुड पुराण में कहा है कि, दो अंश कस्तूरी, चार अंश चन्दन, तीन अंश कुंकुम और एक अंश कपूर ये चारो मिलकर चतुस्सम कहाते हैं। जैसे दश रत्ती बनाना

हो तो दो रत्ती कस्तूरी, ४ चंदन, ३ कुंकुम और एक रत्ती कपूर लेना चाहिये। ग्रन्थकार कुंकुम से केशर का और शिश से कपूर का ग्रहण करते हैं। सर्वगन्ध - कपूरचन्दन, दर्प, कुंकुम, जब ये चारों बराबर लिये जायें उस समय इन्हें सर्वगन्ध कहते हैं। यह सब देवताओं का भूषण है। ग्रन्थकार दर्प शब्द से कस्तूरी का ग्रहण करते हैं। यक्ष कर्दम - कस्तूरी, अगुरु, कर्पूर, चन्दन, कँकोल ये पांचों मिलकर यक्षकर्दम कहाते हैं। सर्वोषधी - छन्दोग प्ररिशिष्ट में लिखा है कि - कूट, कंकोल, दोनों हलदी, मुरा, शैलेय चन्दन, वचा, चंपक, मुस्त इन दशों को सर्वोषधि कहते हैं। सौभाग्याष्ट्रक - पद्म पुराण में लिखा है कि, ईख, तृणराज, निष्पाव, अजाजी, धान्य, दही, कुसुम, कुंकुम, लवण ये आठ सौभाग्याष्टक कहाते हैं। तुणराज काल को कहते हैं। अजाजी जीरे का नाम है। अष्टांग अर्घ्य - पानी. दूध, कुशा के अग्रभाग, दही, चावल और तिल जौ और सफेद सरसों ये अष्टांग अर्घ्य कहते हैं। कौतुक संज्ञका - भविष्य पुराण में लिखा हुआ है कि दूध, जौ के अंकुर, खस की जड़, आम की डार, दोनों हलदियां, सफेद सरसों, मोर पंख, साँप की काँचली ये कंकण की औषधि हैं इन्हें कौतुक कहते हैं। सप्तमृद - मत्स्य पुराण में लिखा है कि जिस स्थान में घोड़ा बँधे और हाथी बँधे उन दोनों जगहों की धूल, रथ की रेत, बामी की मिट्टी, निदयों के संगम की मिट्टी, तालाब की मिट्टी, गउओं के खिरककी और चौराहे की मिट्टी ये सात मृत्तिकाए हैं। इन्हें घटे में गेरे। जहां गेरना कहा हो वहां, अन्यत्र नहीं। श्लोक में गोकुल तक सात तथा एक चौराहे की इस तरह आठ मिट्टी होती हैं। सप्तधातु- हेमाद्रि ग्रन्थ में भविष्य में लिखा है कि, सुवर्ण, रजत, ताम्र, आरकूट, लोह, त्रपु और सीसा ये सात धातु हैं। आरकूट पीतल को कहते हैं। वहां ही सप्तधान, षट्त्रिंशद् ग्रन्थ के मत से - यव, गोधूम, ब्रीहि, तिल, कंगु, श्यामाक और चीनक इन सातों को सप्तधान्य कहते हैं। सत्रहधान - मार्कण्डेय पुराण में कहे हैं कि व्रीहि, यव, गोधूम, अणु, तिल, प्रियंगु, कोविदार, कोरदूष, सतीनक, माष, मूंग, मसूर, निष्पाव, कुलित्थिका, आढकी चणक और शण ये १७ धान्य कहाते हैं। कोरदूष का पर्य्याय कोद्रव है। तथा सतीनक का पर्य्याय कलाय है जिसे लोग मटर कहते हैं। अठारह धान्य - स्कन्दपुराण में कहे हैं कि - ब्रीहि, यव, तिल, यावनाल (रामदाना) सतीनक, कुलित्थ, कंगु, कोरदूष, माष, मुद्ग, मसूर, निष्पाव, श्याम, सर्षप, गोधूम, चणक, नीवार, आढकी, ये क्रम से गिनने से अठारह हो जाते हैं।

शाक - हेमाद्रि ग्रन्थ में क्षीर स्वामी के मत से शाक भी गिनाये हैं कि, शाक दश तरह के होते हैं, सब शाक उन्हीं के भीतर आ जाते हैं। कोई - जड़ कोई पत्ते तथा कोई कुला और कोई पल्लव एवं कोई फल और कोई कोंपर, उपजे हुए अंकुर, छाल, फूल और कोई कवच के रूप में होते हैं। करीरवंशाकुर यानी कुले को कहते हैं। पल्लव को अग्र तथा काण्ड को नाल एवं कवच को छत्राक कहते हैं। कलश - विष्णु धर्म में कहा है कि, कलश अपने लक्षण के अनुसार सोने, चांदी, तांबे और मिट्टी के होते हैं, ये यात्रा विवाह और प्रतिष्ठादिक में अभिषेक के निमित्त होते हैं। कलश का परिमाण भी वही कहा है कि, पंचाशांगुल विपुल, सोलह अंगुल ऊंचा, १२ अंगुल जड़वाला और आठ अंगुल का मुंह होता है। दिशा दश हैं इस लिये आशा शब्द से दश का बोध होता है। पांच से दश को गुणा कर देने पर ५० होते हैं, जिसका यह मतलब होता है कि पचास अंगुल विपुल हो। कोई २ तो १५ अंगुल ही विपुल मानते हैं, विपुल का अर्थ चौड़ा होता है।

द्रव्याभावे प्रतिनिधि – हेमाद्रि में विष्णु धर्म को लेकर लिखा हुआ है कि, हे राजन् यिद दही न मिले तो दूध तथा मधु के अलाभ में गुड़ से काम करना चाहिये। यदि घी न हो तो दही व दूध से काम लेना चाहिये। उसी ग्रन्थ में मैत्रायणीय परिशिष्ट का वचन है कि, दूब के अभाव में काश को ले लेना चाहिये। पैठीनिस ने कहा है कि, सबके बदले जौओं से काम लेना चाहिये। अमृत धूप – धूप-अगुरु, चन्दन, मुस्ता, सिद्धक, वृषण इन पांचों वस्तुओं को बराबर लेकर जो धूप बनाया जाता है उसे अमृत कहते हैं। सिह्लक को सिह्लार कहते हैं, वृषण कस्तूरी को कहते हैं।

दशांगधूप (धूप) - ६ भाग कुष्ठ, १२ भाग गुड़, ३ भाग लाक्षा, पांच भाग नख, हरीतकी, सर्जरस और मांसी ये तीनों एक एक भाग, तथा त्रिलव, सिलाजीत चार भाग, घन एक भाग पुर इन सबको मिलाकर दशांग धूप बनता है। ऐसा बड़े २ मुनि कहते हैं। सर्जरस राल का नाम है, मांसी जटामांसी को कहते हैं। त्रिलव का मतलब तीन भागों से है, घन कपूर का नाम है। गूगल को पुर कहा है।

अथ मुद्रालक्षणम्

मुद्राओं का लक्षण हेमाद्रि कहते हैं – जिसमें दोनों हाथों को सामने करके अंगुलियों को कुछ संकुचित करके रखते हैं उसे "मुकुलीमुद्रा" कहते हैं "पंकजप्रसृता" भी इसी का नाम है। जिस मुकुलीमुद्रा में प्रादेश में अंगुलियाँ निकली हुईं हों तो "व्याकोशमुद्रा तथा कली की तरह खिली हुई हों, तो "पद्ममुद्रा" कहते हैं। जिसमें अंग कुछ सिकुड़े हुए हों तथा अपनी अंगुलिसेवेष्ठित हों, दोनों हाथ सामने ऊँचे जुड़े हों, उसे निष्ठुरा मुद्रा कहते हैं। जिसमें दोनों तर्जनी तथा कनीयसी अंगुली संकुचित हो, जिनके कि नख दीख रहे हों वो हाथ के मध्य में, हो इसे "अधोमुखी" मुद्रा कहते हैं। चारों अंगुलियाँ पीठ की

तरफ उठी हुई हों, दोनों अंगूठे एक तरफ हों, पर दोनों अच्छी तरह व्यवस्थित न हों, इसे ''व्योम'' मुद्रा कहते हैं। अन्य तन्त्र ग्रन्थों में सब देवताओं के पूजन करने की छ: मुद्राएँ कही हैं, उन्हें हम यहाँ ही कहते हैं। देवता के आनन से जो सदा सन्तुष्ट रहे वो ''संमुखी'' मुद्रा कहाती है। जिसमें अंगूठे निकाले जायें वो ''अवाहनी'' मुद्रा है। जिसमें इकट्ठी करके नीचे करे वो "आसन" मुद्रा कहाती है। यदि आसन मुद्रा को अधोमुखी कर दिया जाये तो यह ''स्थापनी'' मुद्रा कही जायेगी। यदि ऊँचे ऊँचे करे तो ''सम्मुखीकरणी'' मुद्रा होगी। दोनों हाथों की अंगुलियाँ फैलाकर फिर उन दोनों को मिलाकर हृदय पर करने से "प्रार्थना" मुद्रा हो जाती है। उन छओं मुद्राओं को सब देवताओं के पूजन में दिखावे। शिवपूजन में लिंगमुद्रा करनी चाहिये। उठे हुए दांये अँगूठे को बांये अँगूठे से बांध दे तथा बाँये हाथ की अँगुलियों को दांये हाथ की अंगुलियों से वेष्टित कर दे, उस समय ''लिंग'' मुद्रा होती है। यह शिव का सान्निध्य देनेवाली होती है। श्रीकामवाला इस मुद्रा को शिर पर तथा राज्यकामी नेत्रों पर, अन्नादि चाहनेवाला मुख पर, रोगशान्ति चाहनेवाला ग्रीवा पर, सब चाहनेवाला हृदय पर, ज्ञान चाहनेवाला नाभिमण्डल पर, राज्यकामी गुह्य पर और राष्ट्रकामी पैरों पर इस मुद्रा से स्पर्श करे। रामपूजन में १७ मुद्राएँ होती हैं, ऐसा ही रामार्चन चन्द्रिका में अगस्त्यजी ने कहा है कि-आवाहनी स्थापनी, सन्निधीकरणी, सुसंनिरोधिनी, सन्मुखीकरणी, संकलीकरणी, महामुद्रा, शंखमुद्रा, चक्रमुद्रा, पद्ममुद्रा, गदामुद्रा, धेनुमुद्रा, कौस्तुभमुद्रा, गरुडमुद्रा, श्रीवत्समुद्रा, वनमाला मुद्रा और योनिमुद्रा ये सत्रहमुद्रायें हैं। जो बुद्धिमान इन सत्रहों मुद्राओं से देवाधिदेव भगवान राम का अर्चन करता है, एवमं उन्हें प्रसन्न करता है, वो उनके हृदय को अपने पर दयालु बना जो चाहता है सो ले लेता है। मूलाधार से लेकर द्वादशांत तक लाई हुई जो कुसुमांजिल है, उससे प्रतिमा के तेज की वृद्धि होती है, हे मुने! देवार्चन विधि में ''आवाहनी'' मुद्रा ही श्रेष्ठ है, फिर इसी मुद्रा को स्थापन के समय में अधोमुखी मुद्रा कहते हैं। दोनों अंगूठों को ऊपर उठाकर मुठ्ठी कर लेने से ''सन्निधीकरणी'' मुद्रा बन जाती है जो कि देवार्चन में उपयुक्त है। उन्नत किये हुए अंगूठों के साथ दोनों हाथों की मुट्ठी करने से ''संनिरोधिनी'' मुद्रा बन जायेगी, मुट्ठी ऊँचको दोनों मुट्ठी करने पर ''सम्मुखीकरणी'' बन जायेगी, अंगोंसे गोंका विन्यास करने से ''संकलीकरणी'' मुद्रा बनती है, अंगूठों को आपस में लगे रहते हुए भी हाथ को फैला देने से ''महा'' मुद्रा बन जाती है। वह कम वेश की पूर्ति करनेवाली होती है। कनिष्ठिका और अनामिका ये दोनों अंगुलियाँ विचली अंगुलियों में के अन्त में आ उपस्थित हुए अग्रभाग में छिपी हुई हों ऐसा ही जिसका संस्थापन हो तथा अँगूठे का अग्रभाग उनमें छिपा हुआ हो इसे

''मुकुलीकरण'' मुद्रा कहते हैं। देवपूजा में दोनों हाथों में ''शंख'' मुद्रा बनती है, इसमें अंगुलियों की नोकों को आपस में वेष्टित कर दे। अंगुलियों को प्रयत्न के साथ गोल करने पर, ''चक्र'' मुद्रा बन जाती है। एक एक के सामने सामने करके मिलाने से ''गदा'' मुद्रा होती है। दोनों कनिष्ठिकाएँ आमने सामने आपस में मिल गयी हों तथा बांयें हाथ की तर्जनी के बीच में एवं मध्य और अनामिका में दूसरे हाथ की मध्या और अनामिका मिल गयी हों, तर्जनी मध्य में शोभित हो, क्रम से दोनों अंगूठे जिसमें नमते हो उसे ''कौस्तुभ'' मुद्रा कहते हैं। कनिष्ठिका आपस में विपरीत मिली हों, अंगूठे नीचे चले हो तो उसे ''गरुड'' मुद्रा कहते हैं। तर्जनी और अंगुष्ठ के बीच में मध्यमा और अनामिका दोनों आ जानी चाहिये। कनिष्ठिका और अनामिका तर्जनी के मध्य में आनी चाहिये, यह ''श्रीवत्स'' मुद्रा कहावेगी, कनिष्ठा अनामिका और मध्याकी एकमूठि बाँधनी चाहिये जिसमें तर्जनी उठी हुई होनी चाहिये इसे फिर देवता के शिर पर रखने से ''बनमालिका'' मुद्रा बन जाती है। दोनों हाथों की अनामिका दोनों हाथों की तर्जनी पर रखी हुई हों, दोनों अनामिकाएँ खड़ी हों, मध्यस्थल में अँगूठे हों तो ''योनि'' मुद्रा बनती है, यह पूजन में अतिश्रेष्ठ है। ये मुद्राओं के लक्षण समाप्त हुए।

पूजा के विविध उपचार

संक्षेप और विस्तार के भेद से पूजा के अनेकों प्रकार के उपचार हैं - पांच, दस, सोलह, अठारह, छत्तीस, आदि - यहां इन्हें दिया जा रहा है-

पांच उपचार - १. गन्ध, २. पुष्प, ३. धूप, ४. दीप और, ५. नैवेद्य।

दस उपचार - १. पाद्य, २. अर्घ्य, ३. आचमन, ४. स्नान, ५. वस्त्र-निवेदन, ६. गन्ध, ७. पुष्प, ८. धूप, ९. दीप, १०. नैवेद्य।

सोलह उपचार - १. पाद्य, २. अर्घ्य, ३. आचमन, ४. स्नान, ५. वस्त्र, ६. आभूषण, ७. गन्ध, ८. पुष्प, ९. धूप, १०. दीप, ११. नैवेद्य, १२. आचमन, १३. ताम्बूल, १४. स्तव पाठ, १५. तर्पण और, १६. नमस्कार। (षोडशोपचार में मतभेद है।)

अठारह उपचार - १. आसन, २. स्वागत, ३. पाद्य, ४. अर्घ्य, ५. आचमनीय, ६. स्नानीय, ७. वस्त्र, ८. यज्ञोपवीत, ९. भूषण, १०. गन्ध, ११. पुष्प, १२. धूप, १३. दीप, १४. नैवेद्य, १५. तर्पण, १६. माल्य, १७. अनुलेपन और, १८. नमस्कार। छत्तीस उपचार - १. आसन, २. अभ्यञ्जन, ३. उद्वर्तन, ४. निरुक्षण, ५. समार्जन, ६. सर्पि:स्नपन, ७. आवाहन, ८. पाद्य, ९. अर्घ्य, १०. आचमन, ११. स्नान,

- १२. मधुपर्क, १३. पुनराचमन, १४. यज्ञोपवीत-वस्त्र, १५. अलङ्कार, १६. गन्ध, १७. पुष्प, १८. धूप, १९. दीप, २०. नैवेद्य, २१. ताम्बूल, २२. पुष्पमाला, २३. अनुलेपन, २४. शय्या, २५. चामर, २६. व्यजन, २७. आदर्श, २८. नमस्कार, २९. गायन,
- ३०. वादन, ३१. नर्तन, ३२. स्तुतिगान, ३३. हवन, ३४. प्रदक्षिणा, ३५. दन्तकाष्ठ और ३६. विसर्जन।

यज्ञमण्डप सम्बन्धी विविध विषयों का विचार

- १. उत्तम यज्ञमण्डप ३२, २४, २०, १८ तथा १६ हाथ का लंबा और चौड़ा कहा जाता है। मध्यम यज्ञमण्डप १४ तथा १२ हाथ का लंबा और चौड़ा कहा जाता है। अधम यज्ञमण्डप १० हाथ का लंबा और चौड़ा कहा जाता है। कुछ लोग ८ हाथ के मण्डप को भी अधम कहते हैं।
- २. मण्डप का निर्माण शास्त्र विधि से करे।
- ३. मण्डप के भीतर चारों दिशाओं में चार वेदी बनती हैं। जैसे ईशान कोण में ग्रहवेदी, अग्निकोण में योगिनीवेदी, नैर्ऋत्यकोण में वास्तुवेदी और वायव्यकोण में क्षेत्रपालवेदी।
- ४. विष्णुयाग में प्रधानवेदी पूर्व और दक्षिण दिशा के मध्य में होती है। आजकल पूर्व दिशा में ही प्रधानवेदी प्रचलित है।
- ५. रुद्रयाग में प्रधानवेदी ईशानकोण में होती है।
- ६. रुद्रयाग में प्रधानवेदी के दक्षिण में 'ग्रहवेदी' होती है।
- ७. प्रधानवेदी एक हाथ ऊंची और दो हाथ चौड़ी होती है। अन्य क्षेत्रपाल आदि की चारों वेदियां एक-एक हाथ ऊंची और एक-एक हाथ चौड़ी होती है।
- ८. ग्रहवेदी में तीन सीढ़ी (वप्र) होती हैं। ग्रहवेदी की तरह वास्तु, क्षेत्रपाल और योगिनी वेदी में भी तीन-तीन सीढ़ी (वप्र) होनी चाहिए।
- ९. प्रधानवेदी में दो सीढ़ी (वप्र) होती हैं।
- १०. ग्रहवेदी आदि सभी वेदियों की ऊपर को और मध्य की सीढ़ी तीन-तीन अङ्गुल ऊंची और दो-दो अङ्गुल चौड़ी होती है। नीचेवाली तीसरी सीढ़ी दो अङ्गुल ऊंची और दो अङ्गल चौड़ी होती है।

- ११. ग्रहवेदी आदि सभी वेदियों की तीनों सीढ़ियों में ऊपरवाली सीढ़ी सफेद रंग की, मध्य वाली लाल रंग की और नीचेवाली काले रंग की होती है।
- १२. प्रधानवेदी की ऊपरवाली सीढ़ी सफेद रंग की और नीचेवाली लाल रंग की होती है।
- १३. यज्ञमण्डप में १६ स्तम्भ होते हैं। बड़े यज्ञमण्डप में अर्थात् १०० हाथ के मण्डप में, ५० हाथ के मण्डप में और ३२ हाथ के मण्डप में यज्ञमण्डप की मजबूती के लिए सोलह स्तम्भ से अधिक स्तम्भ भी लगाये जा सकते हैं।
- १४. १६ हाथ के यज्ञमण्डप में भीतरवाले ४ स्तम्भ ९ हाथ के और बाहरवाले १२ स्तम्भ ५ हाथ के होते हैं।
- १५. मण्डपस्थ स्तम्भों के पांचवें हिस्से को भूमि में गाड़ देना चाहिये।
- १६. यज्ञमण्डप में स्तम्भों के लगाने का क्रम यह है कि यज्ञमण्डप जितना बड़ा हो, उससे आधे प्रमाण के भीतर ४ स्तम्भ और बाहरी १२ स्तम्भ ७ हाथ के लगाने चाहिये।
- १७. यज्ञमण्डप के स्तम्भ यज्ञिय वृक्ष के अथवा बांस के अथवा अन्य पवित्र वृक्ष के लगाने चाहिये।
- १८. यज्ञमण्डप के स्तम्भों की स्थूलता (मोटाई) १६ अंगुल, १० अंगुल अथवा यथेच्छ कही गई है।
- १९. यज्ञमण्डप के सोलह स्तम्भों में ब्रह्मा, विष्णु, शिव, इन्द्र, सूर्य, गणेश, यम, नागराज, स्कन्द (कार्तिकेय), वायु, सोम, वरुण, अष्टवसु, धनद (कुबेर), बृहस्पित और विश्वकर्मा इन सोलह देवताओं का स्थापन होता है।
- २०. यज्ञमण्डप के १६ स्तम्भों में इस प्रकार रंगीन वस्त्र लगाना चाहिये मण्डप के भीतर वाले चार स्तम्भों में क्रमश: १. ईशानकोण के स्तम्भ में लाल वस्त्र, २. अग्निकोण के स्तम्भ में सफेद वस्त्र, ३. नैर्ऋत्यकोण के स्तम्भ में काला वस्त्र और ४. वायव्यकोण के स्तम्भ में पीला वस्त्र होना चाहिये।
 - मण्डप के बाहरवाले बारह स्तम्भों में क्रमश: १. ईशानकोण के स्तम्भ में लाल वस्त्र, २. ईशान और पूर्व के स्तम्भ के मध्य में सफेद वस्त्र, ३. पूर्व और अग्निकोण के स्तम्भ के मध्य में काला वस्त्र, ४. अग्निकोण के स्तम्भ में काला वस्त्र, ५. अग्निकोण और दक्षिण के मध्य के स्तम्भ में सफेद वस्त्र, ६. दक्षिण और नैर्ऋत्यकोण के मध्य के स्तम्भ में धूम्र वस्त्र, ७. नैर्ऋत्यकोण में पीला वस्त्र, ८. नैर्ऋत्य और पश्चिम के

मध्य के स्तम्भ में सफेद वस्त्र, ९. पश्चिम और वायव्यकोण के मध्य के स्तम्भ में सफेद वस्त्र, १०. वायव्यकोण में पीला वस्त्र, ११. उत्तर और वायव्यकोण के मध्य में पीला वस्त्र और १२. उत्तर और ईशानकोण के मध्य में लाल वस्त्र होना चाहिये।

- २१. दश दिक्पाल की १० ध्वजा होती है। ये ध्वजा त्रिकोण होती हैं।
- २२. ध्वजा २ हाथ चौड़ी और ५ हाथ लंबी होती है। किसी आचार्य का मत है कि ध्वजा १ हाथ चौड़ी और १ हाथ लंबी होती है।
- २३. पूर्व दिशा में पीले रंग की ध्वजा इन्द्र की होती है और इसका वाहन सफेद रंग का हाथी होता है। अग्निकोण में लाल रंग की ध्वजा अग्नि की होती है और इसका वाहन सफेद रंग का मेष (मेढ़ा) होता है।

दक्षिण दिशा में काले रंग की ध्वजा यम की होती है और इसका वाहन लाल रंग का महिष (भैंसा) होता है। नैर्ऋत्यकोण में नील रंग की ध्वजा निर्ऋतिकी होती है और इसका वाहन सफेद रंग का सिंह होता है।

पश्चिम दिशा में सफेद रंग की ध्वजा वरुण की होती है और इसका वाहन धूम्र वर्ण की मछली होती है। वायव्यकोण में धूम्र अथवा हरे रंग की ध्वजा वायु की होती है और इसका वाहन काले रंग का हरिण (मृग) होता है।

उत्तर दिशा में सफेद अथवा हरे रंग की ध्वजा सोम की होती है और इसका वाहन सुवर्ण के सदृश अश्व (घोड़ा) होता है। ईशानकोण में सफेद रंग की ध्वजा ईशान की होती है और इसका वाहन लाल रंग का बैल होता है।

- २४. ब्रह्मा की ध्वजा ईशानकोण और पूर्व के मध्य में सफेद अथवा लाल रंग की होती है और इसका वाहन सफेद रंग का हंस होता है।
- २५. अनन्त की ध्वजा नैर्ऋत्यकोण और पश्चिम के मध्य में सफेद रंग की अथवा काले रंग की होती है और इसका वाहन गरुड़ होता है।
- २६. ध्वजाओं को दस-दस हाथ के लंबे बांस में लगाना चाहिये।
- २७. हाथी, मेढ़ा, भैंस, सिंह, मछली, मृग, घोड़ा, बैल, हंस और गरुड़ ये ध्वजाओं के वाहन हैं।
- २७. दश दिक्पाल की १० पताका होती हैं। ये चतुष्कोण (चौकोर) होती हैं।
- २९. ध्वजाओं की तरह पताकाओं का भी रंग होता है।

जग-दीपिका

- ३०. पताका ७ हाथ लंबी और १ हाथ चौड़ी होती है।
- ३१. पूर्व दिशा की पताका में आयुध वज्र होता है। अग्निकोण की पताका में आयुध शिक्त (तलवार) होती है। दक्षिण दिशा की पताका में आयुध दण्ड होता है। नैर्ऋत्यकोण की पताका में आयुध खड्ग होता है। पश्चिम दिशा की पताका में आयुध पाश होता है। वायव्यकोण की पताका में आयुध अङ्कुश होता है। उत्तर दिशा की पताका में आयुध गदा होती है। ईशानकोण की पताका में आयुध त्रिशूल होता है। पूर्व और ईशानकोण के मध्य की पताका में आयुध कमण्डलु होता है और पश्चिम और नैर्ऋत्यकोण की पताका में आयुध चक्र होता है।
- ३२. वज्र, शक्ति, दण्ड, खड्ग, पाश, अङ्कुश, गदा और त्रिशूल ये पताकाओं के आयुध हैं।
- ३३. पताकाओं को दस-दस हाथ के लंबे बांस में लगाना चाहिये।
- ३४. महाध्वज एक होता है और यह त्रिकोण होता है।
- ३५. महाध्वज दस हाथ का अथवा सात हाथ का अथवा पांच हाथ का लंबा होता है और पांच हाथ का अथवा साढ़े तीन हाथ का अथवा ३ हाथ का चौड़ा होता है।
- ३६. महाध्वज पचरंगा अथवा चित्र-विचित्र रंग का होता है।
- ३७. महाध्वज को दस हाथ, सोलह हाथ, इकतीस हाथ अथवा बत्तीस हाथ के लंबे बांस में लगाना चाहिये।
- ३८. महाध्वज को यज्ञमण्डप के मध्य में अथवा यज्ञमण्डप के ईशानकोण में लगाना चाहिये।
- ३९. यज्ञमण्डप में चार मण्डप-द्वार होते हैं। यह अढ़ाई हाथ चौड़े और तीन हाथ ऊंचे होते हैं।
- ४०. मण्डप के द्वार (दरवाजे) बल्ली आदि के बनते हैं।
- ४१. यज्ञमण्डप के चारों दिशाओं के चारों द्वार में चार 'तोरणद्वार' होते हैं। ये चारों तोरणद्वार मण्डप द्वार से एक-एक हाथ अथवा दो-दो हाथ की दूर पर बनाने चाहिये।
- ४२. तोरणद्वारों में मण्डप के द्वारों की तरह नीचे की ओर लकड़ी (देहली) नहीं होती।

- ४३. तोरणद्वार निर्माण के लिए पूर्व में पीपल अथवा वट (बरगद) की, दक्षिण में गूलर की, पश्चिम में पीपल की अथवा पाकर की और उत्तर में पाकर अथवा वट (बरगद) की लकड़ी होनी चाहिये। यदि चारों द्वारों के लिए उपर्युक्त अलग-अलग लकड़ी प्राप्त न हो सके, तो निर्दिष्ट लकड़ियों में से किसी भी उपलब्ध एक लकड़ी से भी तोरणद्वार बनाये जा सकते हैं।
- ४४. पूर्व द्वार के तोरण में पीला वस्त्र, दक्षिण द्वार के तोरण में काला वस्त्र, पश्चिम द्वार के तोरण में सफेद वस्त्र और उत्तर द्वार के तोरण में पीला वस्त्र लगाना चाहिये।
- ४५. विष्णुयाग में चारों तोरण द्वारों के ऊपर क्रमश: पूर्व में शंख, दक्षिण में चक्र, पश्चिम में गदा और उत्तर में पद्म लगाना चाहिये।
- ४६. विष्णुयाग में उत्तम मण्डप में १४ अंगुल लंबा और ३।। अङ्गुल चौड़ा शंख तोरण पर गाड़ना चाहिये। मध्यम मण्डप में १२ अङ्गुल लंबा और ३ अङ्गुल चौड़ा शंख तोरण पर गाड़ना चाहिये। अधम मण्डप में १० अङ्गुल लंबा और २।। अङ्गुल चौडा शंख तोरण पर गाडना चाहिये।

उपर्युक्त विष्णुयज्ञ के उत्तमादि मण्डप के शंखादिके कीलों का पञ्चमांश तोरण पर गाड़ देना चाहिये और द्वार का पांचवां हिस्सा मण्डप से एक हाथ बाहर पूर्ववत् गाड़ना चाहिये।

- ४७. रुद्रयाग में चारों दिशाओं में लगे हुए चारों तोरणद्वारों के ऊपर त्रिशूल बनाना चाहिये।
- ४८. रुद्रयाग में उत्तम मण्डप में १३ अङ्गुल लंबा और ३। अङ्गुल चौड़ा त्रिशूल तोरण में गाड़ना चाहिये। मध्यम मण्डप में ११ अङ्गुल लंबा और २।।। अङ्गुल चौड़ा त्रिशूल तोरण में गाड़ना चाहिये। अधम मण्डप में ९ अङ्गुल लंबा और २। अङ्गुल चौड़ा त्रिशूल तोरण में गाड़ना चाहिये। अधम मण्डप में २ अङ्गुल त्रिशूल को तोरण में गाड़ना चाहिये।

उपर्युक्त रुद्रयज्ञ के उत्तमादि मण्डप के त्रिशूलादि के कीलों का पञ्चमांश तोरण पर गाड़ना चाहिये और द्वार का पांचवां हिस्सा मण्डप से एक हाथ बाहर पूर्ववत् गाड़ना चाहिये।

४९. यज्ञमण्डप के बाहर १८ कलश होते हैं। इनमें ४ कलश मण्डप के बाहर चारों दिशाओं के चारों कोनों में रखे जाते हैं और ४ कलश चारों विदिशाओं के चारों कोनों में रखे जाते हैं और १ कलश पूर्व और ईशानकोण के मध्य में ब्रह्मा का होता है और १ कलश पश्चिम और नैर्ऋत्य कोण के मध्य में अनन्त का होता है। ये १० कलश दश दिक्पाल के होते हैं।

मण्डप के चारों द्वारों पर दो-दो कलश होते हैं, जिन्हें 'द्वार कलश' कहते हैं। इस प्रकार यज्ञमण्डप के १८ कलश होते हैं।

बहुत लोग मण्डप के भीतर स्तम्भों के पास भी कलश रखते हैं किन्तु यह क्रम प्रचलित नहीं है।

- ५०. यज्ञमण्डप के शिखर का प्रमाण प्राय: किसी भी कुण्डमण्डपग्रन्थकर्ता ने नहीं लिखा है। अत: महर्षि कात्यायन के 'अर्थात् परिमाणम्' इस प्रमाण के अनुसार मण्डपानुरूप यथेच्छ शिखर का निर्माण करना चाहिये।
- ५१. यज्ञमण्डप के समस्त स्तम्भों में भगवान् के चित्रों और शीशों को लगाना चाहिये।
- ५२. यज्ञमण्डप के भीतर ऊपर छत की ओर चारों तरफ सफेद वस्त्र का वितान (चंदवा) लगाना चाहिये।
- ५३. यज्ञमण्डप में समय के परिज्ञानार्थ घड़ी (घटीयन्त्र) लगाना चाहिये।

अथ दश विध स्नान प्रयोग

समस्त देव यज्ञादि उत्सव में पूजन अधिकार हेतु दश विध स्नान करना चाहिए। तीर्थ प्रार्थना - ॐ नमामि गङ्गे तव पाद पंकजं सुरा सुरैर्वन्दित दिव्य रूपं। भुक्तिञ्च मुक्तिं च ददामि नित्यं भावानुसारेण सदा नराणाम्।। त्वं राजा सर्वतीर्थानां त्वमेव जगतः पिता। याचितं देहि मे तोयं सर्वपापापनुतये।।

।। तीर्थ देव से आज्ञा प्राप्त करे।।

अथ संकल्प - देशकालौ संक्रीर्त्य - अस्मिन याग अधिकारार्थे समस्त काय, वाङ मनः कृत पापादि दोषादि शमनार्थम् अमुक तीर्थे वा जलाशय देह शुद्धयर्थं दश विध स्नानं अहं करिष्ये।

प्रथमं भस्मस्नानम् - ॐ अग्निरिति भस्म, वायुरिति भस्म, जलमिति भस्म, स्थलिमिति भस्म, व्योमेति भस्म, सर्व र्ठः ह वा इदं भस्म, मन एतानि चक्षू र्ठः षि भस्मानि। ॐ नमस्ते रुद्रमन्यवऽउतोतइषवे नमः। बाहुब्भ्यामुत ते नमः।।

यथाग्निर्दहते भस्म तृणकाष्ठादिसञ्चयम्। तथा मे दह्यतां पापं कुरु भस्म शुचे शुचिम्।।

द्वितीयं मृत्तिकास्नानम् - ॐ इदं विष्णुर्विचक्क्रमे त्रेधानिदधेपदम्। समूढमस्यपा र्ठः सुरे स्वाहा।।

अश्वक्रान्ते रथक्रान्ते विष्णुक्रान्ते वसुन्धरे। शिरसा धारियष्यामि रक्ष मां त्वं पदे पदे।। उद्धृतासि वराहेण कृष्णेन शतबाहुना। मृत्तिके हर मे पापं यन्मया दुष्कृतं कृतम्।। मृत्तिके ब्रह्मपूतासि काश्यपेनाभिवन्दिता। मृत्तिके देहि मे पुष्टिं त्विय सर्वं प्रतिष्ठितम्।। तृतीयं गोमयस्नानम् – ॐ मानस्तोके तनये मानऽआयुषिमानो गोषुमानोऽअश्वेषुरीरिषः। मानोळ्वीरान्रुद्रभामिनो व्वधीर्हविष्ममन्तः सदिमत्त्वाहवामहे। गोमये वसते लक्ष्मीः पवित्रा सर्वमङ्गला। स्नानार्थं संस्कृता देवी पापं मे हर गोमय।।

अग्रमग्रं चरन्तीनामोषधीनां वने वने। तासामृषभपत्नीनां पवित्रं कायशोधनम्।। यन्मे रोगं च शोकं च तन्मे दहतु गोमयम्।

चतुर्थं पञ्चगव्यस्नानम् - सहस्रशीर्षापुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। सभूमि र्ठः सर्व्यतस्पृत्त्वात्त्यतिष्ठद्दशाङ्गलम्।।

गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दिध सिर्पः समिन्वतम्। सर्वपापिवशुद्ध्यर्थं पञ्चगव्यं पुनातु माम्।। पञ्चमं गोरजस्नानम् - आयङ्गोः पृश्न्निरक्क्रमीदसदन्न्मातरम्पुरः। पितरञ्चप्प्रयन्त्स्वः। गवां खुरेण निर्द्धृतं यद्रेणुर्गगने गतम्। शिरसा तेन संल्लेपो महापातकनाशनम्।।

षष्ठं धान्यस्नानम् - ॐ धान्त्यमसिधिनुहिदेवान्त्राणायत्त्वोदानायत्त्वाळ्यानायत्त्वा। दीग्घीमनुप्रसितिमायुषेधान्देवोवः सिवताहिरण्यपाणिः प्रतिगृब्भ्णात्त्विच्छद्रेणपाणिना– चक्क्षुषेत्त्वामहीनाम्पयोसि।

धान्यौषधिर्मनुष्याणां जीवनं परमं स्मृतम्। तेन स्नानेन देवेश मम पापं व्यपोहतु।। सप्तमं फलस्नानम् - ॐ याः फलिनीर्थ्याऽअफलाऽअपुष्पायाश्च पुष्पिणीः। वृहस्पतिप्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्व र्ठः हसः।।

वनस्पतिरसो दिव्यः फलपुष्पवृतः सदा। तेन स्नानेन मे देव फलं लब्धमनन्तकम्।। अष्टमं सर्वोषधिस्नानम् - ॐ ओषधयः समदन्तसोमेनसहराज्ञा। यस्म्मैकृणोतिब्राह्मणस्त ठीः राजन्त्पारयामिस।

औषध्यः सर्ववृक्षाणां तृणगुल्मलतास्तु याः। दूर्वासर्षपसंयुक्ताः सर्वौषध्यः पुनन्तु माम्।। नवमं कुशोदकस्नानम् - ॐ देवस्यत्त्वासिवतुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुब्भ्याम्पूष्णोहस्ताब्भ्याम्। कुशमूले स्थितो ब्रह्मा कुशमध्ये जनार्दनः। कुशाग्रे शङ्करो देवस्तेन नश्यतु पातकम्।। दशमं हिरण्यस्नानम् - ॐ आकृष्णेनरजसावर्त्तमानोनिवेशयन्नमृतम्मर्त्त्यञ्च। हिरण्ययेन सिवतारथेनादेवोयाति भुवनानि पश्यन्।

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसो:। अनन्तपुण्यफलदमत: शान्तिं प्रयच्छ मे।।

जग-दीपिका

गौणस्नानानि

अतिशय बाल्य, वार्धक-भाव तथा अस्वस्थ रहने के कारण गर्म जल से भी स्नान करने में अशक्त रहने पर नीचे लिखे चारों में से कोई एक गौणस्नान कर लेना चाहिए। आपो हिष्टेति... तीन मन्त्रों से अङ्ग का प्रोक्षण कर ले। गायत्री मन्त्र से दशबार जल को अभिमन्त्रित कर उस जल से सर्वाङ का प्रोक्षण गायत्र

गायत्री मन्त्र से दशबार जल को अभिमन्त्रित कर उस जल से सर्वाङ्ग का प्रोक्षण गायत्र स्नान है।

गीले कपड़े से शरीर का परिमार्जन कर लेना कापिल स्नान है। विष्णु का स्मरण करते हुए दाहिने हाथ से अङ्गों का स्पर्श कर लेना यौगिक स्नान है। इन चार स्नानों में यथासम्भव कोई भी स्नान जप, संध्या आदि के लिए शुद्धिकारक है। इन गौण स्नानों का श्राद्ध, देवार्चन आदि में विधान नहीं है।

स्नानाङ्गतर्पण (घर में न करें)

पूर्वाभिमुख होकर सव्य हो (जनेऊ को बाएँ कन्धे पर रख कर) देवतीर्थ (अङ्गुलियों के अग्रभाग) से नीचे लिखे मन्त्रों द्वारा एक एक अञ्जल जल, जल में ही दें। ॐ ब्रह्मादयो देवास्तृप्यन्ताम् १। ॐ भूर्देवास्तृप्यन्ताम् १। ॐ भूर्वेदास्तृप्यन्ताम् १। ॐ भूर्वेदास्तृप्यन्ताम् १। ॐ गौतमादयः ऋषयस्तृप्यन्ताम् १। इसके बाद जनेऊ को कण्ठी की तरह धारण कर उत्तराभिमुख हो प्रजापित तीर्थ से दो अञ्जल जल देवे। ॐ सनकादयो मनुष्यास्तृप्यन्ताम् २। दिक्षणाभिमुख होकर (अपसव्य हो) पितृतीर्थ से नीचे लिखे मन्त्रों से तीन-तीन अञ्जल जल देवें।

ॐ कव्यवाडादयः पितरस्तृप्यन्ताम् ३। ॐ चतुर्दश यमास्तृप्यन्ताम् ३। ॐ भूः पितरस्तृप्यन्ताम् ३। ॐ भुवः पितरस्तृप्यन्ताम् ३। ॐ भूर्भुवः स्वः पितरस्तृप्यन्ताम् ३। ॐ अमुकगोत्रा अस्मित्पतृ-पितामह-प्रपितामहास्तृप्यन्ताम्। ॐ अमुक गोत्रा अस्मन्मातृपितामही-प्रपितामह्यस्तृप्यन्ताम्। ॐ अमुकगोत्रा अस्मन्माता महप्रमाता-महवृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकास्तृप्यन्ताम्। ॐ ब्रह्मादिस्तम्बपर्यन्तं जगत्तृप्यताम्। नीचे लिखे मन्त्र से जल के बाहर के अञ्चलि जल देवें।

अग्निदग्धाश्च ये जीवा येप्यदग्धाः कुले मम। भूमौ दत्तेन तृप्यन्तु तृप्ता यान्तु परां गितम्।। जल से बाहर अधोलिखित मंत्र पढ़ते हुए अपनी शिखा दाहिनी ओर निचोड़ देवें लतागुल्मेषु वृक्षेषु पितरो ये व्यवस्थिताः। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु मया दत्तैः शिखोदकैः।।

।। इति ।।

प्रायश्चितम्

(प्रत्येक पूजा अनुष्ठान से पूर्व प्रायश्चित अवश्य करे)

(यजमान यह संकल्प करे -) ॐ तत्सत् करिष्यमाणप्रायश्चिताङ्गत्वेन इदं गोवृष-निष्क्रयद्रव्यं सभ्येभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दातुमहमुत्सृज्ये। (सभ्य अर्थात् ब्राह्मण लोग उस द्रव्य को आपस में बाँट लेवें।)

(उसके बाद प्रायश्चित करनेवाला यजमान यह कहे -)

अमुकस्य मम जन्मप्रभृति अद्य दिनं यावत् ज्ञाताज्ञातकामाकाम – सकृदसकृत्कृत-कायिक-वाचिक-मानसिक-सांसर्गिक-स्पृष्टास्पृष्ट-भुक्ताभुक्त-पीतापीत-सकलपात-काति-पातकोप-पातक-लघुपातक-सङ्करीकरण-मिलनीकरणा-पात्रीकरण-जातिभ्रंशकर-प्रकीर्णक-पातकानां मध्ये संभावितानां पापानां निरासार्थमनुगृह्य प्रायश्चित्तमुपदिशन्तु भवन्त:। (पुत्रादिश्चेदा-चरित तदा ममास्य पित्रादे: इति वाच्यम्।)

पञ्चगव्य प्राशन मन्त्र

ॐ यत्वगस्थि गतं पापं देहे तिष्ठति मामके। प्राशनं पञ्चगव्यस्य दहत्वग्निरिवेन्धनम्।।

सर्वप्रायश्चितसङ्कल्पः

देशकालौ सङ्कीर्त्य, मम इह जन्मिन जन्मान्तरे वा बाल्य-यौवन-वार्धक्यावस्थासु वाक्-पाणि-पाद-पायूपस्थ-श्रोत्र-चक्षुर्जिह्वा-घ्राण-मनोभिः ज्ञाताज्ञात-कामाकाम-सकृदसकृत्-कायिक-वाचिक-मानसिक-सांसर्गिकाणाम् आचिरतानां समेषां पापानाम, ब्राह्मणनिन्दा-गुरुनिन्दा-माता-पितृनिन्दा-देवनिन्दा-तीर्थनिन्दा-वेदनिन्दा-शास्त्रनिन्दा-मातृ-पितृ-ज्येष्ठ-भ्राता-गुरु-तिरस्कार-मातृ-पितृ-गुरुद्रोह-परद्रोह-परनिन्दा-आत्मस्तुतिरूपाणाम्, अस्पृश्य स्पर्शन-अश्रव्यश्रवण-अहिंस्य-हिंसन-अवन्द्यवन्दन-अचिन्त्यचिन्तन-अयाज्ययाजन-अपूज्यपूजनरूपाणाम्, परमर्मोद्घाटनिमध्यापवाद-मिध्याभाषण-म्लेच्छसम्भाषण-पतितसम्भाषण-परस्त्रीसम्भाषण-परस्त्रीगमन-ब्रह्मद्वेषकरण-ब्रह्मवृत्तिहरण-परवृत्तिहरण-हीनजाति-सेवन-निषिद्धाचरणरूपाणाम्, शौचत्याग-सन्ध्योपासन-त्याग-तर्पण-बलिवैश्वदेव-नित्यहोमत्याग-देवपूजनत्याग-स्वग्राम-त्याग-स्वदेशत्याग-परिवारत्याग-कुलत्याग-स्वधर्मत्याग-सदाचारत्याग-शीलत्याग-गुरुत्याग-वेदत्याग-शास्त्रत्याग-आश्रमत्याग-रूपाणाम्, अभक्ष्य-भक्षण-अभोज्य-भोजन-अचूष्य-चूषण-अलेह्य-लेहन-अपेयपान-लशुन-पलाण्डु-गुञ्जन-भोजन-उच्छिष्ट भोजन-तृषितान्नभोजन-निन्दतान्नभोजन- निषिद्ध-परान्न-भोजन-संकलीकरण-मिलनीकरण-अपात्रीकरण-जातिभ्रंशकरप्रकीर्णक-पातकानामेतत्कालपर्यन्तं सञ्चितानां गुरु-लघु-स्थूल-सूक्ष्मरूपाणां समेषां पापानां परिहारपूर्वकं यथावत्फल-प्राप्त्यर्थं श्रीपरमेश्वर-प्रीत्यर्थं स्वशरीरसंशुद्धये देव-ब्राह्मणसिन्नधौ करिष्यमाणामुककर्माधिकारसिद्ध्यर्थं द्वादशाब्दं षडब्दं त्र्यब्दं वा सर्वप्रायश्चितं करिष्ये। तदङ्गत्वेन दशदानानि च यथानामगोत्रेभ्यः ब्राह्मणेभ्यः विभज्य दातुमहमुत्सृज्ये।

नारी-प्रायश्चितसङ्कल्पः

देशकालौ सङ्कीर्त्य, मम जन्मप्रभृति अद्यदिनं यावत् बाल्य-कौमार-यौवन-वार्द्धक्येषु जाग्रत्-स्वप्न-सुषुप्त्यवस्थासु च कर्मेन्द्रियै-र्ज्ञानेन्द्रियैश्च काम-क्रोध-लोभ-मोह-मद-मात्सर्यादिभिः कायिक-वाचिक-मानसिक-सांसर्गिकाणाम्, ज्ञानतः सकृत्कृतानाम्, अज्ञानतः असकृत्कृतानाम्, स्पृष्टास्पृष्ट-भुक्ताभुक्त-पीतापीता-दृष्टादृष्टादीनाम्, अस्नान-भोजन-उच्छिष्ट भोजन-नग्नभोजन-शुद्रशेषात्रभोजन रजस्वलाशेषात्रभोजन-श्राद्धशेषात्रभोजन-असंस्कृतान्नभोजन-वैश्व-देवरहितान्नभोजन-मौनरहितभोजन, वटैरण्डाश्वत्थार्क-पत्रान्नभोजन-शिलापात्र-दारुपात्रात्र भोजन-अयस्ताम्र-त्रपुसीस-कांस्यपात्रात्रभोजन-एकादश्यन्नभोजन-निषिद्धशाक-भक्षण, (विधवास्त्रीकृते-हरिद्रा-कुङ्कम-कस्तूर्यादि-स्गन्धद्रव्यधारण-स्वर्णादिभूषणधारण-कज्जल-कञ्जूकधारण-रक्त-पीत-नीलवस्त्रादिधारण) तिष्ठन्मूत्रपुरीषोत्सर्जन-आशौच-राहित्य-अकालस्नान-अकालजलपान-अकालभोजन-अस्नानजलपान-नग्नजलपान-नग्नस्नान-व्यर्थभाषण-कटुभाषण-निष्ठुरभाषण-अकारण हास्यकारण-पतिदूषण-पतिवचनोल्लङ्गन-श्वश्रु-श्वशुर-माता-पितृवचनोल्लङ्कन-द्वेषकरण-तिरस्कारकरण-आज्ञाभङ्गकरण-ब्राह्मण-गुरु-अपमानकरण-कोपकरण-कलहकरण-सपत्नीद्वेषकरण-शिश्ताडन-पंक्तिभेदकरण-शिरोहनन-मिलनवस्त्रधारण-पर्वकाल-सन्ध्याकाल-अशुभिदनपितसङ्गम-रजस्वलावस्थायां पतिसङ्गम-भाण्डादि-स्पर्शन-परपुरुषावलोकन-परपुरुषसम्भाषण-परपुरषालिङ्गन-परपुरुषमुखास्वादन-परपुरुषसङ्गमन-स्नान-देवपूजनादिनित्यकर्मत्याग-एकादशी-ग्रहण-अयन-सङक्रान्त्यादि-पर्वकालस्नानत्याग-व्रतोपवासत्याग-श्रीमद्भगवतादिपुराण-कथाश्रवण-त्याग-भर्तृ-पैतृक-तिथित्याग-पुण्यकर्मत्याग-यति-ब्रह्मचारि-अतिथि-ब्राह्मणभिक्षा-त्याग-दुर्गुणप्रयुक्तकर्मनिषेवणादीनां सर्वेषां पापानां सद्यः अपनोदार्थं श्रुति-स्मृति-पुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं धर्मार्थकाम-मोक्ष-चतुर्विधपुरुषार्थसिद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वर-प्रीत्यर्थं वेदशास्त्र-सम्पन्न-व्रताध्ययनशालिब्राह्मणोत्तमसन्निधौ कृच्छात्मकं गोदानं (यथाशक्ति वा) करिष्ये।

यज्ञोपवीत-धारण मन्त्र

ॐ यज्ञोपवीतिमितिमन्त्रस्य परमेष्ठी ऋषिः लिङ्गोक्ता देवता त्रिष्टुप्छन्दः यज्ञोपवीतधारणे विनियोगः। (जनेऊ धोकर प्रत्येक बार मंत्र बोलते हुआ धारण करें।) ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्रयं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।

जीर्ण-यज्ञोपवीत-त्याग-मन्त्र

(पुराने जनेऊ को कंठी कर सिर पर से पीठ की ओर निकाल कर यथा–संख्या गायत्री मंत्र का जप करना चाहिए।)

एताविद्दनपर्यन्तं ब्रह्मत्वं धारितं मया। जीर्णत्वात्त्वत्परित्यागो गच्छ सूत्र यथासुखम्।।

माला विधि

(प्रत्येक मणि के बीच में ग्रन्थि दी हुई, सुमेरु को छोड़कर १०८ मणियों की माला सबसे उत्तम है। माला को अनामिका पर रखकर अंगूठे से स्पर्श करते हुए मध्यमा से करें। सुमेरु का उल्लंघन नहीं करें। दोबारा फेरते समय सुमेरु के पास से माला घुमाकर जप करें।

माला प्रार्थना

(माला का पूजन तथा प्रार्थना करने से विशेष फल होता है।) ॐ महामाये! महामाले! सर्वशक्तिस्वरूपिण। चतुर्वर्गस्त्विय न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव।। अविघ्नं कुरु माले! त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे। जपकाले च सिद्धयर्थं प्रसीद मम सिद्धये।।

संध्या प्रकरण (संक्षेप में)

उतमा तारकोपेता मध्यमा लुप्ततारका। अधमा सूर्य सहिता प्रात: संध्या त्रिधा स्मृता। (नित्य संध्या करने से मनुष्य पापरहित होकर विष्णु (ब्रह्म) लोक को प्राप्त कर लेता है। प्रात: संध्या सनक्षत्रां मध्याह्ने मध्य भास्करम्। ससूर्यां पश्चिमां संध्या तिस्न: संध्या उपासते।। (संध्या न करने से द्विज होता हुआ भी शूद्र के सम व मृत:श्वा चाभि जायते।) (समय पर की गयी संध्या कामधेनु के समान फल देती है।) गृहेषु तत्समा संध्या गोष्ठे शतगुणास्मृता। नद्यां शतगुणा प्रोक्ता अनन्ता शिवसंनिधौ।। प्राणायाम के तीन प्रकार होते हैं - १. पूरक; २. कुम्भक; ३. रेचक गायत्री जप से पूर्व षडङ्गन्यास करें - १. ॐ हृदयाय नम: २. ॐ भू: शिर से स्वाहा ३. ॐ भुव: शिखायै पषट् ४. ॐ स्व: कवचायहुम् ५. ॐ भूर्भुव: स्व: नैत्राभ्यां वौषट् ५. ॐ भूर्भुव: स्व: अस्त्राय फट्

प्रातः संध्या

(दाहिनी अनामिका की जड़ में दो कुशा की ओर बायीं में तीन की पवित्री धारण करे, ईशान व पूर्व मुख होकर आचमन करें।)

ॐ केशवाय नम:। ॐ नारायणाय नम:। ॐ माधवाय नम:। (पश्चात् अंगूठे की जड़ से दो बार होठों को पोंछकर 'ॐ हृषीकेशाय नम:' बोलकर हाथ धोवें।

जप के पूर्व की चौबीस मुद्राएं

सुमुखं सम्पुटं चैव विततं विस्तृतं तथा। द्विमुखं त्रिमुखं चैव चतुष्पञ्चमुखं तथा।। षणमुखाऽधोमुखं चैव व्यापकाञ्जलिकं तथा। शकटं यमपाशं च ग्रथितं चोन्मुखोन्मुखम्।। प्रलम्बं मुष्टिकं चैव मत्स्य: कूर्मो वराहकम्। सिंहाक्रान्तं महाक्रान्तं मुद्ररं पल्लवं तथा।। एता मुद्राश्चतुर्विंशज्जपादौ परिकीर्तिता:।।

- १. सुमुखम् दोनों हाथों की अँगुलियों को मोड़कर परस्पर मिलाये।
- २. सम्पुटम् दोनों हाथों को फुलाकर मिलाये।
- ३. विततम् दोनों हाथों की हथेलियां परस्पर सामने करे।
- ४. विस्तृतम् दोनों हाथों की अंगुलियां खोलकर दोनों को कुछ अधिक अलग करे। ५. द्विमुखम् दोनों हाथों की किनिष्ठिका से किनिष्ठिका तथा अनामिका से अनामिका मिलाये। ६. त्रिमुखम् पुनः दोनों मध्यमाओं को मिलाये। ७. चतुर्मुखम् दोनों तर्जिनयां और मिलाये। ८. पञ्चमुखम् दोनों अंगूठे और मिलाये। ९. षणमुखम् हाथ वैसे ही रखते हुए दोनों किनिष्ठिकाओं को खोले। १०. अधोमुखम् उलटे हाथों की अंगुलियों को मोड़े तथा मिलाकर नीचे की ओर करे। ११. व्यापकाञ्चलिकम् वैसे ही मिले हुए हाथों को शरीर की ओर घुमाकर सीधा करे। १२. शकटम् दोनों हाथों को उलटाकर अंगूठे से अंगूठा मिलाकर तर्जिनयों को सीधा रखते हुए मुट्ठी बांधे। १३. यमपाशम् तर्जिनी से तर्जिनी बांधकर दोनों मुट्ठियां बांधे। १४. ग्रिथतम् दोनों हाथों की अंगुलियों को परस्पर गूंथे। १५. उन्मुखोन्मुखम् हाथों की पांचों अंगुलियों को मिलाकर प्रथम बायें पर दाहिना, फिर दाहिने पर बायां हाथ रखे। १६. प्रलम्बम् अंगुलियों को कुछ मोड़ दोनों हाथों को उलटाकर नीचे की ओर करे। १७. मुष्टिकम् दोनों अँगूठे उपर रखते हुए दोनों मुट्ठियां बांधकर मिलाये। १८. मत्स्यः दाहिने हाथ की पीठ पर बायां हाथ उलटा रखकर दोनों अंगूठे हिलाये। १९. कुर्मः सीधे बायें हाथ की मध्यमा, अनामिका तथा किनिष्ठका को मोड़कर उलटे

दाहिने हाथ की मध्यमा, अनामिका को उन तीनों अंगुलियों के नीचे रखकर तर्जनी पर दाहिनी कनिष्ठिका और बायें अंगूठे पर दाहिनी तर्जनी रखे। २०. वराहकम – दाहिनी तर्जनी को बांये अंगूठे से मिला दोनों हाथों की अंगुलियों को परस्पर बांधे। २१. सिंहाक्रान्तम् – दोनों हाथों को कानों के समीप करे। २२. महाक्रान्तम् – हाथों की अंगुलियों को कानों के समीप करे। २३. मुद्गरम् – मुट्ठी बांधकर दाहिनी कुहनी बांयी हथेली पर रखे। २४. पल्लवम् – हाथों की अंगुलियां मुख के सम्मुख हिलाये।

विनियोग (पूर्व में जल छोड़े)

ॐ अपवित्रः पवित्रो वेत्यस्य वामदेव ऋषिः विष्णुर्देवता अनुष्टुप् छन्दः मुखे हृदि च पवित्रकरणे विनियोगः।।

पवित्र-करण मन्त्र

(नीचे लिखे मन्त्र से शरीर पर जल छिड़के।)

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा। यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।

आसन पवित्र-करण मन्त्र का विनियोग

ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मी देवता आसन-पवित्रकरणे विनियोगः।। (नीचे लिखे मन्त्र से आसन पर जल के छीटें दें।)

ॐ पृथ्वि! त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि! पवित्रं कुरु चासनम्।। (दाहिने हाथ में जल आदि ले संकल्प करें। अमुकनामाहं-सकलदुरितक्षयपूर्वक ब्रह्मवर्चसकामार्थ प्रात: सन्थ्योपासन कर्म करिष्ये, कहकर जलादि छोड़ दें।

आचमन-मन्त्र का विनियोग

ॐ ऋतं चेत्यघमर्षणसूक्तस्य माधुच्छन्दसोऽघमर्षण ऋषि-रनुष्टुप् छन्दो भाववृतं दैवतं आचमने विनियोग:।

ॐ ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः समुद्रादर्णवादिध संवत्सरो अजायत। अहोरात्राणि विदधिद्वश्वस्य मिषतो वशी। सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्। दिवञ्च पृथिवीञ्चान्तरिक्षमथो स्वः।।

प्राणायाम-मन्त्र

ध्यान करते हुए नीचे लिखे मंत्र को प्रत्येक प्राणायाम में तीन-तीन बार एक साथ जपें। अथवा प्रत्येक प्राणायाम में एक-एक बार जप कर इस प्रकार तीन बार करें। ॐ भू: ॐ भुव: ॐ स्व: ॐ मह: ॐ जन: ॐ तप: ॐ सत्यम्। ॐ तत्सिवतुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो न: प्रचोदयात्। ॐ आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुव: स्वरोम्।।

विनियोग

ॐ सूर्यश्चमेति नारायण ऋषिः प्रकृतिश्छन्दः सूर्यो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः। ॐ सूर्यश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्ताम्। यद्रात्र्या पापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भयामुदरेण शिश्ना रात्रिस्तदवलुम्पतु यिकंश्चिद्द्रिरतं मिय इदमहमापोऽमृतयोनौ सूर्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा।।

विनियोग

ॐ आपो हिष्ठेत्यादि त्र्यृचस्य सिन्धुद्वीप ऋषिर्गायत्री छन्दः आपो देवता मार्जने विनियोगः।। (बायें हाथ में जल लें, कुशा या दाहिने हाथ की तीन बड़ी अंगुलियों से नीचे लिखे मन्त्र बोलते हुए १ से ७ तक अपने शरीर पर ८ वें से पृथ्वी पर और ९ वें से मस्तक पर जल छोड़ें।) ॐ आपो हिष्ठामयो भुवः १। ॐ ता न ऊर्जे दधातन् २। ॐ महेरणाय चक्षसे ३। ॐ यो वः शिवतमो रसः ४। ॐ तस्य भाजयते ह नः ५। ॐ उशतीरिव मातरः ६। ॐ तस्माऽअरङ्गमामवः ७। ॐ यस्य क्षयाय जिन्वथ ८। ॐ आपो जनयथा च नः।।९।।

अधमर्षण विनियोग

- ॐ द्रुपदादिवेत्यस्याश्विसरस्वतीन्द्रा ऋषयोऽनुष्टुप्छन्दः आपो देवता शिरस्से के विनियोगः। (नीचे लिखे मन्त्र से तीन या एक बार मस्तक पर जल छोड़ें।)
- ॐ द्रुपदादिव मुमुचानः स्विन्नः स्नातो मलादिव। पूतं पवित्रेणेवाज्यमापः शुन्धन्तु मैनसः।। अघमर्षण विनियोग
- ॐ अघमर्षणसूक्तस्य माधुच्छन्दसोऽघमर्षण ऋषिरनुष्टुप्छन्दो भाववृतो देवता अश्वमेधावभृथे विनियोगः।
- (दाहिने हाथ में जल ले, नासिका के समीप करके नीचे लिखा मन्त्र तीन बार या एक बार पढ़ें और ध्यान करें कि वह जल श्वास के साथ नासिका के बाएं छिद्र से भीतर जाकर अन्त:करण को शुद्ध करके दाहिने छिद्र से बाहर निकल आया है। उस जल को बिना देखे बायीं ओर फेंक देवें। पश्चात् हाथ धोवें।)
- ॐ ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत। ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः। समुद्रादर्णवादिध संवत्सरो अजायत। अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी। सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्। दिवञ्च पृथिवीञ्चान्तरिक्षमथो स्वः।
- ॐ अन्तश्चरसीति तिरश्चीन ऋषिरनुष्टुप्छन्दः आपो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः।

आचमन

ॐ अन्तश्चरिस भूतेषु गुहायां विश्वतोमुख:। त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कार आपो ज्योती रसोऽमृतम्।।

विनियोग

ॐ ओंकारस्य ब्रह्मा ऋषिँदैवी गायत्री छन्द:-परमात्मा देवता, भूर्भुव: स्वरिति महाव्याहृतीनां परमेष्ठी प्रजापतिऋषि: अग्निवायुसूर्या देवता: गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि। तत्सिवतुरित्यस्य विश्वामित्र ऋषि: सिवता देवता गायत्री छन्द: अर्घ्यदाने विनियोग:।

अर्घ-विधि

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।। ब्रह्मस्वरूपिणे सूर्यनारायणायनमः।।

(प्रात: सूर्योदय से तथा सायं सूर्यास्त से ३ घड़ी बाद सन्ध्या करें तो प्रायश्चित के निमित्त नीचे लिखे मन्त्र से एक अर्घ और दें।)

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।।

उपस्थान

(प्रात:काल में दाहिना पैर या एड़ी उठाकर दोनों हाथों को सीधा रखते हुए, मध्याह्न में दोनों हाथों को ऊपर करके और सायंकाल बैठे हुए हाथ बंद कमल के समान जोड़कर उपस्थान करें। उपर्युक्त विधि से प्रत्येक विनियोग के साथ एक-एक मन्त्र बोलकर भी कर सकते हैं।)

- ॐ उद्वयमित्यस्य हिरण्यस्तूप ऋषिरनुष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता, ॐ उदुत्यमिति प्रस्कण्व ऋषिर्गायत्री छन्दः सूर्यो देवता ॐ चित्रमित्यस्य कौत्स ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता
- ॐ तञ्चक्षुरिति दध्यड्डाथर्वण ऋषिरक्षरातीतपुर उष्णिक्छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः।।
- ॐ उद्वयन्तमसस्परि स्व: पश्यन्त उत्तरम्। देवन्देवत्रा सूर्यमगन्मज्योतिरुत्तमम्।।१।।
- ॐ उदुत्यञ्जातवेदसन्देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्यम।।२।।
- ॐ चित्रन्देवाना-मुदगादनीकञ्चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्ने: आप्राद्यावापृथिवीं अन्तरिक्ष र्ठः सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च।।३।।
- ॐ तच्चक्षुर्देविहतम्पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतञ्जीवेम शरदः शत र्ठः शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्।।४।।

विनियोग

ॐ कारस्य ब्रह्मा ऋर्षिगायत्री छन्दोऽग्निर्देवता, ॐ त्रिव्याहृतीनां प्रजापित–ऋषिर्गायत्र्युष्णि– गनुष्टुभश्छन्दांस्यग्निवाय्वादित्या देवता, ॐ गायत्र्या विश्वामित्रऋषिर्गायत्री छन्द: सिवता देवता जपे विनियोग:।।

ध्यान

ॐ श्वेतवर्णा समुद्दिष्ठा कौशेयवसना तथा। श्वेतैर्विलेपनै: पुष्पैरलङ्कारैञ्च भूषिता।। आदित्यमण्डलस्था च ब्रह्मलोकगताऽथवा। अक्षसूत्रधरा देवी पद्मासनगता शुभा।।

विनियोग

ॐ तेजोऽसीति देवा ऋषयः शुक्रं देवतं गायत्री छन्दो गायत्र्यावाहने विनियोगः।।
आवाहन मन्त्र

ॐ तेजोसि शुक्रमस्यमृतमसि धामनामाऽसि। प्रियं देवानामनाधृष्टं देवयजनमसि।।
विनियोग

गायत्र्यसीति विवस्वान् ऋषिः स्वराण्महापंक्तिश्छन्दः परमात्मा देवता गायत्र्युपस्थाने विनियोगः।

उपस्थान-मन्त्र

ॐ गायत्र्यस्येकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पद्यपदिस न हि पद्मसे नमस्ते तुरीयाय दर्शताय पदाय परोरजसेऽसावदो मा प्रापत्।।

गायत्री शापविमोचन

(ब्रह्मा विसष्ठ और विश्वामित्र ने गायत्री मन्त्र को शाप दे रखा है, अत: शाप निवृत्ति के लिए शाप-विमोचन करें। (यथेच्छ है)) (जप मुद्रा यहाँ पर भी कर सकते हैं परन्तु एक बार ही करे)

गायत्री मन्त्र

(नीचे लिखे गायत्री मन्त्र का कम से कम १ माला जप करना चाहिए। गायत्री मन्त्र का २४ लक्ष जप करने से एक पुरश्चरण होता है। अतः स्वयं कर अथवा ब्रह्माण से जप करावें।) ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।।

प्रदक्षिणा मन्त्र

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च। तानि तानि प्रणश्यन्तु प्रदक्षिणपदे पदे।। **क्षमा प्रार्थना**

यदक्षर-पदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद् भवेत्। तत्सर्वं क्षम्यतां देवि! प्रसीद परमेश्विर।। विनियोग

ॐ उत्तमे शिखरे इत्यत्य वामदेव ऋषिः गायत्री देवता अनुष्टुप्छन्दः गायत्रीविसर्जने विनियोगः।।

विसर्जन

ॐ उत्तमे शिखरे देवि! भूम्यां पर्वतमूर्द्धिन। गायित्रच्छन्दसां मातर्गच्छ देवि! यथासुखम्।। (सन्ध्या समाप्त होने पर पात्रों में बचा हुआ जल अपवित्र हो जाता है इसलिए उसे फेंक देना चाहिए। जपादि समाप्त होने के पश्चात् आसन के नीचे जल छोड़ कर मस्तक में लगावें।)

संकल्प - अनेनाद्य कृतेन प्रातः सन्ध्याख्येन कर्मणा भगवान् श्री परमेश्वरः प्रीयताम् न मम।

मध्याह्न सन्ध्या

(प्रात: सन्ध्या के अनुसार करें।) (उदङमुख)

संकल्प - अद्याहं मध्याह्नसन्ध्याख्यं कर्म करिष्ये -

(प्राणायाम के बाद 'ॐ सूर्यश्चमेति' के विनियोग तथा आचमनमन्त्र के स्थान पर नीचे लिखे मन्त्र पढ़ें।)

विनियोग - ॐ आपः पुनित्विति विष्णुर्ऋषिरनुष्टुप्छन्द आपो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः।।

आचमनम् - ॐ आपः पुनन्तु पृथिवीं पृथ्वी पूता पुनातु मां पुनातु ब्रह्मणस्तपित्रब्रिह्मपूता पुनातु मां, यदुच्छिष्टम्भोज्यं च यद्वा दुश्चिरतं मम। सर्व पुनन्तु मामापोऽसतां च प्रतिग्रह र्ठे. स्वाहा।

(दोनों हाथ ऊपर उठाकर उपस्थान करें।)

अर्घ - सीधा खड़ा होकर सूर्य को एक अर्घ दें।

विष्णुरूपा गायत्री ध्यान - ॐ मध्याह्ने विष्णुरूपां च तार्क्यस्थां पीतवाससाम्। युवतीं च यजुर्वेदां सूर्यमण्डलसंस्थिताम्।

(सूर्यमण्डल में स्थित, युवा अवस्थावाली, पीला वस्त्र, शंख, चक्र, गदा तथा पद्म, धारण कर गरुड़ पर बैठी हुई यजुर्वेद से युक्त गायत्री का ध्यान करें।)

संकल्प - अनेन मध्याह्नसन्ध्याख्येन कर्मणा भगवान् परमेश्वरः प्रीयतां न मम। सायं-सन्ध्या - (प्रात सन्ध्या के अनुसार करें।)

(पश्चिमाभिमुख हो सूर्य रहते करना उत्तम है। प्राणायाम के बाद ॐ सूर्यश्चमेति, के विनियोग तथा आचमन मन्त्र के स्थान पर नीचे लिखे मन्त्र पढ़ें।)

विनियोग - ॐ अग्निश्चमेति रुद्र ऋषिः प्रकृतिश्छन्दोऽग्निर्देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः।।

आचमन - ॐ अग्निश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्ताम्, यदह्वा पापमकार्षम्। मनसा वाचा हस्ताभ्याम् पद्भयामुदरेण शिश्ना अहस्तदवलुम्पतु। यित्किश्चिद्दुरितं मिय इदमहमापोऽमृतयोनौ सत्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा।। (बोल कर आचमन करें।)

(दोनों हाथ बंद कमल के सदृश करके उपस्थान करें। 'शिवरूपा-गायत्री ध्यान' प्रातः सन्ध्या के समान)। (बैठकर तीन अर्घ्य देना चाहिए।)

ॐ सायाह्ने शिवरूपां च वृद्धां वृषभवाहिनीम्। सूर्यमण्डलमध्यस्थां सामवेदसमायुताम्।। (सूर्यमण्डल में स्थित, वृद्धारूपा, त्रिशूल, डमरू, पाश तथा पात्र लिये बैल पर बैठी हुई सामवेद से युक्त गायत्री का ध्यान करें।)

संकल्प - कृतेन सायंसन्ध्याख्येन कर्मणा भगवान् श्री परमेश्वर: प्रीयतां न मम।

* (क) जप के बाद की आठ मुद्राएं

सुरिभर्ज्ञानवैराग्ये योनिः शंखोऽथ पङ्कजम्। लिङ्गनिर्वाणमुद्राश्च जपान्तेऽष्टौ प्रदर्शयेत्।। (१) सुरिभः - दोनों हाथों की अंगुलियां गूंथकर बायें हाथ की तर्जनी से दाहिने हाथ की मध्यमा, मध्यमा से तर्जनी, अनामिका से किनिष्ठका और किनिष्ठिका से अनामिका मिलाये। (२) ज्ञानम् - दाहिने हाथ की तर्जनी से अंगूठा मिलाकर हृदय में तथा इसी प्रकार बायां हाथ बायें घुटने पर सीधा रखे। (३) वैराग्यम् - दोनों तर्जनियों से अंगूठे मिलाकर घुटनों पर सीधे रखे। (४) योनिः - दोनों मध्यमाओं के नीचे से बायीं तर्जनी के ऊपर दाहिनी अनामिका और दाहिनी तर्जनी पर बायीं अनामिका रख दोनों तर्जनियों से बांध, दोनों मध्यमाओं को ऊपर रखे। (५) शंखः - बायें अंगूठे को दाहिनी मुट्ठी में बांध, दाहिने अंगूठे से बायीं अंगुलियों को मिलाये। (६) पङ्कजम् - दोनों हाथों के अंगूठे तथा अंगुलियों को मिलाकर ऊपर की ओर करे। (७) लिङ्गम् - दाहिने अंगूठे को सीधा रखते हुए दोनों हाथों की अंगुलियों को गूंथकर बायां अंगूठा दाहिने अंगूठे की जड़ के ऊपर रखे। (८) निर्वाणम् - उलटे बायें हाथ पर दाहिना हाथ सीधा रख, अंगुलियों को परस्पर गूंथ, दोनों हाथ अपनी ओर से घुमा, दोनों तर्जनियों को सीधा कान के समीप करे।

गायत्रीकवच

ॐ अस्य श्रीगायत्रीकवस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री छन्दो गायत्री देवता ॐ भूः बीजम्, भुवः शक्तिः स्वः कीलकम्, गायत्रीप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः। (निम्नलिखित मन्त्रों से गायत्री माता का ध्यान करे-)

पञ्चवक्त्रां दशभुजां सूर्यकोटिसमप्रभाम्। सावित्रीं ब्रह्मवरदां चन्द्रकोटिसुशीतलाम्।। त्रिनेत्रां सितवक्त्रां च मुक्ताहारिवराजिताम्। वराभयाङ्कुशकशाहेमपात्राक्षमालिकाम्।। शङ्ख्वचक्राब्जयुगलं कराभ्यां दधतीं वराम्। सितपङ्कजसंस्थां च हंसारूढां सुखस्मिताम्। ध्यात्वैवं मानसाम्भोजे गायत्रीकवचं जपेत्। (तदनन्तर गायत्री कवच का पाठ करे-) ॐ ब्रह्मोवाच

विश्वामित्र! महाप्राज्ञ! गायत्रीकवचं शृणु। यस्य विज्ञानमात्रेण त्रैलोक्यं वशयेत् क्षणात्।। सावित्री मे शिरः पातु शिखायाममृतेश्वरी। ललाटं ब्रह्मदैवत्या भ्रुवौ मे पातु वैष्णवी।। कर्णौ मे पातु रुद्राणी सूर्या सावित्रिकाऽम्बिके। गायत्री वदनं पातु शारदा दशनच्छदौ।। द्विजान् यज्ञप्रिया पातु रसनायां सरस्वती। सांख्यायनी नासिकां मे कपोलौ चन्द्रहासिनी।। चिबुकं वेदगर्भा च कण्ठं पात्वघनाशिनी। स्तनौ मे पातु इन्द्राणी हृदयं ब्रह्मवादिनी।। उदरं विश्वभोक्त्री च नाभौ पातु सुरप्रिया। जघनं नारसिंही च पृष्ठं ब्रह्माण्डधारिणी।। पाश्वौ मे पातु पद्माक्षी गृह्यं गोगोप्त्रिकाऽवतु। ऊर्वोरोंकाररूपा च जान्वोः संध्यात्मिकावतु।। जङ्मयोः पातु अक्षोभ्या गुल्फयोर्ब्रह्मशीर्षका। सूर्या पदद्वयं पातु चन्द्रा पादाङ्गलीषु च।। सर्वाङ्गं वेदजननी पातु मे सर्वदाऽनघा। इत्येतत् कवचं ब्रह्मन् गायत्र्याः सर्वपावनम्। पृण्यं पवित्रं पापघ्नं सर्वरोगिनवारणम्।।

त्रिसन्ध्यं यः पठेद्विद्वान् सर्वान् कामानवाप्नुयात्। सर्वशास्त्रार्थतत्त्वज्ञः स भवेद्वेदवित्तमः।। सर्वयज्ञफलं प्राप्य ब्रह्मान्ते समवाप्नुयात्। प्राप्नोति जपमात्रेण पुरुषार्थांश्चतुर्विधान्।।

।।श्री विश्वमित्र संहितोक्तं गायत्री कवचं सम्पूर्णम्।।

गायत्री तर्पण (केवल प्रात: संध्या में करे)

ॐ गायत्र्या विश्वामित्र ऋषिः सविता देवता गायत्री छन्दः गायत्रीतर्पणे विनियोगः। ॐ भूः ऋग्वेदपुरुषं तर्पयामि। ॐ भुवः यजुर्वेदपुरुषं तः। ॐ स्वः सामवेदपुरुषं तः। ॐ महः अथर्ववेदपुरुषं तः। ॐ जनः इतिहासपुराणपुरुषं तः। ॐ तपः सर्वागमपुरुषं तः। ॐ सत्यं सत्यलोकपुरुषं तः। ॐ भूः भूलोंकपुरुषं तः। ॐ भुवः भुवलोंकपुरुषं तः। ॐ स्वः स्वलोंकपुरुषं तः। ॐ भूः एकपदां गायत्रीं तः। ॐ भुवः द्विपदां गायत्रीं तः। ॐ स्वः त्रिपदां गायत्रीं तः। ॐ भूर्भुवः स्वः चतुष्पदां गायत्रीं तः। ॐ उषसीं तः। ॐ गायत्रीं तः। ॐ सावित्रीं तः। ॐ सरस्वतीं तः। ॐ वेदमातरं तः। ॐ पृथिवीं तः। ॐ अजां तः। ॐ कौशिकीं तः। ॐ सांकृतिं तः। ॐ सार्वजितीं तर्पयामि। ॐ तत्सद्ब्रह्यार्पणमस्त्।। (देवीभागवत)

* तत्सद्ब्रह्मार्पणं कर्म कृत्वा त्रिर्विष्णु स्मरेत्। (आचारभूषण)

तर्पण प्रयोग

(धर्मशास्त्र में लिखा है कि प्रत्येक गृहस्थी लोगों को देवर्षि मनुष्य पितृ तर्पण अवश्य करना चाहिए! यदि नित्य नहीं कर सके तो कम-से-कम अमावस्या, ग्रहण, व्यतिपात, तीर्थयात्रा, संक्रांति महालय श्राद्धपक्ष में तो अवश्य तर्पण करना चाहिए। तर्पण नहीं करने से देवता व पितृ मनुष्य का रक्त पान करते हैं।

जल व दूध से तर्पण करें, कई आचार्यों का मत है कि घृत व मधु से तर्पण करने से आयु आरोग्यता व धन की प्राप्ति होती है। पारस्करगृह्य सूत्र के अनुसार पितृ तर्पण में 'स्वधा नमः' का प्रयोग करे।)

तर्पण पितृयज्ञ

तर्पण प्रयोग विधि

(गायत्री मन्त्र से शिखा बांधकर तिलक लगाकर प्रथम दाहिनी अनामिका के मध्य पोर में दो कुशों और बायीं अनामिका में तीन कुशों की पित्रत्री धारण कर ले। फिर हाथ में त्रिकुश, यत्र, अक्षत और जल लेकर निम्नलिखित संकल्प पढ़े-)

अद्य श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं देवर्षिमनुष्यपितृतर्पणं करिष्ये।

आवाहन - इसके बाद तांबे के पात्र में जल और चावल डालकर त्रिकुश को पूर्वाग्र रखकर उस पात्र को दायें हाथ में लेकर बायें हाथ से ढककर नीचे लिखा मन्त्र पढ़कर देव-ऋषियों का आवाहन करे।

आवाहन मन्त्र - ब्रह्मादयः सुराः सर्वे ऋषयः सनकादयः। आगच्छन्तु महाभागा ब्रह्माण्डोदरवर्तिनः।।

(१) देव-तर्पण विधि - देव तथा ऋषि तर्पण में - १. पूरब दिशा की ओर मुंह करे। २. जनेऊ को सव्य रखे। ३. दाहिना घुटना जमीन पर लगाकर बैठे। ४. अर्घ्य पात्र में चावल छोड़े। ५. तीनों कुशों को पूर्व की ओर अग्रभाग कर रखे। ६. जल की अञ्जलि एक-एक हो। ७. देव तीर्थ से अर्थात् दायें हाथ की अंगुलियों के अग्रभाग से दे। ८. जलाञ्जलि को सोना, चांदी, तांबा अथवा कांसे के बर्तन में डाले। यदि नदी में तर्पण किया जाये तो दोनों हाथों को मिलाकर जल से भरकर गौ की सींग जितना ऊंचा उठाकर जल में ही अञ्जलि डाल दे।

निम्नलिखित प्रत्येक नाम-मन्त्र के बाद 'तृप्यताम्' कहकर एक-एक अञ्जलि जल देता जाये।

ॐ ब्रह्मा तृप्यताम्। ॐ विष्णुस्तृप्यताम्। ॐ रुद्रस्तृप्यताम्। ॐ प्रजापितस्तृप्यताम्। ॐ देवास्तृप्यन्ताम्। ॐ छन्दासि तृप्यन्ताम्। ॐ वेदास्तृप्यन्ताम्। ॐ ऋषयस्तृप्यन्ताम्। ॐ पराणाचार्यास्तृप्यन्ताम्। ॐ गन्धर्वास्तृप्यन्ताम्। ॐ इतराचार्यास्तृप्यन्ताम्। ॐ संवत्सरः सावयवस्तृप्यन्ताम्। ॐ देव्यस्तृप्यन्ताम्। ॐ अप्सरसस्तृप्यन्ताम्। ॐ देवानुगास्तृप्यन्ताम्। ॐ नागास्तृप्यन्ताम्। ॐ सागरास्तृप्यन्ताम्। ॐ पर्वतास्तृप्यन्ताम्। ॐ सिरितस्तृप्यन्ताम्। ॐ मनुष्यास्तृप्यन्ताम्। ॐ यक्षास्तृप्यन्ताम्। ॐ पर्शाचास्तृप्यन्ताम्। ॐ प्रणास्तृप्यन्ताम्। ॐ प्रणास्तृप्यन्ताम्। ॐ प्रणास्तृप्यन्ताम्। ॐ भूतािन तृप्यन्ताम्। ॐ पर्शवस्तृप्यन्ताम्। ॐ वनस्पतयस्तृप्यन्ताम्। ॐ ओषधयस्तृप्यन्ताम्। ॐ भूतग्रामश्चतुर्विधस्तृप्यन्ताम्। (२) ऋषि-तर्पण - इसी प्रकार निम्नाङ्कित मन्त्र वाक्यों से मरीचि आदि ऋषियों को भी एक-एक अञ्जलि जल दे -

- ॐ मरीचिस्तृप्यताम्। ॐ अत्रिस्तृप्यताम्। ॐ अङ्गिरास्तृप्यताम्। ॐ पुलस्त्यस्तृप्यताम्। ॐ पुलहस्तृप्यताम्। ॐ क्रतुस्तृप्यताम्। ॐ वसिष्ठस्तृप्यताम्। ॐ प्रचेतास्तृप्यताम्। ॐ भृगुस्तृप्यताम्। ॐ नारदस्तृप्यताम्।
- (३) दिव्य मनुष्य-तर्पण दिव्य मनुष्य-तर्पण में १. उत्तर दिशा की ओर मुंह करे। २. जनेऊ को कंठी की तरह कर ले। ३. गमछे को भी कंठी की तरह कर ले। ४. सीधा बैठे। कोई घुटना जमीन पर न लगाये। ५. अर्घ्यपात्र में जौ छोड़े। ६. तीनों कुशों को उत्तराग्र रखे। प्राजापत्य (काय) तीर्थ से दे अर्थात् कुशों को दाहिने हाथ की कनिष्ठिका के मूलभाग में रखकर यहीं से जल दे। ८. दो-दो अञ्जलियां दे।
- अञ्जलिदान के मन्त्र ॐ सनकस्तृप्यताम् (२)। ॐ सनन्दनस्तृप्यताम् (२)। ॐ सनातनस्तृप्यताम् (२)। ॐ किपलस्तृप्यताम् (२)। ॐ आसुरिस्तृप्यताम् (२)। ॐ वोढुस्तृप्यताम् (२)। ॐ पञ्चशिखस्तृप्यताम् (२)।
- ४. दिव्य पितृ-तर्पण पितृ-तर्पण में १. दक्षिण दिशा की ओर मुंह करे। २. अपसव्य हो जाये अर्थात् जनेऊ को दाहिने कंधे पर रखकर बायें हाथ के नीचे ले जाये। ३. गमछे को भी दाहिने कंधे पर रखे। ४. बायां घुटना जमीन पर लगाकर बैठे। ५. अर्घ्य पात्र में कृष्ण तिल छोड़े। ६. कुशों को बीच से मोड़कर उनकी जड़ और अग्रभाग को दाहिने हाथ में तर्जनी और अंगूठे के बीच में रखे। ७. पितृ तीर्थ से अर्थात् अंगूठे और तर्जनी के मध्यभाग से अञ्जलि दे। ८. तीन-तीन अञ्जलियां दे।

उपर्युक्त नियम से प्रत्येक मन्त्र से तीन-तीन अञ्जलियों को देने के मन्त्र इस प्रकार है-ॐ कव्यवाडनलस्तृप्यताम् इदं सितलं जलं (गङ्गाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः, तस्मै स्वधा नमः, तस्मै स्वधा नमः। ॐ सोमस्तृप्यताम् इदं सितलं जलं (गङ्गाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः (३)। ॐ यमस्तृप्यताम् इदं सितलं जलं (गङ्गाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः (३)। ॐ अर्यमा तृप्यताम् इदं सितलं जलं (गङ्गाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः (३)। ॐ अग्निष्वात्ताः पितरस्तृप्यन्ताम् इदं सितलं जलं (गङ्गाजलं वा) तेभ्य स्वधा नमः, तेभ्यः स्वधा नमः। ॐ सोमपाः पितरस्तृप्यन्ताम् इदं सितलं जलं (गङ्गाजलं वा) तेभ्य स्वधा नमः (३)। ॐ बिहषदः पितरस्तृप्यन्ताम् इदं सितलं जलं (गङ्गाजलं वा) तेभ्य स्वधा नमः (३)।

- (५) **यम-तर्पण -** इसी प्रकार निम्नलिखित प्रत्येक नाम से यमराज को पितृतीर्थ से ही दक्षिणाभिमुख तीन-तीन अञ्जलियां दे -
- ॐ यमाय नमः (३)। ॐ धर्मराजाय नमः (३)। ॐ मृत्यवे नमः (३)। ॐ अनन्तकाय नमः (३)। ॐ वैवस्वताय नमः (३)। ॐ कालाय नमः (३)। ॐ सर्वभूतक्षयाय नमः (३)। ॐ औदुम्बराय नमः (३)। ॐ दध्नाय नमः (३)। ॐ नीलाय नमः (३)। ॐ परमेष्ठिने नमः (३)। ॐ वृकोदराय नमः (३)। ॐ चित्राय नमः (३)। ॐ चित्रगुप्ताय नमः (३)। ॐ
- ६. **मनुष्यिपतृ-तर्पण -** पितरों का तर्पण करने के पूर्व निम्नाङ्कित मन्त्रों से हाथ जोड़कर प्रथम उनका आवाहन करे -
- ॐ उशन्तस्त्वा नि धीमह्युशन्तः सिमधीमिह। उशत्रुशत आ वह पितॄन् हिवषे अत्तवे।। आ यन्तु नः पितरः सोम्यासोऽग्निष्वात्ताः पिथिभिर्देवयानैः। अस्मिन् यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधि ब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान्।।

(यदि ऊपर लिखे वेदमन्त्रों का शुद्ध उच्चारण सम्भव न हो तो निम्नलिखित वाक्य का उच्चारण कर पितरों का आवाहन करे -)

ॐ आगच्छन्तु मे पितर इमं गृह्णन्तु जलाञ्जलिम्।

(इसी तरह नीचे लिखे मन्त्रों का भी शुद्ध उच्चारण सम्भव न हो तो मन्त्रों को छोड़कर केवल 'अमुक गोत्र: अस्मित्पता... अमुक स्वरूपः' आदि संस्कृत वाक्य बोलकर तिल के साथ-साथ तीन-तीन जलाञ्जलियां दें, यथा -

- १. अमुक गोत्र अस्मित्पता अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं (गङ्गाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः, तस्मै स्वधा नमः।
- २. अमुक गोत्र **अस्मित्यतामहः** अमुक शर्मा रुद्ररूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं (गङ्गाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः (३)।
- ३. अमुक गोत्र अस्मत्प्रिपतामहः अमुक शर्मा आदित्यरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं (गङ्गाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः (३)।

- १. अमुक गोत्रा अस्मन्माता अमुकी देवी गायत्रीस्वरूपा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा नमः तस्यै स्वधा नमः, तस्यै स्वधा नमः।
- २. अमुक गोत्रा अस्मित्पतामही **अमुकी देवी सावित्रीस्वरूपा** तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा नम: (३)।
- ३. अमुक गोत्रा अस्मत्प्रिपितामही **अमुकी देवी सरस्वतीस्वरूपा** तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा नम: (३)।

(यदि सौतेली मां मर गयी हो तो उसको भी तीन बार जल दे -) अमुकगोत्रा अस्मत्सापत्नमाता अमुकी देवी तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा नम: (३)। (इसके बाद निम्राङ्कित नौ मन्त्रों को पढ़ते हुए पितृ तीर्थ से जल गिराता रहे।) (जिन्हें वेदमन्त्र न आता हो, वे इसे ब्राह्मण द्वारा पढ़वावें या छोड़ भी सकते हैं।)

> ॐ उदीरतामवर उत्परास उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः। असुं य ईयुरवृका ऋतज्ञास्ते नोऽवन्तु पितरो हवेषु।। अङ्गिरसो नः पितरो नवग्वा अथर्वाणो भृगवः सोम्यासः। तेषां वय र्ठः सुमतौ यज्ञियानामपि भद्रे सौमनसे स्याम।। आ यन्तु नः पितरः सोम्यासोऽग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानैः। अस्मिन् यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधि ब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान्।।

ऊर्जं वहन्तीरमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्नुतम्। स्वधा स्थ तर्पयत मे पितॄन्।। पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। प्रिपतामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। अक्षन्पितरोऽमीमदत्त पितरोऽतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम्। ये चेह पितरो ये च नेह याँश्च विद्य याँ उ च न प्रविद्य। त्वं वेत्थ यित ते जातवेदः स्वधाभिर्यज्ञ र्ठः सुकृतं जुषस्व।

मधु वाता ऋतायते मधु क्षरिन्त सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः।।
मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव र्ठः रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता।।
मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमां अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः।।
ॐ मधु। मधु। मधु। तृप्यध्वम्। तृप्यध्वम्। तृप्यध्वम्।
(फिर नीचे लिखे मन्त्र का पाठ मात्र करे-)

ॐ नमो व: पितरो रसाय नमो व: पितर: शोषाय नमो व: पितरो जीवाय नमो व: पितर: स्वधायै नमो व: पितरो घोराय नमो व: पितरो मन्यवे नमो व: पितरो नमो वो गृहान्न: पितरो दत्त सतो व: पितरो देष्मैतद्व: पितरो वास आधत्त।

द्वितीय गोत्र तर्पण - इसके बाद द्वितीय गोत्रवाले (निनहाल के) मातामह (नाना) आदि का तर्पण करे। यहां भी पहले की भांति निम्नलिखित वाक्यों को तीन-तीन बार पढ़कर तिल सिहत जल की तीन-तीन अञ्जलियाँ पितृतीर्थ से दे -

अमुक गोत्र **अस्मन्मातामहः** (नाना) अमुकः वसुरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा नमः (३)।

अमुक गोत्र **अस्मत्प्रमातामहः** (परनाना) अमुकः रुद्ररूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा नमः (३)।

अमुक गोत्र अस्मद् **वृद्धप्रमातामहः** (वृद्ध परनाना) अमुकः आदित्यरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा नमः (३)।

अमुक गोत्रा **अस्मन्मातामही** (नानी) अमुकी देवी वसुरूपा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा नम: (३)।

अमुक गोत्रा अस्मत्प्रमातामही (परनानी) अमुकी देवी रुद्ररूपा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा नमः (३)।

अमुक गोत्रा **अस्मद्वृद्धप्रमातामही** (वृद्ध परनानी) अमुकी देवी आदित्यरूपा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा नम: (३)।

पत्न्यादितर्पण - इसके आगे पत्नी से लेकर आप्तपर्यन्त जो भी सम्बन्धी मृत हो गये हों, उनके गोत्र और नाम लेकर एक-एक अञ्जलि जल दे-

अमुक गोत्रा अस्मत्पत्नी (भार्या) अमुकी देवी गायत्रीस्वरूपा तृप्यताम् इदं सितलं जलं तस्यै स्वधा नमः।

अमुक गोत्र अस्मत्सुत (बेटा) अमुक शर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः।

अमुक गोत्रा अस्मत्कन्या (बेटी) अमुकी देवी तृप्यताम् इदं सितलं जलं तस्यै स्वधा नमः। अमुक गोत्र अस्मित्पतृव्य (पिता के भाई) अमुक शर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सितलं जलं तस्मै स्वधा नमः।

अमुक गोत्र अस्मन्मातुलः (मामा) अमुक शर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सितलं जलं तस्मै स्वधा नमः।

अमुक गोत्र अस्मद्भ्राता (अपना भाई) अमुक शर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः।

अमुक गोत्र **अस्मत्सापत्नभ्राता** (सौतेला भाई) अमुक शर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः।

अमुक गोत्रा अस्मित्पितृभिगिनी (बूआ) अमुकी देवी तृप्यताम् इदं सितलं जलं तस्यै स्वधा नमः।

अमुक गोत्रा **अस्मन्मातृभगिनी** (मौसी) अमुकी देवी तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नम:।

अमुक गोत्रा अस्मदात्मभिगनी (अपनी बहन) अमुकी देवी तृप्यताम् इदं सितलं जलं तस्यै स्वधा नमः।

अमुक गोत्रा **अस्मत्सापत्नभगिनी** (सौतेली बहन) अमुकी देवी तृप्यताम् इदं सितलं जलं तस्यै स्वधा नमः।

अमुक गोत्र अस्मच्छ्वशुरः (श्वशुर) अमुक शर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः।

अमुक गोत्र अस्मद्गुरुः अमुक शर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सितलं जलं तस्मै स्वधा नमः। अमुक गोत्रा अस्मदाचार्यपत्नी अमुकी देवी तृप्यताम् इदं सितलं जलं तस्यै स्वधा नमः। अमुक गोत्र अस्मच्छिष्यः वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सितलं जलं तस्मै स्वधा नमः।

अमुक गोत्र अस्मत्सखा अमुक शर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सितलं जलं तस्मै स्वधा नमः। अमुक गोत्र अस्मदाप्तपुरुषः अमुक शर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सितलं जलं तस्मै स्वधा नमः।

(इसके बाद सव्य होकर पूर्वाभिमुख हो सीधे बैठ जाय। कुशों को सीधा कर उनके अग्रभाग को भी पूरब की ओर कर ले। फिर नीचे लिखे श्लोकों को पढ़ते हुए देवतीर्थ से जल गिराये –

देवासुरास्तथा यक्षा नागा गन्धर्वराक्षसा:। पिशाचा गुह्यका: सिद्धाः कूष्माण्डास्तरवः खगा:।। जलेचरा भूनिलया वाय्वाधाराश्च जन्तवः। तृप्तिमेते प्रयान्त्वाशु मद्दत्तेनाम्बुनाखिलाः।। (इसके बाद अपसव्य होकर जनेऊ और अँगोछे को भी दाहिने कंधे पर रखकर दक्षिणाभिमुख हो जाये। कुशों को बीच से मोड़कर इनकी जड़ और अग्रभाग को दक्षिण की ओर कर दे। फिर नीचे लिखे हुए श्लोकों को पढ़कर पितृतीर्थ से जल गिराये-)

नरकेषु समस्तेषु यातनासु च ये स्थिता:। तेषामाप्यायनायैतद्दीयते सलिलं मया।। येऽबान्धवा बान्धवाश्च येऽन्यजन्मनि बान्धवा:। ते तृप्तिमखिला यान्तु यश्चास्मत्तोऽभिवाञ्छति।।

ये मे कुले लुप्तिपण्डाः पुत्रदारिववर्जिताः। तेषां हि दत्तमक्षय्यिमदमस्तु तिलोदकम्।। आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं देविषिपितृमानवाः। तृप्यन्तु पितरः सर्वे मातृमातामहादयः।। अतीतकुलकोटीनां सप्तद्वीपनिवासिनाम्। आब्रह्मभुवनाल्लोकादिदमस्तु तिलोदकम्।।

वस्त्र-निष्पीडन - इस प्रकार सब पितरों का तर्पण हो जाने के बाद अँगोछे की चार तह कर उसमें तिल तथा जल छोड़कर नीचे लिखा मन्त्र पढ़कर जल के बाहर बायीं ओर पृथ्वी पर निचोड़े -

ये के चास्मत्कुले जाता अपुत्रा गोत्रिणो मृता:। ते गृह्णन्तु मया दत्तं वस्त्रनिष्पीडनोदकम्।। भीष्मतर्पण - इसके बाद भीष्मपितामह को पितृतीर्थ और कुशों से जल दे -

वैय्याघ्रपद गोत्राय - भीष्मः शान्तनवो वीरः सत्यवादी जितेन्द्रियः। आभिरद्भिरवाप्नोतु पुत्रपौत्रोचितां क्रियाम्।।

सूर्य को अर्घ्यदान - इसके पश्चात् पात्र को जल तथा मिट्टी से स्वच्छ कर ले। तदनन्तर पूर्वोक्त रीति से आचमन और प्राणायाम कर सव्य हो जाय अर्थात् जनेऊ को बायें कंधे पर कर ले। अर्घ्य में फूल-चन्दन लेकर निम्नलिखित मन्त्र से सूर्य को अर्घ्य दे-नमो विवस्वते ब्रह्मन्! भास्वते विष्णुतेजसे। जगत्सवित्रे शुचये सिवत्रे कर्मदायिने।। (सूर्यार्घ्य देकर प्रदक्षिणा करे। इसके बाद दिशाओं एवं उनके अधिष्ठातृ देवताओं का वन्दन करे -)

- १. ॐ प्राच्ये नमः, ॐ इन्द्राय नमः। २. ॐ आग्नेय्ये नमः, ॐ अग्नये नमः। ३. ॐ दक्षिणाये नमः, ॐ यमाय नमः। ४. ॐ नैर्ऋत्ये नमः, ॐ निर्ऋतये नमः। ५. ॐ प्रतीच्ये नमः, ॐ वरुणाय नमः। ६. ॐ वायव्ये नमः, ॐ वायवे नमः। ७. ॐ उदीच्ये नमः, ॐ कुबेराय नमः। ८. ॐ ब्रह्मणे नमः। १०. ॐ अनन्ताय नमः। (इस तरह दिशाओं और देवताओं को नमस्कार कर बैठकर नीचे लिखे मन्त्र पढ़कर एक-एक जलाञ्जल दे-)
- ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ अग्नये नमः। ॐ पृथिव्यै नमः। ॐ औषधिभ्यो नमः। ॐ वाचे नमः। ॐ वाचस्पतये नमः। ॐ महद्भयो नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ अद्भयो नमः। ॐ अपाम्पतये नमः। ॐ वरुणाय नमः।

समर्पण - निम्नाङ्कित वाक्य पढ़कर यह तर्पण-कर्म भगवान् को समर्पित करे - अनेन यथाशिक्तकृतेन देवर्षिमनुष्यिपतृतर्पणाख्येन कर्मणा भगवान् पितृस्वरूपी जनार्दनवासुदेव: प्रीयतां न मम। ॐ तत्सद्-ब्रह्मार्पणमस्तु।

(तदनन्तर हाथ जोड़कर भगवान् का स्मरण करते हुए पाठ करे-)

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्। स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः।। यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्।। यत्पादपङ्कजस्मरणात् यस्य नामजपादिष।। न्यूनं कर्म भवेत् पूर्णं तं वन्दे साम्बमीश्वरम्।। ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः।

।।तर्पण विधि समाप्त।।

पञ्चबलि विधि

१. गोबलि (पत्ते पर) - मण्डल के बाहर पश्चिम की ओर निम्नलिखित मन्त्र पढ़ते हुए सव्य होकर गोबलि पत्ते पर दे -

> ॐ सौरभेय्यः सर्वहिताः पवित्रा पुण्यराशयः। प्रतिगृह्णन्तु मे ग्रासं गावस्त्रैलोक्यमातरः।। इदं गोभ्यो न मम।

२. **श्वान बिल (पत्ते पर) -** जनेऊ को कण्ठी कर निम्नलिखित मन्त्र से कुत्तों को बिल दे -

द्वौ श्वानौ श्यामशबलौ वैवस्वतकुलोद्भवौ। ताभ्यामन्नं प्रयच्छामि स्यातामेतावहिंसकौ।। इदं श्वभ्यां न मम।

३. काकबिल (पृथ्वी पर) - अपसव्य होकर निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर कौओं को भूमि पर अन्न दे -

ॐ ऐन्द्रवारुणवायव्या याम्या वै नैर्ऋतास्तथा। वायसाः प्रतिगृह्णन्तु भूमौ पिण्डं मयोज्झितम्।। इदमन्नं वायसेभ्यो न मम।

४. देवादि बलि (पत्ते पर) - सव्य होकर

देवामनुष्याः पशवोवयांसि सिद्धा सयक्षोरगदैत्यसङ्घाः। प्रेताः पिशाचास्तरवः समस्ता ये चान्नमिच्छन्तिमया प्रदतम्।। इदमन्नं देवादिभ्यो न मम।

५. पिपीलिकादिबलि (पत्ते पर) -

पिपीलिकाः कीट पतङ्गकाद्या बुभुक्षिताः कर्मनिबन्धबद्धाः। तेषां हि तृप्त्थीमदं मयात्रं तेभ्यो विसृष्टं सुखिनो भवन्तु।। इदमत्रं पिपीलिकादिभ्यो न मम।

जलयात्रा विधान

(ब्राह्मणों से आज्ञा प्राप्त कर यजमान सपत्नीक सधवा स्त्रियों और ब्राह्मणों को साथ लेकर आठ अथवा नौ कलश लेकर जलाशय को जाये और वहां हाथ-पैर धोकर आसन पर बैठें तथा प्राणायामादिक करे, तदुपरान्त आचार्य निम्न संकल्प करावें -)

देशकालौ सङ्कीर्त्य, करिष्यमाण अमुकदेवप्रतिष्ठाङ्गभूतत्वेन जलयात्रां करिष्ये। तदङ्गत्वेन गणपतिवरुणादीन् षोडशोपचारैः पूजयेत्।

(उपरोक्त संकल्प के पश्चात् मण्डल के दक्षिण, पश्चिम और उत्तर में पूर्व की तरह तीन कलशों का स्थापन एवं पूजन करे। इसी प्रकार ईशानकोण से लेकर वायव्यकोण तक चारो कोने में चार कलशों की तथा उनके मध्य में वरुण की पूजा करें। उसके पश्चात् आचार्य निम्न श्लोकों का उच्चारण करके यजमान से प्रार्थना करावें –)

एह्येहि यादोगणवारिधिनां गणेन पर्जन्यसहाप्सरोभिः। विद्याधरेन्द्रामरगीयमानः पाहि त्वमस्मान् भगवन्नमस्ते।। तीक्ष्णायुधं तीक्ष्णगितं दिगीशं चराचरेशं वरुणं महान्तम्। प्रचण्ड-पाशाङ्कुशवज्रहस्तं भजामि देवं कुलवृद्धिहेतोः।। आवाहयाम्यहं देवं वरुणं यादसां पितम्। प्रतीचीशं जगत्प्राणसेवितं पाशहस्तकम्।।

(इन मन्त्रों से कलश पर वरुण का आवाहन करके पूजन करें। उसके बाद जलमाताओं की पूजा करें। उसका प्रकार यह है कि अग्निकोण में वस्त्र से ढँकी हुई भूमि पर अक्षत का सातपुञ्ज दक्षिण से उत्तर की ओर बनावें। उन पर -)

जलमातृणां पूजनम् - ॐ भूर्भुवः स्वः मत्स्यै नमः मत्सीमावाहयामि स्थापयामि।।१।। ॐ भूर्भुवः स्वः कूर्म्यै नमः कूर्मिमावाहयामि स्थापयामि।।२।। ॐ भूर्भुवः स्वः वाराह्यै नमः वाराहीमावाहयामि स्थापयामि।।३।। ॐ भूर्भुवः स्वः दर्दुर्यै नमः दर्दुरीमावाहयामि स्थापयामि।।४।। ॐ भूर्भुवः स्वः मकर्यै नमः मकरीमावाहयामि स्थापयामि।।५।। ॐ भूर्भुवः स्वः जलूक्यै नमः जलूकीमावाहयामि स्थापयामि।।६।। ॐ भूर्भुवः स्वः तन्तूक्यै नमः तन्तुकीमावाहयामि स्थापयामि।।७।। 'ॐ मनोजूतिः' (इस मन्त्र का उच्चारण करके प्रतिष्ठापन करें। पुनः -) ॐ भूर्भुवः स्वः मत्स्याद्यावाहितमातरः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवत्। तदुपरान्त 'ॐ भूर्भुवः स्वः मत्स्याद्यावाहित जलमातृभ्यो नमः'।

(यह कहकर पञ्चोपचार से पूजन करें। तदुपरान्त जीव माताओं का पूजन वहीं सात अक्षतपुञ्जों का बनाकर निम्न क्रम से करें -)

जीवमातृणां पूजनम् - ॐ भूर्भुवः स्वः कुमार्थै नमः कुमारीमावाहयामि स्थापयामि।।१।। ॐ भूर्भुवः स्वः धनदायै नमः धनदामावाहयामि स्थापयामि।।२।। ॐ भूर्भुवः स्वः नन्दायै नमः नन्दामावाहयामि स्थापयामि।।३।। ॐ भूर्भुवः स्वः विमलायै नमः विमलामावाहयामि स्थापयामि।।४।। ॐ भूर्भुवः स्वः मङ्गलायै नमः मङ्गलामावाहयामि स्थापयामि।।५।। ॐ भूर्भुवः स्वः अचलायै नमः अचलावाहयामि स्थापयामि।।६।। ॐ भूर्भुवः स्वः पद्मायौ नमः पद्मामावाहयामि स्थापयामि।।७।। 'ॐ मनोजृतिः。'।

(इस मन्त्र का उच्चारण करके प्रतिष्ठापन करें। पुन: -) ॐ भूर्भुव: स्व: कुमार्याद्यावाहित-स्थलमातृका: सुप्रतिष्ठिता: वरदा: भवत्। तदुपरान्त 'ॐ भूर्भुव: स्व: कुमार्याद्यावाहित-जीवमातृभ्यो नमः' (यह कहकर पञ्चोपचार से पूजन करें।)

(तदुपरान्त स्थलमातृकाओं का पूजन करें। वहीं आगे सात अक्षतपुजों को बनाकर –) स्थलमातृणां पूजनम् – ॐ भूर्भुवः स्वः ऊम्यैं नमः ऊर्मिमावाहयामि स्थापयामि।।१।। ॐ भूर्भुवः स्वः लक्ष्म्यै नमः लक्ष्मीमावाहयामि स्थापयामि।।२।। ॐ भूर्भुवः स्वः महामायायै नमः महामायामावाहयामि स्थापयामि।।३।। ॐ भूर्भुवः स्वः पानदेव्यै नमः पानदेवीमावाहयामि स्थापयामि।।४।। ॐ भूर्भुवः स्वः वारुण्यै नमः वारुणमावाहयामि स्थापयामि।।५।। ॐ भूर्भुवः स्वः निर्मलायै नमः निर्मलामावाहयामि स्थापयामि।।६।। ॐ भूर्भुवः स्वः गोधायै नमः गोधामावाहयामि स्थापयामि।।७।। 'ॐ मनोजूतिः。' (इस मन्त्र का उच्चारण करके प्रतिष्ठापन करें।) (पुनः–) ॐ भूर्भुवः स्वः ऊर्म्याद्यावाहित—स्थलमातृकाः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवत्। (तदुपरान्त) ॐ भूर्भुवः स्वः ऊर्म्याद्यावाहित—स्थलमातृभ्यो नमः (यह कहकर पञ्चोपचार से पूजन करें।)

(इस अवसर पर कुछ लोग सप्तसागर के पूजन की इच्छा करते हैं। वह इस प्रकार से है-अक्षतपूञ्जों पर-)

ॐ समुद्रादूर्मिर्मधुमाँ उदारदुपा र्ठः सुन सममृततत्वमानट्। घृतस्य नाम गुह्यं यदस्ति जिह्वा देवानाममृतस्य नाभि:।।

(इस मन्त्र से आवाहन करके षोडशोपचार या पञ्चोपचार के द्वारा पूजा करें।) (इसके पश्चात् आचार्य इन्द्रादि दशदिक्पालों का यजमान से आवाहन करवा के पूजन करावें। इस अवसर पर कुछ लोग दिक्पाल बिल भी करते हैं, इसके उपरान्त आचार्य निम्न क्रम से जलाशय स्थित वरुण का पूजन निम्न मन्त्र का उच्चारण करके यजमान

ॐ उरु र्ठः हि राजा वरुणश्चकार सूर्याय पन्था मन्वेत वाऽ उ। अपदेपादा प्रति धातवेकरुपतापवक्ता हृदया विधश्चित्।। नमो वरुणायाभिष्ठितो वरुणस्य पाश:।। (इस मन्त्र से आवाहन करके 'ॐ वरुणाय नम: इस नाममात्र से अथवा षोडशोपचार

से करावें।)

(इस मन्त्र स आवाहन करक उळ वरुणाय नमः इस नाममात्र स अथवा षाडशापचार से पूजन करके उसके बाद वैदिक मन्त्र से अथवा नाममन्त्र से बारह आहुति दें।)

तद्यथा - ॐ अद्भ्यः स्वाहा वार्भ्यः स्वाहोदकाय स्वाहा तिष्ठन्तीभ्यः स्वाहा स्रवन्ताभ्यः स्वाहा स्यन्दमानाभ्यः स्वाहा कूप्याभ्यः स्वाहा सूर्घाभ्यः स्वाहा धार्याभ्यः स्वाहार्णवाय स्वाहा समुद्राय स्वाहा सिरिराय स्वाहा।।

इस मन्त्र से नाममन्त्र के पक्ष में - ॐ अद्भ्यः स्वाहा। ॐ वार्भ्यः स्वाहा। ॐ उदकाय स्वाहा। ॐ तिष्ठन्तीभ्यः स्वाहा। ॐ स्रवन्तीभ्यः स्वाहा। ॐ स्यन्दमानाभ्यः स्वाहा। ॐ कूप्याभ्यः स्वाहा। ॐ सूद्याभ्यः स्वाहा। ॐ धार्याभ्यः स्वाहा। ॐ अर्णवाय स्वाहा। ॐ समुद्राय स्वाहा। ॐ सागराय स्वाहा। (इन मन्त्रों से हवन करें, उसके बाद निम्न श्लोक का उच्चारण करके वरुण देवता को यजमान नमस्कार करें-)

ॐ नमो नमस्ते स्फटिकप्रभायः सुश्वेतहाराय सुमङ्गलाय। सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते।।

(निम्न श्लोकों का उच्चारण करके यजमान वरुण देवता की प्रार्थना करें -)
ॐ प्रतीचीश नमस्तुभ्यं सर्वाघौघनिषूदन। पिवत्रं कुरु मां देव: सर्वकार्येषु सर्वदा।।
ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि यावान्विधरनुष्टित:। स सर्वस्त्वत्प्रसादेन पूर्णं भवत्वपांपते।।
(इस प्रकार से प्रार्थना करने के पश्चात् यजमान सुहागिन स्त्रियों को सौभाग्यद्रव्य,
ताम्बूल और चना आदि देकर ब्राह्मणों को यथाशिक्त दक्षिणा देवें। उसके बाद -)
ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वे महे। उपप्रयन्तु मरुत: सुदा न वऽ इन्द्र प्राशूर्भवा शचा।।
(इस मन्त्र को पढ़कर कलशों को उठाकर सुवासिनियों के हाथ में देवें, ब्राह्मण लोग इस

ॐ यथे मां वाचं कल्याणीमावदानि यनेभ्य:। ब्रह्मराजन्याभ्या र्ठः शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च।। प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयं मे काम: समृध्यतामुप मादो नमतु।।

मन्त्र का उच्चारण करें -)

(आचार्य और ब्राह्मण 'हरि: ॐ आ नो भद्रा。' इस सूक्त का उच्चारण करते हुए गीत, वाद्य से युक्त होकर सुवासिनियों को आगे करके यज्ञमण्डप की ओर प्रस्थान करें। आधे मार्ग पर उस समय थोड़ी भूमि को लिपकर क्षेत्रपाल का पूजन करके बलि की पूजा करके बलिदान करें, वहां यह बलि मन्त्र है –)

ॐ नमो भगवते क्षेत्रपालाय भासुराय त्रिनेत्रज्वालामुख अवतर अवतर कपिल पिङ्गल ऊर्ध्व केश-जिह्वा लालन छिन्दि-छिन्दि, भिन्धि-भिन्धि, कुरु-कुरु, चल-चल, ह्रां हीं हुं हैं बिलं गृहाण स्वाहा।

(इस बिल मन्त्र का आचार्य उच्चारण करें। तत्पश्चात् सपत्नीक यजमान, बन्धु, ज्ञाति से समन्वित होकर मण्डप की ओर प्रस्थान करें। मण्डप के पश्चिमद्वार के समीप में जाकर पूर्ववत् सभी दोष के शमन के लिए क्षेत्रपाल को बिल देनी चाहिए। उसके बाद मण्डप के पश्चिमद्वार पर आकर स्थित हुए यजमान की सुवासिनियाँ आरती करके पश्चिमद्वार से ही मण्डप के मध्य में ले जावें।)

।। इति जलयात्राः ।।

भूमि पूजनम्

(कुण्ड मण्डप निर्माण के पूर्व आचार्य एवं ब्राह्मण शान्तिपाठ करके भूमि, कूर्म, अनन्त और वराह की पूजा यजमान से करवाने से पहले मण्डप के आगे या उत्तर दिशा अथवा ईशानकोण में कुशा या कम्बल के आसन पर उनको बैठाकर निम्न संकल्प करावें -) देशकालौ स्मृत्वा, करिष्यमाण-अमुक याग कर्मणि मण्डपायतनादिनिर्मातुं भूमि-कूर्मानन्तवराहाणां विश्वकर्मणश्च पूजनं करिष्ये। तदङ्गत्त्वेन स्वस्तिपुण्याहवाचनादिकं च करिष्ये। तत्रादौ निर्विघ्नता सिद्ध्यर्थं गणेशाम्बिकयोः पूजनं च करिष्ये। (आचार्य निम्न श्लोकों का उच्चारण करते हुए यजमान से भूमिपूजन करवायें -) चतुर्भुजां शुक्लवर्णां कूर्मपृष्ठोपरिस्थिताम्। शंखपद्मपरां चक्रशूलयुक्तां धरां भजे।। आगच्छ देवि कल्याणि वसुधे लोकधारिणि। पृथिवि त्वं ब्रह्मदत्तासि काश्यपेनाभिनन्दिता।। ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म सप्रथाः।। (इस मन्त्र से पूजन करे)

ॐ भूरिस भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री। पृथिवीं यच्छ पृथिवीं ह र्ठ. ह पृथिवीं मा हि र्ठ. सी:।।

उद्धृतासि वराहेण कृष्णेन शतबाहुना। दंष्ट्राग्रैलींलया देवि यज्ञार्थं प्रणमाम्यहम्।। (यजमान साष्टांग प्रणाम कर तांबे के पात्र में गौ दूध, जल, कुशा, जौ, तिल, अक्षत, पीली-सरसों, फूल और सुवर्ण आदि लेकर घुटनों के बल धरणी को प्राप्त करके कहे-) ब्रह्मणा निर्मिते देवि विष्णुना शंकरेण च। पार्वत्या चैव गायत्र्या स्कन्देन श्रवणेन च।। यमेन पूजिते देवि धर्मस्य विजिगिषया। सौभाग्यं देहि पुत्रांश्च मनो रूपं च पूजिते।। उद्धृतासि वराहेण सशैलवनकानने।

मण्डपं कारयामद्य त्वदूर्ध्वं शुभलक्षणम्। गृहाणार्घ्यमिमं देवि प्रसन्ना वरदा भव।। (यजमान अर्घ्य प्रदान करके हाथों को जोड़ निम्न श्लोक का उच्चारण कर प्रार्थना करे-) उपचारानिमांस्तुभ्यं ददामि परमेश्वरि। भक्त्या गृहाण देवेशि त्वामहं शरणं गत:। (आचार्य निम्न वाक्य का यजमान से उच्चारण करवाते हुए पूजा निवेदित कर बलि समर्पित करावें -)

ॐ सिपरवाराये भूम्ये नमः, इमं महाबलिं समर्पयामीति गन्ध-पुष्प-पायससक्तुलाजैः सघृतैः सदीपैर्महाबलिं समर्पयामि।

(निम्न श्लोकों का उच्चारण करते हुए यजमान से प्रार्थना करवायें -) नन्दे नन्दय वासिष्ठे वसुभि: प्रजया सह। जय भार्गवदायादे प्रजानां जयमावह।।

पूर्णे गिरिशदायादे पूर्णकामं कुरुष्व मे। भद्रे काश्यपदायादे कुरुभद्रां मितं मम।। सर्वबीजसमायुक्ते सर्वरत्नौषधावृते। रुचिरे नन्दने नन्दे वासिष्ठे रम्यतामिह।। प्रजापितसुते देवि चतुरस्रमहीयिस। सुभगे स्तुवते देवि गृहे काश्यपि रम्यताम्।। पूजिते परमाचार्येगेन्धमाल्यैरलङ्कृते। भवभूतिकरी देवि गृहे भार्गिव रम्यताम्।। अव्यक्ते चाहते पूर्णे शुभे चांगिरसः सुते। इष्टदे त्वं प्रयच्छेष्टं त्वां प्रतिष्ठापयाम्यहम्।। देशस्वामि पुरस्वामि गृहस्वामि पिरग्रहे। मनुष्यधनहस्त्यश्वपशुवृद्धिप्रदा भव।। (आचार्य पंचोपचार से पूजा करवाने के पश्चात् इस मन्त्र द्वारा यजमान से अनन्तदेव की पृजा करवायें –)

- ॐ स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरा निवेशनि। यच्छा न शर्म सप्रथा:।। ॐ अनन्ताय नम:।। (आचार्य इस मन्त्र का उच्चारण करके कूर्मदेवता का पूजन यजमान से करवायें-)
- ॐ यस्य कुर्मो गृहे हिवस्तमग्ने वर्धया त्वम्। तस्मै देवा अधिब्रवन्नयं च ब्रह्मणस्पतिः।। ॐ कूर्माय नमः।।
- (आचार्य इस मन्त्र का उच्चारण करके यजमान से विश्वकर्माजी का पूजन करवायें-) ॐ विश्वकर्मन्हिवषा वर्धनेन त्रातारिमन्द्रमकृणोरवध्यम्। तस्मै विश: समनमन्त पूर्वीरयमुग्रो विहव्यो यथासत्।। ॐ विश्वकर्मणे नम:।।
- (आचार्य इस मन्त्र का उच्चारण करके वाराह का पूजन यजमान से करवायें –) ॐ खड्गो वैश्वदेव: श्वा कृष्ण: कर्णो गर्दभस्तरक्षुस्ते रक्षसामिन्द्राय सूकर: सिर्ठः हो मारुत: कृकलास: पिप्पका शकुनिस्ते शरव्याये विश्वेषां देवानां पृषत:।। प्रार्थना – समुद्रवसने देवि पर्वतस्तनमण्डले। विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं भूमिदेवि नमोस्तु ते।। 'ॐ पृथिवीकूर्मानन्तादिपूजाविधौ यन्यूनातिरिक्तं तत्सर्वं परिपूर्णमस्तु'।

क्षमा प्रार्थना

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्। पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वरि।। यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्।। प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्। स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः।।

।।इति भूमि पूजनम्।।

।।होम द्रव्य प्रवेश: पूर्व द्वारेण।। दान द्रव्य प्रेवशोदक्षिणद्वारेण।। दानार्थान्दिक्षणार्थान्प्रतिष्ठा-र्थान्सम्भारानुतर द्वारेण प्रवेशयेत्।। मण्डम में प्रवेश के लिए पश्चिमद्वार।।

।।मण्डप प्रवेशः।।

(यजमान अपनी धर्मपत्नी, पुत्र, पौत्रादि व आचार्य और ब्राह्मणों के साथ मंगलघोष (बाजे आदि द्वारा) और 'आ नो भद्राः,' इत्यादि मन्त्रघोष से युक्त हो कलश हाथ में लेकर सधवा स्त्रियों को आगे कर गणेश-अम्बा, वरुण कलश, मातृ पीठादियों से युक्त हो महामण्डप और प्रसादादि की प्रदक्षिणा कर पश्चिमद्वार पर प्राङ्गमुख खड़ा होकर निम्न श्लोकों का उच्चारण कर ध्यान करें -)

ॐ चतुर्भुजां शुक्लवर्णां कूर्मपृष्ठोपरिस्थिताम्। शङ्ख्यपद्मधरां चक्रशूलहस्तां धरां भजे।। आगच्छ देवि कल्याणि वसुधे लोकधारिणि। पृथिवि ब्रह्मदत्तासि काश्यपेनाभिवन्दिता।। 'ॐ भूम्यै नमः' (इस वाक्य का उच्चारण कर निम्न श्लोक का उच्चारण कर प्रणाम करें –)

उद्धृतासि वराहेण कृष्णेन शतबाहुना। दंष्ट्राग्रैलीलया देवि यज्ञार्थं प्रणमाम्यहम्।। (आचार्य निम्न श्लोकों का उच्चारण करते हुए यजमान से अर्घ्य प्रदान करावें -) ब्रह्मणा निर्मिते देवि विष्णुना शङ्करेण च। पार्वत्या चैव गायत्र्या स्कन्दवैश्रवणेन च।। यमेन पूजिते देवि धर्मस्य विजिगीषया। सौभाग्यं देहि पुत्रांश्च धनं रूपं च पूजिता।। गृहाणार्घमिमं देवि सौभाग्यं च प्रयच्छ मे।। 'ॐ भूम्यै नमः' अर्घं समर्पयामि।

(यजमान गन्ध, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्य से भूमि का पूजन करें -)

ॐ उपचारानिमां तुभ्यं ददामि परमेश्विर। भक्त्या गृहाण देवेशि त्वामहं शरणं गत:।। (आचार्य निम्न श्लोकों का उच्चारण करते हुए यजमान से प्रार्थना करावें -)

ॐ नन्दे नन्दस्य विसष्ठे वसुभिः प्रजया सह। जय भार्गवदायादे प्रजानां जयमावह।। पूर्णे गिरिश दायादे पूर्णं कामं कुरुष्व मे। भद्रे काश्यपदायादे कुरु भद्रां मितं मम।। सर्वबीजसमायुक्ते सर्वारत्नौषधीवृते। रुचिरे नन्दने नन्दे विसष्ठे रम्यतामिह।। प्रजापितसुते देवि चतुरस्रे महीयसि। सुभगे सुव्रते देवि यज्ञे भार्गवि रम्यताम्। देशस्वामि पुरस्वामि गृहस्वामि परिग्रहे। मनुष्यधनहस्त्यश्वपशुवृद्धिकरी भव।।

(आचार्य और ऋत्विजों के साथ द्वारपालों से आज्ञा प्राप्त कर पञ्चांग देवताओं के साथ मण्डप के पश्चिमद्वार पर जाकर भूमिपूजा करके तथा सूर्यार्घ्य देकर मण्डप की प्रदक्षिणा कर शंखघोष के साथ यजमान पश्चिमद्वार से और उसकी धर्मपत्नी दक्षिणद्वार से मण्डप में प्रवेश करे। मण्डप में प्रवेश करने के उपरान्त अग्न्यायतन की प्रदक्षिणा कर अग्निकोण में गोधूम गेहूँ के ऊपर कुम्भ का स्थापन करके इस मन्त्र का उच्चारण करें –)

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्यीं आरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।

(आचार्य इस वाक्य का उच्चारण यजमान से करावें -)

ॐ देवा आयान्तु यातुधाना अपयान्तु विष्णो देवयजनं रक्षस्व।।

(आचार्य इन दो मन्त्रों का उच्चारण करें -)

ॐ इयं वेदिः परोअन्तः पृथिव्या अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः। अय र्ठः सोमो वृष्णो अश्वस्य रेतो ब्रह्मायं वाचः परमं व्योम।।१।। ॐ सुभूः स्वयंभूः प्रथमोन्तर्महत्यर्णवे। दधे हगर्भमृत्वियं यतो जातः प्रजापितः।।२।।

(यजमान के बायें हाथ में आचार्य पीली सरसों और धान का लावा देकर निम्न वैदिक मन्त्रों का उच्चारण करें -)

ॐ रक्षोहणं वलगहनं वैष्णवीमिदमहं तं वलगमुत्किरामि यं मे निष्ट्यो यममात्यो निचखानेदमहं तं वलगमुत्किरामि यं मे समानो यमसमानो निचखानेदमहं तं वलगमुत्किरामि यं मे सबन्धुर्यमसबन्धुर्निचखानेदमहं तं वलगमुत्किरामि यं मे सबन्धुर्यमसबन्धुर्निचखानेदमहं तं वलगमुत्किरामि यं मे सजातो यमसजातो निचखानोत्कृत्यां किरामि।।१।।(५/२३)

ॐ रक्षोहणो वो वलगहनः प्रोक्षामि वैष्णवान् रक्षोहणो वो वलगहनोऽवनयामि वैष्णवान् रक्षोहणो वो वलगहनोऽवस्तृणामि वैष्णवान् रक्षोहणौ वां वलगहना उपदधामि वैष्णवी रक्षोहणौ वां वलगहनौ पर्यूहामि वैष्णवी वैष्णवमिस वैष्णवाः स्थ।।२।।(५/२५) ॐ रक्षसां भागोऽसि निरस्त र्ठ. रक्ष इदमह र्ठ. रक्षोऽभितिष्ठामीदमह र्ठ. रक्षोऽवबाध इहमह र्ठ. रक्षोऽधमं तमो नयामि। घृतेन द्यावापृथिवी प्रोणुंवाथां वायो वेस्तोकानामिग्राज्यस्य वेतु स्वाहा स्वाहाकृते ऊर्ध्वनभसं मारुतं गच्छतम्।।३।।(६/१६) ॐ रक्षोहा विश्वचर्षणिरभि योनिमयोहते। द्रोणे सधस्थमासदत्।।४।।(२६/२६)

यदत्र संस्थितो भूतः स्थानमाश्रित्य सर्वदा। स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यथेच्छं स हि गच्छतु।।१।। अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः। ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।२।। अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम्। सर्वेषामिवरोधेन अमुककर्म चारभे।।३।। भूतानि राक्षसावापि यत्र तिष्ठन्ति केचन। ते सर्वेप्यपगच्छन्तु शान्तिकं तु करोम्यहम्।।४।।

।।मण्डप को पञ्चगव्य से प्रोक्षण करे।। ।।नैर्ऋत्य कोणे मण्डपाङ्गवास्तु पूजा करे।।

मण्डप पूजन प्रारम्भः

देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रः अमुकशर्माहं (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्) (सपत्नीकोऽहं) अमुक यागकर्मणि मण्डपदेवानां स्थापनं पूजनं करिष्ये।

प्रथम - ततो मध्यवेदीशानस्तम्भे रक्तवर्णे ब्रह्माणं पूजयेत् - ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः।। ॐ उद्धर्वऽऊषुण ऊतये तिष्ठ्ठा देवो न सिवता।। ऊद्धर्वो व्वाजस्य सिनता यदिञ्जिभिव्विधिद्धिव्विह्मयामहे।। ॐ आयङ्गोः पृश्निरक्क्रमीदसदन्मातरं पुरः।। पितरञ्च प्रयन्त्सवः।। ॐ यतोयतः समीहसे ततो नो ऽअभयं कुरु।। शत्रः कुरु प्रजाब्योऽभयं नः पशुब्यः।। द्वितीय - ततः आग्नेयस्तम्भे कृष्णवर्णं विष्णुं पूजयेत् - ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पा र्ठः सुरेस्वाहा।। ॐ ऊद्धर्वः।। ॐ आयङ्गोःः।। ॐ यतोयतःः।। तृतीय - ततो नैर्ऋत्यस्तम्भे श्वेतवर्णं शङ्करं पूजयेत् - ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः।। ॐ ऊद्धर्वः।। ॐ आयङ्गोःः।। ॐ यतोयतःः।। चतुर्थं - मध्यवेदीवायव्यकोणे पीतवर्णस्तम्भे इन्द्रं पूजयेत् - ॐ त्रातारिमन्द्रमिवतारिमन्द्र र्ठः हवे हवे सुहव र्ठः शूरिमन्द्रम। ह्वयामि शक्रं पुरुहृतिमन्द्रर्ठः स्वस्ति नो मघवा धात्विन्दः।। ॐ ऊद्धर्वः।। ॐ अद्धर्वः।। ॐ आयङ्गौः।। ॐ आयङ्गौः।। ॐ अत्रद्भौः।। ॐ अत्रद्भीः।। ॐ अत्रद्भीः।। उं अत्रद्भीः।। ॐ अत्रद्भीः।। ॐ आयङ्गौः।। अं अत्रद्भीः।। अं अत्रवनः।।

पञ्चम - ततः ईशाने रक्तवर्णस्तम्भे सूर्यं पूजयेत् - ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेश-यन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेनादेवो याति भुवनानि पश्यन्।। ॐ ऊद्धर्वः।। ॐ आयङ्गौःः।। ॐ यतोयतःः।।

षष्ठम् - अथ ईशानपूर्वयोर्मध्ये श्वेतस्तम्भे गणेशं पूजयेत् - ॐ गणानां त्वा गणपित र्ठः हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपित र्ठः हवामहे निधीनां त्वा निधिपित र्ठः हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्।। ॐ ऊर्ध्वः।। ॐ आयङ्गोःः।। ॐ यतोयतःः।। सप्तम् - ततः पूर्वाग्न्योर्मध्ये कृष्णवर्णस्तम्भे यमं पूजयेत् - ॐ यमाय त्वा मखाय त्वा सूर्यस्य त्वा तपसे। देवस्त्वा सिवता मध्वानक्तु। पृथिव्याः स र्ठः स्पृशस्पाहि। अर्चिरसि शोचिरसि तपोऽसि।। ॐ ऊद्धर्वः।। ॐ आयङ्गोःः।। ॐ यतोयतःः।।

अष्टम् - आग्नेयकोणे कृष्णवर्णस्तम्भे नागराजं पूजयेत् - ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।। ॐ ऊद्धर्वः।। ॐ आयङ्गौःः।। ॐ यतोयतःः।।

नवम - ततोऽग्नि दक्षिणयोर्मध्ये श्वेतवर्णस्तम्भे स्कन्दं पूजयेत् - ॐ यदक्रन्दः प्रथमं

जायमान उद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्। श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महि जातं ते अर्वन्।। ॐ ऊद्धर्व ॐऊषु णः।। ॐ आयङ्गौः।। ॐ यतोयतः।।

दशम - दक्षिणनैर्ऋत्ययोर्मध्ये धूम्रवर्णस्तम्भे वायुं पूजयेत् - ॐ वायो ये ते सहित्रणो रथासस्तेभिरागिह। नियुत्वान्सोमपीतये।। ॐ ऊद्धर्वः।। ॐ आयङ्गौःः।। ॐ यतोयतःः।। एकादश - नैर्ऋत्ये पीतवर्णस्तम्भे सोमं पूजयेत् - ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्णयम्। भवा वाजस्य सङ्गथे।। ॐ ऊद्धर्वः।। ॐ आयङ्गौःः।। ॐ यतोयतःः।। द्वादश - नैर्ऋत्यपश्चिमयोर्मध्ये श्वेतवर्णस्तम्भे वरुणं पूजयेत् - ॐ इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके।। ॐ ऊद्धर्वः।। ॐ आयङ्गौःः।। ॐ यतोयतःः।। त्रयोदश - पश्चिमवायव्यान्तराले श्वेतवर्णस्तम्भे अष्टवसून् पूजयेत् - ॐ वसुभ्यस्त्वा रुद्रेभ्यस्त्वाऽऽ-दित्येभ्यस्त्वा सञ्जानाथां द्यावापृथिवी मित्रावरुणौ त्वा वृष्ट्यावताम्। व्यन्तु वयोऽक्त र्ठः रिहाणा मरुतां पृषतीर्गच्छ वशापृश्निर्भूत्वा दिवं गच्छ ततो नो वृष्टिमावह। चक्षुष्पा अग्नेऽसि चक्षुस्में पाहि।। ॐ ऊद्धर्वः।। ॐ आयङ्गौःः।। ॐ यतोयतःः।। चतृर्दश - वायव्ये पीतस्तम्भे कुबेरं पूजयेत् - ॐ सोमो धेनु र्ठः सोमो अर्वन्तमाशु र्ठः

चतुर्दश - वायव्ये पीतस्तम्भे कुबेरं पूजयेत् - ॐ सोमो धेनु र्ठः सोमो अर्वन्तमाशु र्ठः सोमो वीरं कर्मण्यं ददाति।। सादन्यं विदथ्य र्ठः सभेयं पितृश्रवणं यो ददाशदस्मै।। ॐ ऊद्धर्वः।। ॐ आयङ्गौःः।। ॐ यतोयतः।।

पञ्चदश - उत्तर वायव्ययोरन्तराले पीतस्तम्भे गुरुं पूजयेत् - ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतुमञ्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्।। ॐ ऊद्धर्वः।। ॐ आयङ्गौःः।। ॐ यतोयतःः।।

षोडश - तत उत्तरईशानयोर्मध्ये रक्त स्तम्भे विश्वकर्माणं पूजयेत् - ॐ विश्वकर्मन् हिवषा वर्धनेन त्रातारिमन्द्रमकृणोरवध्यम्। तस्मै विश: समनमन्त पूर्वीरयमुग्रो विहव्यो यथासत्।। ॐ ऊद्धर्वः।। ॐ आयङ्गौ:ः।। ॐ यतोयत:ः।।

प्रार्थना - शेषादिनागराजानः समस्ता मम मण्डपे। पूजाङ्गृह्णन्तु सततं प्रसीदन्तु ममोपिर।। ततो भूमिस्पर्शः - ॐ भूरिस भूमिरस्यदितिरिस विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री। पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृ ठं॰ ह पृथिवीं मा हिर्ठः सीः।। भूमिभूमिमवगान्माता यथा मातरमप्यगात्। भूयास्म पुत्रैः पशुभियों नो द्वेष्टि स भिद्यताम्।।

(यजमान और उसकी धर्मपत्नी दोनों हाथों में रक्तवर्ण के पुष्पों को लेकर निम्न श्लोक का उच्चारण करके पुष्पाञ्जलि अर्पित करें -)

नमस्ते पुण्डरीकाक्ष नमस्ते विश्वभावन। नमस्तेऽस्तु हृषीकेश महापुरुषपूर्वज।। ॐ नृसिंह उग्ररूप ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल स्वाहा।। ॐ नमः शिवाय।।

(इन नामों का यजमान उच्चारण करके पुष्पाञ्जलि को मण्डप की भूमि में छोड़े।)

तोरण पूजनम्

(इसके बाद तोरणपूजा, उसके बाद द्वारपूजा यह मातस्योक्त जलाशयोक्त क्रमरुद्रकल्पद्रुम आदि प्रतिष्ठाभास्कर और प्रतिष्ठेन्दु रत्नमाला आदि में दिया गया है। मयूखोद्योतपर्त कमलाकर आदि में प्रतिष्ठाविधि में आग्नेययोक्त तोरणपूजा ही है। हमारे द्वारा सम्प्रदाय के अनुरोध से लिखा जा रहा है, उसमें आदि में तोरणपूजा है। कलशद्वय के स्थापन को छोड़कर अग्निपुराणोक्त तोरणपूजा है। वहां पश्चिमद्वार से बाहर निकलकर पूर्व की ओर आकर यजमान को (तोरणपूजा) करनी चाहिए। ऐसा प्रतिष्ठारत्नमाला में लिखा है। यजमान से आचमन और प्राणायाम करवाने के पश्चात् आचार्य देशकाल का उससे स्मरण करवाते हुए निम्न संकल्प करावें –)

देशकालौ संकीर्त्य, अस्मिन्याग कर्मणि पूर्वादितोरणपूजाङ्गरिष्ये।

(आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से मौलीबन्धन करावें -)

'सुदृढं तोरण' पूर्वे अश्वत्थं काञ्चनप्रभम्। रक्षार्थं चैव बध्नामि कर्मण्यस्मिन्सुशोभितम्।। ॐ अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्।। ॐ भूर्भुवः स्वः ऋग्वेदाधिष्ठिताय सुदृढतोरणाय नमः।

(उपरोक्त मन्त्र और वाक्य का आचार्य उच्चारण करके गन्धादि के द्वारा यजमान से पूजा करवाके प्रदक्षिणा क्रम से निम्न नाममन्त्रों द्वारा पूजन करावें -)

ॐ इन्द्रराहुभ्यां नम:। ॐ धात्रे नम:। ॐ भगबृहस्पतिभ्यां नम:।

(आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से प्रार्थना करवायें -)

यथा मेरुगिरे: शृङ्गं देवानामालयः सदा। तथा त्वं मम यज्ञेस्मिन्देवाधिष्ठानको भव।। (वहां कलशविधि से कलश की प्रतिष्ठा करवाके आचार्य कलश के ऊपर निम्न नाममन्त्रों

(वहां कलशिविध से कलश को प्रतिष्ठा करवाके आचार्य कलश के ऊपर निम्न नाममन्त्री का उच्चारण यजमान से करवाके पूजन करवायें -)

ॐ ध्रुवाय नम:। ॐ अध्वराय नम:। ॐ मध्ये-मेधापतये नम:।

(पूजन के उपरान्त यजमान को दक्षिण की ओर ले जाकर आचमन करवाके निम्न श्लोक का उच्चारण करके आचार्य मौलीबन्धन करावें -)

औदुम्बरं च विकटं याम्ये तोरणमुत्तमम्। रक्षार्थञ्चैव बध्नामि कर्मण्यस्मिन्सुखाय नः।। ॐ इषे त्वोज्जें त्वा वायव स्त्थ देवो वः सिवता प्रार्पयतु श्रेष्ठ तमाय कर्मण आप्यायध्वमध्न्या इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा मा वस्तेन ईशत माघशर्ठः सो ध्रुवा अस्मिन्गोपतौ स्यात बिह्नर्यजमानस्य पशून्पाहि।। ॐ भूर्भुवः स्वः सुभद्रतोरणाय नमः, सुभद्रतोरणमाः। ॐ भूर्भुवः स्वः विकटतोरणाय नमः, विकटतोरणमाः।

(प्रदक्षिण क्रम से आचार्य निम्न नाममन्त्रों का उच्चारण करके यजमान से पूजन करावें-) ॐ सूर्यपूषाभ्यां, सूर्यपूषाणौ। मध्येमित्रायः ॐ वरुणाङ्गारकाभ्यांः।

(पूजन करवाने के पश्चात् निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से प्रार्थना करावें-) यथा मेरुगिरे: शृंङ्गं देवानामालय: सदा। तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन्देवाधिष्ठानको भव।। (वहां पर भी पूर्वविधि से कलश स्थापित करवाके कलश के ऊपर निम्न नाममन्त्रों का उच्चारण यजमान से करवाते हुए आचार्य पूजन करावें -)

ॐ पर्जन्याय नम:। ॐ अशोकाय नम:। मध्ये - ॐ धरायै नम:।

(इस प्रकार से पूजन करवाकर यजमान को पश्चिम दिशा की ओर ले जाकर आचमन करवाके निम्न श्लोक का उच्चारण करके आचार्य उससे मौलीबन्धन करावें –)

प्लाक्षं च पश्चिमं भीमं तोरणं स्वर्णसित्रभं। रक्षार्थञ्चैव बध्नामि कर्मण्यस्मिन्सुखाय नः।। ॐ अग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये। निहोता सित्स बर्हिषि।। ॐ सुभीमतोरणाय नमः। ॐ सुकर्मतोरणाय नमः।

(इस प्रकार से पूजन करवाके प्रदक्षिण क्रम से आचार्य निम्न नाममन्त्रों का उच्चारण करते हुए यजमान से पूजन करावें -)

ॐ अर्यमशुक्राभ्यां नमः। अर्यमशुक्रौः। मध्ये – ॐ अंशवे नमः। अंशुम्ः। ॐ विवस्वद्वधाभ्यांः। विवस्वद्वधौः।

(पूजन करवाने के पश्चात् निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से प्रार्थना करावें-) यथा मेरुगिरे: शृङ्गं देवानामालय: तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन्देवाधिष्ठानको भव।। ॐ अनिलायः। ॐ अनलायः। मध्ये - ॐ वाक्पतये नमः।

(पूजन के उपरान्त यजमान को उत्तर दिशा की ओर ले जाकर आचमन करवाके निम्न श्लोक का उच्चारण करके आचार्य उससे मौलीबन्धन करावें -)

न्यग्रोधतोरणिमव उत्तरे च शशिप्रभम्। रक्षार्थं चैव बध्नामि कर्मण्यस्मिन्सुशोभितम्।। ॐ शन्नो देवीरिभष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरिभस्रवन्तु नः।। ॐ सुहोत्रतोरणायः। ॐ सुप्रभतोरणाय नमः।

(इस प्रकार से पूजन करवाके आचार्य प्रदक्षिण क्रम से निम्न नाममन्त्रों का उच्चारण करवाके यजमान से पूजन करावें -)

ॐ त्वष्ट्टसोमाभ्यां नम:। ॐ सिवतृकेतुभ्यां नम:। ॐ विष्णुशनिभ्यां नम:। (पूजन करवाने के पश्चात् निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से प्रार्थना करावें-)

यथा मेरुगिरेः शृंङ्गं देवानामालयः सदा। तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन्देवाधिष्ठानको भव।।

(वहां भी एक कलश यजमान से स्थापित करवाके कलश के ऊपर निम्न नाममन्त्रों का उच्चारण करवाके यजमान से पूजन करवावें -)

ॐ प्रत्यूषाय नम:। ॐ प्रभासाय नम:। मध्ये – ॐ विघ्नेशाय नम:।

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से प्रार्थना करावें -

तोराणाधिष्ठिता देवा: पूजिता भिक्तमार्गत:। ते सर्वे मम यज्ञेऽस्मिन् रक्षां कुर्वन्तु व: सदा।।

मण्डपद्वार पूजनम्

(आचार्य पूर्व दिशा की ओर यजमान को ले जाकर शुद्ध आसन पर बैठाकर उससे आचमन एवं प्राणायाम करवाके निम्न संकल्प करावें -)

देशकालौ संकीर्त्य, अस्मिन्याग कर्मणि पूर्वादिद्वारपूजाङ्ककरिष्ये।

आयाहि वज्रसङ्कातपूर्वद्वारकपाधिप। ऋग्वेदाधिपते तुभ्यं सुशोभन नमोऽस्तु ते।।

(आचार्य दो कलशों को बगल में यजमान से स्थापित करवाके, पहले दक्षिण कलश के ऊपर) ॐ प्रशान्ताय नमः वाम कलश ॐ शिशिराय नमः मध्यकलश 'ॐ ऐरावताय नमः' (का उच्चारण करवाके गन्धादि से पूजन करावें। तदुपरान्त निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से प्रार्थना करावें –)

सवस्त्रं सजलं गन्धं पुष्पपल्लवसंयुतम्। सरत्नं स्थापयाम्येव द्वारेऽस्मिन्कलशद्वयम्।। (उसके बाद आचार्य इन नाममन्त्रों द्वारा यजमान से पूजा करावें-) ॐ द्वारिश्रयै नमः।।१।। इति ऊर्ध्वं अधः देहल्यै नमः।।२।। दक्षिणशाखायाम् - ॐ गणेशाय नमः।।३।। वामशाखायाम् - ॐ स्कन्दाय नमः।।४।। द्वारकलशयोः - ॐ गंगायै नमः।।१।। ॐ यमुनायै नमः।।२।। (पुनः दोनों ऋग्वेदियों की पूजा निम्न क्रम से करें -)

ॐ अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्।। ॐ कर्मनिष्ठा तपोयुक्ता ब्राह्मणाः वेदपारगाः। जपार्थं चैव सूक्तानां यज्ञे भवतऋत्विजौ।।

(मध्य कलश के ऊपर-) एह्येहि सर्वामरसिद्धिसाद्ध्यैरिभष्टुतो वज्रधरामरेश। संवीज्यमानोऽप्सरसां गणेन रक्षाध्वरत्रो भगवन्नमस्ते।।

ॐ त्रातारिमन्द्रमिवतारिमन्द्र र्ठः हवेहवे सुहव र्ठः शूरिमन्द्रम। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतिमन्द्र र्ठः स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः।। ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः, इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि।।१।। (इस प्रकार पूजा करवाके आचार्य निम्न मन्त्र और श्लोक का उच्चारण करते हुए यजमान से पीतध्वज एवं पताका का स्पर्श करवावें-)

ॐ आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्। सङ्कक्रन्दनो निमिषऽएकवीरः शत र्ठः सेना अजयत्साकमिन्द्रः।।

इमां पताकां पितां च ध्वजं पीतं सुशोभम्। आलभामिसुरेशाय शचीप्रित्यै नमो नमः।। (आचार्य ध्वजपताका के मध्य में निम्न नाममन्त्रों का उच्चारण करके यजमान से पूजन करावें -) ॐ हेतुकराय नमः। ॐ क्षेत्रपालाय नमः। (आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से प्रार्थना करावें -)

इन्द्रः सुरपतिः श्रेष्ठो वज्रहस्तो महाबलः। शतयज्ञाधिपो देवस्तस्मै नित्यं नमो नमः॥ ततो बलयः

माषभक्तबलिं देव गृहणेन्द्रः शचीपतेः। यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव।। ॐ नमो भगवते इन्द्राय सकलसुराणामधिपतये सवाहनाय सपरिवाराय सशक्तिकाय तत्पार्षदेभ्यः सर्वेभ्यो भूतेभ्यः इमं सदीपदिधमाषभक्तबलिं समर्पयामि। भो इन्द्र स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सिपरवारस्य गृहे आयुः कर्ता शान्तिकर्ता पृष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदो भव।। अनेन बलिदानेन इन्द्रः प्रीयतां न मम।

(उसके बाद आचार्य अग्निकोण में यजमान को लाकर पूर्व की तरह स्थापन करवाके तथा आचमन करवाके कलश के ऊपर निम्न वाक्यों का उच्चारण करके पूजन करावें –) ॐ पुण्डरीकाय नम:। ॐ अमृताय नम:। (आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से नमस्कार करावें –)

एह्येहि सर्वामरहव्यवाह मुनिप्रवर्य्यैरभितोऽभिजुष्टः। तेजोवता लोकगणेन सार्द्धं ममाध्वरं पाहि कवे नमस्ते।।

(आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से प्रार्थना करवायें-)

सप्तार्चिषं च विभ्राणमक्षमालां कमण्डलुं। ज्वालमालां कुरु रक्तं शक्तिहस्तमजासनं।। ॐ त्वन्नो अग्ने तव देवपायुभिम्मघोनो रक्ष तन्वश्च वन्द्य। त्राता तो कस्य तनये गवामस्य निमेष ठी रक्षमाणस्तव व्रते।। ॐ भूर्भुवः स्वः अग्ने नमः, अग्निमावाहयामि स्थापयामि। (इस मन्त्र से पूजा करवाके ध्वजपताका का स्पर्श यजमान से करवाके निम्न श्लोक और मन्त्र का उच्चारण करें-)

पताकामग्नये रक्तां गन्धमाल्यादिभूषिताम्। स्वाहायुक्ताय देवाय ह्यालभामि हविर्भुजे।। ॐ अग्निं दुतं पुरो दधे हव्यवाहमुपब्रुवे।। देवाँ२।। आसादयादिह।।

(आचार्य ध्वज और पताका की निम्न नाममन्त्रों का उच्चारण करवाके यजमान से पूजा करावें -) ॐ कुमुदाय नम:। ॐ क्षेत्रपालाय नम:। (आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से नमस्कार करावें -)

आग्नेयपुरुषो रक्तः सर्वदेवमयोऽव्ययः। धूम्रकेतुरजोऽध्यक्षस्तस्मै नित्यं नमो नमः।।

ततो बलयः

इमं माषबलिं देव गृहाणाग्ने हुताशन। यज्ञसंरक्षाणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव।। अग्नये साङ्गाय सपरिवाराय सशक्तिकाय इमं सदीपदिधमाषभक्तबलिं समर्पयामि। भो अग्ने स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सिपरवारस्य गृहे आयुःकर्ता शान्तिकर्ता पृष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन अग्निः साङ्गः सपरिवारः सशक्तिकः प्रीयताम्।

(आचार्य यजमान को दक्षिण दिशा में ले जाकर आचमन करावें और उसी से द्वारकलशों को स्थापित करावें तथा पूजा करवाके निम्न श्लोक का उच्चारण करके नमस्कार करावें-)

नमस्ते धर्मराजाय त्रेतायुगाधिपाय च। यजुर्वेदादिदेवाय सुभद्रं द्वारदक्षिणे।। (आचार्य कलश के ऊपर निम्न नाम वाक्यों का उच्चारण करके यजमान से पूजा करावें-) ॐ पर्जन्याय नमः। ॐ अशोकाय नमः। (मध्य कलश पर-) ॐ वामनाख्यदिग्गजाय नमः।

(आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से प्रार्थना करवायें-) सवस्त्रं सजलं गन्धं पुष्पपल्लवसंयुतम्। सरलं स्थापयाम्येव द्वारेऽस्मिन्कलशद्वयम्।। ततो द्वारोध्वें - ॐ द्वारस्यै नमः। अधः - ॐ देहल्यै नमः। द्वारशाखयोः - ॐ पुष्पदन्ताय नमः। ॐ कपिईने नमः। द्वारकलशयोः - ॐ गोदावय्यैं नमः। ॐ कृष्णायै नमः। (इन नाममन्त्रों से पूजा करवावें। पुनः आचार्य निम्न श्लोक का उच्चार करके यजमान से प्रार्थना करवायें -)

वैवस्वत महादेव नमस्ते धर्मसाक्षिक। शिवाज्ञयाऽिपहितो देव: दिश: रक्ष भवानिह।। (आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करके दोनों यजुर्वेदियों की पूजा यजमान से करावें-) ॐ इषे त्वोज्जें त्वा वायव स्त्थ देवो व: सिवता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्वमष्ट्रया इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा मा वस्तेन ईशत माघश र्ठः सो ध्रुवा अस्मिन्गोपतौ स्यात बिह्वर्यजमानस्य पश्नुन्पाहि।। (उसके बाद मध्यकलश के ऊपर -)

एह्येहि वैवस्वत धर्मराजः सर्वामरैरर्चित धर्ममूर्ते। शुभाशुभानन्दशुचामधीश शिवाय नः पाहि मखं नमस्ते।।

ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्म्माय स्वाहा घर्म्म: पित्रे।। ॐ भूर्भुव: स्व: यमं साङ्गं सपरिवारमावाहयामि।

(आचार्य उपरोक्त मन्त्र और वाक्य का उच्चारण करके ध्वज पताका का स्पर्श यजमान से करवाके निम्न श्लोक और मन्त्र का उच्चारण करें-) कृष्णवर्णां पताकाञ्च कृष्णवर्णध्वजं तथा। अंतकायालभामीह क्रतुकर्मणि साक्षिणे।। ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्म: पित्रे।। इमां पताकां रम्यां च ध्वजं माल्यादिभूषितम्। यमदेव गृहाण त्वं प्रसीद करुणाकर।। (आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से प्रार्थना करवायें-) यमस्तु महिषारूढो दण्डहस्तो महाबल:। धर्मसाक्षी विशुद्धात्मा तस्मै: नित्यं नमो नम:।। ततो बलय:

इमं माषबलिं देव गृहाणान्तक वै यम। यज्ञ संरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव।। ॐ यमाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं दिधमाषभक्तबलिं समर्पयामि। भो यम बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सिपरवारस्य गृहे आयुःकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तृष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन यमः साङ्गः सपरिवारः सायुधः सशक्तिकः प्रीयतां न मम।

(नैर्ऋत्यकोण में यजमान को ले जाकर आचमन करवाके कलश की स्थापना करवाके उसके ऊपर निर्ऋित का आवाहन निम्न मन्त्र का उच्चारण करके करावें-)

निर्ऋत्तिं खङ्गहस्तं च सर्वलोकैकपावनम्। आवाहयामि यज्ञेऽस्मिन्पूजयेम् प्रतिगृह्यताम्।। (आचार्य कलश के ऊपर निम्न नाममन्त्रों का उच्चारण करके यजमान से पूजा करावें-)

ॐ कुमुदाय नमः। ॐ दुर्ज्ञयाय नमः। (कलश की पूजा करके-)

एह्येहि रक्षोगणनायकस्त्वं विशालवेतालिपशाचसङ्घ्यै। ममार्ध्वं पाहि पिशाचनाथ लोकेश्वर त्वं भगवन्नमस्ते।।

ॐ असुन्वन्तमयजमानिमच्छ स्तेनस्येत्यामिन्विह तस्करस्य। अन्यमस्मिदच्छ सा त इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु।। ॐ भूर्भुव: स्व: निर्ऋतिं साङ्गं सपिरवारं साः आवाहयािम। (आचार्य इस मन्त्र का उच्चारण करके यजमान से पूजा करवाके ध्वजपताका का स्पर्श निम्न श्लोक और मन्त्र का उच्चारण करके करावें-)

पताकानिर्ऋतिञ्चेव नीलवर्णं ध्वजं तथा। पिशाचगणनाथाय आलभामि ममाध्वरे।।

ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छ सा त इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु।।

(आचार्य निम्न नाममन्त्रों का उच्चारण करके यजमान से ध्वजपताका की पूजा करावें-)

ॐ कुमुदाय नम:। ॐ क्षेत्रपालाय नम:।

(आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से प्रार्थना करवायें-) सर्वप्रेताधिपो देवो निर्ऋतिर्नीलविग्रहः। करे खङ्गधारौ नित्यं निर्ऋतये नमो नमः।।

ततो बलयः

इमं माषबलिं यक्षो गृहाण निर्ऋतिप्रभो। यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव।।

ॐ निर्ऋतये साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं दिधमाषभक्तबलिं समर्पयामि। भो निर्ऋते बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सिपरवारस्य गृहे आयुःकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन निर्ऋतिः साङ्गः सपरिवारः सायुधः सशक्तिकः प्रीयतां न मम।

(पश्चिम दिशा में कलश की पूजा करें एवं प्रार्थना करे।)

नमोस्तु कामरूपाय पश्चिमद्वारिश्रताय च। सामवेदाधिपस्त्वं हि नाम्ना कल्याणकारक।।

(आचार्य कलश के ऊपर निम्न नाममन्त्रों का उच्चारण करके यजमान से पूजा करावें-)

ॐ भूतसञ्जीवनाय नमः। ॐ अमृताय नमः। मध्यमकलशे - ॐ अनन्ताख्यदिग्गजाय नमः। द्वारोध्वं-द्वारिश्रये नमः। अधः-देहल्ये नमः। द्वारशाखयोः-ॐ नन्दिन्ये नमः।

ॐ चण्डायै नमः। द्वारकलशयो:-ॐ रेवायै नमः। ॐ ताप्यै नमः।

(आचार्य दो सामवेदियों की पूजा इस मन्त्र का उच्चारण करके यजमान से करावें -)

ॐ अग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये। निहोता सित्स बर्हिषि।

(इस प्रकार पूजा करके मध्य कलश में-)

एह्येहि यादोगणवारिधीनां गणेन पर्जन्य सहाप्सरोभि:। विद्याधरेन्द्रामरगीयमान पाहि त्वमस्मान्भगवन्नमस्ते।।

ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुश र्ठः स मा न आयुः प्रमोषीः।। ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणं साङ्गं सपरिवारं आवाहयामि ॐ वरुणाय साङ्गाय सपरिवाराय नमः।

(यजमान इस प्रकार पूजा करवाके ध्वजपताका का स्पर्श यजमान से करवाके निम्न श्लोक और मन्त्र का उच्चारण करें -)

श्वेतवर्णां पताकां च ध्वजं श्वेतमयं शुभम्। वरुणाय जलेशाय ह्यालभामि सुखाप्तये।। ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यम ठीः श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम।।

(आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से प्रार्थना करवायें-) पाशहस्तस्तु वरुणः साम्भसाम्पतिरीश्वरः। शमन्नयाप्सु विघ्नानि नमस्ते पाशपाणये।। ततो बलयः

इमं माषबलिं देव: गृहाण जलधीश्वर। यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव।। ॐ वरुणाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं दिधमाषभक्तबलिं समर्पयामि। भो वरुण बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सिपरवारस्य गृहे आयुःकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन नमो भगवते सकलजनानामिधपतये न मम।

(वायव्यकोण में यजमान को ले जाकर आचमन करवाके कलश की स्थापना करवाके आचार्य निम्न नाममन्त्रों का उच्चारण करके गन्धादि से पूजन करावें-) ॐ पुष्पदन्ताय नम:। ॐ सिद्धार्थाय नम:। (कलश के ऊपर -)

एह्येहि यज्ञे मम रक्षणाय मृगाधिरूढः सह सिद्धसङ्घैः। प्राणाधिपः कालकवेः सहाय गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।।

ॐ आ नो नियुद्धिः शतिनीभिरध्वर र्वः सहस्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्। वायो अस्मिन्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः।। ॐ भूर्भुवः स्वः वायवे नमः। वायुं आवाहयामि स्थापयामि।।

(पूजा करवाके आचार्य ध्वजपताका का स्पर्श यजमान से निम्न श्लोक और मन्त्र का उच्चारण करके करावें -)

पताकां वायवे धूम्रां धूम्रवर्णध्वजं तथा। आलभाम्यनुरूपाय प्राणदाय हिताय च।। ॐ वायो ये ते सहस्रिणो रथासस्तेभिरागहि। नियुत्वान् सोमपीतये।।

(आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से प्रार्थना करवायें-)

अनाकारो महौजाश्च सर्वगन्धवः प्रभु। तस्मै पूज्याय जगतो वायवेऽहं नमामि च।। ततो बलयः माषभक्तबलिं वायो मया दत्तं गृहाण भो। यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव।। ॐ वायवे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं दिधमाषभक्तबलिं समर्पयामि। भो वायु बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सिपरवारस्य गृहे आयुःकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन नमो भगवते वायवे सकलप्राणानामिधपतये प्रीयतां न मम।

(आचार्य उत्तर दिशा में यजमान को ले जाकर आचमन करवाके दोनों द्वारकलशों की स्थापना करवाके पूजा करवाके निम्न श्लोक का उच्चारण करके नमस्कार करावें-) नमस्ते दिव्यरूपत्वमथर्वाधिपते प्रभो। कलावधिपतिर्नाम्ना मङ्गलञ्चोत्तरानन्।।

(आचार्य कलश के ऊपर निम्न नाममन्त्रों का उच्चारण करके यजमान से पूजा करावें-)

ॐ धनदाय नमः। ॐ श्रीप्रदाय नमः। मध्यकलशे सार्वभौमदिग्गजाय नमः। सम्पूज्य द्वारोद्धर्वं-ॐ द्वारिश्रयै नमः। अधः-ॐ देहल्यै नमः। द्वारशाखयोः-ॐ महाकालाय नमः। ॐ भृङ्गणे नमः। द्वारकलशयोः-ॐ नर्मदायै नमः। ॐ ताप्यै नमः।

(आचार्य इस मन्त्र का उच्चारण करके यजमान से दोनों अथर्ववेदियों की पूजा करावें-) ॐ शं नो देवीरिभष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरिभस्रवन्तु नः।। (मध्य कलश में-) एह्येहि यज्ञेश्वर यज्ञरक्षां विधत्स्वं नक्षत्रगणेन सार्धम्। सर्वौषिधःभिः पितृभिः सहैव गृहाण पूजां भगवत्रमस्ते।।

ॐ वय र्ठः सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रत। प्रजावन्तः सचेमिह।। ॐ भूर्भुवः स्वः सोमाय नमः। सोममावाहयामि स्थापयामि।

(आचार्य पूजा करवाके यजमान से ध्वजपताका का स्पर्श निम्न श्लोक और मन्त्र का उच्चारण करके करावें-)

हरितवर्णां पताकां च हरिद्वर्णमयं ध्वजम्। कुबेराय लभाम्येव पूजये च सदार्थिना।।

ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्णयम्। भवा वाजस्य सङ्गर्थे।।

(आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से प्रार्थना करवायें-)

गौरोपमपुमान्स्थूलः सर्वौषधिरसादयः। नक्षत्राधिपतिः सोमस्तस्मै नित्यं नमो नमः।। ततो बलयः

इमं माषभक्तबलिं देव गृहाण त्वं धनप्रदः। यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव।। ॐ सोमाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं दिधमाषभक्तबिलं समर्पयामि। भो सोम बिलं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सिपरवारस्य गृहे आयुःकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदो भव। अनेन बिलदानेन नमो भगवते सोमाय सकलकोशाधिपत्रये प्रीयतां न मम।

(आचार्य ईशानकोण में यजमान को ले जाकर आचमन करवाके कलश स्थापित करावें-)

ॐ सुप्रतीकाय नमः। ॐ मङ्गलाय नमः। (पूजन करवाके कलश के ऊपर-)

एह्येहि विश्वेश्वर नित्रशूलकपालखट्वाङ्गधरेण सार्धम्। लोकेश भूतेश्वर यज्ञसिध्यै गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।।

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रिक्षता पायुरदब्धः स्वस्तये।। ॐ ईशानाय नमः। ईशानमावाहयामि स्थापयामि।

(आचार्य पूजा करवाके यजमान से ध्वजपताका का स्पर्श निम्न श्लोक और मन्त्र का उच्चारण करके करावें-)

ईशानाय ध्वजं श्वेतं पताकां गन्धभूषिताम्। आलभामि महेशाय वृषारूढाय शूलिने।। ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रिक्षता पायुरदब्धः स्वस्तये।।

(आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से प्रार्थना करवायें-) सर्वाधिपो महादेव ईशान: शुक्ल ईश्वर:। शुलपाणिर्विरूपाक्ष: तस्मै नित्यं नमो नम:।।

ततो बलयः

इमं माषबलिं देव गृहाणेशानशङ्कर:। यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव।।

ॐ ईशानाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं दिधमाषभक्तबिलं समर्पयामि। भो ईशानं बिलं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सिपरवारस्य गृहे आयुःकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदो भव। अनेन बिलदानेन ईशानः साङ्गः सपरिवारः सायुधः सशक्तिकः प्रीयतां न मम।

(ईशानकोण और पूर्व दिशा के मध्य में यजमान को ले जाकर आचमन करवाके उससे कलश को स्थापित करवाके कलश के ऊपर -)

एह्योहि विष्णवाधिपते सुरेन्द्रलोकेन सार्द्धं पृतदेवताभिः। सर्वस्य धातास्यमितप्रभावो विशाध्वरत्रः सततं शिवाय।।

ॐ अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषा:। यः शर्ठः सते स्तुवते धायि पज्र इन्द्रज्येष्ठा अस्माँ२।। अवन्तु देवा:।। ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः। ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि।

(आचार्य पूजा करवाके यजमान से ध्वजपताका का स्पर्श निम्न श्लोक और मन्त्र का उच्चारण करके करावें-)

पद्मवर्णां पताकां च पद्मवर्णध्वजं तथा। आलभामि सुरेशाय ब्रह्मणेनन्तशक्तये।। ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमत: सुरुचो वेन आव:। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठा:

सतश्च योनिमसतश्च विव:।।

(आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से प्रार्थना करवायें-) पद्मयोनिश्चतुर्मूर्त्ति वेदव्यासिपतामहः। यज्ञाध्यक्षश्चतुर्वक्रस्तस्मै नित्यं नमो नमः।। ततो बलयः

इमं माषबलिं ब्रह्मन् गृहाण कमलासन। यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव।।

ॐ ब्रह्मणे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं दिधमाषभक्तबिलं समर्पयामि। भो ब्रह्मन् बिलं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सिपरवारस्यायुः कर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदो भव। अनेन बिलदानेन नमो भगवते ब्रह्मणे सकलवेदशास्त्रतत्वज्ञानाधिपतये प्रीयतां न मम।

(आचार्य नैऋत्यकोण और पश्चिम दिशा के मध्य में यजमान को ले जाकर आचमन करवाके कलश की स्थापना करावें तथा इस नाममन्त्र से वरुण की पूजा करावें-) ॐ वरुणाय नम:। (इस प्रकार से पूजा करवाके पुन: कलश के ऊपर-)

एह्येहि पातालधरामरेन्द्रनागाङ्गनाकिन्नरगीयमान। यक्षोरगेन्द्रामरलोकसङ्घ्यैरनन्त रक्षाध्वरमस्मदीयम्।। ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनि। यच्छानः शर्म सप्रथाः।। ॐ भूर्भुवः स्वः अनन्ताय नमः। अनन्तमावाहयामि स्थापयामि।

(आचार्य पूजा करवाके यजमान से ध्वजपताका का स्पर्श निम्न श्लोक और मन्त्र का उच्चारण करके करावें-)

मेघवर्णां पताकां च मेघवर्णध्वजं तथा। आलभामि ह्यनन्ताय धरणीधारिणे नमः।। ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।। (आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से प्रार्थना करवायें-)

घनवर्णां पताकेमां ध्वजं गन्धविभूषितम्। स्थापयामि प्रसन्नाय अनन्ताय नमो नमः। ततो बलयः

इमं माषबिलं शेष गृहाणानन्तपन्नग। यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव।। ॐ अनन्ताय साङ्गाय सपिरवाराय सायुधाय सशिक्तकाय इमं दिधमाषभक्तबिलं समर्पयािम। भो अनन्त बिलं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सिपरवारस्यायुः कर्ता शान्तिकर्ता पृष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदो भव। अनेन बिलदानेन अनन्तः प्रीयतां न मम। (आचार्य ईशानकोण में यजमान को ले जाकर आचमन करवाके उससे महाध्वज का पूजन करावें। अत्यन्त ऊंचा दण्ड हो दस हाथ या सोलह हाथ लम्बा महाध्वज हो, विचित्र वर्ण हो, किनारे पर छोटे-छोटे घुँघरू लगे हों, तीन हाथ चौड़ा, सात हाथ लम्बा अथवा पाँच हाथ चौड़ा, दस हाथ लम्बा महाध्वज बनावें।

ॐ आ ब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सिप्तः पुरिन्धर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्।। ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। वंशे-ॐ किन्नरेभ्यो नमः। ॐ पन्नगेभ्यो नमः।

(इन नाममन्त्रों से पूजा करवाके आचार्य निम्न श्लोक और मन्त्र का उच्चारण करके यजमान से उसका स्पर्श करावें-)

इमं विचित्रवर्णन्तु महाध्वजविनिर्मितम्। महाध्वजञ्चालभामि महेन्द्राय सुप्रीतये।। ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः।।

अमुं महाध्वजं चित्रं सर्वविष्नविनाशकम्। महामण्डपमध्ये तु स्थापयामि सुरार्चने।। ॐ इन्द्रस्य वृष्णो वरुणस्य राज्ञ आदित्यानां मरुतार्ठः शर्ध उग्रम्। महामनसां भुवनच्यवानां घोषो देवानां जयतामुदस्थात्।। अनया पूजया इन्द्रः प्रीयताम्। (तदुपरान्त सोलह विल्लयों पर - 'ॐ सर्वेभ्यो नमः।' बाँसों पर 'ॐ किन्नरेभ्यो नमः।' मण्डप पृष्ठ पर - 'ॐ पन्नगेभ्यो नमः। ॐ पन्नगेभ्यो नमः।' का उच्चारण करवाके पूजा करवाके उसके बाद मण्डप से बाहर पूर्व में (दानो द्योत में ईशानकोण में) लेप करवाके भूमि पर यजमान को बैठाकर आचार्य वहाँ अष्टदल का निर्माण करें। आठों दलों पर आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करके यजमान से पूजा करावें-)

ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमः।।

(आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से प्रार्थना करवायें-)

त्रैलोक्ये यानि भूतानि स्थावराणि चराणि च। ब्रह्मविष्णुशिवै: सार्द्धं रक्षां कुर्वन्तु तानैव।।१।। देवदानवगन्धर्वा यक्ष-राक्षस-पन्नगा:। ऋषयो मुनयो गावो देवमातर एव च।।२।। सर्वे ममाधरे रक्षां प्रकुर्वन्तु मुदान्विता:। ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च क्षेत्रपालौ गणै: सह। रक्षन्तु मण्डपं सर्वेध्नन्तु रक्षांसि सर्वत:।।३।।

(आचार्य अक्षत पुञ्जों पर पूर्व आदि क्रम से निम्न वाक्यों का उच्चारण करके यजमान से आवाहन करावें-)

ॐ त्रैलोक्यस्थैभ्यः स्थावरेभ्यो नमः त्रैलोक्य स्थावरानावाहयामि। ॐ त्रैलोक्य स्थरेभ्यश्चरेभ्यो नमः त्रैलोक्य चरानावाहयामि। ॐ ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणं मावाहयामि। ॐ विष्णवे नमः विष्णुं मावाहयामि। ॐ शिवाय नमः शिवमावाहयामि। ॐ देवेभ्यो नमः देवानावाहयामि। ॐ दानवेभ्यो नमः दानवानावाहयामि। ॐ गन्धर्वेभ्यो नमः गन्धर्वानावाहयामि। ॐ यक्षेभ्यो नमः यक्षनावाहयामि। ॐ राक्षसेभ्यो नमः राक्षसानावाहयामि। ॐ पत्रगेभ्यो नमः पत्रगानावाहयामि। ॐ ऋषिभ्यो नमः ऋषीनावाहयामि। ॐ मुनिभ्यो नमः मुनिनावाहयामि। ॐ गोभ्यो नमः गावः आवाहयामि। ॐ देवमातुभ्यो नमः देवमातु आवाहयामि।

इस प्रकार आवाहन और पूजन यजमान से करवाके आचार्य इन्द्रादि लोकपालों के लिए घृत व भात की बलि इस वाक्य का उच्चारण करके प्रदान करें -)

ॐ नमो भगवते इन्द्राय पूर्विदग्वासिभ्यः इन्द्रपार्षदेभ्योदिगीशमातृगण क्षेत्रपालादिभ्यो-बलिरयमुपतिष्ठतु स्वाहा।

(उपरोक्त कर्म के पश्चात् यजमान अपने दोनों हाथों में पुष्पों को लेवें और आचार्य निम्न श्लोकों का उच्चारण करते हुए उससे पुष्पाञ्जलि प्रदान करावें-)

नन्दे नन्दय वासिष्ठे वसुभिः प्रजया सह। जय भार्गवदायादे प्रजानां विजयावह।।१।।

पूर्णे गिरिशदायादे पूर्णकर्म कुरुष्व माम्। भद्रे काश्यिपदायादे कुरु भद्रां मितं मम।।२।। सर्वबीजौषिधयुक्ते सर्वरत्नौषिधवृते। रुचिरे नन्दने नन्दे वासिष्ठे नन्दतामिह।।३।। प्रजापितसुते देवि चतुरस्रे महीयिस। सुव्रते सुभगे देवि गृहे काश्यिप रम्यताम्। पूजिते परमाचार्यैर्गन्धमाल्यैरलङ्कृते।।४।। भवभूतिकरे देवि गृहे भार्गिव रम्यताम्। अव्यये चाक्षते पूर्णे मुनेरङ्गिरसः सुते। मनुष्यधेनुहस्त्यश्च पशुवृद्धिकरी भव।।५।। (यजमान से पुष्पाञ्जलि प्रदान करवाने के पश्चात् आग्नेयादि लोकपालों का आचार्य बिलदान करावें। इसके पश्चात् बाँस के पात्र आदि पर सभी भूतों के लिए निम्न संकल्प का उच्चारण करके यजमान से बिल प्रदान करावें-)

देशकालौ संकीर्त्य, अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं (वर्माऽहं, गुप्तोऽहं) अस्मिन् अमुकदेवयागकर्मणि मण्डपपूजाङ्गविहितं मातृगणक्षेत्रपालप्रीतये भूत-प्रेत-पिशाचादि निवृत्त्यर्थं सार्वभौतिकबलिदानं करिष्ये।

(आचार्य इस संकल्प को करवाके नवीन बाँस के सूप में अधिक मात्रा में उड़द और भात की बिल रक्खें और निम्न मन्त्र से सभी भूतों की गन्धादि से पूजा यजमान से करावें -)

ॐ नमोस्तु रुद्रेभ्यो ये दिवि येषां वर्षिमषवस्तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोध्वस्तिभ्यो नमो अस्तु ते नोऽवन्तु तेनो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः।।

(आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से प्रार्थना करवायें-) अधश्चैव तु ये लोका असुराश्चैव पन्नगाः। सपत्नीपरिवाराश्च प्रतिगृह्णत्विमं बलिम्।।१।।

नक्षत्राधिपितश्चैव नक्षत्रैः पिरवारितः। स्थानं चैव पितृणां तु सर्वे गृह्णिनन्त्वमं बिलम्।।२।। ये केचित्विह लोकेषु आगता बिलकाङ्क्षिणः। तेभ्यो बिलं प्रयच्छामि नमस्कृत्य पुनः पुनः।।३।। बिलं गृहणिन्त्वमे देवा आदित्या वसवस्तथा। मरुतश्चाश्विनौ रुद्राः सुपर्णाः पन्नगा ग्रहाः।।४।। असुरा यातुधानाश्च पिशाचामातरोगणाः। शािकन्यो यक्षवेताला योगिन्यः पूतनाः शिवाः।।५।। जृम्भकाः सिद्धगन्धर्वा नागा विद्याधरा नगाः। दिक्पाला लोकपालाश्च ये च विघ्नविनायकाः।।६।। जगतां शािन्तिकर्तारो ब्रह्माद्याश्च महर्षयः। मा विघ्ना मा च ये पापं मा सन्तु परिपन्थिनः।।७।। सौम्या भवन्तु तृप्ताश्च देवाभूतगणास्तथा। ते गृह्णन्तु मया दत्तं बिलं वै सार्वभौतिकम्।।८।। (अनेन बिलदानेन अधोलोकादयः प्रीयन्ताम्।) ।।इति मण्डप पूजनम्।।

''श्री गणेशायनमः''

अथ देव पूजा प्रकरण हस्तप्रक्षालनम् एवं पवित्रकरणम्

अथमन्त्रः - अपवित्रः पवित्रो वेत्यस्य वामदेव ऋषिः मुखे विष्णु देवता गायत्री छन्दः पवित्र करणे विनियोगः।।

मन्त्र - ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वाऽवस्थां गतोऽपिवा। यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स

बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।। पुण्डरीकाक्ष पुनातु-२, पुनातु पुण्डरीकाक्षः।।

अथ आचमनम् - त्रिवारं ॐ केशवाय नमः स्वाहाः ॐ माधवाय नमः स्वाहा,

ॐ नारायणाय नमः स्वाहा। ऋषिकेशाय नमः हस्तप्रक्षालनम्

अन्यच्च - ॐ ऋग्वेदाय स्वाहा, ॐ यजुर्वेदाय स्वाहा, ॐ सामवेदाय स्वाहा (इति त्रिभिमन्त्रै:, ब्रह्म तीर्थेन-जलं त्रिराचम्य) ॐ अथर्ववेदाय नमः (इति करौ प्रक्षाल्य-दक्षिण कर्ण स्पृशेत्) ''बाद में प्राणायाम करे।''

स्त्रीणां कृते - "आचमन न करे" - आचमन स्थाने उदकेन नेत्र स्पर्शमाचरेत्"

शिखा बन्धनम् - ॐ मानस्तोके तनये मानऽआयुषि मानो गोषु मानोऽअश्वेषुरीरिष:। मानोळीरान् रुद्र भामिनो - व्वधीर्हविष्मन्त: सदिमत्वा हवामहे।। ॐ चिद्रूपिणि महामाये दिव्यतेज: समन्विते। तिष्ठदेवी शिखामध्ये तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे।। ॐ ब्रह्म वाक्य सहस्रेण-शिव वाक्य शतेन च। विष्णोर्नाम सहस्रेण शिखा ग्रन्थि करोम्यहम्।

अथ पवित्री धारणम् मन्त्र - ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्व्वः प्रसवऽउत्पुनाम्य छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रिश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुनेतच्छकेयम्।। (दिक्षण हस्ते कुशद्वयं वाम हस्ते कुश त्रयं) (पवित्री अभावे सुवर्ण अङ्गुलियं धारयेत्) अथ आसन (पृथ्वी पूजनम्) - भूमि प्रार्थना पृथ्वीतिमन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलंछन्दः कूर्मोदेवता आसने पूजने विनियोगः। ॐ पृथ्वि त्वया धृतालोका देवि त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।। (दिक्षण हस्तमुतानं निवेश्य) ॐ आधार शक्त्यैनमः ॐ कूर्मासनायैनमः ॐ पृथ्विव्यैनमः सर्वोपचारार्थे - पञ्चोपचारै पूजनम्।। नमस्करोमी - प्रार्थना स्तृति

मन्त्र - स्वर्गीकोभिरदो निवासि पुरुषा रब्धाति शुद्धाध्वर - स्वाहाकार वषट् क्रियोत्थममृतं स्वादीय आदीयते - आम्नाय प्रणवैरलङ्कृत जुषैऽमुष्मै मनुष्यै शुभै - र्दिव्ये क्षेत्र सरित पवित्र वपृषै देव्यै पृथ्विव्यै नमः।। इति मन्त्रेण पुजयामि - "दक्षिण हस्तस्य

मध्यमानामिकाभ्यां आसनोपरि किञ्चित जलं क्षिपेत्'' वामपाद पार्ष्णिना त्रिवारं भूमि ताडियत्वा, वा ''ताल त्रय करणम्'' – ॐ सर्व भूत निवारकाय शाङ्गीय सशराय सुदर्शनाय अस्त्रराजाय हुं फट् स्वाहा।

ब्राह्मण द्वारा यजमान ललाटे मङ्गलं तिलकं, मन्त्र - ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा विश्वेवेदाः स्वस्तिनस्ताक्ष्यों अरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु।। यज्ञमान भार्या के तिलक - श्रीश्चते लक्ष्मीश्चपत्न्या वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रुपमश्विनोव्यातम् इष्णन्निषाणा मुम्मऽइषाण सर्वलोकम्मइषाणः।।

बालकस्य तिलक - ॐ यावद् गंगा कुरुक्षेत्रे यावतिष्ठति मेदिनी। यावद्रामकथा लोके तावज्जीवतु बालक:।। ''दीर्घायुर्भव''

कन्या तिलक - ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मानयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पील वासिनीम्।। "दीर्घायुर्भव"

अक्षतारोपणम् - ॐ युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषञ्चरन्तं परितस्थुषः रोचन्ते रोचनादिवि। युञ्जन्तस्य काम्या हरी विपक्षसारथे शोणा धृष्णू नृवाहसा।।

अथ ग्रन्धिबंधनम् (गंठजोड़ा करे) – ॐ तम्पत्नीभिरनु गच्छेम देवाः पुत्रैर्भातृ भिरुत वा हिरण्यैः। नाकं गृभ्णानाः सुकृतस्य लोके तृतीये पृष्ठेऽअधिरोचने दिवः।। ॐ गणाधिपं नमस्कृत्य उमालक्ष्मीं सरस्वतीम्। दम्पत्योः रक्षणार्थायपट ग्रन्थिं करोम्यहम्।। यजमान दक्षिण हस्ते अक्षतपृष्पाण्यादाय स्वस्तिवाचनम् वा भद्र (शान्ति) सूक्तं पठेयुः।

मन्त्र - ॐ स्वस्तिनऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नःपूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्यों अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पितर्दधातु।।१।। ॐ पयः पृथिव्याम्पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तिरक्षे पयोधाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्मम्।।२।। ॐ विष्णो रराटमिस विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरिस विष्णोर्धुवोऽिस वैष्णवमिसिविष्णवे त्वा।।३।। ॐ अग्निर्देवता व्वातो देवता सूर्य्यो देवता चन्द्रमा देवता। वसवो देवता रुद्रा देवता दित्या देवता मरुतो देवता विश्वे देवा देवता बृहस्पितर्देवतेन्द्रो देवता व्वरुणो देवता।।४।। ॐ द्यौः शान्तिरन्तिरक्ष ठिः शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्ति रोषधयः शान्तिः। व्यनस्पतय्यः शन्तिर्विश्वे देवाः शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्ति रोषधयः शान्तिः। व्यनस्पतय्यः शन्तिर्विश्वे देवाः शान्तिब्रह्म शान्तिः सर्व ठिः शान्तिः शान्तिरेवशान्तिः सामाशान्तिरेधि।।५।। ॐ व्विश्वानि देव सिवतर्दुरितानिपरासुव! यद्धद्रन्तन्न – आसुव।।६।। यतोयतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु। शन्नः कुरु प्रजाभ्योऽभयन्नः पशुभ्यः।।७।। ॐ एतन्ते देव सिवत र्यज्ञम्प्राहुर्बृहस्पतये ब्रह्मणे। तेन यज्ञमवतेन यज्ञपतिन्तेन मामव।।८।।

।। ॐ शान्तिः शान्तिः सुशान्तिर्भवतु। सर्वारिष्ट शान्तिर्भवतु।

ॐ आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः। देवा नो यथा सदिमद् वृधे असन्नप्रायुवो रिक्षतारो दिवे दिवे।।१।। देवानां भद्रा सुमितर्ऋजूयतां देवाना र्ठः रातिरभि नो निवर्तताम्।। देवाना र्ठः सख्यम्पसेदिमा वयं देवा न आयु: प्रतिरन्तु जीवसे।।२।। तान्पूर्वया निविदा हमहे वयं भगं मित्रमदितिं दक्षमित्रधम्। अर्यमणं वरुण र्ठः सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत्।।३।। तन्नो वातो मयोभु वातु भेषजं तन्माता पृथिवी तित्पता द्यौ:। तद् ग्रावाण: सोमस्तो मयोभुवस्तदश्विना शृणुतं धिष्ण्या युवम्।।४।। तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।।५।। स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।६।। पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो विदथेषु जग्मय:।। अग्निजिह्वा मनव: सूरचक्षसो विश्वे नो देवा अवसागमन्निह।।७।। भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गेस्तुष्ट्रवा र्ठः सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायु:।।८।। शतिमन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रानश्चक्रा जरसं तनुनाम्। पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मानो मध्या रीरिषता युर्गन्तो:।।९।। अदितिद्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्र:। विश्वेदेवा अदिति: पञ्चजना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्।।१०।। तम्पत्नीभिरन् गच्छेम देवाः पुत्रैर्भात् भिरुत वा हिरण्यैः। नाकं गृभ्णानाः सुकृतस्यलोके तृतीये पृष्ठेऽअधिरोचने दिवः।।११।। आयुष्यं व्वर्च्चस्य र्ठः रायस्पोषमौद्भिदम्। इद र्व. हिरण्यं वर्च्चस्व ज्जैत्राया विशतादुमाम्।।१२।। द्यौ: शान्तिरन्तरिक्ष र्ठः शान्ति: पृथिवी शान्तिराप: शान्तिरोषधय: शान्ति:। व्वस्प्पतय: शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वे ठीः शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामाशान्तिरेधि।।१३।। यतोः।।१४।। विश्वानिः।।१५।। ॐ शान्तिः शान्तिः सुशान्तिर्भवत्। सर्वारिष्टशान्तिर्भवत्।

(इति शान्तिपाठं पठित्वा लक्षमीनारायणादि देवान् प्रतिमन्त्र प्रणमेत्। ॐ श्री मन्महागणाधिपतये नमः। ॐ लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः ॐ। उमामहेश्वराभ्यां नमः ॐ। वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः। ॐ शचीपुरन्दराभ्यां नमः। ॐ मातृपितृ चरणकमलेभ्यो नमः। ॐ कुलदेवताभ्यो नमः। ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः। ॐ ग्रामदेवताभ्यो नमः। ॐ स्थानदेवताभ्यो नमः। ॐ वास्तुदेवताभ्यो नमः। ॐ एतत्कर्मप्रधान देवताभ्यो नमः। ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। ॐ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः। ॐ सर्वेभ्यो तीर्थेभ्यो नमः। ॐ सर्वाभ्यश्वितभ्यो नमः। ॐ सर्वाभ्यश्वितभ्यो नमः। ॐ सर्वाभ्यश्वितभ्यो नमः।

यजमान बोले - निर्विघ्नमस्तु (अविघ्नमस्तु) ॐ पुण्यंपुण्याहं दीर्घमायुरस्तु - विप्राः अस्तु दीर्घमायुः।। हस्ते दुर्वा, अक्षत, पुष्पाण्यादाय - मंगल श्लोकान् पठेत्।।

ॐ सुमुखश्चैकदन्तश्च किपलो गजकर्णकः। लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः।।१।। धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः। द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादिप।।२।। विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा। सङ्ग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते।।३।। शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये।।४।। अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः। सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः।।५।। सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये। शिवे। सर्वार्थसाधिके। शरण्ये त्र्यम्बके। गौरि नारायणि नमोऽस्तुते।।६।। सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम्। येषां हृदिस्थो भगवान मङ्गलायतनं हरिः।।७।।

तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव।

विद्याबलं देवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि।।८।।

लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः। येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः।।९।। यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः। तत्र श्रीविंजयो भूतिर्धुवा नीतिर्मितर्मम।।१०।। अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते। तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्।।११।। स्मृतेः सकलकल्याणं भाजनं यत्र जायते। पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हिरम्।।१२।। सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयित्रभुवनेश्वराः। देवा दिशन्तु नः सिद्धं ब्रह्मेशानजनार्दनाः।।१३।। विश्वेशं माधवं दुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम्। वन्दे काशीं गृहां गङ्गां भवानीं मणिकर्णिकाम्।१४।। विनायकं गुरुं भानुं ब्रह्म विष्णु महेश्वरान्। सरस्वतीं प्रणौम्यादौ सर्वकार्याथ सिद्धये।।१५।। सर्वमङ्गल माङ्गल्यं वरेण्यं वरदं विभूम्। नारायणं नमस्कृत्य सर्व कर्माणिकारयेत्।१६।। वक्रतुण्ड महाकाय कोटि सूर्य समप्रभ। निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्व कार्येषु सर्वदा।।१७।। यज्ञ (याग अनुष्ठान) कर्मण निर्विघ्नतापूर्वक सिद्धि - अर्थम् - मंगलाचरण (मंगल अभ्युदयार्थम्) - हेरम्ब : सुरपूजितो गुणमयो लम्बोदरः श्रीयुतः श्रीशुंडो गजकर्णको गजमुखो गम्भीरविद्यो गुणी। गौर्याःपुत्र गणेश्वरो हरसुतो गोविन्द पूजाकृतो, यात्रा जन्म विवाह कार्य समये कुर्यात् शुभं मंगलम्।।१।।

वाल्मीकिः सनकः सनंदनमुनिर्व्यासो वसिष्ठोभृगु-र्जाबालिर्जमदिग्नराम जनको गंगाधरो गौतमः। मांधाता भरतो नृपश्च सगरो धन्यो दिलीपो नृपः-पुण्यो धर्मसुतो ययातिनहुषः कुर्वः।।२।।

लक्ष्मीकौस्तुभपारिजातक सुरा धन्वंतरिश्चन्द्रमा- गावः कामदुधाः सुरेश्वरगजो रंभादिदेवांगनाः। अश्वः सप्तमुखस्तथा हरिधनुशंखंविषंचामृतम्- रत्नानीह चतुर्दश प्रतिदिनं कुः।।३।।

ब्रह्मज्ञानरसायनम् श्रुतिकथावैद्यस्तथा ज्योतिषम् -

व्याकरणं धनुर्धरं जलतरं मंत्राक्षरं वैदिकम्। कोकवाहनवाजिनम् नटनृतं संबोधनं चातुरी विद्यानाम चतुर्दशः प्रतिदिनं कुः।।४।।

ब्रह्मावेदपितः शिवः पशुपितः सूर्योग्रहाणां पितः – शक्रो देवपितर्नलो नरपितः स्कदश्च सेनापितः। विष्णुर्यज्ञपितर्यमः पितृपितर्तारापितश्चन्द्रमा – इत्येते पतयः सुपर्णसिहता कुर्वन्तुः।।५।।

अथ कर्मपात्र अर्चनम् - अक्षतपुञ्जोपरि कर्मपात्रं निधाय

अथ वरुणावाहनम् - तत्वायामीत्यस्य शुनः शेष ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः वरुणोदेवता वरुणावाहने विनियोगः।।

मन्त्र - कलश में वरुण का ध्यान और आवाहन - ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हिविभि:। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुश र्ठः स मा न आयु: प्र मोषी:।। अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्ग सपरिवारं सायुधं सशक्तिकमावाहयामि।

प्रतिष्ठापन्नं - ॐ मनोज्तिर्ज्जषतामाज्यस्यबृहस्पतिर्य्यज्ञिममन्तनोत्त्वरिष्ट्रं य्यज्ञ र्ठः समिमन्दधातु।। व्विश्श्वेदेवासऽइहमादयन्तामो३म्प्रतिष्ठु।। ॐ वरुणायनम:। वरुणं सुप्रतिष्ठितो वरदो भव।। प्रतिष्ठाप्य 'ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः - पञ्चोपचारै संपूज्य।। ततः अनामिकया कलशं स्पृष्टा अभिमन्त्रयेत् ॐ कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रित:। मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृता:।। कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा। ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो अथर्वणः।। अङ्गेश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः। अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा।। आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः। गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु।। सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः। आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः।। ततः चतुर्वेद पूजनम् - पूर्वे ऋग्वेदाय नमः।। दक्षिणे यजुर्वेदाय नमः।। पश्चिमे सामवेदाय नमः।। उत्तरे अथर्वणवेदाय नमः।। कलशमध्ये अपाम्पतये वरुणाय नमः।। इति वरुणं सम्पूज्य ''गायत्र्यादिभ्यो नमः'' इति कलशदेवताः पञ्चोपचारैरभ्यर्च्य कलशं प्रार्थयेत्।। देवदानवसंवादे मध्यमाने महोदधौ। उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम्।। त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्विय स्थिताः। त्विय तिष्ठन्ति भूतानि त्विय प्राणाः प्रतिष्ठिताः।। शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापितः। आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः।। त्विय तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः। त्वत्प्रसादादिमां पूजां कर्तुमीहे जलोद्भव।। सान्निध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा।। अङ्करशमुद्रया सूर्यमण्डलात् सर्वाणि तीर्थान्यावाह्य। वं इति धेनुमुद्रया अमृतीकृत्य हुं इति कवचेनावगुण्ठ्य

मत्स्यमुद्रयाऽऽच्छाद्य वं इति मूलेनाष्टवारम् अभिमन्त्रयं (अभिमन्त्रयेत्) जलेनालोड्य। ॐ नमामिगङ्गे तवपादपङ्कजम् सुरासुरैवन्दित दिव्यरुपम्। भुक्तिंच मुक्तिंच ददामि नित्यं भावानुसारेण सदा नराणाम्।। गङ्गा सिन्धु सरस्वती च यमुना गोदावरी नर्मदा-कावेरी सरयु महेन्द्र तनया चर्मण्वती वेदिका।। क्षिप्रा वेत्रवती महासुर नदी ख्याता गया गण्डकी पूर्णाः पूर्णजलैः समुद्र सिहताः कुर्वन्तुनो मङ्गलम्।। "इति मन्त्रेण जलेन आलोड्य" तस्माद् उदकादुदकं गृहीत्वा पूजोपकरणं (पूजा द्रव्याणि एवं स्वात्मानं सम्प्रोक्षयेत्) तत्र मन्त्र - ॐ पुनन्तुमादेवजनाः पुनन्तुमनसाधियः। पुनन्तु विश्वा भूतानिजातवेदः पुनीहिमा।। ॐ आपोहिष्ट्वा मयोभुवस्तानऽऊर्जेदधातन।। महेरणायचक्षसे।। योव÷शिवतमोरसस्तस्यभाजयतेहन÷ उशतीरिवमातरः।। तस्म्माऽअरङ्गमामवोयस्य-क्षयायजिन्न्वथ।। आपोजनयथाचनः।।

अथ कर्मसाक्षी दीपपूजनम् - ॐअग्निज्ज्यीतिज्ज्यीतिरग्निः स्वाहा सूर्य्यो ज्ज्योतिज्ज्यीतिः सूर्य्यः स्वाहा।। अग्निर्व्वचींज्ज्योतिर्व्वचीः स्वाहासूर्य्यो व्वचींज्ज्योतिर्व्वचीः स्वाहा।। ज्योतिः सूर्यः सूर्योज्योतिः स्वाहा।।

ॐ भूर्भुवःस्वः दीपस्थदेवतायै नमः आवाहयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि।। प्रार्थयेत्-भो दीप देवरूपस्त्वं कर्मसाक्षी अविघ्नकृत्।। यावत्पूजासमाप्तिः स्यात्तावदत्र स्थिरो भव।। शुभं करोतु कल्याणमारोग्यं सुखसम्पदम्।

शत्रुबुद्धिविनाशं च दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते।। अनेन पूजनेन दीप देवता प्रीयताम् न मम। ॐ गन्धर्व दैवत्याय धूप पात्राय नमः इति धूप पात्रं सम्पूज्य स्थापयेत्। (दीपपात्राद् दिक्षणपार्श्वे स्थापयेत्)

दिग्रक्षणम् - (वामहस्ते सर्षपान् आदाय दिक्षणहस्तेन आच्छाद्य) ॐ रक्षोहणं वलगहनं वैष्णवी-मिदमहं तं वलगमुत्करामि यं मे निष्टयो यममात्यो निचखानेदमहंतं वलगमुत्करामि यं मे समानो यमसमानो निचखानेदमहं तं वलगमुत्करामि यं मे सबन्धु-र्यमसबन्धुर्निचखानेदमहं तं वलगमुत्करामि यं मे सजातो यमसजातो निचखानोत्कृत्यां किरामि।। रक्षोहणो वो वलगहनः प्रोक्षामि वैष्णवान् रक्षोहणो वो वलगहनोऽवनयामि वैष्णवान् रक्षोहणो वो वलगहनोऽवस्तृणामि वैष्णवान् रक्षोहणो वां वलगहनाऽउप दधामि वैष्णवी रक्षोहणो वां वलगहनो पर्यूहामि वैष्णवी वैष्णवमिस वैष्णवा स्था। रक्षसां भागोऽसि निरस्त र्ठः रक्ष इदमह र्ठः रक्षोऽभि तिष्ठामीदमह र्ठः रक्षोऽव बाध इदमह रक्षोऽधमं तमो नयामि। घृतेन द्यावापृथिवी प्रोर्णुवाथां वायो वे स्तोकाना मग्रिराज्यस्य वेतु स्वाहा स्वाहाकृते ऊर्ध्वनभसं मारुतं गच्छतम्।। रक्षोहा विश्वचर्षणिरिभ योनिमयोहते। द्रोणे सधस्थमासदत्।।

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः। ये भूता विघ्नकर्तारः ते नश्यन्तु शिवाज्ञया। अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम्। सर्वेषामवरोधेन पूजाकर्म समारभे। यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वतः। स्थानं त्यक्त्वातु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु। भूतप्रेतिपशाचाद्या अपक्रामन्तु राक्षसाः। स्थानादस्मात् व्रजन्त्वन्यत् स्वीकरोमि भुवं त्विमाम्। भूतानि राक्षसा वापि येऽत्रतिष्ठन्ति केचन। ते सर्वेऽप्यपगच्छन्तु यावत्कर्म करोम्यहम्। "इति दिग्रक्षणम्" संस्कार भास्करे – "सङ्कल्पेन बिनाकर्म यत्किञ्चित कुरुते नरः। फलं चाप्यल्पकं तस्य धर्मस्यार्द्धक्षयोभवेत्।। संकीर्त्यमासपक्षादीन्निमितानि तथैव च। इदं कर्म करिष्येऽहमिति सङ्कल्प माचरेत।।

अथ संकल्पः - यजमान दक्षिण हस्ते - गन्धाक्षत - पुष्प दुर्वा द्रव्य जलमादाय।। ॐ विष्णु र्विष्णु: ॐ नम: परमात्मने-श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्री ब्रह्मणो - द्वितीय परार्धे श्री श्वेतवाराह कल्पे सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे-अष्टाविंशतितमे द्वापरान्ते कलियुगे कलिप्रथम चरणे तथा पञ्चाशत्कोटियोजन विस्तीर्ण भूमण्डलान्तर्गत सप्तद्वीप मध्यवर्तिनी जम्बुद्वीपे तत्रापि श्री गङ्गासरिद्धिः पाविते परम पवित्रे भारत वर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गत काशी-कुरुक्षेत्र-पृष्कर प्रयागादि-नाना तीर्थ युक्त कर्म भूमौ मध्य रेखात् अमुक दिग्भागे - अमुक देशे - अमुक क्षेत्रे - अमुक जनपदे - तज्जनपदार्नाते अमुक ग्रामे - श्री गंगा यमुनयो:अमुकदिग्भागे - देव ब्राह्मणानां संनिधौ - श्री मन्नृपति वीर विक्रमादित्य समयात् अमुकसंख्या परिमिते प्रवर्तमान सम्वतसरे-प्रभवादि षष्ठि सम्वत्सराणां मध्ये अमुक नाम सम्वत्सरे अमुकायने - अमुक ऋतौ अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ - अमुक वासरे, अमुक नक्षत्रे, अमुक योगे -करणे वा - (यथांशक लग्न मुहूर्त नक्षत्र योग करणान्वित। अमुक राशिस्थे श्री भास्करे-अमुक राशिस्थे श्री चन्द्रे, अमुक राशिस्थे देव गुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा-यथा राशि स्थान स्थितेषु सत्सु एवं ग्रह गुण विशिष्टेऽस्मिन शुभक्षणे, चतुर्वर्णानां मध्ये अमुक वंशोद्भव -अमुक गोत्रोत्पन्नोऽहं अमुक नामाऽहं (शम्मीऽहं, क्षत्रियोऽहं, गुप्तोऽहं, वर्माऽहं)। सपत्नीकोऽहं (सकुटुम्बोऽहम्, आत्मज, आत्मजा सहितोऽहम्) अद्य ममात्मन: श्रुति स्मृति पुराणोक्त वेदोक्त शास्त्रोक्त ऐतिहासिक, शुभ पुण्य फल प्राप्ती कामनार्थं श्री अमुक देवता अनुग्रह प्राप्ती अर्थम् मम बाल्य यौवन वार्द्धक्य वा वर्तमान अवस्थास् कृत समस्त कायिक वाचिक मानसिक सांसर्गिक ज्ञाताज्ञात सकल दोष परिहारार्थं तथा च ममेह जन्मनी - जन्मान्तरे वा कृत सकल संचित पापादि दुष्ट कर्मादि नानाविध दोष विनाशार्थं। ऐश्वर्याभि-वृद्धिअर्थम् अप्राप्त लक्ष्मी प्राप्ती अर्थं - प्राप्त लक्ष्म्या चिरकाल

पर्यन्त संरक्षणार्थम् सकल मन ईप्सित कामना झटिती सिद्धि अर्थं मम सभार्यास्य सपुत्रस्य सकुम्बस्य समस्त भय व्याधि जरापीडा मृत्युपरिहार द्वारा आयुरारोग्य निरन्तर वृद्धि अर्थं। मम जन्मराशे सकाशान्नामराशेः सकाशाद्वाजन्म लग्नाद्वर्षलग्नाद् गोचराद्वा चतुर्थाष्टम द्वादशाद्यनिष्ट स्थान स्थितामुकग्रह सुचितं सुचियष्यमाणं च यत्सर्वारिष्टं तद्विनाशार्थम् -सदा तृतीयैकादश शुभस्थान स्थितवदुतम फल प्राप्त्यर्थं अथवा अमुक कारक ग्रह दशार्न्तदशा तत्सम्बन्धि दशोपदशा दिन दशा वा - षष्ठाष्ट्रम द्वादशादि भावाधिपति दशा जनित पीडा अल्पायु अधिदैवाधि भौतिकाध्यात्मा जनित क्लेश निवृत्यर्थं दिर्घायुष्यार्थम् अमुक देवता प्रीत्यर्थं - पुत्र पौत्रादि सन्तित अविच्छिन्न - वृद्धि अर्थं - उत्तरोतर हर्ष भाग्योदयार्थम् ग्रहकृत - राजकृत शत्रुकृत समस्त विघ्नोपशान्त्यर्थं - लोके वा सभायां राजद्वारे सर्वत्र यशो विजय लाभादि सिद्धयर्थम् - सकल मनोरथानां वा अभिलषित कार्य झटिती साफल्यतार्थं - व्यापार कर्मण उत्तरोत्तर वृद्धिअर्थं - आदित्यादि नवग्रहा: अनुकूलता सिद्धयर्थं - इन्द्रादि दश दिकुपाला: प्रसन्नतार्थं - धर्मार्थं काममोक्ष चतुष्टय पुरुषार्थ सिद्धिअर्थं- देवगुरु ब्राह्मण दीपकज्योति साक्षितया - अमुक याग (यज्ञ) कर्म स्वयं वा ब्राह्मण द्वारा करिष्ये वा कारिष्ये - (इति संकल्प) (स्वयं करिष्ये, ब्राह्मण द्वारा कारिष्ये) पुनः संकल्पमादाय - पूर्वोच्चारिते संकल्प कर्मानुसारेण अमुक (याग, अनुष्ठान) कर्म निर्विघ्नता परिसमाप्तो कामनार्थम् तदङ्गत्वेन - श्री गणेशाम्बिके पूजनम् वरुण पूजनं पुण्याहवाचनं - आचार्यादिवरणं मोदादि षड्विनायकअर्चनं - गौर्य्यादि षोडश मातृका सप्तघृतमातृका एवं अभ्युदायिक नांदीमुख श्राद्धं, अहं करिष्ये (पूजियष्ये- अर्चियष्ये)। ॐ यज्जाग्प्रतोदूरमुदैति दैवन्तदुसुप्तस्यतथैवैति। दूरङ्गमञ्जोतिषाञ्जोतिरेकन्तन्मेमनः शिवसङ्कल्पमस्तु।। यथा देवे तथा देहे न्यासं कुर्याद् विधानतः

अङ्गन्यास

पूजन आदि में अङ्गन्यास करन्यास करने से देवत्व प्राप्त होता है। (मूलमन्त्र से भी न्यासादि कर सकते हैं।)

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुष: सहस्राक्ष: सहस्रपात्। स भूमि र्ठः सर्वत स्पृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्।। (बायां हाथ)

पुरुष एवेद र्ठ. सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति।। (दाहिना हाथ)

जग-दीपिका

- एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुष:। पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि।। (बायां पैर)
- त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत् पुनः। ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि।। (दाहिना पैर)
- ततो विराडजायत विराजो अधि पूरुषः। स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः।। (वाम जानु)
- तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्। पश्रूँस्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये।। (दक्षिण जानु)
- तस्माद्यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जिज्ञरे। छन्दा र्ठः सि जिज्ञरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत।। (वाम कटिभाग)
- तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादत:। गावो हे जिज्ञरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावय:।। (दक्षिण कटिभाग)
- तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रत:। तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये।। (नाभि)
- यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्। मुखं किमस्यासीत् किं बाहू किमूरू पादा उच्येते।। (हृदय)
- ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः। ऊरू तदस्य यद्वैश्यःपद्भ्या र्ठः शूद्रो अजायत।। (वाम बाहु)
- चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत।। श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादिग्नरजायत।। (दिक्षण बाहु)
- नाभ्या आसीदन्तरिक्ष र्वः शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत। पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ२ अकल्पयन्।। (कण्ठ)
- यत्पुरुषेण हिवषा देवा यज्ञमतन्वत। वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः।। (मुख)
- सप्तास्यासन् परिधयित्रः सप्त सिमधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुम्।। (आँख)
- यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।। (मूर्धा)

पञ्चाङ्गन्यास - अद्भ्यः सम्भृतः पृथिव्यै रसाच्च विश्वकर्मणः समवर्तताग्रे। तस्य त्वष्टा विदधद्रूपमेति तन्मर्त्यस्य देवत्वमाजानमग्रे।। (हृदय)

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णं तमसः परस्तात्। तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय।। (शिर)

प्रजापतिश्चरति गर्भे अन्तरजायमानो बहुधा वि जायते। तस्य योनिं परि पश्यन्ति धीरास्तस्मिन् ह तस्थुर्भुवनानि विश्वा। (शिखा)

यो देवेभ्य आतपित यो देवानां पुरोहित:। पूर्वो यो देवेभ्यो जातो नमो रुचाय ब्राह्मये।। (कवचाय हुम्, दोनों कंधों का स्पर्श करे)

रुचं ब्राह्मं जनयन्तो देवा अग्रे तदब्रुवन्। यस्त्वैवं ब्राह्मणो विद्यात्तस्य देवा असन् वशे।। (अस्राय फट, बायीं हथेली पर ताली बजाये)

करन्यास - ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः। ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्या र्ठः शूद्रो अजायत। अङ्गृष्ठाभ्यां नमः।

(दोनों अंगूठों का स्पर्श करें)

चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत। श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।। तर्जनीभ्यां नमः।

(दोनों तर्जिनयों का स्पर्श करें)

नाभ्या आसीदन्तिरक्ष र्वः शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत। पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ२ अकल्पयन्।। मध्यमाभ्यां नमः।

(दोनों मध्यमाओं का स्पर्श करें)

यत्पुरुषेण हिवषा देवा यज्ञमतन्वत। वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः।। अनामिकाभ्यां नमः।

(दोनों अनामिकाओं का स्पर्श करें)

सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्त सिमधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुम्। कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

(दोनों कनिष्ठिकाओं का स्पर्श करें)

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।। करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

(दोनों करतल और करपृष्ठों का स्पर्श करें)

शंखपूजनम् – देवता के वाम भाग में "पुष्पोपिर वा त्रिपादिकोपिर शंखंस्थापयेत"। जल से भरकर तुलसीपत्र-चन्दन धूपदीप नेवैद्यादि से पूजा करें। "शंखमुद्रां प्रदर्श्य"।

अथपूजन मन्त्र - ॐ शंखं चन्द्रार्कदैवत्यं वरुणं चाधिदैवतम्। पृष्ठे प्रजापितं विद्यादग्रे गङ्गा सरस्वती।। त्रैलोक्ये यानि तीर्थानि वासुदेवस्य चाज्ञया। शङ्खे तिष्ठन्ति विप्रेन्द्र तस्माच्छंखं प्रपूजयेत्।। ॐ अग्निर्ऋषिः पवमानः पाञ्चजन्त्यः पुरोहितः।। तमीमहे महागयम्।। उपयामगृहीतोस्यग्ग्नयेत्त्वाळ्वर्ञ्चसऽएषतेयोनिरग्ग्नयेत्त्वाळ्वर्च्चसे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः शङ्ख्रस्थदेवतायै नमः आवाहयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि।। प्रार्थयेत्-त्वं पुरा सागरोत्पन्नो विष्णुना विधृतः करे। निमतः सर्वदेवश्च पाञ्चजन्य नमोऽस्तुते।।

ॐ पाञ्चजन्याय विद्महे पावमानाय धीमहि। तन्नोः शंखः प्रचोदयात्।। अनेन पूजनेन शंखस्थ देवता प्रीयतां न मम।।

अथ घण्टा पूजनम् - ॐ सर्ववाद्यमयी घण्टायनमः, आगमार्थन्तु देवानां गमनार्थन्तु रक्षसाम। कुरु घण्टे वरंनादं देवता स्थान सिन्नधौ।। ॐ भूर्भुवः स्वः घण्टास्थाय गरुडाय नमः गरुडमावाहयामि – सर्वोचारार्थे – गन्धाक्षत – पुष्पाणि समर्पयामि। गरुडमुद्रांप्रदर्श्य घण्टां वादियत्वा।। अनेन पूजनेन घण्टस्थ देवता प्रीयतां न मम।।

अथ भैरव ध्यानं पूजनम् - हस्ते अक्षतपुष्पाण्यादाय

देवराजसेव्यमानपावनाङघ्रिपङ्कजं व्यालयज्ञसूत्रमिन्दुशेखरं कृपाकरम्। नारदादियोगि-वृन्दवन्दितं दिगम्बरं काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे।। ध्यानार्थे पुष्पं समर्पयमामि ॐ वं बटुक भैरवायनमः सर्वोपचारार्थे – गन्धाक्षत – पुष्पाणि समर्पयामि। नमस्करोमि मन्त्र – ॐ उद्यद्धास्कर सन्निभं त्रिनयनं रक्ताङ्ग रागस्नजं, स्मेरास्यं वरदं कपालमभयं शूल दधानं करै। नीलग्रीव मुदार कौस्तुभधं सीतांशु चण्डोज्जवलं बन्धूकारुण वाससं भयहरं वन्दे सदा भैरवम्।। "अनेन पूजनेन भैरव देवता प्रीयतां न मम"

हनुमद्पूजनम् - अक्षत पुष्पाण्यादाय - ॐ उद्यद्बाल दिवाकरद्युति तनुं पीताम्बरालंकृतं, देवेन्द्र प्रमुख प्रशस्त यशसं श्रीराम भूप प्रियम्। सीता शोक विनाशनं पटुतरं भक्तेष्ट सिद्धिप्रदं ध्यायेद् वानर पुङ्गवं हरिवरं श्रीमारुति सिद्धिदम्।। पञ्चोपचारैपूजनम्, "श्री हनुमद् देवता प्रीयतां न मम"

।।अथगणेशाम्बिकापूजनम्।।

(ताम्रपात्रे गणेशाम्बिके संस्थाय वा अष्टदल बनाकर उस पर श्री गणेश अम्बिका की मूर्ति स्थापना करे या सुपारी के मोली बांधकर गणेश अम्बिका बनाकर ध्यान अर्चना करें।) सिद्धि बुद्धि सिहत श्री महागणपित ध्यानम् – हस्ते अक्षत पुष्प दुर्वाअंकुरमादाय – ध्यानम् मन्त्र – गजाननं भूतगणिदिसेवितं किपत्थजम्बूफलचारुभक्षणम्। उमासुतं शोकविनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वरपादपङ्कजम।। लम्बोदरं परमसुन्दरमेकदन्तं रक्ताम्बरं त्रिनयनं परमं पवित्रम्। उद्यद्दिवाकरिनभोज्ज्वलकान्तिकान्तं विघ्नेश्वरं सकलविघ्नहरं नमामि।। ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्धि बुद्धि सिहताय महागणपतये नमः ध्यानार्थे पुष्पणि समर्पयामि। आवाहनम् – ॐ गणानां त्वा गणपित र्ठः हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपित र्ठः हवामहे निधीनां त्वा निधिपित र्ठः हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्। (यजुर्वेद २३/१९)

ॐ गणानांत्वा गणपित हवावहे र्ठः किव किवना मुपमश्रवस्तमम्। ज्येष्ठ राजं ब्रह्मणां ब्रह्मस्त आनः शृण्वन्तुितिभः सीद सादनम्।। एह्योहि हेरम्ब महेशपुत्र समस्त-विघ्नोघिवनाशदक्ष। माङ्गल्यपूजाप्रथमप्रधान गृहाण पूजां भगवन् नमस्ते।। ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्धिबुद्धिसहिताय महागणपतये नमः, गणपितमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। (हाथ के अक्षत पुष्प गणेशजी पर चढ़ा दें। फिर अक्षत पुष्प लेकर गणेशजी की दाहिनी ओर गौरीजी का आवाहन करें। भगवती गौरी का ध्यान – अक्षत पुष्प लेकर)

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम्।। भगवती गौरी का आवाहन - ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्।। हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शङ्करप्रियाम्। लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम्।। ॐ भूर्भुवः स्वः गौर्यै नमः गौरीमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। प्रतिष्ठा - ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ठं॰ सिममं दधातु। विश्वे देवास इह मादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ।। अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च। अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन।। ॐ भूर्भुवः स्वः ऋद्धि सिद्धि सहिताय श्री गणेशाम्बिके प्रतिष्ठापनं

आसनं - (१) ॐ वर्ष्मोऽस्मिसमाना नामुद्यतामिवसूर्य्यः। इमन्तमिभितिष्ठामि योमाकश्चाभिदासित।। (२) ॐ पुरुष ऽएवेद र्ठः सर्व्वं य्यद्दूत्ँ य्यच भाळ्यम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनाितरोहित। ॐ रम्यं सुशोभनं दिव्यं सर्वसौख्यकरं शुभम्। आसनं च मया दत्तं गृहाण परमेश्वर।। आसनार्थे पुष्पाक्षत दूर्वांक्करान् समर्पयािम। ॐ भूर्भुवः स्वः ऋद्धिसिद्धि सहिताय श्री गणेशािम्बके आसनं समर्पयािम।

पाद्यम् – ॐ एतावानस्य मिहमातो ज्ज्यायाँश्चपूरुषः। पादोस्य विश्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतन्दिवि।। ॐ गङ्गादिसर्वतीर्थेभ्य आनीतं तोयमुत्तमम्। पाद्यार्थं सम्प्रदास्यामि गृह्णन्तु परमेश्वराः।। ॐ भूर्भुवः स्वः ऋद्धि सिद्धि सिहताय श्री गणेशाम्बिके पादयोः पाद्यं समर्पयामि

अर्घ्यं - ॐ धामन्ते विश्वम्भुवनमिध शिश्रतमन्तः समुद्रेह्धयन्तरायुषि। अपामनी के सिमथेयऽआभृतस्त - म श्याम मधुमन्तन्तऽऊिम्मिम्।। ॐित्रपादूर्ध्व ऽउदैत्पुरुषः पादोऽस्येहा भवत्पुनः। ततो विष्व्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने ऽअभि।। गन्धपुष्पाक्षतैर्युक्तमर्ध्यं सम्पादितं मया। गृह्णन्त्वर्ध्यं मयादत प्रसन्नाश्च भवन्तु मे।। ॐ भूभुवः स्वः ऋिद्ध सिद्धि सिहताय श्री गणेशाम्बिके अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयम् - ॐ इमम्मे वरुणश्श्रुधीहव मद्या च मृडय। त्वामवस्युचराचके।। ॐ ततो व्विराडजायत व्विराजो अधिपूरुष:। स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुर:।। सर्वतीर्थसमायुक्तं सुगन्धि निर्मलं जलम्। आचम्यार्थं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर।। ॐ भूर्भुवः स्वः ऋद्धि सिद्धि सिहताय श्री गणेशाम्बिके आचमनीयम् समर्पयामि। स्नानं - ॐ तस्माद्यज्ञात्त्सर्व्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्ज्यम्। पश्र्ँस्ताँश्चक्रे व्यायव्यानारण्या ग्राम्याश्च्च ये।। मन्दाकिन्याः समानीतैः कर्पूरागरुवासितैः। स्नानं कुर्वन्तु देवेशा जलैरेभिः सुगन्धिभिः।। ॐ भूर्भुवः स्वः ऋद्धि सिद्धि सहिताय श्री गणेशाम्बिके – सर्वाङ्गे स्नानं समर्पयामि।

पय स्नानं - ॐ पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषु पयो दिळ्यन्तरिक्क्षे पयो धाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्।। कामधेनुसमुत्पन्नं सर्वसन्तोषकारकम्। पयस्तुभ्यं प्रयच्छामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।। ॐ भूः स्वः ऋद्धि सिद्धि सिहताय श्री गणेशाम्बिके पयस्नानं समर्पयामि। पयस्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं-जलं समर्पयामि।

दिधस्नानं - ॐ दिधक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरिभ नो मुखा करत्प्रण आयू र्वः षि तारिषत्।।

पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्। दध्यानीतं मया देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।। ॐ भूः स्वः ऋद्धि सिद्धि सहिताय श्री गणेशाम्बिके दिध स्नानं समर्पयामि। दिध स्नानान्ते– शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

घृतस्नानं - ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्वस्य धाम। अनुष्वधमा वह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभ विक्ष हव्यम्।। ॐ घृतं घृतपावानः पिबत वसां वसा पावानः पिवतान्त रिक्षस्य हिवरिस स्वाहा। दिशः प्रदिश आदिशोविदिश उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा। ॐ नवनीत समुत्पन्नं सर्वसंतोष कारकम्। घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थम् प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः ऋद्धि सिद्धि सिहताय श्री गणेशाम्बिके घृतं स्नानं समर्पयामि। घृत स्नानान्ते शुद्धोदक स्नानम्।

मधुस्नानं - ॐ मधु वाता ऋतायते मधु क्षरिन्त सिन्धवः। माध्वीर्न्तः सन्त्वोषधीः।। मधु नक्तमृतोषसो मधुमत्पार्थिव र्ठः रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता।। मधुमात्रो वनस्पित मधुमाँऽअस्तु सूर्य्यः। माध्वीर्गावो भवन्तुनः।। पुष्परेणुसमुद्भृतं सुस्वादु मधुरं मधु। तेजः पृष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।। ॐ भूर्भुवः स्वः ऋद्धि सिद्धि सिहताय श्री गणेशाम्बिके मधुस्नानं समर्पयामि। मधुस्नानान्ते शुद्धोदक स्नानम्।।

शर्करास्नानम् – ॐ अपा र्ठः रसमुद्वयस र्ठः सूर्ये सन्त र्ठः समाहितम्। अपा र्ठः रसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्।। इक्षुरससमुद्भूतां शर्करां पुष्टिदां शुभाम्। मलापहारिकां दिव्यां स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।। ॐ भूभुर्वः स्वः ऋद्धि सिद्धि सहिताय श्री गणेशाम्बिके शर्करा स्नानं समर्पयामि। शर्करा स्नानन्ते शुद्धोदक स्नानं समपर्यामि

पञ्चामृत स्नानम् - ॐ घृतेन सीतामधुना समज्ज्यतां विश्वै देवैरनुमतामरुद्धिः।। ॐजस्वती पयसापिन्न्वमानास्म्मान्त्सीते पयसाब्भ्याववृत्स्व।। ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमिप यन्ति सस्रोतसः। सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सिरत्।। पयोदिध घृतं चैव शर्करा मधुसंयुतम्। पञ्चामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।। ॐ भूर्भुवः स्वः ऋद्धि सिद्धि सिहताय श्री गणेशाम्बिके पञ्चामृतं स्नानं समर्पयामि। पञ्चामृत स्नानान्ते शुद्धोदक स्नानम्।

गन्धोद्धक स्नानं - ॐ गन्धर्वस्त्वा विश्वावसुः परिदधातु विश्वस्यारिष्टयै यजमानस्य परिधि रस्यिगिरिडऽईडितः।। ॐ त्वां गन्धर्वा अखनंस्त्वामिन्द्रस्त्वाम् बृहस्प्पितः। त्वामोषधे सोमोराजा विद्वान्यक्ष्मादमुच्यत्।। ॐ भूर्भुवः स्वः ऋद्धि सिद्धि सिहताय श्री गणेशाम्बिके गन्धोदक स्नानं समर्पयामि। गन्धोदक स्नानन्ते – शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

उद्वर्तनस्नानं - ॐ अ र्ठः शुनाते अ र्ठः शुः पृच्च्यतांपरुषापरुः। गन्धस्ते सोममवतु मदायरसोऽअच्च्युतः।। ॐ भूर्भुवः स्वः ऋद्धि सिद्धि सिहताय श्री गणेशाम्बिके उद्वर्तन स्नानं समर्पयामि। उद्वर्तन स्नानन्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

शुद्धाेदक स्नानं - ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः।। गङ्गे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वती। नर्मदा सिन्धुकावेरी स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।। ॐ भूर्भुवः स्वः ऋद्धि सिद्धि सहिताय श्री गणेशाम्बिके शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदक स्नानान्ते - अभिषेकं कुर्यात् - निर्माल्यमुत्तरे विसृज्य - सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्प्य - घण्टानादं कुर्य्यात् - श्री गणपति अथर्वशीर्ष से अभिषेक करे, रजत वा ताम्रपात्र द्वारा एवं जलेन, पय वा पञ्चामृत (गन्धोदकेन) अभिषेक कार्यम्। "धारा पात्रं गंधादिभिः संपूज्य"

श्रीगणपत्यथर्वशीर्षम् - ॐ भद्रङ्कर्णेभिरिति शान्तिः हरि : ॐ ।। नमस्ते गणपतये। त्वमेव प्रत्यक्षं तत्त्वमिस। त्वमेव केवलं कर्तासि। त्वमेव केवलं धर्तासि। त्वमेव केवलं हर्तासि। त्वमेव सर्वं खल्विदं ब्रह्मासि। त्वं साक्षादात्मासि नित्यम्। ऋतं विच्म। सत्यं विच्म। अव त्वं माम्। अव वक्तारम्। अव श्रोतारम्। अव दातारम्। अव धातारम्। अवानूचानमव शिष्यम्। अव पश्चात्तात्। अव पुरस्तात्। अव चोत्तरात्तात्। अव दक्षिणात्तात्। अव चोर्ध्वात्तात्। अवाधरात्तात्। सर्वतो मां पाहि पाहि समन्तात्। त्वं वाङ्मयस्त्वं चिन्मय:। त्वमानन्दमयस्त्वं ब्रह्ममयः। त्वं सच्चिदानन्दाद्वितीयोऽसि। त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोऽसि। सर्वं जगदिदं त्वत्तो जायते। सर्वं जगदिदं त्वत्तस्तिष्ठति। सर्वं जगदिदं त्विय लयमेष्यित। सर्वं जगदिदं त्विय प्रत्येत्ति। त्वं भूमिरापोऽनलोऽनिलो नभः। त्वं चत्वारि वाक्पदानि। त्वं गुणत्रयातीतः। त्वं कालत्रयातीतः। त्वं देहत्रयातीतः। त्वं मूलाधारस्थितोऽसि नित्यम्। त्वं शक्तित्रयात्मकः। त्वां योगिनो ध्यायन्ति नित्यम्। त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुस्त्वंरुद्रस्त्विमन्द्रस्त्वमिग्नस्त्वं वायुस्त्वं सूर्यस्त्वं चन्द्रमास्त्वं ब्रह्म भूर्भ्वः स्वरोम्। गणादिं पूर्वमुच्चार्यं वर्णादिं तदनन्तरम्। अनुस्वारः परतरः। अर्धेन्दुलसितम्।।१।। तारेण रुद्धम्। एतत्तव मनुस्वरूपम्। गकार: पूर्वरूपम्। अकारो मध्यमरूपम्। अनुस्वारश्चान्त्यरूपम्। बिन्दुरुत्तररूपम्। नादः सन्धानम्। संहिता सन्धिः। सैषा गणेशविद्या। गणक ऋषिः निचृद्गायत्री छन्दः। श्रीमहागणपतिर्देवता। ॐ गं (गणपतये नम:।) एकदन्ताय विदाहे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्ती प्रचोदयात्।। एकदन्तं चतुर्हस्तं पाशमङ्कराधारिणम्। अभयं वरदं हस्तैर्ब्रिभ्राणं मूषकध्वजम्।। रक्तं लम्बोदरं शूर्पकर्णकं रक्तवाससम्। रक्तगन्धानुलिप्ताङ्गं रक्तपुष्यै: सुपूजितम्।। भक्तानुकम्पिनं देवं जगत्कारणमच्युतम्। आविर्भृतं च सृष्ट्यादौ प्रकृतेः पुरुषात्परम्।। एवं ध्यायित यो नित्यं स योगी योगिनां वर:। नमो ब्रातपतये नमो गणपतये नम: प्रमथपतये नमस्तेऽस्त लम्बोदरायैकदन्ताय विघ्नविनाशिने शिवस्ताय श्रीवरदमूर्तये नमो नम:।

फलश्रुति - एतदथर्वशीर्ष योऽधीते सब्रह्मभूयाय कल्पते। स सर्वविघ्नैर्न बाध्यते। स सर्वतः सुखमेधते। स पञ्चमहापातकोपपातकात् प्रमुच्यते। सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति। प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति। सायं प्रातः प्रयुञ्जानोऽपापो भवति। धर्मार्थकाममोक्षं च विन्दति। इदमथर्वशीर्षमशिष्याय न देयम्। यो यदि मोहाद्दास्यति स

पापीयान् भवित। सहस्रावर्तनाद्यं यं काममधीते तं तमनेन साधयेत्। अनेन गणपितमिभिषिञ्चिति स वाग्मी भवित। चतुर्थ्यामनश्नञ्जपित स विद्यावान् भवित। इत्यथर्वणवाक्यम्। ब्रह्माद्याचरणं विद्यात्। न बिभेति कदाचनेति। यो दूर्वाङ्कुरैर्यजित स वैश्रवणोपमो भवित। यो लाजैर्यजित स यशोवान् भवित। स मेधावान् भवित। यो मोदकसहस्रेण यजित स वाञ्छितफलमवाप्नोति। यः साज्यसमिद्भिर्यजित स सर्वं लभते स सर्वं लभते। अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यग्ग्राहियत्वा सूर्यवर्चस्वी भवित। सूर्यग्रहे महानद्यां प्रतिमासंनिधौ वा जप्त्वा सिद्धमन्त्रो भवित। महाविघ्नात् प्रमुच्यते। महापापात् प्रमुच्यते। महादोषात् प्रमुच्यते। स सर्वविद्भवित। स सर्वविद्भवित। य एवं वेद।। ॐ भद्रङ्कर्णेभिरिति शान्तिः।।

अमृताभिषेकोऽस्तु - अस्तु अभृताभिषेकः नैत्रोदक स्पर्शः चरणोदकं धृत्वा देवं वस्त्रं प्रमृज्य आसनोपरि (स्वस्थाने वा) संस्थाप्य।

वस्त्रं - ॐ युवा सुवासाः परिवीत आगात् स उ श्रेयान् भवित जायमानः। तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो३ मनसा देवयन्तः।। ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतऽऋचः सामानि जिज्ञरे। छन्दा ठं. सि जिज्ञरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत।। ॐ सर्वाभूषाधिके सौम्ये लोकलज्जानिवारणे। मयोपपादिते तुभ्यँ वाससी प्रतिगृद्धताम्।। ॐ भूर्भुवः स्वः ऋद्धि सिद्धि सहिताय श्री गणेशाम्बिके वस्त्रं समर्पयामि। वस्त्रान्ते आचमनीयं – जलं समर्पयामि उपवस्त्रं – ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमाऽसदत्स्वः। वासो अग्ने विश्वरूप ठं. सं व्ययस्व विभावसो।। ॐ वसोः पिवत्रमिस शतधारं वसोः पिवत्रमिस सहस्रधारम्। देवस्त्वा सिवता पुनातु वसोः पिवत्रेण शतधारेण सुप्वा–कामधुक्षः।। यस्याभावेन शास्त्रोक्तं कर्म किञ्चित्र सिद्धयति। उपवस्त्रं प्रयच्छामि सर्वकर्मोपकारकम्।। ॐ भूर्भूवः स्वः ऋद्धि सिद्धि सहिताय श्री गणेशाम्बिके उपवस्त्रं समर्पयामि। उपवस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। यज्ञोपवीतं – ॐ यज्ञोपवीतं परमं पिवत्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्रयं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।। ॐ तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः। गावो ह जिज्ञरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः।। ॐ तविभस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम् उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर। ॐ भूर्भुवः स्वः ऋद्धि सिद्धि सहिताय श्री गणेशाम्बिकं नमः उपवीतं समर्पयामि। उपवीतान्ते आचमीय जलं समर्पयामि।

गन्धं - ॐ गन्धर्वस्त्वा विश्वावसुः परिधातु विश्वस्या रिष्टयै यजमानस्य परिधिरस्य-ग्निरिडऽईडितः।। ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टांकरीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।। ॐ कुङ्कुमं कामना दिव्यं कामना काम सम्भवम्। कङ्कृमेनार्चितो देवमतः शान्ति प्रयच्छ मे।। ॐ भूर्भुवः स्वः ऋद्धि सिद्धि सहिताय श्री गणेशाम्बिके गन्धं समर्पयामि। "किनिष्ठा मूलगताङगुष्ठयोगेन गन्ध मुद्रां प्रदर्श्य।" चंदनं - ॐ त्वां गन्धर्वाऽअखनंस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पितः। त्वामोषधे सोमो राजाविद्वान् यक्ष्मादमुच्यतः।। ॐ श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्। विलेपनं सुरश्रेष्ठ! चन्दनं प्रितगृह्यताम्।। ॐ भूर्भुवः स्वः ऋद्धि सिद्धि सिहताय श्री गणेशाम्बिके नमः चन्दनं समर्पयामि। अक्षतं - ॐ अक्षत्रमीमदन्त ह्यव प्रिया अधूषत। अस्तोषत स्वभानवो विप्रा निवष्टया मती योजान्विन्द्र ते हरी।। अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः। मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर। ॐ भूर्भुवः स्वः ऋद्धि सिद्धि सिहताय श्री गणेशाम्बिके नमः अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पं व पुष्पमालां - ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रुपमश्विनौव्यातम्। इष्वित्रषाण मुम्मऽइषाण सर्वलोकम्मऽइषाण।। ॐ ओषधीः प्रति मोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः। अश्वा इव सजित्वरीवीरुधः पारियष्णवः।।

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो। मयाहतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्।। ॐ भूर्भूवः स्वः ऋद्धि सिद्धि सिहताय श्री गणेशाम्बिके नमः पुष्पं व पुष्पमालां समर्पयामि। दूर्वाअङ्करं - ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि। एवा नो दूर्वे प्र तनु सहस्रेण शतेन च।। दूर्वाङ्करुरान् सुहरितानमृतान् मङ्गलप्रदान। आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक। ॐ भूर्भुवः स्वः ऋद्धि सिद्धि सहिताय श्री गणेशाम्बिके नमः दूर्वाअङ्करं समर्पयामि।

बिल्वपत्रं - ॐ नमो बिल्मिने च कविचने च नमो व्वर्मिणे च वरूथिने च नमः। श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुव्भ्याय चाहनन्याय च नमो धृष्णवे। त्रिशाखैर्बिल्वपत्रैश्च अछिद्रैः कोमलैः शुभै। तव पूजां करिष्यामि गृहाण परमेश्वर।। ॐ भूर्भुवः स्वः ऋद्धि सिद्धि सहिताय श्री गणेशाम्बिकं बिल्वपत्रं समर्पयामि।

अबीरं गुलालं (सौभाग्य द्रव्याणि) - ॐ अहिरिव भोगै: पर्येति बाहुं ज्याया हेतिं परिबाधमान:। हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान् पुमान् पुमा र्ठः सं परि पातु विश्वत:।। अबीरं च गुलालं च हरिद्रादिसमन्वितम्। नाना परिमलं द्रव्यं गृहाण परमेश्वर।। ॐ भूर्भुव: स्व: ऋद्धि सिद्धि सहिताय श्री गणेशाम्बिके सौभाग्य द्रव्यं समर्पयामि।

सिन्दूरं - ॐ सिन्धोरिव प्राध्वने शूघनासो वातप्रिमयः पतयन्ति यह्वाः। घृतस्य धारा अरुषो न वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः।। सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्। शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।। ॐ भूर्भुवः स्वः ऋद्धि सिद्धि सिहताय श्री गणेशाम्बिके सिन्दूरं समर्पयामि।

सुगन्धित द्रव्यं (इत्र) - ॐ त्र्यम्बकं य्यजामहे सुगन्धिम्पृष्टि वर्धनम्। उर्वारुकिमव बन्धानान्मृत्योम्मृक्षीय मामृतात्।। ॐ भूर्भुवः स्वः ऋद्धि सिद्धि सहिताय श्री गणेशाम्बिके नमः सुगन्धित द्रव्यं समर्पयामि।

अथ अंग पूजा - "गन्ध अक्षत पुष्प लेकर पूजा करें"

ॐ ह्वीं गणपतयेनमः पादौपूजयामि, ॐ ह्वीं हेरम्बाय नमः जानुनीं पूजयामि ॐ ह्वीं वक्रतुण्डायनमः जंघौपूजयामि ॐ ह्रीं एकदन्ताय नमः कटीं पूजयामि, ॐ ह्रीं उमापुत्रायै नमः नाभिं पूजयामि, ॐ ह्रीं शिवसुतायै नमः उदरंपूजयामि, ॐ ह्रीं गणनाथाय नमः स्तनौ पुजयामि, ॐ ह्रीं गजवक्त्राय नम: हृदयं पुजयामि, ॐ ह्रीं विघ्न हर्त्रे नम: कण्ठं पूजयामि, ॐ ह्रीं लम्बोदराय नमः स्कन्धौ पूजयामि, ॐ ह्रीं विघ्नेश्वराय नमः मुखं पूजयामि, ॐ ह्रीं भालचन्द्राय नमः - भालं (ललाटं) पूजयामि, ॐ ह्रीं संकटनाशनाय नमः शिरं: पूजयामि, ॐ ह्रीं सुमुखाय नमः सर्वाङ्गे पूजयामि। "इति अंग पूजनम्" ध्रपं - ॐ ध्रासि धूर्व धूर्वन्तं धूर्व तं योऽस्मान् धूर्वित तं धूर्व यं वयं धूर्वामः। देवानामसि

वहितम र्ठः सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम्।।

वनस्पतिरसोद्भतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।। ॐ भूर्भुवः स्वः ऋद्धि सिद्धि सहिताय श्री गणेशाम्बिके नमः धूपं समर्पयामि।

दीपं - ॐ अग्निज्ज्येतिषाज्ज्योतिषमानुक्मोवर्च्चसाव्वर्चस्वान्। सहस्रदाऽअसि सहस्रायत्त्वा। ॐ अग्निज्यीतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा। अग्निर्वर्च्यो ज्योतिर्वर्च्यः स्वाहा सूर्यो वर्च्चो ज्योतिर्वर्च्च: स्वाहा।। ज्योति: सूर्य: सूर्यो ज्योति: स्वाहा।। ॐ दीपो ज्योति परं ब्रह्म दीपो ज्योतिर्जनार्दन:। दीपो हरतु मे पापं दीप ज्योतिर्नमोस्तुते।। "हस्तप्रक्षाल्य" ॐ भुर्भवः स्वः ऋद्धि सिद्धि सहिताय श्री गणेशाम्बिके नमः दीपं दर्शयामि।

नैवेद्यं अर्पण करें - (देवस्याग्रे - जलेन चतुष्कोण मण्डलं कृत्वा तस्योपरि नैवेद्य पात्रं निधाय) ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्ष र्वः शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत। पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकॉॅं२ अकल्पयन्।। ॐ अन्नपतेन्नस्यनो देह्यनमीवस्य शुष्म्मिण:। प्रप्प्रदातारन्तारिषऽऊर्ज्जन्नो धेहिद्विपदे चतुष्पदे।। ॐ अत्रं चतुर्विधं स्वादु रसै खङ्भि समन्वितम्। भक्ष्य भोज्य समायुक्तं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।। धेनुमुद्रया अमृतीकृत्य ग्रासमुद्रया प्रदर्श्य ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा। ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। ॐ अमृतापिधानमसि स्वाहा। ॐ भूर्भुव: स्व: ऋद्धि सिद्धि सहिताय श्री गणेशाम्बिके नमः नैवेद्यं समर्पयामि। (निवेदयामि) – नैवेद्यान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि उतरापोशनं समर्पयामि – जलं समर्पयामि "करोद्वर्तनार्थे गन्धं चन्दनं अनुलेपनं समर्पयामि" ॐ अ र्ठ. शुना ते अ र्ठ. शु: पुच्यतां परुषा परु:। गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युत:।। चन्दनं मलयोद्भृतं कस्तूर्यादिसमन्वितम्। करोद्धर्तनकं देव गृहाण परमेश्वर।। ॐ भूर्भुवः स्वः ऋद्धि सिद्धि सहिताय श्री गणेशाम्बिके नमः करोद्वनार्थे गन्धानुलेपनं समर्पयामि। मुख-वासार्थे ताम्बूलं - ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्भविः।।

पूगीफलं महिंदव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्। एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।। ॐ भूर्भुवः स्वः ऋद्धि सिद्धि सिहताय श्री गणेशाम्बिकं नमः मुख वासार्थे ताम्बुलं समर्पयामि। ऋतुफलं - ॐ याः फिलनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः। बृहस्पितप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व ठं हसः।।

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव। तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मिन जन्मिन।। ॐ भूर्भुवः स्वः ऋद्धि सिद्धि सिहताय श्री गणेशाम्बिके नमः अखण्ड ऋतुफलं समर्पयामि। दिक्षणां (द्रव्यं) – ॐ यद्दत्तं य्यत्परादानं य्यत्पूर्तय्याँश्च दक्षिणाः। तदिग्न वैश्वकर्मणः स्वर्देवेषुनोदधत्।। ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पितरेक आसीत्। स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हिवषा विधेम।।

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः। अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।। ॐ भूर्भुवः स्वः ऋद्धि सिद्धि सिहताय श्री गणेशाम्बिके नमः साद्गुण्यार्थे द्रव्यं दिक्षणां समर्पयामि। कर्पूर नीराजनं (आरती) - ॐ इद र्ठः हिवः प्रजननं मे अस्तु दशवीर र्ठः सर्वगण र्ठः स्वस्तये।। आत्मसिन प्रजासिन पशुसिन लोकसन्यभयसिन।। अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयो रेतो अस्मासु धत्त।।

ॐ आ रात्रि पार्थिव र्ठः रजः पितुरप्रायि धामिभः। दिवः सदा र्ठः सि बृहती वि तिष्ठस आ त्वेषं वर्तते तमः।। कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्। आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव।। अञ्चलौ पुष्पाण्यादाय — मन्त्रपुष्पाञ्चलिं - ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन्। तेह नाकम्मिहमानः सचन्त यत्र पूर्वेसाद्धयाः सन्तिदेवाः।। नाना सुगन्धि पुष्पाणि यथा कालोद् भवानि चः। पुष्पाजलिर्मया दत्त – गृहाण गणेश्वरः (परमेश्वर)।। एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमिह। तन्नोदन्ती प्रचोदयात्।। ॐ भूर्भुवः स्वः ऋद्धि सिद्धि सहिताय श्री गणेशाम्बिकाभ्याम् नमः मन्त्र पुष्पाञ्चलिं समर्पयामि।

प्रदक्षिणां - सप्तास्यासन्त्परिधयित्रः सप्तसिमध÷कृताः।। देवायद्यज्ञन्त न्न्वानाऽ-अबध्नन्त्पुरुषम्पशुम्।। यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।। तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदिक्षणपदे पदे।। ॐ भूर्भुवः स्वः ऋद्धि सिद्धि सिहताय श्री गणेशाम्बिके नमः प्रदिक्षणां समर्पयामि (तीन प्रदिक्षणा करे)।

विशेषार्घ्यं - ताम्र वा रजतादिपात्रे - जल गन्ध अक्षत पुष्प दूर्वा रक्तचन्दन कूशा दिध दुग्ध दक्षिणा फल नारिकेलं च धृत्वा।।

मन्त्रः - रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्यरक्षक। भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात्।। द्वैमातुर कृपासिन्धो षाण्मातुराग्रज प्रभो। वरदस्त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाच्छितार्थद।। अनेन सफलार्घ्येण वरदोऽस्तु सदा मम।

प्रार्थना - विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय। नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते।। भक्तार्तिनाशनपराय गणेश्वराय सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय। विद्याधराय विकटाय च वामनाय भक्तप्रसन्नवरदाय नमो नमस्ते।। लम्बोदरं परमसुन्दर मेकदन्तं रक्ताम्बरं (पिताम्बरं) त्रिनयनं परमं पिवत्रम्। उद्यद्दिवाकर निभोज्ज्वलकान्तिकान्तं विघ्नेश्वरं सकल विघ्नहरं नमामि।। त्वं वैष्णवी शिक्तरनन्तवीर्या विश्वस्य बीजं परमासि माया। सम्मोहितं देवि समस्तमेतत् त्वं वै प्रसन्ना भिव मुक्तिहेतुः।। लम्बोदरं नमस्तुभ्यं सततं मोदकं प्रियम्। निर्विघ्नं कुरुमे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।। रुपं देहि जयं देहि सौभाग्यं देहि देवि (देव) मे। पुत्रान् देहि धनं देहि सर्वान् कामाश्च देहि मे।। गणेश पूजने कर्म यन्न्यूनमिधकं कृतम्। तेन सर्वेण सर्वात्मा प्रसन्नोऽस्तु सदा मम। अनया पूजया ऋद्धि सिद्धि सहिताय श्री गणेशाम्बिके साङ्गं सपरिवारं सिहतं प्रीयतां न मम।। श्री विघ्न राज प्रसादात्कर्तव्य अमुक कर्मण (याग) निर्विघ्न समाप्तिश्चास्तु।। "अस्तु परिपूर्णम्"

पूजा के समय स्तोत्र का पाठ करना भी परमलाभदायक होता है। (स्तोत्रं देवी रसाप्रोक्ता) (स्तोत्रंकस्य न तुष्टये) स्तोत्र भगवती वाग्देवी की जिह्वा है।

श्री गणपति स्तोत्र – सुवर्ण-वर्ण-सुन्दरं सितैकदन्तबन्धुरं गृहीतपाशमंकुशं वरप्रदाभयप्रदम्। चतुर्भुजं त्रिलोचनं भुजङ्गमोपवीतिनं प्रफुल्लवारिजासनं भजामि सिन्दुराननम्।। किरीटहारकुण्डलं प्रदीप्तबाहुभूषणं प्रचण्डरत्नकङ्कणं प्रशोभिताङ्घ्रियष्टिकम्। प्रभातसूर्यसुन्दराम्बरद्वयप्रधारिणं सरत्नहेमनूपुरं प्रशोभिताङ्घ्रिपङ्कजम्।। सुवर्णदण्डमण्डितं प्रचण्डचारुचामरं गृहप्रदेन्दुसुन्दरं युगक्षणप्रमोदितम्। कवीन्द्रचित्तरञ्जकं महाविपत्ति भञ्जकं षडक्षरस्वरूपिणं भजेगजेन्द्ररूपिणम् विरिश्चिविष्णुवन्दितं विरूपलोचनस्तुतं गिरीशदर्शनेच्छया समर्पितं पराम्बया। निरन्तरं सुरासुरः सपुत्रवामलोचनैः महाख्यअष्टकर्मसु स्मृतं भजामि तुन्दिलम्।। मदौघलुब्धचञ्चलालिमञ्जुगुञ्जतामुखं प्रबुद्धचित्तरञ्जकं प्रमोदकर्ण चालकम्। अनन्यभित्तमानवं प्रचण्डमुक्तिदायकं नमामि नित्यमादरेण वक्रतुण्डनायकम्।। दारिद्रचित्रव्रावणमाशु कामदं पठेदेतदजस्नमादरात्। पुत्रीकलत्रस्वजनेषु मैत्री पुमान् भवेदेकवरप्रसादात्।।

स्तुति - वं वं वं विघ्नराजं भजित निजभुजे दक्षिणे न्यस्त शूण्डं। क्रं क्रं क्रं क्रोध मुद्रादिलत रिपुबल कल्पवृक्षस्यमूले। दं दं दं दन्तमेकं दधित मुनिमुखं काम धेन्वंनिषेयं। धं धं धारयन्तं धनदमित धिय सिद्धि बुद्धि द्वितीयम्।।

अथकलश (वरुण) स्थापना पूजनम्

तत्रादौ अक्षतैरष्टदलं पद्मं कृत्वा तदुपिर ताम्र कलशं स्थापयेत्। हाथ में गन्ध, अक्षत, पृष्प लेकर पृथ्वी का स्पर्श करें।

भूमि स्पर्श - ॐ भूरिस भूमिरस्यदितिरिस विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री। पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृ र्ठ. ह पृथिवीं मा हि र्ठ. सी:।।

धान्य प्रक्षेपः - ॐ धान्यमिस धिनुहि देवान् प्राणाय त्वो दानाय त्वा व्यानाय त्वा। दीर्घामनु प्रसितिमायुषे धां देवो वः सिवता हिरण्यपाणिः प्रति गृभ्णात्विच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषे त्वा महीनां पयोऽसि।।

कलश स्थापनम् - ॐ आ जिघ्र कलशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः। पुनरूर्जा नि वर्तस्व सा नः सहस्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्मा विशताद्रयिः।।

कलशे जलं पूरयेत् - ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनी स्थो वरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमासीद।

गन्ध प्रक्षेपः - ॐ त्वां गन्धर्वा अखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः। त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान् यक्ष्मादमुच्यत।।

सर्वोषधी प्रक्षेपः - ॐ या ओषधी: पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा। मनै नु बभ्रूणामह र्ठः शतं धामानि सप्त च।।

दूर्वाङ्कुरान् प्रक्षेपः - ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि। एवा नो दूर्वे प्र तनु सहस्रोण शतेन च।।

पञ्चपल्लव प्रक्षेपः - ॐ अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता। गोभाज इत्किलासथ यत्सनवथ प्रुषम्।।

पवित्री प्रक्षेपः - ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रिश्मिभः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुनेतच्छकेयम्।।

सप्तमृत्तिका प्रक्षेपः - ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म सप्रथाः।

पूर्गीफल प्रक्षेपणः - ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः। बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व र्ठ. हसः।।

पञ्चरत्न प्रक्षेपः - ॐ परि वाजपितः किवरिग्नर्हव्यान्यक्रमीत्। दधद्रत्नानि दाशुषे। (हिरण्य) द्रव्य प्रक्षेपः - ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पितरेक आसीत्। सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हिवषा विधेम।।

कलशस्य कण्ठे रक्त सूत्रं स्पर्शयेत - ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमाऽसदत्स्व:। वासो अग्ने विश्वरूप र्ठः सं व्ययस्व विभावसो।।

पूर्ण पात्रं - ॐ पूर्णा दर्वि परा पत सुपूर्णा पुनरा पत। वस्नेव विक्रीणावहा इषमूर्ज र्ठः शतक्रतो।।

नारिकेल फलं स्थापनं - ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनो व्यात्तम्। इष्णित्रषाणामुं म इषाण सर्वलोकं म इषाण।।

(यजमान सम्मुखे संस्थापयेत्)

हस्ते गन्धाक्षतपुष्पाण्यादाय वरुणं आवाहयेत् - (कलश में वरुण का ध्यान और आवाहन) ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुश र्ठः स मा न आयुः प्र मोषीः।। अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकमावाहयामि।।

कलशे अन्य देवतानां आवाहनम् - कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः। मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः।। कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा। ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्याथर्वणः।। अङ्गेश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः।। अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पृष्टिकरी तथा।। आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः। गङ्गे च यमुने चैव गोदाविर सरस्वित। नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् संनिधिं कुरु।। सर्वे समुद्राः सिरतस्तीर्थानि जलदा नदाः। आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः।।

अक्षतान्यादाय वरुणं प्रतिष्ठापयेत - (प्रतिष्ठा) - ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पितर्यज्ञिममं तनोत्विरष्टं यज्ञ ठी सिममं दधातु। विश्वे देवास इह मादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ।। कलशे वरुणाद्यावाहितदेवताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु। ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः। ततो "ॐ भूर्भूवः स्व वरुणाद्यावाहित देवताभ्यो नमः" इति नाममन्त्रेण षोडशोपचारैः सम्पूज्य। क्लद्र सूक्तेन वा प्रपूजयेत् - पश्चात् पुष्पाक्षतान् ग्रहीत्वा ध्यायेत् ॐ देवदानवसंवादे मध्यमाने महोदधौ। उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम्।। त्वतोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्विय स्थिताः। त्विय तिष्ठन्ति भूतानि त्विय प्राणाः प्रतिष्ठिताः।। शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापितः। आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः।। त्विय तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः। त्वत्प्रसादादिमां पूजां कर्तुमीहे जलोद्भव। सांनिध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा।। नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय सुश्वेतहाराय सुमङ्गलाय। सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते।। "ॐ अपां पतये वरुणाय नमः।"

कृतेन अनेन पूजनेन कलशे वरुणाद्यावाहितदेवताः प्रीयन्तां न मम।

अथ - पुण्याहवाचनम्

पुण्याहवाचन के लिए कलश की पूजा करें तत्पश्चात् प्रार्थना करें— ॐ पाशपाणे नमस्तुभ्यं पद्मिनीजीवनायक। पुण्याहवाचनं यावत् तावत् त्वं सुस्थिरो भव।। ।।ततः स्वस्तिवाचनार्थाय युग्मिवप्रान्संपूज्य।। अविनकृत जानुमण्डलः कमल-मुकुल सदृशमञ्जलिं शिरस्याधाय दक्षिणेन पाणिना स्वर्णपूर्णकलशं धारियत्वा वदेत्— ॐ त्रीणिपदाविचक्रमेव्विष्णणुग्गोंपाऽअदाभ्यः।। अतोधम्मीणिधारयेन्।। दीर्घा नागा नद्यो गिरयस्त्रीणि विष्णुपदानि च।। तेनायुः प्रमाणेनः पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्त्वित भवन्तो ब्रुवन्तु।। विप्रावदेयुः पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु।। एवं वारत्रयं कृत्वा कलशं भूमौ धान्यराशौ संस्थाप्य।।

यजमान : ॐ अपां मध्ये स्थिता देवा: सर्वमप्सु प्रतिष्ठितम्। ब्राह्मणानां करे न्यस्ता:

शिवा आपो भवन्तु नः।। शिवा आपः सन्तु इति जलं दद्यात्

विप्रा: : सन्तु शिवा आप:।

यजमान : लक्ष्मीर्वसित पुष्पेषु लक्ष्मीर्वसित पुष्करे।

सा मे वसतु वै नित्यं सौमनस्यं सदास्तु मे।। सौमनस्यमस्तु।

विप्रा: : 'अस्तु सौमनस्यम्'

यजमान : अक्षतं चास्तु मे पुण्यं दीर्घमायुर्यशोबलम्। यद्यच्छ्रेयस्करं लोके तत्तदस्तु

सदा मम।। अक्षतं चारिष्टं चास्तु।

विप्रा: 'अस्त्वक्षतमरिष्टं च'। यजमान : (चन्दन) गन्धाः पान्तु।

विप्राः : सौमङ्गल्यं चास्तु।

यजमान : (अक्षत) अक्षता: पान्तु।

विप्रा: : आयुष्यमस्तु।

यजमान : (पुष्प) पुष्पाणि पान्तु।

विप्रा: : सौश्रियमस्तु।

यजमान : (सुपारी-पान) सफलताम्बूलानि पान्तु।

विप्रा: : ऐश्वर्यमस्तु।

यजमान : (दक्षिणा) दक्षिणा: पान्तु।

विप्रा: : बहुदेयं चास्तु। (बहुधनं चास्तु)

यजमान : (जल) आप: पान्तु।

= जग-दीपिका

विप्राः : स्वर्चितमस्तु।

यजमान : (हाथ जोड़कर) दीर्घमायुः शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिः श्रीर्यशो विद्या विनयो वित्तं

बहुपुत्रं बहुधनं चायुष्यं चास्तु।

विप्रा: : 'तथास्तु' (ऐसा कहकर ब्राह्मण यजमान के सिर पर कलश का जल

छिडककर निम्नलिखित वचन बोलकर आशीर्वाद दें-)

ॐ दीर्घमायुः शान्तिः पृष्टिस्तुष्टिश्चास्तु।

यजमान : (अक्षत लेकर) यं कृत्वा सर्ववेदयज्ञक्रियाकरण कर्मारम्भा: शुभा: शोभना:

प्रवर्तन्ते, तमहमोङ्कारमादिं कृत्वा यजुराशीर्वचनं बहुऋषिमतं समनुज्ञातं

भवद्भिरनुज्ञातः पुण्यं पुण्याहं वाचियष्ये।

विप्रा: 'वाच्यताम्' (ऐसा कहकर निम्न मन्त्रों का पाठ करें -)

ॐ द्रविणोदाः पिपीषति जुहोत प्र च तिष्ठत। नेष्ट्रादृतुभिरिष्यत।।

सविता त्वा सवाना र्ठः सुवतामिग्रिंहपतीना र्ठः सोमो वनस्पतीनाम्।

बृहस्पतिर्वाच इन्द्रो ज्यैष्ठ्याय रुद्र: पशुभ्यो मित्र: सत्यो वरुणो धर्मपतीनाम्।

ॐ भद्रङ्कुर्णेभि:。—

न तद्रक्षा र्ठः सि न पिशाचास्तरन्ति देवानामोज: प्रथमज र्ठः ह्येतत्।

यो बिभर्ति दाक्षायण र्ठ. हिरण्य र्ठ. स देवेषु कृणुते दीर्घमायुः स मनुष्येषु

कृणुते दीर्घमायुः।

उच्चा ते जातमन्धसो दिवि सद्भूम्या ददे। उग्र र्ठः शर्म महि श्रव:।।

उपास्मै गायता नरः पवमानायेन्दवे। अभि देवाँ२ इयक्षते।

यजमान : व्रतजपनियमतपः स्वाध्यायक्रतुशमदमदयादानविशिष्टाना सर्वेषां ब्राह्मणानां

मनः समाधीयताम्।

विप्राः : समाहितमनसः स्मः।

यजमान : प्रसीदन्तु भवन्त:।

विप्रा: : प्रसन्ना: स्म:। (इसके बाद यजमान पहले से रखे गये दो सकोरों में से पहले

सकोरे में आम के पल्लव या दूर्वा से थोड़ा-थोड़ा जल कलश से डाले

और ब्राह्मण बोलते जायँ-(जल वा अक्षत छोड़ने का विधान है।) अस्तु

पहले पात्र (सकोरे) में : ॐ शान्तिरस्तु। ॐ पृष्टिरस्तु। ॐ तुष्टिरस्तु। ॐ वृद्धिरस्तु। ॐ अविघ्नमस्तु। ॐ आयुष्यमस्तु। ॐ आरोग्यमस्तु। ॐ शिवमस्तु। ॐ शिवं कर्मास्तु। ॐ कर्मसमृद्धिरस्तु। ॐ धर्मसमृद्धिरस्तु। ॐ वेदसमृद्धिरस्तु। ॐ शास्त्र-समृद्धिरस्तु।

दूसरे पात्र (सकोरे) में : ॐ अरिष्टनिरसनमस्तु। ॐ यत्पापं रोगोऽशुभमकल्याणं तद् दूरे प्रतिहतमस्तु।

पुनः पहले पात्र में : ॐ यच्छे यस्तदस्तु। ॐ उत्तरे कर्मणि निर्विघनमस्तु। ॐ उत्तरोत्तरमहरहरभिवृद्धिरस्तु। ॐ उत्तरोत्तराः क्रियाः शुभाः शोभनाः सम्पद्यन्ताम्। ॐ तिथिकरणमुहूर्तनक्षत्रग्रहलग्नसम्पदस्तु। ॐ तिथिकरणमुहूर्तनक्षत्रग्रहलग्नाधिदेवताः प्रीयन्ताम्। ॐ तिथिकरणे समुहूर्ते सनक्षत्रे सग्रहे सलग्ने साधिदैवते प्रीयेताम्। ॐ दुर्गापाञ्चाल्यौ प्रीयेताम्। ॐ अग्निपुरोगा विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्। ॐ इन्द्रपुरोगा मरुद्रणाः प्रीयन्ताम्। ॐ वसिष्ठपुरोगा ऋषिगणाः प्रीयन्ताम्। ॐ माहेश्वरीपुरोगा उमामातरः प्रीयन्ताम्। ॐ अरुन्धतीपुरोगा एकपत्न्यः प्रीयन्ताम्। ॐ ब्रह्मपुरोगाः सर्वे वेदाः प्रीयन्ताम्। ॐ विष्णुपुरोगाः सर्वे देवाः प्रीयन्ताम्। ॐ ऋषयश्छन्दांस्याचार्या वेदा देवा यज्ञाश्च प्रीयन्ताम्। ॐ ब्रह्म च ब्राह्मणाश्च प्रीयन्ताम्। ॐ श्री सरस्वत्यौ प्रीयेताम्। ॐ श्रद्धामेधे प्रीयेताम्। ॐ भगवती कात्यायनी प्रीयताम्। ॐ भगवती माहेश्वरी प्रीयताम्। ॐ भगवती ऋद्धिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती वृद्धिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती पुष्टिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती तुष्टिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवन्तौ विघ्नविनायकौ प्रीयेताम्। ॐ सर्वाः कुलदेवताः प्रीयन्ताम्। ॐ सर्वा ग्रामदेवताः प्रीयन्ताम्। ॐ सर्वा इष्टदेवताः प्रीयन्ताम्। दूसरे पात्र में : ॐ हताश्च ब्रह्मद्विष:। ॐ हताश्च परिपन्थिन:। ॐ हताश्च कर्मणो विघ्नकर्तार:। ॐ शत्रव: पराभवं यान्तु। ॐ शाम्यन्तु घोराणि। ॐ शाम्यन्तु पापानि। ॐ शाम्यन्त्वीतयः। ॐ शाम्यन्तूपद्रवाः।।

पहले पात्र में : ॐ शुभानि वर्धन्ताम्। ॐ शिवा आपः सन्तु। ॐ शिवा ऋतवः सन्तु। ॐ शिवा ओषधयः सन्तु। ॐ शिवा वनस्पतयः सन्तु। ॐ शिवा अतिथयः सन्तु। ॐ शिवा अग्नयः सन्तु। ॐ शिवा आहुतयः सन्तु। ॐ अहोरात्रे शिवे स्याताम्। ॐ निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्।। ॐ शुक्राङ्गारकबुधबृहस्पतिशनैश्चरराहुकेतु सोम सिहता आदित्यपुरोगाः सर्वे ग्रहाः प्रीयन्ताम्। ॐ भगवान् नारायणः प्रीयताम्। ॐ भगवान् पर्जन्यः प्रीयताम्। ॐ भगवान् स्वामी महासेनः प्रीयताम्। ॐ पुरोऽनुवाक्यया यत्पुण्यं तदस्तु। ॐ याज्यया यत्पुण्यं तदस्तु। ॐ वषट्कारेण यत्पुण्यं तदस्तु। ॐ प्रातः सूर्योदये यत्पुण्यं तदस्तु। (यजमान हाथ जोडकर ब्राह्मणों से प्रार्थना करे -)

यजमान : ॐ एतत्कल्याणयुक्तं पुण्यं पुण्याहं वाचियष्ये।

विप्रा: : वाच्यताम् -

"ततः पुनर्यजमानो ब्राह्मणान् सांजलिः प्रार्थयेत्"

जग-दीपिका

यजमान : ब्राह्मं पुण्यं महद्यश्च्च सृष्ट्युत्पादनकारम्। वेदवृक्षोद्भवं नित्यं तत्पुण्याहम् ब्रुवन्तु नः।। भो ब्राह्मणाः मह्यं सकुटुम्बिने महाजनान्नमस्कुर्वाणाय आशीर्वचनमपेक्षमाणाय मया क्रियमाणस्य अमुक याग कर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु।। (इदं वाक्यं क्रमेणमन्द मध्यमोच्चस्वरेण त्रिः कर्ता वक्तव्यम्)

विप्राः : अस्तु पुण्याहम्। एवं त्रिः।। ॐ पुनन्तुमादेवजनाः पुनन्तुमनसाधियः। पुनन्तु विश्वाभूतानि जातवेदः पुनीहि मा।।

यजमान : ॐ पृथिव्यामुद्धृतायान्तु यत्कल्याणं पुराकृतम्। ऋषिभिः सिद्ध गन्धर्वैस्तत्कल्याणं ब्रुवन्तु नः।। भो ब्राह्मणाः मद्यं सकुटुम्बिने महाजनात्रमस्कुर्वाणाय आशीर्वचनमपेक्षमाणाय मथा क्रियमाणस्य अमुक याग कर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु।।

विप्राः : ॐ अस्तु कल्याणम् (एवंत्रिः)
ॐ यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः ब्रह्मराजन्याभ्या र्ठः शूद्राय
चार्याय च स्वाय चारणाय च। प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूया समय
मे कामः समृद्धयतामुपमादो नमतु।।

यजमान : सागरस्य यथा वृद्धिर्महा लक्ष्म्यादिभिः कृता।
सम्पूर्णा सुप्रभावा च तां ऋद्धिं बुवन्तु नः।।
भो ब्राह्मणाः मह्यं सकुटुम्बिने महाजनान्नमस्कुर्वाणाय आशीर्वचनमपेक्षमाणाय
मया क्रियमाणस्य अमुक याग कर्मणः ऋद्धिं भवन्तो बुवन्तु।।

विप्राः : ॐ कर्म ऋद्धयताम् "एवं त्रिः" ॐ सत्रस्य ऋद्धिरस्यगन्म ज्योतिरमृता अभूम। दिवं पृथिव्याऽअध्यारुहामाविदाम् देवान् स्वज्योंतिः।।

यजमान : स्विस्तिस्तुयाऽविनाशाख्या पुण्यकल्याण वृद्धिदा। विनायक प्रिया नित्यं तां च स्विस्ति बुवन्तु न:।। भो ब्राह्मणा: मह्यं सकुटुम्बिने महाजनात्रमस्कुर्वाणाय आशीर्वचनमपेक्षमाणाय मया क्रियमाणस्य अमुक याग कर्मण: स्वस्ति भवन्तो बुवन्तु।।

विप्राः : ॐ आयुष्मते स्वस्ति "एवंत्रिः"
ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्ताक्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु।।

जग-दीपिका

यजमान : समुद्रमथनाज्जाता जगदानन्दकारिका।

हरिप्रिया च माङ्गल्या तां श्रियञ्च बुवन्तु न:।।

भो ब्राह्मणाः मह्यं सकुटुम्बिने महाजनान्नमस्कुर्वाणाय आशीर्वचनमपेक्षमाणाय मया क्रियमाणस्य अमुक याग कर्मणः श्री रस्तु इति भवन्तो बुवन्तु।

विप्रा: : 'ॐ अस्तु श्री "एवं त्रि:"

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षणात्रि रुपमश्विनौ व्यातम्।

इष्णनिषाणामुम्मइषाण सर्वलोकम्मइषाण।

ॐ मनसः काममाकूतिं त्वाचः सत्यमशीमहि।

पशुना र्ठ. रूप मन्नस्य मिय श्री: श्रयतां यश:

यजमान : प्रजापित लोकपालो धाता ब्रह्मा च देवराट्।

भगवाञ्छाश्वतो नित्यं स नो रक्षतु सर्वत:।।

विप्रा: : भगवान प्रजापति प्रीयताम्।।

ततो यजमान साक्षत् जलं गृहीत्वा

यजमान : ॐ कृतैतद् आस्मिन् दान खण्डोक्त पुण्याहवाचने न्यूनातिरिक्तो यो विधि:

सः उपविष्ट ब्राह्मणानां वचनात् श्री महागणपति प्रसादात् सर्वः परिपूर्णताऽस्तु।

इति उक्त्वा जलं क्षिपेत्।

विप्रा: : ॐ परिपूर्णताऽस्तु वा अस्तु परिपूर्णं

तत्पश्चात् कलश तथा प्रथम पात्र के जल से दूर्वा आम्रपल्लवों से यजमान का सपरिवार अभिषेक करें। (अभिषेके विप्रा: कर्तुर्वामत: - पत्नीमुवेश्य)

ध्यान दें - अभिषेक के समय यजमान पत्नी बायीं तरफ बैठायें तथा ब्राह्मण उत्तर की तरफ मुख करें।

मन्त्र : ॐ देवस्य त्वा सवितु: प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रेणाग्ने: साम्राज्येनाभिषिञ्चामि।। (शृ.यं. १८/३७)

ॐ देवस्य त्वा सिवतुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। अश्विनोर्भैषज्येन तेजसे ब्रह्मवर्चसायाभि षिञ्चामि सरस्वत्यै भैषज्येन वीर्यायात्राद्यायाभि षिञ्चामीन्द्रस्येन्द्रियेण बलाय श्रियै यशसेऽभि षिञ्चामि।। (शृ.य. २०/३)

ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव। यद्भद्रं तन्न आ सुव।। ॐ धामच्छदग्निरिन्द्रो ब्रह्मा देवो बृहस्पति:।

सचेतसो विश्वे देवा यज्ञं प्रावन्तु नः शुभे।।

ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्मम्।।

ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमिप यन्ति सस्रोतसः। सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सिरित्।। ॐ वरुणस्योत्तम्भनमिस वरुणस्य स्कम्भसर्जनी स्थो वरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऋतसदनमिस वरुणस्य ऋतसदनमा सीद।।

> ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः। पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा।।

ॐ देवस्य त्वा सिवतुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रिये दधामि बृहस्पतेष्ट्वा साम्राज्येनाभिषिञ्चाम्यसौ। (शृ.यृ. ९/३०)

ॐ त्वं यिवष्ठ दाशुषो नृँ: पाहि शृणुधी गिर:। रक्षा तोकमुत त्मना। (शु.य. १८/७७)

ॐ अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिण:। प्र प्रदातारं तारिष ऊर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे।।

ॐ द्यौः शान्तिरन्तिरक्ष र्ठः शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व र्ठः शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।।

यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु। शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः।। सुशान्तिर्भवतु।

सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः। एते त्वामभिषिञ्चन्तु सर्वकामार्थसिद्धये।। शान्तिः पृष्टिस्तुष्टिश्चास्तु।

ॐ सर्वेषांवा एष वेदाना र्ठः रसोयत्साम सर्वेषामेवैतद् वेदाना र्ठः रसेना भिषिञ्चति। इत्यभिषिच्य ॐ अमृताभिषेकोऽस्तु "शान्तिः ३ सुशान्तिर्भवतु। सर्वारिष्ट शान्तिर्भवतु इति ब्रूयात्।

तत्पश्चात् यजमान सङ्कल्प करें -

हस्ते सङ्कल्पमादायः ॐ विष्णुर्विष्णु र्विष्णुः तत्सद् अद्य पूर्वीच्चारित ग्रह गुण गण विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ अमुक गोत्रोत्पन्नोहं अमुक नामाहं मम अद्य कृत एतत् याग कर्मणि पुण्याहवाचकेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दक्षिणां दास्ये। (वा विभाज्य मनोदिष्टां– दक्षिणां दातुमह मुत्सृज्ये) तेनः श्री कर्माधीशः प्रीयताम्।।

''इति पुण्याह वाचनम्''

''अथषड्विनायकार्चनम्''

तत्रादौ गोधूमादि धान्य पुञ्जेषु हरिद्रा रञ्जितेषु मोदादि षड्विनायकाः कल्पनीयाः। मोदश्चैव प्रमोदश्च सुमुखो दुर्मुखस्तथा। अविघ्नो विघ्नहर्त्ता च षडेते विघ्ननायकाः।। यजमानः शुभासने उपविश्य आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ संस्मृत्य 'अस्मिन् कर्मणि मोदादिषड्विनायकादीनामावाहनं स्थापनं पूजनं च करिष्ये' इति संकल्प्य हस्ते अक्षतान् गृहीत्वा आवाहयेत्।

तद्यथा - ॐ मोदाय नमः मोदमावाहयामि स्थापयामि।।१।। ॐ प्रमोदाय नमः प्रमोदमावाहयामि स्थापयामि।।२।। ॐ सुमुखाय नमः सुमुखमावाहयामि स्थापयामि।।३।। ॐ दुर्मुखाय नमः दुर्मुखमावाहयामि स्थापयामि।।४।। ॐ अविघ्नाय नमः अविघ्नमावाहयामि स्थापयामि।।५।। ॐ विघ्नहर्त्रे नमः विघ्नहर्तारमावाहयामि स्थापयामि।।६।। ॐ मोदादिषड्विनायकेभ्यो नमः इत्युक्त्वा षोडशोपचारैः पञ्चोपचारैर्वा पूजयेत्।

प्रार्थना - स्तृतिपाठ - खर्वं स्थूलतनुं गजेन्द्रवदनं लम्बोदरं सुन्दरम् प्रस्यन्दन्मदगन्ध लुब्धमधुपव्यालोलगण्डस्थलम्। दन्ताघातिवदारितारिरुधिरैः सिन्दूरशोभाकरं वन्दे शैलसुतासुतं गणपितं सिद्धिप्रदं कामदम्।। मन्त्र पुष्पाञ्जलीम् समर्पयामि अनेन कृतेन पूजनेन मोदादिषड्विनायकाः प्रीयन्ता न मम। "इतिषड्विनायकार्चनम्।।

''अथ षोडश मातृकापूजनम्''

अथ गौर्यादिमातृणां स्थापनं पूजनम् - अग्निकोणे पीठोपरि रक्त वस्त्रं प्रसार्य तदुपरि गोधूमाक्षत पुञ्जेषु पूगीफलेषु वा सगणाधिप गौर्यादि १६ मातृणां स्थापनम्।

अक्षत पुष्पान्यादाय

- १. लम्बोदरं परम सुन्दर मेकदन्तं रक्ताम्बरं (पिताम्बरं) त्रिनयनं परमं पिवत्रम्। उद्यद् दिवाकरं निभोज्जवलकान्ति कान्तं विघ्नेश्वरं सकल विघ्न हरं नमािम।। ॐ भूर्भुवः स्वः गणपतये नमः गणपितमावाहयािम स्थापयािम वा भो गणपते इहागच्छ इहतिष्ठ।।१।।
- २. हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शङ्कर प्रियाम्। लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम्।। ॐ भूर्भुव: स्व: गौर्ये नम: गौरीमावाहयामि स्थापयामि।
- ३. पद्माभां पद्मवदनां पद्मनाभोरुसंस्थिताम्। जगितप्रयां पद्मवासां पद्मामावा हयाम्हम।। ॐ भूर्भुवः स्वः पद्मायै नमः पद्मामावाहयामि स्थापयामि।
- ४. दिव्य रूपां विशालाक्षी शुचि कुण्डल धारिणीम्। रक्त मुक्ताद्यलङ्कारां शची मावाहयाम्यहम्।। ॐ भूर्भुव: स्व: शच्यै नम: शचिम् आःस्थाः

- ५. विश्वेऽस्मिन् भूमिवरदां जरां निर्जर सेविताम्। बुद्धिप्रबोधिनीं सौम्यां मेधामावाहयाम्यहम्।। ॐ भूर्भुवः स्वः मेधायै नमः मेधां आःस्थाः
- ६. जगत्सृष्टि करीम् धात्रीं देवीं प्रणवमातृकाम्। वेदगर्भाम् यज्ञमयीं सावित्रीं स्थापयाम्यहम्।। ॐ भूर्भुवः स्वः सावित्र्ये नमः सावित्रीम् आःस्थाः
- ७. सर्वास्त्र धारिणीं देवीं सर्वाभरण भूषिताम्। सर्वदेव स्तुतां वन्द्यां विजयां स्थापयाम्यहम्।। ॐ भूर्भुवः स्वः विजयायैनमः विजयाम् आःस्थाः
- ८. सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि। एवमेव त्वयाकार्य मस्मद्वैरि विनाशनम्।। ॐ भूर्भुव: स्व: जयायै नम: जयाम् आःस्थाः
- ९. शरणागत दीर्नात परित्राण परायणे। सर्वस्यार्ति हरे देवी नारायणि नमोस्तुते।।ॐ भूर्भुवः स्वः देवसेनायै नमः देवसेनाम् आःस्थाः
- १०. दुर्वृतानामशेषाणां बलहानिकरं परम्। रक्षोभूत पिशाचानां पठनादेव नाशनम्।। ॐ भूर्भुवः स्व स्वधायै नमः स्वधाम् आःस्थाः
- ११. सर्वाबाधा विनिर्मुक्तो धनधान्य सुतान्वितः। मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहायैनमः स्वाहाम् आःस्थाः
- १२. या देवी सर्वभूतेषु मातृ रूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नम:।। ॐ भूर्भुव: स्व: मातृभ्योनम: मातृ आःस्थाः
- १३. सर्व रूपमयी देवी सर्व देवीमयं जगत्। अतोऽहं विश्वरूपां तां नमामि परमेश्वरीम्।। ॐ भूर्भुवः स्वः लोकमातृभ्यो नमः लोकमातृः आःस्थाः
- १४. महाविद्या महामाया महामेधा महास्मृति:।। महामोहा च भवती महादेवी महासुरी।। ॐ भूर्भुव: स्व: धृत्यैनम: धृतिम् आःस्थाः
- १५. सौम्या सौम्य तराशेष सौम्येभ्यस्त्वित सुन्दरी। परापराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी।। ॐ भूर्भुवः स्वः पुष्टयै नमः पुष्टीम् आ॰स्था॰
- १६. या देवी सर्व भूतेषु तुष्टी रूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमा नमः।। ॐ भूर्भुवः स्वः तुष्टयै नमः तुष्टीम् आःस्थाः
- १७. या श्री: स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मी: पापात्मनां कृतिधयां हृदयेषु बुद्धि:। श्रद्धा सतां कुलजन प्रभवस्य लज्जा तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम्।। ॐ भूर्भुवः स्वः आत्मनः कुलदेवतायै नमः आत्मनः कुलदेवता मावाहयामि स्थापयामि। ॐ मनोजूतिर्जुषता माज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ठीः सिममं दधातु विश्वे देवास इह मादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ। ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेश सहिताः षोडशमातरः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवत। इति मन्त्रेण प्रतिष्ठा कृत्वा ॐ गौर्ये

नमः इत्यादि नाम मन्त्रैः पृथक-पृथक वा ॐ गौर्यादिषोडशमातृभ्यो नमः षोडशोपचारै (यथा लब्धोपचारैर्वा) पूजनम्।।

नारिकेलादिफलं समर्पयेत - आयुरारोग्यमैश्वर्यं ददध्वँ मातरोमम। निर्विध्नं सर्वकार्येषु कुरुध्वं सगणाधिपा:।।

पुष्पाञ्चली - अक्षत पुष्पाण्यादाय्

गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया। देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातर:।। धृति: पृष्टिस्तथा तुष्टिरात्मन: कुलदेवता गणेशेनाधिका ह्येता वृद्धौ पूज्याश्च षोडश।। रूपं देहि जयं देहि भाग्यं भगवती देहि में। पुत्रान् देहि धनं देहि सर्व कामांश्च देहि में।। अम्बा शाम्भवी चन्द्रमौली रमणावर्णा उमापार्वती काली हेमवती शिवा त्रिनयनी कात्यायानि भैरवी। सावित्री नव यौवना शुभकरी साम्राज्य लक्ष्मी प्रदा चिद्रूपी पर देवता भगवती श्री राज राजेश्वरी।।

मुखे ते ताम्बूलं नयनयुगले कज्जलकला, ललाटे काश्मीरं विलसति गले मौक्तिकलता। स्फुरत्कांची शाटी पृथुकटितटे हाटकमयी, भजामि त्वां गौरीनगपतिकिशोरीमविरतम्।। (पृष्पाञ्जलि अर्पण करें।)

अनया पूजया गणेशसिंहत गौर्यादिषोडशमातरः प्रीयन्तां न मम। (जल छोड़ें) श्री गौर्यादिषोडशमातृणां पूजन कर्मणो यन्न्यूनमितिरक्तं वा तत्सर्वम् मातृणां प्रसादात्परिपूर्णमस्तु। ''गृहे वृद्धि शतानि भवन्तु'' उत्तरे कर्मण्यविष्नमस्तु''। ''इति वदेत्' ।।इति मातृका पूजनम्।।

अथ वसोर्द्धारा (सप्त घृत मातृका) पूजनम्

यजमान: आचम्य प्राणायाम्यादिंक कृत्वा संकल्पं कुर्यात् देशकालौ सङ्कीर्त्य – करिष्यमाण अमुक याग कर्माङ्गत्वेन सप्तघृत मातृकार्चनम् करिष्ये। "एकोतर वृद्धि अनुसारेण सिन्दूर से सप्तिबन्दु लिखे"

अथ ध्यानम् - श्रीर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा स्वाहा प्रज्ञा सरस्वती। माङ्गल्येषु प्रपूज्यन्ते सप्तैताघृत मातर:।।

घृतधारा मन्त्रः - ॐ वसो पवित्रमिसशतधारं वसोः पवित्र मिस सहस्रधारम्। देवस्त्वा सिवतापुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः।। इति मंत्रेण सप्तधाराः कृत्वा तासामुर्ध्वं भागे गुडेनैकीकृत्य कुंकुमादिनाऽलंकृत्य प्रति धारामेकैकं देवतामावाहयेत्। (कामधुक्षः मन्त्रेण एकैकिकरणं)

तद्यथा

- १. श्रियम् मनसः काममाकूतिं व्याचः सत्यमशीमिह पशूनां र्ठः रूपमन्नस्यमिय श्रीः श्रयतां यशः।। सुवर्णपद्महस्तां तां विष्णोर्वक्षःस्थले स्थिताम्। त्रैलोक्यवल्लभादेवीं श्रियमावाहयाम्यहम्।। ॐ भूः श्रियैनमः श्रियमावाहयामि स्थापयामि।।
- २. लक्ष्मीम् श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्व नक्षत्राणि रूपमिश्वनौ व्यातम्। इष्णित्रषाणामुंमऽइषाण सर्व्वलोकं मऽइषाण।। शुभलक्षणसम्पन्नां क्षीरसागर संवृताम्। चन्द्रस्य भिगनीं सौम्यां लक्ष्मीमावाहयाम्यहम्।। ॐ भू॰ लक्ष्म्यै नमः लक्ष्मीमावाहयामि स्थापयामि।२। ३. शृतिम् ॐ भद्रंकर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्द्रं पश्येमाक्ष भिर्य्यजत्राः स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ठं॰ सस्तन् भिर्व्यशेमिह देविहतं यदायुः।। सर्वहर्ष करीं देवीं भक्तानामभयप्रदाम्। हर्षोत्फुल्लास्यकमलां धृतिमावाहयाम्हम्।। ॐ भू॰ धृत्यै नमः धृतिमावाहयामि स्थापयामि।३। ४. मेधाम् ॐ मेधां मे वरुणो ददातु मेधामिग्नः प्रजापितः। मेधामिन्द्रश्च व्वायुश्चमेधांधाता दधातुमे स्वाहा।। मेधासि देवि विदिताखिलशास्त्रसारा, दुर्गासि दुर्गभवसागरनौरसङ्गा। श्रीःकैटभारिहदयैक कृताधिवासा, गौरी त्वमेव शिश मौलिकृतप्रतिष्ठा।। ॐ भू॰ मेधायैनमः मेधामावाहयामि स्थापयामि।४।
- ५. स्वाहाम् ॐ प्राणाय स्वाहा अपानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा चक्षुषे स्वाहा श्रोत्राय स्वाहा वाचे स्वाहा मन से स्वाहा। त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि वषटकारः स्वरात्मिका। सुधा, त्वमक्षरे नित्ये त्रिधा मात्रात्मिका स्थिता।। ॐ स्वाहायैनमः स्वाहामावाहयामि स्थापयामि।५। ६. प्रज्ञाम् ॐ आयङ्गौः पृश्शिन रक्क्रमीदसदन्मातंरपुरः। पितरंच प्रयन्त्स्वः। विद्यासु शास्त्रेषु विवेकदीपे ष्वाद्येषु वाक्येषु च का त्वदन्या। ममत्वगर्तेऽतिमहान्धकारे विभ्रामयत्ये तदतीव विश्वम्।। ॐ भूः प्रज्ञायै नमः प्रज्ञामावाहयामि स्थापयामि।६।
- ७. सरस्वतीम् ॐ पावका नः सरस्वती व्वाजेभिर्व्वाजि नीवति। यज्ञं व्वष्टुधियावसुः।। विद्यावन्तं यशस्वन्तं लक्ष्मीवन्तं जनंकुरु। रुपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जिहा। ॐ भू॰ सरस्वत्यै नमः सरस्वतीमावाहयामि स्थापयामि।७। वसोर्द्धारा देवताभ्यो नमः। श्रियादिसप्तधृतमातृभ्यो नमः इत्यावाह्य ॐ मनोजूति॰ वसोर्द्धारा देवताः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु। अक्षतं पुष्पं समर्पयामि।।

श्रीसूक्तं, कनकधारा वा अन्नपूर्णास्तोत्र से षोडशोचारै सम्पूज्य प्रार्थयेत्। यदङ्गत्वेन भो देव्यः पूजिता विधिमार्गतः। कुर्वन्तु कार्यमिखलं निर्विघ्नेन क्रतूद्भवम्।। यजमानः 'आचिरतवसोर्द्धारा पूजनविधौ यन्न्यूनातिरिक्तं तत्सर्वं पिरपूर्णमस्तु' इति कृताञ्जलिः प्रार्थयेत्। पश्चात् 'अनया पूजया श्रियादिसप्तघृतमातरः प्रीयन्ताम्' – न मम।। । इति वसोर्द्धारा पूजनम्। अथ आयुष्य मन्त्र जप - देशकालौ संक्कीर्त्य - करिष्यमाण अमुक याग कर्मणः मङ्गल अभ्युदयार्थम् आयुष्य वृद्धि अर्थम् मन्त्र पाठं करिष्ये।

ॐ आयुष्यं व्वर्चस्य र्ठः रायस्पोषमौद्भिदम्। इद र्ठः हिरण्ण्यं व्वर्चस्वज्जैत्राया विशतादुमाम्।।१।। न तद्रक्षार्ठिस न पिशाचास्तरिन्त देवानामोजः प्रथमज र्ठः ह्येतत्। यो बिभित्तं दाक्षायण र्ठः हिरण्ण्य र्ठः स देवेषु कृणुते दीर्घमायुः स मनुष्येषु कृणुते दीर्घमायुः।।२।। यदाबध्नन्दाक्षायणा हिरण्य र्ठः शतानीकाय सुमनस्यमानाः। तन्म ऽआबध्ध्नामि शतशारदायायुष्प्रमाञ्जरदष्टिर्ष्यथासम्।।३।।

अश्वत्थामादिऋषयो विशष्ठप्रमुखास्तथा। मार्कण्डेयप्रभृतयः सर्वे सन्तु शिवाचकाः।।१।। जमदिग्नः कश्यपश्च दीर्घमायुः करोतु मे। अन्ये ऋषिगणा देवा इन्द्राद्याश्च सशिक्तकाः।।२।। भूसुराः सुतपोनिष्ठाः सत्यब्रतपरायणाः। दीर्घमायुः प्रयच्छन्तु सर्वकामस्य सिद्धये।।३।। यदायुष्यं चिरं देवाः सप्तकल्पान्तजीविनः। ददुस्तेनायुषा सम्यक् जीवेम शरदः शतम्।।४।। दीर्घा नागास्तथा नद्यः समुद्रा गिरयो दिशः। अनन्तेनायुषा तेन जीवेम शरदः शतम्।।५।। सत्यानि पञ्च भूतानि विनाशरिहतानि च। अविनाश्यायुषा तद्वज्जीवेम शरदः शतम्।।६।। इत्यायुष्यमन्त्र जपः।

अथ साङ्कल्पिक विधिना नान्दी - श्राद्धप्रयोगः

संस्कार गणपती - एकविंशत्यहर्यज्ञे विवाहे दश वासराः। त्रिषट्चौलोपनयने नान्दी श्राद्धं विधीयते।।

पुराणसमुच्चयेच - "न स्वधा शर्मवर्मेति पितृनाम न चोच्चरेत्। न कर्म पितृतीर्थेन न कुशा द्विगुणीकृताः।। न तिलैनापसव्येन पित्र्यमन्त्रविवर्जितम्। अस्मच्छब्दं न कुर्वीत श्राद्धे नान्दीमुखे क्वचित्। अत्र - 'पितृनाम न चोच्चरेत्'' "अस्मच्छब्दं न कुर्वीत।" इति शाखान्तरं विषयं, स्वशाखायां न स्वधां प्रयुञ्जीतेति स्वधा शब्दमात्र निषेधस्योपलम्भात्।

सव्य होकर दक्षिण जंघा को मोड़कर देवतीर्थ से कर्म करे। षोडश मातृका के सामने नान्दी श्राद्ध करे। कर्मपात्र में दूर्वा, दिध, गन्ध, पुष्प यव डाले। आचमन प्राणायाम व विष्णु स्मरण करे।।

ॐ श्राद्धकाले गयां ध्यात्वा ध्यात्वा देवं गदाधरम्। मनसा च पितृन्ध्यात्वा नान्दी श्राद्धं समारभेत्।। ॐ अपिवत्रः पिवत्रोः – "इति मंत्रेण संप्रोक्ष्य" अथ संङ्कल्प – देशकालौ संक्षीर्त्य – मम सम्भाव्यमान जननाशौचपातकादि निरसन पूर्वकः अमुक याग कर्मणः साङ्गता सिद्धि द्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थम् सांकिल्पक विधिना ब्राह्मण युग्म भोजन-पर्याप्तन्न निष्क्रयीभूत यथा शिक्त हिरण्येन नान्दी श्राद्धं करिष्ये। "इति संकल्प्य"

कर्ता ताम्रपात्र में दूर्वा यव जल लेकर प्रथम चट पर पाद्य देवे -

"ॐ सत्यवसुसंज्ञका विश्वेदेवा नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः"।।१।। "अमुक गोत्रा मातृपितामहीप्रपितामह्य नान्दीमुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं व पाद्यं पदावनेजनं पादप्रक्षालनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः"।

"अमुक गोत्राः पितृपितामहप्रपितामहा नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं व पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः"।

''द्वितीयगोत्राः – मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः सपत्नीका नान्दीमुखाः – ॐ भुर्भूवः इदं व पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं स्वाहाः सम्पद्यतां वृद्धिः''।

अथासनदानम्

"सत्यवसुसंज्ञकानां विश्वेषां देवानां नान्दीमुखानां ॐ भूर्भुवः स्वः इदमासनं सुखासनं स्वाहा नमः सम्पद्यतां वृद्धिः। नान्दीश्राद्धे क्षणौ क्रियेताम्। ॐ तथा प्राप्नुतां भवन्तौ प्राप्नुवामः'।।१।। "अमुकगोत्राणां मृतिपतामहीप्रिपतामहीनां नान्दीमुखीनां ॐ भूर्भुवः स्वः इदमासनं सुखासनं स्वाहा नमः सम्पद्यतां वृद्धिः। नान्दी श्राद्धे क्षणौ क्रियेताम् ॐ तथा प्राप्नुतां भवन्तौ प्राप्नुवामः"।।२।। "अमुकगोत्राणां पितृपितामहप्रिपतामहानां नान्दीमुखानां ॐ भुभूर्वः स्वः इदमासनं सुखासनं स्वाहा नमः सम्पद्यतां वृद्धि नान्दी श्राद्धे क्षणौ क्रियेताम्। ॐ तथा प्राप्नुतां भवन्तौ प्राप्नुवामः"।।३।। द्वितीयगोत्राणां मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानां सपत्नीकानां नान्दीमुखानां ॐ भूर्भुवः स्वः इदमासनं सुखासनं स्वाहा नमः सम्पद्यतां वृद्धिः। नान्दीश्राद्धे क्षणौ क्रियेताम्। ॐ तथा प्राप्नुतां भवन्तौ प्राप्नुवामः"।।४।।

गन्धादिदानम्

कर्ता गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, ताम्बूल, यज्ञोपवीत और वस्त्र (धोती गोच्छा) आसन पर धरे -

- "ॐ सत्यवसुसंज्ञकेभ्यो विश्वेभ्योदेवेभ्यो नान्दीमुखेभ्य इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः"।।१।।
- ''अमुकगोत्राभ्यो मातृपितामहीप्रपितामहीभ्यो नान्दीमुखीभ्य इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः''।।२।।
- अमुकगोत्रेभ्यः पितृपितामहप्रपितामहेभ्यो नान्दीमुखेभ्य इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः"।।३।।
- "द्वितीयगोत्रेभ्यो मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहेभ्यः सपत्नीकेभ्यो नान्दीमुखेभ्य इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः"।।४।।

ततो भोजननिष्क्रय द्रव्यदानम्

कर्ता दक्षिणहस्त में हिरण्य जल लेकर -

"ॐ सत्यवसुसंज्ञकेभ्यो विश्वेभ्यो देवेभ्यो नान्दीमुखेभ्यो ब्राह्मणयुग्मभोजनपर्याप्तमन्नं तिन्नष्क्रयीभूतं हिरण्यंदत्तममृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः"।।१।।

"अमुक गोत्राभ्यो मातृपितामहीप्रपितामहीभ्यो नान्दीमुखीभ्यो ब्राह्मणयुग्मभोजनपर्याप्तमन्नं तन्निष्क्रयीभूतं हिरण्यंदत्तममृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः"।।२।।

अमुकगोत्रेभ्यः पितृपितामहप्रपितामहेभ्यो नान्दीमुखेभ्यो ब्राह्मणयुग्मभोजनपर्याप्तमन्नं तन्निष्क्रयीभूतं हिरण्यंदत्तममृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः"।।३।।

"द्वितीयगोत्रेभ्यो मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहेभ्यः सपत्नीकेभ्यो नान्दीमुखेभ्यो ब्राह्मणयुग्मभोजनपर्याप्तमत्रं तित्रष्क्रयीभूतं हिरण्यंदत्तममृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः"।।४।।

सक्षीरमुदकदानम्

"ॐ सत्यवसुसंज्ञकाविश्वेदेवा नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्।।१।।

"अमुकगोत्राः मातृपितामहीप्रपितामह्यो नान्दीमुख्यः प्रीयन्ताम्"।।२।। "अमुकगोत्राः पितृपितामहप्रपितामहा नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्"।।३।।

द्वितीयगोत्राः मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः सपत्नीका नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्"।।४।।

अथाऽऽशिषो ग्रहणम् कर्ता साञ्जलि प्रार्थना करे -

यजमान कहे – ''गोत्रं नो वर्द्धताम्''।

ब्राह्मण कहे - ''वर्द्धतां वो गोत्रम्''।

यजमान कहे - ''दातारो नोऽभिवर्द्धन्ताम्''।

ब्राह्मण कहे - ''अभिवर्द्धन्तां वो दातारः''।

यजमान कहे - ''वेदाश्च नोऽभिवर्द्धन्ताम्''।

ब्राह्मण कहे - "अभिवर्द्धन्तां वो वेदाः"।

यजमान कहे - ''सन्तितर्नोऽभिवर्द्धताम्''।

ब्राह्मण कहे - ''वर्द्धतां वः सन्तिः''।

यजमान कहे - "श्रद्धा च नो माव्यगमत्"।

ब्राह्मण कहे - ''माव्यगमद्वः श्रद्धां''।

यजमान कहे - "बहुदेयं च नोऽस्तु"।

ब्राह्मण कहे - ''अस्तु वो बहुदेयम्''।

यजमान कहे - "अन्नं च नो बहु भवेत्"।

ब्राह्मण कहे - ''भवतु वो बह्वन्नम्''।

यजमान कहे - "अतिथिश्च लभेमहि"।

ब्राह्मण कहे - "लभन्तां वोऽतिथयः"।

यजमान कहे - "याचितारश्च न: सन्तु"।

ब्राह्मण कहे - ''सन्तु वो याचितारः''।

यजमान कहे - "एता आशिषः सत्याः सन्तु"।

ब्राह्मण कहे - ''सन्त्वेताः सत्याशिषः''।

दक्षिणादानम्

"ॐ सत्य वसुसंज्ञकेभ्यो विश्वेभ्योदेवेभ्यो नान्दीमुखेभ्यः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षा मलक यवमूल निष्क्रयी दक्षिणां दातुमहमुत्सृज्ये सम्पद्यतां वृद्धिः"।।१।।

"अमुकगोत्राभ्यो मातृपितामही प्रपितामहीभ्यो नान्दीमुखीभ्यः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षामलकयवमूल निष्क्रयी दक्षिणां दातुमहमुत्सृज्ये सम्पद्यतां वृद्धिः"।।२।।

"अमुकगोत्रेभ्यो पितृपितामहप्रपितामहेभ्यो नान्दीमुखेभ्यः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षामलक यवमूलनिष्क्रयी दक्षिणां दातुमहमुत्सृज्ये सम्पद्यतां वृद्धिः"।।३।।

"द्वितीयगोत्रेभ्यो मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहेभ्यः सपत्नीकेभ्यो नान्दीमुखेभ्यः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षामलकयवमूलनिष्क्रयी दक्षिणां दातुमहमुत्पृज्ये सम्पद्यतां वृद्धिः"।।४।।

यजमान कहे - "नान्दीश्राद्धं सम्पन्नम्"।

ब्राह्मण कहे - 'सुसम्पन्नम्''

विसर्जनम् - ॐव्वाजेवाजेऽवत व्वाजिनो नो धनेषु विप्राऽअमृता ऽऋतज्ञाः। अस्य मध्वः पिबत मादयध्वं तृप्ता यात पथिभिर्देवयानैः।।

ॐ आमा व्वाजस्य प्रसवो जगम्म्यादेमे द्यावापृथिवी विश्वरूपे। आ मा गन्तां पितरा मातरा चा मा सोमोऽअमृतत्त्वेन गम्म्यात्।। विश्वेदेवाः प्रीयन्तामिति। यजमानः 'मयाऽऽचिरतेऽस्मिन् साङ्कल्पिकनान्दीश्राद्धे न्यूनातिरिक्तो यो विधिः स उपविष्टब्राह्मणानां वचनाच्छ्रीगणपितप्रसादाच्च पिरपूर्णीस्तु'। 'अस्तु पिरपूर्णः' इति ब्राह्मणाः। अनेन सांकल्पिकनान्दीश्राद्धेन नान्दीमुखाः पितरः प्रीयन्ताम्।

इति साङ्कल्पिकनान्दीश्राद्धविधिः।

नोट: नान्दीश्राद्ध में द्वादश चट, चारचट, आठ चट आदि का विधान है। अत: स्वयं की इच्छा अनुसार निर्णय करे। (पिण्ड दान विधि से भी किया जाता है।)

अथाचार्यादि वरणम्

हस्ते जलमादाय - ॐ तत्सत्-आचार्यादि ऋत्विजां वरण महंकरिष्ये, उदङमुखमाचार्यमुपवेश्य पाद प्रक्षालनपूर्वकं गन्धादिभि सम्पूज्य हस्ते वरणद्रव्य जलाक्षतान्यादाय दक्षिण जानुं स्पृष्टवा आचार्य वृणुयात ॐ तत्सत् – अमुक गोत्र प्रवर शाखान्वित यजमानोऽहम्।

अमुक गोत्र प्रवर शाखाध्यायिनममुक नामानमाचार्यम् अस्मिन कर्तव्ये अमुक यागख्ये कर्मणि दास्यमानैः एभिर्वरण द्रव्यैः आचार्यत्वेन त्वामहं वृणे।

वरण सामग्री (वस्त्र, कमण्डलु, स्वर्ण अंगूठी, आसन, उपवीत, ताम्बुल दक्षिणा) आचार्य: 'वृतोऽस्मि' इति वदेत्। ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्।

दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते।। इति मन्त्रं पठेत्। ततो यजमानः पाद्य- अर्ध्य-गन्ध-अक्षत-पुष्प-मालादिभिराचार्य सम्पूज्य, तस्य दक्षिणहस्ते रक्तसूत्ररूप-

कङ्कणबन्धनं कुर्यात्। ॐ यदाबध्नन् दाक्षायणा हिरण्ण्य र्ठः शतानीकाय सुमनस्यमानाः। तन्नम ऽआ बध्नानि शतशारदायायुष्माञ्जरदष्टिर्य्यथासम्।।

तत आचार्य प्रार्थयेत् - ॐ बृहस्पते ऽअति यदय्यौं ऽअर्हाद् द्युमद्विभाति क्क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्।। आचार्यस्तु यथा स्वर्गे शक्रादीनां बृहस्पति:। तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन्नाचार्यो भव सुव्रत।। यावत्कर्म समाप्येत तावत्त्वमाचार्यो

भव।। 'भवामि' इत्याचार्यौ वदेत्। (मधुपर्कार्चनम् भी कर सकते हैं)

ब्रह्मवरणम् - यजमानः - 'अस्मिन् याग - कर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैरमुक-गोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे।' ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो व्वेन ऽआवः। स बुद्धन्या ऽउपमा ऽअस्य व्विष्ठ्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः।। यथा चतुर्मुखो ब्रह्मा सर्ववेदविशारदः। तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मन् ब्रह्मा भव द्विजोत्तम।

सदस्यवरणम् - यजमानः - 'अस्मिन् याग कर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैरमुक-गोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं सदस्यत्वेन त्वामहं वृणे'। ॐ सदसस्प्पतिमद्भुतं प्रियमिन्द्रद्स्यकाम्यम्। सिनं मेधामयासिष र्ठ. स्वाहा। त्वन्नो गुरुः पिता माता त्वं प्रभुस्त्वं परायणः। आपिद्वमोक्षणार्थाय सदस्यो भव मे मखे।

ऋत्विग्वरणम् - यजमानः - 'अस्मिन् यागकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैरमुक गोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं ऋत्विक्त्वेन (होतृत्वेन) त्वामहं वृणे।' ॐ ब्राह्मणासः पितरः सोम्मयासः शिवे नो द्यावापृथिवीऽअनेहसा। पूषा नः पातु दुरितादृतावृधो रक्षा माकिर्जोऽअघश ठं सऽईशत।।

> भगवन् सर्वधर्मज्ञ सर्वधर्मभृताम्बर। वितते मम यज्ञे ऽस्मिन् ऋत्विक् त्वं मे मखे भव।।

एवमेव चतुरोष्टौ वा द्वारपालान् वृणुयात्। एवं ऋत्विजो वृत्वा प्रार्थयेत् - (प्रार्थना करे) ब्राह्मणाः सन्तु मे शास्ताः पापात्पान्तु समाहिताः। देवानां चैव दातारस्त्रातारः सर्वदेहिनाम्।।१।। जपयज्ञैस्तथा होमैदीनैश्च विविधैः पुनः। देवानाञ्च ऋषीणाञ्च तृप्त्यर्थं याजकाः स्मृताः।।२।। येषां देहे स्थिता वेदाः पावयन्ति जगत्त्रयम्। रक्षन्तु सततं ते मां ग्रहयज्ञे व्यवस्थिताः।।३।। ब्राह्मणा जङ्गमं तीर्थं त्रिषु लोकेषु विश्रुतम्। येषां वाक्योदकेनैव शुद्धयन्ति मिलना जनाः।।४।। पावनाः सर्ववर्णानां ब्राह्मणाः ब्रह्मरूपिणः। सर्वकर्मरताः नित्यं वेदशास्त्रार्थकोविदाः।।५।। श्रोत्रियाः सत्यवाचश्च देवध्यानरताः सदा। यद्वाक्यामृतसंसिक्ता ऋद्धं यान्ति नरद्रुमाः।।६।। अङ्गीकुर्वन्तु कर्मैतत्कल्पद्रुमसमाशिषः। यथोक्तिनयमैर्युक्ता मन्त्रार्थे स्थिरबुद्धयः।।७।। यत्कृपालोचनात् सर्वा ऋद्वयो वृद्धिमाप्नुयुः। ग्रहथ्यानरताः नित्यं प्रसन्नमनसः सदा।।९।। अक्रोधनाः शौचपराः सततं ब्रह्मचारिणः। ग्रहध्यानरताः नित्यं प्रसन्नमनसः सदा।।९।। अदुष्टभाषणाः सन्तु मा सन्तु परनिन्दकाः। ममापि नियमा ह्येते भवन्तु भवतामिप।।१०।। ऋत्विजश्च यथा पूर्वं शक्रादीनां मखेऽभवन्। यूयं तथा मे भवत ऋत्विजो द्विजसत्तमाः।।११।। अस्य यागस्य निष्पत्तौ भवन्तोऽभ्यर्चिताः मया। सुप्रसन्नैः प्रकर्तव्यं कर्मेदं विधिपूर्वकम्।।१२।।

यजमान प्रार्थना करे - यथाविहितं कर्म कुरु (एक तन्त्र पक्षे - कुरुत:)

ब्राह्मण - यथाज्ञानं करवाणि (एक तन्त्र पक्षे - करवाम:)

एक साथ में वरण करने हेतु - अस्मिन याग कर्मणि एभिर्वरणनिष्क्रयद्रव्यैर्नानागोत्रान् नाना शर्म्मणो ब्राह्मणान् आचार्यादीन् युष्मानहं वृणे।।

विप्राः - वृताःस्म

अथ रक्षाविधानम्

ततो यजमान: स्ववाम हस्ते श्वेतसर्षपाक्षत रक्षा सूत्राणि दक्षिणा द्रव्यं च गृहीत्वा दक्षिण हस्तेन पिधाय वक्ष्यमाण मंत्रै: पूर्वीदि दिग्रक्षां कुर्यात्।

तत्र मंत्राः - ''ॐ गणाधिपं नमस्कृत्य नमस्कृत्य पितामहम्। विष्णुं रुद्रं श्रियं देवीं वन्दे भक्त्या सरस्वतीम्।।१।।

स्थानाधिपं नमस्कृत्य दिननाथं निशाकरम्। धरणी गर्भ संभूतं शिशपुत्रं बृहस्पितम्।।२।। दैत्याचार्य नमस्कृत्य सूर्यपुत्रं महाग्रहम्। राहुं केतुं नमस्कृत्य यज्ञारम्भे विशेषतः।।३।। शक्राद्या देवताः सर्वा नमस्कृत्य मुनींस्तथा। गर्ग मुनिं नमस्कृत्य नारदं मुनिसत्तमम्।।४।। विसष्ठं मुनिशार्दूलं विश्वामित्रं महामुनिम्। व्यासं मुनिं नमस्कृत्य सर्वशस्त्रविशारदम्।।५।। विद्याधिका ये मुनय आचार्यश्च तपोधनाः। सर्वे ते मम यज्ञस्य रक्षां कुर्वन्तु विघ्नतः"।।६।।

इति पठित्वा सर्षपाक्षतान्निक्षिपन् -

"प्राच्यां रक्षतु गोविन्द आग्रेय्यां गरुडध्वजः। याम्यां रक्षतु वाराहो नारसिंहस्तु नैर्ऋते।।७।। वारुण्यां केशवो रक्षेद्वायव्यां मधुसूदनः। उत्तरे श्रीधरो रक्षेदैशान्यं तु गदाधरः।।८।। उध्वां गोवर्धनो रक्षेद्वधस्ताश्च त्रिविक्रमः। एवं दिश्च च मां रक्षेद्वासुदेवो जनार्दनः।।९।। शङ्खो रक्षेश्च यज्ञाग्रे पृष्ठे खङ्गस्तथैव च। वामपार्श्वे गदा रक्षेद्विक्षणे तु सुदर्शनः।।१०।। उपेन्द्रः पातु ब्रह्माणमाचार्यं पातु वामनः। अच्युतः पातु ऋग्वेदं यजुर्वेद मधोक्षजः।।११।। कृष्णोरक्षतु सामानिह्मथर्वं साधवस्तथा। उपविष्टाश्च ये विप्रास्तेऽनिरुद्धेन रिक्षताः।।१२।। यजमानं सपत्नीकं कमलाक्षश्च रक्षतु। रक्षाहीनं तु यत्स्थानं तत्सर्वं रक्षताद्धरिः।।१२।। यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वदा। स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु।।१४।। अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम्। सर्वेषामिवरोधेन शुभकर्म समारभे"।।१६।। इति पिठत्वा हस्तस्थं सर्षपाक्षतरक्षासूत्रं देवतानां चरणेषु निक्षिप्य सूत्रं विभज्य देवताभ्यो रक्षासूत्रं समर्प्य ब्राह्मणानां हस्तेषु रक्षा बन्धनं कुर्यात्। कुङ्कृमेन च तिलंक कुर्यात्। ततो ब्राह्मणा यजमानस्य दिक्षण हस्ते, पत्न्याश्च वाम हस्तेऽभिमंत्रित रक्षासूत्रं बध्नीयुः कुङ्कृमेन तिलकं च कुर्युः

''रक्षासूत्र प्रमाण''

- "१. **संस्कार दीपके -** पादाऽगुष्ठं समारभ्य केशान्तंच नरर्षभ। रक्षासूत्रं प्रकर्तव्यं सर्वत्र शुभ कर्मणि।।
- २. पत्नी वाम करे सूत्रं बद्धं सौख्यधनागमम्। बहुसम्पति मारोग्यं रक्षार्थे कंकणं शुभम्।।"

ब्राह्मण - ॐ व्रतेनदीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दिक्षणाम्। दिक्षणा श्रद्धामाप्नोतिश्रद्धया सत्यमाप्यते।।

तिलक मन्त्र - ॐ युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषं चरन्तं परितस्थुषः रोचन्ते रोचनादिवि। युञ्जन्त्यस्य काम्या हरी विपक्ष सारथे शोणा धृष्णु नृवाहसा।।

ततो यजमानदक्षिणहस्ते कङ्कणबन्धनम्। ॐ यदाबध्नन् दाक्षायणा हिरण्य ठी शतानीकाय सुमनस्यमानाः तन्न्मऽआ बध्नामि शतशारदायायुष्माञ्जरदिष्ट्टर्य्यथासम्।। दाक्षायणा शतानीकमबध्नन्सुहिरण्यकम्। आबध्नामि तदेवाहमायुष्यस्याभिवृद्धये।। ततो यजमानपत्न्याः वामहस्ते कङ्कणबन्धम्। ॐ पत्नीभिरनु गच्छेम देवाः पुत्रौब्ध्रातृभिरुत वा हिरण्ण्यैः। नाकं गृब्भ्णानाः सुकृतस्य लोके तृतीये पृष्टुेऽअधि रोचने दिवः। ग्रहयज्ञफलावाप्त्यै कङ्कणं सूत्रनिर्मितम्। हस्ते बध्नामि सुभगे त्वं जीव शरदां शतम्।।

येन राजा बलिर्बद्धो दानवेन्द्रोमहाबल:। तेनत्वा-मनु बध्नामि रक्षे माचल माचल। ब्रह्म विष्णुश्च - रुद्रश्च रक्षां कुर्वन्तु ते सदा।।

अथ गृह प्रतिष्ठादि वास्तु शान्ति पूजन प्रयोगः

(शास्त्र विधान के अनुसार मंडप संरचना करे। पञ्चगव्यप्रोक्षणं, कूर्मानन्तादि भूमि पूजनम्।। यजमान स्वयं पञ्चगव्य प्राशन करे एवं प्रायश्चितं देह शुद्धि संकल्प करे।) ऐशान्या गणनाथस्तथा ग्रहाणां कलशस्य च स्थापनं पूजनं कुर्यादाग्नेय्यां मातृमंडले।। गणेश श्रीयुताः स्थाप्यास्तथा षोडश मातृकाः। वसोर्द्धाराघृताक्ता च रिक्षकाः सप्तिबन्दुकाः।। तत्रैवाभ्युदयस्थानं पितृणां तृप्तिहेतवे। नैऋत्यां स्थापयेद् वास्तु मंडले वास्तु देवताः।। एकाशीति पदैः स्थाप्यश्चत्वारिंशञ्च पञ्च। चरक्याद्यष्टदश च लोकपालास्तु तत्र च।। वायव्यां वा (आग्येय्यां) योगिनी वेद्यां चतुःषष्टिं च योगिनीः। स्थापयेद्धैरवांस्तत्र द्विपंचाशन्मितान्पुनः।। ऊनपंचाशन्मिता वै मरुतां तु गणास्तथा। मध्य विलिखेत्सर्वतोभद्रं वेदिकोपिर सुन्दरम्।।

।।विवाहोत्सव यज्ञेषु मण्डपं कारयेत सुधी:। सर्व विघ्न विनाशाय सर्वेषां चित शुद्धये।। अथ संङ्कल्प - देशकालौ संक्कीर्त्य - पूर्वीच्चारित कर्मणानुसारेण गोत्रोच्चार्य अमुक नामाऽहं मम सर्वापच्छान्तिपूर्वकं नूतन निर्मित गृहे (भवने) भूमिपूजा शिलान्यास दिनमारम्भ अद्य प्रतिष्ठा दिन पर्यन्तं कृमिकीट-पतंगादि वृक्षरोहण एवं जीव हिंसा शल्यादि जन्य दोषपरिहारार्थम् अभक्ष्या भक्ष्य अचौश्या-चौश्या अपेह्या पेय अभाष्या भाष्य म्लेछादि संसर्ग जिनत नानाविध दोषादि निराकरणार्थम् वा झटिती निवृत्यर्थम्। वास्तु देवता

अनुग्रह प्राप्त्यर्थम् अस्मिन भवने धन धान्यादि सम्पती, पुत्र पौत्रादि अविच्छिन्न प्राप्त्यर्थम् आयुष्य आरोग्यता दीर्घायुष्यार्थम् सदभीष्ट निरन्तरं सिद्धयर्थम् उत्तरोत्तर वृद्धयर्थम् वास्तु कृत समस्त दोषोपशान्त्यथर्म् शिख्यादि वास्तु देवता प्रीतये वास्तु शान्ति कर्माऽहं करिष्ये वा ब्राह्मण द्वारा कारियष्ये।

तदङ्गत्वेन गणपत्यादि... देवानां अर्चियष्ये।

।।पूर्वोक्त विधान अनुसारेण पूजा करे।।

पश्चिमाभिमुख उपविश्य आचम्य प्राणानायम्य – वास्तु मण्डलपूजनार्थम् सङ्कल्पं – अद्यपूर्वीचारितः प्रारब्धस्य अमुकयागस्याङ्गत्वेन एकाशीतिपदं वास्तु मण्डलं देवता सहिताः वास्तु पुरुष मूर्तिनां आवाहनं स्थापनं पूजनञ्च करिष्ये।।

नैर्ऋत्य कोण में वास्तु मण्डल की स्थापना करे। वास्तु पीठस्याग्नयेयादि कोणेषु चतुरः शड़कून रोपयेत्। द्विगुणीकृत सूत्रेण सर्वेषांवेष्टनं कुर्यात्। (मतान्तरे – शंकु चतुष्ट्यमीशानादि क्रमेणरोपयेत्)

आग्नेय्याम् ॐ विशन्तु भूतले नागा लोकपालाश्च सर्वतः। मण्डपेऽत्रावतिष्ठन्तु ह्यायुर्बलकराः सदा।।१।। ततो नैर्ऋत्याम् - ॐ विशन्तु भूतले नागा लोकपालाश्च सर्वतः।। मण्डपेऽत्रावितष्टन्तु ह्यायुर्बलकराः सदा।।२।। ततो वायव्याम् - विशन्तु भूतले नागा लोकपालाश्च सर्वतः। मण्डपेऽत्रावतिष्ठन्तु ह्यायुर्बलकराः सदा।।३।। तत ऐशान्याम् - विशन्तु भूतले नागा लोकपालाश्च सर्वतः। मण्डपेऽत्रावतिष्ठन्तु ह्यायुर्बलकराः सदा।।४।। एवमाग्नेयादिषु चतुष्कोणेषु शङ्कूनारोप्याऽऽग्नेयादिक्रमेणैव माषभक्तं दध्योदनं वा बलिं दद्यात् आग्नेय्यां शङ्क्रसमीपे बलिं निधाय हस्ते जलं गृहीत्वा। ॐ अग्निभ्योऽप्यथ सर्पेभ्यो ये चान्ये तान्समाश्रिता:।। बलिं तेभ्य: प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तमम्।।१।। इति जलमृत्सृजेत्। एवं नैर्ऋत्यां शङ्कसमीपे बलिं निधाय हस्ते जलं गृहीत्वा। ॐ नैर्ऋत्याधिपतिश्चैव नैर्ऋत्यां ये च राक्षसा:।। बलिं तेभ्य: प्रयच्छामि पुण्य-मोदनमुत्तमम्।।२।। इति जलमुत्सृजेत्।। ततो वायव्यां शङ्क्रसमीपे बलिं निधाय हस्ते जलं गृहीत्वा। ॐ नमो वै वायुरक्षेभ्यो चे चान्ये तान्समाश्रिता:।। बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तमम्।।३।। इति जलमुत्सृजेत्।। तत ऐशान्यां शङ्कसमीपे बलिं निधाय हस्ते जलमादाय। ॐ रुद्रेभ्यश्चैव सर्पेभ्यो ये चान्ये तान्समाश्रिताः।। बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तमम।।४।। इति जलमुत्सृजेत्।। तत आग्नेयादिक्रमेण शङ्कदेवताभ्यो नमो गन्धं पुष्पं धूपं दीपं नैवेद्यश्च समः।। सर्वोपचारार्थे नमस्कारान् समः।। अनेन शङ्क्ररोपणपूर्वकबलिदानेन चतस्र आग्नेयादिविदिग्देवताः प्रीयन्तां न मम।।

अथ रेखाकरणं पूजनश्च।। वास्तुपीठे श्वेतं वस्त्रं प्रसार्य तदुपिर सुवर्णशलाकया कुशशलाकया वा पिश्चमत आरभ्य प्रागायता उदक्संस्थाः दिक्षणत आरभ्य उदगायताः प्राक्संस्थाः समचतुरस्रादश दशरेखा विदध्यात्।। प्रथमं पिश्चमत आरभ्य प्रागायता उदक् संस्था दशरेखाः कार्याः।। ॐ शान्तायै नमः।।१।। ॐ यशोवत्यै नमः।।२।। ॐ कान्तायै नमः।।३।। ॐ विशालायै नमः।।४।। ॐ प्राणवाहिन्यै नमः।।५।। ॐ सत्यै नमः।।६।। ॐ सुमनायै नमः।।७।। ॐ नन्दायै नमः।।८।। ॐ सुभद्रायै नमः।।१।। ॐ सुरथायै नमः।।१०।। ततो दिक्षणत आरभ्य उद्गायताः पूर्विदक्संस्था दशरेखाः कार्याः।। ॐ हिरण्यायै नमः।।१।। ॐ सुन्नतायै नमः।।२।। ॐ विभूत्यै नमः।।४।। ॐ विमलायै नमः।।५।। ॐ प्रयायै नमः।।६।। ॐ जयायै नमः।।७।। ॐ कालायै नमः।।८।। ॐ विशोकायै नमः।।९।। ॐ ईडायै नमः।।१०।।

हस्तेऽक्षतान् गृहीत्वा ॐ मनोजूतिर्ज्जुषताः।। रेखादेवताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवत। ॐ भूः रेखादेवताभ्यो नमः गन्धं पुष्प धूपं दीपं नैवेद्यश्च समर्पयामि सर्वोपचारार्थे नमस्कारान् समर्पयामि। अनेन रेखादेवतानां पञ्चोपचारैः कृतेन पूजनेन ॐ भूः रेखादेवताः प्रीयन्तां न मम।।

"देव प्रतिष्ठादि अनुष्ठान में चतुःषष्ठीपद वास्तुमण्डल पूजा का विधान है। अतः नवरेखा करे। तथा १ से ६४ पर्यन्त (अनन्त) देवता का आवाहन करे। बलिदान शङ्कुरोपण पूर्वोक्त प्रकारेण।"

अथ एकाशीतिपद वास्तुमण्डल देवता स्थापनम्

तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।।

समाह्वयन्तं शिखिनं महोज्वलं मेषाधिरूढं सुरराज वन्दितम्। त्रिशूलहस्तं वरदे महेशं भजामि देवं स्वकुलाभिवृद्धै। शिखिने नमः शिखिनमावाहयामि स्थापयामि।।१।। शं नो वातः पवता ठी शत्रस्तपतु सूर्यः। शत्रः किनक्रदद्देवः पर्जन्योऽअभिवर्षतु।। एह्येहि जीमृतसुधाप्रमृष्टे चराचरैः सेवितधर्ममूर्ते। पवित्रदेवेश गृहाण पूजां ममाध्वरं पाहि भवत्रमस्ते।। पर्जन्याः पर्जन्यमाः।।२।।

मर्माणि ते वर्मणा छादयामि सोमस्त्वा राजाऽमृतेनानुवस्ताम्। उरोर्वरीयो वरुणस्ते कृणो तु जयन्तं त्वानु देवा मदन्तु।

एह्येहि देवेश जयन्तसूनो शच्याः सदा सर्वसुरैकसेव्य। पीठेऽत्र यज्ञेश गृहाण पूजां शिवाय नः पाहि भवन्नमस्ते। जयन्तायः जयन्तमाः।।३।।

आयात्विन्द्रोऽवस उप न इह स्तुतः सधमादस्तु शूरः। वावृधानस्तविषीर्यस्य पूर्वीद्यौर्न क्षत्रमभिभूति पुष्यात्।।

एह्येहि वृत्रघ्न गजाधिरूढ़ सहस्त्र नेत्र त्रिदशैकराज। शचीपते शक्र सुरेश नित्यं गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।। कुलिशायुधाः कुलिशायुधमाः।।४।।

बण्महाँ २।। असि सूर्य बडादित्य महाँ २।। असि। महस्ते सतो महिमा पनस्यतेऽद्धा देव महाँ २।। असि।।

समाह्वयन्तं द्विभुजं दिनेशं सप्ताश्ववाहं द्युमणिं ग्रहेशम्। सिन्दूरवर्णं प्रतिभावसंभवं भजामि सूर्यंस्वकुलाभिवृद्धे सूर्यायः सूर्यमाः।।५।।

त्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्। दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते।। एह्येहि सत्येश महामहेश दुष्टान्तकृत्स्वच्छ सुधर्ममूर्ते। पीठेऽत्र देवेश गृहाण पूजां ममाध्वरं पाहि भवन्नमस्ते।। सत्यायः सत्यामाः।।६।।

आ त्वाहार्षमन्तरभूधुवस्तिष्ठाविचाचिलः। विशस्त्वा सर्वा वाञ्छन्तु मा त्वद्राष्ट्रमधिभ्रशत्।। समाह्वयन्त द्विभुजं भृशं हि नीलोत्पलाभासविशालनेत्रम्। नीलाद्रिवर्णं प्रतिभावभासं भजामि देवं कुलवृद्धिहेतोः।। भृशायः भृशमाः।।७।।

या वां कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती। तया यज्ञं मिमिक्षतम्।।

समाह्वयन्तं गगनं दिवौकसां निवासभूतं सुविनिर्मलं च। आरक्तहीनं रुचिरं पुराणं भजामि नाकं स्वकुलाभिवृद्धै।। आकाशायः आकाशमाः।।८।।

वायो ये ते सहस्त्रिणो रथासस्तेभिरागिः। नियुत्वान्सोमपीतये।।

धूम्राह्वयं गन्धवहं सुरम्यं मृगाधिरूढं त्रिदशैकवन्द्यम्। सुपूजकानन्दकरं पुराणं भजामि वायुं स्वकुलाभिवृद्धयै।। वायवेः वायुमाः।।९।।

पूषन् तव व्रते वयं न रिष्येम कदाचन। स्तोतारस्त इह स्मिस।।

एह्येहि पूषन् सुविचारदक्ष हयाधिरूढ़ाखिलधर्ममूर्ते। पीठेऽत्र देवेश गृहाण पूजां शिवाय न: पाहि भवन्नमस्ते।। पूष्णेः पूषणमाः।।१०।।

तत्सूर्यस्य देवत्वं तन्महित्वं मध्या कर्तीर्वितत र्ठः सञ्जभार। यदेदयुक्त हरितः सधस्तादाद्रात्री वासस्तनुते सिमस्मै।।

समाह्वयन्तं वितथं विशालं सुपूजकानन्दकरं वरेण्यम्। त्रिशूलहस्तं मकराधिरूढं भजामि देवं कमलायताक्षम्।। वितथायः वितथमाः।।११।।

अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रियाऽ अधूषत। अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजा न्विन्द्रते हरी।।

एह्येहि लोकेश्वरिदव्यमूर्ते गृहक्षत त्वं कनकाद्रिरूपम्। पीठेऽत्र देवेश गृहाण पूजां रक्षाध्वरं नो भगवन्नमस्ते। गृहक्षतायः, गृहक्षतमाः,।।१२।। यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा धर्माय स्वाहा धर्म: पित्रे।।

एह्येहि दण्डायुध धर्मराज कालाञ्जनाभासविशालनेत्र। विशालवक्षःस्थलरौद्ररूपं गृहाण पूजां भगवत्रमस्ते।। यमायः यममाः।।१३।।

गन्धर्वस्त्वा विश्वावसुः परिदधातु विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्यग्रिरिड ईडितः इन्द्रस्य बाहुरसि दक्षिणो विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिर स्यग्रिरिड ईडितः। मित्रावरुणौ त्वोत्तरतः परिधत्तां ध्रुवेण धर्मणा विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्यग्रिरिड ईडितः।। एह्येहि गन्धर्वसुरप्रियेश रक्तौत्पलाभाससुधात्ममूर्ते। पीठेऽत्र देवेश गृहाण पूजां ममाध्वरं पाहि भगवत्रमस्ते।। गन्धर्वायः गन्धर्वमाः।।१४।।

अभी षु णः सखीनामविता जरि तृणाम्। शतं भवा स्यूतये।।

समाह्वयन्तं शिखिपृष्ठसंस्थं श्रीभृङ्गराजं जगतः शरण्यम्। खटवाङ्गहस्तं वरदं जनेशं यजामि देवं स्वकुलाभिवृद्ध्यै।। भृङ्गराजायः भृङ्गराजमाः।।१५।।

प्रतद्विष्णुस्तवते वीर्येणः मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः परावत आजगन्था परस्याः। सृकं संशाय पविमिन्द्र तिग्मं वि शत्रून् ताढ़ि वि मृधो नुदस्व।।

एह्येहि गोरोचनिदव्यमूर्ते मृगप्रकृष्टार्तिहरासुरारे। पीठेऽत्र देवेश गृहाण पूजां ममाध्वरं पाहि भगवन्नमस्ते।। मृगायः मृगमाः।।१६।।

उशन्तस्त्वा निधीमह्यु शन्तः सिमधीमिह। उशन्नुशत आवह पितृन् हिवषे अत्तवे।। समाह्वयान् दिव्यपितृन् कुलेशान् रक्तोत्पलाभानिह रक्तनेत्रान्। सुरक्तमाल्याम्बरभूषितांश्च नमामि पीठे कुलवृद्धिहेतोः।। पितृभ्योः पितृनावाः।।१७।।

द्वे विरूपे चरतः स्वर्थे अन्यान्या वत्समुपधापयते। हरिरन्यस्यां भवति स्वधावाञ्छुक्रोऽ अन्यस्यां ददृशे सुवर्चाः।।

एह्येहि दौवारिक दण्डपाणे विशालपङ्कोरुहलोचनेत्र। पीठेऽत्र देवेश गृहाण पूजां शिवाय नः पाहि भवन्नमस्ते।। दौवारिकायः दौवारिकमाः।।१८।।

नीलग्रीवाः शितिकण्ठा दिव र्वः रुद्राऽ उपश्रिताः। तेषा र्व सहस्र योजनेऽव धन्वानि तन्मसि।।

एह्येहि सुग्रीव सुरेशपूज्य दशाश्ववाहित्रगुणात्ममूर्ते। पीठेऽत्र देवेश गृहाण पूजां मनोरमां त्वं भगवन्नमस्ते।। सुग्रीवायः सुग्रीवमाः।।१९।।

नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो ब्रातेभ्यो ब्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नम:।।

एह्येहि विघ्नाधिपते सुरेन्द्र ब्रह्मादिदेवैरभिवन्द्यपाद। देवेश विद्यालय पुष्पदन्त गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।। पुष्पदन्तायः पुष्पदन्तमाः।।२०।। इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामस्युराचके।।

एह्येहि लोकेश्वर पाशपाणे यादोगणैर्विदन्तपादपद्य। पीठेत्र देवेश गृहाण पूजां पाहि त्वमस्मान्भगवन्नमस्ते।। वरुणायः वरुणमाः।।२१।।

यमश्विना नमुचेरासुरादिध सरस्वत्यसुनो दिन्द्रियाय। इमन्त र्ठः शुक्रं मधुमन्तिमन्दु र्ठः सोम र्ठः राजानिमह भक्षयामि।।

एह्येहि देवेश जगत्प्रताप महोग्ररूपासुरविश्वमूर्ते। महाबल: खड्ग-गदास्रपाणे पाहि त्वमस्मान्भगवन्नमस्ते।। असुरायः असुरमाः।।२२।।

शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभिस्रवन्तु नः।।

एह्येहि कीलाविललीढ विश्वयज्ञेऽत्र देवर्षभसंघसेव्ये। गृहाण पूजां विधिना प्रदत्तां शोषे सुदक्षाय नमोऽस्तु शोष। शोषायः शेषमा।।२३।।

एतत्ते रुद्राऽवसं तेन परो मूजवतोऽतीहि। अवततधन्वा पिनाकावसः कृत्तिवासा अहि र्ठः सन्नः शिवोऽतीहि।।

एह्येहि पापेन सदा विजेन देवासुराणां सचराचराणाम्। मां पाहि नित्यं सकलत्र पुत्रं गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।। पापायः पापमाः।।२४।।

द्रापे अन्धसस्पते दिरद्र नीललोहित। आसां प्रजानामेषां पशूनां मा भेर्मा रोङमो च नः किञ्चनाममत्।।

एह्येहि रोगाधिपतेऽमरेश नानाविधैश्वर्यहयादिमुक्त। ब्रह्मादिदेवैरभिवन्दनीय गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।। रोगायः रोगमाः।।२५।।

अहिरिंव भोगै: पर्येति बाहुं ज्याया हेतिं परिबाधमान:। हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान्पुमान्पुमा र्ठः सं परिपातु विश्वत:।।

समाह्वयन्तं फणिराजमग्न्यं नानाफणामण्डल-राजमानम्। भक्तैकगम्यं जनताशरण्यं यजाम्यहं नः स्वकुलाभिवृद्ध्यै।। अहयेः अहिमाः।।२६।।

अवतत्य धनुष्टव र्ठः सहस्राक्ष शतेषुधे। निशीर्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव।। आवाहयेऽहं सुरदेवसेवितं जीमूतसंकाशमुमाधिनाथम्। मुख्याभिधं देविमहार्थताद्यैः पाहि त्वमस्मान्भगवन्ननमस्ते।। मुख्यायः मुख्यमाः।।२७।।

इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहे मती:। यथा शमसद्विपदे चतुष्पदे विश्वं पृष्टं ग्रामे अस्मिन्ननातुरम्।।

एह्येहि भल्लाटशशाङ्कमूर्ते सुरासुरैरर्चितपादपद्म। देदीप्यमानोप्सरसां गणेन गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।। भल्लाटायः भल्लाटमाः।।२८।।

सोम र्ठः राजानमवमेऽग्रिमन्वारभामहे। आदित्यान्विष्णु र्ठः सूर्य ब्रह्माणं च बृहस्पति र्ठः स्वाहा।।

एह्रोहि ताराधिपते सुरेश श्वेतोत्पलाभाससुधाकरेश। पीठेऽत्र देवश गृहाण पूजां पाहि त्वमस्मान्भगवन्नमस्ते।। सोमायः सोममाः।।२९।।

नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।। आगच्छतागच्छत सर्पदेवाः संसारभीतिप्रमुखा वरेण्याः। धराधरा रत्नविभूषिताश्च गृहीत पूजां वरदा नमो वः। सर्पेभ्योः सर्पानावाः।।३०।।

इड एह्यदित एहि काम्या पत। मिय व: कामधरणं भूयात्।।

एह्येहि मातरिदते शुभप्रदे यज्ञाधिपे सर्वजगितप्रये शुभे। सुराप्रिये नो भव विश्वधात्रि यजािम देवीं प्रकृतिं पुराणीम।। अदितयेः अदितिमाः।।३१।।

अदितिद्यौरिदितिरन्तिरक्षमिदितिर्माता स पिता स पुत्रः। विश्वे देवा अदितिः पञ्जजना अदितिर्जातमिदितिर्जनित्वम्।।

एह्येहि देवि त्विमहात्रयज्ञे प्रसीद मातर्दनुजान्वयस्थे। दिते महामोहकरी त्वमस्मान्पाहीन्द्रवन्दे प्रणता वयं ते।। दितये。दितिमाः।।३२।।

आपो हि ष्ठा मयोभुवस्तान ऊर्जे दधातन।। महेरणाय चक्षसे।।

समाह्वया श्वेतसुपावनेशीरापस्वरूपाः प्रबलप्रसन्नाः। सुपाशहस्ता वरदा अपोऽत्र यजामि देवीः कुलवृद्धि हेतोः।। अदभ्योः अप आवाः।।३३।।

हस्त आधाय सविता बिभ्रदिभ्र र्वः हिरण्ययीम्। अग्नेर्ज्योतिर्निचाय्य पृथिव्या अध्याभरदानुष्टुभेन छन्दसाङ्गिरस्वत्।।

समाह्वयं दिव्यमुदारकीर्तिं कलाकलाभिस्तु महोग्ररूपम्। सावित्रमग्न्यं सुविशालमूर्ति यजामि देवं स्वकुलाभिवृद्ध्यै।। सावित्रायः सावित्रमाः।।३४।।

इन्द्रस्य वृष्णो वरुणस्य राज्ञ आदित्यानां मरुतां शर्ध उग्रम्। महामनसां भुवनच्य वानां घोषो देवानां जयतामुदस्थात्।।

एह्येहि सर्वायुधशोभमानसुरासुराणां जयकृन्महोग्र। जयाभिदत्वं भव नो जयाय नानाविधालङ्कृतिमन्नमस्ते।। जयायः जयमाः।।३५।।

इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्र भरामहे मती:। यथा शमसद् द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पृष्टं ग्रामे अस्मिन्ननातुरम्।।

एह्येहि सर्वज्ञ पिनाकपाणे सुरासुरैर्विन्दितपादपद्म। पीठेऽत्र देवेश गृहाण पूजां रक्षाध्वरं नो भगवन्नमस्ते।। रुद्रायः, रुद्रमाः।।३६।।

यदद्य सूरऽ उदिते नागा मित्रो अर्यमा - सुवाति सविता भगः।

आवाहये आर्यमणं महेशं सुरासुरैरर्चितपादपद्मम्। नीलाम्बुजाभासमथेश गुण्यं गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।। अर्यमणेः अर्यमणमाः।।३७।।

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद् भद्रं तन्नऽ आसुव।।

एह्येहि पीठे सवितर्दिनेशःसप्ताश्वसंयुक्तरथाधिरूढ्। रक्तोत्पलाभासविशालनेत्र गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।। सवित्रेः सवितारमाः।।३८।।

विवस्वन्नादित्यैष ते सोमपीथस्त स्मिन्मत्स्व। श्रदस्मै नरो वचसे दधातन यदाशीर्दा दम्पती वाममश्नुत:। पुमान्पुत्रो जायते विन्दते वस्वधा विश्वाहारप एधते गृहे।।

एह्येहि रक्ताम्बर रक्तदेह सर्वैनसोनाशनरं गहर्तः। आरोग्यदातः सकलार्थनेत्रे विवस्वते तुभ्यमहं नमामि।। विवस्वते。विवस्वतमाः।।३९।।

उत नोऽहिर्बुध्न्यः शृणोत्वज एकपात् पृथिवी समुद्रः। विश्वे देवा ऋतावृधो हुवानाः स्तुता मन्त्राः कविशस्ता अवन्तु।।

आवाहयेऽहं विबुधाधिपं त्वां चतुर्दंतं पर्वतसिन्नभं प्रभुम्। गजाधिरूढं सकलाप्तिदोहं गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।। विवुधाधिपायः विवुधाधिपमाः।।४०।।

मित्रस्य चर्षणोधृतोऽवोदेवस्य सानसि। द्युम्नं चित्रश्रवस्तमम्।।

एह्येहि रक्ताम्बरधारिमित्र सप्ताश्ववाहित्रदशैकनाथ। श्वेतोत्पला भास विशालनेत्र गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।। मित्रायः मित्रमाः।।४१।।

नाशियत्री बलासस्यार्शस उपिचतामिस। अथो शतस्य यक्ष्माणां पाकारोरिस नाशनी।। एह्येहि सर्वायुधशोभमान श्रीराजयक्ष्मन् त्रिगुणात्ममूर्ते। पीठेत्र देवेश गृहाण पूजां देवाधि– देवेश भगवत्रमस्ते।। राजयक्ष्मणेः राजयक्षमाणमाः।।४२।।

स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म सप्रथाः।।

एह्येहि पृथ्वीधरशाङ्कपाणे उदारकीर्ते सुविशालमूर्ते। चतुर्भुजत्विमह पूजयामि वरिष्ठदेवं स्वकुलाभिवृद्ध्यै।। पृथ्वीधरायः पृथ्वीधरमाः।।४३।।

यस्यास्ते घोर आसन्जुहोम्येषां बन्धानामवसर्जनाय। यां त्वा जनो भूमिरिति प्रमन्दते निऋतिं त्वाहं परिवेद विश्वत:।।

एह्येहि यज्ञेश्वरं आपवत्सं महाबलस्त्वं प्रथित: सुरेश। मयूरवाट त्रिदशैकवन्द्य गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।। आपवत्सायः आपवत्समाः।।४४।।

ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः।।

एह्येहि विप्रेन्द्र पितामहेश हंसाधिरूढ़ त्रिदिशैकवन्द्य। श्वेतोत्पलाभास कुशाब्जहस्त गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।। ब्रह्मणेः ब्रह्माणमाः।।४५।।

वास्तोष्पते प्रति जानीह्यस्मान त्स्वावेशो अनमीवो भवा नः। यत् त्वे महे प्रति तन्नो जुषस्व शं नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे।। एह्येहि पातालतलाधिवासन् वास्तोष्पते स्वच्छ सुधर्ममूर्ते गृहाधिदेवेश परेश नित्यं गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।। वास्तोष्पतयेः वास्तोष्पतिमाः।।४६।।

यं ते देवी निर्ऋतिराबबन्ध पाशं ग्रीवास्वविचृत्यम्। तं ते विष्याम्यायुषो न मध्यादथैतं पितुमद्द्धि प्रसूत:। नमो भूत्यै येदं चकार।।

आवाहयेऽहं चरकीमिह त्वां सुरारताक्षीं गुरुशङ्कधारिणीम्। ईशानकोणस्थितिमत्र कृत्वा गृहाण पूजां वरदे नमस्ते।। चरक्यैः चरकीमाः।।४७।।

ऋषभं मा समानानां सपत्नानां विषासिहम्। हन्तारं शत्रूणां कृधि विराजं गोपितं गवाम्।। एह्येहि दैत्ये मम वास्तुयज्ञे मार्जारतुल्याननहस्तजे त्वम्। चापासि खट्वाङ्गधरे विदारि गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।। विदार्थैः विदारीमाः।।४८।।

विदद् यदी सरमा रुग्णमद्रेमीहि पाथः पूर्व्यं सध्न्यक्कः। अग्रं नयत् सुपद्यक्षराणामच्छा र वं प्रथमा जानती गात।।

एह्येहि दैत्येऽसुरसङ्घमुक्ते सुपूतने मे मखकर्मणि त्वम्। पाहि त्वमस्मान् सततं शिवाय गृहाण मेऽर्चां वरदे नमस्ते।। पूतनायैः पूतनामाः।।४९।।

अभ्रातरो न योषणो व्यन्तः पतिरिपो न जनयो दुरेवाः। पापासः सन्तो अनृता असत्या इदं पदमजनता गभीरम्।।

आवाहियष्ये त्वामध्वरचारुसिद्ध्यै पापे तथा राक्षसि धूम्रवस्त्रे। रक्तानने शस्त्रधरे महेशि गृहाण पूजां शुभदे नमस्ते।। पापराक्षस्यैः पापराक्षसीमाः।।५०।।

यदक्रन्दः प्रथमं जायमान उद्यन् त्समुद्रादुत वा पुरीषात्। श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महि जातं ते अर्वन्।।

एह्येहि देवेशि षडानन त्वं कपर्दितेजाऽशसमुद्भवो हि। मयूरवाहो जितकामदेवो गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।। स्कन्दायः स्कन्दमाः।।५१।।

यदद्य सूर उदितेऽनागा मित्रो अर्यमा। सुवाति सविता भग:।।

आवाहयेऽन्नार्यमणं महेशं सुरासुरैरचितपादपद्म। नीलाम्बुजाभास महेशकीर्तिं गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते। अर्यम्णेः अयमणमाः।।५२।।

हिङ्काराय स्वाहा हिङ्कृताय स्वाहा क्रन्दते स्वाहाऽवक्रन्दाय स्वाहा प्रोथते स्वाहा प्रोथाय स्वाहा गन्धाय स्वाहा घ्राताय स्वाहा निविष्टाय स्वाहोपिवष्टाय स्वाहा संदिताय स्वाहा वलाते स्वाहासीनाय स्वाहा शयानाय स्वाहा स्वपते स्वाहा जाग्रते स्वाहा कूजते स्वाहा प्रबुद्धाय स्वाहा विजृम्भमाणाय स्वाहा विचृत्ताय स्वाहा स र्ठः हानाय स्वाहोपिस्थिताय स्वाहा यनाय स्वाहा प्रायगाय स्वाहा।

आवाहये त्वां प्रहरं च मुख्यं जृम्भायमाणं वरखड्गहस्तम्। प्रत्यिग्दशायां च सुरक्षणीयमत्राधिवासं कुरु जृम्भक त्वम्।। जृंभकायः जृंभकम।।५३।।

का स्विदासीत्पूर्विचित्ति कि र्वः स्विदासीद्बृहद्वयः। का स्विदासीत्पिलिप्पिला का स्विदासीत्पिशङ्गिला।।

आवाहये तं पिलिपिच्छिकं च मयूरपिच्छानि विधारयन्तम। वामे तु हस्ते धनुरादधानं बाणं दधानं त्वितरे तु हस्ते।। पिलिपिच्छायः पिलिपिच्छमाः।।५४।।

त्रातारिमन्द्रमिवतारिमन्द्र र्ठः हवे हवे सुहव र्ठः शूरिमन्द्रम। ह्वयामि शक्रं पुरुहूर्तमन्द्र र्ठः स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः।।

एह्येहि सर्वामरसिद्धसाध्यैरभिष्टुतो वज्रधरामरेश। संवीज्यमानोऽप्सरसां गणेश रक्षाध्वरं नो भगवन्नमस्ते।। इन्द्रायः इन्द्रमाः।।५५।।

त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडो अवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो विह्नतमः शोशुचानो विश्वा द्वेषा र्वः सि प्रमुमुग्ध्यस्मत्।।

एह्रोहि सर्वामर हव्यवाह मुनिप्रवीरैरभितोऽभिजुष्टम्। तेजोवतालोकगणेन सार्द्धं ममाध्वरं पाहि कवे नमस्ते।। अग्नये。अग्रिमाः।।५६।।

यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा धर्माय स्वाहा धर्म: पित्रे।।

एह्येहि वैवस्वत धर्मराज सर्वामरैर्चितधर्ममूर्ते। शुभाशुभानन्द शुचामधीश शिवाय नः पाहि भवन्नमस्ते।। यमायः यममाः।।५७।।

असुन्वन्तमयजमानिमच्छ स्तेनस्येत्यामिन्विहितस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छ सात इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु।।

एह्रोहि रक्षोगणनायक त्वं विशालवेतालपिशाचसङ्घै:। विद्याधरेन्द्रामरगीयमान पाहि त्वमस्मान्भगवन्नमस्ते।। निर्ऋतयेः निर्ऋतिमाः।।५८।।

तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुश र्ठः स मा न आयुः प्रमोषीः।। एह्येहि यादोगणवारिधीनां गणेन पर्जन्य सहाप्सरोभिः। विद्याधरेन्द्रामरगीयनमान पाहित्वमस्मान्भगवन्नमस्ते।। वरुणायः वरुणमाः।।५९।।

वायो ये ते सहस्त्रिणो रथासस्तेभिरा गहि। नियुत्वान् त्सोम पीतये।।

एह्येहि यज्ञेश समीरण त्वं मृगाधिरूढः सहसिद्धसङ्घैः। प्राणस्वरूपिन्सुखतासहायः गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।। वायवे。 वायुमाः।।६०।।

वय र्वः सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि।।

एह्येहि यज्ञेश्वर यज्ञरक्षां विधत्स्व नक्षत्रगणेन सार्धम्। सर्वौषधीभि: पितृभि: सहैव गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।। सोमायः सोममाः।।६१।।

तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।।

एह्येहि यज्ञेश्वर निस्त्रशूल कपालखट्वाङ्गधरेणसाकम्। लोकेन यज्ञेश्वर यज्ञसिद्ध्यै गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।। ईशानायः ईशानमाः।।६२।।

अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषा:। य: श र्ठः सते स्तुवते धायि पज्र इन्द्रज्येष्ठा अस्माँ २ ।।अवन्तु देवा:।।

एह्येहि सर्वाधिपते सुरेन्द्र लोकेन सार्धं पितृदेवताभि:। सर्वस्य धातास्यमितप्रभावो विशाध्वरं न: सततं शिवाय।। ब्रह्मणे。 ब्रह्माणमाः।।६३।।

स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म स प्रथाः।।

एह्रोहि पातालधरामरेन्द्र नागाङ्गनाकिन्नरगीयमानः। यक्षोरगेन्द्रामर लोकसार्धमनन्तरक्षाध्वर-मस्मदीयम् अनन्तायः, अनन्तमाः।।६४।।

- ॐ उग्ग्रश्च भीमश्च ध्वान्तश्च धुनिश्च। सासह्वांश्चा भियुग्वा च विक्षिप स्वाहा।।१।। एह्येहि वास्तो विबुधाधिप त्वं गजाधिरुढोममरक्षणाय। वराप्सरोभिश्च विवीज्यमानो गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते। उग्रसेनायः उग्रसेनमाः।।६५।।
- ॐ एतने रुदद्रावसंतेन परो मूजवतोऽतीहि। अवततधन्वा पिनाकावस: कृतिवासा अहि र्ठः सन्नशीवोऽतीहि।।

एह्येहि सर्वामर हव्यवाह मुनिप्रवर्थैरभितोऽभिजुष्टः। तेजोवता लोक गणेन सार्द्धं ममाध्वरंरक्ष नमोऽस्तुते।। डामरायः, डामरमाः।।६६।।

- ॐ त्र्यायुषं जमदग्ने: कश्यपश्य-त्र्यायुषम्। यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नोऽअस्तु त्र्यायुषम्।। एह्येहि विश्वेश्वर विश्वनाथ कपाल खट्वांगधरेणसार्धम्। लोकेश यज्ञेश्वर यज्ञ सिद्धयै गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।। महाकालायः महाकालमाः।।६७।।
- ॐ इन्द्रऽआसां नेता बृहस्पित र्दक्षिणायज्ञः पुरएतुसोमः। देवसेना नामिभ भञ्जतीनां जयन्न्तीनां मरुतोयन्त्वग्रम।।

एह्येहि सर्वामर सिद्धसाध्यै रभिष्टुतो वज्र धरामरेशा। संवीज्यमानोऽप्सरसांगणेन रक्षाध्वरन्नो भगवन्नमस्ते।। पिलिपिच्छायः, पिलिपिच्छमा।।६८।।

- ॐ अवसृष्ट्रा परापतशरव्ये ब्रह्मस र्ठः शिते। गच्छामित्रान्प्रपद्यस्व मामीषां कञ्चनोच्छिष:।। एह्येहि पद्मासन पद्मपाणे सुरक्तसिंदूर समानवर्ण। सप्ताश्वरक्ताम्बर सूर्यशीघ्रं गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।। हेतुकायः हेतुकामाः।।६९।।
- ॐ बट्सूर्य्यश्रवसा महाँ २।। असिसत्रा देव महाँ २।। असिमन्नहा देवानाम सूर्य्य: पुरोहितो व्विभु ज्ज्योतिरदाबभ्यम्।।

एह्येहि यज्ञो गणनायक त्वं विशालवेताल पिशाचसंघै:। ममाध्वरं पाहि शिवाधिनाथ लोकेश्वर त्वं भगवन्नमस्ते।। त्रिपुरान्तकायः त्रिपुरान्तकमाः।।७०।।

- 3ॐ अग्निश्च मऽइन्द्रश्चमे सोमश्चमऽइन्द्रश्चमेसिवता च मऽइन्द्रश्च मे सरस्वती च मऽइन्द्रश्च मे पूषा च मऽइन्द्रश्च मे बृहस्प्पतिश्च मऽइन्द्रश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।। एह्येहि वस्वीश महानिधीश रत्नाकर सर्व सहस्रतेजा:।। धन स्वरूपो मम पाहि यज्ञं गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।। अग्नि वैतालायः अग्नि वैतालमाः।।७१।।
- ॐ विश्वानि देव सवितद्रुंरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्नऽआसुव।।
- एह्येहि देवेश्वरं शंभुसूनो शिखीन्द्रगामिन्सुर सिद्धसंघै:। संस्तूयमानात्मशुभाय नित्यं गृहाण पूजां भगवन्न मस्ते।। असिवैतालायः असिवैतालमाः।।७२।।
- ॐ अदितिद्यौरिदितिरन्तिरक्षमिदितिम्माता स पिता सपुत्रः। विश्वेदेवाऽअदितिः पञ्चजनाऽअदितिर्ज्जात मिदिति र्ज्जनित्वम्।।
- एह्येहि देवालय विश्वमूर्ते चतुर्मुख श्रीधर शम्भु मान्यः। सुपुस्तकाप्त स्रुवपात्रपाणे गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।। कालायः कालमाः।।७३।।
- ॐ मर्म्माणि ते व्वर्म्मणा च्छादयामि सोमस्त्वां राजाऽमृते नानुवस्ताम्। उरोर्व्वरीयो व्वरुणस्ते कृणोतु जयन्तन्त्वानु देवा मदन्न्तु।।
- एह्येहि पाताल चराचरेन्द्र नागां गनाकिन्नर गीयमाने। यक्षैर्नगेंद्रामरलोकसंघै: पृथ्वि प्ररक्षाध्वरमस्मदीयम्।। करालायः करालमाः।।७४।।
- ॐ यदद्य कच्च वृत्रहत्रुदगा अभि सूर्य्यं। सर्व्वंतदिन्द्र ते व्वशे।।
- एह्येहि देवेन्द्र पिनाक पाणेः खण्देन्दुमौलेः प्रिय शुभ्रवर्णे। गौरीशयानेश्वर यज्ञ सिद्ध्यै गृहाण पूजां भवन्नमस्ते।। एकपादायः एकपादमाः।।७५।।
- ॐ बलविज्ञायः स्त्थविरः प्प्रवीरः सहस्वान्नवाजी सहमानऽउग्गः। अभिवीरोऽअभिसत्वा सहोजा जैज्त्रमिन्द्र रथमातिष्ठु गोवित।।
- एह्येहि विघ्नाधिपते सुरेन्द्र ब्रह्मादिदेवैरभिवंद्यपाद। गजास्य विद्यालय विश्वमूर्ते गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।। भीमरूपायः भीमरूपमाः।।७६।।
- ॐ विश्श्वतश् चक्षुरुत व्विश्श्वतोमुखो व्विश्वतो बाहुरुत व्विश्श्वतस्प्पात्। संबाहुब्भ्यां धमति सम्पतत्त्रैर्द्यावा भूमी जनयन्देवऽएक:।।
- एह्येहि यादो गणवारिधीनां गणेन पर्ज्जन्यसहाप्सरोभि:।। विद्याधरेन्द्रामर गीयमान पाहित्वमस्मान्भगवन्नमस्ते।। खेचरायः खेचरमाः।।७७।।
- ॐ यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवंतदु सुप्तस्य तथैवैति। दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिव सङ्कल्पमस्तु।।

= जग-दीपिका

एह्येहि यज्ञेश्वरनिस्नशूल कपाल खट्वांग धरेण सार्द्धम्। लोकेश विश्वेश्वर यज्ञ सिद्ध्यै गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।। तलवासिने नमः तलवासि निमाः।।७८।।

ततः प्रतिष्ठापनम् ॐ मनोजूतिर्ज्जूः ॐ भूर्भुवः स्वः वास्तुमण्डल देवताः सुप्रतिष्ठिता वरदाःभवत।। षोडशोचारै सम्पूज्य

स्तुति - यं ब्रह्माः - हस्ते जलं गृहीत्वा - अनेन पूजनेन् शिख्यादि वास्तु मंडल देवताः प्रीयन्ताम् न मम जल मुत्सृजेत्।।

नाम मंत्रेण एकाशीति वास्तु मण्डल स्थापना पूजनम्

पदम्	स्थानम्	नाम
ऐशानकोणपदे	शिरसि	ॐ शिखिने नम:
तत्दक्षिणैकपदे	दक्षिणनेत्र	ॐ पर्जन्याय नमः
तत्दक्षिणपदद्वये	'' श्रोत्रे	ॐ जयन्ताय नमः
तत्दक्षिणपदद्वये	'' अंसे	ॐ कुलिशायुधाय नम:
तत्दक्षिणपदद्वये	'' बाहौ	ॐ सूर्याय नम:
तत्दक्षिणपदद्वये	'' प्रबाहौ	ॐ सत्याय नमः
तत्दक्षिणपदद्वये	'' कूर्परे	ॐ भृशाय नम:
'' '' एकपदे	'' प्रबाहौ	ॐ आकाशाय नम:
'' आग्नेयकोणपदे	11 11	ॐ वायवे नम:
'' पश्चिमएकपदे	मणिबंधे	ॐ पूष्णे नम:
''' पदद्वये	'' पार्श्वे	ॐ वितथाय नम:
11 11 11	11 11	ॐ गृहक्षताय नम:
11 11 11	'' उरुभागे	ॐ यमाय नम:
11 11 11	'' जानौ	ॐ गंधर्वाय नम:
11 11 11	'' जंघायां	ॐ भृंगराजाय नम:
पश्चिमोपरिस्थैकपदे	'' स्फिचि	ॐ मृगाय नम:
पश्चिमनैऋत्यकोणपदे	पाादतले	ॐ पितृभ्यो नम:
तदुत्तरएकपदे	वामस्फिचि	ॐ दौवारिकाय नम:
'' पदद्वये	'' जंघायां	ॐ सुग्रीवाय नम:
11 11	'' जानौ	ॐ पुष्पदन्ताय नमः
तदुत्तर पदद्वये	वाम-उरौ	ॐ वरुणाय नमः

= १२६ :

जग-दीपिका —					
11 11	वाम-पार्श्वे	ॐ असुराय नम:			
11 11	'' पार्श्वे	ॐ शोषाय नम:			
'' उपरिस्थितैकपदे	'' बाहौ	ॐ पापाय नम:			
'' वायव्यकोणपदे	'' बाहौ	ॐ रोगाय नमः			
'' प्राक्एकपदे	'' प्रबाही	ॐ अहये वा			
		अहिर्बुध्न्याय नम:			
'' '' पदद्वये	'' कूर्परे	ॐ मुख्याय नम:			
11 11 11	'' बाही	ॐ भल्लाटाय नम:			
11 11 11	11 11	ॐ सोमाय नम:			
11 11 11	" अंसे	ॐ सर्पाय नम:			
11 11 11	'' श्रोत्र	ॐ अदित्यै नम:			
'' उपरिस्थ एकपदे	'' नेत्रे	ॐ दित्यै नम:			
तत दक्षिणेशिखिपदाधः	'' मुखे	ॐ आपाय नम:			
अग्नेय वायुपदाधः	दक्षिण हस्ते	ॐ सावित्राय नम:			
नैऋत्यपितृपदाधः	नैऋत्यपदउत्तरार्धे	ॐ जयाय नम:			
वायव्यरोग पदाधः	वामहस्ते	ॐ रुद्राय नम:			
मध्य नवपदात्	दक्षिणस्तने	ॐ अर्यम्णे नम:			
पूर्व पदत्रये					
दक्षिण आग्नेय	दक्षिणहस्ते	ॐ सवित्रे नमः			
कोणैकपदे					
तत पश्चिम पदत्रये	जठर दक्षिणे	ॐ विवस्वते नमः			
'' नैर्ऋत्य कोणैकपदे	नैऋत्यपदपूर्वार्धे	ॐ विबुधाय नमः			
तदुत्तरपदत्रये	जठर वामे	ॐ मित्राय नमः			
तदुत्तरवायव्य	वामहस्ते	ॐ राजयक्ष्मणे नमः			
कोणैकपदे					
तत् प्राक्पदत्रये	वामस्तने	ॐ पृथ्वीधराय नम:			
तत् प्राक्इशान-	उरसि	ॐ आपवत्साय नमः			
कोणैकपदे					
मध्ये नवपदे	हदि-नाभ्यां	ॐ ब्रह्मणे नम:			
मंडलात्बहि:	श्वेतपरिधौ				
	<i>१२७</i>				

जग-द	ापका

	् जग-दााजका ———	
ईशान्याम्		ॐ चरक्यै नम:
आग्रेय्याम्		ॐ विदार्थै नम:
नैर्ऋत्याम्		ॐ पूतनायै नमः
वायव्याम्		ॐ पापराक्षस्यै नमः
पूर्वे		ॐ स्कन्दाय नमः
दक्षिणे		ॐ अर्यम्णे नम:
पश्चिमे		ॐ जृंभकाय नमः
उत्तरे		ॐ पिलिपिच्छाय नम:

मंडलात् बहि: द्वितीय रक्तपरिधौ दशदिक्पाला:

, - , ,		
१	मंडलात् बहिः पूर्वे	ॐ इन्द्राय नम:
२	मंडलात् बहि: आग्रेय्यां	ॐ अग्नये नम:
३	मंडलात् बहिः दक्षिणे	ॐ यमाय नम:
४	मंडलात् बहिः नैर्ऋत्यां	ॐ निर्ऋतये नमः
4	मंडलात् बहिः पश्चिमे	ॐ वरुणाय नम:
ξ	मंडलात् बहिः वायव्यां	ॐ वायवे नम:
७	मंडलात् बहिः उत्तरे	ॐ सोमाय नमः
6	मंडलात् बहिः ऐशान्यां	ॐ ईशानायः नम:
९	मंडलात् ईशानेन्द्रयोर्मध्ये	ॐ ब्रह्मणे नम:
१०	मंडलात् निर्ऋतिवरुणयोर्मध्ये	ॐ अनंताय नम:

गृहवास्तुप्रयोगे विशेषः - पूर्वे इन्द्रात उत्तरतः उग्रसेनाय नमः दक्षिणे यमात् उत्तरतः डामराय नमः पश्चिमेवरुणत उत्तरतः महाकालाय नमः उत्तरे सोमात् उत्तरतः पिलिपिच्छाय नमः। मंडलात् बिहः तृतीयकृष्णपिरधौ - पूर्वे - हेतुकाय नमः। आग्नेय्याम् - त्रिपुरान्तकाय नमः। दिक्षणे - अग्निवैतालाय नमः। नैऋत्यां - असिवैतालाय नमः। पश्चिमे - कालाय नमः। वायव्यां - करालाय नमः। उत्तरे एकपादाय नमः। ईशान्याम् भीमरूपाय नमः। पूर्वेशानयोर्मध्ये - खेचराय नमः निऋतिपश्चिमयोर्मध्ये - तलवासिने नमः। ॐ मनोजूतिः शिख्यादि वास्तुमंडलदेवताः सुप्रतिष्ठिता, वरदाः भवत। ॐ शिख्यादि वास्तुमंडलदेवताभ्यो नमः षोडशोपचारै पूजनम्। अनेन कृतार्चनेन शिख्यादि वास्तु मंडल देवताः प्रीयन्ताम् न मम।।

वास्तु मण्डलोपिर कलशं संस्थाप्य वास्त्वादि मूर्तिनामग्न्युतारणपूर्वक प्राण प्रतिष्ठां आवाहनं पूजनं कुर्यात्।। अथाग्न्युत्तारणप्राण प्रतिष्ठाप्रयोगः

आचम्य प्राणानायम्य सजलाक्षतं द्रव्यमादाय - ॐ तत्सत् अद्येत्यादिदेशकालौ सङ्कीर्त्य, ममात्मनः श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफल-प्राप्त्यर्थं श्रीअमुकदेवप्रीतिद्वारा सकलाभीष्टसिद्धयर्थम् अस्यां नूतनस्वर्णमय्यमुकदेवप्रतिमाया घटनकालिकस्वर्णकारकृतटंकाद्या-घातदोषपरिहारार्थमग्न्युत्तारणपूर्वकममुकदेवसारूप्यादिलाभयोग्यत्वसम्पादनाय प्राणप्रतिष्ठां करिष्ये। इति संकल्प्य मूर्तिं यन्त्रं वा नूतनकांस्यादिपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धजलधारां कुर्यात्, तत्र मन्त्रा यथा -

ॐ समुद्रस्य त्वा वकयाग्ने परिव्ययामिस। पावकोऽअस्मभ्य र्ठः शिवो भव।।१।। हिमस्य त्वा जरायुणाऽग्ने परिव्ययामिस पावकोऽअस्मभ्य र्ठः शिवो भव।।२।। उपज्मनुपवेतसे वतरनदीष्वा अग्ने पित्तमपामिस मण्डूिकताभिरागिहसेमन्नोयज्ञम्पावकवर्ण र्ठः शिवङ् कृिधा।३।। अपामिदन्त्ययन र्ठः समुद्रस्य निवेशनम्। अन्यांस्ते–अस्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्य र्ठः शिवो भव।।४।। अग्ने पावक रोचिषा मन्द्रया देवजिह्वया। आदेवान्विध यिक्ष च।।५।। सनः पावक दीदिवोऽग्ने देवाँ इहावह। उपयज्ञ र्ठः हिवश्च्चनः।।६।। पावकया यश्चिन्त्या कृपाक्षामन् रुरुच उषसो न भानुना। तूर्वन्नयामन्नेतशस्य नूरण आयो घृणेन ततृषाणोऽजरः।।७।। नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्ते अस्त्वर्चिषे। अन्यांस्ते अस्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्य र्ठः शिवो भव।।८।। नृषदेवेडप्सृषदेवेड् बर्हिषदेवेड् वनसदेवेड् स्वर्विदेवेड् ये देवा ये देवानां यिज्ञया यिज्ञयाना र्ठः सँव्यत्सरीणमुपभागमासते आहुतादो हिवषा यज्ञे अस्मिन्त्स्वयं पिबन्तु मधुनो घृतस्य।।१०।। ये देवा देवेष्वधिदेवत्वमायन्त्ये ब्रह्मणः पुर एतारो अस्य। येभ्यो न ऋते पबते धाम किञ्चन न ते दिवो न पृथिव्या अधिस्नुषु।।११।। प्राणदा अपानदा व्यानदा व्वर्चीदा व्वरिवोदाः। अन्न्यांस्ते अस्मत्तपन्तु हेतयः पावकोऽअस्मभ्य र्ठः शिवो भव।।१२।। इत्यग्न्युतारणम्

अथ प्राणप्रतिष्ठा - प्रधानदेवमूर्ति यन्त्रं वा पुरतोऽवस्थाप्य जलं गृहीत्वा - ॐ अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः ऋग्यजुःसामानि छन्दांसि क्रियामयवपुः प्राणाख्या देवता आं बीजं हीं शक्तिः क्रौं कीलकं अस्यां नूतनमूर्तौ (अस्मिन्नूतनयन्त्रे वा) प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः।। इति पठित्वा तज्जलं क्षितेत्। ततो मूर्त्तं यन्त्रं वा दक्षिणहस्तेन

स्पृशन् ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं हं सः सोहं अस्या अमुकदेवप्रतिमायाः - प्राणा इह प्राणाः पुनः ॐ आं॰ अस्याः अ॰ जीव इह स्थितः। पुनः - ॐ आं॰ अस्याः अमु॰ सर्वेन्द्रियाणि वाङ् मनस्त्वकचक्षुः श्रोत्रजिह्वाघ्राणपाणिपादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। इति पठित्वा पुष्पाण्यादाय च - ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्विरष्टं यज्ञ ठं॰ सिममं दधातु विश्वेदेवा स इहमा दयन्तामों २ प्रतिष्ठ।। एष वै प्रतिष्ठानाम यज्ञो यत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते सर्वमेव प्रतिष्ठितम्भवति।। इति प्रतिष्ठाप्य समर्ययेत्। ततस्तामेव मूर्तिं पुनः स्पृशन्। ॐ १६ इति मन्दं मन्दं षोडशप्रणवावृत्तिं कृत्वा जलाक्षतान्यादाय - ॐ अनेनास्य अमुकदेवताप्रतिमाया गर्भाधानादयः षोडशसंस्काराः सम्पद्यन्ताम् इति पठित्वा जलं क्षिपेत्। अथ तस्या एव मूर्तेः स्वर्णशलाकयोन्मीलयन् - ॐ वृत्रस्यासि कनीनकश्चक्षुर्दा असि चक्षुर्मे देहि। इति पठेत्। एवं प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा षोडशोपचारैः सम्पूजयेत्। ।।इति प्राण प्रतिष्ठा प्रयोग।।

वास्तु मूर्ति पूजनम्

अथ ध्यानम् - ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान् स्वावेशोऽअनमीवो भवा नः। यत्त्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे। नमस्ते वास्तुपुरुष भूशय्याभिरतप्रभो। मद्गृहे धनधान्यादि समृद्धिं कुरु सर्वदा।। ॐ भू, वास्तोष्पतये नमः आ,स्था, ॐ नमो भगवते वास्तुपुरुषाय महाबलपराक्रमाय सर्वदेवाधिवासांश्रित शरीराय ब्रह्मपुत्राय सकलब्रह्माण्डधारिणे भूभारार्पितमस्तकाय पुरपत्तन प्रासादगृहवापीसरः कूपादिसन्निवेश-सान्निध्यकराय सर्वसिद्धिप्रदाय प्रसन्नवदनाय विश्वंभराय परमपुरुषाय शक्रवरदाय वास्तोष्पते नमस्ते नमस्ते।। एह्योहि भगवन्वास्तो सर्वदेवैरिधिष्ठतः।। भगवन् कुरु कल्याणं यज्ञेऽस्मिन्सर्वसिद्धये।। जानुनी कूर्परीकृत्य दिशि वातहुताशयो।। आगच्छ भगवन्वास्तो सर्वदेवैरिधिष्ठतः।। भगवन् कुरु कल्याणं यज्ञेऽस्मिन्सर्विधिष्ठतः।। भगवन् कुरु कल्याणं यज्ञेऽस्मिन्सन्निधो भव।। ॐ भूर्भुवः स्वः वास्तुपुरुषायनमः

षोडशोपचारैः पूजनम् - पायसबिलदानम् - ॐ भूः वास्तुपुरुषाय नमः पायसबिलं समर्पयामि। एकतन्त्रेण वा पृथक-पृथक।

इस प्रकार नाममंत्र से शिख्यादि देवता को पायसबलिं अर्पण करें।

प्रार्थना - नमो वः वास्तुपीठस्थ देवताभ्यो नमो नमः। पुष्पांजलिं प्रयच्छामि कर्मणःफलिसद्धये।। यज्ञभागं प्रतीक्षस्व पूजां चैव बिलं मम। नमो नमस्ते देवेश मम स्विस्तिकरो भव।।

श्रीफल सहित विशेषार्ध्यं - अयोने भगवन् भर्ग ललाट स्वेद संभव। गृहाणार्ध्यं मया दत वाष्तोस्वामिन् नमोस्तुते।।

पुष्पाञ्जलि - ॐ देवेश वास्तु पुरुष सर्व विघ्नविदारिण। शान्ति कुरु सुखं देहि यज्ञेऽस्मिन्मम सर्वदा।। एह्येहि पाताल तलाधिवासन् वास्तोष्पते स्वच्छसुधर्ममूर्ते गृहादिदेवेश परेश नित्यं गृहाण पूजां भगन्नमस्ते।। वास्तु पुरुषाय नमः मन्त्र पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।। हस्ते जलं गृहीत्वा - अनेन ध्यानावाहनादि षोडशोपचारै - रन्योपचारैश्चकृतेन पूजनेन ॐ भूर्भुवः स्वः वास्तुपुरुष सपरिवार सहिताः प्रीयन्तां न मम।। जलमुत्सृजेत्।।

अत्र सूत्रबन्धनात् प्राक् पताकोच्छ्रयणमप्याचारादश दिक्षु कर्त्तव्यम्।। ततो दुग्धपूर्णया सस्तनकुम्भ्या जलपूर्णया च सस्तनदकुम्भ्या। वक्ष्यमाणमन्त्रैस्तथैव प्रादिक्षण्येन ईशानादारभ्येशानपर्यन्तं धाराद्वयमविच्छन्नं कुर्यात्।। तत्र पावमानसूक्तं पठेत्।। ऋचं वाचं शान्त्यध्यायं वा पठेत्।। ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः। पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा।।१।। पवित्रेण पुनीहि मा शुक्रेण देव दीद्यत्।। अग्ने क्रत्वा क्रतूँ रनु।।२।। यत्ते पवित्रमर्चिष्यग्ने व्विततमन्तरा।। ब्रह्म तेन पुनातु मा।।३।। पवमानः सोऽअद्य नः पवित्रेण विचर्षणः यः पोता स पुनातु मा।।४।। उभाभ्यां देव सवितः पवित्रेण सवेन च।। मां पुनीहि व्विश्वतः।।५।। वैश्यदेवी पुनती देव्यागाद्यस्यामिमा बह्वयस्तन्वो वीतपृष्ठाः।। तया मदन्तः सधमादेषु व्वय र्ठः स्याम पतयो रयीणाम।।६।।

।।इति धाराद्वयं कृत्वा।।

ध्वजा स्थापना (रोहणं) - पूर्व में पीत, अग्नि में लाल (रक्त), दक्षिण में कृष्ण, नैर्ऋत्य में नील, पश्चिम में श्वेत, वायव्य में धूम्र, उत्तर में हरित, ईशान में मेघ या श्वेत, ईशान पूर्व मध्य, सर्ववर्ण (सबसे बड़ी) नैर्ऋत्य पश्चिम मध्य रक्तवर्ण एवं ध्वजा के ऊपर आयुध व देवादि वाहन भी अंकित कर सकते हैं।

गर्त मध्ये वास्तु स्थापना

संकल्प - अद्येत्यादि - मम पुत्र पौत्रादि सिहतस्य अस्मिन् नवनिर्मित गृहे चिर काल पर्यन्त सुखपूर्वक निवास करणार्थम् वास्तुदेवता प्रसन्नार्थम् गर्तमध्ये वास्तु प्रतिमा स्थापनं पूजनं करिष्ये। पञ्चोपचारै पूजनं कृत्वा।

ततो गृहस्याऽऽग्नेये आकाशपदे जानुदग्घ्नवटं खनित्वा गोमयेनोपलिप्य शुक्लपुष्पाक्षतं गर्ते प्रक्षिप्य ततो नवं कुम्भं जलपूर्णं शुक्लमाल्यादियुतं गन्धाद्यर्चितं हस्तद्वयेनादाय जानुभ्यां

धरणीं गत्वा ॐ नमो वरुणायेति मन्त्रेण जलेन गर्तं पूरयेत।। तत्र प्रदक्षिणावर्तिते ऊर्ध्वमुखे पुष्पे शुभम्।। वैपरीत्ये त्वशुभम्।। ततो मृन्निर्मिताऽपक्वमृत्पेटिकामध्ये सप्तबीज-दध्योदन शैवाल-फल-पृष्पाणि प्रक्षिप्य पूर्वस्थापितं वृषवास्तुं तूर्यमङ्गलघोषेणाऽऽनीय तस्यां संस्थाप्य गन्धादिभिः सम्पूज्य प्रार्थयेत्।। यावच्चन्द्रा नगाः सूर्यस्तिष्ठति प्रतिपादिताः तावत्त्वयात्र देवेश स्थेयं भक्त्यानुकम्पया पितामह सुतं मुख्यं वन्दे वास्तोष्पतिं प्रभुम्। वास्तु पुरुषदेवेश सर्वविघ्नहरो भव। शान्तिं कुरु सुखं देहि सर्वान्कामान् प्रयच्छ मे। पूजितोऽसि मया वास्तो ! होमाद्यैरर्चनै: शुभै:। प्रसीद पाहि विश्वेश ! देहि मे गृहजं सुखम्।। वास्तुदेव - नमस्तेऽस्तु भूशय्याभिरत प्रभो! मद्गृहं धनधान्यादिसमृद्धं कुरु सर्वदा। प्रार्थयामीत्यहं देव - शालाया अधिपस्तु य:।। प्रायश्चित्तप्रसङ्गेन गृहार्थं यन्मया कृतम्।। मुलच्छेदं तृणच्छेदं कृमि-कीटनिपातनम्।। हननं जलजीवानां भूमौ शस्त्रेण घातनम्।। अनृतं भाषितं यञ्च किञ्चिद्वृक्षस्य पातनम्।। एतत्सर्व क्षमत्वैनो यन्मया दुष्कृत कृतम्।। गृहार्थै यत्कृतं पापमज्ञानेनापि चेतसा।। तत्सर्वं क्षम्यतां देव! गृहशालां शुभां कुरु।। इति सम्प्रार्थ्य पेटिकामाच्छाद्य तस्मिन् गर्ते शनैः शनैर्निक्षितेत्।। अनेन मन्त्रेण, सशैलसागरां पृथ्वीं यथा बहिस मुर्द्धिन।। तथा मां वह कल्याणं सम्पत् सन्ततिभिः सह।। इति।। ततस्तद्गर्तोद्धृतमृदा गर्त पूरयेत्।। पूरिते मृदाधिक्ये उत्तमम्।। साम्ये मध्यमम्।। न्यूने त्वधमं फलं विन्द्यात्।। गर्त समतां विधाय तां भूमिं गोमयेनोपलिप्य शुक्लगन्ध पुष्पाऽक्षतैर्भूषयेत्।। तत्र स्वस्तिकं विधाय दीपस्थापनमित्याचार:।।

गृह प्रवेश के दिन जीर्णघर में गणपत्यादि कलशादि देवताओं की पूजा करे। दही खाकर नूतन गृह के लिए गमन करे। यजमान गंठजोड़ा सिहत व माला धारण करे श्रीफल हाथ में लेकर, पत्नी दो घड़ शिर पर रखकर (चन्दवा लोकाचार से) वेदध्विन व मांगलिक गायन के साथ नूतनगृह के द्वार पर आकर संकल्प व पूजा करे। तथा कुमारी, गौ, ब्राह्मण सबसे पहले गृह प्रवेश करे। एवं पूजा करे।

गृहमागत्य द्वारसमीपे उपविश्य "अस्मिन्पुण्याहे श्रोतस्मार्त्तकर्मकरणार्थं संस्कारानेक-भोगैश्वर्यादिविविधमङ्गलोदयसिद्धये एतन्नवीनगृहप्रवेशमहं करिष्ये।

द्वारशाखा पूजनम् - तत्र तन्मन्त्रौ-स्थापितेयं मया शाखा शुभदा ऋद्धिदाऽस्तु मे। सुपूजिता मया शाखा सर्वदा सुस्थिराऽस्तु मे "१" यो धारयित सर्वशो जगन्ति स्थावराणि च। धाता दक्षिणशाखायां पूजितो वरदोऽस्तु मे "२" ॐ धात्रे नमः। यः समुत्पाद्य विश्वेशो भुवनानि चतुर्दश। विधाता वामशाखायां स्थिरो भवति पूजितः ॐ विधात्रे नमः।

ऊर्ध्वम् - गजवक्त्र गणाध्यक्ष हे हेरम्बाम्बिकात्मज। विघ्नान् निवारयाशुत्वमूर्ध्वोदुम्बर संस्थित:। ॐ गणपतये नम:। अधो देहल्याम्-यस्याः प्रसादात् सुखिनो देवाः सेन्द्राः सहोरगा:। सा वै श्रीर्देहलीसंस्था पूजिता ऋद्धिदाऽस्तु मे देहल्यै नमः। अथ द्वाराभिमुखो भूत्वा "धर्मार्थकामसिद्ध्यर्थं पुत्रपौत्राभिवृद्धये। त्वामहं प्रविशाम्यद्य भगो मन्दिर ते नमः।।१।। यावञ्चन्द्रश्च सूर्यश्च यावित्तष्ठिति मेदिनी। तावत्त्वं मम वंशस्य मङ्गलाभ्युदयं कुरु।।२।। इत्युक्त्वा प्रविशेत्। तत्र मन्त्रः - (पारः गृः ३/४) ॐ धर्मस्थूणा राजश्रीरस्तुमहोरात्रे द्वारफलके इन्द्रस्य गृहा वसुमन्तो वरूथिनस्तानहं प्रपद्ये सह प्रजया पशुभिः सह। यन्मे किञ्चिदस्त्युपहूतः सर्वगणः सखायः साधु संवृतः। तां त्वा शालेऽरिष्ठवीरागृहान्न सन्तु सर्वतः।। इति देहलीमस्पृशन् दक्षिणपादपुरः सरमन्तः प्रविश्य प्रधान गृहमध्ये आग्नेय्या दिशि तं कलश संस्थाप्य अस्मिन्नूतन गृहे पुण्याहं कल्याणं श्रीरस्तु - वाचियत्वा लक्ष्मीं सम्पूजयेत् - गृहस्य धारकं स्तंभं पूजयेत् - धारणार्थं महाभाग निर्मितो विश्वकर्मणा। स्थापितः शुभदो नित्यं गृहभारक्षमो भव।।१।। दीपस्थाने दीपं प्रज्वाल्य - तिमिरस्य तिरस्कर्ता ज्योतीरूपः सुविश्रतः। विघ्नान्धकारनाशाय पूजयामि सुसिद्धदम्। ॐ दीपाय नमः।

महानस इति ख्यातो देवयज्ञादिसिद्धिकृत्। अन्नादिसाधन स्थानं धर्ममूलं शुभप्रदम्।। चुल्ह्यां धर्माय नमः। सम्मार्जनस्थाने - पूतना शुभदा ज्येष्ठा सदा संन्धानसंस्थिता। स्थानं चोत्करसम्पत्तेरस्तु मे सर्वसिद्धिदम्। ज्येष्ठाये नमः। जलस्थाने - शङ्खस्फिटिक-वर्णाभश्वेतहाराम्बरावृत। पाशहस्त महाबाहो दयां कुरु दयानिधे। वरुणाय नमः। पेषण्याम् - सौभाग्यं सुभगे देहि पेषणी संस्थिता सदा। पिष्ठनिष्पादनार्थं त्वं पूजिता शुभदाऽस्तु मे ॐ सुभगाये नमः।

उलूखले - व्रीहीणां कण्डनं यच्च तुषाणाञ्च विमोचनम्। त्वदधीनमतः पूजां करोमि तव सिद्धये।। रौद्रपीठाय नमः।।

शय्यायाम - कामः कामप्रदो मेऽस्तु शयनीये सुपूजितः। पूजां गृहाण सुमुख धनधान्यसमृद्धये।। ॐ कामाय नमः।

स्वर्णलक्ष्मी स्थापना करे - ऐशान्येवा (निधि शालायां)

गृहमध्ये - मध्ये सुपूजितादेवाः सन्तु मे सर्वसिद्धिदाः। नश्यन्तु सर्व विघ्नानि देवानांपूजनादिह।। ॐ सर्व देवेभ्यो नमः।

पशु-स्थाने - सर्वाधिपो महादेव ईशानः शुक्ल शङ्करः। पशूनां पतिरस्माकं पूजितः शुभदः सदा।। ॐ पशुपतये नमः।

ब्राह्मण - गणपत्यथर्वशीर्ष व श्रीसूक्त का पाठ करे। अभिषेक पूर्णाहूति बलिदान इत्यादि होमप्रकरण विधान के द्वारा सम्पादन करे। ब्राह्मणो को दक्षिणा प्रदान करे। ।।इति गृह प्रवेश पूजनम् विधानम्।।

अथ चतुःषष्ठियोगिनी पूजनम्

अथाग्नि कोणे: - चतुःषष्टि योगिन्या मण्डलं संस्थाप्य। तीन कलशों की स्थापना करे श्री महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती देवता की स्वर्णमयी मूर्ति की स्थापना करे। (अग्न्युतारणप्राण प्रतिष्ठा करे।) (वायवे कोण में भी योगिनीमण्डल की पूजा स्थापना कर सकते हैं।)

कर्ताप्राङमुख उपविश्य आचमनं प्राणायामञ्च कृत्वा सङ्कल्पमादाय - पूर्वोच्चारिते सङ्कल्प कर्मानुसारेणः अमुक याग कर्मणा सिद्धिर्थञ्च श्री महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती सिहताः गजाननादि मृगलोचनान्तानां चतुःषष्टि योगिनीनां स्थापनं प्रतिष्ठापनं पूजनं करिष्ये। ॐ आवाहयाम्यहं देवीं योगिनीं परमेश्वरीम्। योगाभ्यासेन संतुष्टा परं ध्यान समन्विता।।

१. प्रथम कलश पूर्णपात्रोपरि - श्री महाकाली आवाहनं स्थापनं - ध्यानम् - "अक्षत पुष्पमादाय"

अम्बा शांकरी भद्रराज गमनी आर्या भवानीश्वरी वामाक्षी महिषासुर प्रशमनीवाक् चातुरी सुन्दरी। दुर्गा शुम्भ निशुम्भ दैत्य दमनी दौर्भाग्यिवच्छेदिनी चिद्रूपी पर देवता भगवती श्री राज राजेश्वरी। वा – खडगं चक्रखदेषु – ॐ भूर्भुवः स्वः श्री महाकाल्यै नमः महाकाली मावाहयामि स्थापयामि। महाकालि इहागच्छ इहितष्ठ।

२. द्वितीय कलश पूर्णपात्रोपरि - श्री महालक्ष्मी आवाहनम् स्थापनम् ध्यानम् - अक्षत पुष्पमादाय।

सिन्दूरारुण विग्रहां त्रिनयनां माणिक्यमौलिस्फुरतारानायशेखरां स्मितमुखीमापीन वक्षोरुहाम्। पाणिभ्यामलिपूर्ण रत्न-चषकं रक्तोत्पलं बिभ्रतीं सौम्यां रत्न घटस्थ रक्त चरणां ध्यायेत्परामिष्वकाम्।।ॐ भूर्भुवः स्वः श्री महालक्ष्म्यै नमः महालक्ष्मी मावाहयामि स्थापयामि। महालक्ष्मी इहागच्छ इहतिष्ठ।

३. तृतीय कलश पूर्णपात्रोपरि - श्री महासरस्वती आवाहनं स्थापनं ध्यानम् - अक्षत पुष्पमादाय।

या विद्या शिव केशवादि जननी या वै जगन्मोहिनी या पञ्चप्रवणिद्वरेफ निलनी या चित्कलामालिनी। या ब्रह्मादि-पिपिलकान्त-तनुषप्रोता जगत्साक्षिणी सा पायात्परदेवता भगवती श्री राजराजेश्वरी।। ॐ भूर्भुव: स्व: श्री महासरस्वत्यै नम: महासरस्वती मावाहयामि स्थापयामि। महासरस्वती इहागच्छ इहितष्ठ (एवं सर्वत्र)।

वामहस्ते अक्षत पुष्पाण्यादाय मण्डलोपरि चतुःषष्टी योगिनीम् आवाहयेत्।

एह्येहि यज्ञेऽत्र गजानने त्वं सिन्द्रवर्णे गणपेऽनुकूले। रक्ताम्बरे रक्तविलोचने च गृहाण पूजां वरदे नमस्ते।। ॐ गजाननायै नम: – गजाननामावाः स्थापयामि।।१।। आवाहये सिंहमुखीं सुरूपां सर्वार्तिहन्त्रीं सकलार्थदात्रीम्। विद्युत्रिभां सर्वजगत्प्रणम्यां रक्षाध्वरं नो वरदे नमस्ते।। ॐ सिंहमुख्यैः सिंहमुखीमाः।।२।। एह्येहि गृधास्य इहामरेशि प्रचण्डदैतेय विमर्दने त्वम्। कुरु प्रसादं मिय देवि मात: पुजा त्वदर्था रचित्वा परेयन्।। ॐ गृध्रास्यायैः गृध्रास्यामाः।।३।। आवाहये त्वामिह काकतुण्डै यज्ञे चतुर्वेद भवे सदैव। कोष्ठे तुरीये वसति विधत्स्व पूजां तवाहं विद्रधे विनम्र:।। ॐ काकतुण्डिकायैः काकतुण्डिकामाः।।४।। एह्येहि यज्ञेत्र सरोजहस्ते कल्याणदे रक्तमुखोष्ट्रग्रीवे। कलापदण्डास्त्रधरे प्रसीद विशाध्वरं नः सततं शुभाय।। ॐ उष्ट्रग्रीवायैः उष्ट्रग्रीवामाः।।५।। एह्येहि यज्ञेत्र सुवाजिग्रीवे विशालनेत्रे भव भूतिकर्त्री। देवान्समावाहय हव्यकामान् गृहाण पुजां सततं नमस्ते।। ॐ हयग्रीवायै, हयग्रीवामा।।६।। एह्येहि वाराहि विशालरूपे दंष्ट्राग्रलीलोद्धृतभूमि के च। पीताम्बरे देवि नमोऽस्तु तुभ्यं गृहाण पूजां वरदे नमस्ते।। ॐ वाराह्यैः वाराहीमाः।।७।। आवाहये हं शरभाननां त्वां समस्तसंसारविधानदक्षाम्। देवाधिदेवेशि परेशि नित्यं गृहाण पूजां वरदे नमस्ते।। शरभाननायैः शरभाननामाः।।८।। उलुकिके त्वामिह भावयेहं काश्मीरपाटीरविलेपनाढ्याम्। नानाविधालङ्करणोपपन्नां यज्ञे समागन्तुमशेषवन्द्याम्।। उलूकिकायैः उलूकिकामाः।।९।। आवाहयेहं शिवपूर्विकां त्वां रावांमहारव जित त्रिलोकीम्। कुरु प्रसादं मम विष्णुयज्ञे गृह्णीष्व पूजां करुणामये च।। शिवारावायैः शिवारावामाः।।१०।। मयूरिके त्वं विश मेऽध्वरेऽस्मिन् लोकत्रयेऽप्यप्रतिमप्रभावे। मयूरिरूपे त्रिदशैकवन्द्ये ममाध्वरं पाहि वरे नमस्ते।। मयूरिकायैः मयूरिकामाः।।११।। आवाहयेहं कमलासनस्थां विशालनेत्रां विकटाननां त्वाम्। सर्वज्ञकल्पां बहुमानयुक्तामागत्य रक्षां कुरु सुप्रसन्ने। विकटाननायैः विकटाननामाः।।१२।। आवाहये त्वामहमष्टवक्त्रां कल्याणदात्रीं शुभकारिणीं मे। प्रसादये त्वां बहुचाटुकारैर्गृहाण पूजां वरदे नमस्ते।। अष्टवक्त्रायैः अष्टवक्त्रामाः।।१३।। आवाहये सुन्दरि कोटराक्षि त्वामत्र यज्ञे भव तापहारिणि। राजप्रजावंशकरीं प्रसन्नां ममाध्वरं पाहि वरे नमस्ते।। कोटराक्ष्यैः कोटराक्षीमाः।।१४।। एह्येहि कुब्जे दुरितौघ नाशिनि सदानुकूले कलहंसजामिनि। मां पाहि दीनं शरणागतं च गृहाण पूजां वरदे नमस्ते।। कुब्जायैः कुब्जामाः।।१५।।

एह्येहि दुर्गे विकटाक्षिनाम्नि प्रभावयास्मानिह यज्ञकामान्। संसारदुःखौघविनाशिके च रक्षाध्वरं नो वरदे नमस्ते।। विकटाक्ष्यैः विकटाक्षीमाः।।१६।। एह्योहि शुष्कोदिर सुन्दिर त्वं समस्तदैतेयनिषुदियित्रि। आगत्य नः पालय दुःखितांश्च गृहाण पूजां वरदे नमस्ते।। शुष्कोदर्यैः शुष्कोदरीमाः।।१७।। आवाहयेऽहं ललदाद्याज ह्वानाम्नीं सुदेवीं चपलांसुनेत्राम्। नानाविधास्वादनतत्परां च गृहाण पूजां वरदे नमस्ते।। ललज्जिह्वायै ललज्जिह्वामाः।।१८।। आवाहयेऽहं भवतीं श्वदंष्ट्रानाम्नी शुनो मूर्तिधरां महोग्राम्। अत्युग्ररूपां महदाननां च विशाधरं नो वरदे नमस्ते।। श्वदंष्ट्रायैः श्वदंष्ट्रामाः।।१९।। आवाहये त्वामिह वानराननां प्रियां हनूमद्विदुषो महामते। देवि त्वमस्मान्परिपाहि नित्यं श्रीरामभक्ते सततं शिवाय।। वानराननायैः वानराननामाः।।२०।। एह्येहि ऋक्षाक्षिभवानि नित्यं विनाशयास्माकमघं समन्तात्। हीनंप्रबोधं शरणागतं मां त्रायस्व कल्याणि परे नमस्ते।। ऋक्षाक्ष्यै。 ऋक्षाक्षीमा。।।२१।। आवाहये त्वामिहकेकराक्षीं शुभाननां दिव्यगुणार्णवां च। समुद्रजातां परमार्थदात्रीं त्रायस्व हेभार्गवनन्दनेऽस्मान्।। केकराक्ष्यैः केकराक्षीमाः।।२२।। आवाहये त्वामिह देवपुत्री बृहन्मुखीं किन्नरगीयमानाम्। केयूरमाणिक्यविभूषिताङ्गीं मनोरमां सर्वसुखाधिदात्रीम्।। बृहत्तुण्डायैः बृहन्तुण्डामाः।।२३।। एह्योहि यज्ञेऽसुरराज पुत्रि सुराप्रिये सर्वभयापहे त्वम्। सुरप्रिये योगिनि दिव्यदेहे नमामि मातस्तव पादपङ्कजम्।। सुरप्रियायैः सुरप्रियामाः।।२४।। एह्रोहि मातस्सुकपालहस्ते जगल्लये शङ्करवल्लभे च। वृषाधिरूढ़े ललिते सुरेशे गृहाण पूजां वरदे नमस्ते।। कपालहस्तायैः कपालहस्तामाः।।२५।। एह्येहि रक्ताक्षि सुचारुरूपे क्रोधेन दुरीकृतदानवेन्द्रे। यज्ञे समागच्छ सुमध्यमे त्वं गृहाण पूजां वरदे नमस्ते।। रक्ताक्ष्यैः रक्ताक्षीमाः।।२६।। एह्येहि मातश्शुकि योगिनि त्वमस्मत्सवे ब्रह्ममहेशवन्द्ये। परात्परेशे विहिताङ्करागे गृहाण पूजां वरदे नमस्ते।। शुष्वयैः शुष्कीमाः।।२७।। हेश्येनि मातर्दह दु:खजातं यज्ञे समागत्य चतुर्भुजे नः। अनन्यभावाः करुणार्द्रचित्ताः कल्याणकाङ्क्षा भवतीं नमाम:।। श्येन्यैः शेनीमाः।।२८।। प्रसादमाधाय कपोतकाख्ये देवि त्वमागच्छ ममाध्वरेऽत्र। समस्तदेवा सुरवन्दरवनीये गृहाण पूजां वरदे नमस्ते।। कपोतिकायैः कपोतिकामाः।।२९।। आवाहये माशकरां प्रकेतः प्रियां प्रतीच्यामुपलब्धवासाम्। जलाधिनाथां स्फटिकप्रभां त्वां गृहाण मेऽर्चां शिवमातनुष्व। पाशहस्तायैः पाशहस्तामाः।।३०।।

आवाहये त्वामिह दण्डहस्तां यमेप्सितामज्जनसन्निभां च। विशालवक्षःस्थलरुद्ररूपां गृहाण पूजां वरदे नमस्ते।। दण्डहस्तायैः दण्डहस्तामाः।।३१।। एह्येहि देवि त्विमह प्रचण्डे प्रचण्डनोर्दण्डसुरारिहस्ते। सुरासुरैरचितपादपद्मे विशाध्वरं नो वरदे नमस्ते।। प्रचण्डायैः प्रचण्डामाः।।३२।। चण्डविक्रमामज्ञानतामिस्त्रनिराकरीं संसारपङ्केऽत्र आवाहये त्वामिह निमज्जनानानुद्धारयन्तीं भवतीं नमामि।। चण्डविक्रमायैः चण्डविक्रमः।।३३।। शिश्चिनदेवि त्विमहाद्य धत्स्व रतिं मिय त्वच्चरणाब्जभाजि। शिशूनवास्मत्कुलजान्स-बन्धून् गृहाण पूजां वरदे नमस्ते।। शिशुघ्न्यैः शिशुघ्नीमाः।।३४।। आवाहये त्वामिहपापहन्त्रीं कन्यापचित्या सुमुखीं प्रसन्नाम्। मुक्तिप्रदां भक्तजनेष्टदात्रीं गृहाण पूजां वरदे नमस्ते।। पापहन्त्र्यैः पापहन्त्रीमाः।।३५।। एह्येहि कालित्विमहाध्वरे मे वेदज्ञसम्पादितकार्यजाते। विष्णुप्रिये सर्वनुते गृहाण पूजां यथावत्कुपया सुरेशि।। काल्यैः कालीमाः।।३६।। आवाहये त्वां रुधिरं पिबन्तीं देवासुराणां भयदां ज्वलन्तीम्। विशालनेत्रां परिपूर्णचन्द्रबिम्बाननां चन्दनचर्चिताङ्गीम्।। रुधिरपायिन्यैः रुधिरपायिनीमाः।।३७।। वसाधयां त्वामिह भावयेऽहं सामन्त यज्ञ प्रभया समानाम्। यज्ञैः स्तुतां यज्ञवसाधयां च पाहि त्वमम्बे भवतीं नमामि।। वसाधयायैः वसाधयामाः।।३८।। आवाहये त्वामिह गर्भभक्षां देवीं सुमायां भयदां समन्तात्।। स्ववंशरक्षार्थमिहार्चेयामि गृहाण पूजां शुभदे नमस्ते।। गर्भभक्षायैः गर्भभक्षामाः।।३९।। आवाहयेहं शवहस्तकां त्वां सर्वस्य लोकस्य भयप्रदात्रीम्। कपालखट्टाङ्मधरां सुधूम्रां भजामि देवीं कुलवृद्धिहेतो। ॐ शवहस्तायैः शवहस्तामाः।।४०।। आवाहये यज्ञइहान्त्रमालीं प्रपञ्चकर्त्री सुरसानु रूपाम्। गृहाण पूजां श्रुतिमन्त्र जुष्टां कृपाकटाक्षं कुरु मय्यधीने।। ॐ आन्त्रमालिन्यै आन्त्रमालिनीमाः।।४१।। आवाहये त्वामिह स्थूलकेशीं शिरोरुद्दाच्छादितसर्वदेहाम्। रक्ताम्बरां नक्तचरीं सुवक्त्रां ध्यायेऽध्वरेस्मिन्मनसा च वाचा।। स्थुलकेश्यैः स्थूलकेशीमाः।।४२।। महोदरे त्वामिह भावयामि कुक्षिं बृहन्तं दधतीं सुवेषाम्। यज्ञे समागच्छ विधेहि भद्रं गृहाण पूजां प्रियदे नमस्ते।। बृहत्कुक्ष्यैः बृहत्कुक्षीमाः।।४३।। एह्येहि सर्पास्य इह द्विजिह्वे द्विजिह्वतादोषमधारयन्तीम्। शिवप्रिये जन्हुसुताप्रिये च नमामि त्वां देवि बहुप्रकोपाम्।। सर्पास्यायैः सर्पास्यामाः।।४४।।

आवाहये प्रेतवहां यमप्रियां यमस्य दूतीं सुविशालरूपाम्। सुदणहस्तां महिषाधिरूढां भजामि

देवीं कुलवृद्धिहेतो:।। प्रेतवाहिन्यैः प्रेतवाहिनीमाः।।४५।।

आवाहये शुककरां सुभीमां कामप्रियां घोरमुखीं कृशाङ्गीम्। यज्ञे समागत्य शुभं कुरुष्व गृहाण पूजां शुभदे नमस्ते।। दन्तशूककरायैः दन्तशूककरामाः।।४६।। आवाहये दैत्यसुतां सुभीमां क्रौञ्चीं महार्हासनसन्निविष्टाम्। भयस्य हन्त्रीं द्विजसङ्घजुष्टां वने वसन्तीं वनदेवतां त्वाम्।। क्रौञ्चयैः क्रौञ्चीमाः।।४७।। आवाहयेऽहं मृगशीर्षनाम्नीं निजप्रबोथाभुडुमध्यसंस्थाम्। चन्द्रप्रियां चन्द्रनिभानतां च संभावयास्मानिह योगिनि त्वम्।। मृगशीर्षायैः मृगशीर्षामाः।।४८।। वृषानने शङ्कर वल्लभे त्वमत्रेहि यज्ञे विधि गौरवाय। त्वामर्चये दैवि कृपां विधेहि गृहाण पूजां वरदे नमस्ते। वृषाननायैः वृषाननामाः।।४९।। एह्येहि व्यात्तास्य इहैव सद्यो मदीययज्ञे रुचिराङ्गजाते। सुमूर्धजे पद्मसमाननेत्रे ममाध्वरं योगिनि पाहि नित्यम्।। व्यात्तास्यायैः व्यात्तास्यामाः।।५०।। एह्येहि यज्ञे मम देवि धूमनिश्वसके योगिनि चारुदन्ते। गोरोचना कुङ्कुमशोभिताङ्गे प्रसीद मातः कमलालये त्वम्।। धूमनिश्वासायै, धूमश्वासामा,।।५१।। व्योमैकपादोर्ध्वदृशं सुरेशीमावाहये योगिनि दिव्यदेहाम्। प्रसीद मात: कमलायताक्षि शिवाध्वरं नो वरदे नमस्ते।। व्योमैकचरणोर्ध्वदृशे。 व्योमैकचरणोर्ध्वदृशमाः।।५२।। आवाहये तापनि योगिनि त्वां यज्ञे द्विषतापकरीशुभाङ्गीम्। सर्वार्थसम्पत्तिकरी प्रणाम्यां विघ्नव्रज नाशय नो नमस्ते।। तापिन्यै तापिनीमाः।।५३।। आवाहये शोषणि दृष्टिमस्मिन यज्ञे समागत्य कुरु प्रसादम्। रक्षाध्वरं पालय नोरिनीते गृहाण पूजां वरदे नमस्ते।। शोषणीदृष्ट्यैः शोषणीदृष्टिमाः।।५४।। आवाहये कोटरि योगिनि त्वां यज्ञेत्र देवार्चितपादपद्मे। आगत्य रक्षां कुरु सप्ततन्तोर्गृहाण पूजां वरदे नमस्ते।।कोटर्यैः कोटरीमाः।।५५।। एह्येहि मातर्वरदानदक्षे विशाध्वरे दैत्यविनाशकारिणि। त्वां स्थूलनासां विनता नमामः प्रसीद धन्ये प्रणतार्तिहन्त्रि। स्थूलासिकायैः स्थूलनासिकामाः।।५६।। आवाहये भूषणभूषिताङ्गीं विद्युत्प्रभां भासितदिव्य देहाम्। विशाध्वरे देवि गृहाण पूजां देवैर्नुते ते वरदे नमोऽस्तु।। विद्युत्प्रभायैः विद्यत्प्रभामाः।।५७।। नमामि आह्वादमयीं बलाढ्यां बलाकिकास्यां वरदां शुचिस्मिताम् प्रविश्य यागेऽत्र मनोरथात्र विधेहि सत्यानलिखान् नमस्ते।। बलाकास्यायैः बलाकांस्यामाः।।५८।। मार्जारिके त्वामिह चिन्तयामि मार्जाररूपे निखिला घहन्त्रीम्। संभावये योगिनि दिव्यरूपे गृहाण पूजां वरदे नमस्ते।। ॐ मार्जायैः मार्जारीमाः।।५९।। आवाहयेऽहं कटपूतनां त्वां समस्तविष्नौघविनाशदक्षाम्। वृन्दारकैर्वन्दितपादपद्मां नमामि देवीं परमार्तिहन्त्रीम्। ॐ कटपूतनायैः कटपूतनायैः।।६०।।

अट्टाटहासामिह भीमरूपां राकाप्रभामांत्रयुतां ज्वलन्तीम्। सर्वस्य लोकस्य विषादहन्त्री मावाहयेस्मिन् विततेऽध्वरेऽहम्।। ॐ अट्टाट्टहासायैः अट्टाट्टहासामावाः।।६१।।

कामाक्षिसंसार मलापहन्त्रि विद्युत्प्रभाचन्द्रनिभानने च। एह्येहि यज्ञे सकलार्थदात्रि गृहाण पूजां वरदे नमस्ते।। कामाक्ष्यैः कामाक्षीमाः।।६२।।

मृगाक्षिवालार्कनिभामिह त्वामावाहये ज्ञानमयीं सुशीलाम्। ब्रह्मादिदेवार्चित-पादयुग्मामागत्य यज्ञेऽत्र विधेहि भव्यम्।। मृगाक्ष्यैः मृगाक्षीमाः।।६३।।

आवाहयेऽहं मृगलोचनां त्वामाकण्ठदीर्घनयनां मणिकुण्डलढ्याम्। मन्दस्मितां मृगमदोज्वलमालदेहां विशाध्वरं नो वरदे नमस्ते।। मृगलोचनायैः मृगलोचनामाः।।६४।। ॐ मनोज्तिः "इति मन्त्रेण प्रतिष्ठाप्य"।

श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती सहिताभ्यो गजाननादि चतुःषष्टी योगिन्यः सुप्रतिष्ठा वरदा भवेत।।

षोडशोपचारैः यथा लब्धोपचारैः सम्पूज्य। मन्त्र पुष्पाञ्जलिमादाय।

यदङ्गत्वेन भोदेव्यःपूजिता विधिमार्गतः। कुर्वन्तु कार्यमिखलं निर्विघ्नेन क्रतुद्भवम्।। अयिगिरि नन्दिन नन्दितमेदिनि विश्वविनोदिनि नन्दिनुते, गिरिवर विन्ध्य शिरोऽधि निवासिनि विष्णु विलासिनि जिष्णुनुते।।

भगवित हे शितिकण्ठ कुटुम्बिनि भूरि कुटुम्बिनि भूति कृते, जय जय हे महिषासुरमर्दिनिरम्यकपर्दिनि शैल सुते।। मन्त्र पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

हस्ते जलं गृहीत्वा अनेन ध्यानावाहनादि षोडशोपचारैः अन्योपचारैश्च कृतेन पूजनेन ॐ भूर्भुवः स्वः श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती सहिताः गजाननादि चतुःषष्टी योगिन्यः प्रीयन्तां न मम।।

।।इति चतुःषष्टी योगिनी पूजनम्।।

रुद्रकल्पद्रुमोक्ता योगिन्यः - गजानना सिंहमुखी गृघ्रास्या काकतुण्डिका। उष्ट्रग्रीवा हयग्रीवा वाराही शरभानना। उलूिकका शिवारावा मयूरी विकटानना। अष्टवक्रा कोटराक्षी कुब्जा विकटलोचना।। शुष्कोदरी ललिजह्वा श्वदंष्ट्रा वानरानना। ऋक्षाक्षी केकराक्षी च बृहत्तुण्डासुरिप्रया।। कपालहस्ता रक्ताक्षी शुकी श्येनी कपोतिका। पाशहस्ता दण्डहस्ता प्रचण्डा च विक्रमा।। शिशुष्ट्रनी पापहन्त्री च काली रुधिरपायिनी। वसाधया गर्भभक्षा शवहस्ताऽऽन्त्रमालिनी। स्थूलकेशी बृहत्कुक्षी सर्पास्या प्रेतवाहना।। दन्तशूककरा क्रौच्ची मृगशीर्षा वृषानना। व्यात्तास्या धूमिनश्वासा व्योमैकचरणोर्ध्वदृशा। तापिनी शोषणी दृष्टिः कोटी स्थूलनासिका। विद्युत्प्रभा बलाकास्या मार्जारी कटपूतना।। अट्टाट्टहासा कामाक्षी मृगाक्षी मृगलोचना।। चतुःषष्टि तु योगिन्यः पूजनीयाः प्रयत्नतः।

नाम मन्त्रैण अथाग्निकोणे चतुःषष्टि योगिनी पूजन मन्त्राः

ॐ आवाहयाम्यहं देवीं योगिनीं परमेश्वरीम्। योगाभ्यासेन संतुष्टा परं ध्यानसमन्विता।। प्रथम कलश पूर्णपात्रोपरि।।१।। ॐ भूर्भुवः स्वः महाकाल्यै नमः महाकालीमावाहयामि स्थापयामि।। महाकालि इहागच्छ इहतिष्ठ (एवं सर्वत्र)।। तदुत्तरत: द्वितीय कलश पूर्णपात्रोपरि।।२।। ॐ भूर्भुव: स्व: महालक्ष्म्यैः।। तदुत्तरतस्तृतीय कलश पूर्णपात्रोपरि।।३।। ॐ भूर्भुवः स्वः महासरस्वत्यैः।। (प्रथम पङ्कौ अष्टत्र्यस्त्रेषु-)।।१।। गजाननायैः।।२।। सिंहमुख्यैः।।३।। गृधास्यायैः।।४।। काकतुण्डिकायैः।।५।। उष्टुग्रीवायैः।।६।। हयग्रीवायैः।।७।। वाराह्यैः।।८।। शरभाननायैः।। (द्वितीय पङ्कौ अष्टत्र्यस्त्रेषु-)।।९।। उलूकिकायैः।।१०।। शिवारवायैः।।११।। मयूर्यैः।।१२।। विकटाननायैः।।१३।। अष्टवक्रायै,।।१४।। कोटराक्ष्यै,।।१५।। कुब्जायै,।।१६।। विकटलोचनायै,।। (तृतीय पङ्कौ अष्टत्र्यस्त्रेषु-)।।१७।। शुष्कोदर्यैः।।१८।। ललज्जिह्वायैः।।१९।। स्वदंष्ट्रायैः।।२०।। वानराननायैः।।२१।। ऋक्षाक्ष्यैः।।२२।। केकराक्ष्यैः।।२३।। बृहत्तुण्डायैः।।२४।। सुराप्रियायैः।। (चतुर्थपङ्क्षौ अष्टत्र्यस्रेषु-।।२५।। कपालहस्तायैः।।२६।। रक्ताक्ष्यैः।।२७।। शुक्यैः।।२८।। श्येन्यैः।।२९।। कपोतिकायैः।।३०।। पाशहस्तायैः।।३१।। दण्डहस्तायैः।।३२।। प्रचण्डायैः।। (पञ्चमपङ्कौ अष्टत्र्यस्रेषु-)।।३।। चण्डविक्रमायैः।।३४।। शिशुघ्न्यैः।।३५।। पापहन्त्र्यैः।।३६।। काल्यैः।।३७।। रुधिरपायिन्यैः।।३८।। वसाधयायैः।।३९।। गर्भभक्षायैः।।४०।। शवहत्तायैः। (षष्ठपङ्कौ अष्टत्र्यस्रेषु-)।।४१।। आन्त्रमालिन्यैः।।४२।। स्थूलकेश्यैः।।४३।। बृहत्कुक्ष्यैः।।४४।। सर्पास्यायैः।।४५।। प्रेतवाहनायैः।।४६।। दन्तशूककरायैः।।४७।। क्रौञ्चयैः।।४८।।मृगशीर्षायैः।। (सप्तमपङ्कौ अष्टत्र्यस्रेषु-)।।४९।। वृषाननायैः।।५०।। व्यात्तास्यायैः।।५१।। धूमनिःश्वासायैः।।५२।। व्योमैकचरणोर्ध्वदृशेः।।५३।। तापिन्यैः।।५४।। शोषणीदृष्टयैः।।५५।। कोटर्यैः।।५६।। स्थूलनासिकायैः।। (अष्टमपङ्कौ अष्टत्र्यस्रेषु-)।।५७।। विद्युत्प्रभायैः।।५८।। बलाकास्यायैः।।५९।। मार्जायैः।।६०।। कटपूतपायैः।।६१।। अट्टाट्टहासायैः।।६२।। कामाक्ष्यैः।।६३।। मृगाक्ष्यैः।।६४।। मृगलोचनायैः।।

इति प्रतिष्ठाप्य

"श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीसहितगजाननादि चतुःषष्टियोगिनिभ्यो नमः" हस्ते जलमादाय यदङ्गत्वेन भो देव्यः पूजिताः विधिमार्गतः। कुर्वन्तु कार्यमखिलं निर्विध्नेन क्रतुद्भवम्।। अनया पूजया श्रीमहाकाली–महालक्ष्मी–महासरस्वती–सहिताःचतुःषष्टियोगिन्यः प्रीयन्ताम् न मम।।

।।इति चतुःषष्ठि योगिनि स्थापनम्।।

।।पञ्चाशत्क्षेत्रपालदेवता पूजनम्।।

(सर्वप्रथम एक पीठ (पाटा) या चौकी पर श्वेतवस्त्र बिछाकर अष्टदल कमल बनाकर पूर्व अग्निकोण, दक्षिण, नैर्ऋत्यकोण, पश्चिम वायव्य कोण में षट् चावल की कुडी षट् दलों पर तथा) उत्तर और ईशान कोण में सात-सात चावल की कुडी रखने के बाद बीच में ताम्रकलश रखकर पूर्णपात्र के ऊपर सोने की क्षेत्रपाल की प्रतिमा अग्न्युतारण पूर्वक विराजमान करके बाएँ हाथ में चावल रख दाहिने हाथ से छोड़ते हुए नीचे लिखे मन्त्रों से आवाहन करें।)

सपत्नीको यजमानः क्षेत्रपालस्य पीठसमीपे उदङ्मुखः पश्चिमाभिमुखो चोपविश्याचमनं प्राणायामं च कुर्यात्।

ततो हस्ते जलं गृहीत्वा अद्य पूर्वोच्चारितः एवं गुणिवशेषणिवशिष्ठायां शुभपुण्यितथौ मया प्रारब्धस्य अमुककर्मणोऽङ्गतया अस्मिन्क्षेत्रपालपीठे मध्ये क्षेत्रपालपूजनपूर्वकं पूर्वाद्यष्टदलपत्रेषु पूर्वादिक्रमेण पञ्चाशत्क्षेत्रपालदेवानां स्थापनप्रतिष्ठापूजनानि करिष्ये इति सङ्कल्प्य पीठस्य मध्यकलशे कृताग्न्युत्तारणां सुवर्णनिर्मितां क्षेत्रपालप्रतिमां निधाय तत्र क्षेत्रपालमावाहयेत्।।

अथ ध्यानम् पुष्याण्यादाय - देवराजसेव्यमानपावनङ्घ्रि पङ्कजं व्यालयज्ञ-सूत्रमिन्दुशेखरं कृपाकरम्। नारदादियोगिवृन्दवन्दितं दिगम्बरं काशिकापुराधिनाथ काल भैरवं भजे।। ध्यानार्थे पुष्पं समर्पयामि।

हस्तेऽक्षतान्गृहीत्वा।। ॐ नमोस्तु सर्प्पेव्भ्यो ये के च पृथ्वीमनु।। येऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेब्भ्यः सर्प्पेव्भ्यो नमः।। ॐ भूर्भुवः स्वः क्षेत्रपालाय नमः क्षेत्रपालम् आवाः स्थाः।। भो क्षेत्रपाल इहागच्छ इह तिष्ठ।।१।।

```
ॐ भूर्भुवः स्वः क्षेत्रपालाय नमः।।१।।
ॐ भूर्भुवः स्वः व्यापकाय नमः।।३।।
```

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्रमूर्तये नमः।।५।। ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः।।७।।

ॐ भूर्भुवः स्वः विमुक्ताय नमः॥९॥

ॐ भूर्भ्वः स्वः लीलोकाय नमः।।११।।

ॐ भूर्भुवः स्वः ऐरावताय नमः॥१३॥

ॐ भूर्भुव: स्व: बन्धनाय नम:।।१५।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अजराय नमः।।२।।

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्रचौराय नमः।।४।।

ॐ भूर्भुवः स्वः कुष्माण्डाय नमः।।६।।

ॐ भूर्भुवः स्वः वटुकाय नमः।।८।।

ॐ भूर्भुवः स्वः लिप्तकाय नमः।।१०।।

ॐ भूर्भुवः स्वः एकदंष्ट्राय नमः।।१२।।

ॐ भूर्भुवः स्वः ओषधिघ्नाय नमः।।१४।।

ॐ भूर्भुवः स्वः दिव्यकाय नमः।।१६।।

ॐ भूर्भुवः स्वः कम्बलाय नमः॥१७॥ ॐ भूर्भुवः स्वः गवयाय नमः।।१९।। ॐ भूर्भुवः स्वः व्यालाय नमः॥२१॥ ॐ भूर्भुवः स्वः चन्द्रवारुणाय नमः।।२३।। ॐ भूर्भुवः स्वः जटिलाय नमः।।२५।। ॐ भूर्भुवः स्वः घण्टेश्वराय नमः।।२७।। ॐ भूर्भुवः स्वः मणिमानाय नमः।।२९।। ॐ भूर्भुवः स्वः डामराय नमः।।३१।। ॐ भूर्भुवः स्वः स्थविराय नमः।।३३।। ॐ भूर्भुवः स्वः नागकर्णाय नमः।।३५।। ॐ भूर्भुवः स्वः महाबलाय नमः।।३७।। ॐ भूर्भुवः स्वः चीत्काराय नमः।।३९।। ॐ भूर्भुवः स्वः मृगाय नमः।।४१।। ॐ भूर्भुव: स्व: मेघवाहनाय नम:।।४३।। ॐ भूर्भुव: स्व: अनलाय नम:।।४५।। ॐ भूर्भुवः स्वः सुधालापाय नमः।।४७।। ॐ भूर्भुवः स्वः पवनाय नमः।।४९।।

ॐ भूर्भुवः स्वः भीषणाय नमः।।१८।। ॐ भूर्भुवः स्वः घण्टाय नमः।।२०।। ॐ भूर्भुवः स्वः अणवे नमः।।२२।। ॐ भूर्भुवः स्वः घटाटोपाय नमः।।२४।। ॐ भूर्भुवः स्वः क्रतवे नमः।।२६।। ॐ भूर्भुवः स्वः विकटाय नमः।।२८।। ॐ भूर्भुवः स्वः गणबन्धवे नमः।।३०।। ॐ भूर्भुवः स्वः दुण्टिकर्णाय नमः।।३२।। ॐ भूर्भुवः स्वः दन्तुराय नमः।।३४।। ॐ भूर्भुवः स्वः धनदाय नमः।।३६।। ॐ भूर्भुवः स्वः फेत्काराय नमः।।३८।। ॐ भूर्भुवः स्वः सिंहाय नमः।।४०।। ॐ भूर्भुवः स्वः यक्षाय नमः।।४२।। ॐ भूर्भुवः स्वः तीक्ष्णोष्ठाय नमः।।४४।। ॐ भूर्भुव: स्व: शुक्लतुण्डाय नम:।।४६।। ॐ भूर्भुवः स्वः बर्बरकाय नमः।।४८।। ॐ भूर्भुवः स्वः पावनाय नमः।।५०।।

ततः प्रतिष्ठापनम्।। ॐ मनोजूतिर्ज्जुः।। ॐ भूर्भुवः स्वः क्षेत्रपालसहिताः अजरादिक्षेत्रपालदेवाः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवत।। ॐ भूर्भुवः स्वः क्षेत्रपालसहितेभ्य अजरादिक्षेत्रपालदेवेभ्यो नमः इति आवाहनादिषोडशोपचारैः पूजनं कुर्यात्।। ततः स्तुतिपाठः यं यं यक्षरूपं दशदिशि वदनं भूमिकम्पायमानं सं सं संहारमूर्तिं शिरमुकुटजटाशेखरं चन्द्रिबम्बम्।। दं दं दं दीर्घकायं विकृतनखमुखं चोर्ध्व रेखाकपालं पं पं पं पापनाशं प्रणतपशुपतिं क्षेत्रपालं नमामि।

प्रार्थयेत्।। यदङ्गत्वेन भो देवाः पूजिता विधिमार्गतः।। कुर्वन्तु कार्यमिखलं निर्विघ्नेन क्रतूद्भवम्।। हस्ते जलं गृहीत्वा।। अनेन यथाशिक्ति ध्यानावाहनादि षोडशोपचारैरन्यो-पचारैश्च कृतेन पूजनेन ॐ भूर्भुवः स्वः क्षेत्रपालसिहता अजरादिक्षेत्रपालदेवाः प्रीयन्तां न मम। मतान्तर एकोनपञ्चाशद्, द्विपञ्चाशद्) (क्षेत्रपालाः)

।।इति क्षेत्रपाल पूजनम्।।

।।अथ चतुःषष्टि भैरव स्थापनम्।।

ततो देव्या दक्षिणपीठे रक्तवस्त्रोपरि तंडुलैश्चतुःषष्टिपदं समचतुरस्रमंडलं कृत्वा पंक्तिरूपाः भैरवाः स्थापनीयाः।। अद्येत्यादिः तिथौः चतुःषष्टि भैरवानां स्थापन प्रतिष्ठापूजनमहं करिष्ये।। श्रीमद्भैरवाय नम: श्रीमद्भैरवमावाहयामि स्थापयामि (एवं सर्वत्र) शंभुभैरः नीलकंठभैरः विशालभैः मार्त्तण्डभैरः मनुप्रभभैरवायः स्वच्छन्दभैरवायः असितांगभैरवायः खेचरः संहारः विरूपः विरूपाक्षः नानारूपधरः वराहः रुरः कुंदवर्णः सुगात्रः उन्मत्त मेघनादः मनोवेगः क्षेत्रपालः विपापहारः निर्भयः विजीतः प्रेतः लोकपालः गदाधरः वज्रहस्तः महाकालः प्रचंडः अजेयः अन्तकः भ्रामकः संहारः कुलपालः चंडपालः प्रजापालः रक्तांगः वेगावीक्षणः अरुणः धरापालः कुंडलनेत्रः मंत्रनाथः रुद्रपितामहः विष्णुः वटुकनाथः भूतनाथः बैतालः त्रिनेत्रः त्रिपुरान्तकः वरदः पर्वतवासः शशिसकलभूषणः सर्वभूतहृदयः घोरसायकः भयंकरः मुक्तिभुक्तिप्रदः कालाग्निः महारुद्रः भयानकः दक्षिणमुखः भीषणः क्रोधः सुखसंपत्तिदायकभैरवायः।।६४।। प्रतिष्ठा सर्वः इति प्रतिष्ठां "श्रीमदुभैरवाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः" इति मंत्रेण यथाशक्ति पुजयेत्।। प्रार्थना।। कौली रे चित्रकृटे हिमगिरिविवरे शस्त्रजालान्धकारे सौराष्ट्रे सिंध्देशे मगधपुरवरे कौसले वा कलिंगे।। कर्णाटे कौंकणे वा भूगुसूतनगरे कान्यकुञ्जस्थिते वा सर्वस्मात्सर्वदा वा ह्यपमृतिभयतः पात् नः क्षेत्रपालः।।१।। यं यं यं यक्षरूपं दशदिशिवदनं भूमिकंपायमानं सं सं संहारमूर्तिं शिरसि धृतजटाशेखरं चंद्रबिंबम्। दं दं दं दीर्घकायं कृतनरवपुषं ऊर्ध्वरेखाकरालं पं पं पं पापनाशं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालम्।।२।।

।।इति चतुःषष्टिभैरवस्थापनम्।।

अथ नवग्रहस्थापनम् पूजनम् (ईशान कोणे)

संकल्प - जलाक्षतपुष्पेद्रव्यमादाय - ॐ तत्सत् अद्य यथोक्त विशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुक कर्मण सिद्धि अर्थम् च आदित्यादि नवग्रहाणाम् अनुकूलता प्रीतये एवं अधिदैवतप्रत्यधिदैवत - पञ्चलोकपाल - दशदिक् पालानाञ्च अनुग्रह प्राप्त्यर्थम् स्थापनं पूजनम् करिष्ये।

''इति सङ्कल्प''

("यज्ञ अनुष्ठान में अग्नि स्थापना के बाद नवग्रहादि स्थापना पूजन का विधान लिखा गया है।") भास्कराङ्गरकौ रक्तौ श्वेतौ शुक्र निशाकरौ। सोमपुत्रौ गुरुश्चैव तावुभौपीतकौ स्मृतौ।। कृष्णं शनैश्चरं विद्याद् राहुं केतु तथैव च।। स्थापना दिशा - मध्येतु भास्करं विद्याल्लोहितं दक्षिणेवतु। उत्तरेण गुरुं विद्याद् बुधं पूर्वोतरेणतु।। पूर्वेण भार्गवं विद्यात् सोमंदक्षिणपूर्वके। पश्चिमेन शनि विद्याद् राहुं दक्षिण पश्चिमे। पश्चिमोतरलः केतुं स्थापयेच्छुक्ल तण्डुलै।"

१. सूर्य (मध्य में गोलाकार, लाल)

सूर्यं का आवाहन (लाल अक्षत-पुष्प लेकर) - ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।। जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्। तमोऽिरं सर्वपापघ्नं सूर्यमावाहयाम्यहम्।। ॐ भूर्भुवः स्वः कलिङ्गदेशोद्भव काश्यपगोत्र रक्तवर्णं भो सूर्य! इहागच्छ, इह तिष्ठ ॐ सूर्याय नमः श्रीसूर्यमावाहयामि, स्थापयामि।

२. चन्द्र सफेद

(पूर्व दक्षिण मध्य अग्नि कोण में चन्द्राकृतिंवा चतुष्कोण)

चन्द्र का आवाहन (शवेत अक्षत-पुष्प से) - ॐ इमं देवा असपत्न र्ठ. सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्येष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इमममुष्य पुत्रममुष्ये पुत्रमस्ये विश एष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणाना र्ठ. राजा।। दिधशङ्खतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्। ज्योत्स्नापितं निशानाथं सोममावाहयाम्यहम्।। ॐ भुर्भुवः स्वः यमुनातीरोद्भव आत्रैयगोत्र शुक्लवर्ण भो सोम! इहागच्छ, इह तिष्ठ ॐ सोमाय नमः, सोममावाहयामि, स्थापयािम।

३. मंगल (दक्षिण में, त्रिकोण, लाल)

मङ्गल का आवाहन (लाल फूल और अक्षत लेकर) - ॐ अग्निमूर्धा दिवः ककुत्पितः पृथिव्या अयम्। अपा र्ठः रेता र्ठः सि जिन्वित।।

धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्तेजस्समप्रभम्। कुमारं शक्तिहस्तं च भौममावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अवन्तिकादेशोद्भव भारद्वाजगोत्र रक्तवर्ण भो भौम! इहागच्छ, इह तिष्ठ ॐ भौमाय नमः, भौममावाहयामि, स्थापयामि।

४. बुध (ईशान कोण में, हरा, धनुष वा पीला)

बुध का आवाहन (पीले, हरे अक्षत-पुष्प लेकर) - ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्विमिष्टापूर्ते स र्ठः सृजेथामयं च। अस्मिन्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत।।

प्रियङ्गुकलिकाभासं रूपेणाप्रतिमं बुधम्। सौम्यं सौम्यगुणोपेतं बुधमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुव: स्व: मगधदेशोद्भव आत्रेयगोत्र पीतवर्ण भो बुध! इहागच्छ, इह तिष्ठ ॐ बुधाय नम:, बुधमावाहयामि, स्थापयामि।

५. बृहस्पति (उत्तर में पीला, अष्टदल वा आयातकार) बृहस्पति का आवाहन (पीले अक्षत-पृष्प से) -

ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद् द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्। देवानां च मुनीनां च गुरुं काञ्चनसंनिभम्। वन्द्यभूतं त्रिलोकानां गुरुमावाहयाम्यहम्।। ॐ भूर्भुवः स्वः सिन्धुदेशोद्भव आङ्गिरसगोत्र पीतवर्ण भो गुरो! इहागच्छ, इह तिष्ठ ॐ बृहस्पतये नमः, बृहस्पतिमावाहयामि, स्थापयामि।

६. शुक्र (पूर्व में श्वेत, पञ्चकोण)

शुक्र का आवाहन (श्वेत अक्षत-पुष्प से) - ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पय: सोमं प्रजापित:। ऋतेन सत्यिमिन्द्रयं विपान र्ठः शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु।।

हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्। सर्वशास्त्रप्रवक्तारं शुक्रमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः भोजकटदेशोद्भव भार्गवगोत्र शुक्लवर्ण भो शुक्र! इहागच्छ, इह तिष्ठ ॐ शुक्राय नमः, शुक्रमावाहयामि, स्थापयामि।

७ - शनि (पश्चिम में, काला मनुष्य वा धनुषाकार)

शनि का आवाहन (काले अक्षत-पुष्प से) - ॐ शं नो देवीरिभष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरिभ स्रवन्तु न:।।

नीलाम्बुजसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्। छायामार्तण्डसम्भूतं शनिमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्रदेशोद्भव काश्यपगोत्र कृष्णवर्ण भो शनैश्चर! इहागच्छ, इह तिष्ठ ॐ शनैश्चराय नमः, शनैश्चरमावाहयामि, स्थापयामि।

८. राहु (नैर्ऋत्य कोण में, काला मकर वा शूर्पाकार)

राहु का आवाहन (काले अक्षत-पुष्प से) - ॐ कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता।

अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्। सिंहिकागर्भसम्भूतं राहुमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः राठिनपुरोद्भव पैठीनसगोत्र कृष्णवर्ण भो राहो! इहागच्छ, इह तिष्ठ ॐ राहवे नमः राहुमावाहयामि, स्थापयामि।

९. केतु वायवे कोण में ध्वाजाकार वा खड़गाकार (धूम्र) केतु का आवाहन (धूमिल अक्षत-पुष्प लेकर) - ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथा:।।

पलाशधूम्रसङ्काशं तारकाग्रहमस्तकम्। रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं केतुमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अन्तर्वेदिसमुद्धव जैमिनिगोत्र धूम्रवर्ण भो केतो! इहागच्छ, इह तिष्ठ ॐ केतवे नमः, केतुमावाहयामि, स्थापयामि।

नवग्रह मण्डल की प्रतिष्ठा

ॐ मनोजूतिः – "ॐ सूर्यादिग्रहेभ्यो नमः" सुप्रतिष्ठिता वरदा भवतेति प्रतिष्ठाप्य – ॐ सूर्यादि ग्रहेभ्यो नमः नाम मंत्रेण वा सूर्यसूक्त वेदादि मंत्रादि यथा लब्धोपचारै सम्पूज्य। पुष्पाञ्जलीं प्रार्थयेत – आयुश्च वितञ्च तथा सुखञ्च धर्मार्थ लाभौ बहुपुत्रतांच। शत्रुक्षयं राजसुपूज्यताञ्च तुष्टा ग्रहाः क्षेमकरा भवन्तु।।

ॐ ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च। गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु।। सूर्यः शौर्यमथेन्दुरुच्चपदवीं सन्मङ्गलं मङ्गलः सबुद्धिं च बुधो गुरुश्च गुरुतां शुक्रः सुखं शं शनिः। राहुर्बाहुबलं करोतु सततं केतुः कुलस्योन्नतिं नित्यं प्रीतिकरा भवन्तु मम ते सर्वेऽनुकूला ग्रहाः।।

सूर्यो यच्छतु भूपतां द्विजपितः प्रीतिं परां तन्वतां माङ्गल्यं विदधातु भूमितनयो बुद्धिं विधत्तां बुधः। गौरं गौरवमातनोतु च गुरुः शुक्रः स-शुक्रार्थदः सौरिवैरिविनाशनं वितनुते रोगक्षयं सैहिकः।। ये कुर्वन्ति शुभाऽशुभानि जगतां यच्छन्ति ये सम्पदो

ये पूजा-बलिदान-होम-विधिभिर्निघ्निन्त विष्नानि च। ये संय्योगवियोगजीवितकृताः सर्वेश्वराः खेचरा स्ते तिग्मांशुपुरोगमा ग्रहगणाः शान्तिं प्रयच्छन्तु वः।।

"मन्त्र पुष्पाञ्जलिम् समर्पयामि"

"अनेन कृतार्चनेन सूर्याद्यावाहिता देवताः प्रीयन्तां नमम।।

इति नवग्रह पूजनम्

"अथ अधिदेवतानां स्थापनं पूजनम्" शिवः शिवा गुह्ये विष्णुर्ब्रह्मेन्द्रयमकालकाः। चित्रगुप्तोऽथ भान्वादेर्दक्षिणे चाधिदेवताः।।

सूर्यादि नवग्रहों के दक्षिण भाग में पुष्पाक्षत के द्वारा मन्त्रोच्चारण के साथ स्थापना करे। **ईश्वरम् -** ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकिमव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।। एह्येहि विश्वेश्वर नित्त्रशूलकपालखट्वाङ्गधरेण सार्धम्। लोकेश यक्षेश्वर यज्ञसिद्ध्यै

गृहाण पूजां भगवन् नमस्ते।। ॐ भूर्भुवः स्वः ईश्वराय नमः, ईश्वरमावाहयामि, स्थापयामि। उमाय् - ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णित्रिषाणामुं म इषाण सर्वलोकं म इषाण।

हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शङ्करप्रियाम्। लम्बोदरस्य जननीमुमामावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः उमायै नमः, उमामावाहयामि, स्थापयामि। स्कन्दम् – ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान उद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्। श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महि जातं ते अर्वन्।।

> रुद्रतेजः समुत्पन्नं देवसेनाग्रगं विभुम्। षणमुखं कृत्तिकासूनुं स्कन्दमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्दाय नमः, स्कन्दमावाहयामि, स्थापयामि।

विष्णुम् - ॐ विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोध्रुंवोऽसि। वैष्णवमसि विष्णवे त्वा।।

> देवदेवं जगन्नाथं भक्तानुग्रहकारकम्। चतुर्भुजं रमानाथं विष्णुमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः, विष्णुमावाहयामि, स्थापयामि।

ब्रह्माम् - ॐ आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानङ्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्।।

कृष्णाजिनाम्बरधरं पद्मसंस्थं चतुर्मुखम्। वेदाधारं निरालम्बं विधिमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि, स्थापयामि। इन्द्रम् - ॐ सजोषा इन्द्र सगणो मरुद्धिः सोमं पिब वृत्रहा शूर विद्वान्। जिह शत्रूँ २रप मृधो नुदस्वाथाभयं कृणुहि विश्वतो नः।

> देवराजं गजारूढं शुनासीरं शतक्रतुम्। वज्रहस्तं महाबाहुमिन्द्रमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः, इन्द्रमावाहयामि, स्थापयामि।

यमम् - ॐ यमाय त्वाऽङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे।। धर्मराजं महावीर्यं दक्षिणादिक्पतिं प्रभुम्। रक्तेक्षणं महाबाहुं यममावाहयाम्यहम्।। भूर्भुवः स्वः यमाय नमः यममावाहयामि, स्थापयामि

कालम् - ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वा क्षित्या उन्नयामि। समापो अद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधी:।। अनाकारमनन्ताख्यं वर्तमानं दिने दिने। कलाकाष्ट्रादिरूपेण कालमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः कालाय नमः, कालमावाहयामि, स्थापयामि।

चित्रगुप्तम् - ॐ चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय। धर्मराजसभासंस्थं कृताकृतिववेकिनम्। आवाहये चित्रगुप्तं लेखनीपत्रहस्तकम्।। ॐ भूर्भुवः स्वः चित्रगुप्ताय नमः, चित्रगुप्तमावाहयामि, स्थापयामि।

ॐ मनोजूति。 – इति प्रतिष्ठाप्य, ॐ ईश्वराद्यधि देवताभ्यो नमः, इति नाम मंत्रेण पञ्चोपचारैःवा षोडशोपचारैः सम्पूज्य, अनेन कृतार्चनेन ईश्वराद्यधिदेवताः प्रीयन्ताम् न मम।।

''अथ प्रत्यधिदेवतानां स्थापनम् पूजनम्''

अग्निरापो धरा विष्णुः शक्रेन्द्राणी पितामहाः पन्नगाः कः क्रमाद्वामे ग्रहप्रत्यधिदेवताः

सूर्यादि नवग्रहों के वाम भाग में पुष्पाक्षत के द्वारा मन्त्रोच्चारण के साथ स्थापना करे। अग्निम् - ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे। देवाँ २ आ सादयादिह।।

रक्तमाल्याम्बरधरं रक्तपद्यासनस्थितम्। वरदाभयदं देवमग्निमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुव: स्व: अग्नये नम:, अग्निमावाहयामि, स्थापयामि।

अप् (जलं) - ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे।।

आदिदेवसमुद्भूतजगच्छुद्धिकराः शुभाः। ओषध्याप्यायनकरा अप आवाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अद्भयो नमः, अप आवाहयामि, स्थापयामि।।

पृथ्वीम् - ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म सप्रथाः।।

शुक्लवर्णां विशालाक्षीं कूर्मपृष्ठोपरिस्थिताम्। सर्वशस्याश्रयां देवीं धरामावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः पृथिव्यै नमः, पृथिवीमावाहयामि, स्थापयामि।

जग-दीपिका

विष्णुम् - ॐ इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम्। समूढमस्य पा र्ठः सुरे स्वाहा।। शङ्खचक्रगदापद्महस्तं गरुडवाहनम्।

किरीटकुण्डलधरं विष्णुमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः, विष्णुमावाहयामि, स्थापयामि। इन्द्रम् - ॐ इन्द्र आसां नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुर एतु सोमः। देवसेनानामभिभञ्ज-तीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्रम्।।

> ऐरावतगजारूढं सहस्त्राक्षं शचीपतिम्। वज्रहस्तं सुराधीशमिन्द्रमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः, इन्द्रमावाहयामि, स्थापयामि।

इन्द्राणीम् - ॐ अदित्यै रास्नाऽसीन्द्राण्या उष्णीष:। पूषाऽसि घर्माय दीष्व।।

प्रसन्नवदनां देवीं देवराजस्य वल्लभाम्। नानालङ्कारसंयुक्तां शचीमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राण्यै नमः, इन्द्राणीमावाहयामि, स्थापयामि।

प्रजापतिम् - ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परि ता बभूव। यत्कामास्ते जुहूमस्तन्नो अस्तु वय र्ठः स्याम पतयो रयीणाम्।।

आवाहयाम्यहं देवदेवेशं च प्रजापतिम्। अनेकव्रतकर्तारं सर्वेषां च पितामहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः प्रजापतये नमः, प्रजापितमावाहयामि, स्थापयामि। सर्पम् - ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। ये अन्तिरक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।। अनन्ताद्यान् महाकायान् नानामणिविराजितान्। आवाहयाम्यहं सर्पान् फणासप्तकमण्डितान्।। ॐ भूर्भुवः स्वः सर्पेभ्यो नमः, सर्पानावाहयामि, स्थापयामि।

ब्रह्मा - ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः।।

हंसपृष्ठसमारूढं देवतागणपूजितम्। आवाहयाम्यहं देवं ब्रह्माणं कमलासनम्।।

ॐ भूर्भ्वः स्वः ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि, स्थापयामि।

ॐ मनोजूतिः – इति प्रतिष्ठाप्य, ॐ अग्न्यादि प्रत्यिध – देवताभ्यो नमः इति नाम मंत्रेण पञ्चोपचारैः वा षोडशोपचारैः सम्पूज्य, अनेन कृतार्चनेन अग्न्यादि – प्रत्यिधदेवताः प्रीयन्ताम् न मम।।

''अथ पञ्चलोक देवतानां स्थापनम् पूजनम्'

गणेशश्चाम्बिका वायुराकाशश्चाश्विनौ तथा। ग्रहाणामुत्तरे पञ्चलोकपालाः प्रकीर्तिताः।।

सूर्यादि नवग्रहों के उत्तर वा दक्षिण भाग में पुष्पाक्षत के द्वारा मन्त्रोच्चारण के साथ स्थापना करे।

राहोरुतरम् गणपतीम् - ॐ गणानां त्वा गणपित र्ठः हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपित र्ठः हवामहे निधीनां त्वा निधिपित र्ठः हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्।।

लम्बोदरं महाकायं गजवक्त्रं चतुर्भुजम्। आवाहयाम्यहं देवं गणेशं सिद्धिदायकम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणपते! इहागच्छ, इह तिष्ठ गणपतये नमः, गणपितमावाहयामि, स्थापयामि। शनेरुतरे दुर्गाम् - ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयित कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभिद्रकां काम्पीलवासिनीम्।। पत्तने नगरे ग्रामे विपिने पर्वते गृहे। नानाजातिकुलेशानीं दुर्गामावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुव: स्व: दुर्गे! इहागच्छ, इह तिष्ठ दुर्गायै नमः, दुर्गामावाहयामि, स्थापयामि। रवेरुतरे वायुम् - ॐ आ नो नियुद्धिः शतिनीभिरध्वर र्ठः सहस्त्रिणीभिरुप याहि यज्ञम्। वायो अस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः।।

आवाहयाम्यहं वायुं भूतानां देहधारिणम्। सर्वाधारं महावेगं मृगवाहनमीश्वरम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः वायो! इहागच्छ, इह तिष्ठ वायवे नमः, वायुमावाहयामि, स्थापयामि। **राहोर्दक्षिणे आकाशम् -** ॐ घृतं घृतपावानः पिबत वसां वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य हिवरिस स्वाहा। दिशः प्रदिश आदिशो विदिश उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा।

अनाकारं शब्दगुणं द्यावाभूम्यन्तरस्थितम्। आवाहयाम्यहं देवमाकाशं सर्वगं शुभम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः आकाश! इहागच्छ, इह तिष्ठ आकाशाय नमः, आकाशमावाहयामि, स्थापयामि।

केतुर्दक्षिणे अश्विनौ - ॐ या वां कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती। तया यज्ञं मिमिक्षतम्। उपयामगृहीतोऽस्यश्विभ्यां त्वैष ते योनिर्माध्वीभ्यां त्वा।।

> देवतानां च भैषज्ये सुकुमारौ भिषग्वरौ। आवाहयाम्यहं देवावश्विनौ पुष्टिवर्द्धनौ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अश्विनौ! इहागच्छताम्, इह तिष्ठताम्, अश्विभ्यां नमः, अश्विनामावाहयामि, स्थापयामि।

ॐ मनोजूति。 - इति प्रतिष्ठाप्य विनायकादिपञ्चलोकपाल देवताभ्यो नमः इति नाम मंत्रेण पञ्चोपचारैर्वा षोडशोपचारै सम्पूज्य। अनेन कृतार्चनेन विनायकादि पञ्चलोकपालाः प्रियन्ताम् न मम

वास्तोष्पति - ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्त्स्वावेशो अनमीवो भवा न:। यत् त्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शं नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे।।

वास्तोष्पतिं विदिक्कायं भूशय्याभिरतं प्रभुम्। आवाहयाम्यहं देवं सर्वकर्मफलप्रदम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः वास्तोष्पते! इहागच्छ, इह तिष्ठ वास्तोष्पतये नमः, वास्तोष्पतिमावाहयामि, स्थापयामि।

क्षेत्रपालका आवाहन - स्थापन - ॐ निह स्पशमविदन्नन्यमस्माद्वैश्वानरात्पुर एतारमग्ने:। एमेनमवृधन्नमृता अमर्त्यं वैश्वानरं क्षेत्रजित्याय देवा:।।

> भूतप्रेतिपशाचाद्यैरावृतं शूलपाणिनम्। आवाहये क्षेत्रपालं कर्मण्यस्मिन् सुखाय नः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः क्षेत्राधिपते! इहागच्छ, इह तिष्ठ क्षेत्राधिपतये नमः, क्षेत्राधिपति–मावाहयामि, स्थापयामि।

सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्प धूपदीप नैवेद्य समर्पयामि वास्तु पुरुष क्षेत्रपाल देवताः प्रीयन्ताम् न मम

''अथ दशदिक्पालानां स्थापनं पूजनम्''

सूर्यादि नवग्रह मण्डल में परिधि के बाहर दिशाओं के अनुसार पुष्पाक्षत लेकर मन्त्रोच्चारण के द्वारा स्थापना करे।

"स्मृत्यन्तरे ग्रहदीपिकायां च – 'इन्द्रं पूर्वे तु संस्थाप्य प्रेतेशं दक्षिणे तथा' वरुणं पश्चिमे भागे कुबेरं चोत्तरे तथा'' अग्न्यादिलोकपालांश्च कोणभागेषु विन्यसेत्।।

(पूर्व में) इन्द्र का आवाहन और स्थापन -

ॐ त्रातारिमन्द्रमिवतारिमन्द्र र्ठ. हवे हवे सुहव र्ठ. शूरिमन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतिमन्द्र र्ठ. स्विस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः।।

इन्द्रं सुरपतिश्रेष्ठं वज्रहस्तं महाबलम्। आवाहये यज्ञसिद्ध्ये शतयज्ञाधिपं प्रभुम्।।

ॐ भूर्भुव: स्व: इन्द्र! इहागच्छ, इह तिष्ठ इन्द्राय नम:, इन्द्रमावाहयामि, स्थापयामि।

(अग्निकोण में) अग्नि का आवाहन और स्थापन -

ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे। देवाँ२ आ सादयादिह।। त्रिपादं सप्तहस्तं च द्विमूर्धानं द्विनासिकम्। षण्नेत्रं च चतुः श्रोत्रमग्निमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्ने! इहागच्छ, इह तिष्ठ अग्नये नमः, अग्निमावाहयामि, स्थापयामि। (दक्षिण में) यम का आवाहन और स्थापन -

ॐ यमाय त्वाऽङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्म: पित्रे।।

महामहिषमारूढं दण्डहस्तं महाबलम्।

यज्ञसंरक्षणार्थाय यममावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः यम! इहागच्छ, इह तिष्ठ यमाय नमः, यममावाहयामि, स्थापयामि। (नैर्ऋत्य कोण में) निर्ऋित का आवाहन और स्थापन -

ॐ असुन्वन्तमयजमानिमच्छ स्तेनस्येत्यामिन्विह तस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छ सा त इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु।।

> सर्वप्रेताधिपं देवं निर्ऋतिं नीलविग्रहम्। आवाहये यज्ञसिद्ध्ये नरारूढं वरप्रदम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः निर्ऋते! इहागच्छ, इह तिष्ठ निर्ऋतये नमः, निर्ऋतिमावाहयामि, स्थापयामि। (पश्चिम में) वरुण का आवाहन और स्थापन -

ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हिविभि:। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुश र्ठः स मा न आयु: प्रमोषी:।।

> शुद्धस्फटिकसंकाशं जलेशं यादसां पतिम्। आवाहये प्रतीचीशं वरुणं सर्वकामदम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुण! इहागच्छ, इह तिष्ठ वरुणाय नमः, वरुणमावाहयामि, स्थापयामि। (वायव्य कोण में) वायु का आवाहन और स्थापन -

ॐ आ नो नियुद्धिः शतिनीभिरध्वर र्ठः सहस्रिणीभिरुप याहि यज्ञम्। वायो अस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः।।

> मनोजवं महातेजं सर्वतश्चारिणं शुभम्। यज्ञसंरक्षणार्थाय वायुमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः वायो! इहागच्छ, इह तिष्ठ वायवे नमः, वायुमावाहयामि, स्थापयामि। (उत्तर में) कुबेर का आवाहन और स्थापन -

ॐ कुविदङ्ग यवमन्तो यवं चिद्यथा दान्त्यनुपूर्वं वियूय। इहेहैषां कृणुहि भोजनानि ये बर्हिषो नम उक्तिं यजन्ति।। उपयामगृहीतोऽस्यश्विभ्यां त्वा सरस्वत्यै त्वेन्द्राय त्वा सुत्राम्ण। एष ते योनिस्तेजसे त्वा वीर्याय त्वा बलाय त्वा।।

आवाहयामि देवेशं धनदं यक्षपूजितम्। महाबलं दिव्यदेहं नरयानगतिं विभुम्।।

ॐ भूर्भुव: स्व: कुबेर! इहागच्छ, इह तिष्ठ कुबेराय नमः, कुबेरमावाहयामि, स्थापयामि। (ईशान कोण में) ईशान का आवाहन और स्थापन -

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।।

सर्वाधिपं महादेवं भूतानां पतिमव्ययम्। आवाहये तमीशानं लोकानामभयप्रदम्।।

ॐ भूर्भुव: स्व: ईशान! इहागच्छ, इह तिष्ठ ईशानाय नम:, ईशानमावाहयामि, स्थापयामि। (ईशान-पूर्व के मध्य में) ब्रह्मा का आवाहन और स्थापन -

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च वि वः।।

> पद्मयोनि चतुर्मूर्तिं वेदगर्भं पितामहम्। आवाहयामि ब्रह्माणं यज्ञसंसिद्धिहेतवे।।

ॐ भूर्भुव: स्व: ब्रह्मन्! इहागच्छ, इह तिष्ठ ब्रह्मणे नम:, ब्रह्माणमावाहयामि, स्थापयामि। (नैर्ऋत्य-पश्चिम के मध्य में) अनन्त का आवाहन और स्थापन -

ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म सप्रथाः। अनन्तं सर्वनागानामधिपं विश्वरूपिणम्। जगतां शान्तिकर्तारं मण्डले स्थापयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अनन्त! इहागच्छ, इह तिष्ठ अनन्ताय नमः, अनन्तमावाहयामि, स्थापयामि।

ॐ मनोजूतिः - इति प्रतिष्ठाप्य ॐ इन्द्रादि दश दिक्पालेभ्यो नम: इति नाम मंत्रेण षोडशोपचारै: सम्पूज्य।।

मन्त्र पुष्पाञ्जलिमादाय प्रार्थयेत् - ब्रह्मा वेदपितः शिवः पशुपितः सूर्योग्रहाणांपितः शिक्रो देवपितर्नलो नरपितः स्कन्दश्च सेनापितः। विष्णुर्यज्ञपितर्यमः पितृ पितस्तारापितश्चन्द्रमाः इत्येते पतयः सुपर्ण सिहताः कुर्वन्तुनोमङ्गलम्।।

मन्त्र पुष्पाञ्चिलम् समर्पयामि - ''अनेन कृतार्चनेन दशिदक्पालाः देवताः प्रीयन्ताम् न मम''

(ग्रहस्येशानदिग्भागे कलश स्थापन विधिना रुद्र कलशं संस्थाप्य कलशे वरुणं असंख्यातारुद्राश्चाऽऽवाह्यपूजयेत्। ॐ असंख्याताः - यथोपचारै पूजयेत्)

।।अथ सर्वतोभद्रमंडल देवता स्थापनं पूजनम्।।

सपत्नी को यजमानः सर्वतोभद्रपीठस्य पूर्वाभिमुख उपविश्य आचमनं प्राणायामञ्च कुर्यात्। अथ सङ्कल्प - अद्यपूर्वोच्चारितः शुभ पुण्य तिथौ प्रारब्धस्य अमुक यागस्याङ्गत्वेन सर्वतोभद्र देवतानां आवाहनं स्थापनं पूजनम् करिष्ये।

ब्रह्मा - ॐ ब्रह्मजज्ञानं。, एह्येहि सर्वाधिपते विधातो मदीययज्ञे पितृदेवताभिः। सर्वस्य धाताऽस्यिमत प्रभाव विश त्वं अन्तः सततं शिवाय।। मध्ये कर्णिकायां ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणं आः स्थाः भो ब्रह्मन् इहागच्छ इह तिष्ठः

सोम - ॐ वय र्ठ. सोम., एह्येहि यक्षेश्वर सर्वरक्षां विधत्स्व नक्षत्रगणेन सार्धम्। कुबेर यज्ञस्य कुरुष्व सिद्धं गृहाणपूजां भगवन् नमस्ते।। उत्तरे परिधिसमीपे वाप्यन्ते बाणद्वयमध्ये ॐ भूर्भुवः स्वः सोमाय नमः सोमं.

ईशान - ॐ तमीशानं, एह्येहि विश्वेश्वर विश्वनाथ कपालखट्वांगधर त्रिनेत्र। लोकेश यज्ञेश्वर यज्ञसिद्धयै गृहाण पूजां भगवन् नमस्ते।। ईशान्यां खंडेन्दौ ॐ भूर्भुव: स्व: ईशानाय नम: ईशानं, भो ईशान इहागच्छ।

इन्द्र - ॐ त्रातारिमन्द्रः, एह्येहि सर्वामरिसद्धसाध्यैः, अभिष्टुतो वज्रधरामरेश। संसेव्यमानोऽप्सरसां गणेन रक्षाध्वरं नो भगवन्नमस्ते।। पूर्वे वाप्यंते बाणद्वयमध्ये ॐ भूर्भवः स्वः इन्द्राय नमः इन्द्रः भो इन्द्र इहागच्छ।

अग्नि - ॐ तवन्नोऽ अग्ने。, एह्येहि सर्वामरहव्यवाह मुनिप्रवर्यैरिभतोऽभिजुष्टः। तेजोवता लोकगणेन सार्धं ममाध्वरं रक्ष नमोऽस्तु तेऽग्ने।। आग्नेय्यां खंडेन्दौ ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नेय नमः अग्निः

यम - ॐ यमाय त्वाः, एह्येहि वैवस्वत धर्मराज सर्वामरैरिचित धर्ममूर्ते। शुभाशुभस्यैव फलप्रदाता शिवाय नः पाहि मखं नमस्ते। दक्षिणे वाप्यन्ते बाणद्वयमध्ये ॐ भूर्भुवः स्वः यमाय नमः यमः

निर्ऋति - ॐ असुन्वन्तः, एह्येहि रक्षोगणनायक त्वं विशालवैतालिपशाच संघै:। ममाध्वरं पाहि पिशाचनाथ लोकेश्वर त्वां प्रणमामि नित्यम्।। नैर्ऋत्यां खंडेन्दौ - ॐ भूर्भुवः स्व: निर्ऋतये नम: निर्ऋतिं.

वरुण - ॐ तत्वायामिः, एह्येहि यज्ञे मम रक्षणाय यादोगणैः सार्धमपामधीश। झषाधिरूढ प्रिथितप्रभाव नमोऽस्तु ते नाथ सुपाशपाणे।। पश्चिमे वाप्यन्ते बाणद्वयमध्ये ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः वरुणंः

वायु - ॐ आनोनियुः, एह्येहि वायो मखरक्षणार्थं मृगाधिरूढः सुरसिद्ध संघैः। प्राणाधिपो हव्यभुजः सहाय गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते। वायव्यां खंडेन्दौ ॐ भूर्भुवः स्वः वायवे नमः वायुंः

अष्टवसु - ॐ सुगावो देवाः, एतैत चाष्टौ वसवः सुदिव्या महानिधीनामितरिक्षतारः। तेजिस्विनो यज्ञिममं प्रपातुं गृहणीत पूजां प्रणमाम्यहं वः।। वायुसोमयोर्मध्ये भद्रे ॐ भूर्भुवः स्वः अष्टवसुभ्यो नमः अष्टवसून आः स्थाः भो अष्टवसवः इहागच्छत इह तिष्ठत।

एकादशरुद्र - ॐ नमोस्तु रुद्रेभ्यो ये पृथिव्यां。, एतैत यज्ञस्य सुसिद्धिकामाः, त्रिशूल खट्वांगधराः सुरेशाः। लोकेश्वरा विश्वविधायकाश्च रुद्राः कुरुध्वं हि शिवं नमो वः।। सोमेशानयोः मध्ये भद्रे ॐ भूः एकादशरुद्रेभ्यो नमः एकादशरुद्रान् आः स्थाः भो एकादशरुद्राः इहागच्छत इह तिष्ठत

द्वादश आदित्य - ॐ अग्निर्देवताः, एतैत पद्मासन पद्महस्ता सुरक्तिसन्दूर समानवर्णाः। रक्तांबरा वै हरिदश्वयुक्ता आदित्यदेवाः प्रणमामि युष्मान्।। ईशान इन्द्रमध्ये भद्रे - ॐ भूः द्वादशादित्येभ्यो नमः द्वादशादित्यान् आः स्थाः भो द्वादशादित्याः इहागच्छत इह तिष्ठत

अश्विनौ - ॐ तान्पूर्वयाः, एतन्तु वैद्यौ सुरसिद्धकानां सूर्याश्वसंज्ञा वडवासुतौ यौ। देवेन्द्रविद्याधर देवमान्यौ यज्ञस्य रक्षां कुरुतं नमो वाम्।। इन्द्राग्नीमध्ये भद्रे ॐ भूः अश्विभ्यां नमः अश्विनौ आः स्थाः भो अश्विनौ इहागच्छतम् इह तिष्ठतम्।।

सपैतृकविश्वेदेव - ॐ ओमासश्चर्षणीः, एतैत देवादिककार्यपूज्या अभिष्ठुताः सिद्धसुसाध्यदेवै:। सपैतृका यज्ञमिमं तु विश्वे देवाः सुरक्षध्वमथो नमो वः।। अग्नियम मध्ये भद्रे ॐ भूः सपैतृक विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः

सप्तयक्ष - ॐ नतद्रक्षा र्ठः सिः, एतैत यज्ञे मम सप्तयक्षा लोकेश्वरा यक्षगणादिनाथाः। सिद्धादिभिः सेवितपादपद्मा रक्षां कुरुध्वं मम वः प्रणामः।। यमनिर्ऋतिमध्ये भद्रे ॐ भूः सप्तयक्षेभ्यो नमः

भूतनाग - ॐ यो भूतानांः ॐ नमोस्तु सर्पेभ्योः, एतैत सर्पाः शिवकंठभूषा लोकोपकाराय भुवं वहन्तः। भूतैः समेता मणिभूषितांगा गृहणीत पूजां परमां नमो वः। निर्ऋतिवरुणमध्ये भद्रे - ॐ भृः भूतनागेभ्यो नमः भूतनागान् आवाहयामि स्थापयामि।

गंधर्वाप्सर - ॐ ऋताषाड्ः, एतैत सर्वाप्सरसः समेता गंधर्वसंघैः सुरदेवसेव्याः। दिव्यस्वरूपाः सुरपूर्णकामा नमामि यज्ञं सफलं कुरुध्वम्।। वरुणवायुमध्ये भद्रे ॐ भूः गंधर्वाप्सरोभ्यो नमः गंधर्वाप्सरसः आः स्थाः। भो गंधर्वाप्सरसः इहागच्छत इह तिष्ठत। स्कन्द - ॐ यदक्रन्दःः, एह्येहि देवेश्वर शंभुसूनो! शिखीन्द्रगामिन् सुरसिद्धसंघैः। संमाननीयः सुरराजदेवैः, गृहाण पूजां भगवन् नमस्ते। उत्तरे ब्रह्मसोममध्ये वाप्यां ॐ भूः स्कन्दाय नमः स्कन्दं आः स्थाः।

नंदीश्वर - ॐ आशुः शिशानोः, एह्येहि देवेश शिवस्य सर्व – गणाधिराज प्रथमादिसेव्य। गौरीशयानेश्वर यज्ञसिद्धयै गृहाण पूजां प्रणमामि हि त्वाम्।। स्कन्द उत्तरतः ॐ भूः नन्दीश्वराय नमः।

शूलमहाकाल - ॐ उग्रँलोहितेन。, आयातमायातमुमाप्रियस्य प्रियौ मुनीन्द्रादिक – सिद्धसेव्यौ। गृहणीतमेतां मम शूलकालौ पूजां नमो वां कुरुतं शिवं नः।। नंदी उत्तरतः – ॐ भू॰ शूलमहाकालाभ्यां नमः शूलमहाकालौ आ॰ स्था॰ भो शूलमहाकालौ इहागच्छतं इह तिष्ठतम्।।

दक्षादि सप्तगण - ॐ अदितिद्योँ, एतैत देवादिक सर्वमान्याः प्रजापतीनामिधपाः प्रजापाः। दक्षदिसप्त प्रथिता नमो वो गृहणीत पूजां मम यज्ञसिद्धयै।। ब्रह्मेशान मध्ये वल्या - ॐ भू, दक्षादिप्रजापतिभ्यो नमः दक्षादिप्रजापतीन् आ, स्था,

दुर्गा - ॐ अम्बेऽअम्बिके॰, एह्येहि दुर्गे दुरितौधनाशिनि प्रचंडदैत्यौघ विनाशकारिणी। त्रैलोक्यरक्षार्थ सुरूपधारिणी नमोस्तुते शंकर यज्ञकर्मणि।। पूर्वे ब्रह्मेन्द्रमध्ये वाप्यां ॐ भू॰ दुर्गायै नमः भो दुर्गे इहागच्छ इहतिष्ठ

विष्णु - ॐ इदं विष्णुः, - एह्येहि नीलाम्बुजमेचक त्वं श्रीवत्सवक्षः कमलाधिनाथ। सर्वामरैः पूजितपादपद्म गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।। उत्तरतः ॐ भूः विष्णवे नमः विष्णुं आः स्थाः भो विष्णोः

स्वधासहितपितर - ॐ पितृभ्यःः, सुखाय पितृन् कुलवद्धिकर्तृन् रक्तोत्पलाभान् इह रक्तनेत्रान्। सुरक्त माल्यांबर भूषितान् च नमामि पीठे कुलवृद्धिहेतोः।। ब्रह्माग्निमध्ये वल्यां ॐ भूः स्वधासहित पितृभ्यो नमः स्वधासहित पितृन् आः भो स्वधासहितपितरः इहागच्छत इह तिष्ठत।।

मृत्युरोग。, - ॐ परं मृत्योऽअनु。, आवाहयेऽहं किल मृत्युरोगौ भयप्रदौ लोकविनाशकारिणौ। यज्ञस्य शान्त्यर्थमित प्रगल्भौ धर्मानुगौ शं कुरुतं नमो वाम्।। दक्षिणे ब्रह्मायम मध्ये वाप्यां ॐ भूः मृत्युरोगाभ्यां नमः मृत्युरोगौ आः स्थाः भो मृत्युरोगौ इहागच्छतं इह तिष्ठतम्।।

गणेश - ॐ गणानान्त्वा。, एह्येहि विघ्नाधिपते सुरेन्द्र ब्रह्मादिदेवैः अभिवंद्यपाद। गजास्य विद्यालय विश्वमूर्ते गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।। ब्रह्मानिऋति मध्ये वल्ल्यां ॐ भूः गणपतये नमः गणपतिं आः स्था

आप - ॐ शन्नो देवीः, एतैत यादोगणवारिधीनां सुसेव्यमाना स्वगणैश्च सार्धम्। जलाधिदेव्यो मम यज्ञसिद्धयै गृहणीत पूजां प्रणमामि युष्मान्।। पश्चिमे ब्रह्मवरुणमध्ये वाप्यां ॐ भूः अद्भ्यो नमोः अपः आः स्थाः भो अपः इहागच्छत इह तिष्ठत।

मरुत - ॐ पृषदश्वामरुतःः, एतैत यज्ञे मरुतः सुसेव्या मृगाधिरूढाः सह सिद्धसंघैः। प्राणस्वरूपाः सुखदाः कुरुध्वं शं नो गृहीत्वाऽर्चनमत्र नित्यम्।। ब्रह्मावायुमध्ये वल्ल्याम् ॐ भूः मरुद्भयो नमः मरुतः आः स्था

पृथिवी - ॐ स्योना पृथिवीः, एह्येहि लोकस्थितिहेतुभूते ह्यादौ वराहेण समुद्धृता या। कल्याणकर्त्री पृथिवी त्वमस्मिन् यज्ञे शिवं नः कुरु ते नमोऽस्तु।। ब्रह्मणः पादमूले कर्णिकायां ॐ भूः पृथिवये नमः पृथिवीं आः स्थाः

गंगादिनदी - ॐ पंचनद्यःः, एतैत गंगायमुनादयश्च नद्यः पवित्रा दुरितौघहन्त्र्यः। झषाधिरूढा उदकुंभहस्ता गृहणीत पूजां मम यज्ञसिद्धयै।। पृथिवी उत्तरतः ॐ भूः गंगादि नदीभ्यो नमः गंगादिनदीः आः स्था

सप्तसागर - ॐ इमम्मे व्वरुणः, एतैत यादौगणकैः समेता पर्जन्ययुक्ताः पुनितोदकौघाः। शुचिं समुद्राः कुरुतात्र यज्ञं पूजां गृहीत्वाऽस्तु नमो नमो वः।। गंगादि उत्तरे ॐ भूः सप्तसागरेभ्यो नमः सप्तसागरान् आः स्थाः।

मेरु - ॐ दिवो वा॰, एह्येहि पृथ्वीधरराज मेरो सुवर्णवर्णांकित दिव्यदेह। नगाधिपैस्त्वं कुरु यज्ञसिद्धिं ममास्तु ते भूधर सुप्रणाम:।। ब्रह्मणः मस्तकोपिर कर्णिकायां॰ ॐ भू॰ मेरवे नमः मेरुं आ॰ स्था। भो मेरो इहागच्छ इह तिष्ठ।

श्वेतपरिधौ - मंडल बाह्ये उत्तरतः

गदा - ॐ अवसृष्टाः, एह्येहि सोमप्रिय दिव्यशक्ते महाबलिष्ठे विजयप्रदात्रि। कुरुष्व यज्ञं सकलार्थसिद्धं पूजां गृहीत्वाऽस्तु नमो गदे ते।। उत्तरस्यां ॐ भूः गदायै नमः गदां आः स्थाः। त्रिशूल - ॐ नमो धृष्णवेः, एह्येहि संहारक रुद्रशक्ते त्रैगुण्यरूप प्रथितप्रभाव। त्रिशूल रुद्रप्रिय दिव्य यज्ञे पाहि त्वमस्मान् सुतरां नमस्ते।। ईशाने ॐ भूः त्रिशूलायः भो त्रिशूल इहागच्छ इहतिष्ठ

वज्र - ॐ गोत्रभिदंः, एह्येहि नारायण दिव्यतेजः प्रभावसृष्टे मुनिदेहजात। इन्द्रप्रिय त्वं कुरु वज्र शांतिं यज्ञस्य मे त्वां प्रणमामि नित्यम्।। पूर्वे ॐ भूः वज्रायः भो वज्र इहागच्छ इहतिष्ठ शिक्त - ॐ शिवो नामासिः, एह्येहि शक्तेऽनलदेव देव - प्रभावसंदर्शिनी दिव्यरूपे। महाबले मे कुरु यज्ञसिद्धि पूजां गृहीत्वा परमे नमस्ते।। आग्नेय्यां - ॐ भूः शक्तयेः भो शक्ते इहागच्छ इहतिष्ठ

दंड - ॐ इन्द्र आसां。, एह्येहि यज्ञे प्रभुधर्मराज – प्रजा बलैश्वर्यसुशक्तिदण्ड नयप्रमाण प्रथितप्रभाव रक्षां कुरु त्वं मम ते प्रणाम:।। दक्षिणे ॐ भू. दण्डाय

खड्ग - ॐ मा त्वा。, एह्येहि तीक्ष्णातिसुतिग्मधार त्वं तु प्रियो निऋतिदेवकस्य। खड्गप्रभाभास्वर यज्ञसिद्धिं पूजां गृहीत्वा कुरु ते नमोऽस्तु।। नैर्ऋत्यां ॐ भू॰ खड्गाय नमः॰

पाश - ॐ उर र्ठ. हि., एह्येहि यादोगणवारिधीनां - अधीश देवस्य जलाधिपस्य। पाश प्रियोऽसि प्रकुरु प्रियं नो नमोऽस्तु ते मे प्रगृहाण पूजाम्।। पश्चिमे ॐ भू॰ पाशाय नमः अंकुश - ॐ वायो ये ते॰, एह्येहि देवाधिपदेव वायो सर्वत्र सिद्धिप्रदमंकुश त्वम्। पूजां गृहीत्वा कुरु यज्ञसिद्धिं रक्ष त्वमस्मान् नितरां नमस्ते।। वायव्यां ॐ भू॰ अंकुशाय नमः भो अंकुश इहागच्छ इहतिष्ठ

रक्तपरिधौ - मंडलबाह्ये उत्तरतः

गौतम - ॐ मधु व्वाता ऋतायते。, एह्येहि सर्वैर्मुनिभिः समेतः तपः प्रभावैः कृत कार्यसिद्धिः। सतीपते गौतम पापहारिन् कुरुष्व भद्रं मुनिवर्य ते नमः।। उत्तरे ॐ भू॰ गौतमाय नमः इहागच्छ इहतिष्ठ

भरद्वाज - ॐ मूर्द्धानं दिवोः, एह्येहि सप्तर्षिगणे स्वतेजः प्रभावसंप्राप्तगते मुनीन्द्र। ऋषे भरद्वाज गृहाण पूजां नमोस्तु ते यज्ञमिमं सुरक्ष।। ईशाने ॐ भूः भरद्वाजायः भो भरद्वाज इहागच्छ इहतिष्ठ

विश्वामित्र - ॐ तत्सवितु。, एह्योहि सन्नूतनसृष्टिकारिन् ब्रह्मत्वसिद्ध प्रबलैस्तपोभि:। यज्ञस्य सिद्धिं कुरु कौशिक त्वं ब्रह्मर्षिवर्य प्रणमाम्यहं त्वाम्।। पूर्वे ॐ भूः विश्विमत्रायः भो विश्वामित्रः, इहागच्छ इहतिष्ठ

कश्यप - ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः., एह्येहि गोत्रप्रवर प्रकाश महामुनिश्रेष्ठतमैः सुवन्द्य। ब्रह्मात्मज त्वं कुरु रक्षणं नो नमोऽस्तु ते कश्यप सर्ववर्य।। आग्नेय्यां - ॐ भू. कश्यपायः भो कश्यप इहागच्छ इहतिष्ठ

जमदिगन - ॐ बट्सूर्यश्रवसाः, एह्येहि सप्तर्षिगणप्रभाव समाधिनिष्ठै कमनस्तपस्विन्। नमोऽस्तु तुभ्यं जमदिग्निसिद्ध पूजां गृहीत्वा कुरु शं मुने नः।। दक्षिणे ॐ भूः जमदग्नयेः विसष्ठ - ॐ ऋयंबकं यजामहेः, एह्येहि सर्वामरिसद्धसाध्य - मुनीन्द्र संसेवित शान्तमूर्ते। ब्रह्मिवर्यस्तु हि ते प्रणामो यज्ञं सुसिद्धं कुरु मे विसष्ठ।। नैर्ऋत्यां - ॐ भूः विसष्ठायः भो विशिष्ठ इहागच्छ इहतिष्ठ

अत्रि - ॐ देवो गातुः, एह्येहि दत्तात्रयदिव्यमूर्तैः पितस्तपस्विन् शशिसंभवात्रे। महामुने यज्ञमिमं स्वशक्तया पाहि त्वमस्मान् हि नमोऽस्तु तुभ्यम्।। पश्चिमे ॐ भूः अत्रये नमःः भो अत्रे इहागच्छ इहतिष्ठ

अरुंधती - ॐ पावका नः सरस्वतीः, एह्येहि साध्वीवरिदव्यामूर्ते सतीप्रभावांकित सर्वलोके।। अरुंधित त्वं कुरु यज्ञसिद्धिं विधेहि शं नो सित ते नमोऽस्तु।। वायव्यां ॐ भूः अरुंधत्यै नमः इहागच्छ इहतिष्ठ

कृष्णपरिधौ - मंडलबाह्ये पूर्वतः

एेन्द्री - दिव्यलोकस्थितां देवीं देवकल्याणकारिणीम्। देवेन्द्रदेहजां शक्तिं ऐन्द्रीं आवाहयाम्यहम्।। पूर्वे ॐ भू. ऐन्द्रीं नम: . ऐन्द्रीं आ. स्था.

कौमारी - कौमारीं अतुलां शक्तिं कुमारस्य प्रभावजाम्। आवाहयाम्यहं दिव्यां देवतार्थप्रसाधिनीम्।। आग्नेय्यां - ॐ भू. कौमार्थे नम:

ब्राह्मी - ब्रह्मणस्तु समुत्पन्नां सर्वलोकसुखावहाम्। ब्राह्मीं तु परमां शक्तिं यज्ञे आवाहयाम्यहम्।। दक्षिणे - ॐ भूः ब्राह्मयै नमः

वाराही - वराहस्थां महाशक्तिं वसुधोद्धारकारिणीम्। आवाहयाम्यहं देवीं वाराहीं दैत्यदारिणीम्।। नैर्ऋत्यां ॐ भू. वाराही नमः

चंडिका - चंडिकां चंडरूपां तां चंडमुंडिवनाशिनीम्। चामुंडां शिक्तमत्युग्रां यज्ञे आवाहयाम्यहम्।। पश्मि ॐ भूः चंडिकायै नमःः

वैष्णवी - विष्णु देहस्थितां शक्तिं प्रबलां वैष्णवीं पराम्। आवाहयाम्यहं यज्ञे लोक कल्याणकारिणीम्।। वायव्यां - ॐ भू. वैष्णव्ये नम:

माहेश्वरी - माहेश्वरीं महाशक्तिं त्रिशूलवरधारिणीम्। आवाहयाम्यहं देवीं यज्ञ सिद्धिकरीं शिवाम्।। उत्तरे - ॐ भू॰ माहेश्वर्थै नम:॰

वैनायकी - विनायक स्थितां नित्यं सर्वविष्नविदारिणीम्। शक्तिं वैनायकीं यज्ञे शुभां आवाहयाम्यहम्।। ईशान्यां - ॐ भू॰ वैनायक्यै नमः

ॐ मनोजूति॰, ॐ भू॰ ब्रह्माद्यावाहित सर्वतो भद्र मंडल देवताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवत।। लब्धोपचारैः पूजनम्।।

मन्त्र पुष्पाञ्चिल मादाय - यं ब्रह्मा वरुणेन्द्ररुद्रमरुतः स्तुन्विन्त दिव्यैः स्तवैः वेदैः साङ्गपदक्रमोपनिषदैः गायन्ति यं सामगाः। ध्यानावस्थिततद्गतेन मनसा पश्यंति यं योगिनो, यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणाः देवाय तस्मै नमः।

ब्रह्मावेदपितः शिव पशुपित सूर्योग्रहाणांपित शक्रो देवपित नलो नरपित स्कन्दश्च सेनापितः। विष्णु र्यज्ञपितर्यमः पितृपित तारापितश्चन्द्रमाः इत्येते पतयः सुपर्ण सिहताः कुर्यात् सदा मंगलम्।।

मन्त्र पुष्पाञ्जलि समर्पयामि।

हस्ते जलं गृहीत्वा - अनेन कृर्ताचनेन ब्रह्माद्यावाहिताः देवताः प्रीयन्ताम् न मम जलमृत्सुजेत।।

।।इति सर्वतोभद्र मण्डल पूजनम्।।

जग-दीपिका

।।सर्वतोभद्र मंडल देवता नाम मन्त्रः।।

१. ॐ ब्रह्मणे नमः

३. ॐ ईशानाय नमः

५. ॐ अग्नये नमः

७. ॐ निर्ऋतये नमः

९. ॐ वायवे नमः

११. ॐ एकादशरुद्रेभ्यो नमः

१३. ॐ अश्विभ्यां नम:

१५. ॐ सप्तयक्षेभ्यो नमः

१७. ॐ गंधर्वाप्सरोभ्यो नमः

१९. ॐ नन्दीश्वराय नम:

२१. ॐ दक्षादिसप्त गणेभ्यो नमः

२३. ॐ विष्णवे नमः

२५. ॐ मृत्युरोगाभ्यां नमः

२७. ॐ अद्भ्यो नमः

२९. ॐ पृथिव्यै नमः

३१. ॐ सप्तुसागेरभ्यो नमः

३३. ॐ गदायै नमः

३५. ॐ वज्राय नमः ३७. ॐ दंडाय नमः

३९. ॐ पाशाय नम:

४१. ॐ गौतमाय नम:

४३. ॐ विश्वामित्राय नमः

४५. ॐ जमदग्नये नमः

४७. ॐ अत्रये नमः

४९. ॐ ऐन्द्यै नम:

५१. ॐ ब्राह्मयै नमः

५३. ॐ चामुण्डायै नम:

५५. ॐ माहेश्वर्ये नम:

२. ॐ सोमाय नम:

४. ॐ इन्द्राय नम:

६. ॐ यमाय नम:

८. ॐ वरुणाय नमः

१०. ॐ अष्टवसुभ्यो नमः

१२. ॐ द्वादशादित्येभ्यो नमः

१४. ॐ सपैतृकविश्वेभ्यो देवेभ्यो नम:

१६. ॐ भूतनागेभ्यो नम:

१८. ॐ स्कन्दाय नमः

२०. ॐ शूल महाकालाभ्यां नमः

२२. ॐ दुर्गायै नमः

२४. ॐ स्वधायै नम:

२६. ॐ गणपतये नमः

२८. ॐ मरुद्भ्यो नमः

३०. ॐ गंगादिनदीभ्यो नमः

३२. ॐ मेरवे नमः

३४. ॐ त्रिशूलाय नम:

३६. ॐ शक्तये नमः

३८. ॐ खड्गाय नमः ४०. ॐ अंकुशाय नमः

४२. ॐ भरद्वाजाय नमः

४४. ॐ कश्यपाय नमः

४६. ॐ वशिष्ठाय नमः

४८. ॐ अरुंधत्यै नमः

५०. ॐ कौमार्ये नमः

५२. ॐ वाराह्यै नम:

५४. ॐ वैष्णव्यै नम:

५६. ॐ वैनायक्यै नम:

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्माद्यावाहित सर्वतोभद्र मंडल देवताः सुप्रतिष्ठाः वरदा भवत। (वापी-२४-श्वेत, खंदेन्द्-३-श्वेत; भद्र-९-रक्त; वल्ली-११-हरित)

प्रधानदेव यज्ञेश्वर कलश स्थापनम्

प्रधानदेवपीठे सर्वतोभद्रे अष्टदलमण्डले वा ताम्रकलशं वरुणकलशवत्संस्थाप्य सम्पूज्य ॐ देवदानवसंवादेः इत्यादिमन्त्रैः प्रार्थयेत्। ततः कलशोपिर पट्टवस्त्रं प्रसार्य तदुपिर गन्धाष्टकेन रक्तचन्दनेन वा अनारलेखिन्या प्रधानदेवतायन्त्रं तद्बीजाक्षरं वा विलिख्य तन्मध्ये पलेन तदर्द्धेन वा सुवर्णरचितां प्रधानदेवप्रतिमां सावयवामग्न्युत्तारणपूर्वक स्थापयेत्। स्वर्णादिप्रतिमायन्त्रयोरभावे भूर्जपत्रेऽष्टगन्धेन प्रधानदेवतायन्त्रं लिखित्वा पूजयेत्। अस्मिन्पक्षे अग्न्युतारणं न कार्यं किन्तु तदग्रे पात्रं निधाय तस्मिन्नेव पाद्यार्घादि कार्यम्। अग्न्युत्तारणप्रतिष्ठे तु पूर्वमप्रतिष्ठितयोरेव, मूर्ति-यन्त्रयोः कार्ये इति सम्यक् स्मर्तव्यम्।

गणपतिपीठपूजनम्

ॐ सर्वत्र मूलप्रकृत्यै नमः। ॐ आधारशक्तयै नमः। ॐ कूर्माय नमः। ॐ अनन्ताय नमः। ॐ वराहाय नमः। ॐ पृथिव्यै नमः। ॐ क्षीरार्णवाय नमः। ॐ रव्लेतद्वीपाय नमः। ॐ रत्लोज्विलतस्वर्णमण्डलाय नमः। ॐ कल्पवृक्षाय नमः। ॐ स्वर्णवेदिकाय नमः। ॐ सिंहासनाय नमः। पादेषु – आग्नेयादि – ॐ धर्माय नमः। ॐ ज्ञानाय नमः। ॐ वैराग्याय नमः। ॐ ऐश्वर्याय नमः। गात्रेषु प्रागादि – ॐ अधर्माय नमः। ॐ अज्ञानाय नमः। ॐ अवैराग्याय नमः। ॐ अनैश्वर्याय नमः। ॐ संविन्नालाय नमः। ॐ अनन्ताय नमः। ॐ पद्याय नमः। ॐ आनन्दकन्दाय नमः। ॐ संविन्नालाय नमः। ॐ प्रकृतिमयपत्रेभ्यो नमः। ॐ विकारमयकेसरेभ्यो नमः। ॐ पञ्चाशद्वर्णाढ्यकर्णिकायै– ॐ सूर्यमण्डलाय नमः। ॐ चन्द्रमण्डलाय नमः। ॐ अन्तरात्मने नमः। ॐ सत्याय नमः। ॐ राजसे नमः। ॐ तमसे नमः। ॐ आत्मने नमः। ॐ अन्तरात्मने नमः। ॐ ज्ञानात्मने नमः। ॐ मायातत्वाय नमः। ॐ कलातत्वाय नमः। ॐ विद्यातत्वाय नमः। ॐ भोगायै नमः। भूवादि – ॐ तीन्नायै नमः। ॐ ज्ञालिन्यै नमः। ॐ नन्दायै नमः। ॐ भोगायै नमः। ॐ कामरूपिण्यै नमः। ॐ उग्रायै नमः। ॐ तेजोवत्यै नमः। ॐ सत्यानानन्तानन्दरूपं परं धामैव सकलं पीठम् इति चिन्तयेत्।

विष्णुपीठपूजनम्

मध्ये - ॐ आधारशक्तये नम:। ॐ प्रकृत्यै नम:। ॐ कूर्माय नम:। ॐ अनन्ताय नम:। ॐ वाराहाय नमः। ॐ पृथिव्यै नमः। ॐ क्षीरनिधये नमः। ॐ श्वेतदीपाय नमः। ॐ रत्नोज्वलितस्वर्णमण्डपाय नम:। ॐ कल्पवृक्षाय नम:। ॐ स्वर्णवेदिकायै नम:। ॐ सिंहासनाय नम:। (इस प्रकार पीठ की पूजा करके) - दक्षिणे - ॐ गुरुभ्यो नम:। वामे - ॐ दुर्गायै नम:। ॐ विघ्नेशाय नम:। ॐ क्षेत्रपालाय नम:। अग्रे - ॐ गरुडाय नम:। ईशान्याम् – ॐ विष्वक्सेनाय नम:। ॐ पंचाशद्वर्णाढ्यकर्णिकायै नम:। ॐ द्वादशकलात्मने सूर्यमण्डलाय नमः। ॐ षोडश-कलात्मने सोममण्डलाय नमः। ॐ दशकलात्मने बह्मिण्डलाय नमः। ॐ शक्तिमण्डलाय नमः। ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ ईशानाय नमः। ॐ कुबेराय नमः। ॐ ऋग्वेदाय नमः। ॐ यजुर्वेदाय नमः। ॐ सामवेदाय नम:। ॐ अथर्ववेदाय नम:। ॐ आत्मने नम:। ॐ अन्तरात्मने नम:। ॐ पं परमात्मने नमः। ॐ ज्ञानात्मने नमः। ॐ कृताय नमः। ॐ त्रेताय नमः। ॐ द्वापराय नम:। ॐ कलये नम:। ॐ सं सत्वाय नम:। ॐ रं रजसे नम:। ॐ तं तमसे नमः। ॐ अणिमायै नमः। ॐ महिमायै नमः। ॐ लिघमायै नमः। ॐ गरिमायै नमः। ॐ प्राप्त्यै नम:। ॐ प्राकाम्यै नम:। ॐ ईशित्वायै नम:। ॐ वशित्वायै नम:। तत: पूर्वादि पत्रेष्। ॐ विमलायै नम:। ॐ उत्कर्षिण्यै नम:। ॐ ज्ञानायै नम:। ॐ क्रियायै नम:। ॐ योगायै नम:। ॐ प्रहृत्यै नम:। ॐ सत्यायै नम:। ॐ ईशानायै नम:। पुनर्मध्यै नम:। ॐ अनुग्रहायै नम:। ॐ नमो भगवते विष्णवे सर्वभूतात्मने वासुदेवाय योगपीठात्मने नम:।।

शिवपीठपूजनम्

ॐ मूल प्रकृत्यै नमः। ॐ आधारशक्त्यै नमः। ॐ कूर्माय नमः। ॐ अनन्ताय नमः। ॐ वराहाय नमः। ॐ पृथिव्यै नमः। ॐ विचित्र दिव्य रत्न मण्डपाय नमः। मण्डपस्य परितः – ॐ कल्पवृक्षेभ्यो नमः। ॐ सुवर्ण वेदिकायै नमः। ॐ रत्निसंहासनाय नमः। अथ सिंहासन पादेषु – ॐ धर्माय नमः। इत्याग्नेय्याम्। ॐ ज्ञानाय नमः। इति नैर्ऋत्याम्। ॐ वैराग्याय नमः। इति वायव्याम्। ॐ ऐश्वर्य्याम् नमः। इति ऐशान्याम्। गात्रेषु – ॐ अधर्माय नमः। इति प्राच्याम्। ॐ अज्ञानाय नमः। इति दिक्षस्याम् । ॐ अवैराग्याय नमः। इति प्रतीच्याम् । ॐ अनैश्वर्याय नमः। इत्यु दीच्यां सिंहासनोपिर। तल्पाकाराया नन्ताय नमः। ॐ पद्माय नमः। ॐ आनन्दमय कन्दाय नमः। ॐ संविन्नालाय नमः।

ॐ प्रकृतिमयपत्रेभ्यो नमः। ॐ विकारमयकेसरभ्यो नमः। ॐ पञ्चाश द्वर्णाढ्य किर्णकायै नमः। अथ पद्म दल केसर किर्णकासु – ॐ सं सत्वाय नमः। इति दलेषु। रं रजसे नमः। इति केसरेषु। ॐ तं तमसे नमः। इति किर्णिकासु एवं सर्वत्र। ॐ अं द्वादशकलात्मनेर्कमण्डलेषु नमः। ॐ दूं षोडशकलात्मने सोम मण्डलाय नमः। ॐ मन्दशकलात्मने अग्नि मण्डलाय नमः। ॐ मन्दशकलात्मने अग्नि मण्डलाय नमः। ॐ अं ब्रह्मणे नमः। ॐ उं विष्णवे नमः। ॐ मं महेश्वराय नमः। ॐ आत्माने नमः। ॐ रं अन्तरात्मने नमः। ॐ परमात्मने नमः। ॐ ज्ञानात्ने नमः। इति सर्वपद्मार्चनम्। अथ पद्मपूर्वादिपत्रेषु – ॐ कामायै नमः। ॐ ज्येष्ठायै नमः। ॐ रोंद्यै नमः। ॐ काल्यै नमः। ॐ कलिकरण्यै नमः। ॐ बलिकरण्यै नमः। ॐ बलिप्रमिवन्यै नमः। ॐ सर्वभूतदमन्यै नमः। अष्टौशक्तीः मनोन्मन्यै नमः। इति किर्णकाया – 'ॐ नमो भगवते रुद्राय सकल गुणात्मशक्तियुक्तायानंताय योगपीठा नन्द रुपं परं धामैव सकलं पीठिमिति चिन्तयेतिपीठपूजा।'

श्रीरामपीठपूजनम्

(मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवता)

१. ॐ मं मण्डूकाय नमः। २. ॐ कं कालाग्निरुद्राय नमः। ३. ॐ आं आधारशक्त्यै नमः। ४. ॐ कूं कूर्माय नमः। ५. ॐ अं अनन्ताय नमः। ६. ॐ पृं पिथव्यै नमः। ७. ॐ क्षीं क्षीर-सागराय नमः। ८. ॐ रं रत्नद्वीपाय नमः। १. ॐ रं रत्नमण्डपाय नमः। १०. ॐ कं. कल्प-वृक्षाय नमः। ११. ॐ रं रत्नविद्विकायै नमः। १२. ॐ रं. रत्निसंहासनाय नमः। १३. ॐ धं धर्माय नमः। १४. ॐ ज्ञं ज्ञानाय नमः। १५. ॐ वैं वैराग्याय नमः। १६. ॐ धं एं ऐश्वर्याय नमः। १७. ॐ अं अधर्माय नमः। १८. ॐ अं अज्ञानाय नमः। १९. ॐ अं अज्ञानाय नमः। १९. ॐ अं अजैराग्याय नमः। १०. ॐ अं अनैश्वर्याय नमः। (एवं उपिर दिक्षु विदुक्षु च सम्पूज्य।) पीठ मध्ये- १. ॐ आं आनन्दकन्दाय नमः। २. ॐ सं संविन्नालाय नमः। ३. ॐ सं सर्वतत्त्वकमलासनाय नमः। ४. ॐ प्रं प्रकृतिमयपत्रेभ्यो नमः। ५. ॐ वं विकार-मयकेसरे नमः। ६. ॐ पं पंचाशद्वर्णाढ्यकेशराय नमः। ७. ॐ अं अर्कमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः। १०. ॐ सं सत्वाय नमः। ११. ॐ रं राजसे नमः। १२. ॐ तं तमसे नमः। १३. ॐ आं आत्मने नमः। १४. ॐ पं परमात्मने नमः। १५. ॐ विद्यातत्त्वाय नमः। १६. ॐ मां मायातत्वाय नमः। १७. ॐ कं कलातत्वाय नमः। १८. ॐ विद्यातत्त्वाय नमः। १९. ॐ पं परतत्त्वाय नमः।

हनुमत्पीठपूजनम्

ॐ मं मण्डूकाय नमः। ॐ कां कालाग्निरुद्राय नमः। ॐ कूं कूर्माय नमः। ॐ आं आधारशक्तये नम:। उपर्युपरि - ॐ मूं मूलप्रकृत्यै नम:। ॐ वं वराहाय नम:। ॐ अं अमृतसागराय नम:। तन्मध्ये - ॐ रं रत्नदीपाय नम:। ॐ हें हेमगिरये नम:। ॐ नं नन्दनोद्यानाय नमः। ॐ कं कल्पवृक्षेभ्यो नमः। ॐ मं मणिभृषितभृतलाय नमः। ॐ तत्र - ॐ रं रत्नमण्डपाय नम:। ॐ रं रत्नसिंहासनाय नम:। अग्निकोणे - ॐ धं धर्माय नमः। नैर्ऋत्यकोणे - ॐ ज्ञां ज्ञानाय नमः। वायुकोणे - ॐ वैं वैराग्याय नमः। ईशानकोणे - ॐ ऐं ऐश्वर्याय नम:। पूर्वे - ॐ अं अधर्माय नम:। दक्षिणे - ॐ अं अज्ञानाय नमः। पश्चिमे - ॐ अं अवैराग्याय नमः। उत्तरे - ॐ अं अनैश्वर्याय नमः। पीठमध्ये - ॐ आं आनन्दमयकन्दाय नमः। ॐ सं संविन्नालाय नमः। ॐ विं विश्वमयपद्माय नमः। ॐ प्र प्रकृतिमयपद्रेभ्यो नमः। ॐ विं विकारमयकेसरेभ्यो नमः। ॐ पं पञ्चाशद्वर्णाढ्यकर्णिकायै नम:। कर्णिकायाम् - ॐ अं द्वादशकलात्मने सूर्यमण्डलाय नमः। ॐ षोडशकलात्मने सोममण्डलाय नमः। ॐ मं दशकलात्मने विद्वमण्डलाय नमः। ॐ सं सत्त्वाय नमः। ॐ रं रजसे नमः। ॐ तं तमसे नमः। ॐ आं आत्मने नमः। ॐ अं अन्तरात्मने नम:। ॐ पं परमात्मने नम:। ॐ ज्ञां ज्ञानात्मने नम:। ॐ मां मायातत्त्वाय नम:। ॐ कं कलातत्त्वाय नम:। ॐ विं विद्यातत्त्वाय नम:। ॐ पं परतत्त्वाय नमः। ॐ पत्रेषु मध्ये च पीठशक्तीर्ध्यायेत्।

श्वेता कृष्णाऽरुणा पीता श्यामा रक्ता सिताऽसिताः। रक्ताम्बराभयधरा ध्येयाः स्युः पीठशक्तयः।।

इति ध्यात्वा पूजयेत्। ॐ विमलायै नमः। ॐ उत्कर्षिप्यै नमः। ॐ ज्ञानायै नमः। ॐ क्रियायै नमः। ॐ योगायै नमः। ॐ प्रह्वयै नमः। ॐ सत्यायै नमः। ॐ ईशानायै नमः। ॐ अनुग्रहायै नमः। ॐ नमो भगवते रुद्राय सर्वभूतात्मने हनुमते सर्वात्मसंयोगपद्मपीठात्मने नमः।

कालभैरवपीठपूजनम्

पुष्पाक्षतानादाय स्ववामभागे - श्रीगुरुभ्यो नमः। दक्षिणे - गणपतये नमः। मध्ये - स्वेष्टेवतायै नमः।

पीठमध्ये - ॐ मं मंडूकाय नम:। ॐ कं कालाग्निरुद्राय नम:। ॐ आं आधारशक्तये नम:। ॐ कुं कुर्माय नम:। ॐ अं अनन्ताय नम:। ॐ पुं पृथिव्यै नम:। ॐ क्षीं क्षीरसागराय नमः। ॐ रं रत्नदीपाय नमः। ॐ रं रत्नवेदिकायै नमः। ॐ रं रत्निसंहासनाय नमः।

आग्नेय्याम् - ॐ धं धर्माय नमः। नैर्ऋत्याम् - ॐ ज्ञां ज्ञानाय नमः। वायव्याम् - ॐ वैं वैराग्याय नमः। ऐशान्याम् - ॐ ऐं ऐश्वर्याय नमः। पूर्वे - ॐ अं अर्धमाय नमः। दक्षिणे - ॐ अं अज्ञानाय नमः। पश्चिमे - ॐ अं अवैराग्याय नमः। उत्तरे - ॐ अं अनैश्वर्याय नमः।

पुनः पीठमध्ये – ॐ आं आनन्दकन्दाय नमः। ॐ सं संविन्नालाय नमः। ॐ सं सर्वतत्त्वकमलासनाय नमः। ॐ प्रं प्रकृतिमयपत्रेभ्यो नमः। ॐ विं विकारमयकेशरेभ्यो नमः। ॐ पं पञ्चाशद्वर्णाढ्यकर्णिकाभ्यो नमः। ॐ अं अर्कमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः। ॐ सों सोममण्डलाय षोडशकलात्मने नमः। ॐ वं विह्नमण्डलाय दशकलात्मने नमः। ॐ सं सत्त्वाय नमः। ॐ रं रजसे नमः। ॐ तं तमसे नमः। ॐ आं आत्मने नमः। ॐ पं परमात्मने नमः। ॐ अं अन्तरात्मने नमः। ॐ हीं ज्ञानात्मने नमः। ॐ मां मायातत्त्वाय नमः। ॐ कं कलातत्त्वाय नमः। ॐ विं विद्यातत्त्वाय नमः। ॐ पं परतत्त्वाय

नमः। (पीठदेवता का पूजन कर नव पीठशक्तियों की पूजा निम्न क्रम से करें।) पूर्वे - ॐ वां वामायै नमः। आग्नेय्याम् - ॐ ज्यें ज्येष्ठयै नमः। दक्षिणे - ॐ रौं रौद्यै नमः। नैर्ऋत्ये - ॐ कां काल्यै नमः। पश्चिमे - ॐ कं कलिवकरण्यै नमः। वायव्ये - ॐ बं बलिवकरण्यै नमः। उत्तरे - ॐ बं बलप्रमिथन्यै नमः। ऐशान्ये - ॐ सं सर्वभूतदमन्यै नमः। पीठमध्ये - ॐ मनोन्मन्यै नमः। ततो - ॐ मनोजूतिर्जुषः इति मन्त्रेण पीठदेवताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु इति प्रतिष्ठाप्य आवाहित पीठदेवताभ्यो नमः। इति नाममन्त्रेण षोडशोपचारैः सम्पूज्य हस्ते पुष्पांजिल गृहीत्वा - ॐ नमो भगवते कालभैरवाय सकलगुणात्मशिक्तयुक्तायानन्ताययोग पीठात्मने नमः।

लक्ष्मीनारायणपीठपूजनम्

गन्धाक्षतपुष्पैः पीठोपिर मध्ये - ॐ आधारशक्तये नमः। ॐ प्रकृत्यै नमः। ॐ कूर्माय नमः। ॐ वाराहाय नमः। ॐ पृथिव्यै नमः। ॐ क्षीरिनधये नमः। ॐ श्वेतदीपाय नमः। ॐ रत्नोज्विलतसुवर्णमण्डपाय नमः। ॐ कल्पवृक्षाय नमः। ॐ स्वर्णवेदिकायै नमः। ॐ सिंहासनाय नमः। इति सम्पूज्य।

पीठदक्षिणे - ॐ गुरुभ्यो नमः। वामे - ॐ दुर्गायै नमः। ॐ विघ्नेशाय नमः। ॐ क्षेत्रपालाय नमः। अग्रे - ॐ गरुडाय नमः। ईशान्याम् - ॐ विष्वक्सेनाय नमः। ॐ पञ्चाशद्वर्णाढ्यकर्णिकायै नमः। ॐ द्वादशकलात्मने सूर्यमण्डलाय नमः।

ॐ षोडशकलात्मने सोममण्डलाय नमः। ॐ मंद करात्मने विह्नमण्डलाय नमः। ॐ शिक्तमण्डलाय नमः। ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ ईशानाय नमः। ॐ कुबेराय नमः। ॐ ऋग्वेदाय नमः। ॐ यजुर्वेदाय नमः। ॐ सामवेदाय नमः। ॐ अर्थवंवेदाय नमः। ॐ आं आत्मने नमः। ॐ अं अन्तरात्मने नमः। ॐ पं परमात्मने नमः। ॐ हीं ज्ञानात्मने नमः। ॐ कृताय नमः। ॐ त्रेताय नमः। ॐ द्वापराय नमः। ॐ कलये नमः। ॐ सं सत्वाय नमः। ॐ रं रजसे नमः। ॐ तं तमसे नमः। ॐ अणिम्ने नमः। ॐ गरिम्णे नमः। ॐ लिघम्ने नमः। ॐ मिहम्ने नमः। ॐ प्राप्त्ये नमः। ॐ प्राकाम्ये नमः। ॐ ईशित्वाये नमः। ॐ विशत्वाये नमः। ॐ ज्ञानाये नमः। ॐ क्रियाये नमः। ॐ वोगाये नमः। ॐ प्रज्ञाये नमः। ॐ इंशानाये नमः। ॐ प्रमिध्ये अनुग्रहाये नमः। ततः – 'ॐ मनो जूतिर्जु。' इति मन्त्रेण 'पीठदेवता सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु' आवाहितपीठदेवताभ्यो नमः इति षोडशोपचारैः।

सूर्यपीठपूजनम्

ॐ आधारशक्तयै नमः। ॐ मूल प्रकृत्यै नमः। ॐ कूर्माय नमः। ॐ अनन्ताय नमः। ॐ वराहाय नमः। ॐ पृथिव्यै नमः। ॐ सुवर्णमण्डलाय नमः। ॐ रत्निसंहाय नमः। ॐ धर्माय नमः। ॐ अधर्माय नमः। ॐ ज्ञानाय नमः। ॐ अत्राग्याय नमः। ॐ अत्रेश्वर्याय नमः। ॐ अत्रेश्वर्याय नमः। ॐ अत्रेश्वर्याय नमः। ॐ अर्वेवदाय नमः। ॐ अर्वेवदाय नमः। ॐ अर्वेवदाय नमः। ॐ कृतयुगाय नमः। ॐ त्रेतायुगाय नमः। ॐ द्वापराय नमः। ॐ किलयुगाय नमः। ॐ केलयुशाय नमः। ॐ केलयुशाय नमः। ॐ केलयुशाय नमः। ॐ केलयुशाय नमः। ॐ केल्पवृक्षाय नमः। ॐ मृलप्रकृत्यै नमः। ॐ स्कन्दाय नमः। ॐ नालाय नमः। ॐ कल्पवृक्षाय नमः। ॐ पद्रोभ्यो नमः। ॐ दलेभ्यो नमः। ॐ किर्णकाय नमः। ॐ केल्पवेवदाय नमः। ॐ विह्वर्णण्डलाय नमः। ॐ केल्पवेवदाय नमः। ॐ विह्वर्णण्डलाय नमः। ॐ स्वर्णण्डलाय नमः।

।।चतुर्लिङ्गतोभद्र मण्डल पूजनम्।।

संकल्प - आचम्य प्राणानायम्य हस्ते जलमादाय अद्येत्यादि पूर्वोच्चारित शुभ पुण्य तिथौ प्रारीप्सितामुक कर्माङ्गत्वेन चतुर्लिङ्गतो भद्रमण्डल देवतावाहन स्थापन पूजनानि करिष्ये।

।।हस्ते अक्षतान् गृहीत्वा।।

तद्बाह्ये पूर्वे। ॐ असिताङ्गभैरवाय नमः असिताङ्गभैरवमावाहयामि पूजयामि। (आग्ननेय्याम् ॐ रूरूभैरवाय नम: रूरूभैरवम् आः पूः। (दक्षिणे) ॐ चण्डभैरवाय नम: चण्डभैरवम् आः पूः। (नैऋत्याम्) ॐ क्रोधभैरवाय नमः क्रोधभैरवम् आः पूः। (पश्चिमे) ॐ उन्मत्तभैरवाय नमः उन्मत्तभैरवम् आः पूः। (वायव्याम्) ॐ कपालभैरवाय नमः कपालभैरवम् आः पूः। (उत्तरे) भीषणभेरवाय नमः भीषणभैरवम् आः पूः। (ऐशान्याम्) ॐ संहारभैरवाय नमः संहारभैरवम् आः पूः। तद्बाह्ये पूर्वे। पुनः पूर्वादिक्रमेण ॐ अनन्ताय नमः अनन्तम् आः पूः। ॐ वासुकये नमः वासुकिम् आः पूः। ॐ तक्षकाय नमः तक्षकम् आः पूः। ॐ कुलिशायुधाय नमः कुलिशायुधम् आः पूः। ॐ कर्कोटकाय नमः कर्कोटकम् आः पूः। ॐ शङ्खपालाय नमः शङ्खपालम् आः पूः। ॐ कम्बलाय नमः कम्बलम् आः पूः। ॐ अश्वताय नम: अश्वतम् आः पूः। (ईशानेन्द्रयोर्ममध्ये) ॐ शूलाय नम: शूलम् आः पू॰। (इन्द्राग्निमध्ये) ॐ चंद्रमौलिने नमः चन्द्रमौलिम् आ॰ पू॰। (अग्नियमध्ये) चन्द्रमसे नमः चन्द्रमसम् आः पूः। (यमनिऋतिमध्ये) ॐ वृषभध्वजाय नमः बृषभध्वजम् आः पूः। (निऋतिवरुणमध्ये) ॐ त्रिलोचनाय नमः त्रिलोचनं आः पूर। (वरुणवायुमध्ये) ॐ शक्तिधराय नमः शक्तिधरम् आः पूः। (वायुसोममध्ये) ॐ महेश्वराय नमः महेश्वरम् आः पूः। (सोमेशानयोर्मध्ये) ॐ शूलपाणये नमः शूलपाणिम् आः पूः। ततः। सर्वतोभद्रवत् देवतास्थापनम्। तदनन्तरं (उत्तरेलिङ्गे) ॐ सद्योजाताय नम: सद्योजातम् आः पूः। (प्राच्यांलिङ्गे) वामदेवाय नमः वामदेवम् आः पूः। (दक्षिणलिङ्गे) ॐ अघोराय नमः अघोरम् आः पूः। (प्रतीचीलिङ्गे) ॐ तत्पुरुषाय नमः तत्पुरुषम् आः पूः। कर्णिकायां मेरोरुपरि ॐ ईशानाय नमः ईशानम् आः पूः। मेरो: परिधि: समन्तात् चतु: पुरीभ्यो नम: चतु: पुरी: आ. पू. तत: समन्तात् ॐ ऋग्वेदाय नमः ऋग्वेदम् आः पूः। ॐ यजुर्वेदाय नमः यजुर्वेदम् आः पूः। ॐ सामवेदाय नमः सामवेदम् आ. पू.। ॐ अथर्ववेदाय नम: अथर्ववेदम् आ. पू. उत्तरलिङ्गस्य दक्षिणवापीमारभ्य वामवापीपर्यन्तं श्वेताष्ट्रवापीषु ॐ भवाय नमः भवम् आः पूः। ॐ शर्वाय नमः शर्वम् आः पू.। ॐ पशुपतये नम: पशुपतिम आ. पू.। ॐ ईशानाय नम: ईशानम् आ. पू.। ॐ उग्राय नमः उग्रम् आः पूः। ॐ रुद्राय नमः रुद्रम् आः पूः। ॐ भीमाय नमः भीमम् आः पूः। ॐ महते नम: महान्तम् आः पूः। तद्वापीसमीपस्थपीताष्टकोष्ठेषु चतुर्दिक्षु – ॐ भवान्यै नम:

भवानीम् आः पूः। ॐ शर्वाण्यै नमः शर्वाणीम् आः पूः। ॐ पशुपत्यै नमः पशुपतीम् आः पूः। ॐ ईशान्यै नमः ईशानीम् आः पूः। ॐ उग्रायै नमः उग्राम् आः पूः। ॐ रुद्राण्यै रुद्राणीम् आः पूः। भीमायै नमः भीमाम् आः पूः। ॐ महत्यै नमः महतीम् आः पूः। बाह्यश्वेतपरिधौ। ॐ गदायै नमः गदाम् आः पूः। ॐ त्रिशूलाय नमः त्रिशूलम् आः पूः। ॐ चतुलिङ्गतोभद्र– मण्डलस्थ देवताभ्यो नमः चतुर्लिङ्गभद्रमण्डलस्थदेवताः आवाहयामिपूजयामि ततः पूजनं कुर्यात्।

। ।त्रिचत्वारिंशद रेखात्मक द्वादशिलङ्गतोभद्र मण्डल देवता स्थापनम्।। अथ संकल्प - श्री सदाशिव प्रीत्यर्थे अमुक याग कर्मणि द्वादशिलङ्गतो भद्र मण्डल देवतावाहन स्थापनं पूजनं करिष्ये।।

(आदौ पूर्वोक्तक्रमेण सर्वतोभद्रमण्डल देवता आवाह्य) हस्ते अक्षतान् गृहीत्वा-ईशान्यादिक्रमेण प्रथम-द्वितीय-तृतीय पूर्विलिङ्गे-१ ॐ भूर्भुव: स्व: शिवाय नम: शिवमावाहयामि स्थापयामि।। भो शिव इहागच्छ इह तिष्ठ।। एवं सर्वत्र।।२ ॐ भूः तत्पुरुषाय नम: आः स्थाः।।३ ॐ भूः पशुपतये नमः आः स्थाः।। प्रथम-द्वितीय-तृतीयदक्षिणलिङ्गे-।।४ ॐ भूः उग्राय नमः आः, स्थाः।।५ ॐ भूः, अघोराय नम: आः, स्थाः।।६ ॐ भूः, रुद्राय नम: आः, स्थाः।। प्रथम-द्वितीय-तृतीय-पश्चिमलिङ्गे-।।७ ॐ भू. भवाय नम: आ. स्था.।।८ ॐ भू. सद्योजाताय नमः आः स्थाः।।९ ॐ भृः सर्वजाताय नमः आः स्था।। प्रथम-द्वितीय-तृतीयोत्तरलिङ्गे-।।१० ॐ भूः महालिङ्गाय नमः आः स्थाः।।११ ॐ भूः वामदेवाय नमः आः स्थाः।।१२ ॐ भूः भीमाय नमः आः स्थाः।। पूर्वेशान्यादिक्रमेण षोडशवापीषुप्रत्येकं देवतास्थापनम्-।।१३ असिताङ्गभैरवायः।।१४ रुरुभैरवायः।।१५ चण्डभैरवायः।।१६ क्रोधभैरवायः।।१७ उन्मत्तभैरवायः।।१८ कपालिभैरवायः।।१९ भीषणभैरवायः।।२० संहारभैरवायः।।२१ भवायः।।२२ शर्वायः।।२३ ईशानायः।।२४ पशुपतेः।।२५ रुद्रायः।।२६ उग्रायः।।२७ भीमायः।।२८ महतेः।।२९ ईशानेन्द्रयोर्मध्ये भद्रे शूलिनेः।।३० इन्द्राग्न्योर्मध्ये भद्रे-चन्द्रमौलिने.।।३१ अग्नियमयोर्मध्ये भद्रे-चन्द्रमसे.।।३२ यमनिर्ऋत्योर्मध्ये भद्रे-वृषभध्वजायः।।३३ निर्ऋतिवरुणयोर्मध्ये भद्रे-त्रिलोचनायः।।३४ वरुणवाय्वोर्मध्ये भद्रे-शक्तिधरायः।।३५ वायुसोमयोर्मध्ये भद्रे-महेश्वरायः।।३६ सोमेशानयोर्मध्ये भद्रे-शूलधारिणेः।। अथेशानीमारभ्येशानीपर्यंतं प्रतिकोणं द्वे द्वे इत्यष्टवल्लीषु क्रमेणाष्टौ देवताः स्थापयेत्-।।३७ अनन्तायः।।३८ तक्षकायः।।३९ कुलिशायः।।४० कर्कोटकायः।।४१ शङ्खपालायः।।४२ कम्बलायः।।४३ अश्वतरायः।।४४ पृथिव्यैः।। आग्नेयकोणे सप्तशृङ्खलादेवताः स्थापयेत्।।४५ भूम्यैः।।४६ हैहयायः।।४७ माल्यवतेः।।४८ पारिजातायः।।४९ दिक्पतयेः।।५० महादेवायः।।५१।। विष्णवेः।। नैर्ऋत्यकोणे सप्तशृङ्खलादेवताः स्थापयेत्।।५२ माल्यवतेः।।५३

महारुद्रायः।।५४ कालाग्निरुद्रायः।।५५ द्वादशादित्येभ्योः।।५६ महेश्वरायः।।५७ मृत्युरोगाभ्यां ।।५८ वैनायक्यै ।। वायव्यकोणे सप्तशृंङ्खलादेवताः स्थापयेत् ।।५९ शाकुन्तलेयायः।।६० भरताय।।६१ नलायः।।६२ रामायः।।६३ सार्वभौमायः।।६४ नैषधायः।।६५ विन्ध्याचलायः।। ईशानकोणे सप्तशृङ्खला देवताःस्थापयेत्।।६६ हेमकूटायः।।६७ गन्धमादनायः।।६८ कुलाचलायः।।६९ हिमाचलायः।।७० पृथिव्यैः।।७१ अनन्तायः।।७२ कमलासनायः।। चतुर्दिक्षु खण्डेन्दुषु देवताः स्थापयेत्-।।७३ ऐशाने अश्विनीकुमाराभ्यांः।।७४ आग्नेये-विश्वेभ्यो देवेभ्योः।।७५ नैर्ऋत्ये-पितृभ्योः।।७६ वायव्ये-नागेभ्योः।। तद्वहिः सत्त्वरजस्तमः-परिधिषु देवतास्थापनं पूर्वादिक्रमेण।।७७ सत्त्वपरिधौ पूर्वे-इन्द्रायः।।७८ आग्नेये-अग्नयेः।।७९ दक्षिणे-यमायः।।८० नैर्ऋत्ये-निर्ऋतयेः।।८१ पश्चिमे-वरुणायः।।८२ वायव्ये-वायवेः।।८३ उत्तरे-कुबेरायः।।८४ ऐशाने-ईशानायः।। तद्विहः रजःपरिधौ आयुधावाहनम्।।८५ पूर्वे-वज्रायः।।८६ आग्नेये-शक्तये।।८७ दक्षिणे दण्डायः।।८८ नैर्ऋत्ये-खङ्गायः।।८९ पश्चिमे-पाशायः।।९० वायव्येः अङ्कृशायः।।९१ उत्तरे-गदायैः।।९२ ऐशाने-त्रिशुलायः।। तद्विहिः तमः परिधौ ऋषीन् स्थापयेत्।।९३ पूर्वे-कश्यपायः।।९४ आग्नेये-अत्रयेः।।९५ दक्षिणे-भरद्वाजायः।।९६ नैर्ऋत्ये-विश्वामित्रायः।।९७ पश्चिमे-गौतमायः।।९८ वायव्ये-जमदग्नयेः।।९९ उत्तरे-विसष्ठायः।।१०० ऐशाने-ॐ भूर्भुवः स्वः भृगवे नमः भृगुमावाहयामि स्थापयामि।। भो भृगो इहागच्छ इह तिष्ठ।। प्रतिष्ठापनम् ॐ मनोजूतिः।। षट्पञ्चाशदुत्तरशतसंख्यका हरिहर मण्डल देवताः सुप्रतिष्ठाः वरदाः भवत। "ब्रह्माद्यावाहितहरिहरमण्डलदेवताभ्यो नमः" इति मन्त्रेण षोडशोपचारै: (वा अन्योपचारै:) सम्पूज्य तेभ्यो पायसबलिं दद्यात्।। पूजनान्ते समर्पणम् - अनया पूजया हरिहरमण्डल देवताः प्रीयन्ताम्।।

।।इति त्रिचत्वारिंशद्रेखात्मक हरिहरमण्डलस्थद्वादशलिंगतोभद्रमण्डल देवता स्थापनम्।।

।।अथ (३४) चतुस्त्रिंशद्रेखात्मकं द्वादशलिंगतोभद्र मण्डल देवता स्थापनम्।।

मण्डले कर्णिकान्तराले मध्ये ईशानतः ईशानकोणे खण्डेन्दौ।।१ ईशान्याम् - ॐ गुरवे नमः।२ आग्नेय्याम् - गणपतयेः।३ नैर्ऋत्याम्दुर्गायैः।।४ वायव्याम् - क्षेत्रपालायः।५ भद्रमध्ये सदाशिवायः। ततोऽष्टदले पूर्वस्याम् -। पूर्वे-कालाग्निरुद्रायः।७ तत्रैव-कुर्मायः।८ तत्रैवमंडूकायः।९ आग्नेय्याम्-वराहायः।१० तत्रैव-अनंतायः।।११ दक्षिणस्याम् पृथिव्यैः।१२ तत्रैव संदायः।१३ तत्रैव-सुधासिंधवेः।१४ नैर्ऋत्याम्- नलायः।१५ तत्रैव-पद्मायः।१६

पश्चिमायाम् - पत्रेभ्योः १७ तत्रैव-केसरेभ्योः ।१८ तत्रैव-कर्णिकायैः ।१९ वायव्याम् -सिंहासनायः।२० तत्रैव-पद्मासनायः।२१ उत्तरस्याम् - धर्मायः।२२ तत्रैवज्ञानायः। २३ तत्रैव-वैराग्यायः।२४ ईशान्याम् - ऐश्वर्यायः।२५ तत्रैव-चिदाकाशायः।२६ पद्ममध्ये-योगपीठायः।। ततः कर्णिकोपरि पूर्वतश्चतुर्दिक्षु-पृथिव्यैः कपालायः सप्तसरिद्भयोः सप्तसागरेभ्योः (३०) कर्णिकासमीपे चत्वारि श्वेतभद्राणि सन्ति पूर्वादिचतुर्दिक्षुतत्पुरुषायः अघोरायः सद्योजातायः वामदेवायः तत्समीपेकृष्णान्यष्टभद्राणि सन्ति तेषु ईशान्याद्यष्टदिक्षु-भगवत्यैः उमायैः शंकरप्रियायैः पार्वत्यैः गौर्यैः काल्यैः कौर्म्यैः विश्वंभर्यैः (४२)।। ततः कृष्णभद्राण्यघः अष्टौ रक्तभद्राणि सन्ति तेषु ईशान्याद्यष्टदिक्षु नंदिनेः महाकालायः महावृषभायः भृंगिकरीटिनेः स्कंदायः उमापतयेः चंडेश्वरायः योगसूत्रायः (५०)। चतुर्लिंगोपरि श्वेतभद्राणि सन्ति तेषु पूर्वादिचतुर्दिक्षु-धात्रेः मित्रायः यमायः रुद्रायः (५४)।। तत्समीपे लिंगोपरि अष्टौ प्रीतभद्राणि सन्ति तेषु ईशान्याद्यष्टदिक्षु वरुणायः सूर्यायः भगायः विवस्वतेः पुरुषोत्तमायः सवित्रेः त्वष्ट्रेः विष्णवेः (६२)।। ततो द्वादशलिंगतोदेवतानां स्थापनम् - पूर्वे-शिवायः तदक्षिणे-एकनेत्रायः तदक्षिणे-एकरुद्रायः।। दक्षिणस्याम् - त्रिमूर्तयेः तत्पश्चिमे-श्रीकंठायः तत्पश्चिमे-वामदेवायः।। पश्चिमायाम् ज्येष्ठायः तदुत्तरे-श्रेष्ठायः तदुत्तरे रुद्रायः।। उत्तरे-कालायः तत्पूर्वे-कलविकरणायः तत्पूर्वे-बलविकरणायः (७४)।। ततः श्वेतषोडशवापीषु प्रत्येकं देवतास्थापनम् - अणिमायैः महिमायैः लिघमायैः गरिमायैः प्राप्त्यैः प्राकाम्यैः ईशितायैः विशतायैः ब्राह्मयैः माहेश्वयैः कौमार्थैः वैष्णव्यैः वाराह्मैः इंद्राण्यैः चामुण्डायैः चिण्डकायैः (९०)।। ततो वापीसमीपे अष्टरक्तभद्राणि सन्ति तेषु ईशान्याद्यष्टदिक्षु -असितांगभैरवायः रुरुभैरवायः चंडभैरवायः क्रोधभैरवायः उन्मत्तभैरवायः कालभैरवायः भीषणभैरवायः संहारभैरवायः (९८)।। ईशानाद्यष्टदिक्षु वल्लीदेवता स्थापनम् - घृताच्यैः मेनकायैः रम्भायैः उर्वश्यैः तिलोत्तमायैः सुकेशायैः मंजुघौषायैः अप्सरोभ्योः (१०६) ततो मण्डलमध्ये परिधिसमीपे शृङ्खलादेवता: स्थापयेत् - आग्नेय्याम् - भवायः शिवायः रुद्रायः पशुपतयेः उग्रायः भीमायः महादेवायः ईशानायः अनन्तायः वासुकयेः (११६)।। नैर्ऋत्याम् - तक्षकायः कुलीरकायः कर्कोटकायः शंखपालायः कंबलायः अश्वतरायः वैन्यायः अंगायः हैहयायः अर्जुनायः (१२६)।। वायव्याम् - शाकुन्तलेयायः भरतायः नलायः, रामायः, सार्वभौमायः, निषधायः, विंध्याचलायः, माल्यवतेः, पारियात्रायः, सह्यायः, (१३६)।। ऐशान्याम् - हेमकूटायः गंधमादनायः कुलाचलायः हिमवतेः रैवतायः देवगिरयेः मलयाचलायः कनकाचलायः पृथिव्यैः अनंतायः (१४६)।। आग्नेयादिचतुर्दिशु खण्डेन्दुषु-अग्निकमाराभ्यां विश्वेभ्यो देवेभ्योः पितुभ्योः नागेभ्योः (१५०)।। ततो मण्डलाद्वहिः

सत्त्वपरिधौ पूर्वीदिक्रमेण-इंद्रायः अग्नयेः यमायः निर्ऋतयेः वरुणायः वायवेः कुबेरायः ईशानायः ऊर्ध्वायाम् ब्रह्मणेः अधः अनन्तायः (१६०)।। ततो रक्तपरिधौ पूर्वीदिक्रमेणवज्रायः शक्तयेः दण्डायः खङ्गायः पाशायः अंकुशायः गदायेः त्रिशूलायः ऊर्ध्वायां-पद्मायः अधः चक्रायः (१७०)।। तत कृष्णपरिधौ पूर्वीदिक्रमेण कश्यपायः अत्रयेः भरद्वाजायः विश्वामित्रायः गौतमायः जमदग्नयेः विसष्ठायः अरुंधत्यैः। पूर्वे-ऋग्वेदायः। दक्षिणे-यजुर्वेदायः। पश्चिमे-सामवेदायः। उत्तरे-अथर्ववेदाय नमः।। (१८२)

।।इति (३४) चतुस्त्रिंशद्रेखात्मक द्वादशलिंगतोभद्र मण्डल देवता स्थापनम्।।

अथ गौरी तिलक मण्डलस्थ देवानां स्थापनं पूजनं

अथ संकल्प - श्री त्रिगुणात्मिका प्रीत्यर्थे सकलकामना झटिति सिद्धिअर्थम् स्थिर लक्ष्मी प्राप्त्यर्थम् गौरी तिलक मण्डलस्थ देवानाम् स्थापनम् पूजनं करिष्ये। हस्ते अक्षतान् गृहीत्वा। मध्ये कलशम्।। कलशसमीपे। पीतकोष्ठेषु चतुरो देवान् पूजयेत्। तद्यथा-महाविष्णवे नमः इति ऐशान्याम्। ॐ महालक्ष्म्यै नमः। आग्नेय्याम्। ॐ महेश्वराय नमः। नैर्ऋत्याम्। 🕉 महामायायै नमः। वायव्याम्। प्रथमषडङ्गमध्ये चतुर्ष्कोष्ठेषु श्वेतषु चतुर्वेदान्। ॐ ऋग्वेदाय नम:। पूर्वे। ॐ यजुर्वेदाय नम:। दक्षिणे। ॐ सामवेदाय नम:। पश्चिमे। ॐ अथर्ववेदाय नमः। उत्तरे। ततो ईशानात् पूर्व पर्य्यन्तं श्वेतकोष्ठेषु पंचदेवान् पूजयेत्।। प्रथम पूर्वे। ॐ अद्भयो नमः १। जलोद्भवाय नमः २। ॐ ब्रह्मणे नमः ३। ॐ प्रजापतये नमः ४। ॐ शिवाय नमः ५। ततः अग्निकोणे श्वेतकोष्ठयोः। ॐ अनन्ताय नमः १। ॐ परमेष्ठिने नमः २। पुनरग्निकोणे चतुष्कोष्ठेषु ॐ धात्रे नमः १। ॐ विधात्रे नमः २। ॐ अर्य्यम्णे नम: ३। ॐ मित्राय नम: ४। ततो दक्षिणेश्वेतेषु ५। ॐ वरुणाय नम: १। ॐ अंशुमते नम: २। ॐ भगाय नम: ३। ॐ इन्द्राय नम: ४। ॐ विवश्वते नम: ५। नैर्ऋत्यकोणयोः २। ॐ पृष्णे नमः १। ॐ पर्ज्जन्याय नमः २। ॐ नैर्ऋत्यकोणेश्वेतेषु ४। ॐ त्वष्टे नमः १। दक्षयज्ञाय नमः २। ॐ देववसवे नमः ३। ॐ महासुताय नमः ४। पश्चिमेश्वेतेषु ५। ॐ सुधर्मणे नमः १। ॐ शङ्खपदे नमः २। ॐ महाबाहवे नमः ३। वपुष्मते नमः ४। ॐ अनन्ताय नमः ५। वायौश्वेतयोः २। ॐ महेरणाय नमः। ॐ विश्वावसवे नमः। वायौश्वेतेषु ४। ॐ सुपर्णवे नमः १। ॐ विष्टराय नमः २। ॐ रुरुदेवताय नमः ३। ॐ ध्रुवाय नमः ४। ॐ उत्तरेश्वेतेषु (५) ॐ धरायै नमः (१) ॐ सोमाय नम: (२) ॐ आपवत्साय नम: (३) ॐ नलाय नम:। (४) ॐ अनिलाय नम: (५)

ईशानेश्वेतयो:। ॐ प्रत्यूषाय नमः १। ॐ प्रभासाय नमः २। ईशान कोणेश्वेतेषु ४। ॐ आवर्ताय नमः १। ॐ सांवर्ताय नमः २। ॐ द्रोणाय नमः ३। ॐ पुष्कराय नमः ४। इति हृदयाङ्गपूजां शिरोङ्गशक्तिंपूजयेत् प्रथममीशाने। हरित्कोष्ठेषु ११

ॐ हीं कार्यों नमः १। ॐ ह्विये नमः ॐ कात्यायन्ये नमः ३। ॐ चामुण्डाये नमः ४। ॐ महादिव्याये नमः ५। ॐ महाशब्दाये नमः ६। ॐ सिद्धिदाये नमः ७। ॐ हीं कार्ये नमः ८। ॐ ऐँ नमः ९। श्रीं श्रिये नमः १०। ॐ हीं हिये नमः ११। ईशानकोणेपीतकोष्ठषु।८ ॐ लक्ष्म्ये नमः १। ॐ श्रिये नमः २। ॐ सुधाये नमः ३। ॐ मेघाये नमः ४। ॐ प्रज्ञाये नमः ५। ॐ मत्ये नमः ६। ॐ स्वाहाये नमः १। ॐ सरस्वत्ये नमः ८। ॐ प्रत्नाये नमः १। ॐ सरस्वत्ये नमः ८। ॐ संस्वत्ये नमः १। ॐ शच्ये नमः ३। ॐ सुमेधाये नमः ४। ॐ सावित्रये नमः १। ॐ विजयाये नमः ६। ॐ देवसेनाये नमः १। ॐ स्वाहाये नमः ८। ॐ स्वधाये नमः ९। ॐ वात्रये नमः १०। ॐ गायत्रये नमः ११। ॐ स्वाहाये नमः ८। ॐ स्वधाये नमः ९। ॐ मात्रे नमः १०। ॐ गायत्रये नमः ११। ॐ कुलमात्रे नमः १। ॐ कुलमात्रे नमः १। ॐ कुलमात्रे नमः १। ॐ कुलमात्रे नमः १। ॐ कुलमात्रे नमः ५। ॐ कुलमात्रे नमः १। ॐ स्वाहास्वधाभ्यां नमः १०। ।।इति शिरोङ्ग पूजनम्।।

।।अथ शिखाङ्गदेवपूजनम्।।

 ॐ दयायै नमः ६। ॐ शिवदूत्यै नमः ७। ॐ श्रद्धायै नमः ८। पश्चिमार्द्धपीतकोष्ठेषु १०। ॐ क्षमायै नमः १। ॐ क्रियायै नमः २। ॐ विद्यायै नमः ३। ॐ मोहिन्यै नमः ४। ॐ यशोवत्यै नमः ५। ॐ कृपावत्यै नमः ६। सलीलायै नमः ७। सुशीलायै नमः ८। ॐ ईश्वर्य्यै नमः ९। ॐ सिद्धेश्वर्य्यै नमः १०। ।इति शिखाङ्ग पूजा।

।।अथ वचाङ्गपूजा।।

कवचाङ्गेषु ऋषीन्पूजयेत् प्रथम पूर्वे अरुणकोष्ठयोः ॐ द्वैपायनाय नमः २। ॐ भारद्वाजाय नमः। दक्षिणेऽरुणकोष्ठयोः २ ॐ गौतमाय नमः। ॐ सुमन्तवे नमः ३। पश्चिमेऽरुणकोष्ठयो:।२ ॐ देवलाय नमः १। ॐ व्यासाय नमः। उत्तरेऽरुणकोष्ठयो: २। ॐ वसिष्ठाय नमः १। ॐ च्यवनाय नमः। ईशानेकृष्णकोष्ठे।१ ॐ कण्वाय नमः १। अग्निकोणे कु. को. मैत्रेयाय नम: २। नैर्ऋत्यकोणे कु. को. ॐ कवये नम: ३। वा. को. कु. कोष्ठे। ॐ विश्वामित्राय नमः ४। मध्येपीत कोष्ठेषु ८। ॐ वामदेवाय नमः १। ॐ सुमन्ताय नम: २। जैमिनये नम: ३। ॐ क्रतवे नम: ४। ॐ पिप्पलादाय नम: ५। ॐ पराशराय नमः ६। गर्गाय नमः ७। ॐ वैशम्पायनाय नमः ८। मध्येकृष्णकोष्ठेषु ईशानतः १२ ॐ दक्षाय नमः १। ॐ मार्कण्डेयाय नमः २। ॐ मृकण्डाय नमः ३। ॐ लोमशाय नम: ४। ॐ पुलहाय नम: ५। ॐ पुलस्त्याय नम: ६। ॐ वृहस्पतये नमः ७। ॐ जमदग्नये नमः ८। ॐ जामदग्न्याय नमः ९। ॐ दाल्भ्याय नमः १०। ॐ शिलोञ्छनाय नमः ११। ॐ गालवाय नमः १२। मध्येहरित्सुईशानतः १६। ॐ याज्ञवल्क्याय नम: १। ॐ दुर्वाससे नम: २। ॐ सौभरये नम: ३। ॐ जाबालये नम: ४। ॐ वाल्मीकये नमः ५। ॐ बहृचाय नमः ६। ॐ इन्द्रप्रमीतये नमः ७। ॐ देविमत्राय नमः ८। जाजलये नमः ९। शाकल्याय नमः १०। ॐ मुद्गलाय नमः ११। ॐ जातुकर्ण्याय नमः १२। ॐ बलाकाय नमः १३। ॐ कृपाचार्य्याय नमः १४। ॐ सुकर्मणे नमः १५। ॐ कौसल्याय नमः १६। ।।इति वचाङ्गपूजा।।

।।अथ नेत्राङ्ग पूजा।।

ईशानकोणेऽरुणकोष्ठेषु। १२ ॐ ब्रह्माग्नये नमः १। ॐ गार्हष्पत्याग्नये नमः २। ॐ ईश्वराग्नये नमः ३। ॐ दक्षिणाग्नये नमः ४। ॐ वैष्णवाग्नये नमः ५। ॐ आहवनीयाग्नये नमः ६। ॐ सप्तजिह्वाग्नये नमः ७। ॐ इध्मजिह्वाग्नये नमः ८। ॐ प्रवर्ग्याग्नये नमः ९। ॐ वडवाग्नये नमः १०। ॐ जठराग्नये नमः ११। ॐ लौकिकाग्नये नमः १२। ॐ अग्निकोणेऽरुणकोष्ठेषु। १२ ॐ सूर्य्याय नमः १।

ॐ वेदाङ्गाय नमः २। ॐ भानवे नमः ३। ॐ इन्द्राय नमः ४। ॐ खगाय नमः ५। ॐ गभस्तिने नमः ६। ॐ यमाय नमः ७। ॐ अंशुमते नमः ८। ॐ हिरण्यरेतशे नमः ९। ॐ दिवाकराय नमः १०। ॐ मित्राय नमः ११। ॐ विष्णवे नमः १२। ॐ नैर्ऋत्यकोणेऽरुणकोष्ठेषु।१२ ॐ शम्भवे नमः १। ॐ गिरिशाय नमः २। ॐ अजैकपदे नमः ३। ॐ अहिर्बुध्न्याय नमः ४। ॐ पिनाकपाणये नमः ५। ॐ अपराजिताय नमः ६। ॐ भुवनाधीश्वराय नमः ७। ॐ कपालिने नमः ८। ॐ विशाम्पतये नमः ९। ॐ रुद्राय नमः १०। ॐ कपित्राय नमः १। ॐ अश्विनीकुमाराभ्यां नमः १२। ॐ वायुकोणेऽरुण-कोष्ठेषु १२ ॐ आवहाय नमः १। ॐ प्रवहाय नमः २। ॐ उद्वहाय नमः ३। ॐ सम्वहाय नमः ४। ॐ विवहाय नमः ५। ॐ परिवहाय नमः ६। ॐ धराये नमः ८। ॐ अद्भयो नमः ९। ॐ अन्वये नमः १०। ॐ वायवे नमः ११। ॐ आकाशाय नमः १२। 1इति नेत्राङ्ग पूजा।।

।।अथास्त्राङ्ग ऋषीन्पूजयेत्।।

ईशानात् ईशपर्य्यन्तं वाह्यपङ्क्तौकृष्णकोष्ठेषु ४८।। ॐ हिरण्यनाभाय नम: १। ॐ पुष्पंजयाय नमः २। ॐ द्रोणाय नमः ३। ॐ शृङ्गिणे नमः ४। ॐ वादरायणाय नमः ५। ॐ अगस्त्याय नम: ६। ॐ मनवे नम: ७। ॐ कश्यपाय नम: ८। ॐ धौम्याय नम: ९। ॐ भृगवे नम: १०। ॐ वीतिहोत्राय नम: ११। ॐ मधुछन्दसे नम: १२। ॐ वीरसेनाय नमः १३। ॐ कृतवृष्णये नमः १४। ॐ अत्रये नमः १५। ॐ मेधातिथये नमः १६। ॐ अरिष्टनेमये नमः १७। ॐ आङ्गिरसाय नमः १८। ॐ इन्द्रप्रमदाय नमः १९। ॐ इध्मवाहवे नम: २०। ॐ पिप्पलादाय नम: २१। ॐ नारदाय नम: २२। ॐ अरिष्टसेनाय नमः २३। ॐ अरुणाय नमः २४। ॐ सनकाय नमः २५। ॐ सनन्दनाय नमः २६। ॐ सनातनाय नमः २७। ॐ सनत्कुमाराय नमः २८। ॐ कपिलाय नमः २९। ॐ कर्दमाय नमः ३०। ॐ मरीचये नमः ३१ ॐ क्रतवे नमः ३२। प्रचेतसे नमः ३३। ॐ उत्तमाय नमः ३४। ॐ दधीचे नमः ३५। ॐ श्राद्धदेवताभ्यो नमः ३६। ॐ गणदेवेभ्यो नमः ३७। ॐ विद्याधरेभ्यो नमः ३८। ॐ अप्सरेभ्यो नमः ३९। ॐ यक्षेभ्यो नमः ४०। ॐ रक्षोभ्यो नमः ४१। ॐ गन्धर्वेभ्यो नमः ४२। ॐ पिशाचेभ्यो नमः ४३। ॐ गृह्यकेभ्यो नमः ४४। ॐ सिद्धदेवताभ्यो नमः ४५। ॐ औषधीभ्यो नमः ४६। ॐ भूतग्रामाय नमः ४७। ॐ चतुर्विधभूत ग्रामाय नम:। ॐ इत्यस्त्राङ्गपूजा।। गौरीतिलकमण्डले ये देवास्तान् सर्वानावाहयामि स्थापयामि। इत्यावाह्य संस्थाप्य उपचारैः सम्पूजयेत्।

।।इति हेमाद्रिलिखित गौरीतिलक पूजनम्।।

।।अथ दुर्गा याग विधानम्।।

"अथ दुर्गापाठस्य नव नामानि तल्लक्षणानि च,-

रहस्योक्तानि नामानि ब्रह्मोक्तानि वदामि ते। महाविद्या महातन्त्री चण्डी सप्तशतीति च।।१।।
मृतसंजीविनी नाम पञ्चमं परिकीर्तितम्। षष्ठं चैव महा चण्डी सप्तमं रूपदीपिका।।२।।
अष्टमं तु चतुःषष्टियोगिनी नवमी परा। एतानि योऽभिजानाति नामानि नृपनन्दन।।३।।
जपं विना भवेत्तस्य चण्डिका वरदा सदा। पूर्वोक्तषड्विधानां तु स्वरूपं तत्र चोदितम्।।४।।
आद्यद्वितीयतृतीयचरितानुक्रमेण च। महाविद्या सप्तशती सर्वतन्त्रेषु गोपिता।।५।।
आद्यान्तमध्यचरितं महातन्त्रमितीरितम्। आदिमध्यान्तचारित्रक्रमाच्चण्डीमहामनुः।।६।।
मध्यमाद्यन्त चरित्रक्रमात्सप्तशतीति च। अन्त्यादिमध्यचारित्रान्मृतसंजीवनी स्मृता।।७।।
अन्त्यमध्यादिचारित्रान्महाचण्डीति कथ्यते। रूपं देहीति संयोज्य नवार्णमनुना सह।।८।।
संपुटत्वेन संयोज्य प्रतिश्लोकं जपेतथा। रूपचण्डीति सा प्रोक्ता सर्वाभीष्टफलप्रदा।।९।।
योगिनीनां चतुःषष्टियोगात्सप्तशतीमनोः। चतुःषष्ठीति सा प्रोक्ता योगसिद्धिपदायिनी।।१०।।
पराबीजसमायोगात्परा चण्डीति कथ्यते। एवं नवानां भेदानां नामानि च पृथक् पृथक् ।११।।
परावीजसमायोगात्परा चण्डीति कथ्यते। एवं नवानां भेदानां नामानि च पृथक् पृथक् ।११।।
परावीजसमायोगात्परा चण्डीति कथ्यते। अथ सिंहमुखी दुर्गा नवदुर्गा विदुर्बुघाः।।१३।।
पुमुखीं दुर्मुखीं प्रज्ञां पञ्चाद्व्याप्रमुखीं तथा। अथ सिंहमुखी दुर्गा नवदुर्गा विदुर्बुघाः।।१३।।
एवं ज्ञात्वा सप्तशतीं यो जपेत्सुसमाहितः। तस्य देवी सुप्रसन्ना सर्वाभीष्टप्रदा भवेत्।।१४।।
अथ कामनापरत्वेन चण्डीपाठसंख्या।। वाराहीतन्त्रे - शिव उवाच।।

चण्डीपाठफलं देवि शृणुष्व गदतो मम। एकावृत्त्यादिपाठानां यथावत्कथयामि ते।।१।। संकल्पूर्व संपूज्य न्यस्याङ्गेषु मनृन्सकृत्। पश्चाद्बलि प्रदानेन फलमाप्नोति मानवः।।२।। उपसर्गोपशान्त्यर्थं त्रिरावृत्तिं पठेन्नरः। गृहोपशान्तौ कर्तव्या पञ्चावृत्तिर्वरानने।।३।। महाभये समुत्पन्ने सप्तवृत्तिमुदीरयेत्। नवावृत्तौ भवेच्छान्तिर्वाजपेयफलं लभेत्।।४।। राजवश्याय भृत्यै च रुद्रावृत्ति मुदीरयेत्। अर्कावृत्त्या काम्यसिद्धिर्वैरिहानिञ्च जायते।।५।। मन्वावृत्त्या रिपुर्वश्यस्तथा स्त्री वशतामियात्। सौख्यं पञ्चदशावृत्त्या प्रियमाप्नोति मानवः।।६।। कल्पावृत्त्या पुत्रपौत्रधनधान्यागमं विदुः। राजभीतिविनाशाय विपक्षोच्चाटनाय च।।७।। कुर्यात्सप्तदशावृत्तिं तथाऽष्टादशकं प्रिये। महाऋणविमोक्षाय विंशावृत्तिं पठेन्नरः।।८।। पञ्चविंशावर्तनाद्धि भवेद्बन्धविमोक्षणम्। संकटे समनुप्राप्ते दुश्चिकित्स्यामये सदा।।९।। जातिध्वंसे कुलोच्छेदे आयुषो नाशमागते। वैरिवृद्धौ व्याधिवृद्धो धननाशे तथा क्षये।।१०।। तथैव त्रिविधोत्पाते तथा चैवातिपातके। कुर्याद्यत्नाच्छतावृत्तिं ततः संपद्यते शुभम्।।१९।। विपदस्तस्य नश्यन्ति अन्ते याति परां गितम्। जयवृद्धो शतावृत्त्या राज्यवृद्धौ सदा पठेत्।।१२।।

अथ वारादि अनुसारेण दुर्गासप्तशतीपाठ फलम् – रविवार को नवावृति का लाभ, सोमवार – एक हजार पाठ का फल, मंगलवार – सौ पाठ का फल, बुधवार, गुरु, शुक्रवार – लक्ष पाठ का फल, शनिवार के दिन पाठ करने से एक करोड़ पाठ का फल प्राप्त होता है। (मन्त्र शक्ति)

अध्यायान्त में इति शब्द का दोष - इति शब्दो हरेल्लक्ष्मी वधः कुल विनाशकः। अध्यायो हरते प्राणान् - मार्कण्डेयादिकं वदेत्।।

उपरोक्त नवविधिना दुर्गापाठ भावार्थ

- १. महाविद्या १, २, ३ चरित्रों का पाठ विधान है। फल रोग शत्रु नाश।
- २. महातन्त्री १, ३, २ चरित्रों के अनुसार विधान है। फल बाधा रोग शत्रु नाश।
- ३. चण्डी १, २, ३ चरित्रों का पाठ। फल ज्ञान, विद्या, धन प्राप्ति।
- ४. सप्तशती २, १, ३ चरित्रों का पाठ। फल व्यापार, व्यवसाय कार्य वृद्धि।
- ५. मृतसञ्जीवनी ३,१,२ चरित्रों का पाठ। फल बाधा, रोगनाश, व्यापार से लाभ।
- ६. महाचण्डी ३, २, १ चरित्रों के अनुसार फल लक्ष्मी प्राप्ति, रोग, भय, शत्रु नाश।
- ७. रूपदीपिका १,२,३ चरित्रों के अनुसार फल कार्य सिद्धि, राजभय का नाश, आरोग्य।
- ८. योगिनी यह पाठ महादुर्लभ है। (गुरु द्वारा होता है।)
- ९. **पराशक्ति -** १, २, ३ चिरित्रों में सौ बीज का सम्पुट होता है। पुत्र प्राप्ति के लिए क्लीं ददाति वित्तं १२ का ४१ श्लोक या १२ का १३ श्लोक क्लीं बीज के सम्पुट से पाठ फलदायक होता है। क्लीं बीज सम्पुट से युक्त करे शीघ्र सिद्धि होती है।

।।अथ सार्द्ध नवचण्डी विधान।।

वाराही तन्त्र तथा रूद्र यामलान्तर्गत सार्द्ध नवचण्डी विधान इस प्रकार हैं – इस विधान को १३ पण्डित एक दिन में सम्पन्न करते हैं। १० पण्डित दुर्गापाठ करते हैं। एक पण्डित शिवपूजा सिहत रूद्राभिषेक करता है। एक पण्डित बटुक पाठ तथा मन्त्र जाप करता है। एक पण्डित गणपित मन्त्र जप करता है।

पाठ विधान - दश पण्डित कार्यानुसार पाठ करे। गणपित मन्त्र जप करने वाला पण्डित सार्द्ध नवचण्डी का सम्पुट रहित इस प्रकार पाठ करे – आदि से चतुर्थ अध्याय का २७ मन्त्र तक पाठ करे पश्चात् ५वें अध्याय के ८वें श्लोक से पाठ प्रारम्भ कर ८२ श्लोक तक पाठ करे। पश्चात् ११वें अध्याय से सम्पूर्ण पाठ करें। यह सार्द्ध नवचण्डी विधान है।

अथ पुरश्चरणप्रकारः दुर्गाप्रदीपे

जपेद्विल्वं समाश्रित्य मासमेकं तु यो नरः। हुत्वाबिल्वदलैर्मासं मधुरत्रययोगतः।।१।। हुत्वा दशाँशतो वापि कमलैः क्षीरसंयुतैः। धनदेन समां लक्ष्मीं प्राप्नुयादुत्तमां ध्रुवम्।।२।। पाठ (वा जप) होम, तर्पण, मार्जन, ब्राह्मण भोजन इन ५ क्रियाओं को पुरश्चरण कहते हैं। पुरश्चरण करने के अनेकों स्थान और विधि दुर्गा प्रदीप में लिखे हैं। बेल के वृक्ष के नीचे एक मास दुर्गा पाठ (या सप्तशती के किसी मंत्र को कार्यानुसार) जो मनुष्य जपे और दूध सहित घी मिलाकर विल्वपत्र का हवन करे वा कमल दूध मिलाकर दशांश हवन करे तो उसको कुबेर के समान उत्तम लक्ष्मी प्राप्त होती है, इसमें संशय नहीं है।

अथ कात्यायनीतंत्रोक्त विधि भाषा

- १. प्रत्येक श्लोक के आदि अंत में 'ओं'कार कहते हुए पाठ करने से मंत्र सिद्धि।
- २. प्रत्येक मंत्र के आदि में 'ॐ भूर्भुवः स्वः' कहे और मंत्र के अन्त में 'स्वः भुवः भूः ॐ' सप्तशती का १०० पाठ करने से अति शीघ्र सिद्धि।
- ३. 'ॐ जातवेद से' इस ऋचाका प्रत्येक मंत्र के आदि में पाठ करने से सब काम सिद्धि।
- ४. 'ॐ त्र्यम्बकं' इस मंत्र का जप करने से, पाठ के आदि अंत में सौ सौ बार जप करने से अथवा इस मंत्र का सम्पुट करने से अपमृत्यु से मनुष्य बचते हैं।
- ५. 'शूलेन पाहिनो देवि。' इस मंत्र से सम्पुट करने से अपमृत्यु नाश होता है। केवल इस मन्त्र के लक्षायुत सहस्र शत जप करने से भी अपमृत्यु शमन होता है।
- ६. 'शरणा गत。' इस मन्त्र से प्रत्येक मन्त्रों पर सम्पुट करने से सब कार्य सिद्धि।
- ७. 'करो तु सा नः' इस आधे मन्त्र से प्रत्येक मन्त्रों का सम्पुट करने से सब कार्य सिद्धि।
- ८. 'एवं देब्या वरं लब्धवा' इस मन्त्र से प्रत्येक मन्त्रों का सम्पुट करने से अभीष्ट वरप्राप्ति होती है।
- ९. 'दुर्गेस्मृता。' इस मन्त्र से प्रत्येक मन्त्रों का सम्पुट करने से सर्व कार्य सिद्धि। इस मन्त्र के लक्ष वा अयुत वा सहस्र वा शत जपने से कार्य सिद्धि।
- १०. 'सर्वा वाधाः' इस मन्त्र से प्रत्येक मन्त्रों के सम्पुट से वा केवल इसी मन्त्र का लक्ष जप करने से श्लोकोक्त फल प्राप्त होता है।
- ११. 'इत्थं यदा यदा वाधा。' इस मन्त्र से प्रत्येक मन्त्रों का सम्पुट करने से महामारी (हैजा) शान्ति होती है।

- १२. 'ततो वब्रेनृपो राज्यं' इन दोनों मन्त्रों का एक एक लक्ष जप करने से पुन: स्वराज्य प्राप्ति होती है।
- १३. 'हिनस्ति दैत्य तेजांसि' इस मन्त्र से दीप के सहित बलिदान करने से और घण्टा बन्धन करने से बालग्रहशान्ति होती है।
- १४. प्रथमावृत्ति अनुलोम से द्वितीयावृत्ति विपरीत से तृतीयावृत्ति पुनः अनुलोम पाठ करने से शीघ्र कार्य सिद्धि होती है।
- १५. 'दुर्गेस्मृता。' यह आधा मन्त्र पढ़ कर फिर 'पदन्ति के यच्च दूर के इस ऋचा को फिर 'दारिद्रच दु:ख。' इस आधे मन्त्र का लक्ष अयुत (१००००) सहस्र (१०००) शत (१००) जप करने से सर्वापत्ति दूर होती है।
- १६. 'कांसोस्मितां' इस ऋग् वेदस्थ श्रीसूक्तकी ऋचा से सम्पुट करने से लक्ष्मी प्राप्त होती है।
- १७. प्रत्येक मन्त्र को 'अनृणा अस्मिन्。' इस ऋचा से सम्पुट करने से ऋण का नाश होता है।
- १८. 'एव मुक्त्वा समुत्पत्य。' इस मन्त्र से प्रत्येक मन्त्रों का सम्पुट करने से मारण प्रयोग सिद्ध होता है।
- १९. 'ज्ञानिनामिपचेतांसि。' इस श्लोक के जपमात्र से तुरन्त मोहन सिद्धि होती है और इस मन्त्र से सम्पुट करने से तो अवश्य ही शीघ्र मोहन होता है।
- २०. 'रोगान शेषान्。' इस मन्त्र के सम्पुट से वा केवल पाठ से सकल रोग शान्ति होती है।
- २१. 'इत्युक्ता सा तदादेवी。' इस मन्त्र के सम्पुट से वा पृथक जप करने से विद्या प्राप्ति होती है, और वाणी का विकार नाश होता है।
- २२. 'भगवत्या कृतंसर्व。' एक सौ बारह अक्षर का यह मन्त्र सम्पूर्ण आपित दूर करने वाला और सब मनोरथ का परिपूर्ण करने वाला है।
- २३. 'देवि प्रपन्नार्ति हरे。' इससे प्रत्येक मन्त्रों का सम्पुट करने से वा लक्षायुत सहस्रशत कार्यानुसार जप करने से सब कार्य सिद्धि होती है। इस प्रयोग में दीप के आगे केवल नमस्कार करने से अति शीघ्र सिद्धि होती है। कामबीज से सम्पुटित करके प्रतिदिन तीन आवृत्ति करे ४१ दिन पर्यन्त, तो सर्व कार्य सिद्धि होती है।
- २४. उक्त रीति से २१ दिन बारह २ आवृत्ति पाठ करने से वशीकरण होता है।
- २५. मायावीज से सम्पुटित करने से फट् पल्लव के सिहत ७ दिन तेरह तेरह आवृत्ति करने से उच्चाटनसिद्धि होती है।
- २६. उसी के सदृश ४ दिन ग्यारह ग्यारह आवृत्ति करने से सब उपद्रव का शमन होता है।

- २७. श्रीं बीज से सम्पुटित करके पन्द्रह २ आवृत्ति ४९ दिन में करने से लक्ष्मी प्राप्ति।
- २८. प्रत्येक श्लोक वाग्बीज से सम्पुटित करके १०० आवृत्ति करने से विद्या प्राप्ति होती है। इनके अतिरिक्त सम्पुट करने के अनेकों मन्त्र हैं गुरुजी से जानना चाहिये।

सप्तशती पाठ के मन्त्रों के पूर्व एक बार अन्य मन्त्र के पाठ से पल्लव पाठ होता है। और सम्पुट दो प्रकार का होता है। जिस मन्त्र से सम्पुट करना हो उसका अध्याय के आदि में अन्त में एक २ बार उच्चारण करे। और दूसरा सम्पुट सब श्लोकों के बाद दो दो बार और आदि में एक बार अन्त में एक बार मन्त्र पढ़ा जाता है यदि सप्तशती के मन्त्रों के ही अन्तर्गत सम्पुट करने वाला मन्त्र का खास स्थान है वहाँ उसको पाँच बार पढ़े।

।।अथ शतचण्डी सहस्र चण्डी विधानं।।

शतचण्डी विधानं तु प्रवक्ष्ये प्रीतयेनृणाम्। नृपोपद्रवआपन्ने दुर्भिक्षे भूमिकम्पने।।१।। अतिवृष्ट्या मनावृष्टौ परचक्रभयेक्षये।। सर्वे विष्नाविनश्यन्ति शतचण्डी विधौकृते।।२।। रोगाणां वैरिणांनाशो धनपुत्रसमृद्धय:। शंकरस्य भवान्या वा प्रासाद निकटे शुभम्।।३।। मण्डपं द्वारेवद्याढ्यं कुर्यात्सध्वजतोरणम्।। तत्रकुण्डं प्रकुर्वीत प्रतीच्यां मध्यतोऽपिवा।।४।। स्नात्वा नित्यक्रियां कृत्वा वृणुयाद्दश वाडवान्।। जितेन्द्रियान्सदाचारान् कुलीनान्सत्यवादिन:।।५।। व्युत्पन्नांश्चिण्डकापाठरतांल्लज्जादयावतः।। मधुपर्कविधानेन स्वर्णवस्त्रादिदानतः।।६।। जपार्थमासनं मालां दद्यात्तेभ्योऽपि भोजनम्।। ते हिवष्यान्नमश्नन्तो मन्त्रार्थगतमानसा:।।७।। भुमौ शयानाः प्रत्येकं जपेयुश्चिण्डकास्तवम्।। मार्कण्डेयपुराणोक्तं दशकृत्वः सचेतसः।।८।। नवार्णं चिण्डकामन्त्रं जपेयुश्चायुतं पृथक्।। (पृथक् सम्पुटीकरणादिति शेष:। प्रत्येकंब्राह्मणेनायुतं १०,००० जपःकार्य्यः) यजमानः पूजयेश्च कन्यानां नवकं शुभम्।।९।। द्विवर्षाद्यादशाब्दान्ताःकुमारीः परिपूजयेत्।। नाधिकाङ्गींनहीनाङ्गींकुष्ठिनींच ब्रणाङ्कितां।।१०।। अन्धां काणां केकरां च कुरूपां लोमयुक्तनुम्। दासी जातांरोगयुक्तांदुष्टां कन्यां न पूजयेत।।११।। विप्रजामिष्टसंसिद्ध्यै यशसे क्षत्रियोद्भवाम्। वैश्यजां धनलाभाय पुत्राप्त्यै शुद्रजां यजेत्।।१२।। द्विवर्षा सा कुमार्युक्ता त्रिमूर्तिर्हायनित्रका।। चतुरब्दा तु कल्याणी पंचवर्षा तु रोहिणी।।१३।। षडब्दा कालिका प्रोक्ता चण्डिका सप्त हायनी।। अष्टवर्षा शाम्भवी स्यादु दुर्गा तु नवहायनी।।१४।। सुभद्रा दशवर्षोक्तास्ता मन्त्रैः परिपूजयेत्।। एकाद्वायाः प्रीत्यभावोरुद्राद्वा तुविवर्जिताः।।१५।। तासामावाहने मंत्राः प्रोच्यंते शङ्करोदिताः।। मन्त्राक्षरमयीं लक्ष्मीं मातृणां रूपधारिणीम्।।१६।। नवदुर्गात्मिकां साक्षात्कन्यामावाहयाम्यहम्।। कुमारिकादिकन्यानांपृजामन्त्रान्ब्रवेधुना।।१७।।

जगत्पूज्येजगद्वन्द्ये सर्वदेव स्वरूपिणि।। पूजां गृहाण कौमारि जगन्मातर्नमोस्तुते।। त्रिपुरां त्रिपुराधारांत्रिवर्ग ज्ञानरूपिणीम्।।१८।। त्रैलोक्यवन्दितां देवीं त्रिमूर्ति पूजयाम्यहम्।।१९।। कालात्मिकां कलातीतां कारुण्यहृदयां शिवाम्।। कल्याणजननीं देवीं कल्याणीं पूजयाम्यहम्।।२०।। अणिमादिगुणाधारामकाराद्यक्षरात्मिकाम्।। अनन्तशक्तिकां लक्ष्मीं रोहिणीं पूजयाम्यहम्।।२१।। कामचारां शुभांकान्तां कालचक्रस्वरूपिणीम्।। कामदां करुणोदारां कालिकां पूजयाम्यहम्।।२२।। चण्डवीरां चण्डमायां चण्डमुण्डप्रभंजनीम्।। पूजयामि महा देवीं चण्डिकां चण्डिवक्रमाम्।।२३। सदानन्दकरीं शान्तां सर्वदेवनमस्कृताम्।। सर्वभृतात्मिकां देवीं शाम्भवीं पूजयाम्यहम्।।२४।। दुर्गमे दुस्तरे कार्ये भवार्णव विनाशिनीम्।। पूजयामि सदा भक्त्या दुर्गां दुर्गार्तिनाशनीम्।।२५।। सुंदरीं स्वर्णवर्णाभां सुखसौभाग्यदायनीम्।। सुभद्रजननीं देवीं सुभद्रां पूजयाम्यहम्।।२६।। एतैर्मन्त्रैः पुराणोक्तैःस्नातां कन्यां प्रपूजयेत्।। गन्धैः पुष्पै र्भक्ष्यभोज्यैर्वस्त्रैराभराणैरिप।।२७।। वेद्यां विरचिते रम्ये सर्व्वतोभद्रमंडले।। घटं संस्थाप्य विधिवत्तत्रावाह्यार्च्चये च्छिवाम्।।२८।। तदग्रे कन्यकाश्चापि पूजयेद्ब्राह्मणानिप।। उपचारैस्तु विविधै:पूर्वोक्त वरणान्यिप।।२९।। एवं चतुर्दिनं कृत्वा पञ्चमेहोममाचरेत्।। पायसान्नैस्त्रिमध्वक्तै द्रीक्षारम्भाफलैरपि।।३०।। मातुलिङ्गै रक्षुखण्डैर्नारिकेलै: पुरैस्तिलै:।। जातीफलैराम्रफलैरन्यैर्मधुरवस्तुभि:।।३१।। सप्तशत्यादशावृत्याप्रतिश्लोकं हुतं चरेत्।। अयुतंचनवार्णेन स्थापिताग्नौविधानत:।।३२।। कृत्वावरणदेवानां होमं तन्नाममंत्रतः।। कृत्वा पूर्णाहुतिं सम्यग्देवमग्निं विसुज्य च।।३३।। अभिषिंचेच्चयष्टारं विप्रौघः कलशोदकैः।। निष्कं सुवर्णमथवा प्रत्येकं दक्षिणां दिशेत्।।३४।। भोजयेच्चशतंविप्रान्भक्ष्यभोज्यैः पृथग्विधैः।। तेभ्योपिदक्षिणां दत्वा गृह्णीयादाशिषस्ततः।।३५।। एवंकृतेजगद्वश्यं सर्वे नश्यन्त्युपद्रवाः।। राज्यंधनंयशःपुत्रा निष्टमन्यल्लभेतसः।।३६।। एतद्दशङ्गगुणर्याच्चण्डी साहस्रजं विधिम्।। विद्यामतः सदाचारान्ब्राह्मणान्वृणुयाच्छतम्।।३७।। प्रत्येकं चण्डिकापाठान्विदध्युस्तेदिशामितान्।। अयुतं प्रजपेयुस्ते प्रत्येकन्नववर्णकम्।।३८।। पूर्वीक्ताः कन्याकाःपूज्याः पूर्वमन्त्रैः सतंशुभाः।। एवं दशाहं सम्पाद्यहोमङ्कर्युः प्रयत्नतः।।३९।। सप्तशत्याः शतावृत्या प्रतिश्लोकं विधानतः।। लक्षसङ्ख्यं नवार्णेन पूर्वोक्तैर्द्रव्यसंचयैः।।४०।। होतृभ्यो दक्षिणां दत्वा पूर्वोक्तान्भोजयेद्विजान्।। सहस्रसम्मितान्साधु न्देव्याराधनतत्परान्।।४१।। एवं सहस्रसंख्या के कृतेचण्डीविधौनृणाम्।। सिध्यत्यभीप्सितं सर्वं दुखौघश्च विनश्यति।।४२।। मारीदुर्भिक्षरोगाद्या नश्यन्तिव्यसनोच्चयाः।। नेमंविधिंवदेत् दुष्टे खले चौरे गुरुद्रहि।।४३।। साधौजितेन्द्रियेदान्ते वदेद्विधिमिमंपरम्।। एवं साचंडिकातुष्टावक्तृञ्च्छ्रोतृंश्चरक्षति।।४४।।

दुर्गोपासनाकल्पद्रुमाध्याय अनुसारेण चण्डिका याँग

विषय - त्रिपञ्च सप्तिभर्वाऽपि नवैकादशिभस्तथा। अदीर्घ दिवसै: क्षिप्रं विदध्याचिण्डका मखम्।। ।।इति दुर्गा याग विधानम्।।

।।श्री जगदम्बा पूजन प्रयोगः।।

अथ सङ्कल्पः - देश कालौ सङ्कीर्त्य-मम सकुटुम्बस्य सपिरवारस्य सर्वापच्छान्तिपूर्वकं दीर्घायुर्विपुल धन धान्य पुत्र-पौत्राद्यनविच्छन्न संतित वृद्धि स्थिर लक्ष्मी कीर्ति लाभ शत्रु पराजय सदभीष्ट सिद्ध्यर्थं भूत प्रेत पिशाचादि भय निवृत्यर्थं राजभय दस्युभयादि निवृतये च श्री त्रिगुणात्मिका दुर्गा देवता प्रीति कामनया ममाशेष पापक्षयार्थं धर्मार्थं काममोक्ष पुरुषार्थं सिद्धयर्थं श्री भवानी महाकाली महालक्ष्मी महा सरस्वत्यादि त्रिगुणात्मिकायाः अनुग्रह सदैव निरन्तर प्राप्त्यर्थम् (अमुक कामनया) नवचण्डी शतचण्डीं सहस्रचण्डीं याग ब्राह्मण द्वारा अहं कारियप्ये (वा अहं किरिष्ये)।।

पुनः सङ्कल्पमादाय – तदङ्गतयायाग निर्विघ्नता पूर्वकं सिद्ध्यर्थम् श्री गणेशाम्बिका वरुणार्चनम् पुण्याहवाचनं षड्विनायक मातृकार्चनम् वसोर्धारामायुष्यमन्त्र जपं नांदीश्राद्धमाचार्यादि वरणं च करिष्ये।।

अथाचार्य - देश कालौ सङ्कीर्त्य यजमानेन वृतोऽहमाचार्य कर्म करिष्ये इति संकल्प। तत्पश्चात् - आसन शुद्धि, गौर सर्षपान्विकीर्य एवं योगिनी क्षेत्रपाल भैरव, वास्तुमण्डल, नवग्रह इत्यादि पूजन स्थापना करे।

सर्वतोभद्रमण्डलं विलिख्य तत्र ब्रह्मादि देवताः संस्थाप्य भूरिसरित्यादिमंत्रैः कलशं संस्थाप्यः पूजनम् कुर्यात् ततः कलशे देवताः स्मरेत्।। तदुपिर पूर्णपात्रं निधाय वस्त्रे भूर्जपत्रे वा ताम्रादि पत्रे यंत्रं लिखेत।। तद्यथा-

मध्ये बिन्दुं त्रिकोण तद्विहः षट्कोणं तब्द्वाह्ये वृतं तब्द्वाह्येष्टौ दलानि तदुपिर वृतं तदुपिर चतुर्विंशित पत्राणि तद्वाह्ये चतुर्द्वारं चतुरस्त्रत्रयिमिति।। एवं यन्त्रं विलिख्य तत्राष्टादश भुजाम् अष्टभुजाम् वा सिंहारूढां सौवणीं देवी मूर्तिमग्न्युतारण प्राण प्रतिष्ठा पूर्वकं प्रतिष्ठाप्य पूजयते।। (भूर्जपत्र पर लिखे हुए यन्त्र का अग्न्युतारण नहीं करे।)

अथ देवी पूजा प्रयोग - मूल मन्त्र - 'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे' से आचमन प्राणायाम करे।

संङ्कल्प - श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती त्रिगुणात्मिकाम्बिका देवता प्रसन्नार्थम् सकल मनोरथ कार्य सिद्ध्यर्थम् पात्रासादनम् पीठ पूजां यन्त्र देवता पूजनं जगदिम्बिका यथा मिलितोपचारै द्रव्येण पूजनमहं किरष्ये।

तदङ्गतया पूजनाधिकारार्थं एकादश न्यासांश्च करिष्ये।

आसन पूजनम् - आसन के नीचे जल से त्रिकोण, उसमें ॐ कूर्माय नमः। ॐ हीं आधारशिक्तकमलासनाय नमः। ॐ पृथिव्यै नमः - ऐसा गंधाक्षत पूजन करें। वहां कुशासन, उसके ऊपर मृगचर्म, उसके ऊपर कंबल-कोशेय रखें। ॐ अनन्तासनाय नमः।

ॐ विमलासनाय नमः। ॐ पद्मानसनाय नमः। स्विस्तिकासन, पद्मासन आदि सुखासन में बैठकर आसनपूजनम् – पृथ्वीति मंत्रस्य मेरुपृष्ठऋषिः कूर्मो देवता सुतलं छन्दः आसने विनियोगः। ॐ पृथ्वि त्वया. पञ्चोपचार से पूजा करे।

(अनेक प्रकार से न्यास, देह शुद्धि, प्राण प्रतिष्ठा इत्यादि का विधान है। परन्तु अत्यधिक विस्तार के भय से केवल एकादश न्यास व देवीकला मातृका न्यास लिखा है।)

एकादशन्यासः

ॐ अस्य श्री नवार्णमन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्राऋषयः गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दांसि श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वत्यो देवताः नन्दाशाकम्भरीभीमाः शक्तयः रक्तदन्तिकादुर्गाभ्रामर्यो बीजानि अग्निवायुसूर्यास्तत्त्वानि सर्वाभीष्टसिद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बिकापूजाङ्गत्वेन न्यासे विनियोगः।। ऋष्यादिन्यासः –ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्यो नमः शिरसि। गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दोभ्यो नमः मुखे।। श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती देवताभ्यो नमः हृदि।। नंदाशाकम्भरी भीमाशक्तिभ्यो नमो दक्षिणस्तने।। रक्तदन्तिका दुर्गाभ्रामरी बीजेभ्यो नमो वामस्तने।। अग्निवायुसूर्यभ्यस्तत्त्वेभ्यो नमः नाभौ। इति ऋष्यादिन्यासः मूलेन (ऐ ह्रीं क्लीं चामुंडायै विच्चे) इति करौ संशोधयेत्।।

अथैकादशन्यासाः दुर्गोपासनाकल्पस्थाः ।। (१) (प्रथमो मातृकान्यासो देवसारूप्यदः स्मृतः।। स च अङ्गुष्ठानामिकामेलनरूपया तत्त्वमुद्रया सर्वत्र न्यसेत्।। सर्वत्रादौ प्रणवोच्चारः) हीं अं नमो मूर्ष्टि। आं नमो ललाटे। इं नमो दिक्षणनेत्रे। ईं नमो वामनेत्रे। उं नमो दिक्षणकपोले। ॐ नमो वामकपोले। ऋं नमो दिक्षणकर्णे। ऋं नमो वामकर्णे। लृं नमो दिक्षनासापुटे। लृं नमो वामनासापुटे। एं नमः अध्वेष्ठि। ऐं नमः अधरोष्ठे। ओं नमः अध्वेदन्तपंकतौ। औं नमः अधोदंतपंकतौ। अं नमः जिह्वायाम्। अः नमस्तालुनि। कं नमो दिक्षणबहुमूले। खं नमो दिक्षणपकूर्परे। गं नमो दिक्षणमणिबन्धे। घं नमो दिक्षणाङ्गुल्लमूले। ङं नमो वाममणिबन्धे। इं नमो वामाङ्गुल्लमूले। जं नमो वामाङ्गुल्यग्रे। रं नमो दिक्षणपादागुल्लमूले। ठं नमो दिक्षणपादागुल्लमूले। ठं नमो दिक्षणपादागुल्लमूले। ठं नमो दिक्षणपादागुल्लमूले। गं नमो वामपादाङ्गुल्लमूले। गं नमो वामपादाङ्गुल्यग्रे। पं नमो दिक्षणपादागुल्लम्ले। गं नमो दिक्षणपादाङ्गुल्लमूले। गं नमो वामपादाङ्गुल्यग्रे। पं नमो दिक्षणपार्थे। गं नमो वामपार्थे। वं नमो पृष्ठे। भं नमो नमो नमो वामपादाङ्गुल्यग्रे। पं नमो दिक्षणपार्थे। गं नमो वामपार्थे। वं नमो पृष्ठे। भं नमो नाभौ। मं नमः उदरे। यं नमस्त्विच। रं नमः अस्थिन। लं नमो मांसे। वं नमः स्नायुषु। शं नमः अस्थिन। षं नमः मज्जायाम्। सं नमः मेदिस। हं नमः शुक्रे। क्षं नमः सर्वत्र। (इति मातृकान्यासः प्रथमः येन मांत्रिकः साङ्गवेदसमो भाति)।।१।।

(द्वितीयः सारस्वतो न्यासः)।। ॐ ऐं हीं क्लीं किनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ऐं हीं क्लीं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ऐं हीं क्लीं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ऐं हीं क्लीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ऐं हीं क्लीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ऐं हीं क्लीं करतलाभ्यां नमः। ॐ ऐं हीं क्लीं करपृष्ठाभ्यां नमः। ॐ ऐं हीं क्लीं कृर्पराभ्यां नमः। ॐ ऐं हीं क्लीं कृर्पराभ्यां नमः। ॐ ऐं हीं क्लीं हृदयाय नमः। ॐ ऐं हीं क्लीं शिरसे नमः। ॐ ऐं हीं क्लीं शिखाये नमः। ॐ ऐं हीं क्लीं किवचाय नमः। ॐ ऐं हीं क्लीं नेत्रद्वयाय नमः। ॐ ऐं हीं क्लीं नेत्रद्वयाय नमः। ॐ ऐं हीं क्लीं नेत्रद्वयाय नमः। ॐ ऐं हीं क्लीं अस्ताय नमः। ॐ ऐं हीं क्लीं पृर्वाये नमः। ॐ ऐं हीं क्लीं अग्नये नमः। ॐ ऐं हीं क्लीं दिक्षणाये नमः। ॐ ऐं हीं क्लीं उत्तराये नमः। ॐ ऐं हीं क्लीं पिश्चमाये नमः। ॐ ऐं हीं क्लीं वायवे नमः। ॐ ऐं हीं क्लीं उत्तराये नमः। ॐ ऐं हीं क्लीं इशानाय नमः। ॐ ऐं हीं क्लीं कर्ध्वाये नमः। ॐ ऐं हीं क्लीं अधस्तात् नमः। (इति द्वितीयः सारस्वतो न्यासः येन दुरितं जाड्यं वाक्पापसञ्चयश्च विलयं याति)।।२।। (तृतीयो मातृगणन्यासः)।।ब्रह्माणी मां पूर्वतः पातु। माहेश्वरी माम् आग्नेयां पातु। कौमारी मां दिक्षणे पातु। वैष्णवी मां नैर्ऋत्यां पातु। वाराही मां पिश्चमे पातु। नारसिंही मां वायव्यां पातु। इन्द्राणी माम् उत्तरे पातु। चामुण्डा माम् ईशान्यां पातु। व्योमेश्वरी माम् ऊर्ध्वं पातु। सप्तद्वीपेश्वरी मां भूमौ पातु। हीं नागेश्वरी अधः मां पातु।। (इति मातृगणन्यासस्त्रैलोक्यविजयप्रदस्तृतीयः)।।३।।

(चतुर्थो न्यासः) कमलांकुशमंडिता नंदजा पूर्वांगं मे पातु।। खड्गपात्रधरा रक्तदंतिका दिक्षणांगं मे पातु।। पुष्पपल्लवसंयुता शाकंभरी पश्चिमांगं मे पातु।। धनुर्बाणकरा दुर्गा वामांगं मे पातु।। शिरः पात्रकरा भीमा मस्तकाच्चरणाविध मां पातु। चित्रकांतिभृद्भ्रामरी पादादिमस्तकांतं मे पातु। इति जरामृत्युहरो नंदजादिन्यासश्चतुर्थः।।४।।

(पंचमो न्यासः) ऐं पादादिनाभिपर्यंतं ब्रह्मा मां पातु। श्रीं नाभेर्विशुद्धिपर्यंतं जनार्दनो मां पातु। हंसौं विशुद्धेः ब्रह्मरंध्रांतं रुद्रो मां पातु। ऐं हंसो पदद्वयं मे पातु। श्रीं वैनतेयः करद्वयं मे पातु। हंसौं वृषभश्चक्षुषी मे पातु। हीं गजाननः सर्वांगं मे पातु। हीं आनंदमयो हिरः परापरौ देहभागौ मे पातु। (इति सर्वकामजो ब्रह्मादिन्यासः पंचम।।५।।

(षष्ठो न्यासः) हीं अष्टादशभुजा लक्ष्मीर्मध्यभागं मे पातु। ऐं अष्टभुजा महासरस्वती कर्ध्वभागं मे पातु। दशभुजा महाकाली अधोभागं मे पातु। क्षौं सिंहो हस्तद्वयं मे पातु। ऐं परहंसोऽक्षियुगं मे पातु। महिषारूढो यमः पदद्वयं मे पातु। हंसौं महेशश्चंडिकायुक्तः सर्वांगं मे पातु (इति महालक्ष्म्यादिन्यासः सद्गतिप्रदः षष्टः।।६।।

(सप्तमो न्यासः) ऐं नमो ब्रह्मरंध्रे। ह्रीं नमो दक्षिणनेत्रे। क्लीं नमो वामनेत्रे। चां नमो दिक्षणकर्णे। मुं नमो वामकर्णे। डां नमो दिक्षणनासापुटे। यैं नमो वामनासापुटे। विं नमो मुखे। च्वें नमो गुह्ये। इति मूलाक्षरन्यासो रोगक्षयकरः सप्तमः।।७।।

(अष्टमो न्यासः) च्चें नमो गुह्ये। विं नमो मुखे। यैं नमो वामनासापुटे। डां नमो दिक्षणनासापुटे। मुं नमो वामकर्णे। चां नमो दिक्षणकर्णे। क्लीं नमो वामनेत्रे। हीं नमो दिक्षणनेत्रे। ऐं नमो ब्रह्मरंध्रे। (इति विलोमाक्षरन्यासः सर्वदुःखनाशकोऽष्टमः।।८।। (नवमो न्यासः) मूलमुच्चार्य मस्तकाच्चरणांतं चरणान्मस्तकांतं अष्टवारं व्यापकं कुर्यात्।। स यथा-प्रथमं पुरतो मूलेन मस्तकाच्चरणाविधः।।१।। ततश्चरणान्मस्तकाविध मूलोच्चारेण व्यापकम्।।२।। एवं दिक्षणतः पश्चाद्वामभागे चेति प्रतिदिग्भागेऽनुलोम- विलोमतया द्विद्विरिति अष्टवारं व्यापकं कुर्यात्।। (इति देवताप्राप्तिकरो मूलव्यापको नवमः।।९।। (दशमे न्यासः) मूलमुच्चार्य हृदयाय नमः।। एवं प्रत्यंगं सर्वमूलमुच्चार्य षडंगेषु न्यसेत्।। (इति मूलषडंगन्यासस्त्रैलोक्य वशकरो दशमः।।१०।।)

(एकादशो न्यासः: खिंड्गनी शुलिनी घोरा गिंदनी चिक्रणी तथा ।।शंखिनी चापिनी बाणभुशुंडीपरिघायुधा।।१।। सौम्यासौम्यतराऽशेषसौम्येभ्यस्त्वतिसुंदरी। परापराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी।।२।। यच्च किंचित्क्वचिद्वस्तु सदसद्वाखिलात्मिके।। तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं किं स्तूयसे मया।।३।। यया त्वया जगत्स्रष्टा जगत्पात्यत्ति यो जगत्।। सोऽति निद्रावशं नीतः कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः।।४।। विष्णु शरीरग्रहणमहमीशान एव च।। कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतुं शक्तिमान्भवेत्।।५।। आद्यं वाग्बीजं ऐं कृष्णतरं ध्यात्वा सर्वांगे विन्यसेत्।। शुलेन पाहि नो देवि पाहि खङ्गेन चांबिके।। घंटास्वनेन नः पाहि चापज्यानिः स्वनेन च।।१।। प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चंडिके रक्ष दक्षिणे।। भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि।।२।। सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरंति ते।। यानि चात्यर्थघोराणि तै रक्षास्माँस्तथा भुवम्।।३।। खङ्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके।। करपल्लवसंगीनि तैरस्मान्रक्ष सर्वतः।।४।। द्वितीयं मायाबीजं ह्रीं सूर्यसदृशं ध्यात्वा सर्वांगे विन्यसेत्।। सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्ति-समन्विते।। भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते।।१।। एतत्ते वदनं सौम्यं लोचनत्रयभूषितम्।। पातु नः सर्वभूतेभ्यः कात्यायनि नमोऽस्तु ते।।२।। ज्वालाकरालमत्युग्रमशेषासुरसूदनम्।। त्रिशूलः पातु नो भीतेर्भद्रकालि नमोस्तु ते।।३।। हिनस्ति दैत्येतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्।। सा घंटा पातु नो देवि पापेभ्योऽनः सुतानिव।।४।। असुरासुग्वसापंकचर्चितस्ते करोज्ज्वलः।। शुभाय खङ्गो भवतु चंडिके त्वां नता वयम्।।५।। तृतीयं कामबीजं क्लीं स्फटिकाभं ध्यात्वा सर्वांगे विन्यसेत्।। (इति सुक्तादिबीजत्रयन्यासः।। सर्वानिष्टहरः सर्वाभीष्टदः सर्वरक्षाकरश्चैकादशो न्यास:।।) इत्यैकादशन्यसप्रयोग:।।

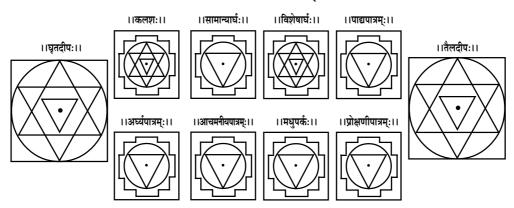
अथ देवीकलामातृकान्यासः

अस्य श्रीदेवीकलामातकान्यासस्य प्रजापतिऋषिः गायत्रीछंदः श्रीमातकाशारदा देवता हलो बीजानि स्वरा: शक्तय: सप्तशतीपाठ जपादौ (होमादौ च) मातृकान्यासे विनियोग:।। प्रजापतिऋषयेः शिरसि। गायत्री छंदसेः मुखे। शारदादेवतायैःहृदि। हल्बीजेभ्योः गुह्ये। स्वरशक्तिभ्योः, पादयो:। विनियोगायः, सर्वांगे। अं आं हृदयायः,। इं ईं शिरसेः,। उं ऊं शिखायैः,। एं ऐं कवचायः। ओं औं नेत्रत्रयायः। अं अ: अस्त्रायः। एवं करांगन्यासं कृत्वा ध्यायेत्-शंखं चक्राब्जपरश् कपालाक्षकमालिका:। पुस्तकातनुकंभौ च त्रिशुलं दधतीं करै:।। सितपतीसितश्वेतरक्तवर्णैसिलोचनैः। पंचास्यसंयुतां चंद्रसकान्तिं शारदां भजे।। इति ध्यात्वा मातृका न्यसेत्।। ह्रीं अं निवृत्यैः ललाटे। आं प्रतिष्ठायैः मुखवृत्ते। इं विद्यायैः दक्षनेत्रे। ईं शान्त्यैः वामनेत्रे। उं धरायैः दक्षकर्णे। ऊं दीपिकायैः वामकर्णे। ऋं रेचिकायैः दक्षनासापूटे। ऋं मोचिकायैः वामनासापुटे। लुं परायैः दक्षकपोले। लुं सूक्ष्मायैः वामकपोले। एं सूक्ष्मामृतायैः ऊर्ध्विष्ठे। ऐं ज्ञानामृतायैः अधरोष्ठे। ओं आप्यायिन्यैः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ। औं व्यापिन्यैः अधोदन्तपंक्तौ। अं व्योमरूपायैः जिह्वायाम्। अ: अनन्तायैः कंठे। कं सृष्टयैः दक्षबाहुमूले। खं ऋद्भ्यैः दक्षकूर्परे। गं स्मृत्यैःदक्षमणिबंधे। घं मेधायैःदक्षहस्ताङ्गलिमूले। ङं श्रियैः दक्षहस्तांगुल्यग्रे। चं लक्ष्म्यैः वामबाहुमूले। छं द्युत्यैः वामकूर्परे। जं स्थिरायैः वाममणिबंधे। झं स्थित्यैः वामहस्तांगुलिमूले। ञं सिद्ध्यैःवामहस्तांगुल्यग्रेः टं जरायैः दक्षपाद मूले। ठं पालिन्यै。दक्षजानुनि। डं क्षान्त्यै。दक्षगुल्फे। ढं ईश्वर्यै。 दक्षपादांगुलि मुले। णं रत्यै。दक्षपादांगुल्यग्रे। तं कामिकायै。 वामपादमुले। थं वरदायै。 वामजानुनि। दं आल्हादिन्यै,वामगुल्फे। धं प्रीत्यै,वामपादांगुलिमुले। नं दीर्घायै, वामपादांगुल्यग्रे। पं तीक्ष्णायै。दक्षपार्श्वे। फं रौद्ये。वामपार्श्वे। बं भयायै。पृष्ठे। भं निद्रायै。नाभौ। मं तंद्रिकायै。जठरे। यं क्षुधायै. हृदि। रं क्रोधिन्यै. दक्षांसे। लं क्रियायै. ककुदि। वं उत्कायै. वामांसे। शं मृत्युकायैः हृदयादिक्षहस्तान्तम्। षं पीतायैः हृदयादिवामहस्तान्तम्। सं श्वेतायैः हृदयादिदक्षपादान्तम्। हं अरुणायै。 हृदयादिवामपादान्तम्। ळं असितायै。 मूर्द्घादिपादान्तम्। क्षं अनन्तायैः पादादिमूर्द्धान्तम्। इति देवीकलामातृका न्यास:। देवीकलामातृकान्यासं कृत्वा गणपतिं स्मृत्वा देव्या दक्षिणे घृतदीपं तन्मध्ये बिन्दुत्रिकोणषट्कोणं वामे तैलदीपं तन्मध्ये बिन्दुत्रिकोण षट्कोणात्मकं यंत्रं विलिख्य संपूज्य दीपं प्रज्वाल्य सम्पूज्य प्रार्थयेत्-भो दीप देवीरूपस्त्वं。 इति दीपं संस्थाप्य शरीरशुद्ध्यर्थं नवार्णमंत्रेण षडंगन्यासाः। कलशे वरुणं संपूज्य शङ्खं घण्टां च सम्पूज्य कलशजलेन सर्वत्र प्रोक्षनते अपवित्रः पवित्रो वा

अथ पात्रासादनम् प्रयोगः

देवीपूजा में पात्रासादन प्रयोग अवश्य करना चाहिए। काष्ठ के पाटा चौकी के ऊपर अष्टगन्ध से या चन्दन से शास्त्र विधि से यन्त्र निर्माण करे। वा ताम्रपत्र या रजतपत्र पर भी निर्माण कर सकते हैं।

।।पात्रासादनयंत्रम्।।



"अथ पात्रस्थापनम्" – तत्रादौ कलशः । स्विवामे बिंदुितकोणषट्कोणवृत्त चतुरस्रात्मकं यंत्रं विलिख्य अक्षतैः पूजयेत्।। मध्ये मूलं। त्रिकोणे त्रिपदैः ऐं हीं क्लीं चामुंडायै विच्चे नमः।। एवं द्विरावृत्त्या षट्कोणे। मातृकया वृत्तं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ऋं लृं लृं एं ऐं ओं ओं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं वं टं ठं डं ढं णं तं थं दं घं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं इत्यादि क्षान्तम्।। चतुरस्रे षडंगानि। आग्नेये – ऐं हृदयायः। ऐशाने हीं शिरसेः। नेर्ऋत्ये – क्लीं शिखायैः। वायव्येः। चामुंडायै कवचायः। मध्ये – विच्चे नेत्रत्रयायः। चतुर्दिक्षु मूलेन अस्त्रायः।। इति यंत्रं संपूज्य हुमिति आधारं प्रक्षाल्य।। मूलेन संस्थाप्य।। ॐ मं विह्नमंडलाय दशकलात्मने श्रीत्रिगुणात्मिका – दुर्गादेवता – कलशपात्राधाराय नमः इति संपूज्य दशकलाः पूजयेत्।। ॐ यं धूम्राचिषेः। रं ऊष्मायैः। लं ज्विलन्यैः वं ज्विलन्यैः शं विस्फुलिंगिन्यैः। षं सुश्रियैः। सं सुरूपायैः। हं किपलायैः ळं हव्यवाहायैः क्षं कव्यवाहायैः।।१०।। इति संपूज्य हुं इति पात्रं प्रक्षाल्य मूलेन संस्थाप्य सूर्यमंडलाय द्वादशकलात्मने श्रीत्रिगुणात्मिका – दुर्गा – देवता – कलशपात्राय नमः इति संपूज्य द्वादशकलाः पूजयेत्।। ॐ कं भं तिपन्यैः। खं बं तािपन्यैः। गं फं धूम्रायैः घं पं मिरच्यैः। ङं नं ज्वािलन्यैः। चं धं रुच्यैः। छं दं सुषुम्णायैः। जं थं भोगदायैः। इं तं विश्वायैः। वं णं बोधिन्यैः। टं ढं धािरण्यैः। ठं डं क्षमायैः।।।१२।। इति संपूज्य।। तत्र

विलोममातृकया शुद्धजलमापूरयेत्।। तद्यथा – ॐ क्षं ळं हं सं षं शं वं लं रं यं मं भं बं फं पं नं धं दं थं तं णं ढं डं ठं टं जं झं जं छं चं ङं घं गं खं कं अ: अं औं ओं ऐं एं लृं लृं ऋं ऊं उं ईं इ आं अं।। गालिनीमुद्रया (करद्वयांगुष्ठतर्जनीयसंयोगात्मिकया) निरीक्ष्य षोडशकलात्मने चंद्रमंडलाय श्रीत्रिगुणात्मिका – दुर्गादेवता – कलशामृताय नमः इति संपूज्य षोडशकलाः पूजयेत्।। अं अमृतायैः। आं मानदायैः। इं पूषायैः। ईंपुष्टयैः। उं तुष्टयैः। ऊं रत्यैः। ऋं धृत्यैः। ऋं शिशन्यैः। लृं चंद्रिकायैः। लृं कान्त्यैः। एं ज्योत्स्नायैः। ऐं श्रियैः। ओं प्रीत्यैः। ओं अंगदायैः। अं पूर्णायैः। अः पूर्णामृतायैः।।१६।। इति संपूज्य फितति संरक्ष्य, मूलेन देवीमावाह्य, आवाहनादिदशमुद्राः प्रदर्शयेत्। तद्यथा – मूलेन आवाहिता भव। स्थापिता भव। संनिहिता भव। सन्निरुद्धा भव। संमुखीकृता भव। षडंगेन सकलीकृता भव। मूलेन हदयायेत्यादि अवगुंठिता भव। अमृतीकृता भव। परमीकृता भव। योनिमुद्रां प्रदर्शयेत्। संपूज्य मत्स्यमुद्रयाऽऽच्छाद्य मूलेनाष्टवारमिभमंत्र्य धेनुं योनिं च प्रदर्शयेत्।

कलश - संशोध्य भूमिं संस्थाप्य कलशं तीर्थवारिणा। पूरियत्वा वाजिगजशालादिभ्यो मृदस्तथा।। धनकामो न्यसेत्स्वर्णं धान्यकामस्तु मौक्तिकम्। श्रीकामः कमलं न्यस्य कामार्थी दमनं (रोचनां) न्यसेत्। मोक्षकामो न्यसेद्रत्नं जयकामोऽपराजिताम्। उच्चाटनार्थं हिंगुलं वश्यार्थं शिखिमूलिकाम्।। मारणाय मरीचं तू केतकीं मोहनाय च। आकर्षणार्थं धत्तूरं प्रक्षिपेत् कलशोपरि।। जपेन्मत्रं महेशानि शृणुष्व गदतो मम। क्षिप्तं यत्कलशे हस्ते तदेमं प्रजपेन्मनुम।। हूं ऐं ऐं हीं चामुण्डाये स्वाहा।। जपेत् द्वादशलक्षं तु स्नानं तेनैव वारिण।। (इस विवरण को पात्रासादन कलश से संबंध जोड़ने पर प्रमाण मृग्य है।) इति कलशः।। एवं सर्वपात्रस्थापने पात्रासादनप्रयोगो ग्राह्यः।

अथ सामान्यार्घः ।।बंदुत्रिकोणवृत्तचतुरस्रं यंत्रं विलिख्य। मध्ये मूलं। त्रिकोणे त्रिपदैः मातृकया वृत्तं। चतुरस्रे षडंगानि फडिति आधारं प्रक्षाल्य मूलेन संस्थाप्य। मं विह्नमंडलाय दशकलात्मने श्रीत्रिगुणात्मिकादुर्गादेवता सामान्यार्घपात्राधाराय नमः इति संपूज्य पूर्वोक्ता द्वादशकलाः संपूज्य।। मूलेन शुद्धजलमापूर्य गालिनीमुद्रया निरीक्ष्य चंद्रमंडलाय षोडशकलात्मने श्रीदुर्गादेवता सामान्यार्घपात्रामृताय नमः इति संपूज्य पूर्वोक्ताः षोडशकलाः पूजयेत्।। फडिति संरक्ष्य। मूलेन देवीमावाद्य आवाहनादिमुद्राः प्रदर्श्य मूलेन संपूज्य मत्स्यमुद्रयाऽऽछाद्य मूलेनाष्टधाभिमंत्र्य धेनुमुद्रां योनिमुद्रां च दर्शयेत्।। इति सामान्यार्घः।। अथ विशेषार्घः ।।सामान्यर्घदिक्षणे आत्मश्रीचक्रयोर्मध्ये बिंदुत्रिकोणषट्कोण-वृत्तचतुरस्रात्मकं यंत्रं चंदनादिना विलिख्य अक्षतैः पूजयेत्।। मध्ये मूलं।। त्रिकोणे त्रिपदैः ऐं हीं क्लीं। चामुंडायै। विच्चे नमः।। एवं द्विरावृत्त्या षट्कोणे। मातृकया वृत्तं अं आं इत्यादि क्षान्तं।। चतुरस्रे षडंगानि। इति यंत्रं संपृज्य।। हुं इत्याधारं प्रक्षाल्य मूलेन संस्थाप्य

मं विह्नमंडलाय दशकलात्मने श्रीदुर्गादेवताविशेषार्घपात्राय नम इति संपूज्य तत्र विलोममातृकया शुद्धजलमापूर्य गालिनीमुद्रया निरीक्ष्य षोडशकलात्मने चंद्रमंडलाय श्रीदुर्गादेवताविशेषार्घपात्रामृताय नम इति संपूज्य पूर्वोक्ताः षोडशकलाः संपूज्य फडिति संरक्ष्य मूलेन देवीमावाह्यआवाहनादिदशमुद्राः प्रदर्श्य मूलेन संपूज्य मत्स्यमुद्रयाच्छाद्य मूलेन षोडशवारमिमंत्र्य धेनुमुद्रां योनिमुद्रां च प्रदर्शयेत्।।इति विशेषार्घः।।

अथ तद्दक्षिणे पाद्यपात्रं अर्घपात्रं आचमनीयपात्रं मधुपर्कपात्रं (प्रोक्षणार्थं) प्रोक्षणीपात्रं सामान्यर्घवत् संस्थाप्य पाद्यपात्रे श्यामाक (सामो) दूर्वाविष्णुक्रान्तादीनि प्रक्षिप्य अर्घ्यपात्रे सर्षपितलदूर्वाकुशप्रक्षेपः। आचमनीयपात्रे जातीफलैलालवंगकंकोल (चिनकबावा) प्रक्षेपः। मधुपर्कपात्रे दिधमधुघृतािन प्रक्षिप्य विशेषार्घिबन्दुं सर्वपात्रे प्रक्षिपेत्।। मूलेन प्रोक्षणीपात्राज्जलं गृहीत्वा तञ्जलेन पूजासामग्रीं मूलेन सम्प्रोक्ष्य आत्मानं प्रोक्षेत्।। इत्थं पात्रासादनं कृत्वा, अन्तर्यजनं यथाधिकारं कृत्वा, स्वहृदयस्थां महालक्ष्मीं ध्यात्वा, मानसोपचारैः संपूज्य, स्वात्मना सहैक्यं भावयेत्।। तत आत्मपूजां कुर्यात्।। यथा – मं मंडूकायः आधारे।। कालाग्निरुद्रायः स्वाधिष्ठाने।। कच्छपायः नाभौ।। आधारशिक्तिकूर्मानन्तपृथिवी–सागररत्नद्वीपप्रासादहेमपीठेभ्योः हृदि।। धर्मायः दक्षांसे।। ज्ञानायः वामांसे।। वैराग्यायः वामोरो।। ऐश्वर्यायः दक्षोरो। अनन्तायः हृदि।। तत्त्वपद्मायः।। आनन्दमयकन्दायः संविन्नालायः विकारमयकेसरेभ्योः प्रकृतिमयपत्रेभ्योः पंचाशद्वर्णवीजाढ्यकर्णिकायैः सूर्यमंडलायः चंद्रमंडलायः अग्नमंडलायः इत्यन्तं हृदि न्यसत्।। पीताद्याः पीठशक्तयः।। पीतायैः श्वेतायैः अरुणायैः कृष्णायैः धूम्रायैः तीत्रायैः स्पुर्लिगिन्यैः रुचिरायैः ज्वालिन्यैः।। रं वह्यासनायैः।। इति स्वदेहे पीठशक्तं विन्यसेत्।।इति।।

आत्मानं गन्धपुष्पैरभ्यर्च्य मूलेन त्रिः स्विशरिस पुष्पांजिलं दत्वा, मानसोपचारैः संपूज्य, देवरूपः सन् मूलं जप्त्वा, देव्ये जपं निवेदयेत्। ततश्च पुष्पमाघ्राय कुंभोदराय नमः इति वामे क्षिप्त्वा हस्तं प्रक्षाल्य पीठपूजां कुर्यात्।

अथ पीठ पूजा

हस्तेऽक्षतान् गृहीत्वा, ॐ पं पूर्वपीठाय नमः। ॐ पं पूर्णपीठाय नमः। कं कामपीठाय नमः। प्राच्यां दिशि – ॐ उं उड्यानपीठाय नमः। आग्नेय्याम् – मां मातृपीठाय नमः। दक्षिणे – जं जालन्धर पीठाय नमः। नैर्ऋत्ये –कं कोल्हापुरोपपीठाय नमः। पश्चिमे– पूं पूर्णिगिरिपीठाय नमः। वायव्याम् – सौं सौहारोपपीठाय नमः। उत्तरे – कं कोल्हागिरिपीठाय नमः। ऐशान्याम् – कं कामरूपीठाय नमः। – इति पीठं सम्पूजयेत्।

नमस्कार - दक्षिणे - गुरवे नमः। परमगुरवे नमः। परमेष्ठिगुरवे नमः। गुरुपंक्तये नमः। मातापितृभ्यां नमः। उपमन्यु-नारद-सनक-व्यासादिभ्यो नमः।

वामे-गं गणपतये नमः। दुं दुर्गायै नमः। सं सरस्वत्यै नमः। क्षं क्षेत्रपालाय नमः। इति नत्वा, पीठदेवताः स्थापयेत्।

पीठमध्ये – मं मण्डूकाय नमः। आं आधारशक्तयै नमः। मूं मूलप्रकृत्यै नमः। कं कालाग्निरुद्राय नमः। तदुपरि – आं आदिकूर्माय नमः। अं अनन्ताय नमः। आं आदिवराहाय नमः। पं पृथिव्यैः नमः। तदुपरि – अं अमृतार्णवाय नमः। रं रत्नद्वीपाय नमः। हं हेमगिरये नमः नं नन्दनोद्यानाय नमः। कं कल्पवृक्षाय नमः। मं मणिभूतलाय नमः। दं दिव्यमण्डपाय नमः। सं स्वर्णवेदिकायै नमः। रं रत्नसिंहासनाय नमः। धं धर्माय नमः। ज्ञां ज्ञानाय नमः। वैं वैराग्याय नमः। ऐं ऐश्वर्याय नमः। इति सम्पुज्य।

पूर्वे - अं अनैश्वर्याय नमः। पुनर्मध्ये - सं सत्त्वाय नमः। प्रं प्रबोधात्मने नमः। रं रजसे नमः। प्रं प्रकृत्यात्मने नमः। तं तमसे नमः। मं मोहात्मने नमः। सों सोममण्डलाय नमः। सूं सूर्य मण्डलाय नमः। वं विह्नमण्डलाय नमः। मं मायातत्त्वाय नमः। विं विद्यातत्त्वाय नमः। शं शिवतत्त्वाय नमः। ब्रं ब्रंह्मणे नमः। मं महेश्वराय नमः। आं आत्मने नमः। अं अन्तरात्मने नमः। पं परमात्मने नमः। जं जीवात्मने नमः। ज्ञं ज्ञानात्मने नमः। कं कन्दाय नमः। नं नीलाय नमः। पं पद्माय नमः। मं महापद्माय नमः। रं रत्नेभ्यो नमः। कं केसरेभ्यो नमः। कं किपिकायै नमः। ततो नवशक्तीः स्थापयेत्। तद्यथा - पूर्वाद्यष्टसु दिक्षु - नन्दायै नमः। भगवत्यै नमः। रक्तदन्तिकायै नमः। शाकम्भर्यै नमः। दुर्गीये नमः। भीमायै नमः। कालिकायै नमः। भ्रामर्यै नमः। मध्ये - शिवदूत्यै नमः।

अथ यंत्रदेवतास्थापनम्

इति संस्थाप्य, यथाशक्तया 'शक्ति-सहित-पीठदेवताभ्यो नमः' इति पूजयेत्।

हस्ते अक्षतान् गृहीत्वा -

बिंदुमध्ये "ऐं हीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे" श्री महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वती स्वरूपिणी श्रीत्रिगुणात्मिका दुर्गादेवतायै नमः श्रीमहाकालीः दुर्गादेवतामावाः स्थाः (बिंदोः परितो गुरुचतुष्टयमावाहयेत्) गुरवेः परात्परगुरवेः परमेष्ठिगुरवेः गुरुपंक्तयेः (षडंगम्) ऐं हृदयाय नमः। हीं शिरसेः क्लीं शिखायैः चामुंडायैः कवचायः विच्चे नेत्रत्रयायः मूलेन अस्त्रायः त्रिकोणे - (स्वाग्रादिप्रादक्षिणयेन क्रमेण) सावित्र्या सह विधात्रेः श्रिया सह विष्णवेः उमया सह शिवायः दक्षिणे क्षुं सिंहायः वामे हुं महिषायः

षट्कोणे - (अग्निशासुरवायव्ये मध्ये दिक्षु च) ऐं नन्दजायैः हीं रक्तदन्तिकायैः क्लीं शाकंभर्यैः दुं दुर्गायैः हुं भीमायैः हीं भ्रामर्यैः

(ततो अष्टपत्रे स्वाग्रादिप्रादक्षिण्यक्रमेण) ऐं ब्राह्मयैः हीं माहेश्वर्यैः क्लीं कौमार्यैः हीं वैष्णव्यैः हुं वाराह्मैः क्ष्य्रों नारसिंह्मैः लं ऐन्द्मैः स्फ्रें चामुण्डायैः

(ततश्चतुर्विशतिदले) विं विष्णुमायायैः चें चेतनायैः बुं बुद्ध्यैः निंः निद्रायैः क्षुं क्षुधायैः छां छायायैः शं शक्तयैः तृं तृष्णायैः क्षां क्षान्त्यैः जां जात्यैः लं लज्जायैः शां शान्त्यैः श्रं श्रद्धायैः कां कान्त्यैः लं लक्ष्म्यैः धृं धृत्येः श्रुं श्रुत्यैः स्मृं स्मृत्यैः दं दयायैः तुं तुष्ट्यैः पुं पुष्ट्यैः मां मातृभ्योः भ्रां भ्रान्त्यैः

(भूपुर कोणचतुष्टये आग्नेयादिकोणे) गं गणपतयेः क्षं क्षेत्रपालायः बं बटुकायः यांः योगिन्यैः

(पूर्वादिदिक्षु) अग्नयेः यमायः निऋतयेः वरुणायः वायवेः सोमायः ईशानायः ब्रह्मणेः अनंतायः

तद्बिहः - वज्रायः शक्तयेः दंडायः खड्गायः पाशायः अंकुशायः गदायैः त्रिशूलायः पद्मायः चक्रायः

तद्बिहः - वज्रहस्तायै गजारूढायै कांदबरीदेव्यैः शिक्तिहस्तायै अजवाहनायै उल्कादेव्यैः दंडहस्तायै मिहषारूढायै करालीदेव्यैः खङ्गहस्तायै शववाहनायै रक्ताक्षीदेव्यैः पाशहस्तायै मकरवाहनाये श्वेताक्षीदेव्यैः अंकुशहस्ताये मृगवाहनाये हिरताक्षीदेव्यैः गदाहस्ताये सिंहारूढाये यिक्षणीदेव्यैः शूलहस्ताये वृषभवाहनाये कालीदेव्यैः पद्महस्ताये हंसवाहनाये सुरज्येष्ठादेव्यैः चक्रहस्ताये सर्पवाहनाये सर्पराज्ञीदेव्ये नमः।। इत्यावाह्य ॐ भूः यंत्रस्थदेवताभ्यो नमः इति मूलमंत्रेण यथाशक्त्या पूजनं कुर्यात्। इति यन्त्रदेवतास्थापनम्।। प्रधान देवता पूजनम्

देवी दुर्गा पूजा

श्री राजराजेश्वरी महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती त्रिगुणात्मिका ध्यात्वा। हस्ते पुष्पमादाय ॐ खड्गं चक्रगदेषु- ॐ अक्षस्रक परशुं. - ॐ घण्टा शूलहलानि. -

ध्यानार्थे पुष्पं समर्पयामि।

आगच्छ वरदे देवि दैत्यदर्पनिषूदिनि। पूजां गृहाण सुमुखि नमस्ते शङ्करप्रिये।। सर्वतीर्थमयं वारि सर्वदेवसमन्विता। इमं घटं समागच्छ तिष्ठ देवगणैः सह।। दुर्गे देवि समागच्छ सान्निध्यमिह कल्पय। बिलपूजां गृहाणत्वमष्टाभिः शिक्तिभिः सह।। कल्याणजननीं सत्यां कामदां करुणाकराम्। अनन्तशिक्तसंपन्नां दुर्गामावाहयाम्यहम्।। साङ्गां सपरिवारां सावरणां सायुधां दुर्गामावाहयामि।

महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वतीस्वरूपिण दुर्गे देवते आवाहिता भव। स्थापिता भव। सिन्निहिता भव। सिन्निरुद्धा भव। संमुखीकृता भव। षडङ्गेन सकलीकृता भव। अवगुण्ठिता भव। अमृतीकृता भव। परमीकृता भव। इत्यावाहनादि मुद्राः प्रदर्श्य। ॐ मनोजूतिः श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती स्वरूपिणी (दुर्गे देवते) सुप्रतिष्ठिता वरदा भव।

।।ततः श्री सूक्तेन देवी न्यासं कृत्वा।।

- ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्। चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह।। शिरसि।।
- ॐ तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्।। नेत्रयो:।।
- ॐ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम्। श्रियं देवीमुप ह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्।। कर्णयो:।।
- ॐ कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्। पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोप ह्वये श्रियम्।। घ्राणयो:।।
- ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्। तां पद्मिनीमीं शरणं प्र पद्ये अलक्ष्मीमें नश्यतां त्वां वृणे।। मुखे।।
- ॐ आदित्यवर्णे तपसोऽधि जातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः। तस्य फलानि तपसा नुदन्तु या अन्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः।। ग्रीवायां।।
- ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे।। करयोः।।
- ॐ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्। अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्।। हृदी।।
- ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोप ह्वये श्रियम्।। नाभौ।।
- ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमिह। पशूनां रूपमन्नस्य मिय श्रीः श्रयतां यशः।। उदरं।।
- ॐ कर्दमेन प्रजा भूता मिय सम्भव कर्दम। श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्।। ऊर्वो।।
- ॐ आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे। नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले।। जंघयोः।।

- ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह।। वाम पादयो:।।
- ॐ आर्द्रां य: करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्। सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह।। दक्षिण चरणयो:।।
- ॐ तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम्।। पादाङ्ग्लि।।
- ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्। सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत।। सर्वांङ्गे

।।एवं न्यासं कृत्वा पूजनं कुर्यात्।। यथावकाशं राजोपचार पूजा करे।। प्रतिष्ठा की हुई मूर्ति का आवाहन नहीं करे। एवं मण्डलादि देवता की पूजा में नित्य आवाहन शब्द का प्रयोग नहीं करे।

हस्ते पुष्पाणि गृहीत्वा आवाहनं कुर्यात् ॐ हिरण्य वर्णां हरिणीं सुवर्ण रजत स्रजाम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह।। ॐ आगच्छे महादेवि सर्व सम्पत्प्रदायिनि। यावद्व्रतं समाप्येत तावत्वं सिन्नधोभव।। श्री राजराजेश्वरी महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती स्वरूपिणी दुर्गा दैव्ये नमः आवाहनम् समर्पयामि।।

(पूर्व आवाहन किया हो तो यहां पर केवल आसनादि करे।।)

आसनम् - (पुष्प व अक्षत से) ॐ तां म आवहः -, ॐ दुर्गे देवि सुरेशानि ज्ञानमार्गप्रदे शिवे। आसनं मणि भूषणाढयं गृहाण त्वं सुरेश्वरि।। श्री राजः मः - आसनम् सः

पाद्यम् - अश्वपूर्वाः -, ॐ कात्यायनि महादुर्गे चामुण्डेशङ्कर प्रिये। पाद्यं गृहाण देवेशि भद्रकालि नमोस्तुते।। श्री राजः मः - पादयोः पाद्यं - सः

अर्घ्यम् - गन्धाक्षत रक्तचन्दन पुष्प सिहतं अर्घ्यं ॐ कां सोस्मितां。 -, ॐ जगत्पूज्ये त्रिलोकेशि सर्वदानव भंजिनि। अष्टांगार्घं गृहाण त्वं देवि विश्वार्तिहारिणी।। श्री राज。 -मः - हस्तयोः अः सः

आचमनीयम् - ॐ चन्द्रांप्रभासां. -, ॐ पूरितं स्वर्णपात्रे च गाङ्गेयं निर्मलं जलम्। ददाम्याचमनं तुभ्यं स्वस्ति कुरुमहेश्वरि।। श्री राज. - म. - आचमनीयम् जलं स.

मधुपर्कः - "दिधमधुघृतं असमभाग समेल्य"। ॐ यन्मधुनो मधव्यं परम र्ठ. रूप मन्नाद्यम्। तेनाहं मधुनो मधव्येन परमेण रूपेणान्नाद्येन परमो मधव्योऽन्नादोऽसानि।। ॐ आज्यं दिध मधु श्रेष्ठं पात्र युग्म समन्वितम्। मधुपर्कं गृहाण त्वं प्रसन्नो भवशङ्कर।। श्री राजः - मः - मधुपर्कम् सः मधुपर्कान्ते आचमनीयं जलं सः स्नानम् - (गंगाजल व गुलाब जल से स्नान करावे।) ॐ आदित्य वर्णे。 - ॐ जाह्नवी तोय मानीतं शुभं कर्पूर संयुतम्।। स्नापयामि सुर श्रेष्ठे त्वां पुत्रादि फल प्रदाम्।। श्री राजः मः सर्वाङ्गे स्नानं सः

पय स्नानं - ॐ पय: पृथिव्यां。 –, ॐ कामधेनु समुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम् पावनं यज्ञ हेतुश्च पय: स्नानार्थमर्पितम्।। श्री राजः – मः – पय स्नानं सः – (शुद्ध जल से स्नान कराये)

दिध स्नानं - ॐ दिधक्राव्णोः, ॐ पयसस्तु समुद् भूतं मधुराम्लं शिशप्रभम्। दध्यानीतं मयादेवि स्नानार्थं प्रति गृह्यताम्।। श्री राजः मः – दिध स्नानम् – सः (शुद्ध जल से।) घृत स्नानम् – ॐ घतृं घृत पावानः, ॐ नवनीत समुत्पन्नं सर्व संतोष कारकम्। घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रति गृह्यताम्।। श्री राजः मः – घृतस्नानम् सः – (शुद्ध जल से।) मधु स्नानम् – ॐ मधुवाताः, ॐ तरु पुष्प समुद्भूतं – सुस्वादु मधुरं मधु। तेज पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।। ॐ श्री राजः – मः – मधु स्नानं सः (पुनः शुद्ध जल से।) शर्करा स्नानम् – ॐ अपार्ठः रसमुद्धयसः, ॐ इक्षुसार सद्भूतां शर्करापुष्टिकारिका। मलापहारिका दिव्या स्नानार्थं प्रति गृह्यताम्।। श्री राजः – मः – शर्करा स्नानम् सः (शुद्धोदक स्नान)

पञ्चामृत स्नानम् - ॐ पञ्चनद्यः, ॐ पयोदिध घृतं चैव मधुच शर्करान्वितम्। पञ्चामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रति गृह्यताम्।। श्री राजः मः - पञ्चामृत स्नानम् सः - शुद्धोदक स्नानं-

गन्धोदक स्नानम् - ॐ गन्धद्वारांः, ॐ मलयाचल सम्भूतं चन्दनागरु सम्भवम्। चन्दनं देवि देवेशि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।। श्री राजः - मः - गन्धोदक स्नानं सः शुद्धोदक स्नानंः

सुगन्धितोद्वर्त स्नानम् - ॐ अ र्ठः शुनातेः, ॐ नानासुगन्धि द्रव्यं च चन्दनं रजनीयुतम्। उद्वर्तनं मयादतं स्नानार्थं प्रति गृह्यताम।। श्री राजः - मः - उद्वर्तन स्नानम् सः शुद्धोदक स्नानम्

सुगन्धि तैल (इत्र) से - ॐ त्र्यम्बंकः, श्री राजः - मः - सुगन्धित द्रव्यं स्नानम् सः-शुद्धोदक स्नानम्।

उतरे निर्माल्यं विसृज्य मूल मंत्रेण पंचोपचारै संपूज्य अभिषेकं कुर्यात्।। अभिषेकार्थं पात्रे जलगंधपुष्परक्तचन्दन दुग्धादीनि क्षिपेत्।। श्रीसूक्तं, कनकधारास्तोत्रं, देवीसूक्तं इत्यादि अभिषेकः कार्यः।। अभिषेकान्ते आचमनीयम् जलं - समर्पयामि।। "नैत्रोदक स्पर्शः"

अमृताभिषेकोऽस्तु।।

वस्त्रं - ॐ उपैतु मांः, ॐ वस्त्रञ्च सोमदेवत्यं लज्जायास्तु निवारणम्। मया निवेदितं भक्त्या गृहाण परमेश्विर।। श्री राजः - मः - वस्त्रं - सः - वस्त्रान्ते आचमनं सः - उपवस्त्रं - ॐ क्षुत्पिपासामलांः, ॐ यामाश्रित्यमहामाया जगत्सम्मोहिनी सदा। तस्यै ते परमेशायै कल्पयाम्युतरीयकम्।। श्री राजः - मः - उपवस्त्रं - सः उपवस्त्रान्ते आचमनं सः

गन्धं - त्वां गन्धर्वाः, ॐ कुंकुमंकान्तिदं दिव्यं कामिनी कामसम्भवम्। कुंकुमेनार्चिते देवि प्रसिद परमेश्वरि।। श्री राजः - मः - गन्धं (कुंकुम) समर्पयामि।

रक्तचन्दनं - ॐ गन्धद्वारां, ॐ रक्त चन्दन संमिश्रं पारिजात समुद्भवम्। मयादतं गृहणाशु चन्दनं गन्ध संयुतम्।। श्री राजः मः रक्तचन्दनं संः

सौभाग्य सूत्रदानम् - ॐ देहि सौभाग्यमारोग्यं देहि में परमं सुखम्। रूपं देहि जयं देहि यशोदेहि द्विषो जिहा। श्री राजः - मः - सौभाग्य सूत्रं सः

अक्षतम् - अक्षत्रमीमदन्तः, ॐ रञ्जिताः कुङ्कृमौघेन अक्षताश्चातिशोभनाः। ममैषां देवि दानेन प्रसन्ना भव शोभने।। श्री राजः - मः - अक्षतम् - सः

हरिद्रा चूर्णम् एवं कञ्चल-मेहंदी - ॐ मनसः काममाकूतिं。, हरिद्रा रञ्जिते देवि सुख सौभाग्य दायिनि। तस्मात्वां पूजयाम्यत्र सुखं शान्ति प्रयच्छमे।।

चक्षुभ्यां कज्जलं रम्यं सुभगे शान्तिकारिके। कर्पूर ज्योतिरुत्पन्नं गृहाण परमेश्वरि।। श्री राजः मः - हरिद्रा एवं कज्जलं, सः -

अबीर गुलालम् - ॐ अहिरिव भोगै:, अबीरं च गुलालञ्च चोवा चन्दनमेव च। अबीरेणार्चितो देवि अत: शान्तिं प्रयच्छ मे।। श्री राजः - मः - सौभाग्यद्रव्यं - सः

सिन्दूरं - ॐ कर्दमेनप्रजाः, ॐ सिन्दूरं रक्तवर्णञ्च सिन्दूरं तिलकप्रिये। भक्त्या दतं मयादेवि सिन्दुरं प्रति गृह्यताम्।। श्री राजः - मः - सिन्दुरं सः।।

सुगन्धित तैलं (इत्र) - ॐ आप: सृजन्तुः, ॐ चन्दना गरुकपूरै: संयुतं कुंकुंमं तथा। कस्तूर्या दि सुगन्धाश्च सर्वाङ्गेषु विलेपनम्।। श्री राजः – मः – सुगन्धित द्रव्यं – सः

पुष्पं - ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं -, ॐ मन्दारपारिजातादि पाटली केतकानि च। जाती चम्पक पुष्पाणि गृहाण मेतानि शोभने।। श्री राजः - मः - पुष्पम् - सः

बिल्वपत्राणि - ॐ आर्द्रां यः., ॐ अमृतोद्भवः श्रीवृक्षो महादेवि प्रियः सदा। बिल्वपत्रं प्रयच्छामि पवित्रं ते सुरेश्वरि।। श्री राजः - मः - बिल्व पत्रं - सः -

पुष्पमालाम् - तां मवाहः, ॐ सूरिभ पुष्पिनचयैः ग्रिथतां शुभमालिकाम्। ददािम तव शोभार्थं गृहाण परमेश्विरि।। श्री राजः - मः - पुष्पमालाम् - सः आभूषणम् - ॐ अङ्गंहरेः पुलक भूषणमाश्रयन्ती भृङ्गाङ्गनेव मुकुला भरणं तमालम्। अङ्गीकृताखिलिवभूति - रपाङ्गलीला माङ्गल्यदास्तु मम मङ्गल देवतायाः। ॐ हार कङ्कण केयूर मेखला कुण्डला दिभिः। रत्नाढयं कुण्ऽलोपेतं भूषणं प्रति गृह्यताम।। श्री राजः - मः - आभूषणं सः

अथ अंग पूजा

।।हस्ते गन्धाक्षतं पुष्पं गृहीत्वा दक्षिणेनार्चयेत्।।

ॐ ऐं हीं क्लीं दुर्गाये नमः पादौ पूजयामिः, मंगलायैः गुल्फौ पूजयामिः, भगवत्यैः जंघे पूजयामिः, कौमार्यैः जानुनी पूजयामिः, वागीश्वर्यैः उरू पूजयामिः, वरदायै कटीः, पद्माकरवासिन्यैः स्तनौ पूजयामिः, मिहषमिदन्यैः कंठं पूजयामिः, उमासुतायैः स्कंधौ पूजयामिः, इन्द्राण्यैः भुजौ पूजयामिः, गौर्यैः हस्तौ पूजयामिः, मोहवत्यैः मुखं पूजयामिः, शिवायैः कर्णौ पूजयामिः, अन्नपूर्णायैः नेत्रे पूजयामिः, कमलायैः ललाटं पूजयामिः, महालक्ष्म्यैः सर्वांग पूजयामिः, देव्या दक्षिणे सिंहं पूजयामिः। वामे मिहषं पूजयामिः। इत्यंगपूजा।

।।अथावरण पूजा।।

प्रथमावरणम् – वामेन 'तत्त्वमुद्रया तर्पणम्। दक्षिणेन 'ज्ञानमुद्रया पूजनम्। प्रार्थना – सिञ्चन्मयपरे देवि परामृतचरुप्रिये। अनुज्ञां देहि मे मातः परिवारार्चनाय ते।। यथा – दिक्षणेनाऽक्षत – पुष्पादिना पूजयामीति सम्पूज्य, 'वामकरधृतार्द्रखण्डेन विशेषार्घजलैस्तर्पयाम्येवं सर्वत्र। हीं ऐं हीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वत्यै नमः श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं ऐं हीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाकाल्ये नमः श्रीमहाकाली श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं ऐं हीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे साङ्गायै सपरिवारयै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहालक्ष्म्यै नमः श्रीमहालक्ष्मी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं ऐं हीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहासरस्वत्यै नमः श्रीमहासरस्वती श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि।

१. बांये हाथ से तत्व मुद्रा से तर्पण करे।

२. दाहिने हाथ से ज्ञान मुद्रा से पूजा (अर्चना करे)।

३. अदरक के खण्ड से विशेष अर्घ जल के द्वारा तर्पण करे।

बिन्दो: परितो गुरुचतुष्टयं पूजयेत् -

हीं गुरवे नमः गुरुशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं परमगुरवे नमः परमगुरुशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं परात्परगुरवे नमः परात्परगुरुशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं परमेष्ठिगुरवे नमः परमेष्ठिगुरुशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

षडङ्ग पूजयेत् – हीं ऐं हृदयाय नमः हृदयशिक्त श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं शिरसे नमः शिरःशिक्त श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं क्लीं शिखाये नमः शिखाशिक्त श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं चामुण्डाये कवचाय नमः कवचशिक्त श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं विच्चे नेत्रत्रयाय नमः नेत्रशिक्त श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। मुलेन अस्त्राय नमः अस्त्रशिक्त श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

प्रथमावरण देवताभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धं पुष्पं समर्पयामि। सामान्यार्घजलमादाय – एताः प्रथमावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु। पुष्पाञ्चलिमादाय – अभीष्टसिद्धं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।।१।।

पुष्पाञ्जलि दत्वा। अनेन प्रथमावरण देवतापूजनेन त्रिगुणात्मिका श्री दुर्गादेवता प्रीयताम्। योनिमुद्रया प्रणमेत्। इति प्रथमावरणम्।

द्वितीयावरणम् - त्रिकोणे स्वाग्रादिप्रादिक्षण्येन पूजयेत् हीं सावित्र्या सह विधात्रे नमः विधातृशिक्त श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं श्रिया सह विष्णवे नमः विष्णुशिक्त श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं उमया सह शिवाय नमः शिवशिक्त श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं क्षुं सिंहाय नमः सिंहशिक्त श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं हुं मिहषाय नमः मिहषशिक्त श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

द्वितीयावरणदेवताभ्यो नमः गन्धं पुष्पं समर्पयामि।

सामान्यर्घजलमादाय, एताः द्वितीयावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु।

पुष्पाञ्चिलमादाय – अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम्।।२।।

पुष्पाञ्जलि दत्वा। अनेन द्वितीयावरणदेवतापूजनेन त्रिगुणात्मिका श्रीदुर्गादेवता प्रीयताम्। योनिमुद्रया प्रणमेत्। इति द्वितीयावरणम्।

तृतीयावरणम् - षट्कोणेऽग्नीशासुरवायव्ये मध्ये दिक्षु च पूजयेत् - हीं ऐं नन्दजायै नमः नन्दजाशिक्त श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं रक्तदन्तिकायै नमः रक्तदन्तिकाशिक्त श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं क्लीं शाकम्भर्यै नमः शाकम्भरीशिक्त श्रीपादुकां पूजयामि

तर्पयामि। हीं दुं दुर्गायै नमः दुर्गाशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं हुं भीमायै नमः भीमाशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं भ्रामर्थै नमः भ्रामरीशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। तृतीयावरणदेवताभ्यो नमः गन्धं पुष्पं समर्पयामि।

सामान्यार्घजलमादाय, एतास्तृतीयावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु।

पुष्पाञ्चिलमादाय - अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम्।।३।।

पुष्पाञ्जलि दत्वा। अनेन तृतीयावरणदेवतापूजनेन त्रिगुणात्मिका श्रीदुर्गादेवता प्रीयताम्। योनिमुद्रया प्रणमेत्। इति तृतीयावरणम्।

चतुर्थावरणम् - ततोऽष्टपत्रे स्वाग्रादिप्रादक्षिण्येन पूजयेत् -

हीं ऐं ब्राह्मयै नमः ब्राह्मीशिक्त श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं माहेश्वर्ये नमः माहेश्वरीशिक्त श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं क्लीं कौमार्ये नमः कौमारीशिक्त श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं वैष्णव्ये नमः वैष्णवीशिक्त श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं लृं वाराह्मे नमः वाराहीशिक्त श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं क्षे नमः नारिसंह्मेशिक्त श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं लं ऐन्द्रये नमः ऐन्द्रीयशिक्त श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं क्षे चामुण्डाये नमः चामुण्डाशिक्त श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

मध्ये - ह्रीं लक्ष्म्ये नमः लक्ष्मीशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

चतुर्थावरणदेवताभ्यो नमः गन्धं पुष्पं समर्पयामि।

सामान्यार्घजलमादाय, एताश्चतुर्थावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु।

पुष्पाञ्जलिमादाय - अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम्।।४।।

पुष्पाञ्जलि दत्वा। अनेन चतुर्थावरणदेवतापूजनेन त्रिगुणात्मिका श्रीदुर्गादेवता प्रीयताम्। योनिमुद्रया प्रणमेत्। इति चतुर्थावरणम्।

पञ्चमावरणम् - ततश्चतुविंशतिदले स्वाग्रादिप्रादिक्षण्येन - हीं विं विष्णुमायायै नमः विष्णुमायाशिक्त श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं चें चेतनायै नमः चेतनाशिक्त श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं बुं बुद्धयै नमः बुद्धिशिक्त श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं निं निद्रायै नमः निद्राशिक्त श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं कुं क्षुधायै नमः क्षुधाशिक्त श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं छां छायायै नमः छायाशिक्त श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं तृं तृष्णायै

नमः तृष्णाशिक्त श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्रीं क्षां क्षान्त्ये नमः क्षान्तिशिक्त श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्रीं जां जात्ये नमः जातिशिक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्रीं लं लज्जाये नमः लज्जाशिक्त श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्रीं शां शान्त्ये नमः शान्तिशिक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्रीं श्रं श्रद्धाशिक्त श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्रीं लं लक्ष्म्ये नमः लक्ष्मीशिक्त श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्रीं शृं शृत्ये नमः धृतिशिक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्रीं लं लक्ष्म्ये नमः शृतिशिक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्रीं शृं श्रुत्ये नमः श्रुतिशिक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्रीं स्मृं स्मृत्यें नमः स्मृतिशिक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्रीं दं दयाये नमः दयाशिक्त श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्रीं तुं तुष्ट्ये नमस्तुष्टिशिक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्रीं मां मातृभ्यो नमः मातृशिक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्रीं मां मातृभ्यो नमः मातृशिक्त श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्रीं भां भान्त्यो नमः भानृशिक्त श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्रीं मां मातृभ्यो नमः मातृशिक्त श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्रीं भां भान्त्यो नमः भानिशिक्त श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

पञ्चमावरणदेवताभ्यो नमः गन्धं पुष्पं समर्पयामि।

सामान्यार्घजलमादाय, एताःपञ्चमावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु।

पुष्पाञ्जलिमादाय - अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम्।।५।।

पुष्पाञ्जलि दत्वा। अनेन पञ्चमावरणदेवतापूजनेन त्रिगुणात्मिका श्रीदुर्गादेवता प्रीयताम्। योनिमुद्रया प्रणमेत्। इति पञ्चमावरणम्।

षष्ठावरणम् - भूपुरे कोणचतुष्टये आग्नेयादिकोणमारभ्य हीं गं गणपतये नमः गणपितशिक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं क्षं क्षेत्रपालाय नमः क्षेत्रपालशिक्त श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं बं बटुकाय नमः बटुकशिक्त श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं यां योगिन्ये नमः योगिनीशिक्त श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

षष्टावरणदेवताभ्यो नमः गन्धं पुष्पं समर्पयामि।

सामान्यार्घजलमादाय, एताः षष्ठावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु।

पुष्पाञ्जलिमादाय - अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं षष्ठावरणार्चनम्।।६।।

पुष्पाञ्जलि दत्वा। अनेन षष्ठा वरणदेवतापूजनेन त्रिगुणात्मिका श्रीदुर्गादेवता प्रीयताम्। योनिमुद्रया प्रणमेत्। इति षष्ठावरणम्। सप्तमावरणम् - पूर्वादिदशदिक्षु - हीं लं इन्द्राय नमः इन्द्रशिक्त श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं रं अग्नये नमः अग्निशिक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं यं यमाय नमः यमशिक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं क्षं निर्ऋतये नमः निर्ऋतिशिक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं वं वरुणाय नमः वरुणशिक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं यं वायवे नमः वायुशिक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं सं सोमाय नमः सोमशिक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं हं ईशानाय नमः ईशानशिक्त श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं अनन्ताय नमः अनन्तशिक्त श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं अनन्ताय नमः अनन्तशिक्त श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

सप्तमावरणदेवताभ्यो नमः गन्धं पुष्पं समर्पयामि।

सामान्यार्घजलमादाय, एताः सप्तमावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु।

पुष्पाञ्जलिमादाय - अभीष्टसिद्धं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं-सप्तमावरणार्चनम्।।७।।

पुष्पाञ्जलि दत्वा। अनेन सप्तमावरणदेवतापूजनेन त्रिगुणात्मिका श्रीदुर्गादेवता प्रीयताम्। योनिमुद्रया प्रणमेत्। इति सप्तमावरणम्।

अष्टमावरणम् - तद्बिहः पूर्वीदिषु - हीं वं वज्राय नमः वज्रशिक्त श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं शं शक्त्यै नमः शिक्त श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं दं दण्डाय नमः दण्डशिक्त श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं खं खड्गाय नमः खड्गशिक्त श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं गं पाशाय नमः पाशशिक्त श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं अं अङ्कुशाय नमः अङ्कुशशिक्त श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं गं गदायै नमः गदाशिक्त श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं त्रं त्रिशूलाय नमः त्रिशूलशिक्त श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं पं पद्माय नमः पद्मशिक्त श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। हीं चं चक्राय नमः चक्रशिक्त श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

अष्टमावरणदेवताभ्यो नमः गन्धं पुष्पं समर्पयामि।

सामान्यार्घजलमादाय, एताः अष्टमावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु।

पुष्पाञ्चित्तमादाय - अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यमष्टमावरणार्चनम्।।

पुष्पाञ्जलि दत्वा। अनेनाऽष्टमावरणदेवतापूजनेन त्रिगुणात्मिका श्रीदुर्गादेवता प्रीयताम्। योनिमुद्रया प्रणमेत्। इत्यष्टमावरणम्। नवमावरणम् - कलशात् पूर्वीदिदिक्षु - हीं वज्रहस्तायै गजारूढायै कादम्बरी-देव्यै नमः कादम्बरीदेवीशिक्त श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। शिक्तहस्तायै अजवाहनायै उल्कादेव्यै नमः उल्कादेवीशिक्त श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। दण्डहस्तायै मिहषारूढायै करालीदेव्यै नमः करालीदेवीशिक्त श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। खड्गहस्तायै शववाहनायै रक्ताक्षीदेव्यै नमः रक्ताक्षीदेवीशिक्त श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। पाशहस्तायै मकरवाहनायै श्वेताक्षीदेव्यै नमः श्वेताक्षीदेवीशिक्त श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। अङ्कृशहस्तायै मृगवाहनायै हरिताक्षी देव्यै नमः हरिताक्षीदेवीशिक्त श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। गदाहस्तायै सिंहारूढायै यक्षिणीदेव्यै नमः यक्षिणीदेवीशिक्त श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। शूलहस्तायै वृषभवाहनायै कालीदेव्यै नमः कालीदेवीशिक्त श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। पद्महस्तायै हंसवाहनायै सुरज्येष्ठादेव्यै नमः सुरज्येष्ठादेवीशिक्त श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। चक्रहस्तायै सर्पवाहनायै सर्पराज्ञीदेव्यै नमः सर्पराज्ञीदेवीशिक्त श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। चक्रहस्तायै सर्पवाहनायै सर्पराज्ञीदेव्यै नमः सर्पराज्ञीदेवीशिक्त श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

नवमावरणदेवताभ्यो नमः गन्धं पृष्पं समर्पयामि।

सामान्यार्घजलमादाय, एताः नवमावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु।

पुष्पाञ्जलिमादाय - अभीष्टिसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं नवमावरणार्चनम्।। पुष्पाञ्जलि दत्वा। अनेन नवमावरणदेवतापूजनेन त्रिगुणात्मिका श्रीदुर्गादेवता प्रीयताम्। योनिमुद्रया प्रणमेत्। इति नवमावरणम्।

।।इति आवरणपूजा।।

नानाविध पत्रपुष्पादि से अष्टोत्तर शत नाम के द्वारा अर्चना भी करे। (ललिता वा दुर्गाष्टोतरशत नाम से) (सहस्र नामावलि से भी अर्चना करनी चाहिए।)

धूपम् - ॐ यः शुचिः, ॐ दशाङ्ग गुग्गुलं धूप चन्दनागरु संयुतम्। समर्पितं मया भक्त्या महादेवी प्रति गृह्यताम्।। श्री राजः महाः - धूप माघ्रापयामि।

दीपम् - सरिसजिनलये सरोज हस्ते धवल तरांशुक गन्ध माल्य शोभे। भगवित हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवन भूतिकरिप्रसीद मह्मम्।। ॐ चन्द्रमा。-, श्री राजः - महाः दीपं दर्शयामि। हस्त प्रक्षालनम्।

नैवेद्यम् - तत्रादौ देव्या अग्रे दक्षिणतोः, जलेन चतुरस्रं मंडलं कृत्वा। भोजनपात्रं संस्थाप्य। ॐ नाभ्याः, -,

ॐ आमीलिताक्षमिधगम्य मुदा मुकुन्द मानन्द कन्दमिनमेष मनङ्ग तन्त्रम्। आकेकर स्थित कनीनिक पक्ष्मनेत्रं भूत्यै भवेन्मम भुजङ्गशयाङ्गनायाः। ग्रास मुद्राः प्रदर्शयेत् –

श्री राजः महाः – अमृतं रूपं नैवेद्य – सः नैवेद्यान्ते आः सः उतरा आपोशनं – समर्पयामि एवं पुन: जलं – सः

करोद्वर्तनम् - ॐ अ र्ठः शुनातेः, श्री राजः महाः करोद्वर्तनार्थे गन्धं, चन्दनं - सः ताम्बूलंपूगीफलम् - ॐ या फलिनीः -, ॐ पूगीफलं -, श्री राजः महाः मुखशुद्धयर्थं ताम्बूलं पूगीफलम् - सः

ऋतुफलम् - ॐ यत्पुरुषेणः - (अन्य) (ताम्बुल से पूर्व भी ऋतुफल अर्पण कर सकते हैं।) फलम् - कैलासाचल कन्दरालयकरी गौरी उमाशङ्करी कौमारी निगमार्थ गोचर करी ओङ्कार बीजाक्षरी। मोक्षद्वार कपाट पाटन करी काशीपुरा धीश्वरी भिक्षां देहि कृपावलम्बन करी मातान्नपूर्णेश्वरी।। श्री राजः महाः - अखण्ड ऋतु फलम् - सः

दक्षिणा द्रव्यम् - ॐ हिरण्य गर्भः, ॐ पूजा फल समृद्धयर्थं तवाग्रे द्रव्य मीश्विर। स्थापितं तेन मे प्रीता पूर्णान् कुरु मनोरथान्।। श्री राजः महाः – साद्गुण्यार्थे द्रव्य दक्षिणां सः मन्त्र पुष्पाञ्जलिम् - ॐ दुर्गे स्मृताः -,

ॐ सिंहस्थाः -.

ॐ अम्बा शांकरी भद्रराज गमनी आर्या भवानीश्वरी, वामाक्षी महिषासुर प्रशमनी वाक् चातुरी सुन्दरी। दुर्गा शुम्भ निशुम्भ दैत्य दमनी दौर्भाग्य विच्छेदिनी चिद्रूपी पर देवता भगवती श्री राज राजेश्वरी।।

अनया पूजया श्री राज राजेश्वरी महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती - त्रिगुणात्मिका स्वरूपिणी श्री भवानी दुर्गा देव्यै सपरिवार सहिता: प्रीयन्ताम् नमम।

अथ बलिदानम्

'नारिकेलबलये नमः' इत्यनेन पञ्चोपचारै : नारिकेलं सम्पूज्य देव्याः पुरत 'नारिकेलबलिं तुभ्यं समर्पयामि' इत्युक्त्वा, नवार्णमन्त्रेण वीरासनमुद्रया एक-हस्तेन एकवारमेव बलिं स्फोटयित्वा देव्यै निवेदयेत्। (पायस एवं दाड़िम भी बलिदान कर सकते हैं। काम्य बलि पूर्णाहृति के दिन करे।)

अन्य मतेन बलिदान विधानम्

अथ बिलदानम् - शिवे त्वदीयान् बटुकं गणािधपं क्षेत्रेश्वरं भैरवयोगिनीगणान्।। सर्वोपचारैः पिरपूज्य भिक्ततो निवेदयेऽमुं बिलमाितशान्त्यै।। इति पिठित्वा।। मण्डलं कृत्वा तदुपिर पायसािदनानािवधान्नपूर्णं पात्रं निधाय बटुकािदिभ्यो नमः इति गन्धपुष्पाक्षतधूपदीपान् समर्प्य बिलं समर्पयेत्। तत्र मन्त्राः।। भूता ये विविधाकार दिग्विदिक्षु समािश्रताः।।

पातालभूमिव्योमस्था ये च लोकान्तरस्थिता:।। विघ्नेशबटुकक्षेत्रपाला योगिन्य एव च।। दिक्पाला लोकपालाश्च वैताला भैरवास्तथा।। अन्ये च विघ्नकर्तारस्तेभ्यो यच्छाम्यमुं बिलम्।। सर्वे सन्तुष्टमनसः सुखदाश्च भवन्तु मे।। ॐ ह्रीं विघ्नकृद्भयः सर्वभूतेभ्योऽसौ बिलर्दत्तो न ममेत्यर्घ्योदकमृत्सृज्य।। मूलम्।। साङ्गायै सपरिवारायै चिण्डकायै बिलं समर्पयामि।। इति बिलदानम्।।

(श्री दुर्गोपासना कल्पद्रुम के अनुसार दुर्गा सप्तशती पाठ के समय अध्याय पूर्ण होने पर दीप दान करे।) संकल्पित कार्य अतिशीघ्र सिद्ध होता है।

विधान - दीपदान - शुद्ध भूमि/वेदी पर तेरह दीपक रखें। प्रथम अध्याय पूरा होने पर प्रथमाध्याय के देवता का आवाहन पूजन आदि पंचोपचार/षोडशोपचार पूजन पश्चात् नवश्लोक से पुष्प अर्पण करें - विश्वेश्वरीं... प्रभु:।।१।। एवं स्तुता तदा देवी तामसी तत्र वेधसा। विष्णोः प्रबोधनार्थाय निहन्तुं मधुकैटभौ।।२।। स्तुता सुरै:...चापद:।।३।। या सांप्रतं... मूर्तिभि:।।४।। सर्वा बाधा... विनाशनम्।।५।। सर्वमंगल... नमोस्तु ते।।६।। सृष्टिस्थिति... नमोऽस्तु ते।।७।। शरणागत... नमोस्तु ते।।८।। सर्वस्वरूपे... नमोऽस्तु ते।।९।। इन नव श्लोकों से पूजन करें। पायस नैवेद्य दें। एक ब्राह्मण, एक कुमारिका, एक बटुक के भोजन का संकल्प करें। इस प्रकार प्रति अध्याय पूजन, दीपदान, भोजन संकल्प करें।

बटुक एवं कुमारिकापूजनम्

(आरती के बाद भी बटुक कुमारिका पूजा कर सकते हैं।)

हस्ते-ऽक्षत-पुष्पाणि गृहीत्वा - कर-कलित-कपाल: कुण्डली-दण्डपाणिस्तरुण-तिमिरनील-व्यालयज्ञोपवीती। क्रतुसमयसपर्या विघ्नविच्छेदहेतु-र्जयित बटुकनाथ: सिद्धिद: साधकानाम्।। इति श्लोकं पठित्वा, 'बं बटुकाय नमः' इत्यनेन बटुकम्, सम्पूजयेत्। (शतचण्डी विधान में कुमारिपूजन मन्त्र लिखा हुआ है।)

(आरती एवं पुष्पाञ्जलि क्षमा प्रार्थना इत्यादि करे। शतचण्डी याग में एकोतर वृद्धि से कन्या पूजा का विधान भी है। यथा प्रथम दिन एक दूसरे दिन दो – ।।यथाशिक्त पूज्या।। ।। इति दुर्गा पूजनम्।।

नवरात्र काल में भी घटस्थापना एवं दुर्गा पूजनम् इसी विधान के अनुसार करे। (शुद्ध मिट्टी में यवरोपण करे।) उपवास का सङ्कल्प करे। अष्टमी या नवमी तिथि के दिन दशांश हवन तर्पण, मार्जन, ब्राह्मण भोजन, कन्या बटुक भोजन करावे। (परंतु विसर्जन दशमी तिथि को करे।)

।।श्री जगदम्बा राजोपचार पूजा प्रयोगः।।

हस्ते पद्म पुष्पं गृहीत्वा श्री राज राजेश्वरी ध्यात्वा।।

अथ ध्यानम् - ॐ खड्गं चक्र गदेषु。-

अम्बा मोहिनी देवता त्रिभुवनी आनंद संदायिनी, वीणा पल्लव पाणि वेणु मुरली गान प्रिया लोलिनी। शर्वाणि उडुराज बिम्ब-वदना धूम्रेक्ष संहारिणी, चिद्रूपी पर देवता भगवती श्री राज राजेश्वरी।।१।।

ॐ अक्षस्रक् परश्ंुं。-

सिन्दूरारुण विग्रहां त्रिनयनां माणिक्य मौलिस्फुरत्, तारानायक शेखरां स्मित मुखीमापीन वक्षो रुहाम्। पाणिभ्या मलिपूर्ण रत्न चषकं रक्तोत्पलं बिभ्रतीं, सौम्यां रत्नघटस्थ रक्त चरणां ध्यायेत् परामम्बिकाम्।।२।।

ॐ घण्टा शूलहलानि。-,

अम्बा नूपुर रत्न कंकण धरी केयूर हारावली, जाती चम्पक वैजयन्ती लहरी ग्रैवेय वैराजिता। वीणा गान विनोद मंडित करी वीरासने संस्थिता, चिद्रूपी पर देवता भगवती श्री राज राजेश्वरी।।३।।

श्री राज राजेश्वरी महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती स्वरूपिणी त्रिगुणात्मिकायै दुर्गायै नमः ध्यानार्थे पुष्पं समर्पयामि (एवं सर्वत्र उक्त्वा उपचारान् कुर्यात्)

''मूलम्'' आवाहनम् - (पूर्व आवाहित एवं प्रतिष्ठित (मूर्ति) देवता का आवाहन नहीं करे।)

आवाहनम् - अङ्गं हरेः पुलकभूषणमाश्रयन्ती भृङ्गाङ्गनेव मुकुलाभरणं तमालम्। अङ्गीकृताऽखिल-विभूतिरपाङ्गलीला माङ्गल्यदाऽस्तु मम मङ्गलदेवतायाः।।४।। आवाहनम् समर्पयामि।

आसनम् - देवेन्द्रादिभिरर्चितं सुरगणैरादाय सिंहासनं, चञ्चत्काञ्चनसंचयाभिरचितं चारुप्रभाभास्वरम्। एतच्चम्पककेतकीपरिमलं तैलं महानिर्मलं, गन्धोद्वर्तनमादरेण तरुणीदत्तं गृहाणाम्बिके।।५।। आसनम् समर्पयामि।

पाद्यम् - विश्वामरेन्द्रपद-विभ्रमदानदक्ष - मानन्द-हेतुरिधकं मुरिविद्विषोऽपि। ईषन्निषीदतु मिय क्षणमीक्षणार्द्ध - मिन्दीवरोदर-सहोदरिमन्दिरायाः।।६।। पाद्यम् समर्पयािम।

अर्घ्यम् - कस्तूरीद्रवचन्दनागुरुसुधाधाराभिराप्लावितं चञ्चच्चम्पकपाटलादिसुरिभद्रव्यैः सुगन्धीकृतम्। देवस्त्रीगणमस्तक स्थित महारत्नादिकुम्भव्रजै - रम्भः शाम्भवि संभ्रमेण विमलं दत्तं गृहाणाम्बिके।।७।। अर्घ्यम् समर्पयामि।

आचमनीयम् - मुग्धा मुहुर्विदधती वदने मुरारेः प्रेमत्रपा-प्रणिहितानि गताऽऽगतानि। मालादृशोर्मधुकरीव महोत्पले या सा मे श्रियं दिशतु सागरसम्भवायाः।।८।। आचमनीयम् समर्पयामि।

मधुपर्कः – देवि भिक्तरसभावितवृत्ते प्रीयतां यदि कुतोऽपि लभ्यते। तत्र लौल्यमिप सत्फलमेकं जन्मकोटिभिरपीह न लभ्यम्।।९।। मधुपर्कं समर्पयामि।

पयः स्नानम् - आमीलिताक्षमिधगम्य मुदा मुकुन्द- मानन्दकन्दमिनमेषमनङ्गतन्त्रम्। आकेकरस्थितकनीनिकपक्ष्मनेत्रं भूत्यै भवेन्मम भुजङ्गशयाङ्गनायाः।।१०।। पयः स्नानम् समर्पयामि।

दिध स्नानम् - बाह्वन्तरे मधुजितः श्रित कौस्तुभे या हारावलीव हरिनीलमयी विभाति। कामप्रदा भगवतोऽपि कटाक्षमाला कल्याणमावहतु मे कमलालयायाः।।११।। दिध स्नानम् समर्पयामि।

घृत स्नानम् - कालाम्बुदालि-लिलतोरिस कैटभारे - धाराधरे स्फुरित या तिडदङ्गनेव। मातुः समस्तजगतां महनीयमूर्ति - भ्रीणि मे दिशतु भार्गवनन्दनायाः।।१२।। घृत स्नानम् समर्पयामि। मधु स्नानम् - प्राप्तं पदं प्रथमतः किल यत् प्रभावान् माङ्गल्यभाजि मधुमाथिनि मन्मथेन। मय्यापतेत्तिदिह मन्थर-मीक्षणार्धं मन्दाऽलसञ्च मकरालय-कन्यकायाः।।१३।। मधु स्नानम् समर्पयामि।

शर्करा स्नानम् - दद्याद् दयानुपवनो द्रविणाम्बुधारा - मस्मिन्नकिञ्चन विहङ्गशिशौ विषण्णे। दुष्कर्म-घर्ममपनीय चिराय दूरं नारायण-प्रणयिनी नयनाम्बुवाहः।।१४।। शर्करा स्नानम् समर्पयामि।

पञ्चामृत स्नानम् - अश्वदायै गोदायै धनदायै महाधने। धनं मे जुषतां देवि सर्व कामांश्च देहि मे। पञ्चामृत स्नानं समर्पयामि।

सुगंधित स्नानम् - इष्टाविशिष्टमतयोऽपि यया दयार्द्र दृष्टया त्रिविष्टपपदं सुलभं लभन्ते। दृष्टिः प्रहृष्ट-कमलोदर-दीप्तिरिष्टां पुष्टिं कृषीष्ट मम पुष्करविष्टरायाः।।१५।। सुगंधित स्नानम् समर्पयामि।

उद्वर्तन स्नानम् - गीर्देवतेति गरुडध्वजभामिनीति शाकम्भरीति शशिशेखर-वल्लभेति। सृष्टि-स्थितिप्रलय-सिद्धिषु संस्थितायै तस्यै नमिस्रभुवनैकगुरोस्तरुण्यै।।१६।। उद्वर्तन स्नानम् समर्पयामि।

सर्वाङ्गे स्नानम् - श्रुत्यै नमिस्त्रभुवनैक-फलप्रसूत्यै रत्यै नमोऽस्तु रमणीयगुणाश्रयायै। शक्त्यै नमोऽस्तु शतपत्र-निकेतनायै पृष्ट्यै नमोऽस्तु पुरुषोत्तम-वल्लभायै।।१७।। सर्वाङ्गे स्नानम् समर्पयामि। "निर्माल्यम् उतरे विसृज्य पञ्चोपचारै संपूज्य।"

"अभिषेक पात्रं गंधादि संपूज्य।"

"श्री सूक्त देविसूक्त वा कनकधारा स्तोत्रे अभिषेकः"

अभिषेकान्ते आचमनीयम् जलं समर्पयामि नेत्रोदक स्पर्शः अमृताभिषेकोऽस्तु।" शुद्धोदक स्नानम् - नमोऽस्तु नालीक-निभेक्षणायै नमोऽस्तु दुग्धोदिध-जन्मभूत्यै। नमोऽस्तु सोमामृत-सोदरायै नमोऽस्तु नारायण-वल्लभायै।।१८।। शुद्धोदक समर्पयामि। वस्त्रम् - गन्धर्वामरिकत्ररिप्रयतमासंतानहस्ताम्बुज- प्रस्तारैधियमाणमुत्तमतरं काश्मीरजापिञ्जरम्। मातर्भास्वर भानुमण्डललसत्कान्तिप्रदानोज्ज्वलं चैतित्रर्मलमातनोतु वसनं श्रीसुन्दरि त्वन्मुदम्।।१९।। वस्त्रम् समर्पयामि।

आचमनम् - सम्पत्कराणि सकलेन्द्रिय-नन्दनानि साम्राज्यदान-विभवानि सरोरुहाक्षि। त्वद्-वन्दनानि दुरिताहरणोद्यतानि मामेव मातरिनशं कलयन्तु नान्यत्।।२०।। आचमनम् समर्पयामि।

पादुका - उद्यञ्चन्दनकुङ्कृमारुणपयोधाराभिराप्लावितां नानानर्घ्यमणिप्रवालघटितां दत्तां गृहाणाम्बिके। आमृष्टां सुरसुन्दरीभिरभितो हस्ताम्बुजैर्भिक्ततो मातः सुन्दिर भक्तकल्पलितके श्रीपादुकामादरात्।।२१।। पादुका समर्पयामि।

केश पाश संस्करणम् - पश्चाद्देवि गृहाण शम्भुगृहिणि श्रीसुन्दिर प्रायशो गन्धद्रव्यसमूहिनर्भरतरं धात्रीफलं निर्मलम्। तत्केशान् परिशोध्य कङ्कतिकया मन्दिकिनीस्रोतिस स्रात्वा प्रोज्ज्वलगन्धकं भवतु हे श्रीसुन्दिर त्वन्मुदे।।२२।। केश पाश संस्करणम् समर्पयामि।

दर्पणं - अमन्दतरमन्दरोन्मथितदुग्धसिन्धूद्भवं निशाकरकरोपमं त्रिपुरसुन्दिर श्रीप्रदे। गृहाण मुखमीक्षितुं मुकुरिबम्बमाविद्रुमैर्विनिर्मितमघिच्छदे रितकराम्बुजस्थायिनम्।।२३।। दर्पणं समर्पयामि।

सुरमा (सौवी रांजनम्)- यत्कटाक्ष-समुपासनाविधिः सेवकस्य सकलार्थसम्पदः। सन्तनोति वचनाऽङ्गमानसै-स्त्वां मुरारि-हृदयेश्वरीं भजे।।२४।। सुरमो समर्पयामि। आभूषणम् (अलंकार) - स्वर्णाकिल्पतकुण्डले श्रुतियुगे हस्ताम्बुजे मुद्रिका मध्ये सारसना नितम्बफलके मञ्जीरमङ्घ्रिद्वये। हारो वक्षिस कङ्कणौ क्वणरणत्कारौ करद्वन्द्वके विन्यस्तं मुकुटं शिरस्यनुदिनं दत्तोन्मदं स्तूयताम्।।२५।। आभूषणम् (अलंकार) समर्पयामि। गन्धम् (रक्तचन्दनं) - सुराधिपतिकामिनीकरसरोजनालीधृतां सचन्दनसकुङ्कृमा गुरुभरेण विभ्राजिताम्। महापरिमलोज्ज्वलां सरसशुद्धकस्तूरिकां गृहाण वरदायिनि त्रिपुरसुन्दिर श्रीप्रदे।।२६।। गन्धम् समर्पयामि।

कुंकुमं - सरसिज-निलये सरोजहस्ते धवलतरांशुक-गन्ध-माल्यशोभे। भगवित हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवन-भूतिकरि प्रसीद मह्यम्।।२७।। कुंकुमं समर्पयामि।

कज्जलं - ग्रीवायां धृतकान्तिकान्तपटलं ग्रैवेयकं सुन्दरं सिन्दूरं विलसल्ललाटफलके सौन्दर्यमुद्राधरम्। राजत्कज्जलमुज्ज्वलोत्पलदलश्रीमोचने लोचने तिद्वव्यौषिधिनिर्मितं रचयतु श्रीशाम्भवि श्रीप्रदे।।२८।। कज्जलं समर्पयामि।

अक्षताः - दिग्घस्तिभिः कनकुम्भमुखावसृष्ट-स्वर्वाहिनीविमलचारु-जलप्लुताङ्गीम्। प्रातर्नमामि जगतां जननीमशेष - लोकाधिराजगृहिणीममृताब्धिपुत्रीम्।।२९।। अक्षतं समर्पयामि।

सुगंधित द्रव्यं (इत्र) - कमले कमलाक्षवल्लभे त्वं करुणापूर-तरङ्गितैरपाङ्गेः। अवलोकय मामिकञ्चनानां प्रथमं पात्रमकृत्रिमं दयायाः।।३०।। सुगंधित द्रव्यं (इत्र) समर्पयामि। अबीरं गुलालं - स्तुवन्ति ये स्तुतिभिरमूभिरन्वहं त्रयीमयीं त्रिभुवनमातरं रमाम्। गुणाधिका गुरुधन-भोगभागिनो भवन्ति ते भुविबुधभाविताशयाः।।३१।। सौः समर्पयामि। सिन्दूरम् - अयि गिरिनन्दिनी नन्दितमेदिनी विश्वविनोदिनि नन्दिनुते गिरिवरविन्ध्यशिरोधिनि–वासिनि विष्णुविलासिनि जिष्णुनुते। भगवित हे शितिकण्ठकुटुंबिनि भूरिकुटुंबिनि भूरिकृते जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।३२।। सिन्दूरम् समर्पयामि। पुष्पाणि - कह्णारोत्पलनागकेसरसरोजाख्यावलीमालती- मल्लीकैरवकेतकादिकुसुमै रक्ताश्वमारादिभिः। पुष्पैर्माल्यभरेण वै सुरिभणा नानारसस्रोतसा ताम्राम्भोजनिवासिनीं भगवतीं श्रीचण्डिकां पूजये।।३३।। पुष्पाणि समर्पयामि।

बिल्व पत्रं - सुरवरवर्षिणि दुर्धरधर्षिणि दुर्मुखमर्षिणि हर्षरते त्रिभुवनपोषिणि शंकरतोषिणि किल्बिषमोषिणि घोषरते। दनुजिनरोषिणि दितिसुतरोषिणि दुर्मदशोषिणि सिंधुसुते जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।३४।। बिल्व पत्रं समर्पयामि।

पुष्पमालां - अयि जगदम्ब मदम्ब कदम्बवनप्रियवासिनि हासरते शिखरिशिरोमणितुंग-हिमालयशृंगनिजालय मध्यगते। मधुमधुरे मधुकैटभगंजिनि कैटभभंजिनि रासरते जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।३५।। पुष्पमालां समर्पयामि।

तुलसीपत्राणि - अयि शतखण्ड विखण्डितरुण्ड वितुण्डितशुण्ड गजाधिपते रिपुगजगण्ड विदारणचण्ड पराक्रमशुण्ड मृगाधिपते। निजभुजदण्ड निपातितखण्ड विपातितमुण्डभटाधिपते जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।३६।। तुलसीपत्राणि समर्पयामि।

अथ अङ्गपूजा

(पूर्व लिखित दुर्गापूजा अनुसार करे।) आवरणार्चनम् (पूर्वानुसारेण)

यथाशक्ति दुर्गा वा ललिता अष्टोतरशत नाम से पत्रपुष्पार्चन करे।

श्वेतचूर्णम् - अयि रणदुर्मद शत्रुवधोदित दुर्धरिनर्जर शक्तिभृते चतुरिवचार धुरीणमहाशिव दूतकृत प्रमथाधिपते। दुरितदुरीह दुराशयदुर्मित दानवदूतकृतान्तमते जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।३७।। श्वतेचूर्णम् समर्पयामि।

रक्तचूर्णम् - अयि शरणागतवैरिवधूवर वीरवराभयदान करे त्रिभुवन मस्तक शूलिवरोधि शिरोधिकृतामल शूलकरे। दुमिदुमितामर दुदुंभिनाद महो मुखरीकृत तिग्मकरे जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।३८।। रक्तचूर्णम् समर्पयामि।

हरिद्रां - अयि निजहुकृतिमात्र निराकृत धूम्रविलोचन धूम्रशते समरविशोषित शोणितबीज समुद्भवशोणित बीजलते। शिव शिव शुम्भ निशुम्भमहाहव तर्पित भूत पिशाचरते जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।३९।। हरिद्रां समर्पयामि।

दशांग धूपं - मांसीगुग्गुलचन्दनागुरुरजः कर्पूरशैलेयजै- मीध्वीकैः सह कुङ्कुमैः सुरचितैः सिर्पिभिरामिश्रितैः। सौरभ्यस्थितिमन्दिरे मिणमये पात्रे भवेत् प्रीतये धूपोऽयं सुरकामिनीविरचितः श्रीचिण्डके त्वन्मुदे।।४०।। दशांग धूपं समर्पयामि।

दीपं - घृतद्रवपरिस्फुरद्रुचिररत्नयष्ट्यान्वितो महातिमिरनाशनः सुरिनतिम्बनीनिर्मितः। सुवर्णचषकस्थितः सघनसारवर्त्यान्वितस्तव त्रिपुरसुन्दिर स्फुरित देवि दीपो मुदे।।४१।। दीपं समर्पयामि।

नैवेद्यनिवेदनम् - तत्रादौ देव्या सम्मुखे वा दक्षिणतो जलेन - गोमयेन चतुष्कोण मंडलं कृत्वा तस्योपिर नैवेद्यपात्रं निधाय हीं नमः वा गायत्री मन्त्रेण सम्प्रोक्ष्य तदुपिर तुलसीपत्रं निधाय अधोमुखं दिक्ष हस्तोपिर तादृशं वाम हस्तं निधाय नैवेद्यमाच्छाद्य ततः धेनु मुद्रां प्रदर्श्य ग्रास मुद्रया - ॐ प्राणाय स्वाहा, ॐ अपानायस्वाहा ॐ व्यानाय स्वाहा, ॐ उदानाय स्वाहा ॐ समानाय स्वाहा, नैवेद्यं निवेदयािम। इति ग्रास मुद्रया नैवेद्यं समर्प्यं अन्तः पटं दत्वा घण्टां वाम हस्तेन वादयन्। मूल मन्त्रं सप्तवारं जपेद् ।।

जाति सौरभनिर्भरं रुचिकरं शाल्योदनं निर्मलं युक्तं हिङ्गुमरीच जीर सुरिभ द्रव्यान्वितै व्यञ्जनैः पक्वान्नेन सपायसेन मधुना दध्याज्य सिम्मिश्रतं नैवेद्यं सुर कामिनी विरिचतं श्री चिण्डके त्वन्मुदे।।

देवी सर्वविचित्ररत्नरिचता दाक्षायणी सुन्दरी वामं स्वादु पयोधरिप्रयकरी सौभाग्यमाहेश्वरी। भक्ताभीष्टकरी सदाशुभकरी काशीपुराधीश्वरी भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी।।४२।। नैवेद्यं समर्पयामि। नैवेद्यान्ते आचमनं जलं मुखप्रक्षालनं हस्त प्रक्षालनं जलं समर्पयामि।

आचमन - धनुरनुसंग रणक्षणसंग परिस्फुरदंग नटत्कटके, कनक पिशंग पृषत्किनषङ्गरसद्भटभृङ्ग हतावटुके। कृतचतुरंग बलिक्षितिरंग घटद्बहुरंग रटद्बटुके, जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसते।।४३।। आचमनं समर्पयामि।

पूर्वापोशनम् - जय जय जाप्यजये जय शब्दपरस्तुति तत्पर विश्वनुते, झण झणझिंझिमि झिंकृतनूपुर सिंजितमोहित भूतपते। नटितनटार्थ नटीनटनायक नाटितनाट्य सुगानरते, जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।४४।। पूर्वापोशनम् समर्पयामि।

जलम् - अयि सुमनः सुमनः सुमनः सुमनस्सुमनोहर कान्तियुते, श्रितरजनी रजनी रजनी - रजनी रजनीकर वक्त्रवृते। सुनयनविभ्रमर भ्रमर भ्रमर भ्रमर भ्रमराधिपते, जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।४५।। जलम् समर्पयामि।

उतरापोशनं - सिहतमहाहव मल्लमतिल्लक मिल्लितरल्लक भल्लरते, विरचितविल्लिक पिल्लिकमिल्लिक झिल्लिकभिल्लिक वर्गवृते। सितकृतपुल्लि समुल्लिसितारुण भल्लिजपल्लिव सिल्लिलिते, जय जय हे मिहषासुरमिदिनि रम्यकपिदिनि शैलसुते।।४६।। उतरापोशनं समर्पयामि। करोद्वर्तनं - अविरलगण्डगलन्मदमेदुर मत्तमतंगज राजपते, त्रिभुवनभूषण भूतकलानिधि रूपपयोनिधि राजसुते। अयि सुदतीजन लालसमानस मोहनमन्मथ राजसुते, जय जय हे मिहषासुरमिदिनि रम्यकपिदिनि शैलसुते।।४७।। करोद्वर्तनं समर्पयामि।

ताम्बुलं - कमलदलामल कोमलकान्ति कलाकिलतामल भाललते, सकलिवलास कलानिलयक्रम केलिचलत्कल हंसकुले, अलिकुल संकुल कुवलय मण्डल मौलिमिलद्वकुलालिकुले, जय जय हे मिहषासुरमिदिनि रम्यकपिदिनि शैलसुते।।४८।। ताम्बुलं समर्पयामि।

ऋतुफलं - करमुरलीरववीजितकूजित लिज्जितकोकिल मंजुमते, - मिलितपुलिंद मनोहरगुंजित रंजितशैल निकुंजगते। निजगुणभूत महाशबरीगण सद्गुणसंभृत केलिलते जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।४९।। ऋतुफलं समर्पयामि।

दक्षिणां - कटितटपीत दुकूलिविचित्र मयूखितरस्कृत चण्डरुचे, प्रणतसुरासुर मौलिमिणस्फुरदंशुलसन्नख चंद्ररुचे। जितकनकाचल मौलिपदोर्जित निर्झरकुंजर कुंभकुचे, जय जय हे महिषासुरमिदिनि रम्यकपिदिनि शैलसुते।।५०।। दक्षिणां समर्पयामि। प्रदक्षिणां - विजित सहस्रकरैक सहस्रकरैक सहस्रकरैकनुते, कृतसुरतारक संगरतारक संगरतारक सूनुनुते। सुरथसमाधि समानसमाधि समाधिसमाधि सुजातरते, जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।५१।। प्रदक्षिणां समर्पयामि।

विशेषार्धः - पदकमलं करुणानिलये विरवस्यित योऽनुदिनं सु शिवे, अयि कमले कमलानिलये कमलानिलयः स कथं न भवेत्। तव पदमेव परंपदिमत्यनुशलीयतो मम किं न शिवे, जय जय हे महिषासुरमिदिनि रम्यकपिदिनि शैलसुते।।५२।। विशेषार्धः समर्पयामि। छत्रम - कनकलसत्कल सिन्धुजलैरनु सिंचिनुतेगुण रंगभुवं, भजित स किं न शचीकुचकुंभ तटीपिरंभ सुखानुभवम्। तवचरणं शरणं करवाणि नतामरवाणि निवासि शिवं, जय जय हे महिषासुरमिदिनि रम्यकपिदिनि शैलसुते।।५३।। छत्रम् समर्पयामि।

चामरम् - तव विमलेन्दुकुलं वदनेन्दुमलं सकलं ननु कूलयते, किमु पुरुहूतपुरीन्दुमुखी सुमुखीभिरसौ विमुखीक्रियते। मम तु मतं शिवनामधने भवती कृपया किमुत क्रियते, जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।५४।। चामरम् समर्पयामि।

व्यञ्जनं - नित्यानन्दकरी वराभयकरी सौन्दर्यरत्नाकरी निर्धूताखिलघोरपावनकरी प्रत्यक्षमाहेश्वरी। प्रालेयाचलवंशपावनकरी काशीपुराधीश्वरी भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी।।५५।। व्यञ्जनं समर्पयामि।

आदर्श - शक्रादयः सुरगणा निहतेऽतिवीर्ये, तस्मिन्दुरात्मिन सुरारिबले च देव्या। तां तुष्टुवुः प्रणितनम्रशिरोधरांसा, वाग्भिः प्रहर्षपुलकोद्गमचारुदेहाः।।५६।। आदर्श समर्पयामि। तुरंगं - देव्या यया ततिमदं जगदात्मशक्त्या निश्शेषदेवगणशिक्तसमूहमूर्त्या। तामिम्बकामिखलदेवमहर्षिपूज्यां, भक्त्या नताः स्म विदधातु शुभानि सा नः।।५६।। तुरंग समर्पयामि।

मातंग - यस्याः प्रभावमतुलं भगवाननन्तो, ब्रह्मा हरश्च न हि वक्तुमलं बलं च। सा चिण्डकाखिलजगत्परिपालनाय, नाशाय चाशुभभयस्य मितं करोतु।।५८।। मातंगं समर्पयामि। रथ - या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः, पापात्मनां कृतिधयां हृदयेषु बुद्धः। श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा, तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम्।।५९।। रथं समर्पयामि। सैन्यम् - किं वर्णयाम तव रूपमचिन्त्यमेतत्, किं चातिवीर्यमसुरक्षयकारि भूरि। किं चाहवेषु चरितानि तवाद्धुतानि, सर्वेषु देव्यसुरदेवगणादिकेषु।।६०।। सैन्यम् समर्पयामि। प्राकारं - हेतुः समस्तजगतां त्रिगुणापि दोषे, - र्न ज्ञायसे हरिहरादिभिरप्यपारा। सर्वाश्रयाखिलमिदं जगदंशभूत, - मव्याकृता हि परमा प्रकृतिस्त्वमाद्या।।६१।। प्राकारं समर्पयामि। गीतम् नृत्यम् - स्वर्गाङ्गणे वेणुमृदङ्गशङ्खभेरीनिनादैरुपगीयमाना। कोलालहैराकिलता तवास्तु विद्याधरीनृत्यकला सुखाय।।

यस्याः समस्तसुरता समुदीरणेन, तृप्तिं प्रयाति सकलेषु मखेषु देवि। स्वाहासि वै पितृगणस्य च तृप्तिहेतु, – रुच्चार्यसे त्वमत एव जनैः स्वधा च।।६२।। गीतम् नृत्यम् समर्पयामि। दृष्टीमृतारयेत् दिध लवण, सर्षप अक्षतान् से – या मुक्तिहेतुरिविचन्त्यमहाव्रता त्व–, मभ्यस्यसे सुनियतेन्द्रियतत्त्वसारैः। मोक्षार्थिभर्मुनिभिरस्तसमस्तदोषै, – विद्यासि सा भगवती परमा हि देवि।। शब्दात्मिका सुविलमर्ग्यजुषां निधान, – मुद्गीथरम्य पदपाठवतां च साम्नाम्। देवी त्रयी भगवती भवभावनाय, वार्ता च सर्वजगतां परमार्तिहन्त्री।। मेधासि देवि विदिताखिलशास्त्रसारा, दुर्गासि दुर्गभवसागरनौरसङ्गा। श्रीः कैटभारिहृदयैककृताधिवासा, गौरी त्वमेव शशिमौलिकृतप्रतिष्ठा।।

पुष्पाञ्जलिम - ॐ कालाभ्राभां कटाक्षेरित्कुलभयदां मौलिबद्धेन्दुरेखां, शङ्खं चक्रं कृपाणं त्रिशिखमिप करैरुद्वहन्तीं त्रिनेत्राम्। सिंहस्कन्धाधिरूढ़ा त्रिभुवनमिखलं तेजसा पूरयन्तीं, ध्यायेद् दुर्गां जयाख्यां त्रिदशपित्वृतां सेवितां सिद्धिकामै:। पुष्पाञ्जलिम् समर्पयामि। (कालिदास अनुसारेण ''स्तोत्रं कस्य न तुष्टये'' एवं देवी भागवत पुराण अनुसारेण स्तोत्र भगवती वाग्देवी की जिह्वा है। अत: देवी राजोपचार पूजा स्तोत्रों के द्वारा लिखी है।)

बलिदानं

माष भक्तं पायसं बलिं दद्यात्। मूल मन्त्रमुच्चार्य सांगाये सपरिवाराये महाकाल्ये महालक्ष्म्ये महासरस्वत्ये एष पायस बलि र्न मम। इति विशेषार्घोदकं दत्वा योनि मुद्रया प्रणमेत्। वा पूर्व लिखित अनुसारेण बलिदानं दद्यात्। हवन समयात् कूष्माण्ड (काम्य) बलिदानं। विशेष - ब्राह्मणेन सदा देयं कूष्मांडं बलिकर्मणि। वस्त्र संवेष्टितं कृत्वा छेदं नैव तु कारयेत्।। क्षत्रिय वैश्यादौ तु - छेदयेत्छुरिकादिना।। (कर्मठ गुरु) (कालिका पुराण) पश्चात् - बटुक एवं कन्यापूजनम् एवं देवी नीराजनम् - अर्पणम् -

अनेनावाहनासनं पाद्यार्घ्याचमनीय स्नान वस्त्रोपवस्त्र गन्धाक्षत पुष्प धूप दीप नैवेद्य ताम्बूल दिक्षणा प्रदिक्षणा मन्त्र पुष्प रूपै राजोपचारैरन्योपचारैश्च यथा ज्ञानेन, यथा मिलितोपचारै द्रव्यै: कृतेन पात्रासादन पूजनपूर्वक विशेष कर्मणाः श्री राज राजेश्वरी भवानी महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती त्रिगुणात्मिका देवताः प्रीयन्तां न मम। तत्सद् श्री जगदम्बार्पणमस्तु।। क्षमा प्रार्थना - आवाहनं -। यदक्षरं -

गतंपापं गतं दुःखं गतं दारिद्रमेव च। आगता सुख संपतिः पुण्योऽहम् तवदर्शनात्।। ।। इति श्री जगदम्बार्चनम्।।

यज्ञान्ते देवि विसर्जनम् -

।।शतचण्डी सम्पुटित पाठ संकल्प:।।

देशकालौ सङ्कीर्त्य 'मम सकुटुम्बस्य सपिरवारस्य सर्वविधरोग-सङ्कट-उपद्रव-राजभय-शत्रुभय-तस्करभय-भूत-प्रेत-पिशाचादिभयनिवारणपूर्वकदीर्घायुर्विपुलधन-धान्य-पुत्र-पौत्रादि-सन्तित-वृद्ध्यर्थं व्यापारे उत्तरोत्तरलाभार्थं महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती स्वरूपायास्त्रिगुणात्मकायाः भगवत्याः जगदम्बायाः श्रीदुर्गादेव्याः प्रीत्यर्थम् मार्कण्डेय उवाच। सावर्णिः सूर्यतनयो यो मनुः कथ्यतेऽष्टमः।' इत्याद्यारभ्य 'सावर्णिर्भविता मनुः।' इत्यन्तं 'सर्वाबाधाविनिर्मुक्तः' इति मन्त्रेण दुर्गासप्तशत्याः प्रतिमन्त्रं सम्पुटित पाठं तत्रादौ कवचार्गलाकीलकमाद्यन्तयोः अष्टोत्तरशतनवार्णजपपूर्वकं क्रमेण रात्रिसूक्त-देवीसूक्ताभ्यां सहितस्य, अन्ते रहस्यत्रयस्य च पाठं दशब्राह्मण द्वारा सनवग्रहमखं शतचण्डीपाठं कारियष्ये।'

श्री दुर्गा याग में विशेष हवन विधानम्

दुर्गा सप्तशती पाठ के द्वारा हवन करते समय उवाच स्थले, पत्र, पुष्प, फल के द्वारा आहुति एवं प्रत्यध्याय समाप्तावुत्थाय श्रुवेणाज्यामादाय – गन्ध, पुष्प, पूगीफल, ताम्बूल, भूर्जपत्राणि व अन्योपकरणानि निक्षिप्य महाहुतिं जुहुयात्।।

दुर्गापासना कल्द्रुम ग्रन्थादि व अन्यमतेनानुसारेण।।

"प्रथम अध्याय में, श्लोक ८० से ८४ तक, मूलमन्त्र से आहुति देवे।"

प्रथमोऽध्यायः - श्लोक - ५६ शर्करा, ६७ कमलपुष्प-कमलगट्टा, १०० कर्पूर, १०१ कमलगट्टा, १०३ मधु, केला, गुगुल, नागरपान।

अध्यायान्ते - पुष्प, मधु के द्वारा 'ॐ नमो देव्यै。'।। ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सशक्तिकायै सायुधायै सवाहनायै वाग्भवबीजाधिष्ठातृ महाकाल्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।। घृतेनाहुतिं त्रयं दद्यात्, ॐ अम्बे स्वाहा, ॐ अम्बिके स्वाहा, ॐ अम्बिलिके स्वाहा।। द्वितीयोऽध्यायः - श्लोक - २९ कर्पूर, २९ कमलपुष्प, ३० मधु, नागरपान, ६० सरसों, ६७ राई, ६९ पुष्प, बिल्वपत्रं।

अध्यायान्ते - गुगुल, शाकल्य सिहतेन, 'ॐ नमो देव्यै。'।। ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सशक्तिकायै सायुधायै सवाहनायै लक्ष्मीबीजाधिष्ठात्र्ये महालक्ष्म्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।। घृतेनाहुतिं त्रयं दद्यात्।।

तृतीयोऽध्यायः - श्लोक - २० निम्बू कागजी, २५ नमकरिहत बड़ा (पकौड़ी), ३४ गुड़, दूध, ३८ मधु, ४२ लोकी, ४४ पान सुपारी।

अध्यायान्ते - दिध माष, गुगुल हिव, सिहता, "ॐ नमो देव्यै。'।। ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सशक्तिकायै सायुधायै सवाहनायै अष्टाविंशति वर्णीत्मकायै महालक्ष्म्यै महाहुतिं समर्पयामि नम: स्वाहा।। घृतेनाहुतिं त्रयं दद्यात्।।

चतुर्थोऽध्याय: - चतुर्थ अध्याय में श्लोक २४ से २७ तक महालक्ष्मी मन्त्र से, एवं श्लोक १ से २७ तक पायसाहुति देवें -, ३ कदलीफल, ५ पंचमेवा, ७ बिल्वफल, ८ केशर, श्वेतचन्दन, ९ जायफल, ११ कर्पूर ब्राह्मी, १४ लालकनेर पुष्प, २३ सीताफल, २९ रक्तचन्दन, ३० गुगुल, धूप, ३४ राई, गुगुल, ४२ तिल, धूप, मधु।

अध्यायान्ते - घृत, पायस हलवा शाकल्य सिहता: 'ॐ नमो देव्यैः'।। ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सशक्तिकायै सायुधायै सवाहनायै त्रिवर्णीत्मकायै शक्ति लक्ष्म्यै स्वाहा।। घृतेनाहुतिं त्रयं दद्यात्।।

पञ्चमोऽध्यायः - श्लोक, ९ हलुवा, १० आवंला, ११ भोजपत्र, पुष्प, १४ विष्णुक्रान्ता, २६ बादाम, ९६ कमलगट्टा, १०३ पायस, शाकल्य, ११४ पायसलाजा, १२० कज्जल, १२१ हिंगलु, १२७ भोजपत्र, सरसों, पत्र, पुष्प, फल, १२९ पान, सुपारी, इक्षु।

अध्यायान्ते - श्वेत चन्दन, गुगुल, कमलगट्टा, कुंकुंम - बिल्वपत्रोपिर धृत्वा, 'ॐ नमो देव्यै。'।। ॐ साङ्गायै सपिरवारायै सशक्तिकायै सायुधायै सवाहनायै विष्णुमायादित्रयो विंशति देवतायै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।। घृतेनाहुतिं त्रयं दद्यात्।।

षष्ठोऽध्यायः - श्लोक - ४ गुगुल जटामांशी, राई, ७ पत्र, पुष्प, मसूर, १३ निम्बु बिंजौरा, १८ गुगुल, १९ राई, २० कमलगट्टा, लोहबान, २३ भोजपत्र, २४ कूष्माण्ड, इक्षु कनेरपुष्प। अध्यायान्ते - पान, सुपारी, लौंग, इलायची, शाकल्य, कूष्माण्ड, कनेर पुष्प। 'ॐ नमो देव्यै。'।। ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सशक्तिकायै सायुधायै सवाहनायै शताक्ष्यै, धूम्राक्ष्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।। घृतेनाहुतिं त्रयं दद्यात्।।

सप्तमोऽध्यायः - श्लोक - ५ काजल, कालीमिर्च, कस्तूरी, हल्दी, ८ केशर, पान, लालचन्दन, १२ राई, १९ कदलीफल, २३ निम्बु बिंजौरा, २५ कमलपुष्प, २६ कमलगट्टा, २७ चिरौंजीदाना।

अध्यायान्ते - शाकल्य, चिरौंजीदाना, बादाम, लज्जावन्ती (लाजवन्ती) पुष्प, कर्पूर। 'ॐ नमो देव्यै。'।। ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सशक्तिकायै सायुधायै सवाहनायै बीजाधिष्ठात्र्यै काली चामुण्डायै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।। घृतेनाहुतिं त्रयं दद्यात्।।

अष्टमोऽध्यायः - श्लोक - ५ सरसों, राई, ९ कनेर पुष्प, रक्तचन्दन, १३ पत्र पुष्प, २९ रक्तचन्दन, हल्दी, ३९ सरसों, ४१, ५६, ५७ रक्तचन्दन, ६० इक्षु, ६१ रक्तचन्दन, ६२ बिंजौरा निम्बु।

अध्यायान्ते - रक्तचन्दन मधु शाकल्य सिहता: 'ॐ नमो देव्यैः'।। ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सशिक्तकायै सायुधायै सवाहनायै अष्टमातृका सिहतायै रक्ताक्ष्यै देव्यै महाहुतिं समर्पयामि नम: स्वाहा।। घृतेनाहुतिं त्रयं दद्यात्।।

नवमोऽध्यायः - श्लोक - २ पुष्प, निम्बु, १६ कपीठ, २० केशर, २१ केला, २५ मोगरापुष्प, ३० सुरेली, ३५ निम्बु बिंजौरा, ३६ इन्द्रजौ, गुगुल, ४१ पान सुपारी, बिलगिरी। अध्यायान्ते - कमलगट्टा, निम्बू बिंजौरा, जावित्री, इक्षु बिल्वफल। 'ॐ नमो देव्यै。'।। ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सशक्तिकायै सायुधायै सवाहनायै भैरव्यै दैव्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।। घृतेनाहुतिं त्रयं दद्यात्।।

दशमोऽध्यायः - श्लोक - २ केशर, कस्तूरी, ५ लालचन्दन, ९ पत्र, पुष्प, १४ शाकल्य, २५ केला, २६ केला, २७ भोजपत्र, ३२ इन्द्र जौ, कमलगट्टा, गुगुल, पायस, वट पत्र में देवे।

अध्यायान्ते - कस्तूरी सहिता, 'ॐ नमो देव्यै。'।। ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सशक्तिकायै सायुधायै सवाहनायै सिंह वाहनायै त्रिशूलपाशधारिण्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।। घृतेनाहुतिं त्रयं दद्यात्।।

एकादशोऽध्यायः - श्लोक १ से २८ तक पायस हलवा द्वारा आहुतिया देवे एवं श्लोक २४ से २८ तक मूलमन्त्रणैव हवनं विधेयम्।।

श्लोक – ५ बिंजौरा निम्बु, ९ बादाम द्राक्षा, १४ पायस, हलवा, पेड़ा, कर्पूर, १७ पायस, जायफल, जयमांशी, २९ राई या कालीमिर्च, गिलोय, ३२ पायस हलवा, पेड़ा, हल्दी, ३९ कालीमिर्च, ४१ सरसों, ४४ अनार पुष्प, दाना, ४५ मजीठ, ४६ संतरा, ४७ कमलगट्टा, ४९ सोआपालक, ५४ राई, सरसों, कालीमिर्च, ५५ सरसों, लवंग।

अध्यायान्ते - अगर, पुष्प, गुगुल, कर्पूर, पायस, शर्करा, घृत, 'ॐ नमो देव्यै。'।। ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सशक्तिकायै सायुधायै सवाहनायै लक्ष्मी बीजाधिष्ठात्र्यै गरुड़वाहिनी नाराण्यै शक्त्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।। घृतेनाहुतिं त्रयं दद्यात्।।

द्वादशोऽध्याय: - श्लोक - २ अगर, तगर, १० पेड़ा, १३ छोटी इलायची, राई, सरसों, अदरक, १७ भोजपत्र, १९ केशर, कस्तूरी, २० लवंग, पुष्प, बिंजौरा, कर्पूर, २५ भोजपत्र, पत्र पुष्प, ३० राई, लवंग, गुगुल, ३३ सर्वोषधी, शाकल्य, ३७ अमरबेल, मिश्री, इलायची, ३९ अनारफल या पुष्प, ४१ मोती, अनार, गुलाब पुष्प, कस्तूरी, चन्दन।

अध्यायान्ते - अगर, केशर, पुष्प, कस्तूरी - 'ॐ नमो देव्यै。'।। ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सशक्तिकायै सायुधायै सवाहनायै श्री बालात्रिपुरसुन्दर्यै महावैष्णव्यै देव्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।। घृतेनाहुतिं त्रयं दद्यात्।।

त्रयोदशोऽध्यायः - श्लोक - ३ विष्णुक्रान्ता, शाकल्य, ६ पत्र, पुष्प, फल, १० धूप, रक्तचंदन, १२ गुड़, पुष्प, १७ कालीमिर्च, २० गुगुल, राई, सरसों, २२ कर्पूर, २९ पान, सुपारी।

अध्यायान्ते - कर्पूर, चन्दन, फल, कस्तूरी, श्वेत तिल, शाकल्य, श्वेत पुष्प। 'ॐ नमो देव्यै。'।। ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सशक्तिकायै सायुधायै सवाहनायै श्री त्रिपुर सुन्दर्यै श्री विद्यायै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।। घृतेनाहुतिं त्रयं दद्यात्।।

।।इति विशेष (द्रव्य) आहुति विधानं।।

अथ दुर्गाहोमे विशेषः

चंडीस्तवे प्रतिश्लोकमेकैकाऽऽहुतिरिष्यते।। रक्षाकवच गैर्मन्त्रेर्हीमं तत्र न कारयेत्।।१।। मौर्ख्यात्कवचगैर्मन्त्रे: प्रतिश्लोकं जुहोति य:। स्याद्देह पतनं तस्य नरकं च प्रपद्यते।।२।। कवचाहुति दोषेण रावण: प्रलयं गत:। अन्धकाख्यो महादैत्यो दुर्गाहोमपरायण:।। कवचाहुतिजात्पापान्महेशेन निपातित:।।३।।

।।अथ यवाकुंर विधानम्।।

प्रतिष्ठायां च दीक्षायां स्थापने चोत्सवे तथा।। संप्रोक्षणे च शांत्यर्थं विवाहे मौज्ञी बन्धने।।१।। सर्व मंगल कार्येषु कारयेदङ्क्रुरोपणम्।। सिद्धान्त शेखरोक्ते।। पूर्व नवमे सप्तमे दिने पञ्चमे वा तृतीय वा सद्यो वा चांकुरार्वणम्।। दीक्षायामिषकेकेषु नववेश्म प्रवेशने।। उत्सवेषु च संपत्ये विद्धयादङ्कुरार्पणम्।।२।। यत्रैव यवांकुर वपनं स्वकुलाचारात् कुर्वन्ति याज्ञिका।।३।।

।।यवांकुर संकल्प।।

यत्रैव यवांकुर तदर्थं।। अद्य अमुक यागोपयोगि करिष्यमाण मण्डप पार्श्वे यवांकुरारोपणार्थं भूमि पूजनं करिष्ये।।१।। तत्रादौ तण्डुलै पुञ्जैक कृत्वा तदुपिर पूगीफलं निधाय तत्र वसुधां च आवाह्यप्रपूजयेत्।। ॐ भूरिस भूमि रस्यः इति मंत्रेण भूमिं पूजयेत्।। ॐ भूर्भुवः स्वः भूम्यै नमः।। संपूज्य।। प्रार्थना।। शेष मूर्घ्नी स्थितांरम्यां नाना सुख विधायिनीम्।। विश्वधात्रीं महाभागां विश्वस्य जननी पराम्।।१।। क्षंतव्य च त्वया देवि सानूकूला मखेभव।। निर्विघ्नं मम कर्मेदं यथा स्यात्त्वं तथा कुरू।।२।। एह्येहि विश्वेश्वरी

जग-दीपिका

विश्वधात्रि वसुन्धरे सर्वजनाश्रय।। संभोममाने धररत्न बीजे गृहाण पूजा पृथिवि प्रणोमि।।३।। इति प्रार्थना।। प्रदिक्षणाक्रमेण धान्य प्रक्षेपणम्।।१।। जल प्रक्षेणम्।। ॐ वरुणस्योत्तम्भनमिसिः इति मंत्रेण धान्योपिर जलं पूरयेत्।।२।। संपूज्य।।

।।यवांकुर शुभा शुभा शुभफलम्।।

धन धान्यादि वृद्ध्यर्थं यवांकुराणि परिक्षयेत्।।१।।

सम्यगूद्धवं प्ररूढानि कोमलानि सितानि च।। श्यामलिन च कुब्जानि वर्जयेदशुभानि च।।२।। अवृष्टिं कुरूते कृष्णं धुम्राभं कलहं तथा।। अपूर्ण च दुर्भिक्षं श्यामलांकुरम्।।३।। अशुभेचांकुरे जाते शान्ति होमं समाचरेत् तिर्यग् गते भवेद् व्याधि कुब्जेशत्रु भयं तथा ।।४।। मूल मंत्रेण जुहूयाद् गुरुमूर्ति धरै सह।। अघोरास्रेण चास्त्रेण शतं वा सहस्र कम्।।५।। सिद्धान्त शेखरोक्ते।। प्ररूढैरंकुरैः कर्तुर्निर्दिशेच्च शुभाशुभम्।। श्यामैः कृष्णैरंकुरैरथ हानिस्तियगूढै व्याधिरांदो लितैस्तैः।। कुब्जे दुःखं दुःष्प्ररूढैमृर्ति च रोगाभुग्नैः स्थानदेशेष्ट हानि।।६।।

।।श्वेत यवांकुर पूजा विधि।।

यवांकुरं प्रवक्ष्यामि श्वेतं सिद्धि करं परम्।। एतेन विधिना देवि ग्रहीतव्यं महासुतौ।।१।। तत्र प्रातः कृत मंगल स्नानः नित्यिक्रयां कृत्वा सुमूहूर्त मण्डपे यवांकुर प्रदेशे स्वस्तीका-सनोपिर उपविश्य आचम्य प्राणानायम्य देशकालौः अद्यः अमुक गोत्रं अमुक शर्माहं अमुक याग वा नव चण्डी वा नवरात्र करिष्यमाण कर्मणि श्वेतांकुर पूजन करिष्ये।। दक्षिण हस्ते अक्षतान् गृहीत्वा।। ॐ धान्यमिस धिनुहिदेवान्ः।। इति मंत्रेण संपूज्य।। प्रार्थयेत्।। ब्रीहय श्च्चमे यवाश्च्च मे माषाश्च्च मेः।। सर्व कामार्थ सिद्धिश्व सर्वफल वितानकः।। सिद्धि भवतु मे देव प्रसीद परमेश्वर।। इति प्रार्थयेत्।। यवांकुर संपूज्य।।

।।यवांकुर खानयेत्।।

ये नत्वा खानयेद् ब्रह्मा ये नत्वां खानयेद्धिर।। येनत्वां खानियष्यिम् सर्व सिद्धि करो भव।।१।। यवांकुर की पूजा करके पश्चात् सोने की शलाका से यवयुक्त यवांकुर को निकाल कर गंगाजल पञ्चामृत आदि से स्नान कराकर पंचोपचार पूजा करके यवांकुर को चांदी की वस्तु में धर कर के श्रीं हीं श्रीं श्वेत यवांकुराय यं हीं हीं हं हः सं जूं स्वाहा।। संपूज्य।। प्रार्थना।। त्वं माया च विभूति स्वं शिक्त स्त्वं प्रकृतिः परा।। त्वामर्चये प्रयत्नेन सर्व सिद्धिं करोभवः।। देव स्थानोपिर स्थापयेत्।।

श्री महालक्ष्मी पूजनम्

शुभावसरे स्थिर लग्ने शुभ मुहूर्ते विप्र आज्ञानुसारेण श्री महालक्ष्मीपूजनं कृत्वा। पूर्वोक्त प्रकारेण - आचमनं पवित्र करणं शिखा बन्धनं आसन शुद्धि करणं स्वस्तिवाचनं मंगल श्लोकांश्च पठित्वा संकल्पं कुर्यात्।

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णु: - देशकालौ संकीर्त्य - कार्तिक मासे कृष्ण पक्षे अमावस्यायाम् महापर्विण तिथौ - अमुक वासरे अमुकामुक नक्षत्र योगादि अमुक गोत्र उत्पन्नोऽहं अमुक शर्माऽहं -

श्रुति-स्मृति पुराणोक्त वेदोक्त फलावाप्ति कामनया ज्ञाताज्ञात कायवाङ्गमनः कृत सकल पाप शमनार्थम् - श्री महालक्ष्मी सदैव प्रसन्नार्थम् स्थिर लक्ष्मी प्राप्ति द्वाराः शुभ मुहूर्ते श्री महालक्ष्मी कुबेरादि देवानां पूजनं करिष्ये।

तदङ्गत्वेन निर्विघ्नता पूर्वकं सिद्धि अर्थम् गणेशाम्बिकं वरुण षोडश मातृका नवग्रहादि पूजियष्ये।

श्री यन्त्रं वा महालक्ष्मी मूर्ति की स्थापना करे

श्री महालक्ष्मीं ध्यात्वा

हस्ते पद्म पुष्प मादाय - नमोऽस्तु नालीक निभाननायै - नमोऽस्तु दुग्धोदिध जन्म भूत्यै। नमोऽस्तु सोमामृत सोदरायै नमोऽस्तु नारायण वल्लभायै।।

या सा पद्मासनस्था विपुलकटितटी पद्मपत्रायताक्षी गम्भीरावर्तनाभिस्तनभरनिमता शुभ्रवस्त्रोत्तरीया। या लक्ष्मीर्दिव्यरूपैर्मणिगणखिचतैः स्नापिता हेमकुम्भैः सा नित्यं पद्महस्ता मम वसतु गृहे सर्वमाङ्गल्ययुक्ता।।

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह।। ॐ महालक्ष्म्यै नम:। ध्यानार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

आवाहनं - सर्वलोकस्य जननीं सर्वसौख्यप्रदायिनीम्। सर्वदेवमयीमीशां देवीमावाहयाम्यहम्।। ॐ तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्।। ॐ महालक्ष्म्यै नमः। महालक्ष्मीमावाहयामि, आवाहनार्थे पद्म पुष्पाणि समर्पयामि।

आसनं - तप्तकाञ्चनवर्णाभं मुक्तामणिविराजितम्। अमलं कमलं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम्।।ॐ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम्। श्रियं देवीमुप ह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्।। ॐ महालक्ष्म्ये नमः। आसनं समर्पयामि।

पाद्यं - गङ्गादितीर्थसम्भूतं गन्धपुष्पादिभिर्युतम्। पाद्यं ददाम्यहं देवि गृहाणाशु नमोस्तु ते।। ॐ कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामाद्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्। पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोप ह्वये श्रियम्।। ॐ महालक्ष्म्ये नमः। पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यं - अष्टगन्धसमायुक्तं स्वर्णपात्रप्रपूरितम्। अर्घ्यं गृहाण मद्दत्तं महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते।। ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्। तां पद्मनीमीं शरणं प्र पद्येऽलक्ष्मीमें नश्यतां त्वां वृणे।। ॐ महालक्ष्म्यै नमः। हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि। (अष्टगन्धमिश्रित जल अर्घ्यपात्र से देवी के हाथों में दे।)

आचमनं - सर्वलोकस्य या शक्तिर्ब्रह्मविष्णवादिभिः स्तुता। ददाम्याचमनं तस्यै महालक्ष्म्यै मनोहरम्।। ॐ आदित्यवर्णे तपसोऽधि जातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः। तस्य फलानि तपसा नुदन्तु या अन्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः।। ॐ महालक्ष्म्यै नमः। आचमनीयं जलं समर्पयामि। (आचमन के लिए जल चढ़ाये।)

स्नानं - मन्दाकिन्याः समानीतैर्हेमाम्भोरुहवासितैः। स्नानं कुरुष्व देवेशि सिललैश्च सुगन्धिभिः।। ॐ महालक्ष्म्यै नमः। स्नानं समर्पयामि। (स्नानीय जल अर्पित करे।) स्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (स्नान के बाद 'ॐ महालक्ष्म्यै नमः' ऐसा उच्चारण कर आचमन के लिए जल दे।)

दुग्ध स्नानं - कामधेनुसमुत्पन्नं सर्वेषां जीवनं परम्। पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्।। ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्मम्।। ॐ महालक्ष्म्यै नमः। पयःस्नानं समर्पयामि। पयःस्नानन्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। (गौ के कच्चे दूध से स्नान कराये, पुनः शुद्ध जल से स्नान कराये।)

दिधस्नानं - पयसस्तु समुद्भृतं मधुराम्लं शिशप्रभम्। दध्यानीतं मया देवि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।। ॐ दिधक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः सुरिभ नो मुखा करत्प्रण आयू र्ठिष तारिषत्। ॐ महालक्ष्म्ये नमः। दिध स्नानं समर्पयामि। दिध स्नानन्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

घृतस्नानं - नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसंतोषकारकम्। घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।। ॐ घृतं घृतपावानः पिबत वसां वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य हिवरिस स्वाहा। दिशः प्रदिश आदिशो विदिश उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा।। ॐ महालक्ष्म्यै नमः। घृतस्नानं समर्पयामि। घृतस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। (घृत से स्नान कराये तथा फिर शुद्ध जल से स्नान कराये।)

मधुस्नानं - तरुपुष्पसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु। तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।। ॐ मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः।। मधु नक्तमुतोषसो

मधुमत्पार्थिव र्वः रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता।। मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ२ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः।।

ॐ महालक्ष्म्यै नमः। मधुस्नानं समर्पयामि। मधुस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। (मधु से स्नान कराये, पुनः शुद्ध जल से स्नान कराये।)

शर्करास्नानं - इक्षुसारसमुद्भूता शर्करा पुष्टिकारिका। मलापहारिका दिव्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ अपा र्ठः रसमुद्वयस र्ठः सूर्ये सन्त र्ठः समाहितम्। अपा र्ठः रसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्।। ॐ महालक्ष्म्ये नम:। शर्करास्नानं समर्पयामि, शर्करास्नानन्ते पुन: शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। (शर्करा से स्नान कराकर पश्चात् शुद्ध जल से स्नान कराये।)

पञ्चामृत स्नानं - पयो दिध घृतं चैव मधुशर्करयान्वितम्। पञ्चामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।। ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमिप यन्ति सस्त्रोतसः। सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत् सिरत्।।

ॐ महालक्ष्म्यै नमः। पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि, पञ्चामृत-स्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। (पञ्चामृत स्नान के अनन्तर शुद्ध जल से स्नान कराये।)

गन्धोदक स्नानं - मलयाचलसम्भूतं चन्दनागरुसम्भवम्। चन्दनं देवदेवेशि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।। ॐ महालक्ष्म्यै नमः। गन्धोदक स्नानं समर्पयामि। (गन्ध (चन्दन) मिश्रित जल से स्नान कराये।) शुद्धोदक स्नान - मन्दािकन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्। तिददं किल्पतं तुभ्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।। ॐ महालक्ष्म्ये नमः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयािम। श्री यन्त्र वमहालक्ष्मीजी का दूध पञ्चामृत से अभिषेक करे। गन्धाक्षतपुष्पं समर्पयािम। श्री सूक्त पुरुषसूक्त या कनक धारा स्तोत्र के द्वारा अभिषेक करे। आचमनीयम् जलं समर्पयािम।

वस्त्रं - दिव्याम्बरं नूतनं हि क्षौमं त्वितिमनोहरम्। दीयमानं मया देवि गृहाण जगदिम्बके।। ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे।। ॐ महालक्ष्म्यै नमः। वस्त्रं समर्पयामि, आचमनीयं जलं च समर्पयामि।

उपवस्त्रं - कञ्चुकीमुपवस्त्रं च नानारत्नैः समन्वितम्। गृहाण त्वं मया दत्तं मङ्गले जगदीश्विर।। ॐ महालक्ष्म्यै नमः। उपवस्त्रं समर्पयामि, आचमनीयं जलं च समर्पयामि।

मधुपर्कं - कांस्ये कांस्येन पिहितो दिधमध्वाज्यसंयुतः। मधुपर्को मयानीतः पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्।। ॐ महालक्ष्म्ये नमः। मधुपर्कं समर्पयामि, आचमनीयं जलं च समर्पयामि। (कांस्य पात्र में स्थित मधुपर्क समर्पित कर आचमन के लिए दे।)

गन्धं - श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्। विलेपनं सुरश्रेष्ठे चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।। ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोप ह्वये श्रियम्।। ॐ महालक्ष्म्यै नमः गन्धं समर्पयामि।

चन्दनं - ॐ त्वां गन्धर्वा अखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पति:। त्त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान्यक्ष्मादमुच्यत:।। ॐ महालक्ष्म्ये नम: रक्त चन्दनं समर्पयामि।

अक्षतं - ॐ अक्षत्रमीमदन्त ह्यव प्रिया अधूषत। अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजा न्विन्द्र ते हरी।।

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः। मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वरी।। पुष्प एवं पुष्पमाला - माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो। मयानीतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्।। ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमिह। पशूनां रूपमन्नस्य मिय श्रीः श्रयतां यशः।। ॐ महालक्ष्म्यै नमः। पुष्पं पुष्पमालां च समर्पयामि।

बिल्व पत्रं - ॐ त्रिदलानि अखण्डानि बिल्वपत्राणि सुन्दिर। पूजयेत् परया भक्त्या महालक्ष्मीं सुखप्रदाम्।। ॐ नमो बिल्मिने。 - ॐ महालक्ष्म्यै नमः बिल्व पत्रं समर्पयामि। तुलसीपत्र - ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कितधा व्यकल्पयन्। मुखं किमस्यासीत् किं बाहू किमूरू पादा उच्येते।। तुलसीं हेमरूपां च रत्नरूपां च मञ्जरीम्। भवमोक्षप्रदां तुभ्यमर्पयामि हिरप्रियाम्।। ॐ महालक्ष्म्यै नमः। तुलसीदलं तुलसीमञ्जरीं च समर्पयामि।

दूर्वा - ॐ काण्डात्काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि। एवा नो दूर्वे प्र तनु सहस्रेण शतेन च।। दूर्वाङ्करान् सुहरितानमृतान् मङ्गलप्रदान। आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण परमेश्वरी।। ॐ महालक्ष्म्यै नमः। दुर्वाङ्करान् समर्पयामि।

आभूषणं - रत्नकङ्कणवैदूर्यमुक्ताहारादिकानि च। सुप्रसन्नेन मनसा दत्तानि स्वीकरुष्व भो:।। ॐ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्। अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्।। ॐ महालक्ष्म्यै नमः। नानाविधानि कुण्डलकटकादीनि आभूषणानि समर्पयामि। अबीर गुलालं - अबीरं च गुलालं च चोवा चन्दनमेवच। शृङ्गरार्थम् मया दतं गृहाण परमेश्वरि।। ॐ अहिरिव。 - ॐ महालक्ष्म्यै नमः सौभाग्य द्रव्यं समर्पयामि।

सिन्दूरं - सिन्दूरं रक्तवर्णं च सिन्दूरितलकप्रिये। भक्त्या दत्तं मया देवि सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।। ॐ सिन्धोरिव प्राध्वने शूघनासो वात प्रमियः पतयन्ति यहाः। घृतस्य धारा अरुषो न वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः।। ॐ महालक्ष्म्यै नमः। सिन्दूरं समर्पयामि। सुगन्धित द्रव्यं - ॐ तैलानि च सुगन्धीनि द्रव्याणि विविधानि च। मया दतानि लेपार्थं गृहाण परमेश्वरि।। ॐ त्र्यम्बकं。 - ॐ महालक्ष्म्यै नमः सुगन्धित द्रव्यं समर्पयामि।

अथाङ्ग पूजनम् - अक्षत पुष्प से पूजा करे।

ॐ चपलाये नमः, पादौ पूजयामि। ॐ चञ्चलाये नमः, जानुनी पूजयामि। ॐ कमलाये नमः, किटं पूजयामि। ॐ कात्यायन्ये नमः, नाभिं पूजयामि। ॐ जगन्मात्रे नमः, जठरं पूजयामि। ॐ विश्ववल्लभाये नमः, वक्षःस्थलं पूजयामि। ॐ कमलवासिन्ये नमः, हस्तौ पूजयामि। ॐ पद्माननाये नमः, मुखं पूजयामि। ॐ कमलपत्राक्ष्ये नमः, नेत्रत्रयं पूजयामि। ॐ श्रिये नमः, शिरः पूजयामि। ॐ महालक्ष्म्ये नमः, सर्वाङ्गं पूजयामि।

अष्ट सिद्धिमावाहनम् पूजनम् - अक्षत पुष्प से श्री लक्ष्मीजी के पास पूर्वादि दिशाओं में आवाहन करे। १. ॐ अणिम्ने नमः (पूर्वे), २. ॐ मिहम्ने नमः (अग्नि कोणे), ३. ॐ गिरम्णे नमः (दिक्षणे), ४. ॐ लिघम्ने नमः (नैर्ऋत्ये), ५. ॐ प्राप्त्यै नमः (पिश्चमे), ६. ॐ प्राकाम्यै नमः (वायव्ये), ७. ॐ ईशितायै नमः (उत्तरे) तथा ८. ॐ विशतायै नमः (ऐशान्याम्)।

अष्टलक्ष्मी पूजनम् - अक्षत पुष्प से अष्ट लक्ष्मी का आवाहन करे।

- १. ॐ आद्यलक्ष्म्यै नम:, २. ॐ विद्यालक्ष्म्यै नम:, ३. ॐ सौभाग्यलक्ष्म्यै नम:,
- ४. ॐ अमृतलक्ष्म्यै नमः, ५. ॐ कामलक्ष्म्यै नमः, ६. ॐ सत्यलक्ष्म्यै नमः,
- ७. ॐ भोगलक्ष्म्यै नमः, ८. ॐ योगलक्ष्म्यै नमः।

धूप - वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यः सुमनोहरः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।। ॐ कर्दमेन प्रजा भूता मिय संभव कर्दम। श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्।। ॐ महालक्ष्म्यै नमः, धूपमाघ्रापयामि।

दीप - कार्पासवर्तिसंयुक्तं घृतयुक्तं मनोहरम्। तमोनाशकरं दीपं गृहाण परमेश्वरि।। ॐ आप: सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे। नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले।। ॐ महालक्ष्म्यै नम:। दीपं दर्शयामि।

नैवेद्य - नैवेद्यं गृह्यतां देवि भक्ष्यभोज्यसमन्वितम्। षड्रसैरिन्वतं दिव्यं लिक्ष्म देवि नमोऽस्तु ते।। ॐ आर्द्रां पुष्किरिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह।। ॐ महालक्ष्म्यै नमः। नैवेद्यं निवेदयामि, मध्ये पानीयम्, उत्तरापोऽशनार्थं हस्तप्रक्षालनार्थं मुखप्रक्षालनार्थं च जलं समर्पयामि।

करोद्वर्तन - 'ॐ महालक्ष्म्यै नमः' यह कहकर करोद्वर्तन के लिए हाथों में चन्दन उपलेपित करे।

आचमन - शीतलं निर्मलं तोयं कपूरेण सुवासितम्। आचम्यतां जलं ह्येतत् प्रसीद परमेश्वरि।। ॐ महालक्ष्म्यै नम:, आचमनीयं जलं समर्पयामि। ऋतुफल - फलेन फिलतं सर्वं त्रैलोक्यं सचराचरम्। तस्मात् फलप्रदानेन पूर्णाः सन्तु मनोरथाः।। ॐ महालक्ष्म्ये नमः अखण्डऋतुफलं समर्पयामि, आचमनीयं जलं च समर्पयामि।

ताम्बूल-पूर्गीफल - पूर्गीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्। एलाचूर्णीदसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।। ॐ आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्। सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह।। ॐ महालक्ष्म्ये नमः, मुखवासार्थे ताम्बूलं समर्पयामि। (एला, लवंग, पूर्गीफलयुक्त ताम्बूल अर्पित करे।)

दक्षिणा - ॐ हिरण्यगर्भ: समवर्तताग्रे भूतस्य जात: पतिरेक आसीत्। स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

ॐ तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम्।। ॐ महालक्ष्म्ये नमः, दक्षिणां समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिमादाय - ॐ महालक्ष्म्यै च विद्यहे विष्णुपत्न्यैच धीमहि तन्नो लक्ष्मीः प्रयोदयात्। ॐ या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः पापात्मनां कृतिधयां हृदयेषु बुद्धिः। श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम्।। ॐ महालक्ष्म्यै नमः, मन्त्रपुष्पाञ्जलं समर्पयामि।

क्षमा प्रार्थना - नमस्ते सर्वदेवानां वरदासि हरिप्रिये। या गतिस्त्वत्प्रपन्नानां सा मे भूयात्त्वदर्चनात्।। आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्। पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वरि।।

जलं गृहीत्वा अनया पूजया श्री महालक्ष्मी प्रीयतां न मम।

श्री महाकाली (दवात) पूजनम्

ध्यानम् - खड्गं चक्र गदेषुः - ध्यानार्थे पुष्प समर्पयामि पञ्चोपचारै पूजयामि। प्रार्थना - कालिके त्वं जगन्मातर्मिसरूपेण वर्तसे। उत्पन्ना त्वं च लोकानां व्यवहारप्रसिद्धये।। या कालिका रोगहरा सुवन्द्या भक्तेः समस्तैर्व्यवहारदक्षैः। जनैर्जनानां भयहारिणी च सा लोकमाता मम सौख्यदास्तु।।

लेखनी पूजन - लेखनी (कलम) पर मौली बांधकर सामने रख ले और -लेखनी निर्मिता पूर्वं ब्रह्मणा परमेष्ठिना। लोकानां च हितार्थाय तस्मात्तां पूजयाम्यहम्।। ॐ लेखनीस्थायै देव्यै नम:। पञ्चोपचार से पूजा करे।

शास्त्राणां व्यवहाराणां विद्यानामाप्नुयाद्यत:। अतस्त्वां पूजियष्यामि मम हस्ते स्थिरा भव।।

सरस्वती (पञ्जिका-बही-खाता) पूजनम्

ध्यानम् - अक्षत पुष्प लेकर ध्यान करे।

ध्यान - या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता, या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना। या ब्रह्माच्युतशङ्करप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता, सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाङ्यापहा।। ॐ वीणापुस्तकधारिण्यै श्रीसरस्वत्यै नमः।

विषम संख्या में बही बसना में सिन्दूर या रोली से श्री एवं स्वस्तिक लिखकर - पञ्चोपचार से पूजा करे।

प्रार्थना - विद्यासु शास्त्रेषु विवेक दीपे, ष्वाद्येषु वाक्येषु च का त्वदन्या। ममत्वगर्तेऽति महान्धकारे, विभ्रामयत्ये तदतीव विश्वम्।। ॐ वीणापुस्तक धारिण्ये नम:।

कुबेर पूजनम्

आवाहयामि देव त्वामिहायाहि कृपां कुरु। कोशं वर्द्धय नित्यं त्वं परिरक्ष सुरेश्वर।।

आवाहन के पश्चात् 'ॐ कुबेराय नमः' इस नाम-मन्त्र से यथालब्धोपचार-पूजनकर अन्त में इस प्रकार प्रार्थना करे -

> धनदाय नमस्तुभ्यं निधिपद्माधिपाय च। भगवन् त्वत्प्रसादेन धनधान्यादिसम्पदः।।

इस प्रकार प्रार्थना कर पूर्वपूजित हल्दी, धनिया, कमलगट्टा, द्रव्य, दूर्वादि से युक्त थैली तिजोरी में रखे।

तुला तथा मान-पूजन

सिन्दूर से तराजू आदि पर स्वस्तिक बना ले। मौली लपेटकर तुलाधिष्ठातृदेवता का इस प्रकार ध्यान करना चाहिए -

> नमस्ते सर्वदेवानां शक्तित्वे सत्यमाश्रिता। साक्षीभूता जगद्धात्री निर्मिता विश्वयोनिना।।

ध्यान के बाद 'ॐ तुलाधिष्ठातृदेवतायै नमः' इस नाम-मन्त्र से गन्धाक्षतादि उपचारों द्वारा पूजन कर नमस्कार करे।

दीपमालिका - (दीपक) पूजन

किसी पात्र में ग्यारह, इक्कीस या उससे अधिक दीपकों को प्रज्वलित कर महालक्ष्मी के समीप रखकर उस दीप-ज्योति का 'ॐ दीपावल्यै नमः' इस नाम-मन्त्र से गन्धादि उपचारों द्वारा पूजन कर इस प्रकार प्रार्थना करे.

त्वं ज्योतिस्त्वं रविश्चन्द्रो विद्युदिग्नश्च तारकाः। सर्वेषां ज्योतिषां ज्योतिर्दीपावल्यै नमो नमः।

दीप मालिकाओं का पूजन कर अपने आचार के अनुसार संतरा, ईख, पानीफल, धान का लावा इत्यादि पदार्थ चढ़ाये। धान का लावा (खील) गणेश, महालक्ष्मी तथा अन्य सभी देवी-देवताओं को भी अर्पित करे। अन्त में अन्य सभी दीपकों को प्रज्वलित कर सम्पूर्ण गृह अलंकृत करे। आरती करे एवं पष्पाञ्जलि अर्पण करे।

"ॐ तत्सत्"

।।अथ श्री विष्णु (सत्यनारायण, शालिग्राम) पूजनम्।।

संकल्पः - देशकालौ संकीर्त्य - अमुक गोत्रोत्पनोऽहं अमुक नामाहं ममात्मनः श्रुति स्मृति पुराणोक्त फल प्राप्त्यर्थम् धर्मार्थ काम मोक्ष चतुर्विध पुरुषार्थ सिद्धि द्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं - यथोपचारैः श्री विष्णु (सत्यनारायण, शालिग्राम) पूजन महं करिष्ये।

ध्यानम् - उद्यत्कोटिदिवाकराभमिनशं शङ्खं गदां पङ्कजं, चक्रं बिभ्रतिमिन्दिरावसुमती-संशोभिपार्श्वद्वयम्। कोटीराङ्गदहारकुण्डलधरं पीताम्बरं कौस्तुभै - दींप्तं विश्वधरं स्ववक्षसि लसच्छीवत्सिचिह्नं भजे।।१।।

सशंख चक्रं सिकरीट कुण्डलं सपीत वस्त्रं सरसी रुहेक्षणम्। सहार वक्ष स्थल कौस्तुभिश्रयं नमामि विष्णुं शिरसा चतुर्भुजम।।२।।

सत्यनारायण ध्यानम् - ॐ सत्यव्रतं सत्यपर त्रिसत्यं सत्यस्ययोनिं निहितञ्च सत्ये। सत्यस्य सत्यामृत सत्य नेत्रं सत्यात्मकं त्वां शरणं प्रपन्ना:।।३।।

ध्यानार्थे पुष्पाणि तुलसीदलं समर्पयामि शालिग्राम का आवाहन व प्राणप्रतिष्ठा नहीं होती है। केवल ध्यान करे।

आवाहनं - ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। स भूमि र्ठः सर्वत स्पृत्वाऽत्य-तिष्ठद्दशाङ्गुलम्।। आगच्छ भगवन् देव स्थाने चात्र स्थिरो भव। यावत् पूजां करिष्यामि तावत् त्वं संनिधौ भव।। आवाहनार्थे पुष्पं समर्पयामि। आसनं - ॐ पुरुष एवेद र्ठः सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनाति-रोहति।। अनेकरत्नसंयुक्तं नानामणिगणान्वितम्। भावितं हेममयं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम्।। आसनार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

पाद्यं - ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः। पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि।। गङ्गोदकं निर्मलं च सर्वसौगन्ध्यसंयुतम्।। पादप्रक्षालनार्थाय दत्तं मे प्रतिगृह्यताम्।। पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यं - ॐ त्रिपादूर्ध्वं उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत् पुनः ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि।। गन्धपुष्पाक्षतैर्युक्तमर्घ्यं सम्पादितं मया। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं प्रसन्नो वरदो भव।। हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनं - ॐ ततो विराडजायत विराजो अधि पूरुषः। स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः।। कपूरेण सुगन्धेन वासितं स्वादु शीतलम्। तोयमाचमनीयार्थं गृहाण परमेश्वर।। ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः। मुखे आचमनीयं जलं समर्पयामि।

एक शुद्ध पात्र में कुङ्कुमादि से स्वस्तिकादि बनाकर चन्दनयुक्त तुलसीदल के ऊपर भगवान् को स्थापितकर निम्नलिखित विधि से स्नान कराये।

स्नानं - ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्। पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये।। मन्दाकिन्यास्तु यद् वारि सर्वपापहरं शुभम्। तदिदं किल्पतं देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।। स्नानीयं जलं समर्पयामि।

दुग्धस्नानं - ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्मम्।। कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम्। पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्।। पयःस्नानं समर्पयामि। (दूध से स्नान कराये, पुनः शुद्ध जल से स्नान कराये।)

दिधस्नानं - ॐ दिधक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरिभ नो मुखा करत्र ण आयू र्ठः षि तारिषत्।। पयसस्तु समुद्भृतं मधुराम्लं शिशप्रभम्। दध्यानीतं मया देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।। दिधस्नानं समर्पयामि। (दिध से स्नान कराये, पुनः शुद्ध जल से स्नान कराये।)

घृतस्नानं - ॐ घृतं घृतपावानः पिबत वसां वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य हिवरिस स्वाहा। दिशः प्रदिश आदिशो विदिश उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा। नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसंतोषकारकम्। घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।। घृतस्नानं समर्पयामि। (घृत से स्नान कराकर शुद्ध जल से स्नान कराये।)

मधुस्नानं - ॐ मधु वाता ऋतायते मधु क्षरिन्त सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः।। मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव र्ठः रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता।। मधुमान्नो वनस्पितर्मधुमाँ २ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः।। पुष्परेणुसमुत्पन्नं सुस्वादु मधुरं मधु। तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।। मधुस्नानं समर्पयामि। (मधु से स्नान कराये, पुनः शुद्धोदक से स्नान कराये।)

शर्करास्नानं - ॐ अपा र्ठः रसमुद्धयस र्ठः सूर्ये सन्त र्ठः समाहितम्। अपा र्ठः रसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्।। इक्षुरससमुद्भूतां शर्करां पुष्टिदां शुभाम्। मलापहारिकां दिव्यां स्नानार्थं प्रतिगृह्णताम्।। शर्करास्नानं समर्पयामि। (शुद्ध जल से स्नान कराये।)

पञ्चामृतस्नानं - ॐ पञ्च नद्य: सरस्वतीमिप यन्ति सस्रोतसः। सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सिरित्।। पयोदिधघृतं चैव मधुशर्करयान्वितम्। पञ्चामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।। पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि। (पञ्चामृत से स्नान कराने के बाद शुद्ध जल से स्नान कराये।) गन्धोदक स्नानं - अ ठी शुना ते अ ठी शुः पृच्यतां परुषा परुः। गन्धस्ते सोममवतु प्रदार स्मो अन्यवाः। प्रलगान्वसम्भवन्यन्तेन विधिश्रतम्। इतं गन्धोदकस्तानं कङ्गानं

मदाय रसो अच्युत:।। मलयाचलसम्भूतचन्दनेन विमिश्रितम्। इदं गन्धोदकस्नानं कुङ्कुमाक्तं नु गृह्यताम्।। गन्धोदकस्नानं समर्पयामि। (केसरमिश्रित चन्दन से स्नान कराये।) शुद्धोदकस्नानं - शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः। शुद्धं यत्सिललं दिव्यं गङ्गाफलसमं स्मृतम्। समर्पितं मया भक्त्या शुद्धस्नानाय गृह्यताम्।। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

महाभिषेक स्नानम् - शालिग्रामोपि तुलसीदलं समर्प्य धारापात्रं गन्धादिभिः सम्पूज्य पुरुष सूक्तेन देवानां मूर्ध्नि अभिषेकं स्नानं कार्यम्।। घण्टानादं कुर्यात् अमृताभिषेकं समर्पयामि। चरणोदकं धृत्वा देव वस्त्रेण प्रमृज्य कलशोपि (स्वस्थाने वा) संस्थाप्य। वस्त्रं - ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जिज्ञरे। छन्दा र्ठः सि जिज्ञरे तस्माद्य- जुस्तस्मादजायत।। शीतवातोष्णसंत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्। देहालङ्करणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।। वस्त्रं समर्पयामि, आचमनीयं जलं समर्पयामि।

उपवस्त्रं - उपवस्त्रं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने। भक्त्या समर्पितं देव प्रसीद परमेश्वर।। उपवस्त्रं समर्पयामि, आचमनीयं जलं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतं - ॐ तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादत:। गावो ह जिज्ञरे तस्मात्त-स्माज्जाता अजावय:।। नविभस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्। उपवीतं मया दत्तं गृहाण परेमश्वर।। यज्ञोपवीतं समर्पयामि, यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। गन्धं - ॐ तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः। तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये।। श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्। विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।। चन्दनं समर्पयामि।

अक्षतं - (शालिग्राम व विष्णु पर अक्षत नहीं चढ़ाया जाता, अत: अक्षत के स्थान पर श्वेत तिल अर्पित करना चाहिए या जौ अर्पण करे।)

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया अधूषत। अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजा न्विंद्र ते हरी।।

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः। मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर।। अक्षतस्थाने श्वेततिलान् समर्पयामि।

पुष्पं - ॐ इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम्। समूढमस्य पा र्ठः सुरे स्वाहा।। माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो। मयानीतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर।। पुष्पं पुष्पमालां समर्पयामि।

तुलसीपत्रं - ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कितधा व्यकल्पयन्। मुखं किमस्यासीत् किं बाहू किमूरू पादा उच्येते।। तुलसीं हेमरूपां च रत्नरूपां च मञ्जरीम्। भवमोक्षप्रदां तुभ्यमर्पयामि हिरिप्रियाम्। तुलसीदलं, तुलसीमञ्जरी समर्पयामि। अष्टोत्तरशत नाम या सहस्रनाम से तुलसी अर्चना करे।

दूर्वां - ॐ काण्डात्काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि। एवा नो दूर्वे प्र तनु सहस्रेण शतेन च।। दूर्वाङ्कुरान् सुहरितानमृतान् मङ्गलप्रदान्। आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण परमेश्वर।। दूर्वाङ्करान् समर्पयामि।

आभूषण - वज्रमाणिक्यवैदूर्यमुक्ताविद्रुममण्डितम्। पुष्परागसमायुक्तं भूषणं प्रतिगृह्यताम्।। अलङ्करणार्थे आभूषणानि समर्पयामि।

सौभाग्य द्रव्यं - अहिरिव भोगै: पर्येति बाहुं ज्याया हेतिं परिबाधमान:। हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान् पुमान् पुमा र्ठः सं परि पातु विश्वत:।। सौभाग्य द्रव्यं समर्पयामि।

सुगन्धित (इत्र) द्रव्यं - ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्। उर्वारुकिमव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।। सुगन्धित द्रव्यं समर्पयामि।

अथाङ्गपूजनम् - ॐ सत्य पर ब्रह्मणे नमः पादौ पूजयामि। ॐ सङ्कर्षणाय नमः गुल्फौ, पू,। ॐ कालात्मने नमः जानुनी, पू,। ॐ विश्वरूपाय नमः जंघौ, पू,। ॐ विश्वरूमै नमः कटिं, पू,। ॐ पद्मनाभाय नमः नाभिं, पू,।

ॐ विश्वमूर्तये नमः उदरं, पू॰। ॐ परमात्मने नमः हृदयं, पू॰। ॐ वैकुण्ठाय नमः कण्ठं, पू॰। ॐ सर्वास्त्र धारिणे नमः बाहूं, पू॰। ॐ वाचस्पतये नमः मुखं, पू॰। ॐ हरये नमः जिह्वां, पू॰। ॐ नारायणाय नमः नेत्रं, पू॰। ॐ उरगाय नमः ललाटं, पू॰। ॐ सर्वकामदाय नमः शिखां, पू॰। ॐ सहस्रशीर्षे नमः शिरः पू॰। ॐ सर्वात्मने नमः सर्वाङ्ग पूजयामि।

धूपं - ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः। ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भया र्ठः शूद्रो अजायत।। वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।। धूपमाघ्रापयामि।

दीपं - ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत। श्रोताद्वायुश्च प्राणश्च मुखादिग्नरजायत।। साज्यं च वर्तिसंयुक्तं विह्नना योजितं मया। दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यितिमरापहम्।। दीपं दर्शयामि। देवस्याग्रे गोमयेन जलेन वा चतुष्कोणमण्डलं कृत्वा तस्योपिर नैवेद्य पात्रं निधाय।

नैवेद्य - भगवान् के भोग के निमित्त सामने रखे नैवेद्य में तुलसीदल छोड़कर पांच ग्रास-मुद्रा दिखाये -

- १. ॐ प्राणाय स्वाहा कनिष्ठिका, अनामिका और अंगूठा मिलाये।
- २. ॐ अपानाय स्वाहा अनामिका, मध्यमा और अंगूठा मिलाये।
- ३. ॐ व्यानाय स्वाहा मध्यमा, तर्जनी और अंगूठा मिलाये।
- ४. ॐ उदानाय स्वाहा तर्जनी, मध्यमा, अनामिका और अंगूठा मिलाये।
- ५. ॐ समानाय स्वाहा सब अंगुलियां मिलाये। इसके बाद निम्न मन्त्र पढ़कर नैवेद्य भगवान् को निवेदित करे ॐ नाभ्या आसीदन्तिरक्ष ठी शीष्णों द्यौः समवर्तत। पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ२ अकल्पयन्।। त्वदीयं वस्तु गोविन्द तुभ्यमेव समर्पये। गृहाण सुमुखो भूत्वा प्रसीद परमेश्वर।। नैवेद्यं निवेदयामि, मध्ये पानीयं जलं समर्पयामि, आचमनीयं जलं समर्पयामि।

अखण्ड ऋतुफल - ॐ याः फिलनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः। बृहस्पितप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व र्ठः हसः।। इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव। तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मिन जन्मिन।। अखण्डऋतुफलं समर्पयामि।

ताम्बूल - ॐ यत्पुरुषेण हिवषा देवा यज्ञमतन्वत। वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्भविः।। पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्। एलालवङ्गसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।। एलालवङ्गपूगीफलयुतं ताम्बूलं समर्पयामि।

दक्षिणां - ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। सदाधार पृथिवीं द्यामृतेमां कस्मै देवाय हिवषा विधेम।। दक्षिणा द्रव्यं समर्पयामि।

आरती मन्त्र - ॐ इद र्ठ. हिव: प्रजननं मे अस्तु दशवीर र्ठ. सर्वगण र्ठ. स्वस्तये। आत्मसिन प्रजासिन पशुसिन लोकसन्य भयसिन। अग्नि: प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयो रेतो अस्मासु धत्त।।

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्। आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव।।

नीराजनं समर्पयामि - शङ्ख्यमध्यस्थितं तोयं भ्रामितं केशवोपिर। अङ्गलग्नं मनुष्याणां ब्रह्महत्यां व्यपोहित।। जलेन प्रदक्षिणं पृष्पेण देववन्दनम् अभिवन्दनम् – आत्मवन्दनम् हस्तं प्रक्षाल्य। पृष्पाञ्चिल - ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।। ॐ राजाधिराजाय प्रसद्ध साहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे। स मे कामान् काम कामाय मह्यं कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु।। कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः।

ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात् सार्वभौमः सार्वायुषान्तादापरार्धात् पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया एकराडिति तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे। आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति।।

ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात्। सं बाहुभ्यां धमित सं पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन् देव एक:। तत्पुरुषाय विद्यहे नारायणाय धीमिह तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्। कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्यात्मना वानुसृतस्वभावात्। करोति यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयेत्तत्।। पुष्पाञ्जलं समर्पयामि।

प्रदक्षिणा - ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिण:। तेषा ठंः सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि।। यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च। तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणपदे पदे।। प्रदक्षिणां समर्पयामि।

नमस्कारं स्तुति पाठं - मूकं करोति वाचालं पङ्गु लङ्घयते गिरिम्। यत्कृपा तमहं वन्दे परमानन्दमाधवम्।। त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव। त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्वं मम देवदेव।। पापोऽहं पापकर्माहं पापात्मा पापसम्भवः। त्राहि मां पुण्डरीकाक्ष सर्वपापहरो भव।। कृष्णाय वासुदेवाय देवकीनन्दनाय च। नन्दगोपकुमाराय गोविन्दाय नमो नमः।। स्तुति प्रार्थना समर्पयामि। अनेन कृतार्चनेन श्री महाविष्णुः (सत्यनारायण) प्रीयतां न मम जलमुत्सृजेत्।।

अथ शिव पूजनम्

सङ्कल्प - सकाम हेतु पूर्व लिखित सङ्कल्प करे एवं श्री साम्ब सदाशिव अनुग्रह प्राप्त्यर्थम् अमुक शिव लिङ्गोपिर यथोपचारै: षडङ्गन्यासपूर्वकं दुग्ध धारया जलधारयां (अमुक द्रव्येण) शिवपूजनम् अमुक संख्याक ब्राह्मण द्वारा रुद्र अभिषेकाख्यं कर्म-कारिष्ये। (स्वयं करे तो करिष्ये बोले)।

तदङ्गत्वेन - शिव परिकर गणादि पूजनम् एवं निर्विघ्नता सिद्ध्यर्थम् गणपत्यादि देवानां पूजियष्ये। त्रिपुण्ड्र भस्म, व रुद्राक्ष माला धारण अवश्य करे।" (शिवपूजा उदङ्गमुख) विशेष है।

षडङ्गन्यास

ॐ मनोजूति。 - ॐ हृदयाय नमः (१)

ॐ अबोद्ध्यग्नि: - ॐ शिर से स्वाहा (२)

ॐ मूर्द्धानंदिवोः - ॐ शिखायै वषट् (३)

ॐ मर्म्माणि ते。 - ॐ कवचाय हुम् (४)

ॐ विश्वतश्चक्षु रुतः - नैत्र त्रयाय वौषट् (५)

ॐ मानस्तोके。 - ॐ अस्त्रायफट् (६)

वा – ॐ कारंमूर्ध्नि विन्यस्य नकारं नासिकाग्रतः मोकारं तु ललाटे वै भकारं मुखमध्यतः। गकारं कण्ठदेशे च वकारं हृदये न्यसेत् तेकारं दक्षिणे हस्ते वामे रुकार मेव च। द्राकारं नाभिदेशे च यकारं पादयोर्द्वयो एवं न्यास – विधानेन निष्पापात्मा भवेन्नरः।।

गणपतिपूजनम् - ॐ गणानांत्वा - पञ्चोपचारवा षोडशोपचार से पूजा करे। प्रार्थना करे - ॐ नमो गणेभ्योः -।

पार्वती (अम्बिका) पूजनम् - हेमाद्रि तनयां देवीं वरदां शङ्कर प्रियाम्। लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम्।।

पूजा करे (प्रतिष्ठा की हुई मूर्ति का आवाहन नहीं करे)

प्रार्थना - ॐ अम्बे अम्बिकेम्बालिके。 -

नन्दीश्वर पूजनं - ॐ आयं गौ: पृश्निरक्रमीदसदन् मातरं पुर:। पितरं च प्रयन्तस्व:।। पूजन करके प्रार्थना करे - ॐ प्रैतु वाजी कनिक्रदन्नानदद्रासभ: पत्वा। भरन्नग्निं पुरीष्यं मा पाद्यायुष: पुरा।।

वीरभद्र पूजनं - ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा र्वः सस्तनूभिर्व्यशेमिह देविहतं यदायुः।।

पूजन करके प्रार्थना करे - ॐ भद्रो नो अग्निराहुतो भद्रा रातिः सुभग भद्रो अध्वरः। भद्रा उत प्रशस्तयः।। कार्तिकेय पूजनं - ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान उद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्। श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महि जातं ते अर्वन्।।

पूजन करके प्रार्थना करे - ॐ यत्र बाणाः सम्पतिन्त कुमारा विशिखा इव। तन्न इन्द्रो बृहस्पतिरदितिः शर्म यच्छतु विश्वाहा शर्म यच्छतु।।

कुबेर पूजनं - ॐ कुविदङ्ग यवमन्तो यवं चिद्यथा दान्त्यनुपूर्वं वियूय। इहेहैषां कृणुहि भोजनानि ये बर्हिषो नम उक्तिं यजन्ति।।

पूजन करके प्रार्थना करे - ॐ वय र्ठ॰ सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमिह।। कीर्तिमुख पूजनं - ॐ असवे स्वाहा वसवे स्वाहा विभुवे स्वाहा विवस्वते स्वाहा गणिश्रये स्वाहा गणिपतये स्वाहाऽभिभुवे स्वाहाऽधिपतये स्वाहा शूषाय स्वाहा स र्ठ॰ सर्पाय स्वाहा चन्द्राय स्वाहा ज्योतिषे स्वाहा मिलम्लुचाय स्वाहा दिवा पतयते स्वाहा।। पूजन करके प्रार्थना करे - ॐ ओजश्च मे सहश्च म आत्मा च मे तनूश्च मे शर्म च मे वर्म च मेऽङ्गानि च मेऽस्थीनि च मे परू र्ठ॰ षि च मे शरीराणि च म आयुश्च मे जरा च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।

सर्प पूजनं - ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिविमनु। येऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्य: सर्पेभ्योनम: अथ शिव ध्यानम्

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतिगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवरा-भीतिहस्तं प्रसन्नम्। पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तं वसानं विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्।। ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः।। ॐ भूर्भुवः स्वः साम्बसदाशिवाय नमः, ध्यानार्थे पुष्पं बिल्वपत्रं समर्पयामि। आसनं - ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभि चाकशीहि।। ॐ भूर्भुवः स्वः साम्बसदाशिवाय नमः, आसनार्थे बिल्वपत्राणि समर्पयामि। पाद्यं - ॐ यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे। शिवां गिरित्र तां कुरु मा हि र्ठः सीः पुरुषं जगत्।। ॐ भूर्भुवः स्वः साम्बसदाशिवाय नमः, पादयोः पाद्यं समर्पयामि। अर्घ्यं - ॐ शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छा वदामिस। यथा नः सर्विमिज्जगदयक्ष्म र्ठः सुमना असत्।। ॐ भूर्भुव स्वः श्री साम्बसदाशिवाय नमः, हस्तयोरघ्यं समर्पयामि। आचमनं - ॐ अध्यवोचदिधवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्। अहींश्च सर्वाञ्चम्थन्त्सर्वाश्च यातुधान्योऽधराचीः परा सुव।। ॐ भूर्भुव स्वः श्री साम्बसदाशिवाय नमः, आचमनीयं जलं समर्पयामि।

स्नानं - ॐ असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभुः सुमङ्गलः। ये चैन र्ठः रुद्रा अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशोऽवैषा र्ठः हेड ईमहे।। ॐ भूर्भुव स्वः श्री साम्बसदाशिवाय नमः, स्नानं समर्पयामि।

मधुपर्कं - ॐ यन्मधुनोमधव्यं परम र्ठः रूपमन्नाद्यम्। तेनाहं मधुनो मधव्येन परमेण रूपेणन्नाद्येन परमो मधव्योऽन्नादोसानि।। ॐ भूर्भुव स्व: श्री साम्बसदाशिवाय नम:, मधुपर्कम् समर्पयामि – आचमनीयं जलं समर्पयामि।

पय स्नानं - ॐ पयः पृथिव्याम्पयऽओषधीषु पयोदिव्यन्तरिक्षे पयोधाः पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्य्यम्।। ॐ भूर्भुव स्वः श्री साम्बसदाशिवाय नमः, पय स्नानं समर्पयामि पय स्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

दिधस्नानं - ॐ दिध क्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः सुरिभ नो मुखा करत्प्रण आयू र्ठः षि तारिषत्।। ॐ भूर्भुव स्वः श्री साम्बसदाशिवाय नमः, दिध स्नानम् समर्पयामि। दिधस्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

घृत स्नानम् - ॐ घृतं घृत पावानः पिवतव्वसां वसा पावानः पिवतान्तरिक्षस्य हिवरिस स्वाहा। दिशः प्रदिशऽआदिशो विदिशऽउदिशोदिग्भ्यः स्वाहा। ॐ भूर्भुव स्वः श्री साम्बसदाशिवाय नमः, घृतं स्नानं समर्पयामि। घृत स्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि। मधुस्नानं - मधुव्वाता ऋतायते मधुक्षरिन्तिसन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः।। मधु नक्त मुतोषसोमधु मत्पार्थिव ठी रजः। मधुद्यौरस्तु नः पिता।। मधु मान्नो वनस्पतिम्मधुमां २ अस्तु सूर्य्यः।। माद्ध्वीर्गावो भवन्तु नः।। ॐ भूर्भुव स्वः श्री साम्बसदाशिवाय मधु स्नानं नमः, समर्पयामि। मधु स्नानानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

शर्करास्नानं - ॐ अपा र्ठः रस मुद्धयस र्ठः सूर्य्ये सन्त र्ठः समाहितम्। अपा र्ठः रसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्युतममुपयाम गृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्ट्टं गृह्णाम्येष ते योनि रिन्द्राय त्वा जुष्ट्टतमम्।। ॐ भूर्भुव स्वः श्री साम्बसदाशिवाय नमः, शर्करोदक स्नानं समर्पयामि। शर्करोदक स्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

पञ्चामृत स्नानं - ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमिपयन्ति सस्रोतसः। सरस्वती तु पञ्चधासो देशे भवत्सिरत्।। ॐ भूर्भुव स्वः श्री साम्बसदाशिवाय नमः, पञ्चामृत स्नानं समर्पयामि। पञ्चामृत स्नानन्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

भस्मस्नानं - ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम् यद्देवेषु त्र्यायुषम् तन्नोअस्तु त्र्यायुषं। ॐ भूर्भुव स्वः श्री साम्बसदाशिवाय नमः, भस्म स्नानं समर्पयामि। भस्म स्नानन्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

गन्धोदक स्नानम् - ॐ गन्धर्वस्त्वाविश्वावसुः परिदधातु विश्वस्यारिष्टयै यजमानस्य परिधि रस्यिगिरिङऽईिङतः।। ॐ भूर्भुव स्वः श्री साम्बसदाशिवाय नमः, गन्धोदक स्नानं समर्पयामि। गन्धोदक स्नानन्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

उद्वर्तन स्नानम् - ॐ अ र्ठः शुनातेऽअ र्ठः शुः पृच्यतां परुषा परुः गन्धस्ते सोम मवतु मदाय रसोऽअच्युतः।। ॐ भूर्भुव स्वः श्री साम्बसदाशिवाय नमः, उद्वर्तस्नानं समर्पयामि। उद्वर्तस्नानन्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

विशेष - अन्य फलादि रस के द्वारा भी स्नान करा सकते हैं।

निर्माल्यम् उतरे विसृज्य, गन्धाक्षत पुष्पाणि बिल्वपत्रं समर्प्य धारा पात्रं गन्धादिभिः सम्पूज्य रुद्र सूक्तेन पय, जल वा रसेनः अभिषेकं कार्यम्। "घण्टानादं कुर्य्यात"

अभिषेक मन्त्रः - ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतोत इषवे नम:। बाहुभ्यामुत ते नम:।।१।। याते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि।।२।। यामिषुङ्गिरिशन्त हस्ते विभर्ष्यस्तवे। शिवाङ्गिरित्रतां कुरु माहि र्ठः सी: पुरुषञ्जगत्।।३।। शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छा वदामिस। यथा न: सर्विमिज्जगदयक्ष्म र्ठः सुमना असत्।।४।। अध्यवोचदिधवक्ता प्रथमो दैव्योभिषक्। अहींश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च यातुधान्यो धराची: परासुव।।५। असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुः सुमङ्गलः ये चैन र्ठः रुद्रा अभितो दिक्षु श्रिता:। सहस्रशोऽवैषा र्ठः हेड ईमहे।।६।। असौ योऽव सर्पति नीलग्रीवो विलोहित: उतैनङ्गोपा अदृश्रन्नदृश्रनुदहार्यः स दृष्टो मृडयाति नः।।७।। नमोस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीदुषे। अथो ये अस्य सत्वानोऽहं तेभ्योऽकरन्नमः।।८।। प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरात्न्यीर्ज्याम्। याश्च ते हस्त इषवः पराता भगवो वप।।९।। विज्यन्धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ २ उत। अनेशत्रस्य या इषव आभुरस्य निषङ्गधि:।।१०।। याते हेतिर्मीदुष्ट्रम हस्ते बभूव ते धनु:।। तयास्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिभुज।।११।। परिते धन्वनो हेतिरस्मान वृणक्तु विश्वत:। अथो य इषुधिस्तवारे अस्मिन्निधेहि तम्।।१२।। अवतत्य धनुष्ट्व र्ठः सहस्राक्षशतेषुधे। निशीर्यशल्यानाम्मुखा शिवो नः सुमना भव।।१३।। नमस्त आयुधायानातताय धृष्णवे। उभाभ्ध्यामुत ते नमो बाहुभ्यान्तव धन्न्वने।।१४।। मानो महान्तमुत मानो अर्भकम्मा न उक्षन्तमुतमानऽउक्षितम्। मानो वधी: पितरान्मोत मातरम्मान: प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिष:।।१५।। मानस्तोके तनये मान आयुषि मानो गोषु मानो अश्वेषु रीरिष:। मानो व्वीरान्स्द्र भामिनो व्वधीर्हविष्मन्त: सदिमत्त्वा हवामहे।।१६।। ॐ नम: शम्भवायः - ॐ त्र्यम्बकंः - ॐ अधोरेभ्योः -

बिल्व पत्र को शिर से स्पर्श करे. अवघ्राण व नेत्र का स्पर्श करे।

ॐ अमृताभिषेकोऽस्तु। ॐ भूर्भुवः स्वः श्री साम्बसदाशिवाय नमः अभिषेक स्नानं समर्पयामि अभिषेकान्ते आचमनं जलं समर्पयामि।।

विजया (आभरणम्) - ॐ विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ२ उत अनेशत्रस्य याऽइषव आभुरस्य निषङ्गधि।। ॐ भूर्भुव स्वः श्री साम्बसदाशिवाय नमः, आभरणं समर्पयामि। आचमनीयं जलं समर्पयामि।

वस्त्रं - ॐ असौ योऽवसर्प्पतिनीलग्रीवो विलोहित:। उतैनं गोपा अदृश्श्रन्नदृश्रनुदहार्य:

सदृष्टो मृडयातिन:।। ॐ भूर्भुव स्व: श्री साम्बसदाशिवाय नम:, वस्त्रं समर्पयामि। वस्त्रान्ते जलं समर्पयामि।

उपवस्त्रं - ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरुथमाऽसदत्सवः। वासो अग्ने विश्व रूप र्ठः सं व्ययस्व विभावसो।। ॐ भूर्भुव स्वः श्री साम्बसदाशिवाय नमः, उपवस्त्रं समर्पयामि। उपवस्त्रान्ते जलं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतम् - ॐ नमोऽस्तु नील ग्रीवाय सहस्राक्षाय मीदुषे। अथो ये अस्य सत्वानोऽहं तेभ्योऽकरं नमः।। ॐ भूर्भुव स्वः श्री साम्बसदाशिवाय नमः, उपवीतम् समर्पयामि। उपवीतान्ते जलं समर्पयामि।

गन्धं (चन्दनम्) - ॐ नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च वो नमो नमो भवाय च रुद्राय च नमः शर्वाय च पशुपतये च नमो नील ग्रीवाय च शिति कण्ठाय च।। ॐ भूर्भुव स्वः श्री साम्बसदाशिवाय नमः, गन्धं अर्पयामि।

अक्षतं - ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च।। ॐ भूर्भुव स्वः श्री साम्बसदाशिवाय नमः, अक्षतं अर्पयामि। भस्मं - ॐ प्रसद्य भस्मना योनिमपश्च पृथिवीमग्ने। स ठी सृज्ज्य मातृ भिष्ट्वं ज्ज्योतिष्मान् पुनरासदः।। ॐ भूर्भुव स्वः श्री साम्बसदाशिवाय नमः, भस्मं अर्पयामि।

पुष्पं - ॐ नमः पार्थ्याय चावार्थ्याय च नमः प्रतरणाय चोतरणाय च नमस्तीर्थ्याय च कूल्याय च नमः शष्याय च फेन्याय च।। ॐ भूर्भुव स्वः श्री साम्बसदाशिवाय नमः, पुष्पं समर्पयामि। पुष्पमालां - ॐ ओषधीः प्रति मोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः। अश्वाऽइव सजित्वरी वीरुधः पारियष्णवः।। ॐ भूर्भुव स्वः श्री साम्बसदाशिवाय नमः, पुष्पमालां समर्पयामि। बिल्वपत्रं - ॐ नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो वर्मिणे च वरूथिने च नमः श्रुताय च शश्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चा हनन्त्याय च।। काशीक्षेत्र निवासं च काल भैरव पूजनम्। कोटि कन्या महादानं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।। ॐ भूर्भुव स्वः श्री साम्बसदाशिवाय नमः, बिल्वपत्रं समर्पयामि।।

दूर्वा - ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि। एवानोदूर्वेप्रतनु सहस्रोण शतेन च।। ॐ भूर्भुव स्वः श्री साम्बसदाशिवाय नमः, दूर्वांकुर समर्पयामि।

शमीपत्रम् - ॐ शिवोनामासि स्विधितस्ते पिता नमस्तेऽअस्तु मामा हि र्ठः सी:। निवर्तय्याम्या युषेत्राद्याय प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्य्याय च।। ॐ भूर्भुव स्व: श्री साम्बसदाशिवाय नम:, शमीपत्रम् समर्पयामि।

तुलसी मञ्जरी - ॐ शिवो भव प्रजाव्भ्योमानुषीव्भ्यस्त्वमङ्गिरः। माद्यावा पृथिवीऽअभिशोचीर्म्मान्तरिक्षंमा वनस्पतीन्।। ॐ भूर्भुव स्वः श्री साम्बसदाशिवाय नमः, तुलसी मञ्जरीं समर्पयामि।

नाना परिमल द्रव्याणि - ॐ अहिरिवभोगै: पर्य्येति बाहुंज्याया हेतिं परिबाधमान:। हस्तघ्नो विश्वावयुनानि विद्वान् पुमान् पुमा ठीः सं परिपातु विश्वत:।। ॐ भूर्भुव स्व: श्री साम्बसदाशिवाय नम:, नाना परिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सिन्दूरम - ॐ सिन्धोरिव प्पादध्वने शूघनासो व्वातप्रिमयः पतयन्ति यह्वा घृतस्य धाराऽअरुषोन व्वाजीकाष्ठा भिन्दत्रूम्मिभिः पिन्वमानः।। ॐ भूर्भुव स्वः श्री साम्बसदाशिवाय नमः, सिन्द्रं समर्पयामि।

सुगन्धिद्रव्यम - ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पृष्ट् वर्द्धनम्। उर्व्वारुकिमव बन्धानान्मृत्यो मुक्षीयमा मृतात्।। ॐ भूर्भुव स्वः श्री साम्बसदाशिवाय नमः, सुगन्धितद्रव्यं समर्पयामि।। आभूषणम् - ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पितरेक आसीत्। स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हिवषा विधेम।। ॐ भूर्भुव स्वः श्री साम्बसदाशिवाय नमः, आभूषणं समर्पयामि।।

अङ्गपूजनम् - ॐ ईशानाय नमः पादौपूजयामि, ॐ शङ्कराय नमः जंघे पूजयामि, ॐ शिवाय नमः जानुनी पूजयामि, ॐ शूलपाणाये नमः गुल्फौ पूजयामि, ॐ शम्भवेनमः कटीं पूजयामि, ॐ स्वयम्भुवेनमः गुह्यं पूजयामि, ॐ महादेवाय नमः नाभिं पूजयामि, ॐ विश्वकर्त्रे नमः उदरं पूजयामि, ॐ सर्वतोमुखायनमः स्तनौ पूजयामि, ॐ नीलकण्ठाय नमः कण्ठं पूजयामि, ॐ शिवात्मने नमः मुखं पूजयामि, ॐ त्रिनेत्राय नमः नेत्रं पूजयामि, ॐ नाग भूषणाय नमः शिरः पूजयामि, ॐ देवाधिदेवाय नमः सर्वाङ्ग पूजयामि।

अथ आवरणार्चनम् - चन्दनाक्षत पुष्प से पूजा करे।

१. ॐ अघोराय नमः पूजयामि, २. ॐ पशुपतये नमः, ३. ॐ शिवाय नमः, ४. ॐ विरूपाय नमः, ५. ॐ विश्व रूपाय नमः, ६. ॐ त्र्यम्बकायनमः, ७. ॐ भैरवाय नमः, ८. ॐ कपर्दिने नमः, ९. ॐ शूलपाणयेनमः, १०. ॐ ईशानाय नमः, ११. ॐ महेशाय नमः पूजयामि।

।।इत्येकादश रुद्रान सम्पूज्य।।

।।अथ एकादश शक्ति पूजनम्।।

१. ॐ भगवत्ये नमः पूजयामि, २. ॐ उमादेव्ये नमः, ३. ॐ शंकर प्रियाये नमः, ४. ॐ पार्वत्ये नमः, ५. ॐ गौर्ये नमः, ६. ॐ कालिन्द्ये नमः, ७. ॐ कोट्यें नमः, ८. ॐ विश्वधारिण्ये नमः, ९. ॐ विश्वेश्वर्ये नमः, १०. ॐ विश्वमात्रे नमः, ११. ॐ शिवाये नमः।

इति शक्ति पूजनम्

अथ गणपूजनम्

ॐ गणपतये नमः।।१।। ॐ कार्तिकाय नमः।।२।। ॐ पुष्पदन्ताय नमः।।३।। ॐ कपर्दिने नमः।।४।। ॐ भैरवाय नमः।।५।। ॐ शूलपाणये नमः।।६।। ॐ ईश्वराय नमः।।७।। ॐ दण्डपाणये नमः।।८।। ॐ नन्दिने नमः।।९।। ॐ महाकालाय नमः।।१०।। पूर्वीदक्रमेण अक्षतादिना अष्टमूर्तीः पूजयेत्। तद्यथा – प्राच्याम् ॐ शर्वाय क्षितिमूर्तये नमः।।१।। ईशान्याम् ॐ भवाय जलमूर्तये नमः।।२।। उदीच्याम् ॐ रुद्रायाग्निमूर्तये नमः।।३।। वायव्याम् ॐ उग्राय वायुमूर्तये नमः।।४।। प्रतीच्याम् ॐ भीमायाकाशमूर्तये नमः।।५।। नैर्ऋत्याम् ॐ पशुपतये यजमानमूर्तये नमः।।६।। दक्षिणस्याम् ॐ महादेवाय सोममूर्तये नमः।।७।। आग्नेय्याम् ॐ ईशानाय सूर्यमूर्तये नमः।।८।। इति सम्पूज्य प्रणालिकायां हीं उमाये नमः इति पूजयेत्। तद्विहः पूर्वादिषु इन्द्रादीन् दश दिक्पालान् सम्पूजयेत्।। इत्यावरणपूजा।। धूणं – ॐ या ते हेतिमींदुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः। तयाऽस्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परि भुजा। ॐ भूर्भुवः स्वः श्री साम्बसदाशिवाय नमः, धूपमाघ्रापयामि।

दीपं - ॐ परि ते धन्वनो हेतिरस्मान् वृणक्तु विश्वतः। अथो य इषुधिस्तवारे अस्मन्नि धेहि तम्।। ॐ भूर्भृवः स्वः श्री साम्बसदाशिवाय नमः, दीपं दर्शयामि।

नैवेद्यं - ॐ अवतत्य धनुष्ट्व र्ठः सहस्त्राक्ष शतेषुधे। निशीर्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव।। ॐ भूर्भुवः स्वः श्री साम्बसदाशिवाय नमः, नैवेद्यं निवेदयामि। नैवेद्यान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। उतरापोशनम् समर्पयामि। जलं समर्पयामि।

करोद्वर्तनं - ॐ सिञ्चित पिर षिञ्चन्त्युत्सिञ्चन्ति पुनन्ति च। सुरायै बभ्रवै मदे किन्त्वो वदिति किन्त्वः।। ॐ भूर्भुवः स्वः श्री साम्बसदाशिवाय नमः, करोद्वर्तनार्थे चन्दनानुलेपनं समर्पयामि। ऋतुफलं - ॐ याः फिलनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः। बृहस्पितप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व ठं हसः।। ॐ भूर्भुवः स्वः श्री साम्बसदाशिवाय नमः, ऋतुफलानि समर्पयामि। धतुरफलानि समर्पयामि।

ताम्बूलं-पूर्गीफलं - ॐ नमस्त आयुधायानातताय धृष्णवे। उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने।। ॐ भूर्भुवः स्वः श्री साम्बसदाशिवाय नमः, मुखवासार्थे सपूर्गीफलं ताम्बूलपत्रं समर्पयामि।

दक्षिणा - ॐ यद्दतं यत्परादानं यत्पूर्तं याश्च दक्षिणाः। तदिग्नर्वेश्वकर्मणः स्वर्देवेषु नो दधत्।। ॐ भूर्भुवः स्वः श्री साम्बसदाशिवाय नमः, कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

।। एवं सम्पूज्य साक्षतजलेन तर्पणं कार्य्यम् - ॐ भवं देवं तर्पयामि।।१।। ॐ शर्व देवं तर्पयामि।।२।। ॐ ईशानं देवं तर्पयामि।।३।। ॐ पशुपतिं देवं तर्पयामि।।४।। ॐ उग्रं

देवं तर्पयामि।।५।। ॐ रुद्रं देवं तर्पयामि।।६।। ॐ भीमं देवं तर्पयामि।।७।। ॐ महान्तं देवं तर्पयामि।।८।।

ॐ भवस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि।।१।। ॐ शर्वस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि।।२।। ॐ ईशानस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि।।३।। ॐ पशुपतेर्देवस्य पत्नीं तर्पयामि।।४।। ॐ उग्रस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि।।५।। ॐ रुद्रस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि।।६।।

ॐ भीमस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि।।७।। ॐ महतो देवस्य पत्नीं तर्पयामि।।८।।

एवं तर्पणं कृत्वा मन्त्र पुष्पाञ्जलि मादाय।

ॐ कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्। सदा वसन्तं हृदयारिवन्दे भवं भवानीसिहतं नमामि।।१।। वन्दे देवमुमापितं सुरगुरुं वन्दे जगत्कारणं वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं वन्दे पशूनां पितम्। वन्दे सूर्यशशांकविह्नियनं वन्दे मुकुन्दिप्रयं वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शंकरम्।।२।। शान्तं पद्मासनस्थं शशधरमुकुटं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रं शूलं वज्रं च खङ्गं परशुमभयदं दक्षभागे वहन्तम्। नागं पाशं च घंटां डमरुकसिहतं सांकुशं वामभागे नानालंकारयुक्तं स्फटिकमिणिनिभं पार्वतीशं नमािम।।३।।

शान्ताकारं शिखरिशयनं नीलकण्ठं सुरेशं विश्वाधारं स्फटिकसदृशं शुभ्रवर्णं शुभाङ्गम्। गौरीकान्तं त्रितयनयनं योगिभिध्यानगम्यं वन्दे शम्भुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्।। कर्पुरादि आरती करे - वा पञ्च, एकादश बत्ती से

आरती - ॐ आ रात्रि पार्थिव र्ट. रज: पितुरप्रायि धामिभ:।

दिव: सदा र्ठः सि बृहती वि तिष्ठस आ त्वेषं वर्तते तम:।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री साम्बसदाशिवाय नमः, कर्पूरार्तिक्यदीपं दर्शयामि।

भगवान् गङ्गाधर की आरती

ॐ जय गङ्गाधर जय हर जय गिरिजाधीशा।
त्वं मां पालय नित्यं कृपया जगदीशा।।१।। ॐ हर हर हर महादेव
कैलासे गिरिशिखरे कल्पद्रुमिविपिने।
गुञ्जित मधुकरपुञ्जे कुञ्जवने गहने।। ॐ हर हर हर महादेव
कोकिलकूजित खेलत हंसावन लिलता।
रचयित कलाकलापं नृत्यित मुदसिहता।।२।। ॐ हर हर हर महादेव
तिस्मिंल्लिलितसुदेशे शाला मिणरिचता।
तन्मध्ये हरनिकटे गौरी मुदसिहता।। ॐ हर हर हर महादेव
क्रीडा रचयित भूषारिञ्जत निजमीशम्।
इन्द्रादिक सुर सेवत नामयते शीशम्।।३।। ॐ हर हर हर महादेव

बिबुधबध्र बहु नृत्यत हृदये मुदसहिता। किन्नर गायन कुरुते सप्त स्वर सहिता।। ॐ हर हर हर महादेव धिनकत थै थै धिनकत मृदङ्ग वादयते। क्वण क्वण ललिता वेणुं मधुरं नाटयते।।४।। ॐ हर हर हर महादेव रुण रुण चरणे रचयति नूपुरमुज्ज्वलिता। चक्रावर्ते भ्रमयति कुरुते तां धिक तां।। ॐ हर हर हर महादेव तां तां लुप चुप तां तां डमरू वादयते। कुरुते।।५।। ॐ हर हर हर महादेव अंगुष्ठांगुलिनादं लासकतां कर्प्रद्युतिगौरं पञ्चाननसहितम्। त्रिनयनशशिधरमौलिं विषधरकण्ठयुतम्।। ॐ हर हर हर महादेव सुन्दरजटाकलापं पावकयुतभालम्। डमरुत्रिशूलिपनाकं करधृतनृकपालम्।।६।। ॐ हर हर हर महादेव मुण्डै रचयति माला पन्नगमुपवीतम्। वामविभागे गिरिजारूपं अतिललितम्।। ॐ हर हर हर महादेव सुन्दरसकलशरीरे कृतभस्माभरणम्। इति वृषभध्वजरूपं तापत्रयहरणम्।।७।। ॐ हर हर हर महादेव शंखनिनादं कृत्वा झल्लरि नादयते। नीराजयते ब्रह्मा वेदऋचां पठते।। ॐ हर हर हर महादेव अतिमृदुचरणसरोजं हत्कमले धृत्वा। अवलोकयति महेशं ईशं अभिनत्वा।।८।। ॐ हर हर हर महादेव ध्यानं आरति समये हृदये अति कृत्वा। अभिनत्वा।। ॐ हर हर हर महादेव रामस्त्रिजटानाथं ईशं संगतिमेवं प्रतिदिन पठनं यः कुरुते।

शिवसायुज्यं गच्छति भक्त्या यः शृणुते।।९।। ॐ हर हर हर महादेव जलेन प्रदक्षिणं पुष्पेण देववन्दनम् अभिवन्दनम् आत्मवन्दनम् हस्तं प्रक्षाल्य। मन्त्र पुष्पाञ्जलिं - ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। ते ह नाकं

महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।। ॐ राजाधिराजाय प्रसद्धा साहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे। स मे कामान् कामकामाय मह्यं कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु।। कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः।

3ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात् सार्वभौमः सार्वायुषान्तादापरार्धात्। पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया एकराडिति

तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यानवसन् गृहे। आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति।

ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात्। सं बाहुभ्यां धमित सं पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन् देव एकः।। मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम्। मा नो वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः।। मानस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः। मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीईविष्मन्तः सदिमत् त्वा हवामहे।।

ॐ तत्पुरुषायविद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नोरुद्रः प्रचोदयात्।।

मन्दारमालाङ्कृलितालकायै कपालमालाङ्कितशेखराय। दिव्याम्बरायै च दिगम्बराय नमः शिवायै च नमः शिवाय।। पुष्पाञ्जलिम् समर्पयामि।

प्रदक्षिणा - ॐ ये तीर्थानि प्प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः। तेषा र्ठः सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मिस।। ॐ सप्तास्यासन् परिधयित्रः सप्त सिमधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्न्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुम्।। यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च। तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिणपदे पदे।। प्रदक्षिणां समर्पयामि।

नमस्कार - असितिगिरिसमं स्यात् कज्जलं सिन्धुपात्रे सुरतरुवरशाखा लेखनी पत्रमुर्वी। लिखित यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं तदिप तव गुणानामीश पारं न याति।।१।। श्मशानेष्वाक्रीडा स्मरहर पिशाचाः सहचरा - श्चिताभस्मालेपः स्नगिप नृकरोटीपिरकरः। अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैवमिखलं तथापि स्मर्तृणां वरद परमं मङ्गलमिस।।२।। श्माप्रार्थना - यदक्षरपद भ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत। तत्सर्वम् क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर।। मत्समो नास्ति पापिष्ठस्त्वत्समो नास्तिपापहा। इति मत्वा दयासिन्धो यथेच्छिस तथा कुरु।।

अभिषेकोदक नैत्र स्प्रंश - निरावलम्बस्य ममावलम्बं विपाटिताशेषविपत्कदम्बम्। मदीय पापाचल - पातशम्बं प्रवर्ततां वाचि सदैव बम्बम्।।

"बम-बम का उच्चारण करे"

ॐ अनेन यथा ज्ञानेन यथामिलितोपचारद्रव्यैः ध्यानावाहनासन पाद्यार्घाचमनीय स्नान वस्त्रोपवीत गन्धपुष्प धूप-दीप-नैवेद्य-ताम्बूल दक्षिणा प्रदक्षिणा-मन्त्र पुष्परूपैः षोडशोपचारैः अन्योपचारैश्च कृतेन पूजनेन ॐ भूर्भुवः स्वः श्री भगवते साम्बसदाशिवाय सपरिकरः स गणः सिहताः प्रीयन्तां न मम – श्री भगवते साम्बसदाशिव – अर्पण मस्तु।।

''इति शिव पूजनम्''

श्री पार्थिव शिवपूजनम्

नित्य कर्म से निवृत होकर शुभ मुहूर्त में "शिवालये वा पुण्यस्थाने" स्थान शुद्धि करे। पूर्व या उत्तर की ओर मुख करके पूजन करे।

आचमनम् प्राणायाम् न्यासादि आसनशुद्धि एवं स्वस्तिवाचन इत्यादि करे।

संकल्प - ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः, अद्य... मम सर्वारिष्टनिरसनपूर्वकसर्वपापक्षयार्थं दीर्घायुरारोग्यधनधान्यपुत्र-पौत्रादिसमस्तसम्पत्प्रवृद्ध्यर्थं श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं श्रीसाम्बसदाशिवप्रीत्यर्थं पार्थिवलिङ्गपूजनमहं करिष्ये। वा ब्राह्मण द्वारा कारियष्ये (यथासंख्या उच्चारण करे) तदङ्गतया निर्विघ्नता सिद्यर्थम् - गणपत्यादि देवानामर्चियष्ये

भूमि प्रार्थना - ॐ सर्वाधारे धरे देवि त्वद्रूपां मृत्तिकामिमाम्। ग्रहीष्यामि प्रसन्ना त्वं लिङ्गार्थं भव सुप्रभे।। ॐ हाँ पृथिव्ये नमः।

मिट्टी का ग्रहण - उद्धृतासि वराहेण कृष्णेन शतबाहुना। मृत्तिके त्वां च गृह्णामि प्रजया च धनेन च।।

ॐ (वं) इत सुधाबीजेन - मुदमासिञ्च्य पिण्डं कृत्वाऽग्रे संस्थाप्य तस्मादल्पमृदं गृहीत्वा "ॐ ह्रीं ग्लौं गं गणपतये ग्लौं गं ह्रीं" इत्येकादशाक्षरमन्त्रेण बालगणपतिं वराभयलसत्पाणि– पद्मं निर्माय पीठे संस्थाप्य लिङ्गं कुर्यात्। ॐ नमो हराय इति मन्त्रेण बिभीतकफलमात्रमृदं गृहीत्वा ''ॐ नमो महेश्वराय'' इति मन्त्रेण मनोहरम् अंगुष्ठमानादधिकं वितस्तिमात्रावधि यथेष्टं साङ्गं लिङ्गं विधाय तस्योपरि गुटिकास्थापनक्रमः गङ्गागणपोमोः शिवकुमारगुटिकाः क्रमाद ज्ञेयाः एका तिस्र पञ्च च तिस्रो द्वे स्थापनात्सुखदाः।। एवं लिङ्गं कुर्यात्, सद्यः समस्ताघनाशनम्।। ततः स्वपुरतः 'ॐ शूलपाणये नमः' इति मन्त्रेण पुष्पाक्षतिबल्वपत्रयुक्तताम्रादिपात्रे वा वस्त्रोपरि पीठमध्ये स्थापयेत्। एवमन्यान्यपि लिङ्गानि यथासंकल्पितानि कृत्वा अवशिष्टमृदा, 'ॐ ऐं हुँ क्षुं क्लीं कुमाराय नमः' इति मन्त्रेण षणमुखं कुमारञ्च कृत्वा लिङ्गपङ्क्त्यन्ते स्थापयेत्। ततः आचम्य प्राणानायम्य, ॐ अस्य श्रीसदाशिवमन्त्रस्य वामदेवऋषिः, पंक्तिश्छन्दः, श्रीसदाशिवो देवता, ॐ बीजं, नमः शक्तिः, शिवाय कीलकं, मम साम्बसदाशिवप्रीत्यर्थे पार्थिवलिङ्गपूजने विनियोगः ॐ वामदेवऋषये नमः शिरसि। ॐ पंक्तिश्छन्दसे नमः मुखे। ॐ श्रीसदाशिवदेवतायै नमः हृदये। ॐ बीजाय नमः गृह्ये। ॐ शक्तये नमः पादयोः। ॐ शिवाय कीलकाय नमः सर्वाङ्गे। इति ऋष्यादिन्यासः। ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ नं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ मं मध्यमाभ्यां नम:। शिं अनामिकाभ्यां नम:। वां कनिष्ठिकाभ्यां नम:। ॐ यं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः इति करन्यासः।। ॐ ॐ हृदयाय नमः। ॐ नं。 शिरसे स्वाहा।

ॐ मं शिखायै वषट्। ॐ शिं कवचाय हुँ। ॐ वां नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ यं अस्त्राय फट्। एवं न्यासविधिं कृत्वा कुम्भपूजां विधाय ध्यानं कुर्यात्। ॐ ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतिगरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं, रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्। पद्मासीन समन्तात्स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृतिं वसानं, विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्।।१।। इति ध्यात्वा मानसोपचारै: सम्पूज्य प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात् - ॐ अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः, ऋग्यजुःसामानि च्छन्दांसि, क्रियामयवपुः प्राणाख्या देवता, आं बीजम्, ह्रीं शक्तिः क्रौं कीलकं देवे प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः। ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्यो नमः शिरसि। ॐ ऋग्यजु:सामच्छन्दोभ्यो नमो मुखे। ॐ प्राणाख्यदेवतायै नम: हृदि। ॐ आं बीजाय नम: गुह्ये। ॐ ह्रीं शक्तये नम: पादयो:। ॐ क्रौं कीलकाय नम: सर्वाङ्गे इति कृत्वा ॐ आं ह्रीं क्रौं यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ स: सोहँ शिवस्य प्राणा इह प्राणा:।। ॐ आँ ह्रीं कौं यँ रें लें वें शें षें सें हैं स: सोहें शिवस्य जीव इह स्थित:। ॐ आँ ह्रीं क्रौं यें रें लें वें शें षें सें हैं सः सोहँ शिवस्य सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक्चक्षुश्श्रोत्रघ्राणजिह्वापाणिपादपायूपस्थानि इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।। मनसि एवं पठित्वा लिङ्गोपरि तण्डुलान् क्षिपेत्।। एवं प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा पुनरञ्जलिं बद्धवा ध्यायेत् - ॐ दक्षोत्सङ्गनिषण्णकुञ्जरमुखं प्रेम्णा करेण स्पृशन्वामोरुस्थितवल्लभाङ्कनिलयं स्कन्दं परेणामृशन्। इष्टाभीतिमनोहरं करयुगं बिभ्रत् प्रसन्नाननो, भूयात्रः शरदिन्दुसुन्दरतनुः श्रेयस्करः शङ्करः।। इति ध्यात्वा नमस्कारं कुर्यात् तद्यथा -नमोऽस्तु स्थाणुरुपाय ज्योतिर्लिङ्गामृतात्मने। चतुर्मृर्तिश्च पुंशक्त्या भासितांगाय शम्भवे। सर्वज्ञज्ञान-विज्ञानप्रदानैकमहात्मने। नमस्ते देवदेवेश सर्वभूतहितेरत।। इति नत्वा स्थापितं लिङ्गं स्पृशन्। ॐ भू: पुरुषं साम्बसदाशिवमावाहयामि।। ॐ भुव: पुरुषं साम्बसदाशिवमावाहयामि। ॐ स्व: पुरुषं साम्बसदाशिवमावाहयामि। इत्यावाह्य। ॐ स्वामिन् सर्वजगन्नाथ यावत्पूजावसानकम्। तावत्त्वं प्रीतिभावेन लिङ्गेऽस्मिन् सन्निधौ भव।। इति पुष्पाञ्जलं दत्वा -ॐ ह्रीं ग्लौं णं गणपतये ग्लौं गं ह्रीं।। इत्येकादशार्णमन्त्रेण गणपतिं सम्पूज्य 'ॐ ऐं हुँ क्षुँ क्लीं कुमाराय नमः इतिदशाक्षरमन्त्रेण स्कन्दं पूजयेत्।

पूर्व लिखित शिवपूजा प्रकरण के अनुसार श्री पार्थिव पूजा करे।

शिवमहिम्न स्तोत्र के द्वारा जल दूध से अभिषेक करने से झटिती फल की प्राप्ती होती है। कामना अनुसार १ से लेकर सवा करोड़ तक पार्थिव शिव लिङ्ग पूजा अभिषेक का लेख मिलता है शास्त्रों में।

विसर्जन मन्त्र - गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वर। मम पूजां गृहीत्वेमां पुनरागमनाय च।। समर्पण - अनेन कृतार्चनेन पार्थिव लिङ्ग कर्मणा श्री यज्ञ स्वरूपः शिवः प्रीयताम् न मम। क्षमा प्रार्थना करे। ॐ विष्णवेनमः ॐ विष्णवेनमः

जग-दीपिका

"शिव उपासना अंक (कल्याण) से उद्धृत"

शिव महिम्न स्तोत्र के द्वारा पूजा अनुष्ठान करने से अतिशीघ्र कामना पूर्ण होती है। विनियोग - ॐ अस्य श्रीशिवमहिम्न:स्तोत्रस्य श्रीपुष्पदन्त ऋषि:,शिखरिण्यादिच्छन्दांसि,श्रीमदाशुतोषशिवो देवता, हौं बीजम्, जूं शिक्त:,सः कीलकं मम श्रीसाम्बसदाशिवप्रीत्यर्थे (अमुकफलप्राप्तये) पाठे, अभिषेके विनियोग:।

ऋष्यादि न्यास - श्रीपुष्पदन्तर्षये नमः (शिरिस), शिखरिण्यादिच्छन्दोभ्यो नमः (मुखे), श्रीमदाशुतोषशिवदेवतायै नमः (हृदये), हौं बीजाय नमः (गुह्ये), जूं शक्तये नमः (पाद्योः), सः कीलकाय नमः (नाभौ), विनियोगाय नमः (सर्वाङ्गे)।

कर-हृदयादि-न्यास		पहली बार	दूसरी	बार
भवःशर्वो रुद्रः ((पूरा श्लोक)	अङ्गष्ठाभ्यां नम:।	हृदयाय	नम:।
नमो नेदिष्ठाय。	"1	तर्जनीभ्यां नम:।	शिरसे	स्वाहा।
बहुलरजसे。	"1	मध्यमाभ्यां नम:।	शिखायै	वषट्।
मन: प्रत्यक्चिते。	"1	अनामिकाभ्यां नम:।	कवचाय	हुम्।
श्मशानेष्वाक्रीडाः	"1	कनिष्ठिकाभ्यां नम:।	नेत्रत्रयाय	वौषट्।
हरिस्ते साहस्त्रं	"1	करतलकरपृष्ठाभ्यां नम:।	अस्राय	फट्।

ध्यानम् - ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतिगरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्। पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तं वसानं विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्।।

इसके पश्चात् आगे बताये गये श्लोकों को पूरा बोले

और उनके पहले 'ॐ ऐं हीं श्रीं हौं जूं सः' ये प्रणवयुक्त बीज लगाकर शिवजी की विशेष पूजा करनी चाहिए। यथा -

त्वमर्कस्तवं सोम:	पादयो: पाद्यं	समर्पयामि।
त्रयी साख्यं योग:。	हस्तयोरर्घ्यं	"
भवः शर्वो रुद्रः	आचमनीयं	"
नमो नेदिष्ठाय。	जलस्नानं	"
बहलरजसे。	दुग्धस्नानं	"
ऐं हीं श्रीं हौं जूं स: (बीज मन्त्र)	शुद्धजलस्नानं	"
मन:प्रत्यक्चित्ते。	दधिस्नानं	"
(बीजमन्त्र)	शुद्धजलस्नानं	"

जग-दीपिका —				
श्मशानेष्वाक्रीडाः	घृतस्नानं	"		
(बीजमन्त्र)	शुद्धजलस्नानं	"		
स्वः लावण्याशंसाः	म धुस्नानं	"		
(बीजमन्त्र)	शुद्धजलस्नानं	"		
प्रजानाथं नाथ:	शर्करास्नानं	"		
(बीजमन्त्र)	शुद्धजलस्नानं	"		
मधुस्फीताः	पञ्चामृत स्नानं	"		
(बीजमन्त्र)	शुद्धजलस्नानं	"		
महोक्ष: खट्वाङ्गः	भस्म स्नानं	"		
(बीजमन्त्र)	शुद्धजलस्नानं	"		
अजन्मानो。	गन्धोदक स्नानं	"		
(बीजमन्त्र)	शुद्धजलस्नानं	"		
त्रयी सांख्यं。	उद्वर्त स्नानं	"		
(बीजमन्त्र)	शुद्धजलस्नानं	"		
उत्तर निर्माल्य विसृज्य गन्धाक्षतं पुष्पं बिल्व पत्रं समर्प्य धारा पात्रं गन्धादिभि सम्पूज्य।				
जल दूध गङ्गोदक से महिम्नस्तोत्र से अ	जल दूध गङ्गोदक से महिम्नस्तोत्र से अभिषेक करे।			
अभिषेकान्ते आचमनीयम् जलं समर्पयामि				
रथ: क्षोणी。	आभरणम्	"		
क्रतौ सुप्ते जाग्रत्。	वस्त्रं	"		
रथ: क्षोणी यन्ता。	यज्ञोपवीतं	"		
क्रियादक्षो दक्ष:	पुनर्वस्त्रं	"		
यदृद्धिं सुत्राम्णोः	गन्धं	"		
अकाण्डब्रह्माण्डः	अक्षतान्	"		
असिद्धार्था नैवः	भस्म	"		
हरिस्ते साहस्त्रं	पुष्पाणि दूर्वा	"		
अयत्नादापाद्यः	बिल्वपत्राणि	"		
तवैश्वर्य यत्नाद。	परिमलद्रव्यं	"		
तवैश्वर्य यत्तत्。	(इत्र) सुगन्धिद्रव्यं	"		
तवैश्वर्य यत्नादं	धूपं	"		

	_	
जग	–दा	पका

अमुष्य त्वत्सेवाः	दीपं	"
महीपादाघाताद <u>्</u>	नैवेद्यं, ताम्बुलं	"
नमो नेदिष्ठाय。	दक्षिणा नीराजनं	"
कृशपरिणति चेत:	पुष्पाञ्जलिं	"
असितगिरिसमं。	क्षमाप्रार्थनां	"
त्वमर्कस्त्वं सोम:	प्रदक्षिणां	"

धूप दीप से पूर्व या दक्षिणा के उपरान्त एकादश रुद्र व शक्ति, गणादि पूजा करे। पूजा के बाद तर्पण करे।

ॐ नमः शिवाय यथा शक्ति जाप करना परम लाभदायक है। ॐ तत्सत

।।अथ रुद्रयाग स्वाहाकार मंत्राः।।

ॐ गणानान्त्वाः स्वाहा। ॐ अम्बेऽः स्वाहा। इति हुत्वा, ॐ यज्जाग्रतःः (६ मंत्राः) स्वाहा। ॐ सहस्रशीर्षाः (१६ मंत्राः) स्वाहा। ॐ अद्भय सम्भृतः (६ मंत्राः) स्वाहा। ॐ आशुः शिशानोः (१२ मंत्राः) स्वाहा। ॐ विब्ध्राड बृहत्पिबतुः (१७ मंत्राः) स्वाहा। ॐ भूः, ॐ भुवः, ॐ स्वः, ॐ नमस्ते रुद्द्र मन्त्यवऽउतोत – ऽइषवे नमः। बाहुब्भ्यामुत ते नमः स्वाहा।।१।।

- ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोरापापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि स्वाहा।।२।।
- ॐ यामिषुङ्गिरिशन्त हस्ते व्विभर्ष्य्यस्तवे। शिवाङ्गिरित्र ताङ्कुरु मा हि र्ठः पुरुषञ्जगत् स्वाहा।।३।।
- ॐ शिवेन व्वचसा त्वा गिरिशाच्छा व्वदामिस। यथा नः सर्व्व मिज्जगदयक्ष्म र्ठः सुमनाऽअसत् स्वाहा।।४।।
- ॐ अद्ध्यवोचदिधवक्ता प्रथमो दैळ्यो भिषक। अहींश्च सर्व्वाञ्जम्भ यन्त्सर्व्वाश्च्च यातुधान्न्योऽधराची: परासुव स्वाहा।।५।।
- ऽअसौयस्ताम्प्रोऽ अरुणऽउत बब्धुः सुमङ्गलः। ये चैन र्वः रुद्द्राऽअभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशो वैषा र्वः हेडऽईमहेस्वाहा।।६।।
- ॐ असौ योऽवसर्प्पति नीलग्ग्रीवो व्विलोहित:। उतैनङ्गोपा अदृश्श्रन्नदृश्श्रन्नदृहार्य्य: स दृष्ट्रो मृडयाति न: स्वाहा।।७।।

ॐ नमोस्तु नीलग्ग्रीवाय सहस्राक्षाय मीदुषे। अथो ये ऽअस्य सत्त्वानोऽहन्तेब्भ्योऽ करन्नमः स्वाहा।।८।। ૐ धन्नवनस्त्वमुभयोरात्क्योज्ज्याम। प्रमुञ्ज याश्च्च ते हस्तऽइषव: परा ता भगवो व्वप स्वाहा।।९।। ॐ व्विज्ज्यन्धनुः कपर्दिनो व्विशल्यो बाणवाँ२ऽउत। अनेशत्रस्य याऽ इषवऽ आभुरस्य निषङ्गधिः स्वाहा।।१०।। ॐ या ते हेतिम्मींदुष्ट्रम हस्ते बभूव ते धनु:। तयास्म्मान्विश्वतस्त्व मयक्ष्मया परिभुज स्वाहा।।११।। ॐ परि ते धन्न्वनो हेतिरस्मान्न्वणक्तु व्विश्श्वत:। अथोयऽइषु - धिस्तवारेऽ अस्मन्निधेहि तम् स्वाहा।।१२।। ॐ अवतत्त्य धनुष्ट्रव र्वः सहस्राक्ष शतेषुधे। निशीर्य्य शल्ल्यानाम्मुखा शिवो नः सुमना भव स्वाहा।।१३।। आयुधायानातताय नमस्तेऽ धृष्णवे। उभाभ्यामृत ते नमो बाहुबभ्यान्तव धन्न्वने स्वाहा।।१४।। ॐ मा नो महान्तमुत मा नोऽअर्ब्भकम्मा नऽ उक्षन्तमुत मा नऽ उक्षितम्। मा नो व्वधी: पितरम्मोत मातरम्मा न: प्रियास्तन्न्वो रुद्र रीरिष: स्वाहा।।१५।। ॐ मा नस्तोके तनये मा नऽ आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्श्वेषु रीरिष:। मा नो व्वीरान् रुद्द्र भामिनो व्वधीर्हविष्मन्त: सदिमत्त्वा हवामहे स्वाहा ।।१६।। ॐ नमो हिरण्यबाहवे सेनान्न्ये दिशाञ्चपतये नमः स्वाहा ।।१७।। ॐ नमो व्वृक्षेब्भ्यो हरिकेशेब्भ्यः पशुनाम्पतये नमः स्वाहा ।।१८।। ॐ नमः शष्पिञ्जराय त्विषीमते पथीनाम्पतये नमः स्वाहा ।।१९।। ॐ नमो हरिकेशायोपवीतिने पुष्टटानाम्पतये नमः स्वाहा ।।२०।। ॐ नमो बब्भ्लुशाय ळ्याधिनेन्नानाम्पतये नमः स्वाहा ।।२१।। 🕉 नमो भवस्य हेत्त्यै जगताम्पतये नम: ॐ नमो रुद्द्रायाततायिने क्षेत्राणाम्पतये नमः स्वाहा ।।२३।। ॐ नमो सूतायाहन्त्यै व्वनानाम्पतये नमः स्वाहा ।।२४।। ॐ नमो रोहिताय स्त्थपतये व्वक्षाणाम्पतये नमः स्वाहा ।।२५।। ॐ नमो भुवन्तये व्वारिवस्कृतायौषधीनाम्पतये नम: स्वाहा ।।२६।। ॐ नमः मन्त्रिणे वाणिजाय कक्षाणाम्पतये नमः स्वाहा ।।२७।। ॐ नमः ऽउच्चैग्घीषायाक्क्रन्दयते पत्तीनाम्पतये नमः स्वाहा ।।२८।।

🕉 नमः कु त्स्नायतया धावते सत्त्वनाम्पतये नमः स्वाहा ।।२९।। ॐ नमः सहमानाय निळ्याधिनऽ आव्याधिनीनाम्पतये नमः स्वाहा ।।३०।। 🕉 नमो निषीङ्गिणे ककुभाय स्तेनाम्पतये नमः स्वाहा ।।३१।। ॐ नमो निचेरवे परिचरायारण्यानाम्पतये नम: स्वाहा ।।३२।। 🕉 नमो वञ्चते परिवञ्चते स्तायुनाम्पतये नमः स्वाहा ।।३३।। ॐ नमो निषङ्गिणऽइषुधिमते तस्क्रराणाम्पतये नमः स्वाहा ।।३४।। ॐ नमो सुकायिब्भ्यो जिघा र्ठः सद्ब्भ्यो मुष्णणताम्पतये नम: स्वाहा ।।३५।। ॐ नमो ऽसिमद्ब्भ्यो नक्कञ्चरद्ब्भ्यो व्विकृन्तानाम्पतये नम: स्वाहा ।।३६।। ॐ नम ऽउष्ण्णीषिणे गिरिचराय कुलुञ्चानाम्पतये नमः स्वाहा ।।३७।। ॐ नम ऽइषुमद्बभ्यो धन्न्वायिबभ्यश्श्च वो नमः स्वाहा ।।३८।। ॐ नमऽआतन्त्वानेब्भ्यः प्प्रतिदधानेब्भ्यश्श्च वो नमः स्वाहा ।।३९।। ॐ नमऽ आयच्छद्बभ्यो स्यद्भ्यश्श्चवो नमः स्वाहा ।।४०।। ॐ नमो ळिसृजद्ब्भ्यो ळिद्धयद्भ्यश्श्च वो नम: स्वाहा ।।४१।। ॐ नमः स्वपद्ब्भ्यो जाग्ग्रद्ब्भ्यश्श्च वो नमः स्वाहा ।।४२।। ॐ नमः शयानेब्भ्यऽ आसीनेब्भ्यश्श्च वो नमः स्वाहा ।।४३।। ॐ नमस्तिष्ठद्ब्भ्यो धावद्ब्भ्यश्श्च वो नम: स्वाहा ।।४४।। ॐ नमः सभाब्भ्य सभापतिब्भ्यश्श्च वो नमः स्वाहा ।।४५।। ॐ नमोऽश्श्वेब्भ्योऽश्श्वपतिब्भ्यश्श्च वो नमः स्वाहा ।।४६।। ॐ नमो ऽआळ्याधिनीबभ्यो व्विविद्ध्यन्तीबभ्यश्श्च वो नमः स्वाहा ।।४७।। ॐ नमऽ उगणाब्भ्यस्तुर्ठ हतीब्भ्यश्श्च वो नम: स्वाहा ।।४८।। ॐ नमो गणेबभ्यो गणपतिबभ्यश्श्च वो नम: स्वाहा ।।४९।। ॐ नमो ळातेब्भ्यो ळातपतिब्भ्यश्श्च वो नमः स्वाहा ।।५०।। ॐ नमो गृत्सेब्भ्यो गृत्सपतिबभ्यश्श्च वो नम: स्वाहा ।।५१।। ॐ नमो व्वरूपेब्भ्यो व्विश्श्वरूपेब्भ्यश्श्च वो नमः स्वाहा ।।५२।। ॐ नमः सेनाब्भ्यः सेनानिब्भ्यश्श्च वो नमः स्वाहा ।।५३।। ॐ नमो रथिब्भ्योऽ अरथेब्भ्यश्श्च वो नम: स्वाहा ।।५४।। ॐ नमः क्षत्तृब्भ्यः सङ्गृहीतृब्भ्यश्श्च वो नमः स्वाहा ।।५५।। ॐ नमो महद्ब्योऽ अब्भेकेब्यश्च वो नमः स्वाहा ।।५६।। ॐ नमस्तक्षब्भ्यो रथकारेब्भ्यश्श्च वो नमः स्वाहा ।।५७।। ॐ नमः कुलालेब्भ्यः कम्मरिब्भ्यश्श्च वो नमः स्वाहा ॥५८॥

ॐ नमो निषादेब्भ्यः पुञ्जिष्ट्रेब्भ्यश्श्च वो नमः स्वाहा ।।५९।। ॐ नमः श्वनिबभ्यो मृगयुबभ्यश्श्च वो नमः स्वाहा ।।६०।। ॐ नमः श्वब्भ्यः श्वपतिब्भ्यश्श्च वो नमः स्वाहा ।।६१।। ॐ नमो भवाय च रुद्द्राय च स्वाहा। ।६२।। ॐ नमो शर्व्वाय च पशुपतये च स्वाहा ।।६३।। ॐ नमो नीलग्ग्रीवाय च शितिकण्ठाय च स्वाहा ।।६४।। ॐ नमः कपर्दिने च व्युप्प्तकेशाय च स्वाहा ।।६५।। ॐ नमः सहस्राक्षाय च शतधन्त्वने च स्वाहा ।।६६।। ॐ नमो गिरिशयाय च शिपिविष्ट्राय च स्वाहा ।।६७।। ॐ नमो मीदुष्ट्रमाय चेषुमते च स्वाहा ।।६८।। ॐ नमो ह्रस्वाय च व्वामनाय च स्वाहा ।।६९।। ॐ नमो बृहते च व्वर्षीयसे च स्वाहा ।।७०।। ॐ नमो व्वृद्धाय च सवृधे च स्वाहा ।।७१।। ॐ नमो ऽग्रयाय च प्रथमाय च स्वाहा ।।७२।। ॐ नमऽआशवे चाजिराय च स्वाहा ।।७३।। ॐ नम: शीग्घ्याय च शीब्भ्याय च स्वाहा ।।७४।। ॐ नमऽऊम्म्याय चावस्वन्याय च स्वाहा ।।७५।। ॐ नमो नादेयाय च द्द्वीप्प्याय च स्वाहा ।।७६।। ॐ नमो ज्ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च स्वाहा ।।७७।। ॐ नमो पूर्व्वजाय चापराय च स्वाहा ।।७८।। ॐ नमो मद्ध्यमाय चापगल्भाय च स्वाहा ।।७९।। ॐ नमो जघन्न्याय च बुद्ध्न्याय च स्वाहा ।।८०।। ॐ नम: सोबभ्याय च प्प्रतिसर्य्याय च स्वाहा ।।८१।। ॐ नमः याम्म्याय च क्षेम्म्याय च स्वाहा ।।८२।। ॐ नमः श्लोक्क्याय च चावसन्न्याय च स्वाहा ।।८३।। ॐ नमऽ उर्व्वर्य्याय च खल्ल्याय च स्वाहा ।।८४।। ॐ नमः व्यन्त्याय च कक्क्ष्याय स्वाहा ।।८५।। ॐ नमो श्रवाय च प्प्रतिश्रवाय च स्वाहा ।।८६।। ॐ नमऽ आशुषेणाय चाशुरथाय च स्वाहा ।।८७।। ॐ नमः शूराय चावभेदिने च स्वाहा ।।८८।।

जग-दीपिका

ॐ नमो बिल्म्मिने च कवचिने च स्वाहा ।।८९।। ॐ नमो व्वर्म्मिणे च वरूथिने च स्वाहा ।।९०।। ॐ नमः शश्रुताय च शश्रुतसेनाय च स्वाहा ।।९१।। ॐ नमो दुन्दुब्भ्याय चाहनन्न्याय च स्वाहा ।।९२।। ॐ नमो धृष्णवे च प्प्रमृशाय च स्वाहा ।।९३।। ॐ नमो निषङ्गिणे चेषुधिमते च स्वाहा ।।९४।। ॐ नमस्तीक्क्ष्णेषवे चायुधिने च स्वाहा ।।९५।। ॐ नमः स्वायुधाय च सुधन्न्वने च स्वाहा ।।९६।। ॐ नमः स्नुत्याय च पत्थ्याय च स्वाहा ।।९७।। ॐ नमः काट्याय च नीप्प्याय च स्वाहा ।।९८।। ॐ नमः कुल्ल्याय च सरस्याय च स्वाहा ।।९९।। ॐ नमो नादेयाय च व्वैशन्ताय च स्वाहा ।।१००।। ॐ नमः कूप्प्याय चावट्ट्याय च स्वाहा ।।१०१।। ॐ नमो व्वीद्ध्याय चातप्प्याय च स्वाहा ।।१०२।। ॐ नमो मेग्घ्याय च ळिद्युत्त्याय च स्वाहा ।।१०३।। ॐ नमो व्यष्ट्यीय चावष्ट्यीय च स्वाहा ।।१०४।। ॐ नमो व्वात्त्याय च रेषम्याय च स्वाहा ।।१०५।। ॐ नमो वास्तळ्याय च वास्तुपाय च स्वाहा ।।१०६।। ॐ नमः सोमाय च रुद्द्राय च स्वाहा ।।१०७।। ॐ नमस्ताम्राय चारुणाय च स्वाहा ।।१०८।। ॐ नमः शङ्गवे च पशुपतये च स्वाहा ।।१०९।। ॐ नमऽ उग्ग्राय च भीमाय च स्वाहा ।।११०।। ॐ नमोऽग्ग्रेवधाय च दूरेवधाय च स्वाहा ।।१११।। ॐ नमो हन्त्रे च हनीयसे च स्वाहा ।।११२।। ॐ नमो व्वृक्षेब्भ्यो हरिकेशेब्भ्यो स्वाहा ।।११३।। ॐ नमस्ताराय स्वाहा ।।११४।।

ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च स्वाहा ।।११५।।

ॐ नमः शंकराय च मयस्कराय च स्वाहा ।।११६।।

ॐ नमः शिवाय च शिवतराय च स्वाहा ।।११७।।

ॐ नमः पार्य्याय चावार्य्याय च स्वाहा ।।११८।।

ॐ नम: प्रतरणाय चोत्तरणाय च स्वाहा ।।११९।। ॐ नमस्तीत्थ्यीय च कुल्ल्याय च स्वाहा ।।१२०।। ॐ नमः शष्ण्याय च फेन्न्याय च स्वाहा ।।१२१।। ॐ नमः सिकत्त्याय च प्रवाह्याय च स्वाहा ।।१२२।। ॐ नमः किर्ठ शिलाय च क्षयणाय च स्वाहा ।।१२३।। ॐ नमः कपर्दिने च पुलस्तये च स्वाहा ।।१२४।। ॐ नमऽ इरिण्ण्याय च प्प्रपत्थ्याय च स्वाहा ।।१२५।। ॐ नमो ळ्रज्ज्याय च गोष्ट्र्याय च स्वाहा ।।१२६।। ॐ नमऽ नमस्तल्प्याय च गेह्याय च स्वाहा ।।१२७।। ॐ नम: हृदय्याय च निवेष्प्याय च स्वाहा ।।१२८।। ॐ नमो काट्ट्याय च गह्नरेष्ट्ठाय स्वाहा ।।१२९।। ॐ नम: शुष्कक्याय च हरित्त्याय च स्वाहा ।।१३०।। ॐ नमः पा र्ठः सव्याय च रजस्याय च स्वाहा ।।१३१।। ॐ नमो लोप्प्याय चोलप्प्याय च स्वाहा ।।१३२।। ॐ नमऽ ऊर्ळ्याय च सूर्ळ्याय च स्वाहा ।।१३३।। ॐ नमः पर्णाय च पर्णशदाय च स्वाहा ।।१३४।। 3% नमऽ उदगुरमाणाय चाभिग्घ्नते च स्वाहा ।।१३५।। ॐ नमऽ आखिदते च प्प्रखिदते च स्वाहा ।।१३६।। ॐ नमऽ इषुकृद्ब्भ्यो धनुष्कृद्ब्भ्यश्श्च वो नमः स्वाहा ।।१३७।। ॐ नमो व: किरिकेब्भ्यो देवाना र्ठ हृदयेब्भ्यो स्वाहा ।।१३८।।

3ॐ नमो व्विचिन्न्वत्केब्भ्यो देवाना र्व हृदयेब्भ्यो स्वाहा ।।१३९।।

3ँ नमो व्विक्षिणत्केब्भ्यो देवाना र्ठ हृदयेब्भ्यो स्वाहा ।।१४०।।

ॐ नमः आनिर्हतेब्भ्यो देवाना र्व हृदयेब्भ्यो स्वाहा ।।१४१।।

ॐ द्रापेऽअन्धसस्प्पते दरिद्द्र नीललोहित। आसाम्प्रजानामेषाम्पशुनाम्मा भेर्म्मा रोङ्मोचनः किञ्चनाममत् स्वाहा।।१४२।।

- ॐ इमारुद्द्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहे मती:। यथा शमसद् द्विपदे चतुष्पदे व्यिश्श्वम्पुष्ट्रङग्रामेऽ अस्मिन्नातुरम् स्वाहा।।१४३।।
- ॐ या ते रुद्द्र शिवा तनू: शिवा व्विश्श्वाहा भेषजी। शिवा रुतस्य भेषजी तया नो मृड जीवसे स्वाहा।।१४४।।
- ॐ परि नो रुद्द्रस्य हे तिर्व्वृणक्कु परित्वेषस्य दुर्म्मितरघायो:। अवस्थिरा मधवद्ब्यस्तनुष्व मीढवस्तोकाय तनयाय मृड स्वाहा।।१४५।।

जग-दीपिका

- ॐ मीढुष्ट्रम शिवतम शिवो न: सुमना भव परमेळ्वृक्षऽआयुधन्निधाय कृत्तिं व्वसानऽआचर पिनाकम्बिब्भदागहि स्वाहा।।१४६।।
- ॐ व्विकिरिद्द्र व्विलोहित नमस्तेऽ अस्तु भगवः। यास्ते सहस्र र्ठ हेतयोऽन्न्यममन्निवपन्तुताः स्वाहा।।१४७।।
- ॐ सहस्राणि सहस्रशो बाह्वोस्तव हेतय:। तासामीशानो भगव: पराचीना मुखा कृधि स्वाहा।।१४८।।
- ॐ अङ्ख्याता सहस्राणि ये रुद्द्रा अधि भूम्म्याम्। तेषा र्वः, सहस्रयोजनेऽव धन्न्वानि तन्न्मसि स्वाहा।।१४९।।
- ॐ अस्म्मिन्महत्यर्ण्णवेऽन्तरिक्षे भवाऽ अधि। तेषा र्ठः सहस्रयोजनेऽव धन्न्वानि तन्मसि स्वाहा।।१५०।।
- ॐ नीलग्ग्रीवाः शितिकण्ठाः दिव र्ठः रुद्द्राऽउपश्र्रिताः। तेषा र्ठः सहस्रयोजनेऽव धन्न्वानि तन्न्मसि स्वाहा।।१५१।।
- ॐ नीलग्ग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्व्वाऽअधः क्षमाचराः। तेषा र्ठः सहस्रयोजनेऽव धन्न्वानि तन्न्मसि स्वाहा।।१५२।।
- ॐ ये व्वृक्षेषु शष्ट्रिपञ्जरा नीलग्ग्रीवा व्विलोहिता:। तेषा र्वः सहस्रयोजनेऽव धन्न्वानि तन्मिस स्वाहा।।१५३।।
- ॐ ये भूतानामधिपतयोव्विशिखासः कपर्दिनः। तेषा र्ठः सहस्रयोजनेऽव धन्न्वानि तन्मसि स्वाहा।।१५४।।
- ॐ ये पथाम्पथिरक्षयऽ ऐलवृदाऽ आयुर्य्युधः। तेषा र्ठः सहस्रयोजनेऽव धन्न्वानि तन्मसि स्वाहा।।१५५।।
- ॐ ये तीर्त्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिण:। तेषा र्ठः सहस्रयोजनेऽव धन्न्वानि तन्न्मिस स्वाहा।।१५६।।
- ॐ येऽन्नेषु विविद्धयन्ति पात्रेषु पिबतो जनान्। तेषा र्ठः सहस्रयोजनेऽव धन्न्वानि तन्मसि स्वाहा।।१५७।।
- ॐ येऽएतावन्तश्श्च भूया र्ठः सश्श्च दिशो रुद्द्रा व्वितस्त्थिरे। तेषा र्ठः सहस्रयोजनेऽव धन्न्वानि तन्मसि स्वाहा।।१५८।।
- ॐ नमोऽस्तु रुद्द्रेब्भ्यो ये दिवि येषां व्वर्षमिषवः तेब्भ्यो दश प्राचीर्द्दश दक्षिणा दश प्रातीचीर्दशोदीचीर्दशोद्ध्वाः। तेब्भ्यो नमोऽ अस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यन्द्विष्मो यश्च्वनो द्वेष्ट्रि तमेषाञ्जम्भे दद्ध्मः स्वाहा।।१५९।।
- ॐ नमोऽस्तु रुद्द्रेब्भ्यो येऽन्तरिक्षे येषां व्वातऽइषवः। तेब्भ्योदश प्राचीर्द्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्द्दशोदीचीर्द्दशोद्ध्वाः। तेब्भ्यो नमोऽअस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यिन्द्रिष्ममो यश्च्चनो द्वेष्ट्टि तमेषाञ्जम्भे दद्ध्मः स्वाहा।।१६०।।

ॐ नमोऽस्तु रुद्द्रेब्भ्यो पृथिव्यां येषामन्निषवः। तेब्भ्योदश प्राचीर्द्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्द्दशोद्दीचीर्द्दशोद्धाः। तेब्भ्यो नमोऽअस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यिन्द्विष्मो यश्चनो द्वेष्ट्रि तमेषाञ्जम्भे दद्धमः स्वाहा।।१६१।।

ॐ व्वय र्ठः सोमः (८ मंत्राः, पाठमात्रम् मतान्तरे एकामाहुतिं जुहुयात्)।। ॐ उग्रश्चः (७ मंत्राः, पाठमात्रम्)। ॐ व्वाजश्चः।।१।। प्प्राणश्चः।।२।। ओजश्च।।३।। ज्यैठ्यं चः।।४।। स्वाहा।

(२) ॐ नमस्तेः (१६१ आहुतयः)। ॐ सत्यञ्चः।।१।। ऋतञ्चः।।२।। यन्ता चः।।३।। शञ्च।।४।। स्वाहा। (३) ॐ नमस्तेः (१६१ आहुतयः)। ॐ ऊर्क्चञ्चः।।१।। रियञ्चः।।२।। वित्तञ्चः।।३।। व्यीहयञ्च।।४।। स्वाहा। (४) ॐ नमस्तेः (१६१ आहुतयः)। ॐ अश्मा चः।।१।। अग्निश्च।।२।। व्यसुचः।।३।। स्वाहा। (५) ॐ नमस्तेः (१६१ आहुतयः)। ॐ अग्निश्च मऽइन्द्रश्चः।।१।। मित्रश्चः।।२।। पृथिवी चः।।३।। स्वाहा। (६) ॐ नमस्तेः (१६१ आहुतयः)। ॐ अर्ठः शुश्चः।।१।। आगग्रयणश्चः।।२।। स्वृवश्चः।।३।। स्वाहा। (७) ॐ नमस्तेः (१६१ आहुतयः)। ॐ अग्निश्चः।।१।। व्रतश्चमः।।२।। (८) ॐ नमस्तेः (१६१ आहुतयः)। ॐ एका चः।।१।। (९) ॐ नमस्तेः (१६१ आहुतयः)। ॐ त्र्यावश्च।।१।। ॐ चतस्त्रश्चः।।१।। (१०) ॐ नमस्तेः (१६१ आहुतयः)। ॐ त्र्यावश्च।।१।। ॐ मश्चहा। ॐ अद्भ्यः सम्भृतःः (६ मंत्राः) स्वाहा। ॐ सहस्रशीर्षाः (१६ मंत्राः) स्वाहा। ॐ अद्भ्यः सम्भृतःः (६ मंत्राः) स्वाहा। ॐ आशुः शिशानः (१२ मंत्राः) स्वाहा। ॐ विब्भाङ् बृहत पिबतुः (१७ मंत्राः) स्वाहा। (११) ॐ नमस्तेः (१६१ आहुतयः)।

ॐ व्याजायः स्वाहा।।१।। ॐ आयुर्यज्ञेन कल्पताम् स्वाहा।।२।। ॐ ऋचं वाचम् स्वाहा। ॐ यन्मे छिद्रम् स्वाहा। ॐ भू भूवः स्वः तत्सिवतुः स्वाहा। ॐ कया न श्चित्रः स्वाहा। ॐ कस्त्वा सत्यो मदानाम् स्वाहा। ॐ अभीषुणः स्वाहा। ॐ कया त्वन्नऽऊत्याभिः स्वाहा। ॐ इंद्रो विश्वस्यः स्वाहा। ॐ शं नो मित्रः शं वरुणः स्वाहा। ॐ शन्नो व्वातः पवता र्व शन्नः स्वाहा। ॐ अहानि शं भवतु नः स्वाहा। ॐ शन्नो देवी स्वाहा। ॐ स्योना पृथिवीः स्वाहा। ॐ आपो हि ष्ठाः स्वाहा। ॐ यो वः शिवतमो रसः स्वाहा। ॐ तस्माऽ अरङ्गमाम वः स्वाहा। ॐ द्दौ शांतिः स्वाहा। ॐ दृते दृर्वः ह मा मित्रस्य मा चक्षुषाः स्वाहा। ॐ दृते दृर्वः ह मा ज्योक्तेः स्वाहा। ॐ नमस्ते हरसे शोचिषेः स्वाहा। ॐ नमस्ते अस्तु व्विद्युतेः स्वाहा। ॐ यतोयतः समीहसेः स्वाहा। ॐ सुमित्रिया नऽ आपः स्वाहा। ॐ तच्चक्षुर्देविहतम् स्वाहा। ततः षडङ्गन्यासं कुर्यादिति।

ॐ तत्सत्

।।अथ मृत्युञ्जय यंत्रार्चनम्।।

अथ ध्यानम्: - हस्तांभोजयुगस्थकुंभयुगलादुदृत्य तोयं शिर: सिचंतं करयोर्युगेन दधतं स्वांके सकुंभौ करौ। अक्षस्रङ्मृगहस्तमंबुजगतं मूर्द्धस्थचन्द्रस्रवत्पीयूषोन्नतनुं भजे सगिरिजं मृत्युंजयं त्र्यम्बकम्।।

नव पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमण्डले लिङ्गतोभद्रमण्डले वा यन्त्रमध्ये ॐ मं मंडूकादिपर-तत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः इति पीठदेवताः संपूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत्। तद्यथा। पूर्वादिक्रमेण। ॐ वामायै नमः।।१।। ॐ ज्येष्ठायै नमः।।२।। ॐ रौद्रायै नमः।।३।। ॐ काल्यै नमः।।४।। ॐ कलविकरिण्यै नमः।।५।। ॐ बलविकरिण्यै नमः।।६।। ॐ बलप्रमिथन्यै नमः।।७।। ॐ सर्वभूतदमन्यै नमः।।८।। मध्ये ॐ मनोन्मन्यै नमः।।९।। इति पुजयेत्।

ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्ति वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपिर दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्रेणाशोष्य "ॐ नमो भगवते सकलगुणात्मकशक्तियुताय अनन्ताय योगपीठात्मने नमः।।" इति मंत्रेण

पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्ति प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पां तैरुपचारै: संपूज्य देवाज्ञया आवरणपूजां कुर्य्यात्। तद्यथा – पुष्पांजिलमादाय "सिचन्मय: परो देव: परामृतरसिप्रय:।। अनुज्ञां शिव मे देहि परिवारार्चनाय ते।।१।।" इत्याज्ञां गृहीत्वा पुष्पांजिलं च दत्त्वा आवरणपूजाकुर्य्यात्।।

पंचकोणे। ऐशान्याम् – ॐ ईशानः सर्विविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपित ब्रह्मणोऽधिपितर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम्।। ॐ ईशानाय नमः। ईशानश्रीपादुकां पुजयामि तर्पयामि।। इति सर्वत्र।।१।।

पूर्वे - ॐ तत्पुरुषाय विदाहे महादेवाय धीमिह।। तन्नो रुद्र प्रचोदयात्।। ॐ तत्पुरुषाय नम:। तत्पुरुषश्रीपाः।।२।।

दक्षिणे - ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरभ्यो घोरघोरतरेभ्य:।। सर्वेभ्यः सर्व्वशर्व्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्य:।। ॐ अघोराय नम:। अघोरश्रीपाः।।३।।

पश्चिमे - ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलिकरणाय नमो बलिकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः।। ॐ वामदेवाय नमः। वामदेवश्रीपाः।।४।।

उत्तरे - ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः। भवे भवे नातिभवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः।। ॐ सद्योजाताय नमः। सद्योजातश्रीपाः ।।५।। (इति पंचमूर्तिः पूजयेत)।। ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य्य 'अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणगतवत्सल।। भक्त्या

समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।।१।। इतिपठित्वा पुष्पांजलि च दत्वा विशेषार्घाबिन्दुं निःक्षिप्य पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत्। (इति प्रथमावरणम्)।।१।। ततः पंचकोणाग्रेषु ऐशान्यादिक्रमेण। ॐ निवृत्त्यै नम:। निवृत्तिश्रीपाः ।।१।। ॐ प्रतिष्ठायै नम:। प्रतिष्ठाश्रीपाः ।।२।। ॐ विद्यायै नम: विद्याश्रीपाः ।।३।। ॐ शांत्यै नम:। शांतिश्रीपाः ।।४।। ॐ शांत्यतीतायै नम:। शांत्यतीताश्रीपाः ।।५।। इति पूजयित्वा पूष्पांजलिं च दद्यात्। (इति द्वितीयावरणम्)।।२।। ततोऽष्टदले पूज्य पूजकयोरंतराले प्राचीं तदनुसारेण अन्या दिश: प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण। ॐ सूर्य्यमूर्तये नम:। सूर्य्यमूर्तिश्रीपाः ।।१।। ॐ इन्दुमूर्तये नम: इन्दुमूर्तिश्रीपाः ।।२।। ॐ क्षितिमूर्तये नम:। क्षितिमूर्तिश्रीपाः ।।३।। ॐ तोयमूर्तये नम:। तोयमूर्तिश्रीपाः ।।४।। ॐ अग्निमूर्तये नम:। अग्निमूर्तिश्रीपाः ।।५।। ॐ पवनमूर्तये नम:। पवनमूर्तिश्रीपाः ।।६।। ॐ आकाशमूर्तये नम:। आकाशमूर्तिक्षीपाः ।।७।। ॐ यज्ञमूर्तये नम:। यज्ञमूर्तिश्रीपाः।।८।। इत्यष्टौ मूर्ती: पूजियत्वा पुष्पांजिलं च दद्यात्। (इति तृतीयावरणम्)।।३।। तद्वहिरष्टदले प्राचीक्रमेण - ॐ रमायै नम:। रमाश्रीपाः।।१।। ॐ राकायै नम:। राकाश्रीपाः।।२।। ॐ प्रभायै नम:। प्रभाश्रीपाः।।३।। ॐ ज्योत्स्नायै नम:। ज्योत्स्नाश्रीपाः।।४।। ॐ पूर्णायै नमः। पूर्णाश्रीपाः।।५।। ॐ पूषायै नमः। पूषाश्रीपाः।।६।। ॐ पूर्ण्यै नमः। पूर्णाश्रीपाः।।७।। ॐ सुधायै नम:। सुधाश्रीपाः।।८।। इति पूजियत्वा पुष्पाजलिं च दद्यात्।। (इति चतुर्थावरणम्)।।४।। तद्वहिरष्टदले प्राचीक्रमेण। ॐ विश्वायै नम: विश्वाश्रीपाः।।१।। ॐ वंद्यायै नम:। वंद्याश्रीपाः।।२।। ॐ सितायै नम:। सिताश्रीपाः।।३।। ॐ प्रह्लायै नम:। प्रह्लाश्रीपाः।।४।। ॐ सारायै नमः। साराश्रीपाः।।५।। ॐ संध्यायै नमः। संध्याश्रीपाः।।६।। ॐ शिवायै नम:। शिवाश्रीपाः।।७।। ॐ निशायै नम:। निशाश्रीपाः।।८।। इत्यष्टौ पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात्।। (इति पंचमावरणम्)।।५।। तद्वहिरष्टदलेप्राचीक्रमेण। ॐ आर्य्यायै नमः। आर्य्याश्रीपाः।।१।। ॐ प्रज्ञायै नमः। प्रज्ञाश्रीपाः।।२।। ॐ प्रभायै नमः। प्रभाश्रीपाः।।३।। ॐ धृत्यै नमः। धृतिश्रीपाः।।३।। ॐ मेधायै नमः। मेधाश्रीपाः।।४।। ॐ शांत्यै नम:। शांतिश्रीपाः।।५।। ॐ कांत्यै नम:। कांतिश्रीपाः।।६।। ॐ धृत्यै नम:। धृतिश्रीपाः।।७।। ॐ मत्यै नम:। मतिश्रीपाः।।८।। इत्यष्टौ पूजियत्वा पुष्पांजलिं च दद्यात्। (इति षष्टावरणम्)।।६।। तद्वहिरष्टदले प्राचीक्रमेण। ॐ धरायै नम:। धराश्रीपाः।।१।। ॐ उमायै नम:। उमाश्रीपाः।।२।। ॐ पावनयै नम:। पावनीश्रीपाः।।३।। ॐ पद्मायै नमः। पद्माश्रीपाः।।४।। ॐ शांतायै नमः। शांताश्रीपाः।।५।। ॐ अमोघायै नमः। अमोघाश्रीपाः।।६।। ॐ जयायै नमः। जयाश्रीपाः।।७।। ॐ अमलायै नमः। अमलाश्रीपाः।।८।। इत्यष्टौ पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात्।। (इति सप्तमावरणम्)।।७।। तद्वहिरष्टदले प्राचीक्रमेण। ॐ अनंताय नमः। अनंतश्रीपाः।।१।। ॐ सूक्ष्मसंज्ञय नमः।

सूक्ष्मसंज्ञश्रीपाः।।२।। ॐ शिवोत्तमाय नमः। शिवोतमंश्रीपाः।।३।। ॐ एकनेत्राय नमः। एकनेत्रश्रीपाः।।४।। ॐ एकरुद्राय नमः। एकरुद्रश्रीपाः।।५।। ॐ त्रिमूर्तये नमः। त्रिमूर्तिश्रीपाः।।६।। ॐ श्रीकंठाय नमः। श्रीकंठश्रीपाः।।७।। ॐ शिखंडिने नमः। शिखंडिश्रीपाः।।८।। इत्यष्टौ पूजियत्वा पुष्पांजिलं च दद्यात्।। (इत्यष्टमावरणम्)।।८।। तद्वहिरष्टदले उत्तरामारभ्य ॐ उमायै नम:। उमाश्रीपाः।।१।। ॐ चण्डेश्वराय नम:। चण्डेश्वरश्रीपाः।।२।। ॐ नंदिने नमः। नंदिश्रीपाः।।३।। ॐ महाकालाय नमः। महाकालश्रीपाः।।४।। ॐ गणेशाय नमः। गणेशश्रीपाः।।५।। ॐ वृषभाय नमः। वृषभश्रीपाः।।६।। ॐ भृंगिरिटये नमः। भृंगिरिटिश्रीपाः।।७।। ॐ स्कंदाय नमः। स्कंदश्रीपाः।।८।। इत्यष्टौ पूजयित्वा पूष्पांजलिं च दद्यात्।। (इति नवमावरणम्)।।९।। तद्वहिरष्टदले प्राचीक्रमेण। ॐ ब्राह्मर्थे नमः। ब्राह्मीश्रीपाः।।१।। ॐ माहेश्वर्य्ये नमः। माहेश्वरीश्रीपाः।।२।। ॐ कौमार्यै नमः। कौमारीश्रीपाः।।३।। ॐ वैष्णव्ये नमः। वैष्णवीश्रीपाः।।४।। ॐ वाराह्यै नमः। वाराहीश्रीपाः।।५।। ॐ इन्द्राण्यै नमः। इन्द्राणीश्रीपाः।।६।। ॐ चामुंडायै नमः। चामुण्डाश्रीपाः।।७।। ॐ महालक्ष्म्यै नमः। महालक्ष्मीश्रीपाः।।८।। इत्यष्टौ पूजियत्वा पुष्पांजिलं च दद्यात्।। (इति दशमावरणम्)।।१०।। तद्वाह्ये भूपुरे पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादिदशदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च पूजियत्वा पुष्पांजिल दद्यात्। इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतां संपूज्य कृतांजिलः

प्रार्थयेत् - ॐ मृत्युंजय महारुद्रत्राहिमां शरणागतम्।। जन्ममृत्यु-जरारोगैः पीडितं कर्मबंधनैः।।१।। तावकस्त्वद्गतप्राणास्त्विच्चत्तोऽहं सदा मृड।। इति विज्ञाप्य देवेशं जपेनमृत्युंजयं परम्।।२।। (इति संप्रार्थ्य जपं कुर्य्यात्) अस्य पुरश्चरणमेकलक्षजपः।

अथ मृत्युञ्जय (महामृत्यञ्जय) मन्त्रः प्रयोग

ॐ अस्य श्री महामृत्यञ्जय मन्त्रस्य विशष्ठ ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः श्री त्र्यम्बकं-रुद्रोदेवता हों बीजम् जूं शक्तिः सः कीलकं मम वा यजमानस्य शरीरे सर्वारिष्ट-निवृतिपूर्वक सकल मनोरथ सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः

ऋष्यादिन्यासाः विसष्ठ ऋषये नमः शिरिस। अनुष्टुप् छन्दसे नमः मुखे। श्रीमृत्युंजय रुद्रदेवतायै नमो हृदये। हौं बीजाय नमः गुह्ये। जूं शक्तये नमः पादयोः। सः कीलकाय नमः सर्वांगेषु।

करादिन्यासाः ॐ त्र्यम्बकम् अंगुष्ठाभ्यां नमः। यजामहे तर्जनीभ्यां नमः। सुगंधिं पुष्टिवर्धनम् मध्यमाभ्यां नमः। उर्वारुकिमव बंधनात् अनामिकाभ्यां नमः। मृत्योर्मुक्षीय किनष्ठिकाभ्यां नमः। मामृतात् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

एवं हृदयादिन्यासाः। अक्षरन्यासः ॐ त्रयं नमः पूर्वमुखे। ॐ बं नमः पश्चिममुखे। ॐ कं नमः दिक्षणमुखे। ॐ यं नमः उत्तरमुखे। ॐ जां नमः शिरिस। ॐ मं नमः कंठे। ॐ हें नमः मुखे। ॐ सुं नमः नाभौ। ॐ गं नमः हृदि। ॐ धिं नमः पृष्ठे। ॐ पुं नमः कुक्षौ। ॐ ष्टिं नमः लिंगे। ॐ वं नमः गुदे। ॐ धं नमः दिक्षणोरुमूले। ॐ नं नमः वामोरुमूले। ॐ उं नमः दिक्षणोरुमध्ये। ॐ वां नमः वामोरुमध्ये। ॐ रुं नमः दिक्षणजानुनि। ॐ कं नमः वामजानुनि। ॐ मिं नमः दिक्षणजानुवृत्ते। ॐ वं नमः वामजानुवृत्ते। ॐ बं नमः दिक्षणस्तने। ॐ धं नमः वामस्तने। ॐ नां नमः दिक्षणपार्श्वे। ॐ मृं नमः वामपार्श्वे। ॐ त्यों नमः दिक्षणपादे। ॐ मुं नमः वामपादे। ॐ क्षीं नमः दिक्षण करे। ॐ यं नमः वामकरे। ॐ मां नमः दिक्षणनासायाम्। ॐ मृं नमः वामनासायाम्। ॐ तां नमः मूिर्ध्व। पदन्यासः ॐ त्र्यम्बकं शिरिस। ॐ यजामहे भ्रुवोः। ॐ सुगंधिं नेत्रयोः। ॐ पृष्टिवर्धनम् मुखे। ॐ उर्वारुकं गण्डयोः। ॐ इव हृदये। ॐ बंधनात् जठरे। ॐ मृत्योः लिंगे। ॐ मुक्षीय हृदये। ॐ मां जान्वोः। ॐ अमृतात् पादयोः।

महामृत्युंजयमंत्रकरन्यास - ॐ हौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ त्र्यम्बकं ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ हौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्राय अमृतमूर्तये मांजीवय तर्जनीभ्यां नमः। ॐ हौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः सुगंधिं पृष्टिवर्धनम् ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरसे जिटने स्वाहा मध्यमाभ्यां नमः। ॐ हौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः उर्वारुकिमिव बंधनात् ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय हां हीं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ हौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुः साम मंत्राय किनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ हौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐ नमो भगवते रुद्राय ॐ अग्नित्रयाय ज्वलज्वल मां रक्ष रक्ष अघोरास्राय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। एवं हृदयादि न्यासाः।

ध्यानम् - हस्ताभ्यां कलशद्वयामृतरसै:, आप्लावयन्तं शिर:, द्वाभ्यां तौ दधतं मृगाक्षवलये द्वाभ्यां वहन्तं परम्। अंके न्यस्तकरद्वयामृतघटं कैलासकान्तं शिवं स्वच्छांभोजगतं नवेन्दुमुकुटं देवं त्रिनेत्रं भजे।।

इति ध्यात्वा यथा लब्धोपचारै सम्पूज्य – माला पूजनं एवं मूल मन्त्र जपेत्। **षट् प्रणवसंयुक्तः मृत्युञ्जयमंत्र –** ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगंधिं पुष्टिवर्धनम्। उर्व्वारुकिमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः जूं हौं ॐ (५२) वर्णात्मको मृत संजीवनी मन्त्रः।।

चतुर्दशप्रणवयुक्त महामृत्युंजयमंत्र - ॐ हौं ॐ जूं ॐ सः ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगंधिं पृष्टिवर्धनम् उर्व्वारुकिमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात ॐ स्वः ॐ भुवः ॐ भूः ॐ सः ॐ जूं ॐ हौं ॐ।।(६२) वर्णात्मको महामृत्युञ्जयः।। (शुक्राराधितो)

मृत्युंजय मंत्र - ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगंधिं पुष्टिवर्धनम्। उर्व्वारुकिमव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात ॐ स्वः ॐ भुवः ॐ भूः ॐ।।(४८) वर्णात्मक केवलमृत्युञ्जयः।।

(द्वादशाक्षरो मृत्युञ्जयः मन्त्रः - ।।ॐ जूँ सः पालय पालय सः जूँ ॐ।। त्र्यक्षरी मृत्यञ्जय मन्त्रः - ।।ॐ जूँ सः सः जूँ ॐ।।)

पुराणोक्त मृत्युंजय मंत्र - हीं मृत्युंजय महादेव त्राहि मां शरणागतम्। जन्ममृत्यु-जराव्याधि-पीडितं कर्मबंधनै:।

(जप करते समय मंत्र के अर्थ का ध्यान रहे – हे त्रिनेत्र, मैं आप का यजन करता हूं। आप सुगंधयुक्त एवं पृष्टिवर्धक हो। जैसे ककड़ी का फल बंधन से स्वयं मुक्त हो जाता है, वैसे हम मृत्यु (के भय से) मुक्त बनें। हमें अमृतत्व की प्राप्ति हो। हम सदैव आप का स्मरण करते रहें। पुराणोक्त मंत्र का अर्थ भी सरल है। मैं आप की शरण में आया हूं। आप मुझे सभी विपत्तियों से मुक्त करें। जप पश्चात् षडंगन्यास, मृत्युंजय कवच पाठ पश्चात् जपनिवेदन।)

गुह्यातिगुह्य गोप्ता त्वं गृहाणास्मत् कृतं जपम्। सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादान्महेश्वर।। सकंल्प - अनेन जपाख्येन कर्मणा श्री महामृत्युंजयः प्रीयताम्।

(विविध रोग की शांति के लिए विसष्ठ कल्प एवं शांतिरत्न में विविध पदार्थों से होम करने का विधान है। ऐसा भी विधान है कि आयुर्वेद में जिस औषध का रोगशान्त्यर्थ विधान हो उस का होम करें।)

(लक्षमंत्र का पुरश्चरण पश्चात् दशांश होम, तत् दशांश तर्पण (ॐ त्र्यंबकं देवं तर्पयामि), तद्दशांश मार्जन (आत्मानं अभिषिंचामि) व तत्दशांश ब्रह्मभोजन हो। होम के लिए कामना अनुसार द्रव्य का विधान इस प्रकार है। बिल्वसमिध-संपत्ति, पलाश-ब्रह्मतेज, खिदर-कान्ति और पुष्टि, वटसिमध-धनधान्यसमृद्धि, तिल-पापनाश, सर्षप-शत्रुविजय, पायस-रक्षा, श्री, कीर्ति व कान्ति। जन्मिदन पर पायस, तिल, घृत आदि का होम करने से लक्ष्मी, आरोग्य, यशप्राप्ति होती है। मंत्र जप सभी प्रकार की इष्टिसिद्धि करता है।)

।। इति महामृत्युञ्जय विधानम्।।

।।शतरुद्रियम्।।

ॐ नमस्ते... जम्भेदध्म: ।।६६।। मन्त्र

ॐ वय र्ठः सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमिह।। एष ते रुद्र भागः सह स्वस्नाम्बिकया तं जुषस्व स्वाहै ष ते रुद्र भागऽआखुस्ते पशुः।। अव रुद्रमदीमद्यव देवं त्र्यम्बकम्। यथा नो वस्यसस्करद्यथा नः श्रेयसस्करद्यथा नो व्यवसाययात्।। भेषजमिस भेषजं गवेऽश्वाय पुरुषाय भेषजम्। सुखं मेषाय मेष्यै।। त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पृष्टिवर्धनम्उर्वारुकिमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्। त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पितवेदनम्। उर्वारुकिमिव बन्धनादितो मुक्षीय मामृतः।। एतत्ते रुद्रावसं तेन परो मूजवतोऽतीहि। अवततधन्वा पिनाकावसः कृत्तिवासा अहि र्ठः सन्नः शिवोऽतीहि।। त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम्। यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नोऽअस्तु त्र्यायुषम्।। शिवो नामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्तेऽअस्तु मा मा हि र्ठः सीः नि वर्त्तयाम्यायुषेऽन्नाद्याय प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्य्याय।।

नमस्ते रुद्र... सदिमत्वाहवामहे - (१६) मन्त्र

एष ते रुद्र भागः सह स्वस्नाम्बिकया तं जुषस्व स्वाहै ष ते रुद्र भागऽआखुस्ते पशुः।। अव रुद्रमदीमह्मव देवं त्र्यम्बकम्। यथा नो वस्यसस्करद्यथा नः श्रेयसस्करद्यथा नो व्यवसाययात्।।

नमस्ते रुद्र... मुतते नम: - (१)

याते रुद्र... गिरिशन्ताभिचाकशीहि - (२)

न तं विदाथ य ऽ इमा जजानान्यद्युष्माकमन्तरं बभूव। नीहारेण प्रावृता जल्प्या चासुतृप उक्थशासश्चरन्ति।। विश्वकर्मा ह्यजिनष्ट देवऽआदिद्गन्धर्वो अभवद् द्वितीयः। तृतीयः पिता जिनतौषधीनामपां गर्भं व्यदधात् पुरुत्रा।।

मीढुष्टम् शिवतम शिवो नः सुमना भव। परमे वृक्ष आयुधं निधाय कृतिं वसानऽआ चर पिनाकं बिभ्रदा गिह।। विकिरिद्र विलोहित नमस्तेऽअस्तु भगवः। यास्ते सहस्र र्ठः हेतयोऽन्यमस्मन्नि वपन्तु ताः।। सहस्राणि सहस्रशो बाह्वोस्तव हेतयः। तासामीशानो भगवः पराचीना मुखा कृधि।। असंख्याता सहस्राणि ये रुद्राऽअधि भूम्याम्। तेषा र्ठः सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि।।१००।।

अथ नूतन गृहादीनां शिलास्थापन विधि

तत्रकर्ता निश्चित वा आग्नेय दिशि खात भूमेः पश्चिम उपविश्य आचम्य प्राणानायम्य स्विस्त वाचियत्वा प्रतिज्ञा सङ्कल्पं कुर्यात् – देशकालौ संकीर्त्य – किरष्य माणस्यास्य वास्तोः शुभतासिद्धयर्थम् निर्विष्नता गृह (प्रासाद) सिद्धयर्थं मायुरारोग्येश्वर्य्याभि वृद्धयर्थम् च वास्तोस्तस्य भूमि पूजनं शिलान्यासञ्च किरष्ये। तदङ्गभूतं श्री गणपत्यादि पूजनञ्च किरष्ये। इति सङ्कलप्य।। गणेश वरुण षोडशमातृका ब्रह्मादि सूर्यादि नवग्रह ओङ्कार मृत्युञ्जयादि पूजनं कुर्यात्।

तत आचार्य: ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिता: ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।। अनेन गौरसर्षपानवकीर्य पञ्चगव्येन संप्रोक्ष्य वायुकोणपीठे पञ्चशिलाः स्थापयेत्। ततः सर्पाकारं वास्तुमावाह्य ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशोऽनमीवो भवा न:।। यत्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शत्रो भव द्विपदे शं चतुष्पदे।। इति मन्त्रेण सम्पूज्य दध्योदनबलिर्देयः ततो नागानां पूजनम्।। ॐ वासुकिं धृतराष्ट्रञ्च कर्कोटकधनञ्जयौ। तक्षकैरावतौ चैव कालेयमणिभद्रकौ।। इत्यष्टनागान् पृथक् पृथक् सहैव वा नाममन्त्रेणावाह्य पूजयेत।। ततो धर्मरूपवृषमावाह्य सम्पूज्य चाञ्जलि बद्धवा प्रार्थयेत् - ॐ धर्मीसि धर्मदैवत्य वृषरूप नमोस्तु ते। सुखं देहि धनं देहि देहि पुत्रमनुत्तमम।। गृहे गृहे निधिं देहि वृषरूप नमोस्तु ते। आयुर्वृद्धि च धान्यं च आरोग्यं देहगेहयो:।। आरोग्यं मम भार्याया पितृमातृसुखं सदा। भ्रातृणां परमं सौख्य पुत्राणां सौख्यमेव च।। सर्वस्वं देहि मे विष्णो गृहे संविशतां प्रभो। नवग्रहयुतां भूमि पालयस्व वरप्रदा। ततः ताः पञ्चशिलाः - ॐ आपः शुद्धा ब्रह्मरूपाः पावयन्ति जगत्त्रयम्। ताभिरद्भिः शिलां स्नाप्य स्थापयामि शुभे स्थले। इति शुद्धोदकेन प्रक्षाल्य ॐ गजाश्वरथ्यावल्मीकसद्भिर्मृद्धिः शिलेष्टकान् प्रक्षालयामि शुद्धयर्थं गृहनिर्माणकर्मणि।। इति सप्तमृत्तिकाभिः प्रक्षालयेत्।। ततो गायत्र्या पञ्चगव्येन दध्ना तीर्थोदकेन च प्रक्षाल्य शुद्धवस्त्रेण संमार्ज्य ताः शिलाः कुङ्कम चन्दनाभ्यां विलिप्य, वस्त्रेणाऽऽछाद्य नामभि: पूजयेत्। तत्र नामानि। नन्दा भद्रा जया रिक्ता पूर्णा नामा यथा-क्रमम्। नन्दायां पद्ममालिख्य भद्रा सिंहासनं तथा।। जयायां तारणं छत्र रिक्तायां कूर्ममेव च। पूर्णायां तु चतुर्बाहु विष्णु सलेखयेद् बुध:।। ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च ईश्वरश्च सदाशिव:। एते पञ्चेव पञ्चेषु भूतानामावाहयेत् पुन:।।

ॐ नन्दायै नमः (१) ॐ भद्रायै नमः (२) ॐ जयायै नमः (३) ॐ रिक्तायै नमः (४) ॐ पूर्णायै नमः (५) इति नामिभः पूजयेत्। नंदायां पद्ममालिख्यं भद्रा सिंहासनं तथा। जयायां तोरणं क्षत्रं रिक्तायां कूर्ममेव च। पूर्णायां तु चतुर्बाहुं विष्णु संलेखयेत् बुधः।

तासां पञ्चानां सिन्नधावेते पञ्च कुम्भाः स्थाप्याः ॐ पद्माय नमः (१) ॐ महापद्माय नमः (२) ॐ शंखाय नमः (३) ॐ मकराय नमः (४) ॐ समुद्राय नमः (५) ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च ईश्वरश्च सदाशिवः। एते पञ्चैव पंचेषु भृतानावाहयेत् बुधः।। तत आचार्यः खातभूमिमुपलिप्य तत्र ध्यायेत् कूर्मपृष्ठोपरि स्थितां शुक्लवर्णां चतुर्भुजां पद्मशंखचक्रशूलधरां भूमिं ध्यात्वा ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरानिवेशनी यच्छा नः शर्म सप्रथा:। इति भूमिमावाहयेत्। ततः नाममन्त्रैः ॐ कूर्माय नमः इति कूर्मम् (१) ॐ अनन्ताय नमः इति अनन्तम् (२) ॐ वराहाय नमः इति वराहम् (३) इत्यावाह्य आसनाद्युपचारै: सम्पूज्य भूम्यै अर्घं दद्यात् - जानुभ्यां धरणीं स्पृष्टा तोयक्षीर-तिलतण्डुलयवसर्षपपुष्पाणि अर्घपात्रे प्रक्षिप्य - ॐ हिरण्यगर्भे वसुधे शेषस्योपिर शायिनी। उद्घृतासि वराहेण सशैलवनकानना।। प्रासादं (गृहं वा) कारयाम्यद्य त्वदुर्ध्वं शुभलक्षणम्।। गृहाणार्घ्यं मया दत्त प्रसन्ना शुभदा भव।। भूम्यै नमः इदमर्घ्यं समर्पयामि। ततः भूम्यै आम्र (वा पलाश) पत्रोपरि सदीपं घृतौदनबलिं दत्त्वा प्रार्थयेत् ॐ समुद्रमेखले देवि पर्वतस्तनमण्डले। विष्णु-पत्नि नमस्तुभ्यं शस्त्रपात क्षमस्व मे। इष्ट मेत्वं प्रयच्छेष्ट त्वामह शरणं गत:। पुत्रदारधनायुष्यधर्मवृद्धिकरी भव।। तत: खाते स्नेहं दत्वा तस्योपरि गौरसर्षपान् क्षिपेत्। तत्र मन्त्रः ॐ भूतप्रेतिपशाचाद्या अपक्रामन्त् राक्षसाः। स्थानादस्माद्व्रजन्त्वन्यत्स्वीकरोमि भुवं त्विमाम्।। तस्योपरि दध्योदनं भक्तमाषात्रबलिं च दत्त्वा तस्योपरि पर्णपात्राणि ७ संस्थाप्य तस्योपरि द्वादशांगुललोहशंकुं भूमौ प्राविशेत्। तत्र मन्त्रः ॐ विशन्तु भूतले नागाः लोकपालाश्च सर्वतः। अस्मिन् स्थानेऽवितष्ठन्तु आयुर्बलकरा: सदा। इति कीलकं निखन्य तस्योपरि मध्वाज्यपारदसुवर्णं (मुद्रा वा) पंचरत्नगर्भगन्धादिभूषितं सुपूजितं ताम्रादि निर्मितं पद्माख्यकुम्भं पिहितमुखं कुसुंभवस्त्रवेष्टितं नालिकेरयुतं मध्ये स्थापयेत्। एवं पूर्वादिचतुर्दिक्षु चत्वारः कुम्भाः स्थाप्याः। पूर्वादिषु क्रमेण महापद्म २, शंखं ३, मकरं ४, समुद्र ५, च सम्पूज्य तदुपरि कुंभसमां मृत्तिकां दत्त्वा अक्षतान् क्षिपेत्। ततः सुलग्ने मध्ये सुपूजितां पूर्णाख्यामिष्टकां स्थापयेत् तत्र मन्त्रः-ॐ पूर्णे त्वं सर्वदा भद्रे सर्वसन्दाहलक्षणे। सर्वं सम्पूर्णमेवात्र कुरुष्वाङ्गिरसः सुते।। ततः पूर्वस्या - ॐ नन्दे त्वं नन्दिनी पुंसां त्वामत्र स्थापयाम्यहम्। अस्मिन् रक्षा त्वया कार्या प्रासादे यत्नतो मम।। ततो दक्षिणस्यां - ॐ भद्रे त्वं सर्वदा भद्रं लोकानां कुरु काश्यिप। आयुर्दा कामदा देवि सुखदा च सदा भव।। तत: पश्चिमायां - ॐ जये त्वं सर्वदा देवि तिष्ठ त्वं स्थापिता मया। नित्यं जयाय भूत्यै च स्वामिनो भव भार्गवि।। तत उत्तरस्यां - रिक्ते त्वरिक्ते दोषघ्ने सिद्धवृद्धिप्रदे शुभे। सर्वदा सर्वदोषघ्ने तिष्ठास्मिन्मम

मन्दिरे।। इति मन्त्रेण स्थापियत्वा पूर्णीदनाममन्त्रैः गन्धादिना पूजयेत्। ततः पिरतो दिक्पालान् संपूज्य सदीपदिधमाषतण्डुलबिलं दद्यात्। ततः विश्वकर्मणे नमः इत्यायुधपूजां कृत्वा प्रार्थयेत् – ॐ अज्ञानाज्ज्ञानतो वापि दोषाः स्युश्च यदुद्भवाः। नाशयन्त्विहतान्सर्वान् विश्वकर्मन्नमोस्तु ते।। ततः खनित्रं संपूज्य प्रार्थयेत् ॐ त्वष्ट्रा त्वं निर्मितः पूर्वं लोकानां हितकाम्यया पूजितोऽसि खनित्र त्वं सिद्धिदो भव नो ध्रूवम्।। अथ वास्तोष्पतिमृत्युञ्जयादीनां जपार्थं प्रतिज्ञासंकल्पं कुर्यात् – अद्येत्याद्युक्त्वाअनविधवर्षाविच्छन्नबहुकालपर्यन्तं पुत्रकलत्रारोग्यधनादिसमृद्धि प्राप्तिकामो गृह निर्माणार्थं कर्त्तव्यशिलास्थापनाङ्गत्वेन वास्तुदेवतामृत्युञ्जयादि प्रसादलाभाय यथासंख्यापरिमितं ब्राह्मणद्वारा जपमहं कारियष्ये। ततो दक्षिणां वरणसंभारमादाय – ॐ अद्येत्यादि गृहनिर्माणार्थं कर्तव्यशिलास्थापनांगभूत ब्राह्मण द्वारा वास्तोष्पतिमृत्युंजयजपं कारियतुमेभिर्वरद्रव्यैरमुकामुकगोत्रान् अमुकामुकशर्मणः ब्राह्मणान् जापकत्वेन युष्मानहं वृणे। ततो मिष्ठान्नं गुडं वा वितरेत्।।।इति।।

।।अथ गण्डान्त नक्षत्र शान्तिः।।

अथप्रसवमूलनक्षत्रात् द्वितीयमूलनक्षत्रे सुस्नातः शुक्लाम्बरधरो बालकपत्नीसहितो यजमानः भद्रासनोपरि प्राङ्मुख उपविश्य आचम्य प्राणानायस्य आसनशुद्धि विधाय हस्ते अक्षतपुष्पाणि गृहीत्वा ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवेत्यादि स्वस्त्ययनमन्त्रान् ॐ सुमुखश्चैकदन्तश्चेत्यादि-मङ्गलमन्त्रान् पठेत्। ततः प्रतिज्ञासंकल्पं कुर्यात्। ॐ अद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्रोऽमुककशर्मा (वर्मा-गुप्तो वा) सपत्नीकोऽहं अस्य बालकस्य अस्याः कुमार्याः वा मूलनक्षत्र (ज्येष्ठा, आश्लेषा, मघा, रेवती, अश्विनी वा) तदधिकरणकामुक-पादजननारिष्टनिवारणपूर्वकं तदीयायुर्विवृद्धयुत्तरिपत्रादिसम्बन्धिशुभफलप्राप्त्यर्थे श्रीपरमेश्वरप्रीतये च गोमुखप्रसवपूर्वकं अमुकनक्षत्र शान्तिमहं करिष्ये तन्निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं तदङ्गत्वेन गणपत्यादिपूजनं च करिष्ये। ततः पूजाहोमप्रकरणोक्त-प्रकरणे श्रीगणपति सम्पूज्य नवग्रहादीनां च पूजनं विधाय नान्दीश्राद्धं तदभावे सुवर्णं दद्यात्। तत्र संकल्पः - ॐ अद्येत्यादि अमुकगोत्रस्यात्मजस्यामुकशर्मणः मूला (ज्येष्ठा, मघा रेवती वा) नक्षत्राधिकरणकजन्माङ्गभूतकर्तव्याभ्युदयिक-श्राद्धजन्यफलसम्प्राप्त्यर्थिमदं यथाशक्ति सुवर्णमग्निदैवतं यथानामगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे। ततो आचार्यः मण्डपाद्वहिः यजमानस्य गोमयोपलिप्तगृहे ईशानभागेश्वेतसर्षपाणि विकिरेत्। ॐ आपो हि ष्ठेत्यादि मन्त्रेण च विधाय तत्र तण्डुलिपष्टेन अष्टदलपद्म विरच्य तस्योपरि यथाशक्ति ब्रीहीन्निक्षिप्य तस्योपरि नवं वंशशूर्पं निधाय शूर्पे तिलान् दर्भाश्च विकीर्य

तस्योपिर रक्तवस्त्रं प्रसार्य तदुपिर प्राङ्मुखं पश्चिमपादं शिशुं निधाय त्रिगुणितेन माङ्गलिकसूत्रेण तं शिशुं सशूर्पं वेष्टियत्वा शिशुसमीपे गोमुखमानीय संश्लेषं कृत्वा गोमुखात् प्रसवं भावियत्वा कुशगृहीतेन शिशुं मार्जयेत्। तत्र मंत्रः ॐ विष्णुर्योनिं कल्पयतु त्वष्टा रूपाणि विशतु। आषिञ्चतु प्रजापितधीता गर्भं दधातु ते।। गवामङ्गेषु इति मन्त्रेण गवां सर्वाङ्गेषु वा स्पृशेत्।

तत्र मन्त्रः ॐ गवामङ्गेषु तिष्ठन्ति भुवनानि चतुर्दश। यस्मात् तस्माच्छिवं मे स्यादिहलोके परत्र च। ततोविष्णो श्रेष्ठेतिमन्त्रेण आचार्यः शिशुमादाय मातृहस्ते दद्यात्।

तत्र मन्त्र: - ॐ विष्णो श्रेष्ठेन रूपेणास्यां नार्यां गवीन्यां पुमांसं पुत्रमाधेहि दशमे मासि सूतवे। अथ माता गोमुखप्रदेशात् शिशुमानीय गोपुच्छदेशे बालं निरीक्षय स्वभर्तृहस्तयोर्दद्यात्। पिता ॐ अङ्गादङ्गात् सम्भवसि हृदयादिधजायसे। आत्मा वै पुत्रनामासि संजीव शरदः शतम्।। इति मन्त्रेण शिशुं मूर्ष्टिन त्रिरवघ्राय मात्रे दापयेत्।

तत आचार्यः आपोहिष्ठेतिमंत्रेण शिशुं पञ्चगव्येनाभिषिंचेत्। ततः पिता – गोमुखप्रसवाख्यकर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु। आचार्यः – ॐ पुण्याहं ॐ पुण्याहं इति ब्रूयात्। ततो गां वा गोनिष्क्रयीभूतं द्रव्यंसंकल्पपूर्वकं आचार्याय दत्त्वा यथाशिक्त नवग्रहप्रीत्यर्थं गो, स्वर्ण, वस्त्र, धान्यादीनि दापयेत्। तत्र संकल्पः ॐ अथ गोमुखप्रसवाख्यकर्मणः सांगता सिद्ध्यर्थं सूर्यादिनवग्रहाणां प्रीत्यर्थं चेमानि गो, वस्त्र सुवर्णधान्यानि सदिक्षणानि तिन्नष्क्रयीभूतानि द्रव्याणि वा यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमृत्सृजे। तत ऐशान्यां दिशि धान्योपि कलशस्थापनिष्ठिना वरुणकलशं संस्थाप्य तत्र चन्दनागुरुकुंकुमसर्वंगन्धं श्वेतसर्षपाणि च प्रक्षिपेत्। कलशोपि सुवर्णिनिमतां निर्ऋतिप्रतिमां अधिदेवता इन्द्र प्रत्यधिदेवता अप्सिहतां संस्थाप्य अग्न्युत्तारणपूर्वकं ॐ असुन्वन्त यजमानिमच्छस्तेन सेत्वामिन्विहतस्करस्य। अन्यमस्मादिच्छ–सातऽइत्यानमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु। इति मंत्रेण पूजयेत्। एवं आश्लेषायां सार्पं, मघायां पितृ, ज्येष्ठायां इन्द्र रेवत्यां पूषा, अश्वन्यां अश्वनी प्रतिमां तत्तन्मंत्रेण अधि प्रत्यधिदेवतासहितां स्थापयेत् आवाह्य पूजयेत्।

तत्र आश्लेषामंत्रः ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। येऽन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।। मघामन्त्रः ॐ उशन्तस्त्वा निधीमह्युशन्तः समिघीमहि। उशन्तुशतऽआवह पितृन् हिवषेऽअत्तवे।।

ज्येष्ठामन्त्रः - ॐ सयोषाइन्द्र सगणो मरुद्धिः सोम पिब वृत्रहा शूर विद्वान्। जिह शत्रुरपमृधो नृदस्वाथाभय कृणुहि विश्वतो नः।।

रेवतीमन्त्रः - ॐ पूषन्तव व्रते वयं न रिष्येम कदाचन। स्तोत्तारस्त इह स्मसि।। अश्विनीमन्त्रः ॐ यावाङ्क्रशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती। तया यज्ञं मिमिक्षितम्।। अग्न्युत्तारणं प्राणप्रतिष्ठां च पूजाप्रकरणोक्तप्रकारेण कुर्यात्।। तत्परितः पूगीफलेष्वक्षत पुञ्जेषु वा नक्षत्रदेवताः अश्विन्याद्यावाहयेत्। ॐ अश्विभ्यां नमः अश्विनमावाहयामि स्थापयामि।।१।। ॐ यमायः यमः २।। ॐ अग्नयेः अग्निः ३।। ॐ प्रजापतयेः प्रजापतिंः ४।। ॐ सोमायः सोमंः ५।। ॐ रुद्राय नम: रुद्रं ६।। ॐ अदितयेः ७ अदितिं। ॐ बृहस्पतयेः बृहस्पतिं. ८।। ॐ सर्पभ्योः सर्पान् ९।। ॐ पितृभ्योः पितृन् १०।। ॐ भगायः भगंः ११।। ॐ अर्यम्णे. अर्यमाणम् १२।। ॐ सिवत्रे. सिवतारं. १३।। ॐ त्वष्टे. त्वष्टारम् १४।। ॐ वायवे . वायु. १५।। ॐ इन्द्राग्नीभ्या. इन्द्राग्नी. १६।। ॐ मित्राय. मित्रं. १७।। ॐ इन्द्रायः इन्द्रंः १८।। ॐ निर्ऋतयेः निर्ऋतिं १९।। ॐ अद्भयोः अप: २०।। ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्योः विश्वान् देवान् २१।। ॐ ब्रह्मणेः ब्रह्माणम् २२।। ॐ विष्णवे विष्णु २३।। ॐ वसुभ्योः वसून् २४।। ॐ वरुणायः वरुणम्ः २५।। ॐ अजैकपदेः अजैकपादं २६।। ॐ अहिर्बुध्न्यायः अहिर्बुध्न्यम् २७।। ॐ पूष्णेः पूषाणम् २८।। इत्यावाह्य ॐ मनोजूतिः इति मन्त्रेण ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ निर्ऋत्याद्यावाहितदेवताभ्यो नमः आवाहितदेवता इह सुप्रतिष्ठिता वरदा भवत इति गन्धादिना संपूज्य ॐ अनया पूजया निर्ऋत्यावाहितदेवताः प्रीयन्ताम्। इति जलं क्षिपेत्। ततो वरुणकलशसमीपं तण्डुलगोधूमचूर्णीदनां श्वेतपङ्कुजं विरच्य तत्रोपरि सप्तधान्यराशिं कृत्वा तत्र मध्ये शतछिद्रं कलशं निधाय तश्चतुदिक्षु पूर्वादिक्रमेण चतुष्कुंभान् कलशस्थापनविधिना स्थापयेत्। तत्र प्राक्कुंभे रक्तचंदन, कमल, कुष्ट, प्रियंगु, शुंठी, मुस्ता, आमलक, वच, श्वेतसर्षप, मुरामांसी, अगर उशीरादीनि यथालब्धवस्तूनि निक्षिपेत्। ततः ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव इत्यादि रुद्राध्यायं पठित्वा कलशस्य स्पर्शं कुर्यात्। पुष्पाणिच क्षिपेत दक्षिणकुंभे पंचामृतं, गजमदं, तीर्थोदकं, सप्तधान्यसुवर्णानि च निक्षिपेत्। ॐ आशु: शिशान इति द्वादश मन्त्रान् पठेत्। पश्चिमकुंभे सप्तमृत्तिका क्षिपेत्। ॐ कृणुष्वाजः पंचमन्त्रान् पठेत् उत्तरकुंभे पंचरत्न, वट, अश्वत्थ, पलाश, प्लक्ष, उदुम्बर, पल्लवान्। जम्बू, प्लक्ष, उदुम्बर, वट, आम्रमूलत्वचः सप्तकूपजलानि च निक्षिपेत्। रक्षोहणं चतुर्मंत्रान् जपेत्। मध्यगते शतछिद्रकुंभे शतौषधय: तदभावे यथालाभं सद्वक्षाणां पल्लवान्। विष्णुक्रान्ता, सहदेवी, तुलसी, शतावरी, कुश, कुंकुमानि निक्षिपेत्। ॐ त्र्यम्बकमिति अष्टोत्तरशतं जपेत्। जपान्ते कलशम्य स्पर्शं कुर्यात्। साक्षतगन्धपुष्पाणि च क्षिपेत्। तत्र पूर्णपात्रोपरि वरुणमावाह्य पूजनं कुर्यात्। पूजनान्ते अग्निस्थापनप्रदेशात् पश्चिमप्रदेशे केनचिदुपायेन ऊर्ध्वं शिक्यं बद्धवा तत्रैव

वंशपात्रे कम्बलखण्डं प्रसार्यं तस्योपिर शतिछद्रं कलशं निधाय तस्याधः सुकाष्ठपीठं निधाय श्वेतवस्त्रेणाच्छाद्य तत्र यजमानं शिशुसिहतां पत्नीं चापवेशयेत्। ततः शिक्यस्थे कलशे शनैः चतुः कुंभस्थजल प्रक्षिप्य आचार्यः अभिषेकमन्त्रेण सपत्नीकयजमान-बालकस्योपिर जलधारां कुर्यात्।

तत्र मन्त्रः - ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्।। सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यंत्रिये दधामि बृहस्पतेष्ट्वा साम्राज्ये नाभिषिञ्चाम्यसौ।। 🕉 देवस्य त्वाः।। अश्विनो भैषज्येन तेजसे ब्रह्मवर्चसायाभिषिंचामिसरस्वत्यै भैषज्येन वीर्यायात्राद्यायाभिषिंचामीन्द्रस्येन्द्रियेण बलाय श्रियै यशसेऽभिषिंचामि। ॐ योऽसौ वज्रधरो देवो महेन्द्रो गजवाहन:। मूला (मघा, ज्येष्ठाऽऽश्लेषा) जातस्य शिशोर्दोषं मातापित्रो: व्यपोहत्।।१।। ॐ योऽसौ शक्तिधरो देवो हुतभुङ्मेषवाहनः। सप्तजिह्वश्च देवोऽग्निर्मूला (ज्येष्ठा, मघा, सार्प, गण्ड) दोषं व्यपोहतु।।२।। योऽसौ दण्डधरो देवो धर्मो महिषवाहन:। मुला (ज्येष्ठा, मघा, सार्प, गण्ड) जातशिशोर्दीषं व्यपोहत् यमो मम।।३।। ॐ योऽसौ खङ्गधरो देवो निर्ऋतिर्राक्षसाधिप:। प्रशामयतु मूलोत्थं (ज्येष्ठोत्थं मघोत्थं, सार्पोत्थं, गण्डोत्थं) दोषं गण्डान्तसम्भवम्।।४।। ॐ योऽसौ पाशधरो देवो वरुणश्च जलेश्वर:। नक्रवाह: प्रचेता वै मूला (ज्येष्ठा, मघा, सार्प, गण्ड) दोषं व्यपोहत्।।५।। ॐ योऽसौ देवो जगत्प्राणो मारुतो मृगवाहन:। प्रशामयतु मूलोत्थं, (ज्येष्ठोत्थं, मघोत्थं, सार्पीत्थं, गण्डोत्थं) दोषं बालस्य शान्तिद:।।६।। ॐ योऽसौ निधिपतिर्देव: भृङ्गभृद् वाजिवाहन:। मातापित्रो: शिशोश्चैव मूला (ज्येष्ठा, मघा, सार्प, गण्ड) दोषं व्यपोहत्।।७।। ॐ योऽसौपशुपतिर्देव: पिनाकी वृषवाहन:। आश्लेषा (मघा, ज्येष्ठा, मूलागण्ड) संभवान् दोषान्ममाशु व्यपोहतु।।८।। ॐ विघ्नेशः क्षेत्रपो दुर्गा लोकपाला नवग्रहाः। सर्वदोषप्रशमनं सर्वे कुर्वन्तु शान्तिदा:।।९।। ॐ मूलर्क्षे (ज्येष्ठाऽश्लेषा, मघा, गण्ड) जातबालस्य मातृपित्रोर्धनस्य च। भ्रातृज्ञातिकुलस्थानां दोषं सर्वं व्यपोहतु।।१०।। ॐ पितर: सर्वभूतानां रक्षन्तु पितरः सदा। मूला (ज्येष्ठा, मघा, सार्प, गण्ड, नक्षत्रजातस्य वित्तंच ज्ञातिबान्धवान्।।१।। एवं ज्येष्ठा, आश्लेषादि शान्तौ सर्वत्र श्लोकेषु ऊहः कार्य इति विशेषः।

ततो यजमानः सपुत्रसकलत्रः शुद्धोदकेन स्नात्वा वस्त्रान्तराणि परिधाय आर्द्रवासांसि नापिताय दत्त्वा आचामेत्। तत उपविश्य यजमान एवं ॐ शिरोमेश्रीर्यश इति यथालिङ्गं स्वाङ्गानि संस्पृशेत्। तद्यथा ॐ शिरो मे श्रीरस्तु इति शिर आलभेत्। इति सर्वत्र ज्ञेयम्। ॐ यशो मे मुखमस्तु। इति मुखम्। ॐ त्विषमें केशाः सन्तु। इति मस्तकस्थान् केशान्। ॐ त्विषमें श्मश्रूणि सन्तु। इति कूर्चमुखजरोमाणि। ॐ राजा मे प्राणा अमृतमस्तु इति नासिकायां प्राणान्। ॐ सम्राण्मे चक्षुरस्तु इति युगपञ्चक्षुषी। ॐ विराट् मे श्रोत्रमस्तु। इतिश्रोत्रम्। ॐ जिह्वा मे भद्रमस्तु। इति जिह्वा । ॐ वाङ्मे महोऽस्तु। इति जिह्वामेव। ॐ मनो मे मन्युरस्तु। इति हृदयम्। (उदकोपस्पर्शः) ॐ स्वराण्मे भामोऽस्तु। इतिभ्रुवोर्मध्यम्। ॐ मोदाः प्रमोदाः मेऽङ्गुल्यः सन्तु। इति हस्ताङ्गुलीः पादाङ्गुलीश्च। ॐ मोदाः प्रमोदाः मेऽङ्गानि सन्तु। इति सर्वाङ्गानि। ॐ मित्रं मे सहोऽस्तु। इति स्वशरीरगतं बलम्। ॐ बाहू मे बलिमिन्द्रयंस्तां। इति बाहू। ॐ आत्मा मे क्षत्रमस्तु। इति हृदयम्। (उदकोपस्पर्शनम्) ॐ उरो मे क्षत्रमस्तु। इति हृदयम्। ॐ उदरे मे राष्ट्रमस्तु इति उदरम्। ॐ अंसौ मे राष्ट्रस्तां इत्यंसौ। ॐ ग्रीवाश्चमे राष्ट्रं संतु। इति ग्रीवा। ॐ श्रोणी मे राष्ट्रं सतां। इति कटिद्वयम्। ॐ ऊरू मे राष्ट्रं सतां। इत्यूक्त। ॐ अरत्नी मे राष्ट्रं सतां इत्यरत्नी। ॐ जानुनी मे राष्ट्रं सतां इति जानुनी। ॐ विशो मेऽङ्गानि सर्वत्र सन्तु। इति सर्वाङ्गानि। ॐ नाभिमें वित्तमस्तु। इति नाभिम्। ॐ नाभिमें वित्तमस्तु। इति नाभिम्व। ॐ नाभिमें वित्तमस्तु। इति नाभिम्व। ॐ भसन्मेऽपचितिरस्तु। इति पायुमेव। ॐ आनन्दनन्दावाण्डौ मे स्तां। इत्यण्डौ। ॐ भगो म यशोऽस्तु। इति लङ्गम् ॐ सौभाग्यं मे यशोऽस्तु। इति लिङ्गम्व। ॐ जङ्घाभ्यां धर्मोऽस्ति। इति जंघे। ॐ पद्भयां धर्मोऽस्ति। इति पादौ। ॐ विशि राजा प्रतिसर्वदेहम्।

तत आचार्यः कुशकण्डिकां कृत्वा ॐ प्रजापतये स्वाहेत्यारभ्य ॐ विश्ववम्मन हिवषाः इत्यन्तं होमप्रकरणोक्तप्रकारेण होमं कुर्यात्।

अथ प्रधानहोम: अष्टोत्तरसहस्रमष्टोत्तरशतमष्टाविंशतिमष्टौ वा जुहुयात्।

अथ मूलनक्षत्रहोम: - ओं असुन्वन्त मे यजमानिमच्छ स्तेनस्येत्यामिन्विहितस्करस्य। अन्यमस्मिदच्छ सातऽइत्यानमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु स्वाहा। ततोऽधिदेवता इन्द्रमन्त्रः ॐ सयोषाऽइन्द्र सगणो मरुद्धिः सोमं पिब वृत्रहा शूर विद्वान्। जिह शत्रूरपमृधो नुदस्वा धा वयंकृणुहि विश्वतो नः स्वाहा।

अथ प्रत्यधिदेवता अप्मंत्र: ॐ आपोहि ष्ठा मयोभुवस्तान ऊर्जे दधातन महे रणाय चक्षसे स्वाहा।

अथ आश्लेषामन्त्र: ॐ नमोऽस्तुसर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्य: सर्पेभ्यो नम: स्वाहा।

ततोऽधिदेवतागुरुमन्त्रः - ॐ बृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद्यमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यहीदयच्छवस ऋत प्रजा तदस्मास् द्रविणं धेहि चित्रं स्वाहा।

अथ तत्प्रत्यधिदेवता पितृमन्त्रः – ॐ उशन्तस्त्वा निधीम ह्यु शन्तः सिमधीमहि। उशत्रुशत आवह पितृन् हिवषे अत्तवे स्वाहा।

अथ मघानक्षत्र मन्त्र होमः

पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः अक्षन् पितरो मीमदंत पितरोतीतृपन्तः पितरः पितरः शुन्धध्वं स्वाहा।

तदिधदेवता सर्प मन्त्र: - नमोऽस्तु सर्पेपिः स्वाः

तत्प्रत्यधिदेवतामन्त्रः - ॐ भगं प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमान्धियमुदवाददन्न:। भगं प्र नो

जनय गोभिरश्वैर्भग प्रनृभिर्नृवन्तः स्याम स्वाहा।

अथ ज्येष्ठानक्षत्र मन्त्र होमः

ॐ इन्द्र आसां नेता बृहस्पतिर्दक्षिणायज्ञः पुर एतु सोमः। देवसेनानामभिभञ्जतीनां-ञ्जयन्तीनाम्मरुतो यन्त्वग्रं स्वाहा।

तदिधदेवतामन्त्रः - ॐ मित्रस्य च ऋषणीधृतो वो देवस्य सानिस। द्युम्नं चित्रश्रवस्तमं स्वाहा। तत्प्रत्यिधदेवतामन्त्रः - ॐ असुन्वन्तम。स्वाहा।

अथ रेवतीमन्त्रहोमः

ॐ पूषन्तव ळ्रते वयन्न रिष्येम कदाचन स्तोतारस्त इह स्मिस स्वाहा। अधिदेवतामन्त्रः – ॐ शिवो नामासि स्विधितस्ते पिता नमस्तेऽस्तु मा मा हि र्ठः सी:। निवर्तयाम्यायुषेन्नाद्याय प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय स्वाहा। ततः प्रत्यिधदेवतामन्त्रः ॐ यावाङ्कशाः इत्यादि।

अथाश्विनीनक्षत्रमन्त्रहोमः

ॐ अश्विना तेजसा चक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्यम्। वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रयं स्वाहा। तदिधदेवता मन्त्रः – ॐ पूषन्तव व्वते व्वयं न्न रिष्येम कदाचन। स्तोतारस्त इह स्मिस स्वाहा। अथ प्रत्यिधदेवतामन्त्रः – ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा धर्माय स्वाहा धर्मिपत्रे स्वाहा। इति प्रधानादिदेवताहोमः।

ततो नक्षत्रदेवताभ्यश्च नाममन्त्रैः प्रत्येकं अष्टसंख्ययास्त्रवेणाज्याहुतीर्हुत्वा स्विष्टकृद्धोमं कुर्यात्। ततो भूरादि प्राजापत्यान्ता नवाहुतीर्जुहुयात्। ततो दिक्पालपुरःसरं बिलदानादिकं सर्वं विधाय प्रधानकुंभस्थं जलमानीय ब्राह्मणाः पत्नीबालकसिहतयजमानस्योपिर पूजाप्रकरणोक्तप्रकारेणाभिषिंचेयुः। ततो विधिपूर्वकं मंगलस्नानोत्तरं दिक्षणादानादिसंकल्पं कुर्यात्। ततः कांस्यपात्रस्थघृते बालस्य मुखावलोकनं कार्यं नूतनवस्त्राच्छादितं मातुरंकस्थं कृत्वा शंखध्वनिपूर्वकं पिता बालस्य घृतपुरितछायापात्रे मुखमीक्षयित्वा स्वयं पत्नीं च

सम्यक् मुखमवलोक्य संकल्पपूर्वकं विप्राय दद्यात्। तत आवाहितदेवतानामुत्तरपूजादिकं सूर्यार्घ्यदानान्तं कृत्वा सप्तविंशतिर्दश वा ब्राह्मणान् भोजयेत्। आश्लेषादिगण्डान्तयोः प्रसवेऽपि इदमेवानुष्ठेयम्। तत्र प्रयोगवरुणाभिषेकादौ मूलापदस्थाने तत्तत् पदमूहनीयम्।।

इति मूलादिगण्डान्तशान्तिः।।

अथ वैधृति शान्ति प्रयोगः

संकल्प: - देशकालौ संक्वीर्त्यः - नामगोत्रोच्चार्य: -अस्य शिशो: वैधृति जनन सूचितं सर्वारिष्टं दोषादि विनाशार्थम् दुःख दौर्भाग्यनिवृतिपूर्वकं उत्तरोतर भाग्योदयार्थम् श्री प्रमेश्वर प्रीत्यर्थम् वैधृति योग शान्ति करिष्ये। इति संकल्प्य। तदङ्गत्वेन - आदौ गणपत्यादि देवानां यथा लब्धोपचारै अर्चियष्ये। प्रधान देवता - रुद्र, अधिदेवता - सूर्य, प्रत्यधिदेवता - चन्द्रमा, अष्टदलोपरि त्रिन् कलशं संस्थाप्य। स्वर्णमृतिं अग्न्युतारणंकृत्वा स्थापयेत्।

- १. आवाहनम् ॐ त्र्यम्बकं य्याजामहे (मध्य) ध्यानम् ॐ नमस्ते रुद्रः ॐ भूर्भवः स्वः रुद्र इहागच्छ इहितष्ठ वरदो भव।
- २. आवाहनम् ॐ आकृष्णेनः (दक्षिणे) ध्यानम् ॐ चित्रं देवानाः -ॐ भूर्भुवः स्वः सूर्य इहागच्छ इह तिष्ठ वरदो भव।
- ३. आवाहनम् ॐ इमन्देवाः (वामे) ध्यानम् ॐ चन्द्रमामनसोः -ॐ भूर्भवः स्वः चन्द्र इहागच्छ इह तिष्ठ वरदो भव।

"प्रतिष्ठापनम् कृत्वा" रुद्राद्यावाहित देवताभ्योनमः।। षोडशोपचारैः संपूजयेत्। रुद्रसूक्तं, अप्रतिरथ सूक्तं पुरुष सूक्तं, महामृत्युञ्जय मन्त्रांश्च विप्रा जपेयुः। अग्नि स्थापनम् ग्रहस्थापनं कृत्वा। सिमधा, आज्य, पायस, बिल्व फलादि से हवन करे। प्रधान देवता १००० वा १०८ सूर्य सोमयो १०८, २८ आहूति देवे। (यथाशक्तया हवनं)

(अन्य विधान हवन प्रकरण अनुसार करे।)

।।इति वैधृति योग शान्ति:।।

।।अथ व्यतीपात योग शान्ति:।।

अथ संकल्पः - देशकालौ संक्वीर्त्य - नाम गोत्रोच्चार्य - अस्य शिशोः व्यतीपात जनन सूचित सर्वारिष्ट शान्ति द्वारा आयुरारोग्य प्राप्त्र्थम् व्यतीपात जनन शान्ति करिष्ये।

।।गणपत्यादि देवानां पूजियष्ये।।

वैधृति शान्ति अनुसारेण अष्ट दलं च कृत्वा कलशं संस्थाप्य। प्रधान देवता - सूर्य (मध्य), अधिदेवता - अग्नि (दक्षिणे), प्रत्यधिदेवता - रुद्र (वामे)।

- १. ॐ आकृष्णेनः सूर्याय नम: सूर्यमावाहयामि स्थाः
- २. ॐ अग्निदूतं अग्नये नम: अग्निमावाहयामि स्थाः
- ३. ॐ नमः शम्भवायः रुद्राय नमः रुद्रमाः -यथालब्धोपचारै संपूज्य कलशं स्पर्शः -
- १. विभ्राडः २. अग्निसूक्तं ३. त्र्यम्बकं मंत्र जपेयु:। वा रुद्राष्ट्राध्यायी का पाठ करे। (शेष वैधृत शान्तिवत्) कर्म करे। (संक्रांति शान्ति कर्म भी व्यतिपात वत् करे केवल संकल्प में भेद करे।)

।।अथ त्रिखल शान्ति प्रयोग:।।

तीन पुत्र के बाद कन्या का जन्म हो या तीन कन्या जन्म के बाद पुत्र का जन्म होने पर त्रिखल शान्ति करावे।

सूतकान्ते शुभेऽह्नि यजमानः सपत्नीकःससुतः शुद्धासने प्राङ्मुख उपविश्याचम्य प्राणानायम्य आसनशुद्धिं विधाय स्वस्त्ययनं वाचियत्वा सकल्पं कुर्यात्। तद्यथा - ॐ अद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्राऽमुकशर्मा श्रुत्याद्युक्तफलावाप्तिका-मोऽवगतानवगतसकलद्रितध्वंसपूर्वकत्रिखलसूतजन्म (कन्या जन्मत्रयानन्तरं) अथवा (सुतत्रयजन्मानन्तरकन्याजननं) सूतिकैतत्कुमारै रेतत्सम्बन्धि पित्राद्यरिष्टोपशमनपूर्वक-श्रीमद्ब्रह्मादिदेवप्रसाद हेतुकैतद्वालकपित्रादिसकलजनाधिकरणकातिशयानन्दावाप्त्यर्थ श्री ब्रह्मादिपूजनरूपां त्रिखलशान्तिमहं करिष्ये। तदङ्गत्वेन निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं श्रीमद्गणपत्यादिपूजनं च करिष्ये। ततः पूजाप्रकरणोक्तविधिना श्रीगणपतिनवग्रहादीनां च पूजनं कृत्वा नांदीश्राद्धं तदभावे सुवर्णं वा दद्यात्। तत्र संकल्पः ॐ अद्येः अमुक गोत्रस्यात्मजस्यामुकशर्मणः त्रिखलजन्मशान्त्यङ्गं भूतकर्तव्याभ्युदयिकश्राद्धजन्यफल-सम्प्राप्त्यर्थंममुंयथाशक्ति सुवर्णमग्निदैवतं यथानामः। तत ऐशान्यां दिशि धान्योपरि कलशस्थापनविधिना वरुणं कलशं संस्थाप्य तत्र चन्दनागुरुकुंकुमादि गंधपुष्पाणि च प्रक्षिपेत्। ततो वरुणकलशसमीपे गोधूमचूर्णेन कमलाकारं विरच्य तदुपरि कुंकुमाचिततण्डुल-राशिं कृत्वा तत्र मध्ये व्रणछिद्ररहितं श्रीरुद्रकलशं पूर्विदिशि श्रीब्रह्मकलशं, दक्षिणदिशि विष्णुकलशं, पश्चिमदिशि इन्द्रकलशं उत्तरदिशि-ईशकलशम् निधाय कलशस्थापनाविधिना स्थापयेत्।

ततः पूर्वदिशि कलशोपरि ताम्रपात्रस्थस्वर्णमयमूर्तौ श्रीब्रह्माणं पूजयेत्। तत्र संकल्पः -ॐ अद्येत्यादि पूर्वप्रतिज्ञातार्थसिद्ध्यर्थं क्रियमाणित्रखलान्त्यङ्गत्वेन पूर्वस्यां दिशि रक्तवस्त्रद्वयावेष्टितकलशोपरि ताम्रपात्रस्थस्वर्णमयमूर्तौ ब्रह्मपूजनमहं करिष्ये। अक्षतानादाय ध्यानम्। ॐ पद्मपत्रासनस्थश्च ब्रह्मकायश्चतुर्मुखः। अक्षमालाश्रुवं बिभ्रत् पुस्तकं च कमण्डलुम्।। आवाहनम् - पद्मयोने चतुर्मृतें वेदव्यास पितामह। आयाहि ब्रह्मलोकात्त्वं तस्मै ब्रह्मात्मने नमः। ततः ब्रह्मयज्ञानमिति मन्त्रेण पाद्यादिभिः सम्पूज्य प्रार्थयेत् -ॐ कृष्णाजिनाम्बरधर पद्मासन चतुर्मुख। जटाधर जगद्धात: प्रसीद कमलोद्भव।। ततो वरणसंभृतमादाय ॐ अद्येत्यादि पूर्वप्रतिज्ञातार्थसिद्ध्यर्थं क्रियमाणत्रीतरशान्त्यङ्गत्वेन शुभफलप्राप्त्यर्थं ब्रह्मयज्ञानमितिमन्त्रस्य ब्राह्मणद्वारा युग्मसहस्रजप कारयितुमेभिर्वरण-द्रव्येरमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मण त्वामहं वृणे। वृतोऽस्मीति प्रतिवचनम्। ततो दक्षिणदिशि कलशोपरि श्रीविष्णुपूजनम्। तत्र संकल्पः - ॐ अद्येत्यादि क्रियमाणत्रीतरशान्त्यङ्गत्वेन दक्षिणदिशि पीतवस्त्रावेष्टितैतत्कलशोपरि ताम्रपात्रस्थस्वर्णमयमूर्तौ विष्णुपूजनमहं करिष्ये। अक्षतानादाय ध्यानम् - ॐ सशंखचक्रं सिकरीटकुण्डलं सपीतवस्त्रं सरसीरुहेक्षणम्। सहारवक्षस्थलकौस्तुभिश्रयं नमामि विष्णुं शिरसा चतुर्भुजम्।। आवाहनम् - ॐ एह्येहि नीलाम्बुजपादपद्म श्रीवत्सवक्षः कमलाविधेय। सर्वामरैः पूजितपादपद्म गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते। ततः ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समृढमस्यपा र्ठः सुरे।। इति मन्त्रेण पाद्यादिभिः सम्पूज्य प्रार्थयेत् – ॐ योऽसावनन्तरूपेण ब्रह्माण्डं सचराचरम्। पुष्पवद्धरते नित्यं तस्मैनित्यं नमो नमः।। ततो वरणसंभृतमादाय - ॐ अद्येत्यादि कृतैतत् त्रीतर शान्त्यङ्गत्वेन ॐ विष्णोरराटमसि इत्यनेन मन्त्रेण ब्राह्मण द्वारा युग्मसहस्र जपं कारयितुमेभिर्वरणद्रव्यैरमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं जापकत्वेन त्वामहं वृणे। वृतोऽस्मीति प्रतिवचनम्। ततः पश्चिमदिशि कलशोपरि इन्द्रं पुजयेत्। तत्र संकल्पः - अद्येत्यादि क्रियमाणत्रीतरशान्त्यंगत्वेन पश्चिमदिशि चित्रविचित्रवस्त्रावेष्टितै तत्कलशोपरि ताम्रपात्रस्थ-स्वर्णमयमूर्तौ श्रीइन्द्रपूजनमहं करिष्ये। अक्षतानादाय ध्यानम् - चतुर्दन्तो गजारूढो वज्रपाणिः पुरन्दरः। शचीपतिस्तु ध्यातव्यो नानारत्नविभूषितः। आवाहनम् - एह्येहि सर्वामरसिद्धसाध्यैर-भिष्टतो वज्रधरामरेश। संवीज्यमानोऽप्सरसां गणेन रक्षाध्वरत्रो भगवन्नमस्ते। ततः 🕉 त्रातारिमन्द्रमिवतारिमन्द्र र्ठः हवे हवे सुहव र्ठः शूरिमन्द्रं ह्वयामि शक्रं पुरुहुत मिन्द्रं र्ठः स्विस्तिनो मघवा धात्विन्द्रः।। इति सम्पूज्य प्रार्थयेत् – ॐ भगवन्तो गजारूढ़ा वज्रहस्ताः सुराधिपा:। पूर्वावकाशा युष्पाभि: रक्षणीया प्रयत्नत:।। ततो वरणसंभृतमादाय ॐ अद्येत्यादि पूर्वप्रतिज्ञातार्थसिद्धौ क्रियमाणत्रीतरशान्त्यंगत्वेन ॐ त्रातारिमन्द्रमितिमन्त्रस्य ब्राह्मणद्वारा युग्मसहस्रं जपं कारियतुमेभिर्वरणद्रव्यैरमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं जापकत्वेन त्वामहं

वृणे। वृतोऽस्मीतिप्रतिवचनम् तत उत्तरदिशि ईशं कलशोपरि पूजयेत्। तत्र संकल्प:-ॐ अद्येत्यादिः पूर्वप्रतिज्ञातार्थसिद्ध्यर्थं क्रियमाणत्रीतरशान्त्यंगत्वेन उत्तरदिशि शुभ्रवस्त्रावेष्टितैतत्कलशोपरि ताम्रपात्रस्थस्वर्णमयमूर्तौ ईशपूजनमहं करिष्ये। अक्षतानादाय ध्यानम् - शुद्धस्फटिकसंकाशं गौरीशं वृषवाहनम्। वरदाभयशूलाक्षसूत्रधृक्परमेश्वरम्।। आवाहनम् - ॐ एह्योहि विश्वेश्वर निस्त्रशूलनिस्त्रिंशखट्वांगधरेणसार्धम्। लोकेश यज्ञेश्वर यज्ञसिद्ध्यै गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते। ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हुमहे वयं। पूषा नो यथावेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।। इत्यनेन सम्पूज्य पुनः प्रार्थयेत्। रक्षां मे कुरु देवेश त्रिनेत्राय त्रिशूलिने। वृषध्वजाय यज्ञाय नक्षत्रपतये नमः। ततो वरणसम्भृतमादाय ॐ अद्येत्यादिः क्रियमाणत्रीतर-शान्त्यङ्गत्वेन ॐ तमीशानमिति-मन्त्रस्य ब्राह्मणद्वारा युग्मसहस्रजपं कारियतुमेभिर्वरण-द्रव्यैरमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मण जापकत्वेन त्वामहं वृणे ॐ वृतोऽस्मीतिप्रतिवचनम्। ततो मध्यकलशोपरि रुद्रं पूजयेत्। तत्र संकल्प: ॐ अद्येत्यादि。 क्रियमाणत्रीतर-शान्त्यङ्गत्वेन मध्यकलशोपरि ताम्रपात्र-स्थस्वर्णमयमूर्त्तौ श्रीरुद्रपूजनमहं करिष्ये। अक्षतानादाय ध्यानम् - ॐ दक्षोत्सङ्गनिषण्ण-कुञ्जरमुखं प्रेम्णा करेण स्पृशन् वामोरुस्थितवल्लभांकनिलयं स्कन्दं परेणामृशन्। इष्टाभीतिमनोहरं करयुगं बिभ्रत्प्रसन्नाननो भूयान्नः शरदिन्दुसुन्दरतनुः श्रेयस्करः शङ्करः।। तत आवाहनम् - एह्योहि शम्भो करशूलपाणे गंगाधर श्रीधन नीलकण्ठे, उमापते भस्म-विभूषितांग महेश्वर त्वं भगवन्नमस्ते ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतोत इषवे नम:। बाहुभ्यामुतते नमः। इति मंत्रेण संपूज्य प्रार्थयेत। ॐ शिवाकान्त शंभो शशाङ्गार्धमौले महेशान शूलिन् जटाजूटधारिन्। त्वमेको जगद्व्यापको विश्वरूप प्रसीद प्रसीद प्रभो पूर्णरूप।। ततो वरणसंभृतमादाय ॐ अद्येत्यादि。 पूर्वप्रतिज्ञातार्थसिद्ध्यर्थं क्रियमाणत्रीतरशान्त्यङ्गत्वेन ॐ नमस्ते रुद्रमन्यव इति मंत्रस्य ब्राह्मण द्वारा युग्मसहस्रजप कारयितुमेभिर्वरण-द्रव्यैरमुकशर्माणं ब्राह्मणं त्वामहं वृणे। ॐ वृतोऽस्मीति प्रतिवचनम्। तत आचार्यः कुशकण्डिकां कृत्वा ॐ प्रजापतये स्वाहेत्यारभ्य ॐ विश्वकर्मन् हविषा。 इत्यन्तं होमप्रकरणोक्तविधिना होमं कुर्यात्। ततो ब्रह्माणं, विष्णुं, इन्द्रेशं रुद्रञ्च प्रत्येकं चरुतिलैः अष्टोत्तरशतसंख्याहृतिं तथा जपदशांशेन च होमं कृत्वा स्विष्टकृद्धोमं कुर्यात्। ततो भूरादिप्राजापत्यान्तान्नवाहुतीर्जुहुयात् ततो दिकुपालपुरःसरं बलिदानादिकं सर्व विधाय कलशानां जलमादाय विप्राः भद्रासने उपविष्टं यजमानं ससुतं सपत्नीकं पुजाप्रकरणोक्तप्रकारेण कुशत्रयेणाभिषिंचेयु:। तत्राभिषेकान्ते प्रार्थना ॐ विघ्नेश: क्षेत्रपो दुर्गा पिनाकी वृषवाहन:। त्रिखलजातशिशोर्दीष व्यपोहत् यमस्तथा।। ॐ योऽसौ शक्तिधरो देवो हुतभुङ्मेषवाहन:। सप्तजिह्नः स देवोऽग्निस्त्रिखलदोषं व्यपोहतु। अभिषेकनिवृत्तौ यजमानस्तीर्थोदकेन

स्नात्वा मृद्भाण्डं पादेन स्फोटयेत्। वस्त्रान्तराणि परिधाय आर्द्रवासांसि नापिताय दत्त्वाचामेत्। ततः शान्तिपाठपूर्वकमधोद्वारेण बालकनिष्कासनं, स्वर्णनिर्मिताभावे यज्ञीयकाष्ठनिर्मितगजपृष्ठोपिर बालकस्य स्नानं च कारियत्वा छत्रं शिरिस धारयेत्। तत्र मंत्रः ॐ आतपत्र पिवत्राणां नृपाणां कीर्तिवर्धन। पाहि मां सुदृढ्च्छत्र सागरा–मृतसंभव।। ततः शिशु त्रिवारं चुम्बयेत्। अन्नादिदानं कुर्यात्। घृतपूरितकांस्यपात्रेण छायापात्रदानं।

अथान्नत्रयदानम् – ॐ अद्यकृतै तत् त्रीतरशान्त्यङ्गत्वेन श्रीब्रह्मविष्णुइन्द्रेशरुद्रप्रीयते इदं कुडवादिपरिमितं गोधूमाद्यन्नत्रयं विश्वेदेवदेवताकं यथानामः।

अथ वस्त्रत्रयदानम्। ॐ अद्यकृतैतत् त्रीतरशान्त्यङ्गत्वेन श्रीब्रह्मविष्णु इन्द्रेशरुद्रप्रीतये वस्त्रत्रयं बृहस्पतिदैवताकं यथानाम गोत्रायः।

अथ धातुत्रयदानम् – ॐ अद्य कृतैतत् त्रीतरशान्त्यङ्गत्वेन श्रीब्रह्मविष्णु इन्द्रेशरुद्रप्रीतये इदं यथाशक्ति स्वर्णरजतताम्रं अग्निरुद्रविष्णुदैवताकं यथानामः ।

अथ तिलपात्रदानम् - अद्य कृतैतत् त्रीतरशान्त्यङ्गत्वेन श्री ब्रह्मविष्णु इन्द्रेशरुद्रप्रतीये इदं तिलपात्रं विष्णुदैवत्यं यथानाम्ने गोत्रायः।।

ततः आवाहितदेवतानामुत्तरपूजाश्रीसूर्यार्घ्यदानान्तं कर्म कृत्वा प्रमादादिति पठेत्।। ।। इति त्रिखलशान्तिः।।

।।अथ दर्श (अमावस्या) शान्ति विधि:।।

संकल्पः - अत्राद्य... अस्य शिशोः दर्श (अमावस्या) जनन सूचितं सकल अरिष्टं निरसनं द्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं दर्शजनन शांतिं करिष्ये। ऋत्विक्वरणान्तं कर्म पूर्ववत्। मंडले कलशं संस्थाप्य तस्मिन् पंचगव्यं, वट अश्वत्थ उदुम्बर प्लक्ष आम्रवृक्षाणां मूलत्वक्पल्लवान्, पंच रत्नानि निक्षिप्य वरुणं संपूज्य वारुणमंत्रैः अभिमंत्रयेत्। मध्ये पितृस्थापनम् - ॐ आ यन्तु नः पितरः सोम्यासो ऽ ग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानैः। अस्मिन् यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधि ब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान्।। सुखाय पितृन् कुलवृद्धिकर्तृन् रक्तोत्पलाभान् इह रक्तनेत्रान्। सुरक्तमाल्यांबर भूषितांश्च नमामि पीठे कुलवृद्धि हेतोः।। ॐ भूर्भुवः स्वः पितरः इहागच्छत इह तिष्ठत वरदा भवत।

दक्षिणे चन्द्रस्थापनम् - ॐ इमन्देवाः दिधशंखः ॐ भूर्भुवः स्वः चन्द्र इहागच्छ इह तिष्ठ वरदो भव। वामे सूर्यस्थापनम् - ॐ सिवता पश्चात्तात् सिवतापुरस्तात् सिवतोत्तरात्तात् सिवताधरात्तात्। सिवतानः सुवतु सर्वतातिं सिवता नो रासतां दीर्घमायुः।। यन्मंडलं दीप्तिकरं विशालं, रत्नप्रभं तीव्रमनादिरूपम्। दारिद्य दुःखक्षयकारणं च, पुनातु मां तत्सिवतुर्वरेण्यम्।। ॐ भूर्भुवः स्वः सूर्य इहागच्छ इह तिष्ठ वरदो भव। लब्धोपचारैः पूजयेत्। ॐ सिवता त्वाः क्रमानुसारं अग्निं संस्थाप्य प्रार्थयेत् - आयुः आरोग्यसिद्ध्यर्थं सर्वारिष्ट प्रशांतये। पुत्रस्य दर्शजनन दोषनिर्हरणाय च।। मातापित्रोः कुमारस्य सर्वारिष्ट प्रशांतये। तेषामायुः श्रिये चैव शांतिहोमं करोम्यहम्।। अन्वाधानमनुसृत्य पूजामंत्रैः होमः। पितृभ्यः १०८, सोमायः २८, सूर्यायः २८ सिमत् चरु आज्येन जुहुयात्। अभिषेकार्थं श्रीसूक्तं आयुष्यमंत्रान् च जपेत्। उत्तरतंत्रम्। कर्म ईश्वरार्पणम्।

सिनीवाली कुहूशांतिः

(सिनीवाली अर्थात् चतुर्दशी युक्त अमावास्या। प्रतिपदा युक्त अमावास्या कुहू। दोनों में कालभेद से नामभेद है, विधि समान है।)

संकल्प - मासपक्षादि उल्लिख्य... अस्य शिशोः सिनीवाल्यां/कुव्हां वा उत्पत्या सूचितस्य अनिष्टस्य निरासार्थं शांति करिष्ये। ऋत्विक् वरणान्तं कर्म समाप्य पीठे धान्यराशिं कृत्वा रुद्रं इन्द्रं पितृन् स्थापयेत्।

रुद्रस्थापनम् - ॐ त्र्यम्बकं यजामहेः, हीं मृत्युंजय महादेवः ॐ भूर्भुवः स्वः भो रुद्र इहागच्छ इह तिष्ठ वरदो भव।।

इन्द्रस्थापनम् - ॐ त्रातारिमन्द्रः, इन्द्रश्चतुर्भुजो वज्रांकुशचापः ससायकः। रक्तवर्णो गजारूढो सर्वारिष्ट विनाशकः।। ॐ भूर्भुवः स्वः भो इन्द्र इहागच्छ इह तिष्ठ वरदो भव।। िपतृस्थापनम् - ॐ पितृभ्य ÷ स्वधायिभ्य ÷ स्वधानम ÷ पितामहेभ्य ÷ स्वधायिभ्य स्वधा नमः ÷ प्रिपतामहेभ्य ÷ स्वधायिभ्य ÷ स्वधा नम ÷ अक्षन् पितरोऽमीमदन्त पितरो ऽ तीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम्।। पितरः कृष्णवर्णाश्च चतुर्हस्ता विमानगाः। गदाक्षसूत्रकमंडलु – अभयस्यैव धारिणः।। ॐ भूर्भुवः स्वः पितरः इहागच्छत इह तिष्ठत वरदा भवत।। लाभोपचारैः पूजयेत्। अन्य पीठे चतुर्दिक्षु मध्ये च एवं पंचकलशान् संस्थाप्य तेषु पंचगव्यादिकं निक्षिप्य वारुणमंत्रेः आवाद्य संपूज्य भद्रसूक्तं, वरुणसूक्तं पुरुषसूक्तं रुद्रसूक्तं त्र्यम्बकमंत्रान् च आग्नेयादि क्रमेण जपेयुः। अग्निस्थापनं ग्रहहोमः। स्थापितदेवता होमः रुद्रइन्द्रपितृभ्यः १००८, १०८ समित् चरु तिल आज्य आहुतिभिः जुहुयात्। त्र्यम्बकमंत्रेण तिलहोमः। शेषं कर्म शांतिसाधारणम्।

अथ हवन प्रकरण

(यज्ञकुण्ड का निर्माण शास्त्रविधि के अनुसार करे।)

कुण्ड का स्वरूप - प्राच्यांशिरः समाख्यातं बाहू कोणे व्यवस्थितौ। ईशानाग्नेयकोणे तु जङ्घे वायव्यनैऋते।। उदरं कुण्ड मित्युक्तं योनियोंनि विधियते।

(विधि हीन निर्माण होने से अनेकानेक हानि संताप होता है।)

कुण्डाभावे बालुकाभिः समेखलं स्थण्डिलं होमानुसारेण एक-हस्तात्मकं द्विहस्तात्मकं वा कुर्यात् (२४ अङ्गुलात्मको हस्तः)।

कुंडस्थदेवतापूजन प्रयोगः आचम्य प्राणानायम्य। संकल्पः अद्येत्यादि... शुभपुण्यितथौ मया प्रारब्धस्य कर्मणः सांगतासिद्धयर्थं अस्मिन् कुंडे कुंडस्थदेवतानां आवाहनं पूजनं तथा च पंचभूसंस्कारपूर्वकं अग्निप्रतिष्ठां करिष्ये। कुशैः कुंडसंमार्जनम् कुशोदकेन प्रोक्षणम्– ॐ आपो हि॰ कुंडं स्पृष्टवा आवाहयेत् – आवाहयामि तत् कुंडं विश्वकर्मविनिर्मितम्। शरीरं यच्च ते दिव्यं अग्न्यिधष्ठानं अद्भुतम्।। ॐ भूर्भुवः स्वः कुंडाय नमः कुंडं आवाहयामि स्थापः। ततः प्रार्थयेत् – ये च कुंडे स्थिता देवाः कुंडांगे याश्च देवताः। ऋद्धिं यच्छन्तु ते सर्वे यज्ञसिद्धिं ददन्तु नः।। कुंडमध्ये देवान् आवाहयेत् (अक्षतान् आदाय)

ॐ विश्वकर्मन् हिवषा वर्धनेन त्रातारिमन्द्रमकृणोरवध्यम्। तस्मै विश: समनमन्त पूर्वीरयमग्रो विहव्यो यथाऽसत्। उपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा विश्वकर्मण एष ते योनिरिन्द्राय त्वा विश्वकर्मण।

कुण्डमध्ये – ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वकर्मणे नमः विश्वकर्माणम् आवाः स्थापः।। भो विश्वकर्मन् इहागच्छ इह तिष्ठ।। ततः प्रार्थयेत्।। ब्रह्म वक्त्रं भुजौ क्षत्रमूरू वैश्यः प्रकीर्तितः पादौ यस्य तु शूद्रो हि विश्वकर्मात्मने नमः। अज्ञानाज्ज्ञानतो वापि दोषाः स्युः खननोद्भवाः।। नाशय त्विखलांस्ताँस्तु विश्वकर्मन्नमोऽस्तु ते।। ततो मेखलायोनिकण्ठनाभिवास्तु-देवतानाम् आवाहनं कुर्यात्।। उपि मेखलायां श्वेतवर्णालंकृतायां – ॐ इदं विष्णुः, विष्णो यज्ञपते देव दुष्टदैत्यनिषूदन। विभो यज्ञस्य रक्षार्थं कुंडे संनिहितो भव।। ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः विष्णुं आः स्थाः। भो विष्णो इहागच्छ इह तिष्ठ। मध्यमेखलायां रक्तवर्णालंकृतायां ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचौ वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च वि वः।।

हंसपृष्ठसमारूढ आदिदेव जगत्पते। रक्षार्थं मम यज्ञस्य मेखलायां स्थिरो भव।। ॐ भू, ब्रह्मणे नमः, भो ब्रह्मन् इः।। अधो मेखलायां कृष्णवर्णालंकृतायां – ॐ नमस्ते रुद्रः, गंगाधर महादेव वृषारूढ महेश्वर। आगच्छ मम यज्ञेऽस्मिन् रक्षार्थं रक्षसां गणात्।। ॐ भू, रुद्रायः भो रुद्र इः।।

योन्यावाहनम् ॐ क्षत्रस्य योनिरिस क्षत्रस्य नाभिरिस। मा त्वा हि र्ठः सीन्मा मा हि र्ठः सी।। आगच्छ देवि कल्याणि जगदुत्पत्तिहेतुके।। मनोभवयुते रम्ये योनि त्वं सुस्थिरा भव।। जगदुत्पत्तिकायै मनोभवयुतायै योन्यै नमः योनिमावाः स्थापः।। भो जगदुत्पत्तिके मनोभवयुते योनि इहागच्छ इह तिष्ठ।। ततः प्रार्थयेत्।। सेवन्ते महतीं योनि देविषिसिद्धमानवाः।। चतुरशीतिलक्षाणि पन्नाद्याः सरीसृपाः।। पशवः पिक्षणः सर्वे संसरिन्त यतो भुवि।। योनिरित्येव विख्याता जगदुत्पत्तिहेतुका।। मनोभवयुता देवी रितसौख्यप्रदायिनी।। मोहियत्री सुराणाञ्च जगद्धात्रि नमोऽस्तु ते।। योने त्वं विश्वरूपाऽसि प्रकृतिर्विश्वधारिणी।। कामस्था कामरूपा च विश्वयोन्यै नमो नमः।।४ कण्ठदेवतावाहनम्

ॐ नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्वा अधः क्षमाचराः तेषा र्ठः सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि।।

कुंडस्य कंठदेशोऽयं नीलजीमूतसिन्नभः। अस्मिन् आवाहये रुद्रं शितिकंठं कपालिनम्।। ॐ भूर्भुवः स्वः कंठे रुद्रायः।। प्रार्थयेत् – कंठमंगलरूपेण सर्वकुंडे प्रतिष्ठितः। परितो मेखलास्त्वत्तो रचिता विश्वकर्मणा।। नाभ्यावाहनम् ॐ नाभिर्मे चित्तं विज्ञानं पायुर्मेऽपचितिर्भसत्। आनन्दनन्दावाण्डौ मे भगः सौभाग्यं पसः। जङ्काभ्यां पद्भयां धर्मोऽस्मि विशि राजा प्रतिष्ठितः।।

पद्माकाराऽथवा कुण्डसदृशाकृतिबिभ्रती। आधारः सर्वकुण्डानां नाभिमावाहयामि ताम्। ॐ भूर्भुवः स्वः नाभ्ये नमः नाभिम् आवाः स्थापः।। भो नाभे इहागच्छ इह तिष्ठ।। ततः प्रार्थयेत्।। नाभे त्वं कुण्डमध्ये तु सर्वदेवैः प्रतिष्ठिता। अतस्त्वां पूजयामीह शुभदा सिद्धिदा भव।। ततः कुण्डमध्ये नैर्ऋत्यकोणे वास्तुपुरुषमावाहयेत्।। ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यास्मान्स्वावेशोऽअनमीवो भवानः। यत्त्वे महे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे।। (पाः गृः)।। आवाहयामि देवेशं वास्तुदेवं महाबलम्। देवदेवं गणाध्यक्षं पातालतलवासिनम्।।ॐ भूर्भुवः स्वः नैर्ऋत्यकोणे वास्तुपुरुषाय नमः वास्तुपुरुषम् आवाः स्थापः।। भो वास्तुपुरुष इहागच्छ इह तिष्ठ।। ततः प्रार्थयेत्। यस्य देहे स्थिता क्षोणी ब्रह्माण्डं विश्वमङ्गलम्। व्यापिनं भीमरूपञ्च सुरूपं विश्वरूपिणम्।। पितामहसुतं मुख्यं वन्दे वास्तोष्पतिं प्रभुम्।। वास्तुपुरुष देवेश सर्वविघ्नहरो भव। शान्तिं कुरु सुखं देहि सर्वान्कामान्प्रयच्छ मे।। एवं कुण्डस्थितान् सर्वान्देवानावाह्यैकतन्त्रेण प्रतिष्ठां कृत्वा पूजयेत्। हस्तेऽक्षतानादाय। ॐ मनोजूतिर्जुः। ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वकर्मादिवास्तुपुरुषान्ताः सर्वे कुण्डस्थदेवाः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवेयुः।। ततो गन्धाक्षतपुष्पाण्यादाय।। ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वकर्मादिवास्तुपुरुषान्तोश्यः कुण्डस्थदेवेभ्यो नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समः।। इति सम्पूज्य। एकस्मिन्पात्रे

बलिदानार्थं दध्योदनं कुण्डाद्विहः संस्थाप्य बलिदानं कुर्यात्। हस्ते जलं गृहीत्वा। ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वकर्मादिवास्तुपुरुषान्तेभ्यः कुण्डस्थदेवेभ्यो नमः यथाशिक्त अमुं दध्योदनबलिं समः।। पुनर्जलं गृहीत्वा। अनेन यथाशिक्त विश्वकर्मादिवास्तु-पुरुषान्तानां कुण्डस्थदेवानां पूजनेन बलिदानेन च विश्वकर्मादिवास्तुपुरुषान्ताः सर्वे कुण्डस्थदेवाः प्रीयंतां न मम।

भूमिकूर्मानन्तपूजनम् - ॐ भूरसिः -, ॐ भूर्भुवः स्वः भूम्यै नमः

- ॐ यस्य कुर्मो गृहे हिवस्तमग्ने वर्धया त्वम्। तस्मै देवा अधि ब्रुवन्नयं च ब्रह्मणस्पति:।।
- ॐ भूर्भुवः स्वः कूर्माय नमः. ॐ स्योना पृथिवि. ॐ भूर्भुवः स्वः अनंताय.
- ॐ भूर्भुवः स्वः भूमिकूर्मानन्तदेवताभ्यो नमः सर्वोपचारार्थेः गन्धाक्षत पुष्पाणि सः,

।।इति कुण्ड पूजनम्।।

।।अथ पञ्चभूसंस्कारपूर्वकाग्निप्रतिष्ठापन प्रयोगः।।

आचार्य: कश्चिद्विप्रो वा यजमानानुज्ञया हस्ते जलं गृहीत्वा। अस्मिन्कुण्डे (यजमानानुज्ञया) पञ्चभूसंस्कारपूर्वकम् अग्निप्रतिष्ठां करिष्ये। इति संकल्प्य दक्षिणहस्ते दर्भपुञ्जं गृहित्वोत्थाय दक्षिणत आरभ्योदकुसंस्थं पश्चिमतः प्रागन्तं त्रिवारं परिसमूहनं कुर्यात्। तद्यथा। दर्भैः परिसमृह्य परिसमृह्य परिसमृह्य। एवं परिसमृहनं विधाय कुण्डाद्वहिः पूर्वस्यामीशान्यां वा दर्भत्यागं कुर्यात्। ततो दक्षिणहस्तेन गोमयमादाय पूर्ववत् दक्षिणत आरभ्योदक्संस्थं पश्चिमतः प्रागन्तं गोमयेनोपलिपेत्।। तद्यथा। गोमयेन उपलिप्य उपलिप्य उपलिप्य। एवं त्रिवारम् उपलेपनं कृत्वा हस्तं प्रक्षाल्य दक्षिणहस्तेन स्वमादाय पूर्ववद्दक्षिणत आरभ्योदक्संस्थं पश्चिमतः प्रागन्तं सुवमूलेन त्रिरुलेल्खनं कुर्यात्।। तद्यथा। सुवमूलेन उल्लिख्य उल्लिख्य उल्लिख्य। एवं त्रिवारमुल्लेखनं कृत्वाऽनामिकाङ्गष्ठेन पूर्ववत् कुण्डतः पांसूनामुद्धरणं विद्धयात्। तद्यथा। अनामिकाङ्गृष्ठेन उद्धृत्य उद्धृत्य उद्धृत्य। एवं त्रिवारं पांसूनामुद्धरणं कृत्वा तान् प्राच्यांक्षिप्त्वा पूर्ववत् न्युब्जपाणिना जलेन त्रिवारम् अभ्युक्षणं कुर्यात्।। तद्यथा। उदकेन अभ्युक्ष्य अभ्युक्ष्य अभ्युक्ष्य। ततोऽग्रिं स्थापयेत्। बहुपशोर्वैश्यस्य गृहात् श्रोत्रियागारात् सूर्यकान्तसम्भूतात् स्वकीयगृहाद्वा सुवासिन्या स्त्रिया आनीतं निर्धूमम् अन्यताम्रादिपात्रेणाच्छादितम् अग्निं कुण्डस्य आग्रेय्यां दिशि निधाय आच्छादितं पात्रम् उद्घाट्य "हुं फट्" इति क्रव्यादांशम् अग्निं नैर्ऋत्यां दिशि परित्यज्य अग्निं कुण्डस्य उपरि त्रिवारं भ्रामियत्वा। ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे। देवाँ२ आसादयादिह।। मन्त्रं पठन् कुण्डे स्वात्मामिमुखं शतमङ्लनामानम् अग्निं स्थापयेत्।। ततोऽग्यानीतपात्रे साक्षतोदकं निषिच्य तत्र शिष्टाचारात्किञ्चिद्यथाशिक्त हिरण्यं रौप्यद्रव्यं वा निक्षिप्य तत् द्रव्यं यजमानपत्न्यै दद्यात्। ततोऽग्रौ आवाहनादिमुद्राः प्रदर्शयेत्।। भो अग्ने त्वम् आवाहितो भव। भो अग्ने त्वं संस्थापितो भव। भो अग्ने त्वं सिन्निहितो भव। भो अग्ने त्वं सिन्निहितो भव। भो अग्ने त्वं सिन्निहितो भव। भो अग्ने त्वम् अवगुण्ठितो भव। भो अग्ने त्वम् अमृतीकृतो भव। भो अग्ने त्वं परमीकृतो भव।। इति ताः ताः मुद्राः प्रदर्श्य। अग्निम् इन्धनप्रक्षेपेण प्रज्वलितं कृत्वा करसम्पुटौ विधाय अग्निध्यानं कुर्यात्

ॐ चत्वारि शृङ्गा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य। त्रिधा बद्धो वृषभो रौरवीति महो देवो मर्त्यां२ आ विवेश।।

रुद्रतेजः समुद्भूतं द्विमूर्धानं द्विनासिकम्। षण्णेत्रं च चतुःश्रोत्रं त्रिपादं सप्तहस्तकम्।।१।। याम्यमागे चतुर्हस्तं सव्यभागे त्रिहस्तकम्। सुवं सुचञ्च शिक्तञ्च ह्याक्षमालाञ्च दक्षिणे।।२।। तोमरं व्यजनं चैव घृतपात्रञ्च वामके। बिभ्रतं सप्तिभिर्हस्तैर्द्विमुखं सप्तिजह्वकम्।।३।। याम्यायने चतुर्जिह्वं त्रिजिह्वं चोत्तरे मुखम्। द्वादशकोटिमूर्त्याख्यं द्विपञ्चाशत्कलायुतम्।।४।। आत्माभिमुखमासीनं ध्यायेच्चैवं हुताशम्।। गोत्रमग्नेस्तु शाण्डिल्यं शाण्डिल्यासितदेवलाः।।५।। त्रयोऽमी प्रवरा माता त्वरणी वरुणः पिता। रक्तमाल्याम्बरधरं रक्तपद्मासनस्थितम्।।६।। स्वाहास्वधावषट्कारैरङ्कितं मेषवाहनम्। शतमङ्गलनामानं विह्नमावाहयाम्यहम्।।७।। त्वं मुखं सर्वदेवानां सप्तार्चिरमितद्युते। आगच्छ भगवन्नग्ने कुण्डेऽस्मिन्सिन्नधो भव।।८।। भो वैश्वानर शाण्डिल्यगोत्र शाण्डिल्यासितदेवलेतित्रिप्रवरान्वित भूमिमातः वरुणपितः ललाटजिह्व मेषध्वज प्राङ्मुख मम सम्मुखो भव।। इति ध्यात्वा हस्तेऽक्षतान् गृहीत्वाऽवाहयेत्। तद्यथा। ॐ मनोजूतिर्जुः।।९।। अमुक नामाग्ने यथा –

ॐ शतमङ्गलनामाग्ने सुप्रतिष्ठितो वरदो भव।। ततो गन्धाक्षतपुष्पाण्यादाय पूजनं कुर्यात्। ॐ भूर्भुवः स्वः शतमङ्गलनाम्ने वैश्वानराय-नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समः। इति कुण्डस्य वायव्ये कोणे अग्निं सम्पूज्य प्रार्थयेत्।। अग्निं प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम्। हिरण्यवर्णममलं समिद्धं विश्वतोमुखम्।। इति अग्निप्रतिष्ठापनम्।।

(अग्नि के अनेक नाम हैं अत: अनुष्ठान के अनुसारेण नाम उच्चारण करे।)

"अग्निपूजनं कृत्वा" नवग्रहादि स्थापनम् एवं असंख्यातारुद्र पूजनम् (कलशे)।

ब्रह्मावरण - वरणद्रव्यमादाय - कर्तव्यामुक होम कर्मणि कृताकृत वेक्षण रूप ब्रह्म कर्म कर्तुममुक शर्म्माणं ब्राह्मणमेभि पुष्पचन्दनताम्बूल वासोभिर्ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे (वा पञ्चाशत् कुशनिर्मितं प्रदक्षिण ग्रन्थिकं ब्रह्मा।)

इतिमङ्गलसूत्रं बद्धवा ब्रह्माणं वृणुयात् वृतोऽस्मीतिप्रति वचनं। यथाविहितं कर्म कुर्विति आचार्येणोक्ते करवाणीति प्रतिवचनम्। ब्रह्मासनम् दक्षिणे प्रमाणं - दक्षिणे दानवाः प्रोक्ताः पिशाचोगरराक्षसाः। तेभ्य संरक्षणार्थाय ब्रह्मास्थाप्यस्तु दक्षिणे।।यः (मीमांसा)

कुशकण्डिकाः

अग्नेर्दक्षिणतो ब्रह्मासनम्। अग्नेरुत्तरतः प्रणीतासनद्वयम्। ब्रह्मासने ब्रह्मोपवेशनम्। 'यावत्कर्म समाप्यते तावत् त्वं ब्रह्मा भव' इति यजमानः। 'भवामि' इति ब्रह्मा वदेत्। ततो ब्रह्मणाऽनुज्ञातः प्रणीताप्रणयनम्। तद्यथा - प्रणीतापात्रं पुरत: कृत्वा, वारिणा परिपूर्यं, कुशैराच्छाद्य, प्रथमासने निधाय, ब्रह्मणो मुखमवलोक्य द्वितीयासने निदध्यात्। ईशानादि-पूर्वाग्रै: कुशै: परिस्तरणम्। तद्यथा - ततो बर्हिषश्चतुर्थभागमादाय। आग्नेयादीशानान्तम् उदगग्रैर्वा। ब्रह्मणोऽग्निपर्यन्तं प्रागग्रै:, नैर्ऋत्या-द्वायव्यान्तम, उदगग्रैर्वा। अग्नितः प्रणीतापर्यन्तं प्रागग्रै:, इतरथावृत्तिः। कुशकिण्डका - (कुशकिण्डिका की विधि इस प्रकार से है। अग्नि के दक्षिण भाग में ब्रह्मा के लिए एक छोटी चौकी आसनरूप में रखे। अग्नि के उत्तर की ओर प्रणीता के लिए ३ कुश रखे। अग्नि की प्रदक्षिणा कराकर ब्रह्मा के लिए रक्खी हुई चौकी पर यजमान 'यावत्कर्म समाप्यते' यह बात कहकर ब्रह्मा को बैठावे। 'भवामि' इस वाक्य को कहकर पहले से स्थापित आसन पर ब्रह्मा को स्थापित करे। इसके उपरान्त ब्रह्मा की आज्ञा से प्रणीतापात्र को जल से भरे। उसकी विधि इस प्रकार से है - प्रणीतापात्र को अपने सामने रखे, उसमें जल भरकर कुशाओं से ढँक दे और पहले आसन पर रखकर ब्रह्मा के मुख को देखकर दूसरे आसन पर उस प्रणीता कोरख दे। तदुपरान्त आग्नेयकोण से ईशानादि पर्यन्त परिस्तरण करे, उसका क्रम यह है - बर्हिकुश के चौथे भाग को अपने बायें हाथ में लेकर अग्रभाग वाली कुशाओं से दाहिने हाथ से उत्तर की ओर, आग्नेयकोण से ईशानकोण तक, पूर्व दिशा की ओर, अग्रभाग वाली कुशाओं से ब्रह्मा के आसन से अग्निकुण्ड तक, उसी प्रकार उत्तर दिशा की ओर, अग्रभाग वाली कुशाओं से नैर्ऋत्यकोण से लेकर वायव्यकोण तक एवं पूर्व की ओर अग्रभाग वाली कुशाओं से अग्निकुण्ड से प्रणीतापात्र तक कुशा बिछावें। इसके पश्चात् हाथ में जल लेकर उलटा घुमावें।

पात्रासादनम् - ततः पात्रासादनं कुर्यात्। तद्यथा - त्रीणि पवित्रे द्वे। प्रोक्षणीपात्रम्। आज्यस्थाली। चरुस्थाली। सम्मार्जनकुशाः पञ्च। उपयमनकुशाः सप्त। सिमधस्तिस्रः। स्रुवः। आज्यम्। तण्डुलाः। पूर्णपात्रम्। वृष (धेनु) निष्क्रयदक्षिणा। उपकल्पनीयानि द्रव्याणि निधाय।

पवित्रछेदनक्रमः - ततो द्वयोरुपिर त्रीणि निधाय। द्वौ मूलेन प्रदक्षिणीकृत्य, सर्वान् युगपदनामिकाऽङ्गुष्ठाभ्यां धृत्वा। त्रिभिश्छिद्य। द्वौ ग्राह्मौ, त्रिस्त्याज्यः, प्रोक्षणीपात्रे प्रणीतोदकमासिच्य, त्रिः पूर्णं, पवित्राभ्यामुत्पवनम्। प्रोक्षण्याः सव्यहस्तकरणम्। दक्षिणेनोद्दिङ्गनम्। प्रणीतोदकेन प्रोक्षणीप्रोक्षणम्। प्रोक्षण्युदकेन आज्यस्थाल्याः प्रोक्षणम्। चरुस्थाल्याः प्रोक्षणम्। सम्मार्जनकुशानां प्रोक्षणम्। उपयमनकुशानां प्रोक्षणम्। सिमधां प्रोक्षणम्। सुवस्य प्रोक्षणम्। आज्यस्य प्रोक्षणम्। तण्डुलानां प्रोक्षणम्। पूर्णपात्रस्य प्रोक्षणम्। उपकल्पनीयानां पदार्थानां प्रोक्षणम्। असञ्चरे प्रोक्षणीर्निधाय।

पात्रासादन - (तदुपरान्त पात्रासादन करें, जिसका क्रम इस प्रकार से है - एक जगह तीन कुशा व दूसरी जगह दो कुशा, प्रोक्षणीपात्र, घृतपात्र, चरुस्थाली, सम्मार्जनकुशा पाँच, उपयमन कुशा सात, तीन सिमधा, स्रुवा, घृत, चावल, पूर्णपात्र, (धेनु) वृषमूल्य, दिक्षणा और भी जो स्थापन करने योग्य पदार्थों को (वहाँ) रक्खें।)

पिवत्रछेदनमक्रम - पिवत्र छेदन का क्रम इस प्रकार से है - पूर्व स्थापित दो कुशाओं पर तीन कुशाएँ रखे, तथा दो कुश के मूलभाग में प्रदक्षिण कर सभी को दो बार अनामिका अंगुली और अंगूठे से पकड़कर तीन कुशाओं को तोड़ दें। पुन: अपने दायें हाथ में उन कुशाओं को लेकर प्रणीता के जल को तीन बार प्रोक्षणीपात्र में छोड़ें। तदुपरान्त अनामिका और अंगूठे से पिवत्री को पकड़कर तीन बार प्रोक्षणीपात्र में छातें। प्रादेशमात्र उछालें। तत्पश्चात् प्रोक्षणीपात्र को बायें हाथ में लेकर दाहिने हाथ से उस प्रोक्षणी के जल को ऊँचा उछालें। प्रणीतापात्र के जल से प्रोक्षणी का प्रोक्षण करें। तदुपरान्त प्रोक्षणी के जल से आज्यस्थाली का सिंचन करें। इसी प्रकार चरुस्थाली, सम्मार्जन कुशा, उपयमन कुशा, सिमधा, स्रुवा, घृत, अक्षत, पूर्णपात्र तथा वहाँ रखे हुए सभी पदार्थों का प्रोक्षणी-जल से प्रोक्षण करें। इसके पश्चात् अग्न व प्रणीतापात्र के बीच में उस प्रोक्षणीपात्र को रख दें।

आज्यस्थाल्यामाज्यनिर्वापः। चरुस्थाल्यां प्रणीतोदकासेकपूर्वकं तण्डुलप्रक्षेपः। ब्रह्मणो दक्षिणत आज्याधिश्रयणम्। चरोरिधश्रयणं स्वयमाज्यस्योत्तरतः। ज्वलदुल्मुकेनोभयोः पर्यग्निकरणम्। इतरथावृत्तिः। उदकोपस्पर्शः। अर्धिश्रते चरौ अधोमुखस्य स्रुवस्य प्रतपनम्। सम्मार्जनकुशैः स्रुवस्योर्ध्वमुखस्य सम्मार्जनम्। अग्रैरन्तरतोमूलैर्बाद्यतः स्रुवं सम्मृज्य। प्रणीतोदकेनाभ्युक्षणम्। सम्मार्जनकुशानामग्नौ प्रक्षेपः। पुनः प्रतपनं, दक्षिणदेशे निधानम्। आज्योद्वासनम्। चरुं पूर्वेणानीयाऽग्नेरुत्तरतः स्थापयेत्। चरोरुद्वासनम्। अग्नेरुत्तरत एवाज्यस्य प्रदक्षिणीकृत्य आज्यास्योत्तरतश्चरुं स्थापयेत्। आज्योत्पवनम्। आज्यावेक्षणम्। अपद्रव्यनिरसनम्। पुनः प्रोक्षण्युत्पवनम्। वामहस्ते उपयमनकुशानादाय। उत्तिष्ठन् समिधोभ्यादाय, घृताक्ताः समिधस्तिस्रः अग्नौ क्षिपेत्। प्रोक्षण्युदकेन सपवित्रहस्तेन ईशानादि अग्नेः प्रदक्षिणं पर्युक्षणम्। इतरथावृत्तिः।

तदुपरान्त घृतपात्र में घृत भरें, अग्नि के पश्चिम में पवित्र सहित चरुपात्र में प्रणीता जल से आसेचन करके अक्षतों को छोड़ें। ब्रह्मा के दाहिनी ओर उस घृतपात्र को रख दें। घृतपात्र के उत्तर से चरुपात्र को अग्नि पर चढ़ावें। जलती हुई लकड़ी को लेकर उस घृत के कटोरे के चारो ओर सीधा घुमा दें, पुन: उसी प्रकार उसको उलटा घुमावें। अब जल का स्पर्श करें और चरु के आधे पक जाने पर ख़ुवे को हाथ में लेकर उसके छेद को नीचे की ओर करके अग्नि में तापित कर सम्मार्जन कुशा के अग्रभाग से ख़ुवे के ऊर्ध्वमुख का सम्मार्जन व अन्तर तथा मूल स्नुवा के बाह्य भाग का सम्मार्जन करके प्रणीता के जल से ख़ुवे का अभ्यक्षण करें तथा सम्मार्जन कुशाओं को अग्नि में त्याग दें। पुन: श्रुव को अग्नि में तपाकर उसको अपने दायें भाग में रक्खें। घृतपात्र को अग्नि पर से उतार कर चरु को पूर्व दिशा से लाकर अग्नि के उत्तर की ओर स्थापित कर दें। अब चरु को अग्नि पर से उतारकर अग्नि से उत्तर की ओर से ही घृतपात्र की प्रदक्षिणा कर घृत के उत्तर ओर चरु को रख दें। पुन: कुशा से घृत को कुछ उछालें। पश्चात् घृत का अवलोकन भलीभाँति कर लें तथा उसमें पड़े हुए अपद्रव्य को निकाल दें। पुन: प्रोक्षणी-जल छिड़क दें। उपयमन संज्ञक सात कुशाओं को बायें हाथ में लेखर खड़े होवें और दाहिने हाथ में घृत लगी हुई तीन समिधाओं को लेकर प्रजापति (ब्रह्मा) का मन में ध्यान कर अग्नि में छोड़ दें। इसके पश्चात् पवित्र धारण किये हुए हाथ से प्रोक्षणी जल द्वारा ईशानकोण से ईशानकोण तक अग्नि का प्रदक्षिण क्रम से पर्युक्षण करें। पुनः अप्रदक्षिण क्रम द्वारा ईशानकोण पर्यन्त अपने दाहिने हाथ को घुमा दें। इसी कर्म को इतरथावृत्ति कहते हैं। तत: पवित्रे प्रणीतासु निधाय दक्षिणं जान्वाच्य ब्रह्मणा कुशैरन्वारब्ध उपयमनकुशसहितं प्रसारिताङ्गलि हस्तं हृदि निधाय दक्षिणहस्तेन मूले चतुरङ्गल त्यक्त्वा शङ्क्षसनिभमुद्रया स्रुवं गृहीत्वा सिमद्धतमेऽग्नौ वायव्य कोणादारभ्याग्निकोणपर्यन्तं प्राञ्चं वा सन्तघृतधारया मनसा प्रजापतिं ध्यायन् स्रुवेण तुष्णीं सशेषं मौनी जुहुयात्। नात्र स्वाहाकार:। इदं प्रजापतये न मम इति यजमानेन त्यागः कर्तव्यः। होमत्यागानन्तरं स्नुवावशिष्टस्याज्यस्य सर्वत्र प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेप: कार्य:।

तद्नन्तर उन पवित्र को प्रणीता पात्र में रख कर अपने दाहिने जानु को मोड़कर ब्रह्मा से कुशों द्वारा अन्वारब्ध (स्पर्श) कर उपयमन कुशा के सिहत अपने हाथ की अँगुलियों को फैलाकर उस हाथ को हृदय में लगा दाहिने हाथ से स्नुव के मूल से चार अंगुल छोड़कर शंखमुद्रा से स्नुव को ग्रहण कर प्रदीप्त अग्नि में वायव्य–कोण से प्रारम्भ कर अग्निकोण पर्यन्त या पूर्व दिशा की तरफ निरन्तर घी की धारा द्वारा प्रजापित का मन से ध्यान कर स्नुव से चुपचाप शेष के सिहत हवन करे, इसमें स्वाहाकार नहीं है। 'इदं प्रजापतये न मम'

इस वाक्य का यजमान त्याग करे। होम त्याग के बाद स्रुव स्थित आज्य का सर्वत प्रोक्षणी पात्र में प्रक्षेप करे।

यजमान संकल्प करे - देशकालौ सङ्कीर्त्य - स्वयं वा ब्राह्मण द्वारा कृतस्य (कारित) अमुक देवता जपपाठ कर्मणः संपूर्णतासिद्ध्यर्थं दशांशेन तिलादिमिश्रपायस द्रव्येन वा (विशेष अमुक द्रव्येण) होममहं करिष्ये इति संकल्पयेत।। (समाचारात् पुण्याहवाचनम्) (वा साक्षतपुष्पजलं गृहीत्वा सङ्कल्पः-देशकालौ संकीर्त्य अस्मिन् अमुक-देवता-मन्त्र-जपकृतपुरश्चरण-दशांश-हवनाख्ये कर्मणि इदं सम्पादितं सिमच्चरुतिलाज्यादि-हविर्द्रव्यं विहितसंख्याहुतिपर्याप्तं या याः वक्ष्यमाणदेवतास्तस्यै तस्यै देवतायै न मम। यथासंख्यं यथादैवतमस्तु इति वदन् साक्षतजलं भूमौ क्षिपेत्।)

तत्रादौ, घृताहुतिः अग्नेरुत्तरभागे – ओं प्रजापतये स्वाहा इति मनसा इदं प्रजापतये न मम इत्युच्चैः प्रोक्षण्यां त्यागः। अग्नेर्दक्षिणभागे – अग्नये स्वाहा, इदमग्नये न मम। ओं सोमाय स्वाहा, इदं सोमाय न मम इत्याज्यभागौ। ॐ भूः स्वाहा, इदमग्नये न मम। ओं भुवः स्वाहा, इदं वायवे न मम। ओं स्वः स्वाहा, इदं सूर्याय न मम, एता महाव्याहृतयः। तत आचार्यः – ओं यथा बाणप्रहाराणां कवचं वारकं भवेत्। तद्वद्दैवोपघातानां शान्तिर्भवित वारिका।। शान्तिरस्तु पृष्टिरस्तु यत्पापं रोगम्, अकल्याणं तद्दूरे प्रतिहृतमस्तु, द्विपदे चतृष्यदे सुशान्तिर्भवत्, इति पठित्वा यजमानमुद्धाभिषेकः।

अथ सर्वप्रायश्चित्त संज्ञक पञ्चवारुणहोमः

ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अवयासि सीष्ठाः। यजिष्ठो विह्नतमः शोशुचानो विश्वा द्वेषा ठी सि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा। इदमग्नी वरुणाभ्यां न मम।।१।। ॐ स त्वन्नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ। अवयक्ष्व नो वरुण ठी रराणो वीहि मृडीक ठी सुहवो न एधि स्वाहा। इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम।।२।। ॐ अयाश्चाग्नेऽस्य निभशस्तिपाश्च सत्यिमित्वमया असि। अयानो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषज ठी स्वाहा। इदमग्नये अयसे न मम।।३।। ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यिज्ञयाः पाशा वितता महान्तः। तेभिनों अद्य सिवतोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा। इदं वरुणाय सिवत्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्ध्यः स्वर्केभ्यश्च न मम।।४।। ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यमंठी श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा। इदं वरुणाय न मम।।५।। अत्रोदकस्पर्शः इति पञ्च वारुणी (प्रायश्चित्तसंज्ञक) होमः। ततश्चन्दनपुष्पाक्षतैर्वायव्यकोणे बिहरग्ने सम्पूज्य ग्रहहोमपुरः सरं प्रधानहोमं कुर्यात्। (आहुति के समय नमः नहीं उच्चारण करे।)

अथ गणपित – 'नवग्रह-अधिदेवता-प्रत्यिधदेवता-पञ्चलोकपालानां होम:-तत्रादौ दशाहुतिरेकां वाहुतिं श्रीगणपतये – (अन्वारब्धं विना) ॐ गणानान्त्वा गणपित र्ठः हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपित र्ठः हवामहे निधीनान्त्वा निधिपित र्ठः हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमात्वमजासि गर्भधम् स्वाहा। इदं गणपतये न मम। ततः गायत्री ॐ कारादिमण्डलदेवतानां पूजनोक्तक्रमेण यथाशिक्त आहुतीर्जुहुयात्।

आवाहित मण्डल देवता के नाम मन्त्र वा वेदमन्त्रों से हवन करे। पीठ देवता, यन्त्र, आवरण देवता को भी आहुति देवे।

प्रधान देवता को मूलमन्त्र या पाठादि से विशेष द्रव्य के द्वारा आहुति प्रदान करे। (अनुष्ठान के अनुसारेण)।

विशेष - गायत्री हवन में व्याह्नतिरहिता

गुग्गुलहोमः - मम गृहे भूतादिदोषनिवृत्ति अर्थं गुग्गुलहोमं करिष्ये। ॐ त्र्यंबकं यजामहेः - स्वाहा।

सर्षपहोमः - मम सर्वारिष्ट शांति अर्थं शत्रुबलक्षयार्थं सर्षपहोमं करिष्ये। ॐ सजोषा इन्द्र स गणो मरुद्धिः सोमं पिब वृत्रहा शूर विद्वान। जिह शत्रूँ १ रप मृधौ नुदस्वाथाभयं कृणुिह विश्वतौ नः।। सर्वा बाधा प्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरी। एवमेव त्वया कार्यं अस्मद् वैरिविनाशनम्।। स्वाहा।। उदकस्पर्शः।।

कमलगट्टा, पायस, कमलपुष्प, बिल्बपत्र से लक्ष्मी प्राप्ति हेतु होम करे। मम गृहे स्थिर लक्ष्मी दशविध प्राप्त्यर्थ महालक्ष्मी प्रसन्नार्थम् अमुक द्रव्येण हवनं करिष्ये। श्री सूक्त वा लक्ष्मी बीजमन्त्र से आहुति प्रदान करे।

उत्तर पूजनम् - कर्मणः सांगता सिद्धयर्थं स्थापितदेवतानां मृडाग्नेः च उत्तरपूजनं करिष्ये। आवाहित स्थापित गणपत्यादि मण्डल देवताओं की पञ्चोपचार से पूजा करे।

अग्नि पूजनम् - ॐ स्वाहा स्वधा युताग्नये वैश्वानराय नमः इति पञ्चोपचारैः संपूज्य। प्रार्थना करे - ॐ अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मत् ज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम।। अग्नि प्रज्वलितंः –

ॐ अनया पूजया स्वाहा स्वधा युतोग्मि प्रीयंताम् इति जल मुत्सृजेत्। "ततो हुतशेष हविर्द्रव्यं गृहीत्वा ब्रह्मणान्वारब्ध:-"

ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये न मम।"

 नवग्रह सिमधा - सूर्य-अर्क, चन्द्र-पलाश, भौम-खदीर, बुध-अपामार्ग गुरु - पिप्पल, शुक्र-उदम्बर, शिन-शमी, राहु-दूर्वा, केतु-कुशा हवन कर्म में नानाविध दोष परिहार हेतु नवाहुतय प्रदान करे। आज्य के द्वारा – ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये न मम/१/ ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे न मम/२/ ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय न मम/३/

ॐ त्वं नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अव यासिसीष्ठाः। यिषष्ठो विद्वतम् शोशुचानो विश्वा द्वेषा र्वः सि प्र मुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा इदमग्नी वरुणाभ्यां न मम।४। ॐ स त्वं नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ। अव यक्ष्व नो वरुण र्वः रराणो वीहि मृडीक र्वः सुहवो न एधि स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम।५। ॐ अयाश्चाग्नेस्यनिभशस्तिपाश्च सत्यिमत्वमया ऽ असि। अयानो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषज स्वाहा इदमग्नये अयसे न मम।६। ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यिज्ञयाः पाशावितता महान्तः। तेभिनीं अद्य सिवतोत विष्णुर्विश्वे मुंचन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा इदं वरुणाय सिवत्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भयः स्वर्केभ्यश्च न मम।७। ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवा धमं विमध्यम र्वः श्रथाय। अथा वयमादित्यव्रते तवानागसो ऽ अदितये स्याम स्वाहा इदं वरुणायादित्यायादितये च न मम।८। ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये न मम।९।

नवाहुतिनां प्रोक्षणी पात्रे संस्रवप्रक्षेप:। आवाहित देवताओं के लिए बलिदान करे।।

बलिदानम्

मया प्रारब्धस्य... कर्मणः सांगतासिद्धयर्थं दिक्पालदेवतानां स्थापितदेवतानां च पूजनपूर्वकबिलदानं करिष्ये।

यथा प्राच्यां इन्द्राय नमः इन्द्रं सांगं सपिरवारं सायुधं सशिक्तकं एभिः गंधाद्युपचारैः त्वां अहं पूजयािम। इन्द्राय सांगाय सपिरवाराय सायुधाय सशिक्तकाय इमं सदीपं आसादितबिलं समः भो इन्द्र दिशं रक्ष बिलं भक्ष मम सकुटुंबस्य अभ्युदयं कुरु। मम गृहे आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव। अनेन पूजनपूर्वकबिलदानेन इन्द्रः प्रीयताम्। (एवं सर्वत्र) अथवा एकतंत्रेण – ॐ प्राच्यै दिशे स्वाहा ऽर्वाच्यै दिशे स्वाहा प्रतीच्यै दिशे स्वाहा ऽर्वाच्यै दिशे स्वाहा प्रतीच्यै दिशे स्वाहा ऽर्वाच्यै दिशे स्वाहा ऽर्वाच्ये दिशे स्वाच्ये दिशे स्वाच

इन्द्रादिभ्यो दशभ्यो दिक्पालेभ्यो नमः। इन्द्रादिदशदिक्पालेभ्यः साङ्गेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः इमान् सदीपदिधमाषभक्तबलीन् समर्पयामि। भो भो

इन्द्रादिदशदिक्पालाः। स्वां स्वां दिशं रक्षत बलिं भक्षत मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्तारः क्षेमकर्तारः शान्तिकर्तारः पुष्टिकर्तारः तुष्टिकर्तारः वरदा भवत। अनेन बलिदानेन इन्द्रादिदशदिक्पालाः प्रीयन्ताम्।

गणपतिबलि : ॐ गणानान्त्वाः ॐ भुर्भूवः स्वः गणपतिं सांगं सपित्वारं सायुधं सशिक्तकम् एभिर्गंधाद्यपचारैः त्वामहं पूजयामि। गणपतये सांगाय सपित्वाराय सायुधाय सशिक्तकाय इमं सदीपं आसादित बिलं समः। भो गणपते इमं बिलं गृहाण मम सकुटुंबस्य सपित्वारस्य अभ्युदयं कुरु। मम गृहे आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पृष्टिकर्ता तृष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता कल्याणकर्ता वरदो भव। अनेन पूजनपूर्वकबित्तानेन गणपितः प्रीयंतां। मातृकाबिलः ॐ भूर्भुवः स्वः सगणेशगौर्याद्यावाहित मातृः सांगाः सपित्वाराः सायुधाः सशिक्तकाः एभिर्गंधाद्युपचारैः वः अहं पूजयामि। सगणेशगौर्याद्यावाहित मातृभ्यः सांगाभ्यः सपित्वाराभ्यः सायुधाभ्यः सशिक्तकाभ्यः इमं सदीपं आसादितं बिलं समः। भो भो सगणेशगौर्याद्यावाहित मातरः इमं बिलं गृहणीत मम सकुटुंबस्य सपित्वारस्य अभ्युदयं कुरुत। आयुः कर्त्र्यः क्षेमकर्त्र्यः शांतिकर्त्र्यः पृष्टिकर्त्र्यः तृष्टिकर्त्र्यः निर्विघ्नकर्त्राः कल्याणकर्त्राः वरदा भवत। अनेन पूजनपूर्वक बिलदानेन सगणेशगौर्याद्यावाहित मातरः प्रीयन्तां न मम। एकतंत्रपक्षे वसोर्धारा समन्वत सगणेशः...

वसोर्धाराबिल : ॐ भूर्भुव: स्व: श्रीआदि वसोर्धारा: सांगा:... पूजयामि। श्रीआदि आवाहित वसोर्धाराभ्य... समः। भो भो श्री आदि आवाहित वसोर्धारा: इमं बिलं... भवत। अनेन पूजनपूर्वक बिलदानेन वसोर्धारा: प्रीयन्तां।

योगिनीबलि: श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती सिहता गजाननादि (विश्वदुर्गादि) चतुःषष्टियोगिनीः सांगाः... अहं पूजयामि। सांगाभ्य... बिलं सम.। भो भो... योगिन्यः इमं बिलं गृहणीत। मम... कुरुत। आयुः कर्त्र्यः क्षेमकर्त्र्यः शांतिकर्त्र्यः पृष्टिकर्त्र्यः तृष्टिकर्त्र्यः निविष्नकर्त्र्यः कल्याणकर्त्र्यः वरदा भवत। अनेन पूजन पूर्वक बिलदानेन श्री महाकाली, योगिन्यः प्रीयन्ताम्।

वास्तोष्पतिबलि : ॐ भूर्भुवः स्वः शिख्यादि (ब्रह्मादि) वास्तुमंडलदेवता सिहतं वास्तुपुरुषं... पूजः। मंडलदेवता सिहताय वास्तुपुरुषाय सांगाय... इमं आसादित बिलं समः। भो भो मंडलदेवतासिहत वास्तुपुरुष इमं बिलं गृहाण मम सकुटुंबस्य सपिरवारस्य अभ्युदयं कुरु। मम गृहे आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पृष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता वरदो भव। अनेन पूजनपूर्वक बिलदानेन मंडलसिहत वास्तुपुरुषः प्रीयतांम्।

अजरादि - ॐ भूर्भुवः स्वः अजरादि क्षेत्रपालदेवान् सांगान् सपरिवारान् सायुधान् सशक्तिकान् एभिः गंधाद्यपचारैः वः अहं पूजयामि। क्षेत्रपालदेवेभ्यः सांगेभ्यः सपरिवारेभ्यः

सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः इमं सदीपं आसादितबलिं समः। भो भो क्षेत्रपालदेवाः सांगाः सपिरवाराः सायुधाः सशक्तिकाः इमं बलिं गृहणीत। मम सकुटुंबस्य सपिरवारस्य अभ्युदयं कुरुत। आयुः कर्तारः क्षेमकर्तारः शांतिकर्तारः पुष्टिकर्तारः तुष्टिकर्तारः निर्विघ्नकर्तारः वरदा भवत। अनेन पूजन पूर्वक बलिदानेन क्षेत्रपालदेवाः प्रीयन्ताम्।

एकतन्त्रेण नवग्रहबलिः

ॐ ग्रहाऽऊर्जाहुतयो व्यन्तो व्विप्पाय मितम्। तेषां व्विशिप्प्रियाणां व्वोऽहिमषमूर्जि ठीः समग्रभमुपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्त्वा जुष्टृंगृहाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्त्वा जुष्टृत्तमम्। ॐ सूर्यादिनवग्रहेभ्यो नमः। सूर्यादिनवग्रहेभ्यः साङ्गेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशिक्तकेभ्यः अधिदेवता–प्रत्यधिदेवता–गणपत्यादिपञ्चलोकपालवास्तोष्पितसिहतेभ्यः इमं सदीप–दिध–माष–भक्तबलिं समर्पयामि भो भो सूर्यादिनवग्रहाः। साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशिक्तकाः अधिदेवता–प्रत्यधिदेवता–गणपत्यादिपञ्चलोकपाल वास्तोष्पितसिहताः इमं बिलं गृह्णीत मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्तारः क्षेमकर्तारः शान्तिकर्तारः पुष्टिकर्तारः तुष्टिकर्तारः वरदा भवत। अनेन बिलदानेन साङ्गाः सूर्यादिनवग्रहाः प्रीयन्ताम्। "ब्रह्मादि देवानां – सदीपं बिलं समर्पयामि।"

ब्रह्मादि देवताभ्यो साः सपः साः सः सिहताः बिलं समर्पयामि। भो भो ब्रह्मादि सर्वतो भद्रमंडल देवताभ्यो इमं बिल गृहाण। मम सपिरवारस्य अभ्युदयं कुरु आयुः कर्तारः क्षेमकर्तारः तुष्टीकर्तारः पुष्टीकर्तारः वरदा भवत। अनेन बिलदानेन सर्वतो भ्रदमण्डल देवता प्रीयन्ताम्।।

अथ दुर्गा याग कूष्माण्ड बलिदानम्

आचम्य प्राणानायम्य। देशकालाद्युच्चार्य मम सकुटुम्बस्य सर्वाऽरिष्ट प्रशान्ति-सर्वाभीष्ट-कामसिद्धि-कल्पोक्तफलावाप्तिद्वारा श्री महाकालीमहालक्ष्मी-महासरस्वती-त्रिगुणात्मिका-स्वरूपिणी-श्री दुर्गादेवीप्रीत्यर्थं कूष्माण्डबलिदानं करिष्ये। तदङ्गत्वेन पञ्चोपचारै: बलिपूजनं च करिष्ये। तत्पश्चात् -

नमो देव्ये महादेव्ये शिवाये सततं नमः। नमः प्रकृत्ये भद्राये नियताः प्रणताः स्म ताम्।। इत्यनेन दुर्गादेवी पञ्चोपचारैः सम्पूज्य, तत्पुरतः स्वयंमुदङमुखो बलिं प्राङ्मुखं च पीठे वस्त्रगुण्ठितं कूष्माण्डं निधाय, कूष्माण्डबलये नमः, इत्यनेन-गन्ध-पुष्पादि-पञ्चोपचारैः सम्पूज्य, अभिमन्त्रयेत्।

पशुस्त्वं बलिरूपेण मम भाग्यादवस्थित:। प्रणमामि ततः सर्वरूपिणं बलिरूपिणम्।।१।। चिण्डकाप्रीतिदानेन दातुरापद्-विनाशनम्। चामुण्डाबिलरूपाय बले तुभ्यं नमोऽस्तु ते।।२।। यज्ञार्थं बलयः सृष्टाः स्वयमेव स्वयम्भुवा। अतस्त्वां घातयाम्यद्य यस्माद्यज्ञे मतो वधः।।३।। ततः शस्त्रं गन्धादिनां सम्पूज्य, अभिमन्त्रयेत् – ऐं हीं श्रीं। 'रसनात्वं चिण्डकायाः सुरोलकप्रसाधकः।' इति हां हीं खड्ग, आं। हुं, फट्, इति पठित्वा हस्ते शस्त्रं गृहीत्वा, वीरासनमुद्रया 'ॐ कालि कालि वज्रेश्विर लोहदण्डाय नमः' इति पठनेन कूष्माण्डं छेदयेत् छेदनावसरे न विलोकयेत्। ततिश्छन्ने बलौ कुङ्कुममनुलेपयेत्। 'कौशिकि रुधिरेणाप्यायताम् ' इति देव्ये अर्धं निवेद्य, अवशिष्टार्धस्य तेनैव खड्गेन पुनः पञ्चभागान् कृत्वा ॐ पृतनायै नमः बलिभागं निवेदयािम।

ॐ चरक्यै नमः बलिं निवेदयामि। विदार्थै नमः बलिं निवेदयामि। पापराक्षस्यै नमः बलिं निवेदयामि। शेष – क्षेत्रपालं बलिभागं निवेदयामि।

क्षेत्रपाल बलिदानं - एकस्मिन् वंशादि पात्रे शूर्पे च कुशा नास्तीर्य तदुपिर मनुष्याहार चतुर्गुणं द्विगुणं वा हिरद्रा कुङ्कुम कज्जल सिन्दूर रक्त पुष्प पताकादि युतं स ताम्बूलं सदिक्षणं माष भक्त दध्योदनं जलपात्रं चिनधाय चतुर्मुखं दीपं प्रज्वाल्य बिलं दद्यात्। ॐ अद्येत्यादि – नामगोत्रोच्चार्य – सकलारिष्ट शान्तिपूर्वकं अमुक कर्मणः सिद्धयर्थं क्षेत्रपाल पूजनं बिलदानञ्च करिष्ये। इति संकल्प्य – पूगीफलोपिर क्षेत्रपालमावाहयेत् अक्षत पृष्पमादाय–

ॐ निहस्प्यशमिवदन्नन्यमस्माद् व्वैश्वानरात्पुर ऽएतारमग्नेः। एमेनमवृधन्नमृताऽअमत्यं वैश्वानरं क्षेत्रजित्याय देवाः।। इति 'क्षेत्रपालाय नमः इत्युक्त्वा क्षेत्रपालं षोडशोपचारैः पञ्चोपचारैर्वा सम्पूज्य प्रार्थयेत्। नमो वे क्षेत्रपालस्त्वं भूतप्रेतगणैः सह। पूजां बिलं गृहाणेमं सौम्यो भव च सर्वदा।।१।। पुत्रान् देहि धनं देहि सर्वान् कामांश्च देहि मे। आयुरारोग्यं मे देहि निर्विघ्नं कुरु सर्वदा।।२।। ततो बिलदानार्थं हस्ते जलं गृहीत्वा क्षेत्रपालाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय मारीगण-भैरव-राक्षस-कृष्माण्डवेताल-भूत-प्रेत-पिशाच-डािकनी-शािकनी-पिशािचनी-ब्रह्मराक्षसगणसिहताय इमं कुङ्कृम-रक्तपुष्पािदयुतं सदीपं सताम्बूलं सदिक्षणं दिध-माष-भक्तबिलं समर्पयािम। भो क्षेत्रपाल! सर्वतो दिशं रक्ष बिल भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पृष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव। अनेन बिलदानेन क्षेत्रपालः प्रीयताम्। बिलं गृह्वन्त्वमं देवा आदित्या मरुतश्चित्वनौ रुद्राः सुपर्णाः पत्रगाः खगाः (नगाः)।।१।। असुरा यातुधानाश्च पिशाचोरगराक्षसाः। डािकन्यो यक्षवेताला योिगन्यः पूतनाः शिवाः।।२।। जृम्भकाः सिद्धगन्धर्वा सौम्या विद्याधरा नगाः। दिक्पाला लोकपालश्च ये च विघ्नविनायकाः।।३।।

जगतां शान्तिकर्तारो ब्रह्माद्याश्च महर्षयः। मा विघ्नं मा च मे पापं मा सन्तु परिपन्थिनः। सौम्या भवन्तु तृप्ताश्च भूत-प्रेताः सुखावहाः।।४।। भूतानि यानीह वसन्ति तानि बलिं गृहीत्वा विधिवत्प्रयुक्तम्। अन्यत्र वासं परिकल्पयन्तु रक्षन्तु मां तानि सदैव चात्र।।५।। ततो दुर्ब्राह्मणो नापितो वा बलिपात्रं गृहीत्वा यजमानपृष्ठतोगत्वा यजमानमस्तकोपिर सकृद् भ्रामियत्वा तत् बलिपात्रं चतुष्पथे स्थापयेत्। यजमानश्च बलिं नीत्वा गच्छतः पृष्ठभागे मन्त्रं पठन् द्वारपर्यन्तमक्षतं जलं वा क्षिपेत् – ॐ हिङ्काराय स्वाहा हिङ्कृताय स्वाहा क्रक्रन्दते स्वाहा ऽवक्क्रन्दाय स्वाहा प्रोथते स्वाहा प्रप्रोथाय स्वाहा गन्धाय स्वाहा घ्राताय स्वाहा निविष्ट्राय स्वाहोपविष्टाय स्वाहा सन्दिताय स्वाहा वलाते स्वाहाऽऽसीनाय स्वाहा शयानाय स्वाहा स्वपते स्वाहा जाग्ग्रते स्वाहा कूजते स्वाहा प्रबुद्धाय स्वाहा व्विजृम्भमाणाय स्वाहा व्विचृत्ताय स्वाहा सर्ठः हानाय स्वाहोपस्थिताय स्वाहाऽयनाय स्वाहा प्रायणाय स्वाहा। ततो यजमानः पाणिपादं प्रक्षाल्याचम्य स्वासने उपविशेत्।

''कश्चित् पुस्तकेषु भूतेभ्यो बलिदानम्'' यजमान सपरिवार चतुष्पथ जाकर क्षेत्रपालबलि अनुसारेण पूजा बलिदान करे।

इति बलिदान प्रयोगः

पूर्णाहुति

''पूर्णाहुत्या सर्वान् कामानवाप्नोति'' पूर्णाहुति से मनुष्य समस्त कामनाओं को प्राप्त करता है।

।।पूर्णांहुति कहां-कहां नहीं करे।।

विवाहे व्रतबन्धे च शालायां चौलकर्मणि। गर्भाधानादिसंस्कारे पूर्णाहुतिं न कारयेत्।। विवाहादि क्रियायां च शालायां वास्तुपूजने! नित्य होमे वृषोत्सर्गे न पूर्णाहुतिमाचरेत्।। (यज्ञ मिमांसा) मदरत्ने"

मात्स्येऽपि - शतान्ते वा सहस्रान्ते सम्पूर्णाहुतिरिष्यते। उतिष्ठन्मनसा ध्यात्वा विह्नमाज्य फलेन च।। (वि॰प॰)

अथ सङ्कल्पः - "नाम गोत्रोच्चार्यं" - मम सकल कामना सिद्ध्यर्थं बहु धन धान्य प्राप्तये देवादि - प्रीत्यर्थं ब्राह्मणद्वारा मत्कारिते अमुक कर्मणि श्री गणपित गौर्याद्यावाहितेष्ट देवता प्रीतये च स्वैर्मन्त्रे यव-तिलतण्डुलाज्याहुतिः परिपूर्णता सिद्धये वसोर्धारा समन्वितं पूर्णाहुति होममहं करिष्ये। इति संकल्प्य।

(नारिकेल या गिरि गोला) सुक में चार या बारह बार घी भरकर कौशेय वस्त्र मोली बांधकर शंख मुद्रा में सुक सुच को पकड़कर स्थिरचित होकर गन्धाक्षतपुष्पादि से पूजा करे।) पूर्णाहृतिपूजनमन्त्राः - कल्याणदात्रीं कल्याणीं सर्वकामप्रपूरणीम्। हवनस्य फलप्राप्त्यै पूर्णाहुत्यै नमो नमः।। पुनः यजमानस्य रक्तवस्त्रवेष्टितं श्रीफलं (नारिकेलफलं) स्नुच्यामुपरि संस्थाप्य 'ॐ पूर्णाहुत्यै नमः' इति यथोपचारद्रव्यैः श्रीफलं सम्पूजयेत्। पश्चात् श्रीफलसंहितां सूचीं गृहीत्वा उत्थाय पूर्णाहुतिं कुर्यात्। (श्री जगदीश्वरं मनसा ध्यायन् शंखतूर्यादि घोषै:) पूर्णाहृतिमन्त्राः - ॐ समुद्रादुर्मिर्मधुमाँ२।। उदारदुपा र्ठः शुना सममृतत्वमानट्। घृतस्य नाम गुह्यं यदस्ति जिह्वा देवानां मृतस्य नाभिः।। वयं नाम प्रब्रवामा घृतस्यास्मिन्यज्ञे धारयामा नमोभि:। उप ब्रह्मा शृणवच्छस्यमानं चतुः शृङ्गोऽवमीद्गौर एतत्।चत्वारि शृङ्गा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य। त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्यां २।। आविवेश।। त्रिधा हितं पणिभिर्गृह्यमानं गवि देवासो घृतमन्वविन्दन्। इन्द्र एक र्ठः सूर्य एकं जजान वेनादेक र्ठः स्वधया निष्टतक्षः।। एता अर्षन्ति हृद्यात्समुद्राच्छतव्रजा रिपुणा नावचक्षे। घृतस्य धाराअभिचाकशीमि हिरण्ययो वेतसो मध्य आसाम्।। सम्यक् स्रवन्ति सरितो न धेना अन्तर्हदा मनसा पूयमाना:। एते अर्षन्त्यूर्मयो घृतस्य मृगा इव क्षिपणोरीषमाणा:।। सिन्धोरिव प्राध्वने शूघनासो वातप्रमिय: पतयन्ति यह्वा:। घृतस्य धारा अरुषो न वाजी काष्ठा भिन्दन्नुर्मिभिः पिन्वमानः।। अभिप्रवन्त समनेव योषाः कल्याण्यः स्मयमानासोअग्रिम्। घृतस्य धाराः समिधो नसन्त ता जुषाणो हर्यति जातवेदाः।। कन्या इव वहतुमेतवा उ अञ्ज्याञ्चाना अभिचाकशीमि। यत्र सोम: सूयते यत्र यज्ञो घृतस्य धारा अभि तत्पवन्ते। अभ्यर्षत सुष्ट्रतिं गव्यमाजिमस्मासु भद्रा द्रविणानि धत्त। इमं यज्ञं नयत देवता नो घृतस्य धारा मधुमत्पवन्ते।। धामं ते विश्वं भुवनमधि श्रितमन्तः समुद्रे हृद्यन्तरायुषि। अपामनी के समिथे य आभृतस्तमश्याम मधुमन्तन्त ऊर्मिम्। पुनस्त्वादित्या रुद्र वसवः सिमन्धतां पुनर्ब्रह्माणो वसुनीथ यज्ञैः। घृतेन त्वं तन्वं वर्धयस्व सत्याः सन्तु यजमानस्य कामा:।। सप्त ते अग्ने सिमध: सप्त जिह्वा: सप्त ऋषय: सप्त धाम प्रियाणि। सप्त होत्राः सप्तधात्वा यजन्ति सप्त योनीरापृणस्वा घृतेन स्वाहा।। मुर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आ जातमग्निम्। कवि र्ठः सम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवा:।। पूर्णा दर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत। वस्नेव विक्रीणावहा इषमूर्ज र्ठः शतक्रतो।। (तत्पश्चात् स्नुचि में स्थित नारिकेल को अग्निकुण्ड में यथोचित रूप से यजमान सीधा रख दें। तदनन्तर स्नुचि स्थित घृत के शेष को इस वाक्य का उच्चारण करके प्रोक्षणी पात्र में त्याग करें - ॐ इदमग्नये वैश्वानराय वसुरुद्रादितेभ्यः शतक्रतवे सप्तवते अग्नये अद्भयश्च नमम्।

वसोर्धारा होमः

पूर्णाहुति के पश्चात वसोधीरा पूजन करावे।

प्रार्थना - दिव्यवस्त्रा दिव्यदेहा नानालङ्कारभूषिताः। वसोर्द्धारा महाभागा वरदाः सन्तु मे सदा।। शुद्धस्फटिकसंकाशा दिव्यायुधकरावृताः। एकभोगाः साक्षसूत्राः वसोर्द्धारा नता वयम्।। (निम्नविधान के अनुसार करे।)

यजमान तो स्तम्भों में धारण की हुई, उद्म्बर की सीधी मनोहरा बाहुमात्रप्रमाण की वसोधीरा को प्रागग्र रख, उसके ऊपर शृंखला से परिपूर्ण निर्मल घृत से ताम्र आदि द्वारा नीचे यवमात्र छिद्र द्वारा घृत को छोड़ते हुए अग्नि के ऊपर वसोर्धारा गिरावे। यजमान उसके मुख में सोने की जिह्वा बाँधे और स्नुचि पात्र द्वारा नाली से अग्नि में घृतधारा गिरावे। उस समय आचार्य व सभी ब्राह्मण निम्न मन्त्रों का उच्चारण करते हुए होम करावें-ॐ सप्त ते अग्ने सिमध: सप्त जिह्ना: सप्त ऋषय: सप्त धाम प्रियाणि। सप्त होत्रा: सप्तधा त्वा यजन्ति सप्त योनीरापृणस्व घृतेन स्वाहा।। शुक्रज्योतिश्च चित्रज्योतिश्च सत्यज्योतिश्च ज्योतिष्माँश्चा शुक्रश्च ऋतपाश्चात्य र्ठः हा:।। ईदङ् चान्यादङ्च सदङ्च प्रतिसद्दङ्। मितश्च संमितश्च सभरा:।। ऋतश्च सत्यश्च ध्रुवश्च धरुणश्च। धर्ता च विधर्तां च विधारय:।। ऋतजिच्च सत्यजिच्च सेनजिच्च सुषेणश्च। अन्तिमित्रश्च द्रेअमित्रश्च गणः।। ईद्क्षास एताद्क्षासऽऊषणुः सद्क्षासः प्रतिसद्क्षास एतन। मितासश्च संमितासो नो अद्य सभरसो मरुतो यज्ञे अस्मिन्।। स्वतवांश्च प्रघासी च सान्तपनश्च गृहमेधी च। क्रीडी च शाकी चोज्जेषी।। इन्द्रं दैवीर्विशो मरुतोऽनुवर्त्मानोऽभवन्यथेन्द्रं दैवीर्विशो मरुतोऽनुवर्त्मानोऽभवन्। एविममं यजमानं दैविश्च विशो मानुषीश्चानुवर्त्मानो भवन्तु।। इम र्ठः स्तनमूर्जस्वन्तं धयापां प्रपीनमग्ने सरिरस्य मध्ये। उत्सं जुषस्व मधुमन्तमर्वन्समुद्रिय र्ठः सदनमाविशस्व।। घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्वस्य धाम। अनुष्वधमावह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभ वक्षि हव्यम्।। वसो: पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शत धारेण सुप्वा कामधुक्षः स्वाहा।।

यजमान हवन के पश्चात् जो घृतादि शेष हो उसे प्रोक्षणीपात्र में इस वाक्य का उच्चारण करके छोड़ दें – 'ॐ इदमग्नये वैश्वानराय न मम।' आचार्य निम्न श्लोकों का उच्चारण करके यजमान से अग्निदेवता की प्रार्थना करवाये –

श्रद्धां मेधां यश: प्रज्ञां विद्यां पुष्टिं श्रियं बलम्। तेज आयुष्यमारोग्यं देहि मे हव्यवाहन!।।१।। भो भो अग्ने! महाशक्ते! सर्वकर्मप्रसाधन! कर्मान्तरेऽपि सम्प्राप्ते सान्निध्यं कुरु सर्वदा।।२।। (ईशान कोण से भस्म ग्रहण करे।) अथ भस्मवंदनं त्र्यायुषकरणञ्च ततः कुण्डात्स्थिण्डलाद्वा दग्धीभूतात्पूर्णाहुतिनारिकेलात् स्रुवविलपृष्ठेन विभूतिं गृहीत्वा दक्षिणाऽनामिकया तिलकधारणिमत्याचार्यः पूर्वमात्मनः पश्चाद्यजमानस्य भस्माङ्कयेत्तत्र मन्त्रः – ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेरिति ललाटे। कश्यपस्य त्र्यायुषिमिति ग्रीवायाम्। यद्देवेषु त्र्यायुषिमिति दक्षिणबाहुमूले। तन्नो अस्तु त्र्यायुषिमिति हृदि वामस्कन्धे च यजमानपक्षे 'तन्नो' इत्यस्य स्थाने 'तत्ते' इति वाच्यम। सर्वहोमं हुत्वा संश्रवप्राशनम् – ततः प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षिप्तस्य आज्यस्य यजमानेन अनामिकांगुष्ठाभ्यां प्राशनं कार्यम्।

मन्त्र - ॐ यस्माद्यज्ञपुरोडाशाद्यज्वानो ब्रह्मरूपिणः। तं संस्रवपुरोडाशं प्राश्नामि सुखपुण्यदम्। ततः आचम्य प्रणीतापात्रे निहिते पवित्रे आदाय ग्रन्थि मुक्त्वा ताभ्यांशिरःसम्मृज्य ते पवित्रे अग्नौ प्रक्षिपेत्।

पूर्णपात्र प्रमाणं

"अष्टमूर्ति भवेत्किञ्चित्किञ्चिदष्टौ च पुष्कलम्। पुष्कलान च चत्वारिपूर्णपात्रं - तदुच्यते।। (यज्ञपार्श्वे) (वि.प.)।

द्वात्रिंशत्पलमाने न निर्मितं ताम्रपात्रकम्। तण्डुलैस्तत्समापूर्य सहिरण्यं सदक्षिणम्। दद्याद विप्राय त तुष्टमै पूर्णपात्र मितीरितम्।। (पुरश्चर्याणवे) (वि.प.)

श्री चतुर्थी लालकृत ग्रन्थानुसारेण - (षट् पञ्चाशदधिक यजमान मुष्टि शतद्वय परिमित तण्डुलाद्यन्न पूर्णम्) ।।इति पूर्णपात्र प्रमाणम्।।

ततो ब्रह्मणे सदक्षिणपूर्णपात्रदानम् - ॐ अद्येत्यादिकृतैतदमुक - होमकर्मणः प्रतिष्ठार्थिमदं पूर्णपात्रं सदिक्षणं प्रजापितदैवतं ब्रह्मणे तुभ्यमहं संप्रददे। ॐ स्वस्तीित प्रतिवचनम्। ततो ब्रह्मग्रन्थिविमोकः। ततः सजलप्रणीतामग्नेः पश्चादानीय - ॐ सुिमित्रया न आप ओषधयः सन्तु ॐ आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः शान्ततमास्तास्ते कृणवन्तु भेषजम्। इतिमन्त्रेण प्रणीतोदकं सिवत्रोपयमनकुशादीनाऽऽदाय यजमानशिरस्यभिषिच्य ॐ दुिमित्रयास्तस्मै सन्तु योऽस्मान्द्वेष्टि यञ्च वयं द्विष्मः। इत्येशान्यां प्रणीता न्युब्जीकुर्यात्। उपयमनकुशानग्नौ प्रहरेत्। अथ बिहेंहोमः - ततः आस्तरण क्रमेण बिहेंरुत्थाप्याज्येनाभिधार्य- ॐ देवा गातु विदो गातु वित्वा गातु मित मनसस्पत इमं देव यज्ञ ठं स्वाहा वातेधाः स्वाहा। इति हस्तेनैव जुहुयात्।

अथ दशांशतर्पणमार्जनविधिः

एवं होमं समाप्य पात्रस्थजले जपदेवतां गन्धपुष्पादिना सम्पूज्य होमदशांशेन सतीर्थाम्बुदुग्धिमश्रजलेन मूलमन्त्रान्ते ॐ साङ्गं सपिरवारम् अमुक देवतां तर्पयामि इत्युक्त्वा तर्पणं कुर्यात् ततस्तर्पणदशांशेन मूलमन्त्रान्ते, आत्मानमिषिञ्चामि नमः। इति तर्पणिसिञ्चितातिरिक्तशुद्ध जलेन यजमानमूर्धिन पृथिव्यां वा मार्जनं कुर्यात्। (अभिषिञ्चामि (वा) मार्जयामि)

अभिषेक विधिः

ततो ग्रहवेदी कलशः प्रधानदेवताकलशानामुदकमेकस्मिन्पात्रे एकीकृत्य दूर्वापञ्चपल्लवैरुदङ्मुख आचार्यस्तिष्ठन् जापकाश्च पत्नीं परिवारश्च वामतः कृत्वा यजमानं प्राङ्मुखमुपविष्ठमभिषिञ्चेयुरेभिर्मन्त्रैः – ॐ आपो हि ष्ठामयो भुवस्तान ऊर्जे दधातनः।।१।। ॐ महेरणाय चक्षसे यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः।।२।। ॐ तस्मा अरङ्गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथाच नः।।३।। ॐ वरुणस्योत्तम्भनमिस व्वरुणस्य स्कम्भसर्जनीस्थो वरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऋतसदनमासीद।।४।। पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा।।५।। ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्मम्।।६।। ॐ देवस्य त्वा सिवतुः प्रसवेश्वनोर्बाहुभ्याम्पूष्णोर्हस्ताभ्याम्। सरस्वत्यै वाचो यन्तु यन्त्रिये दधामि बृहस्पतेष्ट्वा साम्राज्येनाभिषिञ्चामि।।७।। ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष र्ठः शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिर्वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिब्रह्म शान्तः सर्व र्ठः शान्तः स्थानाः सर्व र्ठः शान्तः सा मा शान्तिरेषि।।८।।

ॐ सुरास्त्वामभिषञ्चन्तु ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः। वासुदेवो जगन्नाथस्तथा सङ्कर्षणो विभुः।।१।। प्रद्युम्नश्चानिरुद्धश्च भवन्तु विजयाय ते आखण्डलोऽग्निर्भगवान् यमो वै निर्ऋतिस्तथा।।२।। वरुणः पवनश्चैव धनाध्यक्षस्तथा विभुः। ब्रह्मणा सिहताः सर्वे दिक्पालाः पान्तु ते सदा।।३।। कीर्तिर्लक्ष्मीधृतिर्मेधा पृष्टिः श्रद्धा क्रिया मितः। बुद्धिर्लज्जा वपुः शान्तिस्तुष्टिः कान्तिश्च मातरः।।४।। एतास्त्वामभिषञ्चन्तु देवपत्न्यः समागताः। आदित्यश्चन्द्रमा भौमो बुधजीवसितार्कजाः।।५।। ग्रहास्त्वामभिषञ्चन्तु राहुः केतुश्च तर्पिताः। देवदानवगन्धर्वा यक्षराक्षसपन्नगाः।।६।। ऋषयो मनवा गावो देवमातर एव च। देवपत्न्यो द्रुमा नागा दैत्याश्चाप्सरसां तथा। अस्त्राणि सर्वशस्त्राणि राजानो वाहनानि च। औषधानि च रत्नानि कालस्यावयवाश्च ये।।७-८।।

सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः एते त्वामभिषिञ्चन्तु धर्मकामार्थसिद्धये।।९।। आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवा मरुद्रणाः। अभिषिश्चन्तु ते सर्वे धर्मकामार्थसिद्धये।।१०।। अमृताभिषेकोऽस्तु।।

(दक्षिणा दानादि के बाद एवं छायापात्र दान से पूर्व भी अभिषेक कर सकते हैं।)

श्रेयोदानविधिः मंगलस्नानम्

अथ मङ्गलस्नानं विधाय वस्त्रान्तरपरिधानं कृत्वा सपत्नी को यजमानः मण्डपमागत्य मङ्गलितलकं धृत्वा श्रेयोदानं स्वीकुर्यात्। उदङ्मुखा ऋत्विजः पृथक् पृथक् श्रेयोदानं कुर्विन्त, तत्र आचार्य एक एव वा तत्र प्राङमुखे यजमानहस्ते – ॐ शिवा आपः सन्तु इति जलम्, ॐ सौमनस्यमस्तु इति पुष्पम्, अक्षतं चारिष्टं चास्तु इत्यक्षतांश्च दत्वा, पूगीफलफलादिकञ्चादाय, ॐ भवित्रयोगेन मया श्री अमुकदेवप्रीत्यर्थं कृतो यः साङ्गपाठहोमस्तदुत्पन्नं यच्छ्रेयस्तत् तुभ्यमहं सम्प्रददे तेन श्रेयसा त्वं श्रयोवान् भव। इति फलादिकं यजमानाय दद्युः यजमानश्च सुगुप्तदेशे स्थापयेत्, यथावसरं भक्षयेच्च।

अथ दक्षिणादान विधिः

आचार्यदीन्सम्पूज्य ॐ तत्सदद्येः कृतस्य अमुककर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्तये च आचार्यादिभ्यो महर्त्विग्भ्यः सूक्तपाठकेभ्योऽ मुकमन्त्रजापकेभ्यो हवनर्कतृभ्योऽन्येभ्यो देवयजनमागतेभ्यश्च नाना गोत्रेभ्यो नानाशर्मभ्यो ब्राह्मणेभ्यो यथोक्तदक्षिणां तन्निष्क्रयभृतं यथाशक्त्येदं द्रव्यं रुद्रदैवतं विभज्याहं सम्प्रददे न मम। इत्येष एव सङ्कल्पोऽनुष्ठेयः (अथवा) ॐ तः कृतस्य अमुककर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थम् आचार्यादिभ्यो ब्राह्मणेभ्यः इमां दास्यमानां वा मनसोद्दिष्टां दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृजे। अथवा। ॐ तः कृतयो: अमुककर्मणोः साङ्गतासिद्ध्यर्थं दास्यमानं हिरण्यनिष्क्रयभूतं द्रव्यम् अमुकामुकगोत्राभ्याम् अमुकामुकशर्म्मभ्यां ब्राह्मणाभ्यां युवाभ्यामहं सम्प्रददे।। (अथवा) ॐ तत्सः कृतानाम् साङ्गतासिद्ध्यर्थं हिरण्यनिष्क्रयिणी अमुकाककर्मणां दक्षिणाममुकगोत्रेभ्यः अमुककामुकशर्म्मभ्यः ब्राह्मणेभ्यः युष्मभ्यमहं सम्प्रददे। (अथवा) ॐ तत्सः कृतस्य अमुककर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थीममां दक्षिणां हवनकर्त्रे ऋत्विजे तु.।। वा ऋत्विग्भ्यां दातुमहमुत्सृजे।। वा यथासंख्याकं ऋत्विग्भ्यो दातुमहमुत्सृजे।। इति ब्राह्मणान् जपानुसारेण दक्षिणावस्त्रालङ्कारादिभिः परितोष्य प्रणमेत् ततो ब्राह्मणः स्वस्ति इत्युक्त्वा दक्षिणां स्वीकृत्य ॐ आदित्या वसवोरुद्रेति मंत्रेण यजमानललाटे तिलकं कुर्यातु।।

अथ ब्राह्मणभोजन संकल्पः

ॐ तत्सदद्येः कृतस्यामुककर्मणः सम्पूर्णतासिद्धये यथोपन्नेनान्नेन यथाकालं यथासंख्यकान् नानागोत्रान् नानाभिधान् ब्राह्मणान् (वा-कन्याबटुकादीन्) भोजियष्ये दक्षिणाश्च दास्ये इति सङ्कल्प्य यथाकालं ब्राह्मणान् भोजयेत्। तत आचार्याय गां तन्मौल्यं वा दद्यात्।

गोदान संकल्पः

ॐ तत्सः ममामुककर्मसाङ्गतासिद्ध्यर्थम् अमुकगोत्रायामुकशर्म्मणे ब्राह्मणाय यथाशक्त्यलंकृतामिमां सवत्सां गां रुद्रदैवत्यां तुभ्यं सम्प्रददे न मम, इति कुसुमाक्षतसमिन्वतं जलं सपुच्छं ब्राह्मणहस्ते दद्यात्, ब्राह्मणस्तु ॐ कोदादिति मन्त्रं पठित्वा ॐ स्वस्तीति ब्रूयात्। ॐ तः कृतैतद्गोदान प्रः। प्रत्यक्षायाः गोरभावे तु तित्रष्क्रयं निष्कपरिमितं तदर्द्धं वा हिरण्यं दद्यात् – अस्मिन् पक्षे, गोनिष्क्रयभूतिमदं हिरण्यमिनदैवतं (वा हिरण्यमूल्योपकिल्पतं रुद्रदैवतं) तुभ्यं सम्प्रददे न मम। इति आचार्यहस्ते जलाक्षतयुतं द्रव्यं दद्यात् आचार्यः ॐ स्वस्तीति वदेत्।

अथ भूयसीदक्षिणासंकल्पः

ॐ अद्ये。पुराणोक्तफलप्राप्तिपूर्वककृतेऽस्मिन् अमुकयागकर्मणि न्यूनातिरिक्तदोषपरिहारार्थ, नानावेदान्तर्गतनानाशाखाध्यायिभ्यो नानागोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दीनानाथेभ्यो अन्धपङ्गुभ्यश्च यथाशिक्त यथोत्साहं भूयसीं दिक्षणां विभज्य दातुमहमुत्सृजे ॐ तत्सत् इतिवदन् यथाशिक्त भूयसीं दिक्षणां दद्यात्।

अथ छायापात्रदानम्

छायापात्रं स्वपुरस्तिलराश्युपिर संस्थाप्य तत्र धारितशुद्धगोघृतं पूरयेत्, ततः सपत्नीको यजमानः स्वमुखमवलोकयेत्, तत्र मन्त्रौ – ॐ आज्यं सुराणामाहारमाज्यं पापहरं परम्। आज्यमध्ये मुखं दृष्ट्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते।।१।। घृतं नाशयते व्याधिं घृतश्च हरते रुजम्। घृतं तेजोधिकरणं घृतमायुः प्रवर्द्धते।।२।। इति मुखं दृष्ट्वा हिरण्यं पंचरत्नानि वा प्रक्षिपेत्। ततस्सोपकरणैस्तत्कांस्य–पात्रोपन्यस्त घृतिबम्बप्रतिबिम्बतात्म छाया पात्राय नमः, एवं गन्धादिभिः पूजयेत्। ॐ अद्ये。 अमुकदेवप्रीतिपूर्वकसोपकरणच्छाया पात्रदानं ददािम। इति विप्रकरे जलं दद्यात्। संकल्प – अद्येत्यादिदेशकालसङ्कीर्तनान्ते – अमुकगोत्रोत्पन्नोहं जन्मनामतः प्रसिद्धनामतश्चामुकशर्मा सपत्नीकोऽहं मम कलत्रादिभिस्सह दीर्घायुरारोग्यसु तेजस्वित्वसुभगत्वसर्वं पापप्रशमनोत्तर जन्मराशेस्सकाशान्नामराशेस्सकाशाद्वा जन्मलग्नाद्वर्षलग्नाद्वोचराद्वा ये केचिच्चतुर्थाष्टम् द्वादशाद्यनिष्टस्थान–स्थिताः क्रूरग्रहास्तैः

सूचितं सूचियष्यमाणञ्च यत्सर्वारिष्टं तद्विनाशार्थं सर्वदा तृतीयैकादश शुभस्थान स्थितवदुत्तमफलप्राप्त्यर्थं कांस्यपात्रोपन्यस्तं घृतिबन्दुकिणका समसंख्याविच्छन्ननैरुज्य चिरञ्जीवित्वकामैतत्स्वशरीर छायावलोिकतघृतपूरितं कांस्यपात्रं पञ्चरत्नादिसिहतं सुपूजितं श्री महामृत्युञ्जयदेवताप्रीत्यर्थं चन्द्रमाप्रजापितबृहस्पितदैवतं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमृत्युजे। ॐ अद्य कृतैतच्छायापात्रदानप्रतिष्ठार्थमेतद्द्रव्यममुकदैवत्तं यथानामगोत्रायः। ततः प्रार्थयेत् – ॐ यानि कानि च पापानि मया कामं कृतानि च। छायापात्रप्रदानेन तानि नश्यन्तु मे सदा।।१।। यत्कृतं मे स्वकायेन मनसा वचना त्वघम्। तत्सर्वं नाशमायातु छायापात्रप्रदानतः।।२।। इति पठित्वा हस्तद्वयेन तत्पात्रं गृहीत्वा ब्राह्मणाय समर्पयेत् – ॐ सदक्षिणं मया तुभ्यं स्वात्मदेहिमदं परम्। छायापात्रपरं प्रीत्या गृहाण द्विजसत्तम। दानेनानेन मा सन्तु सर्वे रोगादयो मम। आयुरारोग्यमैश्वर्यं प्रददातु दिवाकरः।। इत्युच्चार्य छायापात्रं ब्राह्मणहस्ते दद्यात्।। अथवा – आज्यपात्रे छायामवलोक्य देशकालौ स्मृत्वा ममायुरारोग्यप्राप्तये ससुवर्णमिदमाज्यपात्रममुक-गोत्रायामुकर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे। इति कस्मैचित ब्राह्मणाय दद्यात्।

उत्तरपूजनम्

ॐ तत्सः कृतस्य – अमुककर्मणः साङ्गत्विसद्भ्ये मृडाग्निसहित आवाहितदेवानामुत्तरपूजनं किरिष्ये। इति सङ्कल्प्य, आयतनाद्विहिर्वायव्यां दिशि ॐ स्वाहास्वधायुतमृडाग्नये नमः इति मन्त्रेणाग्निं गन्धादिपञ्चोचारैः सम्पूज्य स्थापितदेवतानामुत्तरंपूजनं कुर्यात् – ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीगणपत्यादिस्थापितदेवताभ्यो नमः इति गन्धादिपञ्चोपचारैः सम्पूज्य ॐ अनया पूजया स्वाहास्वधायुतो मृडाग्निः स्थापितदेवताश्च प्रीयन्तामित्युत्सृजेत्। ततो गीतवादित्रशङ्ख्यध्वन्यादिभिः सह नीराजनम् – साज्यं त्रिवर्तिसंयुक्तं विह्नना योजितं मया। दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्। (अन्नावसरे केचिदारार्तिक्यमपि पठन्ति)।। अग्नि की प्रदक्षिणा करे।

अथाशीर्वाद:

(वस्त्रेण शिर आच्छाद्य) ॐ स्वस्ति न इन्द्रोः, दधातु।।१।।

श्रीवर्चस्व मायुष्यमारोग्यमाविधात्पवमानम्महीयते। धान्यं धनं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायु:।।२।।

ॐ पुनस्त्वादित्या रुद्रा वसवः सिमन्धताम्पुनर्ब्रह्माणो वसुनीथयज्ञैः। घृतेन त्वन्तन्व वर्धयस्व सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः।।३।। मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः। शत्रूणां बुद्धिनाशोस्तु मित्राणामुदयस्तव।।४।। आयुष्कामो यशस्कामः पुत्रपौत्रस्तथैव च। आरोग्यं धनकामश्च सर्वे कामा भवन्तु ते।।५।। विघ्ना विनाशमायान्तु नाशमायान्तु शत्रवः। प्रयत्ना सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः (इत्यक्षतफलसहिताभिराशीभिराशीर्वादः)। यजमानो विप्रहस्ताल्लब्धानि आशीदात्मक-नारिकेलादीनि फलानि मङ्गलसूत्रं च स्वपत्न्या अञ्चले निदध्यात्।

। श्लमाप्रार्थनां कुर्यात् देवताग्नि विसर्जनम्।। हस्ते अक्षत पुष्पमादाय

ॐ यान्तु देव (मातृ:) गणाः सर्वे स्वशक्तया - पूजिता मया। इष्टकामप्रसिद्ध्यर्थं पुरागमनाय च।।१।। ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वेमहे। उपप्रयन्तु मरुत: सुदानवऽइन्द्र प्राशुर्भवाशचा।।२।। शिरसि करौ कृत्वा भूमौ जानुभ्यां पतित्वा - ॐ ये च ब्रह्मादयो देवा अस्मिन् यज्ञे समागता:। स्वस्वस्थानं व्रजन्त्वेते शान्ति कुर्वन्तु मे सदा।।३।। भिक्तहोनं क्रियाहोनं विधिहोनश्च यत्कृतम्। देवा क्षमध्वं तत्सर्वं सर्वंदेव कृपाकरा:।।४।। ॐ आवाहितदेवताः स्वस्वस्थानानि गच्छत।। गच्छत्वं भगवन्नग्ने स्वस्थाने कृण्डमध्यतः। हुतमादाय देवेभ्यः शीघ्रं देहि प्रसीद मे।। गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वर। यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छ हुताशन।। ॐ यज्ञं यज्ञं गच्छ यज्ञपतिं गच्छ स्वां योनिं गच्छ स्वाहा। एष ते यज्ञो यज्ञपते सहसुक्तवाकः सर्ववीरस्तञ्जूषस्व स्वाहा।। श्रीगणपतिलक्ष्म्यौ! यजमानगृहे तिष्ठतम् इति सम्प्रार्थ्य गणपतिपीठस्थपूगीफलं गृहे स्थापयेत्। इति पुष्पाक्षतप्रक्षेपेण स्थापितसर्वकलशदेवताग्निश्च विसृज्य सर्वदेवपीठानि सदक्षिणाकानि अमुकगोत्राय अमुकशर्म्मणे आचार्याय तु.। स्वस्तीति प्रतिवचनम्। तत: – ॐ मया यत्कृतं यथावकाशं यथाज्ञानं यथाशक्ति च अमुककर्म तेन श्री अमुकदेव: प्रीयताम्। इति जलाक्षतक्षेपेण कर्मेश्वरार्पणं कुर्यात्। ततः शेषयज्ञोपकरणादिकम् आचार्य दत्वा, साक्षतकरौ सम्पुटीकृत्य-ॐ मया यत्कृतम् अमुकदेवता "मन्त्रपुरश्चरणाख्यं" (हवनशान्त्याख्यं वा) यज्ञकर्म तत्कालहीनं भिक्तहीनं श्रद्धाहीनं द्रव्यहीनञ्च भवतां ब्राह्मणानां वचनात् श्रीगणपत्याद्यावाहित देवताप्रसादाच्च सर्वविधैः परिपूर्णमस्त्वित भवन्तो ब्रुवन्तु।। अस्तु परिपूर्णम्, इति ब्राह्मणा ब्रूयु:। तत आचार्य: यजमानस्य शिरिस करं धृत्वा - ॐ भद्रमस्तु शिवं चास्तु महालक्ष्मी: प्रसीदत्। रक्षन्तु त्वां सदा देवाः सम्पदः सन्तु सर्वदा।। इति वदेत्।

।।इति होम प्रकरणम्।।

जप होमौ तर्पणञ्चाभिषेको विप्र भोजनम्। पञ्चाङ्गोपासनं लोके पुरश्चरणमिष्यते।। ।।सूर्य चन्द्र ग्रहणे स्पर्शान्मोक्ष पर्यन्तं जपकरणे पुरश्चरण फलम्।।

गंगादिनदीस्नानार्थं हेमाद्रिसङ्कल्पः

ॐ स्वस्ति श्रीसमस्तजगदुप्तपत्तिस्थितिलयकारणस्य रक्षाशिक्षाविचक्षणस्य प्रणतपारिजातास्य अच्युतानन्तवीर्यस्य श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य श्रीमदादिनारायणस्य अचिन्त्यापरिमितशक्त्या ध्रियमाणानामव्यक्तमहदहङ्काराकाशवायुतेजोऽम्भः पृथिव्यावरणैरावृतानामनेक-कोटिब्रह्माण्डानामेकतमे आधारशक्तिवराहकूर्माणामुपरिष्टात् स्थितस्य महाकालायमान-श्रीफणिराजशेषस्य सहस्रफणामणिमण्डलमण्डिते ऐरावत-पुण्डरीक-वामनकुमुदाञ्जन-पुष्पदन्त-सार्वभौमसुप्रतीकाह्वयाष्ट्रदिग्ददिन्तशुण्डा-दण्डोत्तम्भितेऽस्मिन् ब्रहाण्डे अतलवितल-सृतल-रसातल-तलातल-महातल-पातालाख्यलोकसप्तकस्योपरिभागे भुवःस्वर्महर्जनस्तपःसत्येति-लोकानामधोभागे भूलींके चक्रवालशैलवालभ्रमित-स्वर्णभुम्यन्तःस्थितशुद्धोदकक्षीरद्धसर्पिः सुरेक्षलवणार्णवपरिवृतपुष्करशाकक्रौञ्च-कुशशाल्मलिप्लक्षजम्बूद्धीपसमन्विते पञ्चाशत्कोटियोजनविस्तीर्णे भूमण्डले कुवलय-कोशाभ्यन्तरकोशवित्स्थितजम्बुद्वीप-कर्णिकायितसुमेरुमुत्तरेण रम्यकहिरण्मयोत्तरकुरुसंज्ञकवर्षमर्यादागिरीणां दक्षिणतो निषधहेमकूटहिमालयानां हरिवर्षिकंपुरुषभारतवर्षमर्यादागिरीणां पूर्वापरयोश्च गन्धमादनमाल्यवतोर्धनुर्वत्संस्थित-भद्राश्वकेतुमालमर्यादाशैलयोर्मध्ये चतुरस्रै लावृतोपशोभिते इन्द्रद्वीपकसेरुताम्रपर्णगभ-स्तिमन्नाग गन्धर्व-वारुण-भारतेति नवभेदोपलक्षिते स्वर्णप्रस्थ-चन्द्रप्रस्थ-शुक्लसुक्तिका-वर्तकमन्दर-हरिण-पाञ्चजन्य-सिंहल-लङकेत्यष्टोपद्वीपदीपिते श्रीमद्भगवतः साक्षाद्यज्ञलिङ्गस्य विष्णोस्त्रैविक्रमे वामपादाङ्गष्टनखनिर्भिन्नोर्ध्वाण्डकटाहविवरेणान्तः-प्रविष्टबाह्य - जलधारायास्तच्चरण-पङ्कावनेजनारुणिकञ्जल्कोपरञ्जितायाः अखिल-जगदघमलापहोपर्स्शनायाः सुमेरुम्ध्र्यधिब्रह्मणश्चतुर्द्धा भिद्यमानाया विष्णुपद्मा हेमकूटा-दिमार्गेण दक्षिणपयोधिं प्रविशताऽलकनन्दाख्येन स्रोतसाऽनुपूतधनुराकारनवसहस्रयोजन-विस्तीर्णे भारतखण्डे महेन्द्रमलयसह्यशक्तिमदृक्षविन्ध्यपारियात्रेति सप्तकुलपर्वतोपशोभिते चम्पकारण्य-बदरिकारण्यान्तर्गत-नैमिषारण्ये हिमवद्-विन्ध्यान्तर्भृतार्यावर्तान्तर्गत-ब्रह्मावर्तैकदेशे कर्मभूमौ लङ्कोज्जयिनीकुरुक्षेत्रादिकाया भुवो मध्यरेखाया: पूर्वदिग्भागे कुमारिकाक्षेत्रान्तर्विर्तिन श्रीमदमुकक्षेत्रे अमुकनद्या अमुकतीरे (श्रीमद्विमुक्तवाराणसीक्षेत्रे श्रीमद्विश्वेश्वरपालितराजधान्यां समस्तनन्दिभृङ्गचादिगणैर्महाविष्ण-वाद्यमरैर्व्यासाद्यष्टर्षिभि-र्विघ्नविनायक-दण्डपाणि-कालभैरवादिभिश्च संसेवितायां सायुज्य-सालोक्यादि-चतुर्विधमुक्तिप्रदायां श्रीमदुत्तरवाहिन्या गङ्गायाः पश्चिमतीरे) विराजमानायां सकलकल्याणसाधन भूमौ गोमयोपलिप्तप्रदेशोल्लिखतस्वस्तिकादौ चन्दनमाल्यादिना स्गन्धिद्रव्यैश्चर्चितेऽस्मिन् गृहे शुभमण्डपे देव-द्विजाग्नीनां सन्निधाने श्रीमत्क्षीरनिधि-

मध्यमध्यासितभुजङ्गपर्यङ्कशयनभगवन्नाभिसरोरुहाधिवासिनो देवतिर्यङमनुष्यादिसकलस्रष्टुः परार्द्धद्वयजीविनो ब्रह्मणो द्वितीये परार्द्धे प्रथमवर्षे प्रथममासे प्रथमपक्षे प्रथमदिवसे तद्द्वितीययामे तृतीये मुहूर्ते रथन्तरादिद्वात्रिंशतकल्पनां मध्ये श्रीश्वेतवाराहकल्पे स्वायम्भुवादिचतुर्दशमन्वन्तराणां मध्ये सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे तत्प्रथमचरणे श्रीविष्णोबौद्धावतारे संवत्सराणामष्टशत्यधिकायां चतुःसाहस्र्यां व्यतिक्रान्तायं तदुपरि व्यतिक्रममाणे श्रीमन्नूपविक्रमार्कशतसंवत्सरान्तर्गत-शालिवाहनशके प्रवर्तमाने चान्द्रसावनसौरनाक्षत्रभ्रमितबार्हस्पत्यज्यानुमानेन प्रभवादिषष्टिसंवत्सराणां मध्येऽमुकनाम्नि संवत्सरेऽमुकगोलापलम्बिनि श्रीमन्मार्तण्ड-मण्डलोदये अमुकायनगते श्रीसूर्ये अमुकऋतौ अमुकमासेमुकपक्षेऽमुकतिथावमुक-नक्षत्रेऽमुककरणेऽमुकराशिस्थे चन्द्रेऽमुकराशिस्थे सूर्येऽमुकराशिस्थे देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा-राशिस्थानस्थितेषु एवं ग्रहगुणगण-विशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रोत्पन्नोऽमकशर्माहं सहस्रावधि पूर्वजन्मान्तरेषु अस्मिन् जन्मिन च आत्मसमवेत-कायेन्द्रिय-वाङ्मनोभिः ज्ञानतोऽज्ञानतो वा कृतानां बाल्य-कौमार-यौवन-वार्धक्येषु जाग्रत्-स्वप्न-सुषुप्त्यवस्थासु मनोवाक्कायकर्मभि: काम-क्रोध-लोभ-मोह-मद-मात्सर्यै: त्वक्-चक्षु-श्रोत्र-जिह्वा-घ्राण-वाक्-पाणि-पाद-पायूपस्थैःसम्भावितानां पापानाम्, ब्रह्महनन-मद्यपान-सुवर्णस्तेय-गुरुतल्पगमन-तत्संसर्गरूपमहापातकानाम, गोहनन-स्तेयी-करण-नरेन्द्राज्ञाभङ्ग-श्रोत्रिय-विप्रादिमानभङ्ग-बुद्धिपूर्वक-बहुकालाधीताभ्यस्त-वेद-शास्त्र-विस्मरणादीनामुपपातका-नाम्, ब्राह्मण-स्त्री-बाल-पशुजातिवध-विधवास्त्रीगमन-शूद्रागमन-दासीगमन-वेश्यागमन-रजस्वलागमन-हीनवर्णागमन-सयोनिजास्त्रीगमन-शरणागतस्त्रीगमन-सगोत्रस्त्रीगमन-अगम्यागमना-दिपापानाम्, पशुयोनिबीजपात-कूटसाक्षित्व, पैशुन्यवाद-मिथ्यापवाद-म्लेच्छ-सम्भाषण-ब्रह्मद्वेषकरण-स्वामिभेदन-मित्रवञ्चन-गर्भपातन-अकाम-ब्राह्मण्यादिस्त्रीस्पर्शन-अभेद्यभेदन-अभक्ष्यभक्षण-अपेयपान-अलेह्यलेहन-अचूष्यचूषण - अनिरीक्ष्यिनरीक्षण-अवाच्यवाचन-अस्पृश्यस्पर्शन-परमर्मभेदन परवृत्तिच्छेदन-देवनिन्दा-ब्राह्मणनिन्दा-गुरुनिन्दा-मित्रनिन्दा-अतिथिनिन्दा-परिवारनिन्दा-वेदनिन्दा-शास्त्रनिन्दा-आत्मस्तुति-क्रूरकर्म-हिंसा-लुब्धक-चौर-पाषण्डिभाषण-सङ्कलीकरणमलिनीकरण-अपात्रीकरण-जातिभ्रंशकर-रसविक्रय-कन्याविक्रय-हयविक्रय-गोविक्रय-खरोष्ट्रविक्रय-दासीविक्रय-अजादिपश्विक्रय-निरर्थकार्द्रवृक्षच्छेदन-ऋणानपाकरण-ब्रह्मस्वापहरण-देवस्वापहरण-राजस्वापहरण-चिताकाष्ठधूम्रचाण्डालादिस्पर्शन-क्षुद्रकर्म-रजस्वलादिमुखास्वादन-कुग्रामवास-आसुरीकर्म-निष्ठुरभाषण-पथिताम्बूलभक्षण-दुराग्रहदुर्भाण्डदुष्प्रतिग्रहग्रहण-असाक्षिभोजन-एकािकमिष्ठान्नभक्षण-आत्मार्थपाककरण-स्त्री-बालक-सहभोजन-यत्यन्न भोजन-यतिस्पृष्ट भोजन-यतिदापितान्नभोजन-शूद्रस्पृष्ट-शूद्रदृष्ट-शूद्रपाचितान्नभोजन-

ग्रहणकालपक्वान्नभोजन-ग्रहणसमयभोजन-पर्वकाल-रात्रिभोजन-अनिवेदितान्नभोजन-हस्तिपरिवष्टान्नादिभोजन-पिशाचोद्देश्यभोजन-वटादिनिषिद्धपत्रभोजन-ग्रामयाजक-देवलक-वृषलीपतिभोजन-शाक्तपतितान्नभोजन-भिन्नकांस्यपात्रभोजन-ताम्र-अलाबु-दारुपाषाण-मृत्पात्रभोजन-क्रमुकादिपात्रभोजन-रजस्वला-चाण्डालादिवाक्यश्रवणभोजन-दग्ध-पृतिगन्धिभुक्तोच्छिष्टभोजन-गणान्नभोजन-शूद्रपात्रस्थान्नभोजन-शूद्रभुक्तशेषान्नभोजन-पंक्तिभेदन-परशय्याशयन-गृहकार्पण्यदोष-अश्रव्य-श्रवण-अहिंस्यहिंसन-अवन्द्यवन्दन-अचिन्त्यचिन्तन-अयाज्ययाजन-अपुज्यपुजन-पुज्यपुजाव्यतिक्रम-मातापितृतिरस्कार-स्त्री-पुरुष-प्रीतिभेदन-पश्वादिहिंसा-स्नान-सन्ध्या-देवपूजा-त्याग-औपासनाग्नित्याग-बलिवैश्वदेवत्याग-गुरु-लघु-स्थूल-सूक्ष्म-पापानामेतत्क्षणपर्यन्तं सञ्चितानामन्येषां च पापानां निरासपूर्वकं प्रायश्चितार्थं सहस्रगोदानजन्य-अयोध्या-मथुरा-माया-काशी-काञ्ची-अवन्तिका-पुरी-द्वारावती-सप्तपुरी-प्रयाग-पुष्कर-कुरुक्षेत्रादि-समस्ततीर्थस्नान-जन्यफलप्राप्तये समस्तिपतृणाम् आत्मनश्च विश्वेश्वरादिलोकप्राप्तये आधारशक्तिमारभ्य सप्तर्षिमण्डलपर्यन्तं कृतराशेः सहस्रवर्षाविच्छन्नवर्षावसाने एकैकवालुकापकर्षणक्रमेण यावद्राशिसमाप्तिः तावत्कालपर्यन्तं श्रीविष्णोः प्रीत्यर्थं मम सकुटम्बस्य सपरिवारस्य उत्पन्नोत्पन्न-आध्यात्मिक-आधिदैविक-आधिभौतिक-त्रिविधतापनिवृत्तये सकलपापक्षयार्थ राजयक्ष्मादि-नाना-विध-वात-पित्त-कफ-जनित-व्याधिविनाशार्थं संग्रामे विवादे वैरिणा सह विग्रहे च विजयार्थम् आयुरारोग्यैश्वर्यादिविविधसम्पत्प्रवृद्धये अधीतानामध्येष्यमाणानां श्रुति-स्मृति-पुराणादिशास्त्राणां अनध्ययने अनभ्यासे च यत्कृतं पापं तज्जनितपाप-निरासार्थं च (नवोपनीतानां वेदग्रहणाधिकारसिद्धये सर्वेषामाप्यायनार्थं च इतरेषामृत्सृष्टानां वेदानां पुनर्ग्रहणार्थं च यातयामदोष-परिहारार्थं यथावद्देवतोपासनया यथावत्फलप्राप्त्यर्थम्) देव-ब्राह्मण-सवितृ-नारायण-सन्निधौगङ्गाभागीरथ्यां (नद्यन्तरेजलाशये वा) प्रवाहाभिमुखो नाभिमात्रजले (अद्यायोत्सर्गोपाकर्मनिमित्तम् स्नानविधिना गण-स्नानं) स्नानं करिष्ये।

तुलादान विधानम्

ग्रहण व्यतिपात जन्मदिन संक्राति पुण्यकाल में तुलादान करावे। यजमान स्थिरचित होकर देव गुरु ब्राह्मण व माता पिता की आज्ञा लेकर मण्डप में पूर्वाभिमुख होकर बैठे आचम्य प्राणायाम् करे।

अथ संकल्पः - ॐ अद्येत्यादिः - सर्वारिष्ट शान्तिपूर्वकं ग्रह जनित वा अमुक महादशाऽन्तिदशा मध्ये सर्वारिष्ट विनाशार्थं श्री महामृत्युञ्जय देवता प्रीत्यर्थम् अमुक पर्वणि अमुक काले अमुक द्रव्येण - तुला दानमहं करिष्ये।

अथवा - ''एकमन्वन्तरकालावच्छिन्नप्रतिलोकपालस्थाननिवास पूर्वकार्किकिणी जालिमालिविमानाधिकरणकाप्सरः पूजासहित शिवपुरगमनपूर्वककल्पकोटिशताविच्छन्न विष्णुपुराधिकरणनिवासकामः सुवर्णरौप्यरत्नतुलापुरुषदानं करिष्ये," तत्रादौ निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं श्रीगणपत्यादीन् पूजियष्ये इति संकल्प्य श्रीगणपत्यादीन् पूजयेत्। ततो दक्षिणोत्तरतुलां बद्धवा रक्तवस्त्रं वेष्टयित्वा तुलादण्डे चतुविंशतिसुवर्णमयीं प्रतिमां दक्षिणतः आरभ्य उद्गतां बद्धवा दण्डमध्यत् विष्णुप्रतिमां माषचतुष्टयनिमिताम् अग्न्युत्तरणपूर्वकं सम्पूज्य बद्धवा ततः कूटयोः सुवर्णमयं विष्णुमनन्त च फलकद्वये भूमिं च सम्पूजयेत्। ततः तोलनीयद्रव्याधिदेवताभ्यो नमः इति गन्धाक्षतैः सम्पूज्य ॐ स्तम्भसहिततुलायै नमः इति स्तम्भसहिततुलां गन्धपुष्पाक्षतमङ्गलसूत्रैः सम्पूज्य तुलाधिष्ठितदेवतापूजनं कुर्यात्, चतुर्विशतिप्रतिमासु - उदकसंस्थां चतुर्विशतिदेवानावाहयेत् तद्यथा - ॐ ईशानाय नम: ईशानमावाहयामि स्थापयामि।।१।। ॐ शशिने नम: शशिनमा。 स्थाः।।२।। ॐ मरुताय नम: मरुतमाः स्थाः।।३।। ॐ रुद्राय नम: रुद्रमाः स्थाः।।४।। ॐ सूर्याय नमः सूर्यमाः स्थाः नम।।५।। ॐ विश्वकर्मणे नमः विश्वकर्माणमाः स्थाः।।६।। ॐ गुरवे नम: गुरुमा, स्था,।।७।। ॐ अङ्गिरोऽग्निभ्यो नम: अङ्गिरोग्नीना, स्था,।।८।। ॐ प्रजापतये नमः प्रजापतिमाहः।।९।। ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः विश्वान्देवानाहयामिः।।१०।। ॐ धात्रे नमः धातारमाः स्थाः।।११।। ॐ पर्जन्यशम्भभ्यां नमः पर्जन्यशम्भ आः स्थाः।।१२।। ॐ पितृभ्यो नम: पितृनाः स्थाः।।१३।। ॐ सौम्याय नम: सौम्यमाः स्थाः।।१४।। ॐ धर्माय नम: धर्ममाः स्थाः।।१५।। ॐ अमरराजाय नम: अमरराजमाः स्थाः।।१६।। ॐ अश्विभ्यां नम: अश्विनौ आः स्थाः।।१७।। ॐ जलेशाय नम: जलेशमाः स्थाः।।१८।। ॐ मित्रावरुणाभ्यां नमः मित्रावरुणावाः स्थाः।।१९।। ॐ मरुदुगणेभ्यो नमः मरुदुगणानावाः स्थाः।।२०।। ॐ धनेशाय नम: धनेशमाः स्थाः।।२१।। ॐ गन्धर्वाय नम: गन्धर्वमाः स्थाः।।२२।। ॐ वरुणाय नमः वरुणमाः स्थाः।।२३।। ॐ विष्णवे नमः विष्णु माः स्थाः।।२४।। इत्यावाह्य सम्पूज्य ततो यजमानो वस्त्राभरणगन्धमालाद्यलंकृत: पुष्पाञ्जलि गृहीत्वा तुलां त्रिः प्रदक्षिणीकृत्य प्राङ्मुख उपविश्य प्रार्थयेत्। ॐ नमस्ते सर्वदेवानां शक्तिरत्वं सत्यमाश्रिता। साक्षिभूता जगद्धात्री निमिता विश्वयोनिना।। एकतः सर्वसत्यानि तथानृतशतानि च। धर्माधर्मकृतां मध्ये स्थापिताऽसि जगद्ति।। त्वं तुले सर्वभूतानां प्रमाणमिह कीर्तिता। मां तोलयन्ती संसारादुद्धरस्व नमोऽस्तु ते।। योऽसौ तत्त्वाधिपो देव: पुरुष: पञ्चविंशक:। स एषोऽधिष्ठितो देवि र्त्वाय तस्मान्नमो नमः।। सिद्धिरस्तु क्रियारम्भे वृद्धिरस्तु धनागमे। पुष्टिरस्तु शरीरे मे शान्तिरन्तु गृहे मम।। नमो नमस्ते गोविन्द तुलापुरुषसंज्ञक। हरे तारयसे यस्मात्तस्माच्छान्ति प्रयच्छ मे।। इति पठित्वा तुलोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्, पुनस्तुलां त्रिः

प्रदक्षिणीकृत्य वामहस्ते सुवर्णमयीं धर्मराजप्रतिमां दक्षिणहस्ते स्वर्णमयी सूर्यप्रतिमाम् उत्तरफलके आरोहयेत्, तत आचार्यो दक्षिणफलके तोलनीयद्रव्यमारोपयेत् – व्रीहयश्च मे यवाश्च मे माषाश्च मे तिलाश्च मे मुद्राश्च मे खल्वाश्च मे प्रियङ्गवश्च मेऽणवश्च मे श्यामाकाश्च मे नीवाराश्च मे गोधूमाश्च मे मसूराश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्। इति सप्तधान्यम्। ॐ अश्मा च मे मृत्तिका च मे गिरयश्च मे पर्वताश्च मे सिकताश्च मे वनस्पतयश्च मे हिरण्यं च मे श्यामं च मे लोहं च मे सीसं च मे त्रपु च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्। इत्यष्टधातवः। लवणगुडसितावस्त्रादिभिर्यथा-शक्ति क्षिपेत् (वा) अभीष्टसिद्धये केवलैकद्रव्येण तुलादानं कार्यम्।

ततो यजमान: तुलामध्यदण्डस्थिदृष्टिर्हरेर्मुख पश्यन्मंत्रौ पठेत् - ॐ नमस्ते सर्वभूतानां साक्षिभूते सनातिन। पितामहे न देवि त्वं निर्मिता परमेष्ठिना। त्वया धृतं जगत्सर्वं सह स्थावरजंगमम्। सर्वभूतात्मभूतस्थे नमस्ते विश्वधारिणि।। इत्यात्माननीश्वरस्मरणपूर्वक गोदोहनकालमात्रं तोलयित्वाततस्तुलामवतीर्य तोलितद्रव्ये गन्धपुष्पाक्षतैः सह तुलसीपत्रं निक्षिप्य ब्राह्मणेभ्यो नमः सम्पूज्य कुशतिलाक्षतजलान्यादाय ॐ अद्येत्यादि ममक्षेमैश्वर्यविजयायुरारोग्यावाप्तये इमान्यात्मसमसन्तोलितसप्तधान्यादिद्रव्याणि स्वस्वर्दैवतानि - अमुकामुकगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दीनानाथेभ्यश्च विभज्य दातुमहमुत्सृजेः केवलकद्रव्यविशेषेण तुलादानकरणे तु अमुकाभीष्टप्राप्तये अमुकद्रव्यमात्म-समतोलितमाचार्यायान्येभ्यो ब्राह्मणेभ्यः (इत्याद्यृहः कार्यः) ततः प्रतिष्ठा - ॐ अद्य कृतैतद्घृतसप्तधान्यादि (वा अमुकद्रव्य) तुलापुरुषदानकर्मणः प्रतिष्ठार्थं हिरण्यमग्निदैवतं (वा तन्मूल्योपकल्पितं रजतं) अमुकामुकगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्य दातुमहमुत्सृजे। इति प्रतिष्ठाप्य ततो यथोत्साहं भूयसीदक्षिणादानं च दत्वा जगदीश्वरं प्रणमेत् -🕉 नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च। जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नम:।। यच्चापराह्न मध्याह्ने सायाह्ने च तथा निशि। कायेन मनसा वाचा कृतं पापमजानता।। जानता वा हृषीकेश पुण्डरीकाक्ष माधव। नामत्रयोच्चारणान्मे पापं यातु सहस्रधा। यद्बाल्ये यच्च कौमारे यौवने वार्धकेऽपि वा। अन्यजन्मकृतं पापिमह जन्मकृतञ्च यत्।। तत्सर्वं नश्यत् क्षिप्रं पुण्यं भवत् चाक्षयम्।। देवता ऋषयो नागा गन्धर्वाश्चाप्सरो-गणा:।। हृष्टा पुष्टा इहागत्य शान्ति कुर्वन्तु मे सदा।। तोलितद्रव्याणि त्वरितं ब्राह्मणादिभ्यो दत्त्वा गृहाद्विसजयेत्, ततो यजमानः शरीरसन्धारितवस्त्राणि संत्यज्य शुद्धनववस्त्राणि वसित्वा हवनं कारयेत, ततः प्रमादादिति पठित्वा ब्राह्मणादीन्सम्भोज्य पश्चात् सुहृद्युक्तो भुञ्जीत।

(इति तुलादान प्रयोगः)

अथ शास्त्रीयगोदान विधि

अथ यजमान: शुभासने प्राङ्मुख उपविश्य दानविध्युक्त-प्रकारेण आचमनादिसर्वविधिं विधाय स्वस्त्ययनञ्च पठित्वा सङ्कल्पं कुः – ओं अद्येत्यादि ममात्मना सह एकविंशतिपुरुषोत्तारणपूर्वकं श्रीपरमेश्वरप्रीतिकामो गोदानं करिष्ये। तदङ्ग ब्राह्मणवरण तत्पूजनं गोपूजनञ्च करिष्ये। तत्रादौ निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं श्रीगणपत्यादीन् पूजियष्ये इति सङ्कल्प्य, यथालब्धोपचारै: श्रीगणपत्यादीन्पूजियत्वा सपत्नीकब्राह्मणवरणं पूजनञ्च कुर्यात्ततो सुशीलादिलक्षणोपेतामव्यङ्गाङ्गी गां प्रोक्षयेत् – ॐ इरावती धेनुमती हि भूत र्वः सूयवासिनी मनवेदसश्या। व्यस्कभ्रारोदसी विष्णवे तेदाधार्थं पृथिवीमिभतो मयूखै:। इति सम्प्रोक्ष्य आवाहनम् – ॐ आवाहयाम्यहं देवी गां त्वां त्रैलोक्यमातरम्। यस्या: स्मरणमात्रेण सर्वपापप्रणाशनम्।।

तद्यथा - शृङ्गमूलयो: ब्रह्मविष्णुभ्यां नम: ब्रह्मविष्णु आवाहयामि।।१।। शृङ्गाग्रे सर्वतीर्थेभ्यो नमः सर्वतीर्थानावाहयामि।।२।। शिरोमध्ये महादेवाय नमः महादेवमावाः ।।३।। ललाटाग्रे गौर्य्ये नमः गौरीमावाः ।।४।। नासावंशे षण्मुखाय नमः षण्मुखमावाः ।।५।। कर्णयोः अश्विभ्यां नमः अश्विनौ आवाः।।६।। नेत्रयोः शशिभास्कराभ्यां नमः शशिभास्करौ आवाः।।७।। दन्तेषु सर्ववायवे नमः वायुमावाः।।८।। जिह्वायां वरुणाय नमः वरुणमावाः।।९।। हॅंकारे सरस्वत्यै नमः सरस्वतीमावाः।।१०।। गण्डयोः मासपक्षाभ्यां नमः मासपक्षौ आवाः।।११।। ओष्ठयोःसन्ध्याद्वयाय नमः सन्ध्याद्वयम् आवाः।।१२।। ग्रीवायाम् इन्द्राय नमः इन्द्रमावाः।।१३।। उरसि साध्येभ्यो नमः साध्यानावाः।।१४।। जंघयोः धर्माय नमः धर्ममावाः।।१५।। खुरमध्ये गन्धर्वेभ्यो नमः गन्धर्वमावाः।।१६।। खुराग्रेषु पन्नगेभ्यो नमः पन्नगमावाः।।१७।। खुरमध्ये अप्सरोगणेभ्यो नमः अप्सरोगणानावाः।।१८।। पृष्ठ एकादशरुद्रेभ्यो नमः एकादशरुद्रानावाः।।१९।। सर्वसन्धिषुवसुभ्यो नमः वसूनावाः।।२०।। श्रोणीतटे पितृभ्यो नमः पितृनावाः।।२१।। पुच्छे सोमाय नमः सोममावाः।।२२।। अधोगात्रेषु द्वादशादित्येभ्यो नमः द्वादशादित्यानावाः।।२३।। केशेषु सूर्यरिश्मभ्यो नमः सूर्यरश्मीनावाः।।२४।। गोमूत्रे गङ्गायै नमः गङ्गामावाः।।२५।। गोमये यमुनायै नमः यमुनामावाः।।२६।। क्षीरे सरस्वत्यै नमः सरस्वतीमावाः।।२७।। दिध्न नर्मदायै नमः नर्मदामावाः।।२८।। घृते वह्नये नमः वह्निमावाः।।२९।। रोमसु त्रयस्त्रिंशत्कोटिदेवेभ्यो नमः त्रयस्त्रिंशत्कोटिदेवानावाः।।३०।। उदरे पृथिव्यै नमः पृथिवीमावाः।।३१।। स्तनेषु चतुर्भ्यः सागरेभ्यो नमः चतुरः सागरानावाः।।३२।। सर्वशरीरे कामधेनवे नमः कामधेनुमावाः।।३३।। इत्यावाह्य पूजयेत्।।

पाद्यम् - सौरभेयि सर्वहिते पवित्रे पापनाशिनि। प्रतिगृहण मया दत्तं पाद्यं त्रैलौक्यवन्दिते।

अर्घ्यम् - देहस्थाया च रुद्राण्याः शङ्करस्य सदा प्रिये। धेनुरूपेण सा देवी मम पापं व्यपोहतु।।

आचमनीयम् - या लक्ष्मीः सर्वभूतेषु या च देवेष्ववस्थिता। धेनुरूपेण सा देवी मम पापं व्यपोहतु।।

स्नानम् - सर्वदेवमये मातः सर्वदेवनमस्कृते । तोयमेतत्सुखस्पर्शं स्नानार्थं गृह्ण धेनुके।। इति स्नानार्थमभ्युक्ष्य।

वस्त्रम् - आच्छादनं गवे दद्यात्सम्यक् शुद्धं सुशोभनम्। सुरिभर्वस्त्रदानेन प्रीयतां परमेश्विर।। रक्तचन्दनम् - सर्वदेवप्रियं देवि चन्दनं चन्द्रसित्रभम्। कस्तूरीकुङ्कुमाढ्यञ्च प्रीत्यर्थं प्रितगृद्यताम्।। अक्षतान् तिलजान् देवि शुभ्रचन्दनिमिश्रतान्। गृहाण परमप्रीत्या गोस्त्वं त्रिदिवपूजिते।। शृङ्गभूषार्थं स्वर्णशृङ्गम्। चरणभूषणार्थं घण्टाम्। दोहनार्थं कांस्यपात्रम्। सर्वालंकारार्थं यथाशिक्तद्रव्यम्।

पुष्पमाला - पुष्पमालां तथा जातिपाटलाचम्पकानि च। पुष्पाणि गृह्ण धेनो त्वं सर्वविष्नप्रणाशिनि।। इति मालां बध्नीयात्।

धूपम् - देवद्रुमरसोद्भूतं गोघृतेन समन्वितम्। प्रयच्छामि महाभागे धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।। दीपम् - आनन्ददः सुराणाञ्च लोकानां सर्वदा प्रियः। गौस्त्वं पाहि जगन्मातः दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।

नैवेद्यम् - सुरभिर्वैष्णवी माता नित्यं विष्णुपदे स्थिता। ग्रासं गृह्णातु सा धेनुर्याऽस्तु त्रैलोक्यवासिनी।।

इत्याहारं निवेद्य पुष्पाञ्चलिं दद्यात् - ॐ गोभ्यो यज्ञाः प्रवर्तन्ते गोभ्यो देवाः समुत्थिताः। गोभ्यो वेदाः समुत्कीर्णाः षङङ्गपादसक्रमाः। ॐ अनेन पूजनेन गोदेवता प्रीयताम्। ततो गोपुच्छतर्पणम् - सव्यं भूत्वा पूर्वमुखो यवाम्बुकुशान्वितं गोपुच्छं दक्षकरे निधाय पुच्छस्याधः प्रदेशे जलभाजनं स्थापियत्वा तर्पयेत् -

- ॐ ब्रह्मा तृप्यतु, ॐ विष्णुस्तृप्यतु, ॐ रुद्रस्तृप्यतु, ॐ मनवस्तृप्यन्तु, ॐ ऋषयस्तृप्यन्तु,
- ॐ रुद्रातिपुत्रास्तृप्यन्तु, ॐ साध्यास्तृप्यन्तु, ॐ मरुद्गणास्तृप्यन्तु, ग्रहास्तृप्यन्तु,
- ॐ नक्षत्राणितृप्यन्तु, ॐ योगास्तृप्यन्तु, ॐ राशयस्तृप्यन्तु, ॐ वसुधा तृप्यतु,
- ॐ अश्विनौ तृप्येताम्, ॐ यक्षास्तृप्यन्तु, ॐ रक्षांसि तृप्यन्तु, ॐ मातरस्तृप्यन्तु,
- ॐ रुद्राणि तृप्यन्तु, ॐ पिशाचास्तृप्यन्तु, ॐ सुपर्णास्तृप्यन्तु, ॐ पशवस्तृप्यन्तु,
- ॐ दानवास्तृप्यन्तु, ॐ योगिनस्तृप्यन्तु, ॐ विद्याधरास्तृप्यन्तु, ॐ ओषधयस्तृप्यन्तु,
- ॐ दिग्गजास्तृप्यन्तु, ॐ यक्षास्तृप्यन्तु, ॐ देवपत्न्यस्तृप्यन्तु, ॐ लोकपालास्तृप्यन्तु,
- ॐ नारदस्तृप्यतु, ॐ जन्तवस्तृप्यन्तु, ॐ स्थावरास्तृप्यन्तु, ॐ जङ्गमास्तृप्यन्तु,

(कण्ठी कृत्वा) ॐ सनकस्तृप्यतु, ॐ सनन्दनस्तृप्यतु, ॐ किपलस्तृप्यतु, ॐ आसुरितृप्यतु, ॐ वोढुस्तृप्यतु, ॐ पञ्चशिखस्तृप्यतु, (अपसव्यम्) ॐ कव्यवाड् तृप्यतु, ॐ अनलस्तृप्यतु, ॐ सोमस्तृप्यतु, ॐ यमस्तृप्यतु, ॐ अर्यमातृप्यतु, ॐ अग्निष्वातास्तृप्यन्तु, ॐ बिहिषदस्तृप्यन्तु, ॐ सोमपाः पितरः तृप्यन्तु, ॐ यमस्तृप्यतु, ॐ धर्नराजस्तृप्यतु, ॐ मृत्युस्तृप्यतु, ॐ अन्तकस्तृप्यतु, ॐ वैवस्वतस्तृप्यतु, ॐ कालस्तृप्यतु, ॐ सर्वभृतक्षयकरस्तृप्यतु, ॐ औदुम्बरस्तृप्यतु, ॐ दघ्नस्तृप्यतु, ॐ नीलस्तृप्यतु, ॐ परमेष्ठिनस्तृप्यन्तु, ॐ वृकोदरस्तृप्यतु, ॐ चित्रस्तृप्यतु, ॐ वित्रस्तृप्यतु, ॐ चित्रगुप्तस्तृप्यतु,

ॐ मातृपक्षाश्च ये केचिद्ये केचित्पितृपक्षकाः। गुरुश्वशुरबन्धूनां ये कुलेषु समुद्धवाः।। ये मे कुले लुप्तिपण्डा पुत्रदारिववर्जिताः। क्रियालोपगता ये च जात्यन्धाः पङ्गवस्तथा।। विरूपा आमगर्भाश्च ज्ञाताज्ञातकुले मम। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गोपुच्छोकदतर्पणः।। वृक्षयोनिगता ये च पर्वतत्वं गताश्च ये पशुयोनिगता ये च ये च कीटपतङ्गकाः। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गोपुच्छोदकतर्पणैः।। नरके रौरवे ये च महारौरवसंस्थिताः। असिपत्रवने घोरे कुम्भीपाकस्थिताश्च ये।। ते सर्वे स्वार्थबद्धा मृता ये च शस्त्रघातमृवाश्च ये। ब्रह्माहस्तमृता ये च नारीहस्तमृताश्च ये।। ते सर्वे ।। पाशमध्ये मृता ये च स्वल्पमृत्युवशंगताः। सर्वे च मानवा नागाः पशवः पिक्षणस्तथा। ते सर्वे ।। आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं देविषिपितृमानवा। तृप्यन्तु सर्वदा सर्वे गोपुच्छोदकतर्पणैः।।

ततो रज्जवादिनिर्मुक्तां सवत्सां गां प्राङमुखीमवस्थाप्य दाता पुच्छदेशे प्राङ्मुखस्तिष्ठेत्, पात्रभूतो विप्रस्तत्रैव दक्षिणत उद्ङ्मुखस्तिष्ठेत् (पात्र भूतो विप्रस्तत्रैव उद्ङ्गमुखस्तिष्ठेत्) दाता ससुवर्णकुशाक्षतजलं नीत्वा सङ्कल्पं कुर्यात् –

अथ गोदाने बृहत्सङ्कल्पः - ॐ इह पृथिव्यां जम्बूद्वीपे भारतवर्षे कुमारिकाखण्डे आर्यावर्तैकदेशे अमुकक्षेत्रे श्रीभागीरथ्याः अमुकदिग्विभागे इत्यादिदेशं समनुकीर्त्य ॐ ब्रह्मणोऽिह द्वितीये परार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमस्य किलयुगस्य प्रथमचरणे बौद्धावतारेऽमुकनाम्नि संवत्सरेऽयने ऋतौ मासे पक्षे तिथौ वारे नक्षत्रे योगेऽमुकराशिस्थिते चन्द्रेऽमुकराशिस्थिते सिवतिर अमुकराशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा - यथा स्थानस्थितेषु सत्सु एवं गुणिविशिष्टे देशे काले च अमुकगोत्रोऽमुकोऽहं मम श्रतिस्मृतिपुराणेतिहासोक्तफलावाप्तये ज्ञाताऽऽज्ञातानेक-जन्मार्जितमनोवाक्काय-कर्मजन्यपापापनुत्तये निखिलदुःखदौर्भाग्यदुःस्वप्नदुनिमित्त-दुष्टग्रहबाधाशान्तपूर्वकं धनधान्यायुरारोग्यद्विपदचतुष्पदसन्तिचतुर्वर्गादिनिखिल-वाच्छितसिद्धये गोरोमसंख्यक-दिव्यवत्सराविच्छन्नस्वर्गलोकस्थितिकामश्च पितृणां निरितशयानन्दब्रह्मलोकावाप्तये च

श्रीपरमेश्वरप्रीतये इमां सुपूजितां सालङ्कारां सवत्सां गां रुद्रदैवताममुकगोत्रायाऽमुकशर्म्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे। ब्राह्मणहस्तोपिर कुशाक्षतजलं दत्वा – द्यौस्त्वा ददातु पृथिवी त्वा प्रतिगृह्णातु, इत्यनेन विधिना गृह्णीयात्, ब्राह्मणः कोदात् इति पठेत्, ततः प्रतिष्ठा–अद्य कृतैदद्गोदानकर्मण साङ्गतासिद्धये इदं सतुलसीदलं हिरण्यम् अग्निदैवतम् अमुकगोत्रायः। यजमानः प्रार्थनां कुर्यात् – ॐ यज्ञसाधनभूता या विश्वपापौघनाशिनी। विश्वरूपधरो देवः प्रीयतामनया गवा।।

ततो वान्धवैः सह यजमानो विप्र-सवत्सगोप्रदक्षिणा चतुष्टयं कुर्यात् ॐ यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च। तानि नाशय धेनो त्वं प्रदक्षिणपदे पदेः।। इति चतुःसंख्यकपरिक्रमणं विधाय करौ बद्धवा प्रणमेत् – ॐ गावोममाप्रतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठतः। गावो मे हृदये सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम्।। नमो गोभ्यः श्रीमतीभ्यः सौरभेयीभ्य एव च। नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च पिवत्राभ्यो नमो नमः।। गावः स्वर्गस्य सोपानं गावो धन्याः सवाहनाः। सर्व देवास्तनौ यस्याः सा धेनुर्वरदाऽस्तु मे ततो गोकर्णे जपेत् – ॐ ह्रीं नमो भगवत्यै ब्रह्ममात्रे विष्णुभिगन्यै रुद्रदेवतायै सर्वपापप्रमोचिन्यै। ततो ब्राह्मणो गोपुच्छान्वितजलेन यजमानशिरिस निषिच्य तिलकाशीर्वादादीनि दद्यात्, गाञ्च विसर्ज्य किञ्चिद्मु जेत्। गोपुच्छोदकम् अश्वत्थमूले सरिस वा क्षिपेत्।। इति शास्त्रीयगोदान विधिः।।

।।अथ कार्तवीर्याजुन अनुष्ठान प्रयोगः।।

आचम्यप्राणानायम्य देशकालौ स्मृत्वा मम श्रीकार्तवीर्यार्जुनदेवताप्रीतिद्वार क्षिप्रममुकशर्मणो बुद्धिहरणपूर्वकस्वधनप्राप्तये मनोभिलिषतकार्यसिद्ध्यर्थं वा कार्तवीर्यसिद्ध्यर्थं दीपदानपूर्वकं ॐ ह्रीं कार्तवीर्य इति श्लोकरूपमन्त्रस्य पंचशतसंख्याकजपं तदन्ते ''कार्तवीर्यः खलद्वेषी'' इति द्वादशसंख्याकान् पाठानद्यारभ्य यथाकालपर्यन्तं ब्राह्मणद्वारा कारियष्ये। इति सङ्कल्प गणेशपूजनं कुर्यात्।

कार्तवीर्यार्जुनोनामेतिश्लोकरूपमन्त्रजपार्थं कार्तवीर्यार्जुनस्तोत्रपाठार्थं चैभिः पुष्पाञ्जली पुगीफलद्रव्येरमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं त्वामहं वृणे। वृतोऽस्मि। यथाविहितं जपं पाठं च कुरु। यथाज्ञानं करवाणि। ब्राह्मणः आचम्य प्राणानायम्य यथा देशकालौः अमुकगोत्रोऽमुकशर्मा अमुकगोत्रस्यामुकशर्मणे यजमानस्य कृतसकल्पसिद्ध्यर्थं कार्तवीर्यार्जुनदीपदानं मन्त्रजपं पाठं च करिष्ये। गोमयोपलिप्तायां भूमौ ताम्रपात्रे वा रक्तचन्दनैः षटकोणं कृत्वा तन्मध्ये ॐ फ्रौंबीजं लिखित्वा तदुपरि ताम्रमयदीपपात्र

निधाय ततो दीपवित पात्रे संस्थाप्य अनेन शुद्धिगव्येन पूरयामि जगत्पते। कार्तवीर्य महावीर्य कार्यं सिद्ध्यतु मे हि तत्।। इत्यनेन घृतपूर्णं कृत्वा दीपपात्रादिक्षणभागेऽधोग्रां दिक्षणाधारां छुरिकां "ॐ नमः सुदर्शनास्त्राय फट्" इति मन्त्रेण निखनेत्।। कार्तवीर्य नृपाधीश योगज्विलतिवग्रह।। भव सिन्निहितो देव ज्वालारूपेण वर्तिषु।। इतिमन्त्रेण पश्चिमाभिमुखं दीपं प्रज्वाल्य ततो दीपस्य प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा श्रीकार्तवीर्याजुनदीपदेवतायै नमः इति चन्दनपुष्पादिभिः सम्पूज्य दीपमन्त्रं संकल्प्य, कार्तवीर्यमहाबाहो भक्तानाभयङ्कर। दीपं गृहाण मद्दत्त कल्याणं कुरु सर्वदा।। अनेन दीपदानेन यजमानाभीष्ट प्रयच्छतु। ततो दीपाग्रे सहस्र जपः कार्यः।

अस्य श्रीकार्तवीर्यार्जुनस्तोत्रमन्त्रस्य दत्तात्रेय ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः श्रीकार्तवीर्यार्जुनो देवता, फ्रौं बीजं हीं शक्तिः क्लीं कीलकं यजमानाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। कार्तवीर्यार्जुनाय नमः हृदयाय नमः कार्तः शिरसेस्वाहा कार्तः शिखायै वषट् ।। कार्तः कवचाय हुम् कार्तः नेत्रत्रयाय वौषट्। कार्तः अस्त्राय फट् । इतिषडङ्गन्यासः।

ध्यानम् - सहस्रबाहुं सशरं सचापं रक्ताम्बरं रक्तिकरीटकुण्डलम्। चौरादिदुष्ट-रिपुनाशनिमष्टदं तं ध्यायेन्महावलविजृम्भितकार्तवीर्यम्।। इति ध्यानम्।।

ॐ ह्रीं कार्तवीर्यार्जुनो नाम राजाबाहुसहस्रवान्। तस्य स्मरणमात्रेण हृतं नष्टं च लभ्यते। इति जपः कार्यः।।

जपान्ते पुनर्न्यासं कृत्वा जपं निवेदयेत्।

अथ पाठ - कार्तवीर्यः खलद्वेषी कृतवीर्यसुतो बली। सहस्रबाहुः शत्रुघ्नो रक्तवासा धनुर्धरः।।१।। रक्तगन्धो रक्तमाल्यो राजास्मर्तुरभीष्टदः। द्वादशैतानि नामानि कार्तवीर्यस्य यः पठेत्।।२।। सम्पदस्तस्य जायन्ते जनाः सर्वे वशं गताः। राजानो दासतां यान्ति रिपवो वश्यतां तथा।।३।। आनयत्याशु दूरस्थं क्षेमलाभयुतं प्रियं। सर्विसिद्धिकरं स्तोत्रं जप्तृणां सर्वकामदम्।।४।। कार्तवीर्य महावीर्य सर्वशत्रुविनाशन। सर्वत्र सर्वदा तिष्ठ दुष्टान्नाशय पाहि माम्।।५।। उत्तिष्ठ दुष्टदमन सप्तद्वीपकपालक। त्वामेव शरणं प्राप्त सर्वतो रक्ष रक्ष माम्।।६।। दुष्टघ्न किं त्वं स्विपिप किं तिष्ठसि चिरायसि। पाहि नः सर्वदा सर्वभयेभ्यः स्वसुतानिव।।७।। मितभङ्गः स्वरो हीनः शत्रुणां मुखभञ्जनम्। रिपूणां च सभामध्ये सर्वत्र विजयं कुरु।।८।। यस्य स्मरण मात्रेण सर्वदुःखक्षयो भवेत्। तं नमामि महावीरमर्जुनं कृतवीर्यजम्।।९।। हैहयाधिपतेः स्तोत्रं सहस्रावृत्तिकं कृतम्। वाञ्चिछतार्थप्रदं नृणां जपं सम्यक् जपेत यदि।।१०।।

"प्रणम्य क्षमस्व" इति विसर्जयेत्। प्रतिदिनमेव जपसमाप्तिः कार्यः। शुभदिने समाप्य ब्राह्मणं सम्पूज्य दक्षिणां दत्त्वा भोजनम् कर्मेश्वरार्पणं कुर्यात्।। इति कार्तवीर्याजुनप्रयोगः।।

अथायुष्याभिवृद्धये जन्मोत्सवविधिः

जन्मदिने पुत्रकलत्रसहितो यजमानो ब्राह्मे मृहर्ते उत्थाय तिलतण्डुलचूर्णमिश्रितगङ्गोदकेन स्नात्वा सन्ध्यादिनित्यक्रियां कुर्यात्। ततः सामग्रीं सम्पाद्याहते वाससी भूषणानि च धृत्वा गृहान्तः शुभासने प्राङ्मुख उपविश्य स्वदक्षिणतः पत्नीं तस्या दक्षिणतो बालं चोपवेश्य धृतपवित्रपाणिराचान्तः प्राणायामं विधाय ॐ अद्यः अस्य शिशोः (मम वा) दीर्घायुः श्रीतेजोवृद्धिद्वारा श्रीजगदीश्वरप्रीत्यर्थमद्य दिने वर्धापनाख्यं कर्म करिष्ये। इति संकल्प्य निर्विघ्नतार्थं श्रीगणपत्यादिपूजनं कुर्यात्। ततो यज्ञीयकाष्ट्रपीठे पंक्तिरूपेण स्थापितेष्वेकविंशत्यक्षतपुञ्जेषु निम्ना देवता आवाहयेत्। तद्यथा - ॐ गणपतये नमः श्रीगणपतिमावाहयामि १, (एवं सर्वत्र) ॐ कुलदेव्यै नमः कुलः २, ॐ प्रजापतये नमः प्र. ३, ॐ विष्णवे नमः वि. ४, ॐ महेश्वराय नमः म. ५, ॐ इष्ट देवतायै नमः इष्ट. ६, ॐ सूर्याय नम: सू. ७, ॐ जन्मक्षाय नम: ज. ८, ॐ षष्ठीदेव्यै नम: ष. ९, ॐ मार्कण्डेयाय नम: माः १०, ॐ अश्वत्थाम्ने नम: अश्वः ११, ॐ बलये नम: बलिः १२, ॐ व्यासाय नमः व्याः १३, ॐ विभीषणाय नमः विः १४, ॐ कृपाचार्य्याय नमः कृः १५, ॐ परश्रामाय नम: प. १६, ॐ बलभद्राय नम: ब. १७, ॐ हन्मते नम: ह. १८, 🕉 स्थानदेवतायै नम: स्था॰ १९, ॐ वास्तुदेवतायै नम: वा॰ २०, श्री श्रेत्रपालाय नम: क्षे॰ २१, इत्यावाह्य ॐ एतन्तेति प्रतिष्ठाय। ॐ आवो देवा स ईमहे यामं प्रयत्यध्वरे। आवो देवा स आशिषो यज्ञियासो हवामहे, ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीगणपत्याद्यावाहितदेवताभ्यो नमः आवाहनं समर्पयामि, एवं प्रतिवाक्यान्ते आसनं समर्पयामित्यादि पठित्वा गन्धाक्षतपुष्पधूपादिना पृथक् पृथगेकतन्त्रेण वा पूजनं विधाय षष्ट्यै दिधभक्तनैवेद्यं निवेद्य पूजनान्ते प्रार्थयेत् - ॐ जय देवि जगन्मातर्जगदानन्दकारिणि। प्रसीद मम कल्याणि महाषष्टि नमोस्तु ते।। मार्कण्डेयाय मुनये नमस्ते महदायुषे। चिरञ्जीवी यथा त्वं भो भविष्यामि तथा मुने।। रूपवान् वित्तवानायुःश्रिया युक्तं च मां कुरु (शिशुं कुरु)।। चिरञ्जीवी यथा त्वं भो मुनीनां प्रवरो द्विज! कुरष्व मुनिशार्दूल! "तथा मां चिरजीविनम्" (बालं मे चिरजीविनम्)।।

त्रैलोक्ये यानि भूतानि स्थावराणि चराणि च।। ब्रह्मविष्णुशिवैः सार्द्धं रक्षां कुर्वन्तु तानि मे।। ॐ अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनूमांश्च बिभीषणः। कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरजीविनः।। सप्तैतांश्च स्मरेन्नित्यं मार्कण्डेयमथाष्टमम्। जीवेद्वर्षशतं साग्रमपमृत्युविवजितः।। प्रीयन्तां देवताः सर्वाः पूजां गृहणतु तां मम। प्रयच्छन्त्वा युरारोग्यं यशः सौख्यञ्च सर्वदा।। मन्त्रन्यूनं क्रियान्यूनं द्रव्यन्यूनं महामुने! यदर्चितं मया देव परिपूर्ण तदस्तु मे।। ततः पायसेन 'सर्वेभ्यो भूतेभ्यो नमः' इति बलिं दद्यात्। तदनुग्रहनिमित्तकदानानि कुर्यात्। ततिस्तलगुडमिश्रितं पयः पिबेत्। तत्र मन्त्रः – ॐ सगुडं तिलसम्मिश्रमञ्जल्यर्धमितं

पयः। मार्कण्डेयाद्वरं लब्ध्वा पिवाम्यायुर्विवृद्धये।। ततो मातापितृगुर्वाचार्यादीन् प्रणम्याशीर्वादं श्रीगुरुद्वारा गृह्वीयात्। ततो वर्षफलं ज्योतिर्विदः सकाशाच्छ्रत्वा तं दक्षिणावस्त्रादिभिः सन्तोषयेत्। अन्न-कचित्पूजितदेवतानां नाममन्त्रेण प्रत्येकमष्टविंशतिसंख्यं तिलहोमश्चोक्तः। ततो विप्रभोजनम्।। इति जन्मदिनोत्सवविधिः।।

अथ विष्णुप्रतिमा विवाह विधिः

अथ कन्यापिता विवाहात्पूर्वं चन्द्रतारानुकूले शुभे दिने स्नात्वा नित्यकर्मं समाप्य नवमहतं वासः परिधाय स्वासने प्राङ्मुखः समुपविश्य स्वदक्षिणतः कन्यां समुपवेश्य दीपं प्रज्वाल्य आचम्य प्राणानायम्य स्वस्तिवाचनशान्तिपाठादिकं कृत्वा सुमुखश्चेत्यादि गणेशादिस्मरणानन्तरं सङ्कल्पं कुर्य्यात्। अद्येह ममामुकराशेरस्याः कन्याया जन्मसामयिकलग्नात अमुकामुकस्थान-स्थितामुकग्रहै: संसुचित: बालवैधव्यादि-दोष-नानाविधवन्ध्या-काकवन्ध्या-दुर्भगा-मृतापत्या-दुःशीला स्वैरिणी-वैरिणी-दुश्चारिणी-कुलटा-धूर्तादि-दोषनिराकरणपूर्वक सौभाग्यप्राप्तिद्वारा आयुरारोग्यैश्वर्य्याभि-वृद्धिपूर्वकदाम्पत्यैश्वर्य्य सुखावाप्तये श्रीपरमेश्वरप्रीतये च विष्णुप्रतिमया कन्योद्वाहकर्माहं करिष्ये तत्पूर्वाङ्गत्वेन कलशस्थापनपुण्याहवाचन-नीराजन-मातृकापुजनवसोर्धारा-निपातनायुष्यमन्त्रजपाभ्युदयिकनान्दीश्राद्धादीनि करिष्ये। तत्रादौ निर्विघ्नतासिद्धये श्रीभगवतो गणेश्वरस्य पुजनं करिष्ये। इति सङ्कल्प्य गणपत्यादिपुजनं कृत्वा आचार्यं सम्पूज्य एभिर्गन्धादिभिः विष्णुप्रतिमाप्रतिग्रहार्थं त्वामहं वृणे इति वरणं कृत्वा प्रार्थयेत्। उद्घाहियष्ये विधिवदच्युतेन मनोहराम्। कन्यां सौभाग्यसौख्यार्थहेतवेऽह द्विजोत्तम।। इति सम्प्रार्थ्य सुवर्णनिर्मितां चतुर्भुजां शंखाद्यायुधसहितां विष्णु-प्रतिमां अग्न्युत्तरणपूर्वकं पञ्चामृतेन संस्नाप्य तण्डुलपूर्णपात्रे संस्थाप्य – ॐ एतं ते देवसवितर्यज्ञं प्राहर्बृहस्पतये ब्रह्मणे तेन यज्ञमवतेन यज्ञपतिं तेन मामव। ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ र्ठः समिमं दधातु विश्वे देवास इह मादयन्तामों ३ प्रतिष्ठ। ॐ भूर्भुव: स्व: सुवर्णप्रतिमायां श्रीविष्णो इहागच्छेह तिष्ठेह सुप्रतिष्ठितो वरदो भव। इति प्राणप्रतिष्ठां विधाय कन्याया मङ्गलस्नानं कारयित्वा कंकणबन्धननूतनवस्त्रभूषणादिभिः कन्यामलंकृत्य विष्णुप्रतिमासमीपे समानीय तस्या हस्तेन पुजनसङ्कल्पं कारयेत्। तद्यथा अद्यह अमुकगोत्राया अमुकनामधेयाया मम जन्म सामियक लग्नात अमुकामुक स्थानस्थितामुकामुकग्रहैः संसूचितवालवैधव्यदोषनिराकरण-पूर्वकसौभाग्यसमृद्धिद्वारा भविष्यद्भर्तुरारोग्यैश्वर्य्याभिवृद्धिकामा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं च सुवर्णप्रतिमायां श्रीविष्णोः पूजनं करिष्ये। इति संकल्प्यनिर्मितां रुचिरां शंखगदाचक्राब्ज-शोभिताम्। दद्यातां वाससी पीते कुमुदोत्पलमालिनीम्। इति ध्यात्वा पाद्यादीनि समर्पयामि विष्णवे नमः इति यथोपचारैः विष्णु सम्पूज्य पृष्पाञ्जलिं गृहीत्वा प्रार्थयेत्। देहि विष्णो वरं देव कन्यां पालय दुःखतः। पति जीवय कन्यायाश्चिरं पुत्रसुखं कुरु।। इति सम्प्रार्थ्य मधुपर्केण अर्चियत्वा वस्त्रालंकार-पुष्पमालादिकं समर्प्य कन्याविष्णुप्रतिमान्तरालेऽन्त:पटं धृत्वा कन्यावस्त्रपरिधानानन्तरं अन्त:पटमपसार्य समञ्जनान्ते विवाहोपयोगिमङ्गलश्लोकपाठं कारियत्वा कन्यापिता कन्यादानसंकल्पं कुर्यात्। ॐ विष्णुः २ इत्यादि अद्यह अमुकोऽहम अमुकराशेरमुकनामद्येयाया ममास्या: कन्याया जन्मसामयिक अमुकामुकस्थानस्थितामुकामुकग्रहै: संसूचितवैधव्यादिदोषनिराकरणपूर्वक-सौभाग्यसिद्धिद्वारा एतद्भविष्यद्भर्तुंरायुरा-रोग्यैश्वर्यवृद्धिकामः अमुकगोत्र। अमुकप्रवरां अमुकनाम्नीं श्रीरूपिणीं इमां कन्यां विष्णवे तुभ्यं समर्पयामि। इति संकल्प्य (तदुत्तरं अंचलग्रन्थि बन्धनादि सर्वं विवाहविधिवत् कृत्वा) 'परित्वा' इत्यर्कविवाहस्थित-दशमिर्मन्त्रैरधस्तादुपरिष्टाश्च मन्त्रावृत्या-कन्यां प्रतिमां च दशतन्तुसूत्रेण परिवेष्टयेत्। ततः किंचित् स्थित्वा प्रतिमां निःसार्य – अद्य वैधव्यदोषनिवृत्तये कृतैतद्विष्णुप्रतिमा-विवाहकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं सादगुण्यार्थं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं च इमां दक्षिणां विष्णवे तुभ्यं सम्प्रददे इति समर्पयेत्। ततो विष्णुप्रतिमामाचार्याय समर्पयेत्। तत्र संकल्पः - अद्येह अमुकगोत्रामुकराशिरमुकनामद्येयाह मम जन्मसामयिकलग्नात् अमुकामुक-स्थानस्थितामुकामुकामुकग्रहैः संसूचितवैधव्यादिनानादोषनाशनपूर्वकभविष्यन्मद्भर्तु-शरीरारोग्यायुर्वृद्धिकामा इमां सुपूजितां विष्णुप्रतिमां अग्निदैवतां अमुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे। ॐ तत्सत् इति संकल्प्य प्रार्थनावाक्यानि पठेत् -यन्मया पूर्वजनुषि घ्नन्त्या पतिमनागसम्। विषोपविषशस्त्रद्यैर्हतो वातिविरक्तया।।१।। प्राप्यमाणं महाघोरं यश:सौख्यधनापहम्। वैधव्याद्यतिदु:खौघनाशाय सुखलब्धये।।२।। बहुसौभाग्यलब्ध्यै च महाविष्णोरिमां तनुम्। सौवर्णीं निर्मितां शक्तया तुभ्यं संप्रददे द्विज।।३।। इति पठित्वा द्विजकरे सोपकरणं विष्णुप्रतिमां दत्त्वा अनघाऽहमस्मीति त्रिवारं वदेत्। ब्राह्मणश्च - ॐ द्यौस्त्वा ददातु पृथिवी त्वा प्रतिगृह्णातु - ॐ स्वस्तीति प्रतिगृह्ण ॐ कोऽदात्कस्मा अदात् कामोऽदात्। कामो दाता काम: प्रतिग्रहीता कामैतत्ते । इति पठित्वा अनघा भव इति त्रिर्वदेत्। ततो दानप्रतिष्ठां दद्यात् अद्य कृतैतत्सौवर्णी श्रीविष्णुप्रतिमादानप्रतिष्ठार्थं इदं द्रव्यं अमुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यं सम्प्रददे। इति दद्यात्। ततोऽभिषेक – तिलकविप्राशिषो गृहीत्वा सम्प्रदायानुरोधेन भूयसीदक्षिणादानं ब्राह्मणभोजनं च कारयेत्।। ततः कन्याया वैवाहिकं विधिं कुर्यात्।

।।इति श्रीविष्णुप्रतिमा विवाह विधि:।।

(कुम्भ विवाह विधान भी इसी प्रकार से होता है। विष्णु की जगह कुम्भ पूजा होती है एवं संकल्प में भेद करे।)

अथ नामकरणसंस्कारः

सूतकान्ते शुभेऽह्नि प्रथमं पञ्चगव्यप्रोक्षणपूर्वकं सूतिकायै – पञ्चगव्यं दत्त्वा कुमारिपता मङ्गलं स्नात्वा कुमारञ्च संस्नाप्याऽहते वाससी परिधाय धृतमंगलितलकः शुभासने उपिवश्याचम्य प्राणानायम्य, देशकालौ संकीर्त्य ममास्य शिशोः बीजगर्भ-समुद्भवैनोऽपमार्जनायुरिभवृद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं नामकरणं करिष्ये तिन्निर्विध्नतार्थं श्रीगणपत्यादिपूजनञ्च करिष्ये। ततो गणेशादिपूजनं कृत्वा पूर्वोक्तहोमिविधिनाज्यादि-प्रायश्चित्तसंज्ञकहोमपूर्वकं ॐ प्रजापतये स्वाहा – इदं प्रजापतये। ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इति स्विष्टकृद्होमं कृत्वा पूर्णपात्रदानादिपूर्णाहुतिहोमान्तकर्म समापयेत्। ततः पञ्चाश्वत्थपत्रेषु सुवर्णशलाकया पञ्चनामानि लेखियत्वा कांस्यपात्रे प्रसारिततण्डुलोपरि आधारस्थशंखोपरि वा संस्थाप्य ममास्य शिशोः बह्वायुष्यप्राप्त्यर्थं नामदेवतापूजनं करिष्ये। इति सङ्कल्प्य ॐ मनोजूतिरित प्रतिष्ठां कृत्वा ॐ श्रीश्च ते इति मन्त्रेण नामदेवताभ्यो नमः इति – यथा लब्धोपचारैः पूजयेत्। ततः शंख—घण्टा भेरी-तूर्यवादित्रादि रवे जायमाने दक्षिणतो मातुरुत्सङ्गस्थस्य प्राङ्मुखस्य शिशोः दक्षिणकर्णे हे कुमार त्वममुककुलदेवता हे भक्तोऽसि कुमार त्वममुकशर्मा, वर्मा, गुप्तनामासि इत्येवं बालकर्णे त्रिवारं श्रावियत्वा – ॐ मनोजूतिरिति मन्त्रपाठान्ते विप्रा वदेयुः – नाम सुप्रतिष्टिमस्तु।।

ततः पिता करौ बद्धवा ब्राह्मणानिभवादेयत्। हे कुमार त्वममुकदेवभक्तोऽसि सर्वान् ब्राह्मणानिभवादय इति पितोपांशु वदेत्। आयुष्मान् भव सौम्य इति विप्राः वदेयुः। ततो ब्राह्मणा वेदोऽसीति मन्त्रेण शिशवे आशिषं दद्यः – ॐ वेदोऽसि येन त्वं देव वेद देवभ्यो वेदोऽभवस्तेन मह्यं वेदो भूयाः। ततः पिता शिशुं स्वमङ्के धृत्वा इमं मन्त्रं पठेत् – ओं अङ्गादङ्गात्संभविस हृदयादिधजायसे। आत्मा वै पुत्रनामािस सञ्जीव शरदः शतम्।। इति पठित्वा देवताभ्यो ब्राह्मणेभ्यश्च नमस्कृत्य, आचार्यादिभ्यो दानदिक्षणािदिभः सन्तोषयेत्। ततो राशिग्रहणं गोदानछायापात्रदानञ्च कृत्वा स्वशक्तयनुरूपं ब्राह्मणान्संभोज्य पश्चात्बान्धवः स्वयं भुञ्जीत। कुमार्या अपि नामकरणममन्त्रकं नाममन्त्रप्रयुक्तं वा कुर्यात्। शुभम्।।

।। इति नामकरण संस्कार:।।

।।अथ सूर्यादिग्रह शान्ति प्रयोगः।।

तत्र तावदादित्यस्य शान्तिः। मदनरत्ने हस्तनक्षत्रयुतं आदित्यवारं प्रगुह्य सप्तनक्तव्रतानि भिक्ततः कृत्वा प्रतिदिनं रक्तपुष्पाक्षतातिमिरर्कमभ्यर्च्य सप्तमे प्राप्ते प्रातः स्नात्वा शुक्लधौतवाससी परिधाय यथायोग्यालङ्कृत: स्वासने प्राङ्मुख उपविश्य दक्षिणपार्श्वे संभारान् संस्थाप्य धृतपवित्रतिलकः पत्न्या समारब्धों द्विराचम्य प्राणानायम्य शान्तिपाठं पठित्वा लक्ष्मीनारायणादिदेवान् प्रणमेत्! ततो देशकालौ संकीर्त्य शुभपुण्यतिथावमुकगोत्रोऽमुकशर्मा वा गुप्तोऽहं मम श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं मम कलत्रादिभिः सह जन्मराशेः सकाशात् नामराशेः सकाशाद्वा जन्मलग्नात् वर्षलग्नात् गोचराद्वा चतुर्थाष्ट्रमद्वादशाद्यनिष्टस्थानस्थितसूर्येणसूचितं सूचियष्यमाणं च यत् सर्वारिष्टं तद्विनाशार्थं सर्वदा तृतीयैकादशशुभस्थानस्थितवदुत्तमफलप्राप्त्यर्थं तथा दशान्तर-दशोपदशाजनितपीडाल्पायुरिधदैवाधिभौतिककाध्यात्मिकजनितक्लेशनिवृत्तिपूर्वक -शरीरारोग्यार्थं परमैश्वर्य्यादिप्राप्त्यर्थ श्रीसूर्यनारायणप्रसन्नतार्थं चादित्यशान्तिं करिष्ये। इति संकल्प्य तदंगत्वेन गणपतिपूजनं स्वस्तिपुण्याह वाचनमाचार्यवरणं दिग्रक्षणं अग्निस्थापनपूर्वकं सामान्यतो ग्रहपूजनं च पूर्ववत् कुर्यात्। ततो वेदीमध्ये पद्मे ताम्रकलशं संस्थाप्य तदुपरि ताम्रपात्रे शुद्धसुवर्णमयीं प्रधानदेवसूर्यप्रतिमां अग्न्युत्तारणपूर्वकं सन्निधाय रक्तपट्टयुगच्छन्नां छत्रोपानद्युगान्वितां च कृत्वा घृतेन संस्नाप्य रक्तचन्दनरक्त-पुष्पाक्षतादिभिः पुरुषसूक्तेन षोडशोपचारैः सम्पूज्य लड्डूकान्निवेद्य प्रणम्य कुशकण्डिकां कृत्वा आज्यभागान्ते प्रधानदेवसूर्याय दिधक्षीरघृताक्ताश्चरु-शाकल्य-सिहता अर्कसमिध: ॐ आकृष्णेन रजसेति मन्त्रेणाष्ट्रोत्तर शतसंख्यया जुहुयात् इदं सूर्याय न मम इति त्यागः कार्यः। ततो होमान्ते दिक्पालक्षेत्रपालादिभ्यो बलिदानं पूर्णाहुतिहोमं च कृत्वा ततो मंजिष्ठां गजमदं कुंकुमं रक्तचन्दनं जलपूर्णेन ताम्रकुम्भे क्षिप्त्वा पूर्ववदिभषेकं ग्रहस्नानं च कुर्यात्। तता वेदविदुषे ब्राह्मणाय ॐ इमां सूर्यप्रतिमां सोपस्करां तुभ्यमहं सम्प्रददे। इति संकल्प्य ॐ आदिदेव नमस्तुभ्यं सप्तसप्ते दिवाकर। त्वं रवे तारयस्वास्मानस्मात्संसारसागरात्।। इति मन्त्रेण प्रतिमां दद्यात्। ततो माणिक्य, गोधूम, धनु, रक्तवस्त्र, गुण, ताम्र, रक्तचन्दन, कमलानि रवे: प्रीत्यर्थं देवानि। ततो विप्रेभ्यो दक्षिणादानम, देवविसर्जनं च कृत्वा ब्राह्मणान् सम्भोजयित्वा कर्मपूर्तिकामो विष्णु संस्मरेत् एवं सूर्यपीडासु घोरासु कृता शान्तिः शुभप्रदा। इत्यादित्यशान्ति:।

अथ चन्द्रशान्तिप्रयोगः

चित्रासु सोमवार संगृद्धा सप्तनक्तव्रतानि कृत्वा प्रतिदिनं श्वेतपुष्पादिभिः सोममभ्यर्च्य सप्तमे प्राप्ते प्रातः स्नानादि विधाय, देशकालौ संकीर्त्य अर्कशान्त्युक्तवत् संकल्पान्ते चन्द्रशान्ति किरिष्ये। इति संकल्प्य गणपितपूजनादि अग्निस्थापनान्तं कर्म कृत्वा ग्रहपूजनं कुर्यात्। ततो मण्डलमध्ये दध्वत्रशिखरे राजतं कुंभं संस्थाप्य तदुपिर कांस्यपात्रे राजतीं सोमप्रतिमामग्न्युत्तारणपूर्वकं सित्रधाय श्वेतवस्त्रयुगलेन संवेष्ट्य पादुकोपानहच्छत्र भोजनासनसंयुतं च कृत्वा श्वेतपुष्पाक्षतादिभिः पुरुषसूक्तेन षोडशोपचारैः संपूज्य घृतपायसं निवेद्य, आज्यभागान्तं होमं कृत्वा प्रधान देवसोमाय दिध-मधु-क्षीर-घृताक्ताः शाकल्यसिहताः पलाशसिमधाष्टोत्तरशतम्। ॐ इमं देवाऽसपत्नर्ठः इति मन्त्रेण जुहुयात्। ततो होमान्ते बिलदानादि पूर्वोक्तवद् कर्म समाप्य राजते कुंभे उशीरं, शिरीषं, कुंकुमं, श्वेतचन्दनं शंखं न्यस्य अभिषेकं स्नानं च कृत्वा ॐ महादेव जातिवल्लीपुष्पगोक्षीरपांडुर। सोम सौम्यो भवास्माकं सर्वदा ते नमो नमः।। इति मन्त्रेण ब्राह्मणाय प्रतिमां सोपस्करां वंशपात्रस्थतंदुलकर्पूरमौक्तिकश्वेतवस्त्रपूर्णकुंभं-वृषभांश्च निवेद्य देवविसर्जनं ब्राह्मणभोजनादि सर्व कर्म पूर्ववत् समाप्येत् एवं कृते महासौम्यः सोमस्तुष्टिकरो भवेत्। इति चन्द्रशान्तिः।

अथ मङ्गलशान्ति:।।

स्वात्यां भौमवारं संगृह्य सप्तनक्तव्रतेषु भूमावेव भोजनं विधाय सप्तमे प्राप्ते पूर्ववत् सर्वं कृत्वा मण्डलमध्ये कलशं संस्थाप्य तदुपिर ताम्रपात्रे सुवर्णमयी मङ्गलप्रतिमां। निवेश्य रक्तच्छन्नां कुंकुमेनोनुलेपितां कृत्वा रक्तपुष्पाक्षतादिभिः पुरुषसूक्तेन षोडशोपचारैः संपूज्य भक्तया कसारं निवेद्य दिधघृताक्ताः शाकल्यसिहताः खादिर्यः सिमधः अष्टोत्तरशतं अग्निर्मूर्धा दिव इति मंत्रेण मंगलाय जुहुयात्। ततः पूर्ववद्धोमं समाप्य ॐ कुज कुप्रभवोऽपि त्वं मंगलः पिरगद्यसे। अमंगलं निहत्याशु सर्वदा यच्छ मंगलम्। इति मन्त्रेण कस्मैचित् कुटुम्बिने ब्राह्मणाय मंगलप्रतिमादानं, प्रवाल, गोधुम, मसूरिका, रक्तवृषभ, गुड, सुवर्ण, रक्तवस्त्र ताम्रादिदानं च कुर्यात्। ततो रौप्यकुंभे खिदरं देवदारु तिलानि आमलकानि च न्यस्य अभिषेकं स्नानं च कुर्यात्। अन्यत् सर्व पूर्ववत्। इति भौमशान्तिः।।

अथ बुधशान्तिप्रयोगः

विशाखासु बुधं संगृह्य सप्त नक्तव्रतानि कृत्वा सप्तमे प्राप्ते सुवर्णप्रतिमां कांस्यपात्रे संस्थाप्य शुक्लवस्त्रयुगच्छन्नां कृत्वा शुक्लगन्धाक्षतपुष्पादिभिः संपूज्य गुडौदनोपहारं निवेद्य दिधमधुघृताक्ताः शाकल्यसिहता अपामार्गसिमिद्धः अष्टोत्तरशत "ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने"

जग-दीपिका

इति मन्त्रेण जुहुयात्। ततो होमान्ते ॐ बुध त्वं बुद्धिजननो बोधवान् सर्वदा नृणाम्। तत्त्वावबोधं कुरु मे सोमपुत्र नमो नमः।। इति मन्त्रेण ब्राह्मणाय प्रतिमां नीलवस्त्रसुवर्णकांस्यमुद्गरुत्मतह स्तिदन्तपुष्पाणि च निवेद्य मृण्मयकलशे नदीसंगमतोयानि च निक्षिप्य अभिषेकं स्नानं च कुर्यात्। अन्यत् सर्व आदित्यशान्तिवत् इति बुधशान्तिः।

अथ बृहस्पतिशान्तिप्रयोगः

अनुराधासु गुरुवारं प्रगृह्य सप्त नक्तत्रतानि कृत्वा सप्तमे प्राप्ते पूर्वोक्तादित्यशान्तिवत्सर्वं कार्यं कृत्वा मण्डलमध्ये सुवर्णपात्रे सुवर्णमयीं बृहस्पतिप्रतिमां संस्थाप्य पीताम्बरयुगच्छन्नां पीतयज्ञोपवीतिनीं पादुकोपानच्छत्रकमण्डलुविभूषित च कृत्वा पीतगन्धाक्षतपुष्पादिभिः पुरुषसूक्तेन सम्पूज्य खण्डखाद्योपहारान्निवेद्य दिधमधुघृताक्ताः शाकल्यसिहताः अश्वत्थसिमधोऽष्टोत्तरशतं जुहुयात्। ततो होमान्ते ॐ धर्मशास्त्रार्थतत्त्वज्ञ ज्ञानविज्ञानपारग। विबुधातिहराचिन्त्य देवाचार्य नमोऽस्तु ते।।

इति ब्राह्मणाय गुरो:प्रतिमां पुष्परागमाणिक्यहरिद्राशर्कराश्च पीतधान्यपीतवस्त्रलवण-सुवर्णीन च निवेद्य सुवर्णकलशे औदुम्बर बिल्वं वटं आमलकं च निक्षिप्य तद्युक्तजलेन अभिषेकं स्नानं च कुर्यात्। अन्यत्सर्वं आदित्यशान्तिवत्। इति गुरुशान्तिः।

अथ शुक्रशान्तिप्रयोगः

ज्येष्ठासु शुक्रं प्रगृह्य सप्तनक्तव्रतेषु भूमावेव भोजनं कृत्वा सप्तमे प्राप्तं वंशपात्रे रजतशुक्रप्रतिमां संस्थाप्य श्वेतचन्दनपंकजैः तद्भावे श्वेतपुष्पादिभिश्च पुरुषसूक्तेन सम्पूज्य घृतसंयुतं पायसं निवेद्य दिधमधुघृताक्ताः शाकल्यसिहता उदुम्बरसिमधः अष्टोत्तरशतं अन्नात्परिस्नु तो रसिमिति मन्त्रेण जुहुयात्। ततो होमान्ते ॐ भार्गवो भर्गः शुक्रश्च श्रुतिस्मृतिविशारदः। हित्वा ग्रहकृतान् दोषान् आयुरारोग्यदोऽस्तु सः।।

इति मन्त्रेण ब्राह्मणाय प्रतिमां चित्रवस्त्र, श्वेताश्व, धेनु, वज्र, मणि, सुवर्ण, रजतं तण्डुलानि च निवेद्य रजतकलशे गोरोचनं, कस्तूरिकां, शतपुष्पां, शतावरीं च निक्षिप्य तेनाभिषेकं स्नानं च कुर्यात्। अन्यत्सर्वं पूर्ववत्। इति शुक्रशान्तिः।

अथ शनैश्वरशान्तिप्रयोगः

द्वादशाष्टमजन्मस्थे शनौ। श्रावणादिमासे प्रथमशनिवारं प्रगृह्य सप्त नक्तव्रतानि कृत्वा सप्तमे पूर्वोक्तादित्यशान्तिवत् सर्वं कृत्वा लोहपात्रे लोहमयीं शनैश्चरप्रतिमां संस्थाप्य कृष्णवस्त्रयुगच्छन्नां, माषतिलकंबलयुतां च कृत्वा पंचामृतेन संस्नाप्य कस्तूरी, कृष्णागुरु

कृष्णपुष्पाक्षतादिभिः षोडशोपचारैः सम्पूज्य कृसरात्रं माषभक्तं पायसं अविलीं पूरिकां च निवेद्य दिधमधुघृताक्ताः शाकल्यसिहताः शमी सिमधाष्टोत्तरशतं – ॐ शन्नो देवीरिति मन्त्रेण जुहुयात्। ततो होमान्ते बिलदानं पूर्णाहुतिहोमं च सम्पाद्य प्रतिमां इन्द्रनील, माष, तैल, तिल, कुलित्थ, मिहषी, लोह, कृष्णधेनूश्च दद्यात्।

लोहकुंभे तिल, माष, प्रियंगु गंधपुष्पाणि प्रक्षिप्य तद्युक्तजलेना भिषेकं स्नानं च कुर्यात्। अन्यत्सर्वं पूर्ववत्। इति शनैश्चरशान्ति:।।

अथ राहुकेतुशान्तिप्रयोगः।।

बुधवा शनैश्चरवारे राहुव्रतं प्रगृह्य सप्त नक्तव्रतानि कृत्वा सप्तमे प्राप्ते लोहपात्रे राहोर्लोहप्रतिमां संस्नाप्य कृष्णवस्त्रयुगच्छत्रां च कृत्वा पंचामृतेन संस्नाप्य गन्धपुष्पाक्षता–दिभिः संपूज्य पायसं निवेद्य दिधमधुघृताक्ताः शाकल्यसिहता दूर्वासिमधाष्टोत्तरशतं ॐ कयानिश्चत्रेति मंत्रेण जुहुयात्। ततो होमान्ते प्रतिमादानं कृत्वा गोमेदाश्व नीलवस्त्र, कंबल, तैल, तिल, लोहानि राहवे वैडूर्य, तैल, तिल, कंबल, कस्तूरी, छाग, वस्त्राणि च केतवे दद्यात्।

माहिषे शृंगे गुग्गुलं, हरितालं, च मनःशिलां च निक्षिप्य तेनाभिषेकं स्नानं च कुर्यात्। अन्यत् सर्वं ब्राह्मणभोजनादि पूर्ववत् एवमेव केतुशान्तिस्तत्र समिधः कुशमच्यः। मन्त्रः - ॐ केतुं कृण्वन् इत्यादि स्नानं तु वराहविहितपर्वताग्रमृदं छागक्षीरं खड्गपात्रे कृत्वा कुर्यात्। अन्यत् सर्व पूर्वोक्तशान्तिवत्। इति राहुकेतुशान्तिप्रयोगः।।

।।अथ श्रीसूक्त प्रयोग।।

हिरण्यवर्णामिति पञ्चदशर्चस्य श्रीसूक्तस्य आनन्द-कर्दम-चिक्लीतेन्दिर। सुता ऋषयः, आद्यानां तिसृणामनुष्टुप्छन्दः, चतर्थ्याः प्रस्तारपंक्तिश्छन्दः, पञ्चमीषष्ठ्योस्त्रिष्टुप्छन्दः, ततोऽष्टानामनुप्टुप्छन्दः, अन्त्यायाः प्रस्तारपंक्तिश्छन्दः, न्यासे हवने पूजने च विनियोगः।

_	•	
₹.	ॐ हिरण्यवर्णाम्。।	वामकरे।
₹.	ॐ तां म आवह.।	दक्षिणकरे।
₹.	ॐ अश्वपूर्वाम्。।	वामपादे।
٧.	ॐ कां सोस्मिताम्。।	दक्षिणपादे।
५.	ॐ चन्द्रां प्रभासाम्。।	वामजानौ।
ξ.	ॐ आदित्यवर्णे。।	दक्षिणजानौ।
७.	ॐ उपैतु माम्。।	वामकट्याम्।

		_
जग	-द्यापका	Γ

	۷.	ॐ क्षुत्पिपासामलाम्。।	दक्षिणकट्याम्।
	۲.	ॐ गन्धद्वाराम्。।	नाभौ।
	१०.	ॐ मनसः काममाकूतिम्。।	हृदये।
	११.	ॐ कर्दमेन प्रजा भूताः।	वामबाहौ।
	१२.	ॐ आप: सृजन्तुः।	दक्षिणबाहौ।
	१३.	ॐ आर्द्रां पुष्करिणीम्。।	कण्ठे।
	१४.	ॐ आर्द्रां यःकरिणीम्。।	मुखे।
	१५.	ॐ तां मऽ आवहः	नेत्रयो:।
	१६.	ॐ य: शुचि: प्रयतो भूत्वाः।	मूर्घ्नि।
पुनः -			
	१.	कर्दमेन प्रजाभूताः	हृदयाय नम:।
	٦.	आप: सृजन्तु。	शिरसे स्वाहा।
	₹.	आर्द्रां पुष्करिणीम्。	शिखायै वषट्।
	٧.	आर्द्रां यःकरिणीम्。	कवचाय हुम्।

यः शुचिः प्रयतो भूत्वाः ध्यानम् - या सा पद्मासनस्था विपुलकटितटी पद्मपत्रायताक्षी गम्भीरावर्तनाभिस्तन-भरनिमता शुभ्रवस्त्रोत्तरीया। लक्ष्मीर्दिव्यैर्गजेन्द्रैर्मणिगणखिनतै: स्नापिता हेमकुम्भै-र्नित्यं सा पद्महस्ता मम वसतु गृहे सर्वमाङ्गल्ययुक्ता।।१।।

तां म आवह。

नेत्राभ्यां वौषट्।

अस्राय फट्।

अमलकमलसंस्था तद्रजःपुञ्जवर्णा करकमलधृतेष्टाभीतियुग्माम्बुजा च। मणिमुकुट-विचित्रालङ्कृताकल्पजालैर्भवतु भुवनमाता सन्ततं श्रीः श्रियै नः।।२।।

।।इति श्रीसूक्तन्यास:।।

श्रीसूक्तम्

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह।।१।। तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्।।२।। अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम्। श्रियं देवीमुप ह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्।।३।। कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्। पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोप ह्वये श्रियम्।।४।।

चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदारम्। तां पद्मिनीमी शरणं प्र पद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वा वृणे।।५।।

आदित्यवर्णे तपसोऽधि जातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः। तस्य फलानि तपसा नुदन्तु या अन्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः।।६।।

उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे।।७।। क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्। अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्।।८।। गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोप ह्वये श्रियम्।।९।। मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमिह। पशूनां रूपमन्नस्य मिय श्रीः श्रयतां यशः।।१०।। कर्दमेन प्रजा भूता मिय सम्भव कर्दम। श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्।।११।। आपः सृजन्तु स्त्रिग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे। नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले।।१२।। आद्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह।।१३।। आद्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेमालिनीम्। सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मी जातवेदो म आ वह।।१४।। तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम्।।१५।।

यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्। सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्।।१६।। पद्यानने पद्मविपद्मपत्रे पद्मप्रिये पद्मदलायताक्षि। विश्वप्रिये विष्णुमनोऽनुकूले त्वत्पादपद्मं मिय सं नि धत्स्व।।१७।।

पद्मानने पद्मऊरू पद्माक्षि पद्मसम्भवे। तन्मे भजिस पद्माक्षि येन सौख्यं लभाम्यहम्।।१८।। अश्वदायि गोदायि धनदायि महाधने। धनं मे जुषतां देवि सर्वकामांश्च देहि मे।।१९।। पुत्रपौत्रधनं धान्यं हस्त्यश्वाश्वतरी रथम्। प्रजानां भविस माता आयुष्मन्तं करोतु मे।।२०।। धनमग्निर्धनं वायुर्धनं सूर्यो धनं वसुः। धनिमन्द्रो बृहस्पतिर्वरुणो धनमश्विना।।२१।। वैनतेय सोमं पिब सोमं पिबतु वृत्रहा। सोमं धनस्य सोमिनो मह्यं ददातु सोमिनः।।२२।। न क्रोधो न च मात्सर्यं लोभो नाशुभा मितः। भविन्त कृतपुण्यानां भक्तया श्रीसूक्त-जापिनाम्।।२३।। सरिसजिनलये सरोजहस्ते धवलतरांशुकगन्धमाल्यशोभे। भगवित हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभवनभृतिकरि प्र सीद मह्यम्।।२४।।

विष्णुपत्नीं क्षमां देवीं माधवीं माधविष्रयाम्। लक्ष्मीं प्रियसखीं भूमिं नमाम्यच्युत-वल्लभाम्।।२५।। महालक्ष्म्यै च विद्याहे विष्णुपत्न्यै च धीमिह। तन्नो लक्ष्मीः प्र चोदयात्।।२६।। आनन्दः कर्दमः श्रीदिश्चक्लीत इति विश्रुताः। ऋषयः श्रियः पुत्राश्च श्रीर्देवीर्देवता मताः।।२७।। ऋणरोगादिदारिद्रचपापक्षुदपमृत्यवः भयशोकमनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा।।२८।। श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधाच्छोभमानं महीयते। धनं धान्यं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः।।२९।।

जग-दीपिका

।।रुद्रयामलोक्त श्री सूक्तस्य सम्पुट विधि अनुष्ठान।।

- 🕉 श्रीं ह्वीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्वीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नम:।
- ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
- ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह।।१।। दारिद्रचदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता।।
- ॐ श्रीं ह्वीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्वीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नम:।
- ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
- ॐ तां म ऽआ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्।।२।। दारिद्रचदु:खभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता।।
- ॐ श्रीं हीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं हीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नम:।
- ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
- ॐ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम्। श्रियं देवीमुप ह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्।।३।। दारिद्रचदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता।।
- ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नम:।
- ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
- ॐ कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलंतीं तृप्तां तर्पयन्तीम्। पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोप ह्वये श्रियम्।।४।।

दारिद्रचदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता।।

- 🕉 श्रीं हीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं हीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नम:।
- ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
- ॐ चद्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्। तां पद्मिनीमीं शरणमहं प्रपद्मे ऽलक्ष्मीमें नश्यतां त्वां वृणोमि।।५।।

दारिद्रचदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता।।

- ॐ श्रीं हीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं हीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नम:।
- ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
- ॐ आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः तस्य फलानि तपसा नुदन्तु या अन्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः।।६।।

दारिद्रचदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता।।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नम:। ॐ दुर्गे स्मृता हरिस भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मितमतीव शुभां ददासि। ॐ उपैतु मां देवसख: कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मिराष्ट्रेऽस्मिन् कीर्त्तिमृद्धि ददातु मे।।७।। दारिद्रचदु:खभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता।। ॐ श्रीं ह्यीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्यीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नम:। ॐ दुर्गे स्मृता हरिस भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मितमतीव शुभां ददासि। ॐ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्। अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्।।८।। दारिद्रचदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता।। ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नम:। ॐ दुर्गे स्मृता हरिस भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मितमतीव शुभां ददासि। ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोप ह्वये श्रियम्।।९।। दारिद्रचदु:खभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता।। ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नम:। ॐ दुर्गे स्मृता हरिस भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मितमतीव शुभां ददासि। ॐ मनसः काममाकृतिं वाचः सत्यमशीमहि। पशूनां रूपमन्नस्य मयिः श्रीः श्रयतां यशः।।१०।। दारिद्रचदु:खभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता।। ॐ श्रीं ह्यीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्यीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नम:। ॐ दुर्गे स्मृता हरिस भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मितमतीव शुभां ददासि। ॐ कर्दमेन प्रजा भूता मिय सम्भव कर्दम। श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्।।११।। दारिद्रचदु:खभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता।। ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नम:। ॐ दुर्गे स्मृता हरिस भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मितमतीव शुभां ददासि। ॐ आप: सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे। नि च देवीं मातंर श्रियं वासय मे कुले।।१२।। दारिद्रचदु:खभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता।। ॐ श्रीं हीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं हीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नम:। ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि। ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पृष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह।।१३।। दारिद्रचदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता।। ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नम:।

ॐ दुर्गे स्मृता हरिस भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।

ॐ आर्द्रौ य: करिणीं यष्टिं सुवर्णौ हेममालिनीम । सूर्यौ हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह।।१४।।

दारिद्रचदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता।।

- ॐ श्रीं हीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं हीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नम:।
- ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
- ॐ तां म ऽआ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम्।।१५।।

दारिद्रचदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता।।

- ॐ श्रीं ह्वीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्वीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नम:।
- ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
- ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्। सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्।।१६।। दारिद्रचदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता।।

।।इति रुद्रयामले शिवपार्वतीसंवादे श्रींसूक्तस्य पुरश्चरणविधि:।। (११०० पाठ करने के पश्चात् विधि विधानपूर्वक हवन करने से निश्चित ही लक्ष्मी प्राप्ति एवं दरिद्रता का नाश होता है।)

हवनीय द्रव्य - कमलबीज, कमलपुष्प, मधु, पायस, बिल्वपत्र, बिल्वफल इत्यादि।।

।।अथ श्री कनकधारा स्तोत्र।।

(श्री कनकधारा स्तोत्र का श्रद्धा-विश्वासपूर्वक पाठ अनुष्ठान से ऋण मुक्ति और लक्ष्मी प्राप्ति होती है। इस अनुष्ठान के पाठ से श्री शंङ्कराचार्य ने स्वर्ण वर्षा करायी थी।) अङ्गं हरे: पुलकभूषणमाश्रयन्ती भृङ्गाङ्गनेव मुकुलाभरणं तमालम्। अङ्गीकृताखिल-विभूतिरपाङ्गलीला माङ्गल्यदाऽस्तु मम मङ्गलदेवताया:।।१।। मुग्धा मुहुर्विदधती वदने मुरारे: प्रेमत्रपाप्रणिहितानी गतागतानि। माला दृशोर्मधुकरीव महोत्पले या सा मे श्रियं दिशतु सागरसम्भवाया:।।२।। विश्वामरेन्द्रपदिवभ्रमदानदक्षमानन्दहेतुरिधकं मुरविद्विषोऽिष। ईषित्रषीदतु मिय क्षणमीक्षणार्धिमन्दीवरोदरसहोदरिमन्दिराया:।।३।। आमीलिताक्षमिधगम्य मुदा मुकुन्दमानन्दकन्दमिनमेषमनङ्गतन्त्रम्। आकेकरिस्थत-कनीनिकपक्ष्मनेत्रं भृत्यै भवेन्मम भुजङ्गशयाङ्गनाया:।।४।।

जग-दीपिका

बाह्वन्तरे मधुजितः श्रितकौस्तुभे या हारावलीव हरिनीलमयी विभाति। कामप्रदा भगवतोऽपि कटाक्षमाला कल्याणमावहतु मे कमलालयायाः।।५।।

कालाम्बुदालिललितोरिस कैटभारेर्धाराधरे स्फुरित या तिडदङ्गनेव। मातुः समस्तजगतां महनीयमूर्तिर्भद्राणि मे दिशतु भार्गवनन्दनायाः।।६।।

प्राप्तं पदं प्रथमतः किल यत्प्रभावान्माङ्गल्यभाजि मधुमाथिनि मन्मथेन। मय्यापतेत्तदिह मन्थरमीक्षणार्धं मन्दालसं च मकरालयकन्यकायाः।।७।।

दद्याद्दयानुपवनो द्रविणाम्बुधारामस्मिन्निञ्चनिवहङ्गशिशौ विषण्णे। दुष्कर्मघर्ममपनीय चिराय दूरं नारायणप्रणियनीनयनाम्बुवाहः।।८।।

इष्टा विशिष्टमतयोऽपि यया दयार्द्रदृष्ट्या त्रिविष्टपपदं सुलभं लभन्ते। दृष्टिः प्रहृष्टकमलोदरदीप्तिरिष्टां पुष्टिं कृषीष्ट मम पुष्करविष्टरायाः।।९।।

गीर्देवतेति गरुडध्वजसुन्दरीति शाकम्भरीति शशिशेखरवल्लभेति। सृष्टिस्थितिप्रलयकेलिषु संस्थितायै तस्यै नमस्त्रिभुवनैकगुरोस्तरुण्यै।।१०।।

श्रुत्यै नमोऽस्तु शुभकर्मफलप्रसूत्यै रत्यै नमोऽस्तु रमणीयगुणार्णवायै। शक्तयै नमोऽस्तु शतपत्रनिकेतनायै पृष्ट्यै नमोऽस्तु पुरुषोत्तमवल्लभायै।।११।।

नमोऽस्तु नालीकनिभाननायै नमोऽस्तु दुग्धोदधिजन्मभूत्यै। नमोऽस्तु सोमामृतसोदरायै नमोऽस्तु नारायणवल्लभायै।।१२।।

सम्पत्कराणि सकलेन्द्रियनन्दनानि साम्राज्यदानिवभवानि सरोरुहाक्षि। त्वद्वन्दनानि दुरिताहरणोद्यतानि मामेव मातरिनशं कलयन्तु मान्ये।।१३।।

यत्कटाक्षसमुपासनाविधिः सेवकस्य सकलार्थसम्पदः। संतनोति वचनाङ्गमानसैस्त्वां मुरारिहृदयेश्वरीं भजे।।१४।।

सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतमांशुकगन्धमाल्यशोभे। भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्मम्।।१५।।

दिग्घस्तिभिः कनककुम्भमुखावसृष्टस्वर्वाहिनीविमलचारुजलप्लुताङ्गीम्। प्रातर्नमामि जगतां जननीमशेषलोकाधिनाथगृहिणीममृताब्धिपुत्रीम्।।१६।।

कमले कमलाक्षवल्लभे त्वं करुणापूरतरङ्गितैरपाङ्गैः। अवलोकय मामिकञ्चनानां प्रथमं पात्रमकृत्रिमं दयाया:।।१७।।

स्तुवन्ति ये स्तुतिभिरमूभिरन्वहं त्रयीमयीं त्रिभुवनमातरं रमाम्। गुणाधिका गुरुतरभाग्यभागिनो भवन्ति ते भुवि बुधभाविताशया:।।१८।।

।।श्रीभगवत्पादशङ्करविरचितं कनकधारास्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

अथ विष्णुसहस्त्रनामस्तोत्रम् अथ सर्वव्याधिहरणविष्णुसहस्त्रनामविधानम्

तत्र प्रयोगः - सुमूहूर्ते शिवालयादिषु कृतनित्यक्रियः स्वासने प्राङ्मुख उपविश्य आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ संकीर्त्य ममामुकव्याघेः समुलनाशद्वारा सद्य आरोग्यार्थं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थममुकसंख्याया विष्णुसहस्रनामजपं करिष्ये। इति संकल्प्य गणेशस्मरणं कृत्वा स्वपुरतः आधारे अन्यलिखितपुस्तकं संस्थाप्य गन्धपुष्पादिभिः सम्पूज्य शापविमोचनं पठेत्। ॐ अस्य श्रीविष्णोः सहस्रनाम्नां रुद्रशापविमोचनमन्त्रस्य महादेव ऋषिः, अनुष्टुप्छन्द:, श्रीरुद्रानुग्रहशक्तिर्देवता, सुरेश: शरण शर्मेति बीजम्, अनन्तो हुतभुग्भोक्तेति शक्ति:, सुरेश्वरायेति कीलकं, रुद्रशापविमोचने विनियोग:। ॐ क्लीं हीं अङ्गष्टाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ह्रूँ मध्यमाभ्यां नमः। ॐ हैं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रौं किनष्ठिकाभ्यां नम:। ॐ ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नम:। इति करन्यास:। एवमेव हृदयादिन्यासं कृत्वा ध्यायेत्।। अथ ध्यानम्।। तमालश्यामलतनुं पीतकौशेयवाससम्। वर्णमूर्तिमयं देवं ध्यायेन्नारायणं विभुम्।।१।। इति ध्यात्वा मानसोपचारै: सम्पूज्य। ॐ क्लीं हां हीं हुं हैं हो हु: स्वाहा इति मन्त्रं शतवारं दशवारं वा जप्त्वा किंचिज्जलं क्षिप्त्वा प्रार्थयेत्।। ॐ श्रीविष्णोः सहस्रनामस्तवो रुद्रशापविमुक्तो भव इति प्रार्थ्य सततं तदनन्तरं सहस्रनामपठनं कुर्यात्। विष्णोः सहस्रनाम्नां यो ह्यकृत्वा शापमोचनम्। पठेच्छुभानि सर्वाणि स्युस्तस्य निष्फलानि तु।।१।। इति रुद्रशापविमोचनं कृत्वा सद्य आरोग्यतासिद्ध्ये न्यासध्यानोत्तरम् अच्युतानन्तगोविन्देति नामत्रयेण सम्पुटितस्य सहस्रनामस्तवस्य जपः कार्य्यः। अथवा - ॐ कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने । प्रणतक्लेशनाशाय गोन्दिाय नमो नम:।।१।। इस्यनेन - ॐ आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम्। लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम्।।२।। अथवा ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च।। इति मन्त्रेण वा सम्पृटितस्य जपेन सर्वरोगनाशः।।

अथ गायत्री याग विधान

२४ लाख जप गायत्री पुरश्चरण में होते हैं तथा दशांश हवन-तर्पण मार्जन आदि तथा गायत्री देवी के आवरण पूजन अधोलिखित है। गायत्रीपुरश्चरण संपादन के लिए। प्रायश्चितं गोदानं कुर्यात्। आचम्य देशकालौ संकीर्त्य मम इह जन्मिन जन्मान्तरेषु च कृतकायिकवाचिकमानिसकसांसिर्गिकसमस्तपापक्षयार्थं पुत्रपौत्रधनधान्याभिवृद्ध्यर्थं चतुर्विधपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं सप्रणवव्याहृतिपूर्वकचतुर्विशतिलक्षजपात्मक

गायत्रीपुरश्चरणं (स्वयं) विप्रद्वारा वा करिष्ये तदंगत्वेन गणेशपूजनं स्वस्तिपुण्याह-वाचनं मातृकापूजनं नांदीश्राद्धमाचार्यजपकर्तृवरण च करिष्ये।

भूतशुद्ध्यादिबहिर्मातृकान्यासांतं कृत्वा गायत्रीन्यासं कुर्यात्। तद्यथा - ॐ प्रणवस्य ब्रह्मा ऋषि:। गायत्री छंद:। परमात्मा देवता। शरीरशुद्ध्यर्थे जपे विनियोग:।

ॐ ब्रह्मऋषये नमः शिरसि। ॐ गायत्रीछंदसे नमः मुखे।।२।। ॐ परमात्मदेवतायै नमः हृदये।।३।। इति प्रणवन्यास:। सप्तव्याहृतीनां जमदग्नि-भारद्वाजात्रिगौतमकश्यप-विश्वामित्रवसिष्ठाः ऋषयः गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्बृहतीपङ्क्तित्रिष्टुब्जगत्यश्छंदांसि। अग्निवायुसूर्यबृहस्पतिवरुणेंद्रविश्वेदेवा देवता:। न्यासे जपे च विनियोग:।। ॐ जमदग्निभारद्वाजात्रिगौतमकश्यपविश्वामित्रवसिष्ठऋषिभ्यो नमः शिरसि।१। ॐ गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्बृहतीपङ्क्तित्रिष्टुब्जगतीछंदोभ्यो नम: मुखे।।२।। ॐ अग्निवायुसूर्य-बृहस्पतिवरुणेंद्रविश्वेदेवदेवताभ्यो नमः हृदये।।३।। इति व्याहृतिऋष्यादिन्यासः। गायत्र्या विश्वामित्रऋषिः। गायत्री छंदः। सविता देवता। न्यासे जपे च विनियोगः। ॐ विश्वामित्रऋषये नम: शिरसि। ॐ गायत्री छन्दसे नमो मुखे। ॐ सवितृदेवतायै नमः हृदये। इति गायत्र्या ऋष्यादिन्यासः। ॐ शिरसः प्रजापतिः ऋषिः ब्रह्माग्निवायुसूर्यो देवता:। यजुश्छंद:। प्राणायामे विनियोग:। ॐ प्रजापतिऋषये नम: शिरसि। ॐ यजुश्छंदसे नमः मुखे। ॐ ब्रह्माग्निवायुसूर्यदेवताभ्यो नमः हृदये। इति शिरस ऋष्यादिन्यासः।। ॐ भू: अङ्गुष्ठाभ्यां नम:।।१।। ॐ भुव: तर्जनीभ्यां नम:।।२।। ॐ स्व: मध्यमाभ्यां नमः।।३।। ॐ तत्सिवतुर्वरेण्यम् अनामिकाभ्यां नमः।।४।। ॐ भर्गोदेवस्य धीमहि किनिष्ठिकाभ्यां नमः।।५।। ॐ धियो यो नः प्रचोदयात् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।।६।। इति करन्यास:। एवमेव हृदयादि न्यासं कुर्यात्। तत:। ॐ भू: नम: हृदये।।१।। ॐ भूव: नमो मुखे।।२।। ॐ स्व: नमो दक्षांसे।।३।। ॐ मह: नमो वामांसे।।४।। ॐ जन: नमो दक्षिणोरौ।।५।। ॐ तपः नमो वामोरौ।।६।। ॐ सत्यं नमः जठरे।।७।। इति व्याहृतिन्यासः।। अथ गायत्री वर्णन्यास:। ॐ तत् नम: पादद्वयांगुलिमूलयो:।।१।। ॐ सं नम: गुल्फयो:।।२।। ॐ विं नमः जानुनोः।।३।। ॐ र्तुं नमः पादमूलयोः।।४।। ॐ वं नमः लिंगे।।५।। ॐ रें नमः नाभौ।।६।। ॐ णिं नमः हृदये।।७।। ॐ यं नमः कण्ठे।।८।। ॐ भं नमः हस्तद्वयाङ्गुलीमूलयो:।।९।। ॐ र्गां नम: मणिबंधयो:।।१०।। ॐ दें नम: कूर्परयो:।।११।। ॐ वं नमः बाहुमूलयो:।।१२।। ॐ स्यं नमः आल्ये।।१३।। ॐ धीं नमः नासापुटयो:।।१४।। ॐ मं नमः कपोलयोः।।१५।। ॐ हिं नमः नेत्रयोः।।१६।। ॐ धिं नमः कर्णयोः।।१७।। ॐ यों नमः भ्रूमध्ये।।१८।। ॐ यों नमः मस्तके।।१९।। ॐ नं नमः पश्चिमवक्त्रे।।२०।।

ॐ प्र नमः उत्तरवक्त्रे।।२१।। ॐ चों नमः दक्षिणवक्त्रे।।२२।। ॐ द नमः पूर्ववक्त्रे।।२३।। ॐ यात् नमः ऊर्ध्ववक्त्रे।।२४।। इति गायत्र्यक्षरन्यासः।। ॐ तत् नमः शिरसि।।१।। ॐ सवितुर्नम: भ्रुवोर्मध्ये।।२।। ॐ वरेण्यं नम: नेत्रयो:।।३।। ॐ भर्गो नम: मुखे।।४।। ॐ देवस्य नमः कंठे।।५।। ॐ धीमहि नमः हृदये।।६।। ॐ धियो नमः नाभौ।।७।। ॐ यो नमः गुह्ये।।८।। ॐ नः नमः जानुनोः।।९।। ॐ प्रचोदयात् नमः पादयोः।।१०।। ॐ आपोज्योतीरसोमृतं ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोमिति शिरसि।।११।। इति पदन्यासः । ततः ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं नमः नाभ्यादिपादांगुलीपर्यन्तम्।।१।। ॐ भर्गो देवस्य धीमहि नमः हृदयाहि नाभ्यन्तम्।।२।। ॐ धियो यो नः प्रचोदयात् नमः मूर्द्धादिहृदयांतम्।।३।। इति विन्यस्य षडंगन्यासं कुर्यात्।।ॐ तत्सवितुर्ब्रह्मणे हृदयाय नम:।।१।। ॐ वरेण्यं विष्णवे शिरसे स्वाहा।।२।। ॐ भर्गोदेवस्य रुद्राय शिखायै वषट्।।३।। ॐ धीमहि ईश्वराय कवचाय हुं।।४।। ॐ धियो यो नः सदाशिवाय नेत्रत्रयाय वौषट्।।५।। ॐ प्रचोदयात् सर्वात्मने अस्राय फट्।।६।। इति षडंगन्यासं कृत्वा ध्यायेत्।। अथ ध्यनाम्।। मुक्ताविद्रुमहेमनील-धवलच्छायैर्मुखैस्त्रीक्षणैर्युक्तामिंदुनिबद्धरत्नमुकुटां तत्त्वार्थवर्णात्मिकाम्। सावित्री वरदाभयांकुशकशां पाशं कपालं गुणं शंखं चक्रमथारविन्दयुगलं हस्तैर्वहंती भजे।।१।। इति ध्यात्वा। ॐ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि।।१।। ॐ हँ आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि।।२।। ॐ यँ वाय्वात्मकं धूपं समर्पयामि।।३।। ॐ रँ तेजआत्मकं दीपं समर्पयामि।।४।। ॐ वँ अमृतात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि।।५।। ॐ सँ सर्वात्मकं मंत्रपुष्पं समर्पयामि।।६।। इति मानसोपचारै: संपूज्य (भेदपक्षे) त्रिकोणपीठपूजां कुर्य्यात्।। तद्यथा-पूर्वादिचतुर्दिक्षु मध्ये च। ॐ प्रभूताय नम:।।१।। ॐ विमलाय नम:।।२।। ॐ साराय नमः।।३।। ॐ समाराध्याय नमः।।४।। (मध्ये) ॐ परमसुखाय नमः।।५।। इति संपूज्य तद्बहि: ॐ अं अनन्ताय नम:।।१।। ॐ पृं पृथिव्यै नम:।।२।। ॐ अं अमृतसागराय नम:।।३।। ॐ रं रत्नद्वीपाय नम:।।४।। ॐ हें हेमगिरये नम:।।५।। ॐ नं नन्दनोद्यानाय नम:।।६।। ॐ कं कल्पवृक्षेभ्यो नम:।।७।। ॐ मं मणिभूषितभूतलाय नम:।।८।। ॐ सं सोममंडलाय नमः।।९।। ॐ अं अग्निमंडलाय नमः।।१०।। ॐ सुं सूर्यमंडलाय नमः।।११।। इति पीठदेवताः संपूजयेत्। ततः (पूज्यपूजकयोमध्ये प्राचीं प्रकल्प्य) पूर्वादिक्रमेण। ॐ रां दीप्तायै नम:।।१।। ॐ रीं सूक्ष्मायै नम:।।२।। ॐ रूं जयायै नम:।।३।। ॐ रें भद्राय नम:।।४।। ॐ रैं विभृत्यै नम:।।५।। ॐ रों विमलायै नम:।।६।। ॐ रौं अमोघाये नम:।।७।। ॐ रं विद्युतायै नम:।।८।। (मध्ये) ॐ र: सर्वतोमुख्यै नम:।।९।। इति पीठशक्तिः संस्थाप्य गंधपुष्पैः पूजयेत्। तन्मध्ये ॐ ब्रह्मविष्णुशिवात्मकाय सौराय

योगपीठात्मने नमः। इति पुष्पांजलिना आसनं दत्त्वा। तत्र सर्वतोभद्रमध्ये गायत्रीयंत्रं विलिख्य तदुपरि "ॐ महीद्यौः" इत्यादिमंत्रः पूर्णपात्रांतं पूर्ववत्ताम्रकलशं संस्थाप्य। ''तत्त्वायामि'' इति वरुणमावाह्य संपूज्य। कलशस्य मुखे विष्णुइत्याद्यभिमंत्र्य। देवदानवसंवादे इत्यादि प्रार्थयेत्। ततः तदुपरि पट्टवस्त्रं शक्तिगंधाष्टकेन यंत्रं विलिख्य तन्मध्ये मूलमंत्रेण। पलस्वर्णमयीं पूर्वोक्तध्यानप्रतिपादितां भगवत्या गायत्र्याः प्रतिमां सावयवां वा त्रिकोणाकारामग्न्युत्तारणपूर्विकां संस्थाप्य प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा मूलेन तस्यां भगवतीं वेदमातरं श्रीगायत्रीमावाह्य पुरुषसुक्तेन श्रीसुक्तेन पाद्यादिपुष्पांतैरुपचारै: संपूज्य। आवरणार्चनं कुर्य्यात्। तद्यथा - तत्र त्रिकोणस्य पूर्वकोणे ॐ गायत्र्यै नम:।।१।। (निर्ऋतिकोणे) ॐ सावित्र्यै नमः।।२।। (वायुकोणे) ॐ सरस्वत्यै नमः।।३।। (त्रिकोणांतरालेषु) ॐ ब्रह्मणे नमः।।१।। ॐ विष्णवे नम:।।२।। ॐ रुद्राय नम:।।३।। इति पूजयेत्।। ततो मूलेन पुष्पांजलिं गृहीत्वा ''अभीष्टसिद्धं मे देहि शरणागतवत्सले।। भक्तया समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्'' इति पुष्पांजलि दत्त्वा विशेषार्घाद्बिन्दुं निक्षिप्य 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' इति वदेत्।। इति प्रथमावरणम्।।१।। ततोऽष्टदले पूर्वीदिचतुर्दिक्षु ॐ आदित्याय नम:।।१।। ॐ भानवे नम:।।२।। ॐ भास्कराय नम:।।३।। ॐ रवये नम:।।४।। (आग्नेयादिकेसरेषु) ॐ उषायै नम:।।१।। ॐ प्रज्ञायै नम:।।२।। ॐ प्रभायै नम:।।३।। ॐ संध्यायै नम:।। इति पूजयेत्। ततो मुलमुञ्चरन् 'अभीष्टसिद्धि मे देहि。' इत्यादिना पुष्पांजलिं दद्यात्। इति द्वितीयावरणम्।।२।। ततः षट्कोणे आग्नेयादिकोणकेसरेषु मध्ये दिक्षु च। ॐ ब्रह्मणे हृदयाय नमः।।१।। ॐ विष्णवे शिरसे स्वाहा।।२।। ॐ रुद्राय शिखायै वषट्।।३।। ॐ ईश्वराय कवचाय हुं।।४।। ॐ सदाशिवाय नेत्रत्रयाय वौषट्।।५।। ॐ सर्वात्मने नः अस्त्राय फट्।।६।। इति षडंगानि पुजयेत्।। ततः पुष्पांजलिं गृहीत्वा मूलमुच्चार्य। 'अभीष्टसिद्धि मे देहि。' इति पुष्पांजलिं दत्त्वा 'पूजितास्तर्पिताः संतु' इति वदेत्। इति तृतीयावरणम्।।३।। ततो वर्तुले प्राचीक्रमेण। ॐ प्रह्लादिन्ये नम:।।१।। ॐ प्रभायै नम:।।२।। ॐ नित्यायै नम:।।३।। ॐ विश्वंभरायै नम:।।४।। ॐ विशालिन्यै नम:।।५।। ॐ प्रभावत्यै नम:।।६।। ॐ जयायै नम:।।७।। ॐ शांत्यै नम:।।८।। इति पूजयेत्।। तत: पुष्पांजलिं गृहीत्वा मुलमुच्चार्य। 'अभीष्टसिद्धि मे देहि。' इति पुष्पांजलि दत्त्वा 'पुजितास्तर्पिताः संतु' इति वदेतुइति चतुर्थावरणम्।।४।। तद्बाह्ये वर्तुले प्राचीक्रमेण। ॐ कांत्यै नम:।।१।। ॐ दुर्गायै नम:।।२।। ॐ सरस्वत्यै नम:।।३।। ॐ विश्वरूपाय नम:।।४।। ॐ विशालायै नमः।।५।। ॐ ईशायै नमः।।६।। ॐ चापिन्यै नमः।।७।। ॐ विमलायै नमः।।८।। इति पूजयेत्। ततः पुष्पांजलिं गृहीत्वा मूलमुच्चार्य 'अभीष्टसिद्धि मे देहि。' इति पुष्पांजलिं दत्त्वा 'पूजितास्तर्पिताः संतु' इति वदेत्। इति पञ्चमावरणम्।।५।। तद्बाह्येऽष्टदलमूले पूर्वादिक्रमेण। ॐ अपहारिण्यै नम:।।१।। ॐ सूक्ष्मायै नम:।।२।। ॐ विश्वयोन्यै नम:।।३।। ॐ जयावहायै नम:।।४।। ॐ पद्मालयायै नम:।।५।। ॐ परायै नम:।।६।। ॐ शोभायै नमः।।७।। ॐ पद्मरूपायै नमः।।८।। इति पूजयेत्। पूष्पांजलिं गृहीत्वा मूलमुच्चार्य 'अभीष्टसिद्धि मे देहि。' इति पुष्पांजलिं दत्त्वा 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' इति षष्ठावरणम्।।६।। ततोऽष्टदलमध्ये पूर्वादिक्रमेण ॐ आं ब्राह्मयै नम:।।१।। ॐ ईं माहेश्वय्यैं नम:।।२।। ॐ ऊं कौमार्ये नम:।।३।। ॐ ऋं वैष्णव्ये नम:।।४।। ॐ ऌं वाराह्ये नम:।।५।। ॐ ऐं इन्द्राण्यै नम:।।६।। ॐ ओं चामुंडायै नम:।।७।। ॐ अ: महालक्ष्म्यै नम:।।८।। इति पूजयेत्। ततः पूष्पांजलिं गृहीत्वा मूलमुच्चार्य 'अभीष्टसिद्धि मे देहि。' इति पूष्पांजलिं दत्त्वा 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' इति वदेत्।। इति सप्तमावरणम्।।७।। ततो दलाग्रेषु ॐ सों सोमाय नम:।।१।। ॐ भौं भौमाय नम:।।२।। ॐ बुं बुधाय नम:।।३।। ॐ बृं बृहस्पतये नम:।।४।। ॐ शृं शुक्राय नम:।।५।। ॐ शं शनैश्चराय नम:।।६।। ॐ रां राहवे नम:।।७।। ॐ कें केतवे नम:।। इति पुजयेतु। ततो पुष्पांजलिं गृहीत्वा मूलमुच्चार्य 'अभीष्टसिद्धि मे देहिः' इति पुष्पांजलिं दत्त्वा 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' इति वदेत्।। इत्यष्टमावरणम्।।८।। ततो भूपुरे पूर्वादिदशदिक्षु ॐ लं इन्द्राय नम:।।१।। ॐ रं अग्नये नम:।।२।। ॐ मं यमाय नम:।।३।। ॐ क्षं निर्ऋतये नम:।।४।। ॐ वं वरुणाय नम:।।५।। ॐ यं वायवे नम:।।६।। ॐ सों सोमाय नम:।।७।। ॐ ईं ईशानाय नम:।।८।। (ईशानपूर्वयोर्मध्ये) ॐ आं ब्रह्मणे नम:।।९।। (निर्ऋतिपश्चिमयोर्मध्ये) ॐ अं अनंताय नमः।।१०।। इति पूजयेत्। ततः पुष्पांजलिं गृहीत्वा मूलमुच्चार्य 'अभीष्टसिद्धि मे देहि。' इति पुष्पांजलिं दत्त्वा 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' इति वदेत्।। इति नवमावरणम्।।९।। तद्बहिस्तत्तत्समीपे ॐ वं वज्राय नमः।।९।। ॐ शं शक्तये नम:।।२।। ॐ दं दंडाय नम:।।३।। ॐ खं खड्गाय नम:।।४।। ॐ पं पाशाय नम:।।५।। ॐ अं अंकुशाय नम:।।६।। ॐ गं गदायै नम:।।७।। ॐ त्रिं त्रिशुलाय नम:।।८।। ॐ पं पद्माय नम:।।९।। ॐ चं चक्राय नम:।।१०।। इति पूजयेत्। ततः पुष्पांजलिं गृहीत्वा मूलमुच्चार्य 'अभीष्टसिद्धि मे देहि。' इति पुष्पांजलिं दत्त्वा 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' इति वदेत्। इति दशमावरणम्।।१०।। 'इत्थमावरणैर्देवीं दशभिः परिपूजयेत्।। धर्मार्थकाममोक्षाणां भोक्ता स्याद्द्विजसत्तमः।।१।। इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनीराजनांतं संपूज्य स्तवेन स्तुत्वा शापविमोचनं पठित्वा यथाविधि जपं कुर्यात्। तत्र मंत्रः। 'ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्य भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रयोदयात्।।

(तत्सत्)

अथ वाल्मीकि रामायण अनुष्ठान विधिः

सकलकार्यसिद्ध्यर्थे - श्रीरामं मानसोपचारैः सम्पूज्य - ॐ आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम्। लोकाभिरामं श्रीराम भूयो भूयो नमाम्यहम्।। इति मन्त्रेण सम्पुटितरामायणपाठात्सकलकार्यसिद्धिः।। पुत्रकामो बालकाण्डं पठेत्। लक्ष्मीकामोऽयोध्याकाण्डम्। नष्टराज्यप्राप्तिकामः किष्किन्धाकाण्डम्। सर्वकामः सुन्दरकाण्डम्। शत्रुनाशकामः सर्वकामश्च लंक्काकाण्डं पठेत्।। सुन्दरकाण्डे एकोत्तरावृत्त्या पाठः कर्तव्यः, तद्यथा - प्रथमदिने एकः द्वितीये द्वौ तृतीये त्रय इत्यादि एकादश दिनपर्यन्तम्। द्वादशदिने अवशिष्टं सर्गंद्वयं पठित्वा पुनः प्रथमसर्गः पठनीयः एवं त्रिरावृत्त्या सकल–कार्यसिद्धः। सुप्रतिष्ठित-श्री हनुमत्प्रतिमासमीपैकाग्रवृत्त्या सुन्दरकाण्डाच्छीघ्रकार्यसिद्धः (२० दिन का प्रयोग है।)

(कामना अनुसार अन्य मन्त्रों से सम्पुट सुन्दर काण्ड का पाठ करना परम लाभदायक है।)

पति-पत्नी में विरोध एवं भेदभाव को दूर करने के लिए शीघ्र फलदायक - अनुष्ठान

(वाल्मीकि रामायण सुन्दर काण्ड) ब्राह्मण द्वारा या स्वयं संकल्पं कुर्यात्। (स्वकीय) (यजमान) भार्यायां (भर्तिर) प्रेमाविर्भावप्राप्त्यर्थं झटिति आनंदप्राप्तिपूर्वकसंगमनार्थं च। (श्लोक:) ॐ यथाहि वानरश्रेष्ठ दुःखक्षयकरो भवेत्। त्वमस्मिन् कार्यनिर्वाहे प्रमाणं हिरयूथप:।। राघवस्त्वन्समारम्भान्मिय यत्नपरो भवेत्। काममस्य त्वमेवैकः कार्यस्य परिसाधने। पर्याप्त परिवीरघ्न यशस्यस्ते फलोदय:।

एतयोर्द्वयोर्मन्त्रयोः सर्गस्याद्यन्तयोः सम्पुटितपूर्वक श्रीपवनसुतस्य हनुमतः प्रीत्यर्थं प्रतिदिनं सप्तसर्गस्य पाठं करिष्यामि।

(स्वयं पाठ करें तो संकल्प में करिष्यामि के बदले करिष्ये बोलें)

(सुन्दर पाठ विधान, २ दिन, ९ दिन, १४ दिन, २० दिन, ६८ दिन का विधान लिखा गया है।)

अथ श्रीविपरीतप्रत्यङ्गिरा

श्रीप्रत्यङ्गिरायै नमः। ॐ अस्य श्रीविपरीतप्रत्यङ्गिरामन्त्रस्य भैरव ऋषिः अनुष्टप्छन्दः श्रीविपरीतप्रत्यङ्गिरादेवता ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे पाठे विनियोगः अथ करन्यासः - ॐ ऐं अङ्गष्ठाभ्यां नमः कवचाय। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्या नमः। ॐ श्रीं प्रत्यङ्गिरे मध्माभ्यां नम:। ॐ प्रज्ञाङ्गिरे अनामिकाभ्यां नम: ॐ मां रक्ष कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ मम शत्रुन्भञ्जय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः एवं हृदयादिन्यासः। ॐ भूर्भुवः स्वः इति दिग्बन्धः मूलमन्त्रः - (ॐ ऐं हीं श्रींप्रत्यिङ्गरे मां रक्ष रक्ष मम शत्रून्भञ्जय भञ्जय फे हुँ फट् स्वाहा) अष्टोत्तरशतञ्चास्य जपं चैव प्रकीर्तितम्। ऋषिस्तु भैरवो नाम छन्दोऽनुष्टुप् प्रकीर्तिततम्।। देवता दैशिका रक्ता वाम प्रत्यङ्गिरेति च।। पूर्वबीजै: षडङ्गानि कल्पयेत्साधकोत्तमः सर्वदृष्टोपचारैश्च ध्यायेत्प्रत्यङ्गिरां शुभां।। टंकं कपालं डमरुं त्रिशूलं सम्बिभ्रती चन्द्रकलावतंसा। पिंगोर्ध्वकेशाऽसितभीमदंष्ट्रा भूयाद्विभूत्यै मम भद्रकाली।। एवं ध्यात्वा जपेन्मंत्र-मेकविंशतिवासरन्। शत्रूणां नाशनं ह्येतत्प्रकाशोऽयं सुनिश्चय:।। अष्टम्यामर्धरात्रे तु शरत्काले महानिशि। आराधिता चेच्छीकाली तत्क्षणात् सिद्धिदा नृणाम्।। सर्वोपचारसम्पन्ना वस्त्ररत्नकलादिभिः। पुष्पैश्च कृष्णवर्णेश्च साधयेत्कालिकां वराम्।। वर्षादुर्ध्वमजम्मेषम्मृदं वाथ यथाविधि। दद्यात् पूर्वं महेशानि ततश्च जपमाचरेत्।। एकाहात् सिद्धिदा काली सत्यं सत्यं न संशय:। मूलमन्त्रेण रात्रौ च होमं कुर्यात् समाहित:।। मरीचलाजालवणैस्सार्षपैर्मरणं भवेत्। महाजनपदे चैव न भयं विद्यते क्वचित।। प्रेतपिण्डं समादाय गोलकं कारयेत्तत:। मध्ये वामाङ्कितं कृत्वा शत्रुरूपांश्च पुत्तलीन्।। जीवं तत्र विधायैव चिताग्नौ जुहुया तत:। तत्रायुतं जपं कुर्यात् त्रिराद्यं मारणं रिपो:।। महाज्वाला भवेत्तस्य तद्वत्ताम्रशलाकया। गुरुद्वारे प्रदद्याच्च सप्ताहान्मारणं रिपो:।। प्रत्यिङग्रा मया प्रोक्ता पठिता पाठिता नरै:। लिखित्वा च करे कण्ठे बाहौ शिरसि धारयेत्।। मुच्यते सर्वपापेभ्यो नाल्पमृत्युः कथंचन। ग्राहः ऋक्षास्तथा सिंहा भूता यक्षाश्च राक्षसाः।। तस्य पीडां न कुर्वन्ति दिवि भुव्यन्तरिक्षगा:। चतुष्पदेपु दुर्गेषु वनेषुपवनेषु च।। श्मशाने दुर्गमे घोरे संग्रामे शत्रुसंकटे। ॐ ॐ ॐ ॐ कुं कुं कुं मां सां खां पां लां क्षां ॐ हीं हीं ॐ ॐ हीं बां धां मां सां रक्षां कुरु। ॐ हीं हीं ॐ स: हुं ॐ ॐ क्षौं वां लां धां मां सां रक्षां कुरु। ॐ ॐ हुं प्लुं रक्षां करु। ॐ नमो विपरीतप्रत्यङ्गिरायै विद्याराज्ञि त्रैलोक्यवशंकरि तुष्टिपुष्टिकरि सर्वपीडापहारिणि सर्वापन्नाशिनि सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिनि मोदिन सर्वशस्त्राणां भेदिनि क्षोभिणि तथा। परमन्त्रतन्त्रयन्त्रविषचूर्णसर्वप्रयोगादीनन्येषां निवर्तयित्वा यत्कृतं तन्मेऽस्तु कलिपातिनि सर्विहिंसा मा कारयित अनुमोदयित मनसा वाचा कर्मणा ये देवासुरराक्षसास्तिर्यग्योनिसर्विहंसका विरूपकं कुर्वन्ति मम मन्त्रतन्त्रयन्त्रविषचूर्ण सर्वप्रयोगादीनात्महस्तेन यः करोति करिष्यित कारियष्यित तान् सर्वानन्येषां निवर्तियत्वा पातय कारय मस्तके स्वाहा।

इति श्रीविपरीतप्रत्यङ्गिरा समाप्तम्। शुभम्भूयात्।

श्रीगुरुस्तोत्रम्

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्। तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।।१।। अज्ञानितिमरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया। चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।।२।। गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुरेव परंब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः।।३।। स्थावरं जङ्गमं व्याप्तं यित्कञ्चित् सचराचरम्। तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।।४।। चिन्मयं व्यापि यत्सर्वं त्रैलोक्यं सचराचरम्। तत्पदं दर्शितं येन श्रीगुरवे नमः।।५।। सर्वश्रुतिशिरोरत्निवराजितपदाम्बुजः वेदान्ताम्बुजसूर्यो यस्तस्मै श्रीगुरवे नमः।।६।। चैतन्यः शाश्वतः शान्तो व्योमातीतो निरञ्जनः। बिन्दुनादकलातीतस्तस्मै श्रीगुरवे नमः।।७।। ज्ञानशिक्तसमारूढः तत्त्वमालाविभूषितः भुक्तिमुक्तिप्रदाता च तस्मै श्रीगुरवे नमः।।८।।

।।दक्षिणामूर्त्यष्टकम्।।

विश्वं दर्पणदृश्यमाननगरीतुल्यं निजान्तर्गतं पश्यन्नात्मिन मायया बिहिरिवोद्भूतं यथा निद्रया। यःसाक्षात्कुरुते प्रबोधसमये स्वात्मानमेवाद्भयं तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदिक्षणामूर्तये।।१।। बीजस्यान्तरिवांकुरो जगदिदं प्राङ् निर्विकल्पं पुनः मायाकिल्पतदेशकालकलना वैचित्र्यचित्रीकृतम्। मायावीव विजृंभयत्यिप महायोगीव यःस्वेच्छया तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदिक्षणामूर्तये।।२।।

यस्यैव स्फुरणं सदात्मकमसत्कल्पार्थकं भासते साक्षात्तत्वमसीति वेदवचसा यो बोधयत्याश्रितान्। यत्साक्षात्करणाद्भवेन्न पुनरावृत्तिर्भवाम्भोनिधौ तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये।।३।।

नानाच्छिद्रघटोदरस्थितमहादीपप्रभाभास्वरं ज्ञानं यस्य तु चक्षुरादिकरणद्वारा बिहः स्पन्दते। जानामीति तमेव भान्तमनुभात्येतत्समस्तं जगत् तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये।।४।।

देहं प्राणमपीन्द्रियाण्यिप चलां बुद्धं च शून्यं विदुः स्त्री बालान्धजडोपमास्त्वहमिति भ्रान्ता भृशं वादिन:। मायाशिक्तविलासकिल्पतमहाव्यामोहसंहारिणे तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये।।५।।

राहुग्रस्तिदवाकरेन्दु सदृशो मायासमाच्छादनात् सन्मात्रः करणोपसंहरणतो योऽभूत्सुषुप्तः पुमान्। प्रागस्वाप्सिमिति प्रबोधसमये यः प्रत्यिभज्ञायते तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये।।६।।

वाल्यादिष्वपि जाग्रदादिषु तथा सर्वास्ववस्थास्वपि व्यावृत्तास्वनुवर्तमानमहमित्यन्त: स्फुरन्तं सदा। स्वात्मानं प्रकटीकरोति भजतां यो मुद्रया भद्रया तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये।।७।। विश्वं पश्यित कार्यकारणतया स्वस्वामिसंबन्धतः शिष्याचार्यतया तथैव पितृपुत्राद्यात्मना भेदतः। स्वप्ने जाग्रित वा य एष पुरुषो मायापरिभ्रामितः तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदिक्षणामूर्तये।।८।।

भूरम्भांस्यनलोऽनिलोंऽबरमहर्नाथो हिमांशुः पुमान् इत्याभाति चराचरात्मकिमंद यस्यैव मूर्त्यष्टकम्। नान्यत्किञ्चन विद्यते विमृशतां यस्मात्परस्माद्विभोः तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये।।९।।

सर्वात्मत्विमिति स्फुटीकृतिमदं यस्मादमुष्मिन्स्तवे तेनास्य श्रवणात्तदर्थमननाद्ध्यानाच्च संकीर्तनात्। सर्वात्मत्वमहाविभूतिसिहतं स्यादीश्वरत्वं स्वतः सिद्ध्येत् तत्पुनरष्टधा परिणतं चैश्वर्यमव्याहतम्।।१०।।

वट विट समीपे भूमि भागे निषण्णं सकल मुनि जनानां ज्ञान दातार मारात्। त्रिभुवन गुरुमीशं दक्षिणामूर्ति देवं जननमरण दुःखच्छेददक्षं नमामि।।११।।

चित्रं वटतर्रोमूले वृद्धाः शिष्या गुरुर्युवा। गुरोस्तु मौनं व्याख्यानं शिष्यास्तु छिन्नसंशयाः।।१२।। ।।इति श्री मच्छङ्कराचार्य विरचितं श्री दक्षिणामूर्तिस्तोत्रं।।

गणेशपञ्चरत्नम्

मुदा करात्तमोदकं सदा विमुक्तिसाधकं कलाधरावतंसकं विलासिलोकरञ्जकम्। अनायकैकनायकं विनाशितेभदैत्यकं नताशुभाशुनाशकं नमामि तं विनायकम्।।१।। नतेतरातिभीकरं नवोदितार्कभास्वरं नमत्सुरारिनिर्जरं नताधिकापदुद्धरम्। सुरेश्वरं निधीश्वरं गजेश्वरं गणेश्वरं महेश्वरं तमाश्रये परात्परं निरन्तरम्।।२।। समस्तलोकशङ्करं निरस्तदैत्यकुञ्जरं दरेतरोदरं वरं वरेभवकत्रमक्षरम्। कृपाकरं क्षमाकरं मुदाकरं यशस्करं नमस्करं नमस्कृतां नमस्करोमि भास्वरम्।।३।। अकिंचनार्तिमार्जनं चिरन्तनोक्तिभाजनं पुरारिपूर्वनन्दनं सुरारिगर्वचर्वणम्। प्रपञ्चनाशभीषणं धनञ्जयादिभूषणं कपोलदानवारणं भजे पुराणवारणम्।।४।। नितान्तकान्तदन्तकान्तिमन्तकान्तकात्मजमचिन्त्यरूपमन्तहीनमन्तरायकृन्तनम्। हदन्तरे निरन्तरं वसन्तमेव योगिनां तमेकदन्तमेव तं विचिन्तयामि संततम्।।५।। महागणेशपञ्चरत्नमादरेण योऽन्वहं प्रगायित प्रभातके हृदि स्मरन् गणेश्वरम्। अरोगतामदोषतां सुसाहितीं सुपुत्रतां समाहितायुरष्टभूतिमभ्युपैति सोऽचिरात्।।६।। ।।श्री मच्छङ्कराचार्यकृतं गणेशपञ्चरत्नस्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

संकष्टहरणं गणेशाष्ट्रकम्

ॐ अस्य श्रीसङ्कष्टहरणस्तोत्रमन्त्रस्य श्रीमहागणपतिर्देवता, सङ्कष्टहरणार्थे जपे विनियोग:। ॐ ॐ ॐकाररूपं त्र्यहमिति च पर यत्स्वरूपं तुरीयं त्रैगुण्यातीतनीलं कलयति मनसस्तेज-सिन्दुर-मूर्तिम्।

योगीन्द्रैर्ब्रह्मरन्धैः सकलगुणमयं श्रीहरेन्द्रेण सङ्गं गं गं गं गं गणेशं गजमुखमभितो व्यापकं चिन्तयन्ति।।१

वं वं विघ्नराजं भजित निजभुजे दक्षिणे न्यस्तशुण्डं क्रं क्रं क्रं क्रोधमुद्रा-दिलत-रिपुबलं कल्पवृक्षस्य मूले । दं दं दं दन्तमेकं दधित मुनिमुखं कामधेन्वा निषेण्यं धं धं धं धारयन्तं धनदमितिधियं सिद्धि-बुद्धि-द्वितीयम्।।२

तुं तुं तुङ्गरूपं गगनपथि गतं व्याप्नुवन्तं दिगन्तान् क्लीं क्लीं क्लींकारनाथं गलित-मदिमलल्लोल-मत्तालिमालम्। ह्वीं ह्वीं ह्वींकारिपङ्ग सकलमुनिवर-दृयेयमुण्डं च शुण्डं श्रीं श्रीं श्रीयन्तं निखल-निधिकुलं नौमि हेरम्बिबम्बम्।।३

लौं लौं लौंकारमाद्यं प्रणविमव पदं मन्त्रमुक्तावलीनां शुद्धं विघ्नेशबीजं शिशकरसदृशं योगिनां ध्यानगम्यम्। डं डं डं डामरूपं दिलतभवभयं सूर्यकोटिप्रकाशं यं यं यज्ञनाथं जपित मुनिवरो बाह्यमभ्यन्तरं च।।४

हुं हुं हेमवर्णं श्रुति-गणितगुशं शूर्यंकर्णं कृपालुं ध्येयं सूर्यस्य बिम्बं ह्युरिस च विलसत् सर्पयज्ञोपवीतम्। स्वाहा-हुंफट्-नमोऽन्तैष्ठठठठ-सिहतैः पल्लवैः सेव्यमानं मन्त्राणां सप्तकोटि-प्रगुणितमिहमाधारमीशं प्रपद्ये।।५

पूर्वं पीठं त्रिकोणं तदुपिर रुचिरं षट्कपत्रं पवित्रं यस्योर्ध्वं शुद्धरेखा वसुदलकमलं वा स्वतेजञ्चतुस्तम्। मध्ये हुङ्कारबीजं तदनु भगवतः स्वाङ्गषट्कं षडस्ने अष्टौ शक्तीश्च सिद्धीर्बहुल-गणपतिर्विष्टरश्चाऽष्टकं च।।६

धर्माद्यष्टौ प्रसिद्धा दशदिशि विदितां वा ध्वजाल्यः कपालं तस्य क्षेत्रादिनाथं मुनिकुलमिखलं मन्त्रमुद्रामहेशम्।

एवं यो भक्तियुक्तो जपति गणपतिं पुष्प-धूपा-ऽक्षताद्यनैवेद्यर्मीदकानां स्तुतियुत-विलसद्-गीतवादित्र-नादै:।।७

राजानस्तस्य भृत्या इव युवतिकुलं दासवत् सर्वदास्ते लक्ष्मीः सर्वाङ्गयुक्ता श्रयति च सदनं किङ्कराः सर्वलोकाः।

पुत्राः पुत्र्यः पवित्रा रणभुवि विजयी द्यूतवादेऽपि वीरो यस्येशो विघ्नराजो निवसति हृदये भक्तिभाग्यस्य रुद्रः।।८

।।अथ ऋण हरण स्तोत्र।।

कैलाशपर्वते रम्ये शम्भुं चन्द्रार्धशेखरम्। षडाम्नायसमायुक्तं पप्रच्छ नगकन्यका।। **पार्वत्युवाच -** देवेश परमेशान सर्वशास्त्रार्थपारग। उपायमृणनाशस्य कृपया वद साम्प्रतम्।। शिव उवाच - सम्यक् पृष्टं त्वया भद्रे लोकानां हितकाम्यया। तत्सर्वं सम्प्रवक्ष्यामि सावधानावधारय।।

विनियोगः - ॐ अस्य श्रीऋणहरणकर्तृगणपितस्तोत्रमन्त्रस्य सदाशिव ऋषिः, अनुष्टुप छन्दः, श्रीऋणहरणकर्तृगणपितदेवता, ग्लों बीजम्, गः शिक्तः, गों कीलकम्, मम सकलऋणनाशने जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः - ॐ सदाशिवर्षये नमः शिरिस। अनुष्टुप् छन्दसे नमः मुखे। श्रीऋणहर्तृगणेशदेवतायै नमः हृदि। ग्लौं बीजाय नमः गृह्ये (मूलाधारे)। गः शक्तये नमः पादयोः। गों कीलकाय नमः सर्वाङ्गे।

करन्यासः - 'ॐ गणेश' अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। 'ऋणं छिन्धि' तर्जनीभ्यां नमः। 'वरेण्यम्' मध्यमाभ्यां नमः। 'हुम्' अनामिकाभ्यां नमः। 'नमः' कनिष्ठिकाभ्यां नमः। 'फट्' करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यासः - 'ॐ गणेश' हृदयाय नमः। 'ऋणं छिन्धि' शिरसे स्वाहा। 'वरेण्यम्' शिखायै वषट्। 'हुं' कवचाय हुम्। 'नमः' नेत्रत्रयाय वौषट्। 'फट्' अस्त्राय फट्। ध्यानम् - सिन्दूरवर्णं द्विभुजं गणेशं लम्बोदरं पद्मदले निविष्टम्। ब्रह्मादिदेवैः परिसेव्यमानं सिद्धैर्युतं तं प्रणमामि देवम्।।

स्तोत्रपाठः - सृष्ट्यादौ ब्रह्मणा सम्यक् पूजितः फलसिद्धये। सदैव पार्वतीपुत्र ऋणनाशं करोतु मे।।१।।

त्रिपुरस्य वधात्पूर्वं शम्भुना सम्यगर्चितः। सदैव पार्वतीपुत्र ऋणनाशं करोतु मे।।२।। हिरण्यकश्यपादीनां वधार्थे विष्णुनार्चितः। सदैव पार्वतीपुत्र ऋणनाशं करोतु मे।।३।। मिहषस्य वधे देव्या गणनाथः प्रपूजितः। सदैव पार्वतीपुत्र ऋणनाशं करोतु मे।।४।। तारकस्य वधात्पूर्वं कुमारेण प्रपूजितः। सदैव पार्वतीपुत्र ऋणनाशं करोतु मे।।५।। भास्करेण गणेशस्तु पूतिजश्छविसिद्धये। सदैव पार्वतीपुत्र ऋणनाशं करोतु मे।।६।। शिशना कान्तिसिद्ध्यर्थ पूजितो गणनायकः। सदैव पार्वतीपुत्र ऋणनाशं करोतु मे।।७।। पालनाय च तपसा विश्वामित्रेण पूजितः। सदैव पार्वतीपुत्र ऋणनाशं करोतु मे।।८।। इदं त्वृणहरं स्तोत्रं तीव्रदारिद्रयनाशनम्। एकवारं पठेन्नित्यं वर्षमेकं समाहितः।।९।। दारिद्रयं दारुणं त्यक्त्वा कुबेरसमतां व्रजेत्। 'फडन्तोऽयं महामन्त्रः सार्धपञ्चदशाक्षरः।।१०।।

अस्यैवायुतसंख्याभिः पुरश्चरणमीरितम्। सहस्रावर्तनात् सद्यो वाञ्छितं लभते फलम्।। भूत-प्रेत-पिशाचानां नाशनं स्मृतिमात्रतः।।११।।

।।इति श्रीकृष्णयामलतन्त्रांगत-उमामहेश्वरसंवादे ऋणहर्तागणेशस्तोत्रं सम्पूर्णम्।। (ऋणहर्ता गणेशस्तोत्र के अन्त में 'ॐ गणेश ऋणं छिन्धि वरेण्यं हुं नमः फट्' इस ऋणहर्ता महामन्त्र का एक बार जप करने से पाठकर्ता का अन्तः करण पवित्र हो जाता है। छः महीने तक प्रतिदिन उक्त मन्त्र का एक हजार जप करने से मनुष्य गणेशजी का प्रिय बन जाता है। वह ज्ञान में बृहस्पित और धन में कुबेर के सदृश हो सकता है। इसका एक पुरश्चरण दस हजार जप का बताया गया है। एक लाख जप करने से भलीभांति मनोऽभिलिषत फल की प्राप्ति हो सकती है।)

गणेशजी की पार्थीव मूर्ति बनाकर साङ्गोपाङ्ग पूजा करे तदुनपरान्त उपरोक्त जाप पाठ करने से अतिशीघ्र अनुष्ठान सफल होता है।

।।आदित्य हृदयस्तोत्रम्।।

विनियोग - ॐ अस्य आदित्यहृदयस्तोत्रस्यागस्त्यऋषिरनुष्टुप्छन्दः, आदित्यहृदयभूतो भगवान् ब्रह्मा देवता निरस्ताशेषविघ्नतया ब्रह्मविद्यासिद्धौ सर्वत्र जयसिद्धौ च विनियोगः। ऋष्यादिन्यास - ॐ अगस्त्यऋषये नमः, शिरिस। अनुष्टुप्छन्दसे नमः, मुखे। आदित्यहृदयभूतब्रह्मदेवतायै नमः, हृदि। ॐ बीजाय नमः, गुह्मो। रिश्ममते शक्तये नमः, पादयोः। ॐ तत्सवितुरित्यादिगायत्रीकीलकाय नमः, नाभौ।

करन्यास - इस स्तोत्र के अङ्गन्यास और करन्यास तीन प्रकार से किये जाते हैं। केवल प्रणव से, गायत्रीमन्त्र से अथवा 'रिश्ममते नमः' इत्यादि छः नाम मन्त्रों से। यहां नाम-मन्त्रों से किये जानेवाले न्यास का प्रकार बताया गया है -

ॐ रिश्ममते अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ समुद्यते तर्जनीभ्यां नमः। ॐ देवासुरनमस्कृताय मध्यमाभ्यां नमः। ॐ विवस्वते अनामिकाभ्यां नमः। ॐ भास्कराय कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ भवनेश्वराय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादि अङ्गन्यास - ॐ रिश्ममते हृदयाय नमः। ॐ समुद्यते शिरसे स्वाहा। ॐ देवासुरनमस्कृताय शिखायै वषट्। ॐ विवस्वते कवचाय हुम्। ॐ भास्कराय नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ भुवनेश्वराय अस्त्राय फट्। इस प्रकार न्यास करके निम्नाङ्कित मन्त्र से भगवान सूर्य का ध्यान एवं नमस्कार करना चाहिये –

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमिह धियो यो नः प्रचोदयात्। तत्पश्चात् 'आदित्यहृदय' स्तोत्र का पाठ करना चाहिये।

जग-दीपिका

श्रीआदित्यहृदयस्तोत्रम्

ततो युद्धपरिश्रान्तं समरे चिन्तया स्थितम्। रावणं चाग्रतो दृष्ट्वा युद्धाय समुपस्थितम्।।१।। दैवतैश्च समागम्य द्रष्टुमभ्यागतो रणम्। उपगम्याब्रवीद्राममगस्त्यो भगवांस्तदा।।२।। राम राम महाबाहो शृणु गुह्यं सनातनम्। येन सर्वानरीन् वत्स समरे विजयिष्यसे।।३।। आदित्यहृदयं पुण्यं सर्वशत्रुविनाशनम्। जयावहं जपं नित्यमक्षयं परमं शिवम्।।४।। सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं सर्वपापप्रणाशनम्। चिन्ताशोकप्रशमनमायुर्वर्धनमुत्तमम्।।५।। रश्मिमन्तं समुद्यन्तं देवासुरनमस्कृतम्। पूजयस्व विवस्वन्तं भास्करं भुवनेश्वरम्।।६।। सर्वदेवात्मको ह्येष तेजस्वी रश्मिभावनः। एष देवासुरगणाँल्लोकान् पाति गभस्तिभिः।।७।। एष ब्रह्मा च विष्णुश्च शिव: स्कन्द: प्रजापित:। महेन्द्रो धनद: कालो यम: सोमो ह्यपाम्पित।।८।। पितरो वसवः साध्या अश्वनौ मरुतो मनुः। वायुर्विह्नः प्रजाः प्राण ऋतुकर्ता प्रभाकरः।।९।। आदित्यः सविता सूर्यः खगः पूषा गभस्तिमान । सुवर्णसदृशो भानुर्हिरण्यरेता दिवाकरः।।१०।। हरिदश्वः सहस्रार्चिः सप्तसप्तिर्मरीचिमान्। तिमिरोन्मथनः शम्भुस्त्वष्टा मार्तण्डकोंऽशुमान्।।११।। हिरण्यगर्भः शिशिरस्तपनोऽहस्करो रविः। अग्निगर्भोऽदितेः पुत्रः शङ्खः शिशिरनाशनः।।१२।। व्योमनाथस्तमोभेदी ऋग्यजुःसामपारगः। घनवृष्टिरपां मित्रो विन्ध्यवीथीप्लवङ्गमः।।१३।। आतपी मण्डली मृत्युः पिङ्गलः सर्वतापनः। कविर्विश्वो महातेजा रक्तः सर्वभवोद्भवः।।१४।। नक्षत्रग्रहताराणामिधपो विश्वभावनः। तेजसामिप तेजस्वी द्वादशात्मन् नमोऽस्तु ते।।१५।। नमः पूर्वाय गिरये पश्चिमायाद्रये नमः। ज्योतिर्गणानां पतये दिनाधिपतये नमः।।१६।। जयाय जयभद्राय हर्यश्वाय नमो नम:। नमो नम: सहस्रांशो आदित्याय नमो नम:।।१७।। नम उग्राय वीराय सारङ्गाय नमो नमः। नमः पद्मप्रबोधाय प्रचण्डाय नमोऽस्तु ते।।१८।। ब्रह्मेशानाच्युतेशाय सूरायादित्यवर्चसे। भास्वते सर्वभक्षाय रौद्राय वपुषे नमः।।१९।। तमोघ्नाय हिमघ्नाय शत्रुघ्नायामितात्मने। कृतघ्नघ्नाय देवाय ज्योतिषां पतये नम:।।२०।। तप्तचामीकराभाय हरये विश्वकर्मणे। नमस्तमोऽभिनिघ्नाय रुचये लोकसाक्षिणे।।२१।। नाशयत्येष वै भूतं तमेव सृजति प्रभुः। पायत्येष तपत्येष वर्षत्येष गभस्तिभिः।।२२।। एष सुप्तेषु जागर्ति भूतेषु परिनिष्ठित:। एष चैवाग्निहोत्रं च फलं चैवाग्निहोत्रिणाम्।।२३।। देवाश्च क्रतवश्चैव क्रतूनां फलमेव च। यानि कृत्यानि लोकेषु सर्वेषु परमप्रभु:।।२४।। एनमापत्सु कृच्छ्रेषु कान्तारेषु भयेषु च। कीर्तयन् पुरुषः कश्चिन्नावसीदित राघव।।२५।। पूजयस्वैनमेकाग्रो देवदेवं जगत्पतिम्। एतत्त्रिगुणितं जप्त्वा युद्धेषु विजयिष्यसि।।२६।। अस्मिन् क्षणे महाबाहो रावणं त्वं जहिष्यसि। एवमुक्त्वा ततोऽगस्त्यो जगाम स यथागतम्।।२७।। एतच्छ्रत्वा महातेजा नष्टशोकोऽभवत् तदा। धारयामास सुप्रीतो राघव: प्रयतात्मवान्।।२८।। आदित्यं प्रेक्ष्य जप्त्वेदं परं हर्षमवाप्तवान्। त्रिराचम्य शुचिर्भूत्वा धनुरादाय वीर्यवान्।।२९।। रावणं प्रेक्ष्य हृष्टात्मा जयार्थं समुपागमत्। सर्वयत्नेन महता वृतस्तस्य वधेऽभवत्।।३०।। अथ रिवरवदित्ररीक्ष्य रामं मुदितमनाः परमं प्रहृष्यमाणः। निशिचरपितसंक्षयं विदित्वा सुरगणमध्यगतो वचस्त्वरेति।।३१।। ।।श्रीवाल्मीकीये रामायणे युद्धकाण्डे, अगस्त्यप्रोक्तमादित्यहृदयस्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

अथ सद्य आरोग्यकरं सूर्यार्घ्यदानविधानम्

सुदिने कृतनित्यक्रिय आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ संकीर्त्य मम अमुकस्य वा अमुकज्वरादिव्याधिसमूलनिरासद्वारा सद्य आरोग्यार्थं श्रीसवितृसूर्यनारायणप्रीत्यर्थं हंसादिसप्तितनामिभः श्रीसूर्य्याय सप्तत्यर्घ्यदानमहं करिष्ये। इति संकल्पः। भूतशुद्ध्यादि कृत्वा सामान्यार्घ्य कल्पयेत्। विगृह्यपाणियुग्मेन ताम्रपात्रं सुनिर्मलम्। जानुभ्यामवनीं गत्वा परिपूर्य्य जलेन च।।१।। करवीरादिकुसुमैर्रक्तचन्दनमिश्रितै:। दूर्वाङ्करैरक्षतैश्च निक्षिप्तै: पात्रमध्यत:।।२।। दद्यादर्घ्यमनर्घाय सिवत्रे ध्यानपूर्वकम्।। उपमौली समानीय तत्पात्रे नान्यदिङ्गमनाः।।३।। प्रतिमन्त्रं नमस्कुर्यादुदयास्तमिते रवौ। अनया नामसप्तत्या महान्त्ररहस्यया।।४।। एवमर्घ्यं प्रकल्प्य पाद्यादिभिः सम्पूज्य प्रणम्य यथोक्तविधिना प्रत्येकनाम्ना बृहत्पात्रेघटे जले वा अर्घ्यं दद्यात्। तद्यथा - ॐ हंसाय नमः।।१।। ॐ भानवे नम:।।२।। ॐ सहस्रांशवे नम:।।३।। ॐ तपनाय नम:।।४।। ॐ तापनाय नम:।।५।। ॐ रवये नम:।।६।। ॐ विकर्तनाय नम:।।७।। ॐ विवस्वते नम:।।८।। ॐ विश्वकर्मणे नमः।।९।। ॐ विभावसवे नमः।।१०।। ॐ विश्वरूपाय नमः।।११।। ॐ विश्वकर्त्रे नम:।।१२।। ॐ मार्तण्डाय नम:।।१३।। ॐ मिहिराय नम:।।१४।। ॐ अंशुमते नम:।।१५।। ॐ आदित्याय नम:।।१६।। ॐ उष्णगवे नम:।।१७।। ॐ सूर्याय नम:।।१८।। ॐ अर्य्यमणे नम:।।१९।। ॐ व्रघ्नाय नम:।।२०।। ॐ दिवाकराय नम:।।२१।। ॐ द्वादशात्मने नमः।।२२।। ॐ सप्तहयाय नमः।।२३।। ॐ भास्कराय नमः।।२४।। ॐ अहस्कराय नमः।।२५।। ॐ खगाय नमः।।२६।। ॐ सुराय नमः।।२७।। ॐ प्रभाकराय नमः।।२८।। ॐ श्रीमते नमः।।२९।। ॐ लोकचक्षुषे नमः।।३०।। ॐ ग्रहेश्वराय नमः।।३१।। ॐ लोकेशाय नम:।।३२।। ॐ लोकसाक्षिणे नम:।।३३।। ॐ तमोरये नम:।।३४।। ॐ शाश्वताय नम:।।३५।। ॐ मुचये नम:।।३६।। ॐ गभस्तिहस्ताय नम:।।३७।। ॐ तीव्रांशवे नमः।।३८।। ॐ तरणये नमः।।३९।। ॐ सुमहोरुणये नमः।।४०।। ॐ द्युमणये नमः।।४१।। ॐ हरिदश्वाय नमः।।४२।। ॐ अर्काय नमः।।४३।। ॐ भानुमते नम:।।४४।। ॐ भयनाशनाय नम:।।४५।। ॐ छन्दोऽश्वाय नम:।।४६।।

ॐ वेदवेद्याय नमः।।४७।। ॐ भास्वते नमः।।४८।। ॐ पूष्णे नमः।।४९।। ॐ वृषाकपये नमः।।५०।। ॐ एकचक्ररथाय नमः।।५१।। ॐ मित्राय नमः।।५२।। ॐ मन्देहारये नमः।।५३।। ॐ तिमस्रहन्त्रे नमः।।५४।। ॐ दैत्यहन्त्रे नमः।।५५।। ॐ पापहर्त्रे नमः।।५६।। ॐ धर्माय नमः।।५७।। ॐ प्रकाशकाय नमः।।५८।। ॐ हेलिकाय नमः।।५९।। ॐ वित्रभानवे नमः।।६०।। ॐ कलिघ्नाय नमः।।६१।। ॐ तार्क्ष्यवाहनाय नमः।।६२।। ॐ दिक्पतये नमः।।६३।। ॐ पद्मिनीनाथाय नमः।।६४।। ॐ कुशेशयकराय नमः।।६५।। ॐ हरये नमः।।६६।। ॐ धर्मरश्मये नमः।।६७।। ॐ दुर्निरीक्ष्याय नमः।।६८।। ॐ चण्डांशवे नमः।।६९।। ॐ कश्यपात्मजाय नमः।।७०।। एभिः सप्तितसंख्याकैः पुण्यैः सूर्यस्य नामभिः। प्रणवादिचतुर्थ्यन्तैर्नमस्कारसमायुतैः।।१।। प्रत्येकमुच्चरत्राम दृष्ट्वा दृष्ट्वा दिवाकरम्। एवं कुर्वत्ररो याति न दारिद्र्यं न शोकभाक्।।२।। व्याधिभिर्मुच्यते घोरैरपि जन्मान्तरार्जितैः।विनौषधैर्विना वैद्यैर्विना वश्यपरिग्रहैः।।३।। कालेन निधनं प्राप्य सूर्यलोके महीयते।।।शीसूर्य्याध्यीवधानस्य सर्वव्याधिहरो विधिः समाप्तः।।

चाक्षुषोपनिषद् (चाक्षुषी विद्या)

विनियोग - ॐ अस्याश्चाक्षुषीविद्याया अहिर्बुध्न्य ऋषिर्गायत्री छन्दः सूर्यो देवता चक्षूरोगनिवृत्तये विनियोगः।

ॐ चक्षुः चक्षुः तेजः स्थिरो भव। मां पाहि पाहि। त्वरितं चक्षूरोगान् शमय शमय। मम जातरूपं तेजो दर्शय दर्शय। यथा अहम् अन्धो न स्यां तथा कल्पय कल्पय। कल्याणं कुरु कुरु। यानि मम पूर्वजन्मोपार्जितानि चक्षुः प्रतिरोधकदुष्कृतानि सर्वाणि निर्मूलय निर्मूलय। ॐ नमः चक्षुस्तेजोदात्रे दिव्याय भास्कराय। ॐ नमः करुणाकरायामृताय। ॐ नमः सूर्याय। ॐ नमो भगवते सूर्यायांक्षितेजसे नमः। खेचराय नमः। महते नमः। रजसे नमः। तमसे नमः। असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योमी अमृतं गमय। उष्णो भगवाञ्छुचिरूपः। हंसो भगवान् शुचिरप्रतिरूपः।

य इमां चाक्षुष्मतीविद्यां ब्राह्मणो नित्यमधीते न तस्याक्षिरोगो भवति। न तस्य कुले अन्धो भवति। अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यग् ग्राहयित्वा विद्यासिद्धिर्भवति। ॐ नमो भगवते आदित्याय अहोवाहिनी अहोवाहिनी स्वाहा।

(इस चाक्षुषी विद्या के श्रद्धा-विश्वासपूर्वक पाठ करने से नेत्र के समस्त रोग दूर हो जाते हैं। आंख की ज्योति स्थिर रहती है। इसका पाठ नित्य करनेवाले के कुल में कोई अन्धा नहीं होता। पाठ के अन्त में गन्धादियुक्त जल से सूर्य को अर्घ्य देकर नमस्कार करना चाहिये।)
।।श्रीकृष्णजयुर्वेदीया चाक्षुषी विद्या सम्पूर्णा।

श्रीबटुकभैरव - अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

(आपदुद्धारणबटुकभैरवस्तोत्रम्)

सात्त्विक-ध्यान - वन्दे बालं स्फटिकसदृशं कुन्तलोद्भासिवक्त्रं दिव्याकल्पैर्नवमणिमयैः किङ्किणीनूपुराढ्यैः। दीप्ताकारं विशदवदनं सुप्रसन्नं महेशं हस्ताब्जाभ्यां बटुकमिनशं शूलखड्गौ दधानम्।।१।।

राजस-ध्यान - उद्यद्धास्करसन्निभं त्रिनयनं रक्ताङ्गरागस्रजं स्मेरास्यं वरदं कपालमभयं शूलं दधानं करै:। नीलग्रीवमुदारभूषणयुतं शीतांशुखण्डोज्जवलं बन्धूकारुणवाससं भयहरं देवं सदा भावयेत्।।२।।

तामस-ध्यान - ध्यायेत्त्रैलोक्यकान्तं शशिशकलधरं मुण्डमालं महेशं दिग्वस्त्रं पिङ्गकेशं डमरुमथ सृणिं शूलखड्गौ दधानम्। नागं घण्टां कपालं करसरसिरुहैर्बिभ्रतं भीमदंष्ट्रं सर्पाकल्पं त्रिनेत्रं मणिमयविलसत्किङ्किणीनूपुराढ्यम्।।३।।

स्वरूप-ध्यान - करकलितकपालः कुण्डली दण्डपाणिस्तरुणतिमिरनीलव्याल-यज्ञोपवीती। क्रतुसमयसपर्याविष्नविच्छेदहेतुर्जयति बटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम्।।४।।

स्वर्णाकर्षण भैरव मन्त्रः - ॐ ऐं हीं श्रीं आपदुद्धारणाय अजामिल बद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षण भैरवाय मम दारिद्रय विद्वेषणाय महाभैरवाय नमः श्रीं हीं ऐं ॐ।।

बटुक भैरव मन्त्र - ॐ हीं बटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु - २ बटुकाय हीं ॐ।

विनियोग - अस्य श्रीबटुकभैरवनामाष्टशतकापदुद्धारणस्तोत्रमन्त्रस्य बृहदारण्यक ऋषिः, श्रीबटुकभैरवो देवता, अनुष्टुप्छन्दः, ह्रीं बीजम्, बटुकायेति शक्तिः, प्रणवः कीलकम्, अभीष्टसिद्ध्यर्थे पाठे जपे विनियोगः।

करन्यास - हां वाम अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। हीं वीं तर्जनीभ्यां स्वाहा। हूं वूं मध्यमाभ्यां वषट् । हैं वैं अनामिकाभ्यां हुम्। हों वौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। हः वः करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्। षडङ्गन्यास - हां वां हदयाय नमः। हीं वीं शिरसे स्वाहा। हूं वूं शिखायै वषट्। हैं वैं कवचाय हुम्। हों वौं नेत्रत्रयाय वौषट्। हः वः अस्त्राय फट्।

नमस्कार - अतितीक्ष्ण महाकाय कल्पान्तदहनोपम। भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातुमर्हसि।।१।।

शान्तं पद्मासनस्थं शशिमुकुटधरं चोन्नताङ्गं त्रिनेत्रं शूलं खड्गं च वज्रं परशुमुसलके दक्षिणाङ्गे वहन्तम्। नागं पाशं च घण्टां निलनकरयुतं साङ्कुशं वामभागे नागालङ्कारयुक्तं स्फटिकमणिनिभं नौमि तत्त्वं शिवाख्यम्।।२।।

।।हीं हौं नम: शिवाय।।

स्तोत्र -

ॐ भैरवो भूतनाथश्च भूतात्मा भूतभावन:। क्षेत्रज्ञः क्षेत्रपालश्च क्षेत्रद: क्षत्रियो विराट्।।१।। श्मशानवासी मांसाशी खर्पराशी स्मरान्तकः। रक्तपः पानपः सिद्धः सिद्धिदः सिद्धिसेवितः।।२।। कङ्कालः कालशमनः कलाकाष्ठातनुः कविः। त्रिनेत्रो बहुनेत्रश्च तथा पिङ्गललोचनः।।३।। शूलपाणिः खड्गपाणिः कङ्काली धूम्रलोचनः। अभीरुभैरवीनाथो भूतपो योगिनीपतिः।।४।। धनदो धनहारी च धनवान् प्रतिभानवान्। नागहारो नागकेशो व्योमकेश: कपालभृत्।।५।। कालः कपालमाली च कमनीयः कलानिधिः। त्रिलोचनो ज्वलन्नेत्रस्त्रिशिखी च त्रिलोकपः।।६।। त्रिनेत्रतनयो डिम्भः शान्तः शान्तजनप्रियः। बटुको बहुवेषश्च खट्वाङ्गवरधारकः॥७॥ भूताध्यक्षः पशुपतिर्भिक्षुकः परिचारकः। धूर्तो दिगम्बरः शौरिर्हरिणः पाण्डुलोचनः।।८।। प्रशान्तः शान्तिदः सिद्धः शङ्करप्रियबान्धवः। अष्टमूर्तिर्निधीशश्च ज्ञानचक्षुस्तपोमयः।।९।। अष्टाधारः षडाधारः सर्पयुक्तः शिखीसखा। भूधरो भूधराधीशो भूपतिर्भूधरात्मजः।।१०।। कङ्कालधारी मुण्डी च नागयज्ञोपवीतकः। जृम्भणो मोहनः स्तम्भी मारणः क्षोभणस्तथा।।११।। शुद्धो नीलाञ्जनप्रख्यो दैत्यहा मुण्डभूषित:। बलिभुग् बलिभुङ्नाथो बालो बालपराक्रम:।।१२।। सर्वापत्तारणो दुर्गो दुष्टभूतनिषेवित:। कामी कलानिधि: कान्त: कामिनीवशकृद्वशी।।१३।। सर्वसिद्धिप्रदो वैद्यः प्रभूर्विष्णुरितीव हि। अष्टोत्तरशतं नाम्नां भैरवस्य महात्मनः।।१४।। मया ते कथितं देवि रहस्यं सार्वकामिकम्। य इदं पठते स्तोत्रं नामाष्टशतमुत्तमम्।।१५। न तस्य दुरितं किञ्चिन्न च भूतभयं तथा। न च मारीभयं तस्य ग्रहराजभयं तथा।।१६।। न शत्रुभ्यो भयं किञ्चित्प्राप्नुयान्मानवः क्वचित्। पातकानां भयं नैव यः पठेत्स्तोत्रमुत्तमम्।।१७।। मारीभये राजभये तथा चौराग्निजे भये। औत्पातिकभये चैव तथा दुःस्वप्नजे भये।।१८।। बन्धने च तथा घोरे पठेत्स्तोत्रमनुत्तमम्। सर्वं प्रशममायाति भयं भैरवकीर्तनात्।।१९।। एकादशसहस्त्रं तु पुरश्चरणमुच्यते। यस्त्रिसन्ध्यं पठेदेवि संवत्सरमतन्द्रित:।।२०।। स सिद्धिमाप्नुयादिष्टां दुर्लभामपि मानवै:। षण्मासाद्भिमकामस्तु जिपत्वा प्राप्नुयान्महीम्।।२१।। राजशत्रुविनाशार्थं जपेन्मासाष्टकं यदि। रात्रौ वारत्रयं भृत्यो राजानं वशमानयेत्।।२२।। धनार्थं च सुतार्थं च दारार्थं यस्तु मानव:। पठेन्मासत्रयं देवि वारमेकं तथा निशि।।२३।। धनं पुत्रांस्तथा दारान्प्राप्नुयान्नात्र संशय:। रोगी रोगात्प्रमुच्येत बद्धो मुच्येत बन्धनात्।।२४।। भीतो भयात्प्रमुच्येत देवि सद्यो न संशय:। निगडैश्चापि यो बद्धः कारागृहनिपातित:।।२५।। श्रृंखलाबन्धनं प्राप्त: पठेच्चेदं दिवानिशम्। यान् यान्समीहते कामांस्तांस्तान्प्राप्नोति निश्चितम्।।२६।। अप्रकाश्यमिदं गुद्धं न देयं यस्य कस्यचित्। सुकुलीनाय शान्ताय ऋजवे दम्भवर्जिने।।२७।। दद्यात्स्तोत्रमिदं पुण्यं सर्वकामफलप्रदम्। इति श्रुत्वा ततो देवी नामाष्टशतमुत्तमम्।।२८।। सन्तोषं परमं प्राप्य भैरवस्य प्रसादतः। भैरवस्य प्रसन्नाभूत्सर्वलोकमहेश्वरी।।२९।। भैरवस्तु प्रहृष्टोऽभूत्सर्वज्ञः परमेश्वरः। जजाप परया भक्त्या सदा सर्वेश्वरेश्वरी।।३०।। ।।इति श्रीरुद्रयामलतन्त्रे आपदुद्धारणं नाम श्रीबटुकभैरवाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

श्रीकालभैरवाष्ट्रकम्

देवराजसेव्यमानपावनाङ्घ्रिपङ्कुजं व्यालयज्ञसूत्रमिन्दुशेखरं कृपाकरम्। नारदादियोगिवृन्दवन्दितं दिगम्बरं काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे।।१।। भानुकोटिभास्वरं भवाब्धितारकं परं नीलकण्ठमीप्सितार्थदायकं त्रिलोचनम्। कालकालमम्बुजाक्षमक्षशूलमक्षरं काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे।।२।। शूलटङ्कपाशदण्डपाणिमादिकारणं श्यामकायमादिदेवमक्षरं निरामयम्। भीमविक्रमं प्रभुं विचित्रताण्डवप्रियं काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे।।३।। भुक्तिमुक्तिदायकं प्रशस्तचारुविग्रहं भक्तवत्सलं स्थितं समस्तलोकविग्रहम्। विनिक्कणन्मनोज्ञहेमिकङ्किणीलसत्कटिं काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे।।४।। धर्मसेतुपालकं त्वधर्ममार्गनाशकं कर्मपाशमोचकं सुशर्मदायकं विभुम्। स्वर्णवर्णशेषपाशशोभिताङ्गमण्डलं काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे।।५।। रत्नपादुकाप्रभाभिरामपादयुग्मकं नित्यमद्वितीयमिष्टदैवतं निरञ्जनम्। मृत्युदर्पनाशनं करालद्रंष्टमोक्षणं काशिकापुराधिनाथकालभैरवं अट्टहासभिन्नपद्मजाण्डकोशसन्ततिं दृष्टिपातनष्टपापजालम्ग्रशासनम्। अष्टसिद्धिदायकं कपालमालिकन्धरं काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे।।७।। भूतसंघनायकं विशालकीर्तिदायकं काशिवासलोकपुण्यपापशोधकं विभूम्। नीतिमार्गकोविदं पुरातनं जगत्पतिं काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे।।८।। कालभैरवाष्टकं पठन्ति ये मनोहरं ज्ञानमुक्तिसाधनं विचित्रपुण्यवर्धनम्। शोकमोहदैन्यलोभकोपतानाशनं ते प्रयान्ति कालभैरवाङ्घ्रिसंनिधिं ध्रुवम्।।९।। ।।श्री मच्छङ्कराचार्यविरचितं कालभैरवाष्टकं सम्पूर्णम्।।

अन्नपूर्णास्तोत्रम्

नित्यानन्दकरी वराभयकरी सौन्दर्यरत्नाकरी निर्धूताखिलघोरपावनकरी प्रत्यक्षमाहेश्वरी। प्रालेयाचलवंशपावनकरी काशीपुराधीश्वरी भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी।।१।। नानारत्नविचित्रभूषणकरी हेमाम्बराडम्बरी मुक्ताहारविलम्बमानविलसद्धक्षोजकुम्भान्तरी। काश्मीरागरुवासिताङ्गरुचिरे काशीपुराधीश्वरी।। भिक्षां देहिः।।२।।

योगानन्दकरी रिपुक्षयकरी धर्मार्थनिष्ठाकरी चन्द्रार्कानलभासमानलहरी त्रैलोक्यरक्षाकरी। सर्वैश्वर्यसमस्तवाञ्छितकरी काशीपुराधीश्वरी।। भिक्षां देहिः।।३।। कैलासाचलकन्दरालयकरी गौरी उमा शङ्करी कौमारी निगमार्थगोचरकरी ओंकारबीजाक्षरी। मोक्षद्वारकपाटपाटनकरी काशीपुराधीश्वरी।। भिक्षां देहिः।।४।। दृश्यादृश्यविभूतिवाहनकरी ब्रह्माण्डभाण्डोदरी लीलानाटकसूत्रभेदनकरी विज्ञानदीपाङ्करी। श्रीविश्वेशमनः प्रसादनकरी काशीपुराधीश्वरी।। भिक्षां देहिः।।५।। उर्वीसर्वजनेश्वरी भगवती मातान्नपूर्णेश्वरी वेणीनीलसमानकुन्तलहरी नित्यान्नदानेश्वरी। सर्वानन्दकरी सदा शुभकरी काशीपुराधीश्वरी। भिक्षां देहिः।।६।। आदिक्षान्तसमस्तवर्णनकरी शम्भोस्त्रिभावाकरी काश्मीरात्रिजलेश्वरी त्रिलहरी नित्याङ्करा शर्वरी। कामाकाङ्क्षकरी जनोदयकरी काशीपुराधीश्वरी।। भिक्षां देहिः।।७।। देवी सर्वविचित्ररत्नरचिता दाक्षायणी सुन्दरी वामं स्वादु पयोधरप्रियकरी सौभाग्यमाहेश्वरी। भक्ताभीष्टकरी सदाशुभकरी काशीपुराधीश्वरी।। भिक्षां देहिः।।८।। चन्द्रार्कानलकोटिकोटिसदृशा चन्द्रांशुबिम्बाधरी चन्द्रार्काग्निसमानकुन्तलधरी चन्द्रार्कवर्णेश्वरी। मालापुस्तकपाशसाङ्कराधरी काशीपुराधीश्वरी।। भिक्षां देहिः।।९।। क्षत्रत्राणकरी महाऽभवकरी माता कृपासागरी साक्षान्मोक्षकरी सदा शिवकरी विश्वेश्वरश्रीधरी। दक्षाक्रन्दकरी निरामयकरी काशीपुराधीश्वरी।। भिक्षां देहिः।।१०।। अन्नपूर्णे सदापूर्णे शङ्करप्राणवल्लभे। ज्ञानवैराग्यसिद्ध्यर्थं भिक्षां देहि च पार्वति।।११।। माता च पार्वती देवी पिता देवो महेश्वर:। बान्धवा: शिवभक्ताश्च स्वदेशो भुवनत्रयम्।।१२।। ।।इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य श्रीगोविन्दभगवत्पुज्यपादशिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ अन्नपूर्णास्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

।।भगवती स्तुति।।

जय भगवती देवी नमो वरदे, जय पापिवनाशिनी बहुफलदे। जय शुम्भिनशुम्भकपालधरे, प्रणमामि तु देवि नरार्तिहरे।।१।। जय चन्द्रदिवाकरनेत्रधरे, जय पावक भूषित वक्त्र वरे। जय भैरवदेहनिलीनपरे, जय अन्धकदैत्यविशोषकरे।।२।। जय महिष विमर्दिनि शूलकरे, जय लोकसमस्तकपापहरे। जय देवि पितामहविष्णुनते, जय भास्करशक्रशिरोऽवनते।।३।। जय षणमुखसायुधईशनुते, जय सागरगामिनी शम्भुनुते। जय दु:खदरिद्रविनाशकरे, जय पुत्रकलत्रविवृद्धि करे।।४।। जय देवि समस्तशरीरधरे, जय नाकविदर्शिनी दुःखहरे। जयव्याधिविनाशिनि मोक्ष करे, जय वांछितदायिनि सिद्धिवरे।।५।। एतद्व्यासकृतं स्तोत्रं यः पठेन्नियतः शुचिः। गृहे वा शुद्धभावेन, प्रीता भगवती सदा।।६।। ।।इति व्यासकृतं श्री भगवती स्तोत्रं सम्पर्ण।।

अथ विन्ध्येश्वरीस्तोत्रम्

निशुम्भशुम्भमर्दिनीं प्रचण्डमुण्डखण्डिनीं वने रणे प्रकाशिनीं भजामि विन्ध्यवासिनीम्। त्रिशूलमुण्डधारिणीं धराविघातहारिणीं गृहे गृहे निवासिनीं भजामि विन्ध्यवासिनीम्।। १।। दिरद्रदुःखहारिणीं सदा विभूतिकारिणीं वियोगशोकहारिणीं भजामि विन्ध्यवासिनीम्। लसत्सुलोललोचनं लतासदम्बरप्रदां कपालशूलधारिणीं भजामि विन्ध्यवासिनीम्।। कराब्जदानदाधरां शिवाशिवां प्रदायिनीं वरावराननां शुभां भजामि विन्ध्यवासिनीम्। ऋषीन्द्रजामिनीप्रदं त्रिधा स्वरूपधारिणीं जले थले निवासिनीं भजामि विन्ध्यवासिनीम्। विशिष्टसृष्टिकारिणीं विशालरूपधारिणीं महोदरे विशालिनीं भजामि विन्ध्यवासिनीम्। पुरन्दरादिसेवितां मुरादिवंशखंडिनीं विशुद्धबुद्धिकारिणीं भजामि विन्ध्यवासिनीम्। पुरन्दरादिसेवितां मुरादिवंशखंडिनीं विशुद्धबुद्धिकारिणीं भजामि विन्ध्यवासिनीम्।। ४।।

भवान्यष्टकम्

न तातो न माता न बन्धुर्न दाता न पुत्रो न पुत्री न भृत्यो न भर्ता। न जाया न विद्या न वृत्तिर्ममैव गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि।।१।। भवाब्धावपारे महादुःखभीरुः पपात प्रकामी प्रलोभी प्रमत्तः। कुसंसारपाशप्रबद्धः गतिस्त्वं ।।२।। सदाहम्। न जानामि दानं न च ध्यानयोगं न जानामि तन्त्रं न च स्तोत्रमन्त्रम्। न जानामि पूजां न च न्यासयोगम्। गतिस्त्वः।।३।। न जानामि पुण्यं न जानामि तीर्थं न जानामि मुक्तिं लयं वा कदाचित्। जानामि भक्तिं व्रतं वापि मातर्गतिस्त्वं。।।४।। कुकर्मी कुसङ्गी कुबुद्धिः कुदासः कुलाचारहीनः कदाचारलीनः। कुवाक्यप्रबन्धः कुदृष्टि: सदाहम्। गतिस्त्व。।।५।। प्रजेशं रमेशं महेशं सुरेशं दिनेशं निशीथेश्वरं वा कदाचित्। न जानामि चान्यत् सदाहं शरण्ये। गतिस्त्वः।।६।।

जग-दीपिका

विवादे विषादे प्रमादे प्रवासे जले चानले पर्वते शत्रु मध्ये। अरण्ये शरण्ये सदा मां प्रपाहि। गतिस्त्वंः।।७।। अनाथोदरिद्रो जरारोग युक्तो महाक्षीणदीनः सदा जाड्यवक्तः। विपतौ प्रविष्टः प्रणष्टः सदाहम्। गतिस्त्वंः।।८।। ।।इति श्री मच्छङ्कराचार्य कृतं भवान्यष्टकं सम्पूर्णम्।।

।।संकटास्तुति:।। ।।श्रीमहिषासुरमर्दिनी स्तोत्रम्।।

अयि गिरिनन्दिनी निन्दितमेदिनी विश्वविनोदिनि निन्दिनुते, गिरिवरिवन्ध्यिशरोधिनिवासिनि विष्णुविलासिनि जिष्णुनुते। भगवित हे शितिकण्ठकुटुंबिनि भूरिकुटुंबिनि भूरिकृते जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।१।।

सुरवरवर्षिणि दुर्धरधर्षिणि दुर्मुखमर्षिणि हर्षरते, त्रिभुवनपोषिणि शंकरतोषिणि किल्बिषमोषिणि घोषरते। दनुजनिरोषिणि दितिसुतरोषिणि दुर्मदशोषिणि सिंधुसुते जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।२।।

अयि जगदम्ब मदम्ब कदम्बवनप्रियवासिनि हासरते, शिखरिशिरोमणितुंगहिमालय-शृंगनिजालय मध्यगते। मधुमधुरे मधुकैटभगंजिनि कैटभभंजिनि रासरते, जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।३।।

अयि शतखण्ड विखण्डितरुण्ड वितुण्डित शुण्ड गजाधिपते, रिपुगजगण्ड विदारणचण्ड पराक्रमशुण्ड मृगाधिपते। निजभुजदण्ड निपातितखण्डविपातितमुण्डभटाधिपते, जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।४।।

अयि रणदुर्मद शत्रुवधोदित दुर्धरिनर्जर शिक्तभृते, चतुरिवचार धुरीणमहाशिव दूतकृत प्रमथाधिपते। दुरितदुरीह दुराशयदुर्मित दानवदूतकृतान्तमते, जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।५।।

अयि शरणागतवैरिवधूवर वीरवराभयदायकरे, त्रिभुवन मस्तक शूलविरोधि शिरोधिकृतामल शूलकरे। दुमिदुमितामर दुदुंभिनाद महो मुखरीकृत तिग्मकरे, जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।६।।

अयि निजहुंकृतिमात्र निराकृत धूम्रविलोचन धूम्रशते, समरविशोषित शोणितबीज समुद्भवशोणित बीजलते। शिव शिव शुम्भ निशुम्बमहाहव तर्पित भूत पिशाचरते, जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।७।।

धनुरनुसंग रणक्षणसंग परिस्फुरदंग नटत्कटके, कनक पिशंगपृषत्किनषङ्गरसद्भटश्रृंग हतावटुके। कृतचतुरंग बलिक्षितिरंग घटद्बहुरंग रटद्बटुके, जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकर्पिदिन शैलसुते।।८।।

जय जय जप्यजये जय शब्दपरस्तुति तत्पर विश्वनुते, भण भणभिंजिमि भिंकृतनू-पुर सिंजितमोहित भूतपते। नटितनटार्थ नटीनटनायक नाटितनाट्य सुगानरते, जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।९।।

अयि सुमनः सुमनः सुमनः सुमनः सुमनोहर कान्तियुते, श्रितरजनी रजनी रजनी रजनी रजनी रजनीकर वक्त्रवृते। सुनयनविभ्रमर भ्रमर भ्रमर भ्रमर भ्रमराधिपते, जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।१०।।

सिहतमहाहव मल्लमतिल्लक मिल्लितरल्लक मल्लरते, विरचितविल्लिक पिल्लिकमिल्लिक भिल्लिकभिल्लिक वर्गवृते। सितकृतपुल्लि समुल्लिसितारुणतल्लजपल्लव सल्लिलिते, जय जय हे मिहषासुरमिर्दिनि रम्यकपिर्दिनि शैलसुते।।११।।

अविरलगण्डगलन्मदमेदुर मत्तमतंगज राजपते, त्रिभुवनभूषणभूतकलानिधि रूपपयोनिधि राजसुते। अयि सुदतीजन लालसमानस मोहनमन्मथ राजसुते, जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।१२।।

कमलदलामल कोमलकान्ति कलाकिलतामल भाललते, सकलिवलास कलानिलयक्रम केलिचलत्कल हंसकुले। अलिकुल संकुल कुवलय मण्डल मौलिमिलद्भकुलालिकुले, जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।१३।।

करमुरलीरववीजितकूजित लिज्जितकोकिल मंजुमते, मिलितपुलिंद मनोहरगुंजित रंजितशैल निकुंजगते। निजगुणभूत महाशबरीगण सद्गुणसंभृत केलितले, जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।१४।।

कटितटपीत दुकूलिविचित्र मयूखितरस्कृत चंद्ररुचे, प्रणतसुरासुर मौलिमिणिस्फुरदंशुल-सन्नख चंद्ररुचे। जितकनकाचल मौलिपदोर्जित निर्भरकुंजर कुंभकुचे, जय जय हे मिहषासुरमिर्दिनि रम्यकपिर्दिनि शैलसुते।।१५।।

विजित सहस्रकरैक सहस्रकरैक सहस्रकरैकनुते, कृतसुरतारक संगरतारक संगरतारक सूनुनुते। सुरथसमाधि समानसमाधि समाधिसमाधि सुजातरते, जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।१६।।

पदकमलं करुणानिलये विरवस्यति योऽनुदिनं स शिवे, अयि कमले कमलानिलये कमलानिलयः स कथं न भवेत्। तव पदमेव परंपदिमत्यनुशीलयतो मम किं न शिवे, जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।१७।।

कनकलसत्कल सिन्धुजलैरनु सिंचिनुतेगुण रंगभुवं, भजित स किं न शचीकुचकुंभ तटीपिररंभ सुखानुभवम्। तवचरणं शरणं करवाणि नतामरवाणि निवासि शिवं, जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।१८।।

तव विमलेन्दुकुलं वदनेन्दुमलं सकलं ननु कूलयते, किमु पुरुहूतपुरीन्दुमुखी सुमुखीभिरसौ विमुखीक्रियते। मम तु मतं शिवनामधने भवती कृपया किमुत क्रियते, जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।१९।।

अयि मिय दीनदयालुतया कृपयैव त्वया भिवतव्यमुम, अयि जगतो जननी कृपयासि यथासि तथाऽनुभितासिरते। यदुचितमत्र भवत्युररी कुरुतादुरुतापमपाकुरुते, जय जय हे मिहषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।२०।। इति मिहषासुर मर्दिनी स्तोत्रं।।

इन्द्राक्षी मूलमन्त्र - ॐ ऐं हीं श्रीं क्लीं क्लूं इन्द्राक्ष्यै नमः

।।श्री इन्द्राक्षी कवच।।

ॐ नमो भगवत्यै इन्द्राक्ष्यै महालक्ष्म्यै सर्वजनवशंकर्यै सर्वदुष्टग्रहस्ताम्भिन्यै स्वाहा। ॐ नमो भगवित पिङ्गलभैरिव त्रैलोक्लिक्ष्म त्रैलोक्यमोहिनीन्द्राक्षि मां रक्ष रक्ष ह्रं फट् स्वाहा।

ॐ नमो भगवित भद्रकालि महादेवि कृष्णवर्णे तुङ्गस्तिन शूर्पहस्ते कवाटवक्षःस्थले कपालधरे परशुधरे चापधरे विकृतरूपधरे विकृतरूपं महाकृष्णसर्पयज्ञोपवीतिनि भस्मोद्धवलितसर्वगात्रीन्द्राक्षि मां रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा।

ॐ नमो भगवित प्राणेश्विर पद्मासने सिंहवाहने महिषासुरमर्दिन्युष्णज्वरिपत्तज्वरवात-ज्वरश्लेष्मज्वरकफज्वरालापज्वरसंनिपातज्वरकृत्रिमज्वरकृत्यादिज्वरैकाहिकज्वरद्व्याहिक-ज्वरत्र्याहिकज्वरचतुराहिकज्वरपञ्चाहिकज्वरपक्षज्वरमासज्वरषण्मासज्वरसंवत्सरज्वरसर्वाङ्ग-ज्वरान् नाशय नाशय हर हर जिह जिह दह दह पच पच ताडय ताडयाकर्षयाकर्षय विद्विष: स्तम्भय स्तम्भय मोहय मोहयोच्चाटयोच्चाटय हं फट् स्वाहा।

ॐ हीं ॐ नमो भगवित प्राणेश्विर पद्मासने लम्बोष्ठि कम्बुकिण्ठिक किलकामरूपिण परमन्त्रपरयन्त्रपरतन्त्रप्रभेदिनि प्रतिपक्ष विध्वंसिनि परवलदुर्गविमिदिनि शत्रुकरच्छेदिनि सकलदुष्टज्वरिनवारिणि भूतप्रेतिपशाचब्रह्मराक्षसयक्षयमदूतशािकनीडािकनीकािमनी-स्तिम्भनीमोिहनीवशंकरीकुिक्षरोगिशरोरोगनेत्ररोगक्षयापस्मारकुष्ठादिमहारोगिनवािरिण मम सर्वरोगान् नाशय नाशय हां हीं हुं हैं हीं हु: हुं फट् स्वाहा।

ॐ ऐं श्रीं हुं दुं इन्द्राक्षि मां रक्ष रक्ष, मम शत्रून् नाशय नाशय, जलरोगान् शोषय शोषय, दु:खव्याधीन् स्फोटय स्कोटय, क्रूरानरोन् भञ्जय भञ्जय, मनोग्रन्थिप्राणग्रन्थि-शिरोग्रन्थीन् काटय काटय इन्द्राक्षि मां रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा।

ॐ नमो भगवित माहेश्विर महाचिन्तामणि दुर्गे सकलिसद्धेश्विर सकलजनमनोहारिणि कालकालरात्र्यनलेऽजितेऽभये महाघोररूपे विश्वरूपिणि मधुसूदिन महाविष्णुस्वरूपिणि नेत्रशूलकर्णशूलकिटशूलपक्षशूलपाण्डुरोगकमलादीन् नाशय नाशय वर्ष्णवि ब्रह्मास्त्रेण विष्णुचक्रेण रुद्रशूलेन यमदण्डेन वरुणपाशेन वासववज्रेण सर्वानरीन् भञ्जय भञ्जय यक्षग्रहराक्षसग्रहस्कन्दग्रहिवनायकग्रहबालग्रहचौरग्रहकूष्माण्डग्रहादीन् निगृह्ण निगृह्ण राजयक्ष्मक्षयरोगतापज्वरिवारिणी मम सर्वज्वरात्राशयनाशयसर्वग्रहानुच्चाटयोच्चाटय हुं फट् स्वाहा। इति इन्द्राक्षी कवच।

।।अपराजिता स्तोत्रम्।।

यह स्तोत्र सुख शान्ति के लिए, धन के लिए, समृद्धि के लिए और सर्वत्र विजय प्राप्ति के लिए है। अत: नित्य ५,७,११ संख्या में पाठ करने से ग्रह शान्त रहते हैं, (इत्यनुभवम् सिद्धम्)

गणेशाय नमः - ॐ अस्य श्री अपराजिता मन्त्रस्य वेदव्यास ऋषिरनुष्टुप् छन्दः। क्लीं बीजं हूं शक्तिः सर्वाभिष्टसिद्ध्यर्थे जपे पाठे विनियोगः।

मार्कण्डेय उवाच - ''शृणुध्वं मुनयः सर्वे सर्वकामार्थसिद्धिदाम्। असिद्धसाधनीं देवीं वैष्णवीमपराजिताम्।।'' ध्यानम् –

नीलोत्पल-दल-श्यामां भुजङ्गाभरणोज्वलाम्, बालेन्दु-मौलिसदृशीं नयनित्रतयान्विताम्। शंखचक्रधरां देवीं वरदां भयशालिनीम्, पीनोतुङ्गस्तनीं साध्वीं बद्ध-पद्मासनां शिवाम्। अजितां चिन्तयेद्देवीं वैष्णवीमपराजिताम्।। शुद्धस्फटिक संकाशां चन्द्रकोटि सुशीतलाम्, अभयां वर हस्तां च श्वेतवस्त्रैरलंकृताम्। नानाभरण-संयुक्तां जयन्तीमपराजिताम्, त्रिसन्ध्यं यः स्मरेद्देवीं ततः स्तोत्रं पठेत्सुधीः।।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय। ॐ नमोस्त्वनन्ताय सहस्रशीर्षाय क्षीरार्णवशायिने, शेषभोग-पर्यङ्काय गरुड-वाहनाय अमोघाय अजाय अजिताय अपराजिताय पीतवाससे। वसुदेव-संकर्षण-प्रद्युम्नानिरुद्ध-हयशीर्ष-मत्स्यकूर्मवराहनृसिंहवामनरामराम वर-प्रद! नमोस्तु ते। असुर दैत्यदानव-यक्ष-राक्षस-भूत-प्रेत-पिशाचिकन्नर-कूष्माण्ड-सिद्ध-योगिनी-डािकनी-स्कन्दपुरोगान् ग्रहान्नक्षत्रग्रहांश्चान्यान् हन हन, पच, पच, मथ-मथ, विध्वंसय, विध्वंसय, विद्रावय, विद्रावय, चूर्णय, चूर्णय शंखेन चक्रेण वज्रेण शूलेन गदया मुसलेन हलेन भस्मीकुरु कुरु, कुरु स्वाहा।। ॐ सहस्रबाहो सहस्रप्रहरणायुद्ध जय, जय, विजय, विजय, अजित अमित अपराजित अप्रतिहत सहस्रनेत्र ज्वल, ज्वल, प्रज्वल, प्रज्वल, प्रज्वल, विश्वरूप, बहुरूप मधुसूदन महावराहच्युत महापुरुष पुरुषोत्तम पद्मनाम वैकुण्ठानिरुद्ध- नारायण-गोविन्द दामोदर हृषोकेश केशव सर्वासुरोत्सादन सर्वमन्त्रप्रभञ्जन, सर्वदेवनमस्कृत सर्वबन्धनिवमोचन, सर्वशत्रुवशंकर, सर्वाहितप्रमर्दन, सर्वग्रहिनवारण, सर्वरोगप्रशमन, सर्व पाप विनाशन, जनार्दन नमोस्तु ते स्वाहा। य इमां अपराजितां परमवैष्णवीं पठित, सिद्धां जपित, सिद्धां, महाविद्यां पठित, जपित, स्मरित, शृणोति, धारयित, कीर्तयित वा न तस्याग्निवायुर्वज्ञोपलाशिनभयं नववर्षणि भयं, न समुद्रभयं न ग्रह-भयं न चौर-भयं वा भवेत्। क्षचिद्रात्र्यन्धकारस्त्री-राजकुलविषोपविषगरलवशीकरणविद्वेषोच्चाटनवधबन्धनभयं वा न भवेत्। एतैर्मन्त्रैः सदाहतैः सिद्धैः संसिद्धपूजितैः, तद्यथा ॐ नमस्तेस्त्वनघेऽ- जितेऽपराजिते, पठित सिद्धे, पठित सिद्धे, जपित सिद्धे, जपित सिद्धे, स्मरित सिद्धे, महाविद्ये एकादशे उमे धुवे अरुन्धित सावित्र, गायित्र, जातवेदिस मानस्तोके सरस्वित धरिण धारिण सौदामिन अदिति दिति गौरि गांधारी मातंगी कृष्णे यशोदे सत्यवादिन ब्रह्मवादिन कालि कपालि करालनेत्रे सद्योपयाचितकरिजलगतस्थलगतमंतरिक्षगं वा मां रक्ष रक्ष सर्वभतेभ्यः सर्वोपद्रवेभ्यः, स्वाहा।

यस्याः प्रणश्यते पुष्पं गर्भो वा पतते यदि। म्रियन्ते बालका यस्याः काकवन्ध्या च या भवेत्।। भूर्जपत्रेत्वमां विद्यां लिखित्वा धारयेद्यदि। एतैदींषैर्न लिप्येत् सुभगा पुत्रिणी भवेत्।। शस्त्रं वार्यते ह्येषा समरे काण्डवारिणी। गुल्मशूलाक्षि रोगाणां क्षिप्रं नाशयते व्यथाम्।। शिरोरोगज्वराणां च नाशिनी सर्वदेहिनाम् तद्यथा–एकाहिक-द्व्याहिक-व्याहिक-चातुर्थिकार्धमासिक-द्वैमासिक-त्रैमासिक-चातुर्मासिकपञ्चमासिकषाण्मासिक-वातिक-पैचिक श्लेष्मिक, सान्निपातिकसततज्वर-विषमज्वराणां नाशिनी सर्व देहिनां ओं हर हर कालि सर सर गौरि धम धम विद्ये आले ताले माले गन्धे पच पच विद्ये मथ मथ विद्ये, नाशय पापं, हर दुःस्वप्नं, विनाशय मातः, रजिन सन्ध्ये दुन्दुभिनादे मानसवेगे शंखिनी चिक्रणी विज्ञणी शूलिनी अपमृत्युविनाशिनी विश्वेश्वरी द्राविडी द्राविडी केशवदियते, पशुपतिसहिते, दुन्दुभिनादे मानसवेगे दुन्दुभि-दमनी शविर किराती मातंगी ॐ हां हीं हूं हैं हैं हः ओं ओं श्रां श्रीं श्रुं श्रें श्रें श्रें श्रः अं क्ष्वौ तुरु तुरु स्वाहा। ॐ ये इमां द्विषन्ति प्रत्यक्षं परोक्षं वा तान् दम दम मर्दय मर्दय पातय पातय शोषय शोषय उत्सादय उत्सादय ब्रह्माणि माहेश्वरि।

वैष्णवी वैनायकी कौमारी नारसिंही ऐन्द्री चान्द्री आग्नेयी चामुंडे वारुणि वायव्ये रक्ष रक्ष प्रचण्डिवद्ये ॐ इन्द्रोपेन्द्र-भिगनी जये विजये शान्तिपृष्टितृष्टिविविद्धिनी।। कामांकुशे कामदुधे

सर्वकामफलप्रदे सर्वभूतेषु मां प्रियं कुरु कुरु स्वाहा। ॐ आकर्षिणी आवेशिनी तापिनी, धरणि धारिणी मदोन्मादिनी शोषिणी सम्मोहिनी महानीले नीलपताके महागौरि महाप्रिये महाचान्द्रिका महासौरि महायमायूरि आदित्यरश्मिनी जाह्नवी यमघण्टे किलिकिलि चिन्तामणि सुरभिसुरोत्पन्ने सर्व-काम-दुधे यथाभिलिषतं कार्यं तन्मे सिद्धयतु स्वाहा। ॐ भू: स्वाहा। ॐ भु: स्वाहा। ॐ स्व: स्वाहा। ॐ भूर्भ्व: स्व: स्वाहा। ॐ यत एवागतं पापं तत्रैव प्रतिगच्छतु स्वाहा। ॐ बले बले महाबले असिद्धि साधिनी स्वाहा।

।।इति श्रीत्रैलोक्यविजया अपराजिता सम्पूर्णा।।

।।श्री जगदम्बा स्तुति।।

जय-जय त्रिभ्वन वन्दनी गिरिनन्दिन हे, गिरिनन्दिनी हे। असुर निकन्दिनि मात् जय-जय शम्भुप्रिये (विष्णुप्रिये)।। त्रिभुवन शक्ति निज धारणि शुभकारिणी हे, शुभकारिणी हे। भक्त उद्धारण मातु जय-जय शम्भु प्रिये मधुकैटभ संहारिणी सुरतारिणी हे, सुरतारिणी हे। महिष विदारनि शम्भप्रिये।। मात् जय जय धुम्रविलोचन मोचिनि त्रयलोचिन हे, त्रयलोचिन हे। विमोचिन मात् जय जय शम्भुप्रिये।। चण्डमुण्ड भट मर्दिनि सुविलासिनी हे, सुविलासिनि हे। मन्दहंसनि स्रमात् जय-जय शम्भुप्रिये।। रक्तबीज रुधिरासिनि भयनासिनि हे, भय नासिनि हे। वासिनि मातु जय-जय शम्भुप्रिये।। शुम्भ-निशुम्भ विभंजनि रिपुगंजनि हे रिपुगंजनि हे। शिव मन रंजिन मात् जय जय शम्भुप्रिये।। धरणीधर वरदायिनी, वरदायिनी हे, वरदायिनी हे। मृग रिप् वाहन मात् जय जय शम्भ् प्रिये।। भूलचूक सब कर क्षमा करुणामयि हे करुणामयि हे। मेरे (मम) शिर पे रख दे हाथ जय जय शम्भुप्रिये।। दुर्गे दुर्गति नाशिनि दुर्मति हरिये दुर्मति हरिये। सद्बुद्धि दे दे मात् जय जय शम्भुप्रिये (विष्णुप्रिये)।

देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रम्

न मन्त्रं नो यन्त्रं तदिप च न जाने स्तृतिमहो न चाह्वानं ध्यानं तदिप च न जाने स्तृतिकथा:। न जाने मुद्रास्ते तदिप च न जाने विलपनं परं जाने मातस्त्वदनुसरणं क्लेशहरणम्।।१।। विधेरज्ञानेन द्रविणविरहेणालसतया विधेयाशक्यत्वात्तव चरणयोर्या च्युतिरभूत्। तदेतत् क्षन्तव्यं जननि सकलोद्धारिणि शिवे कुपुत्रो जायेत क्रचिदपि कुमाता न भवति।।२।। पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः सन्ति सरलाः परं तेषां मध्ये विरलतरलोऽहं तव सुतः। मदीयोऽयं त्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे कुपुत्रो जायेत क्वचिदिप कुमाता न भवित।।३।। जगन्मातर्मातस्तव चरणसेवा न रचिता न वा दत्तं देवि द्रविणमपि भूयस्तव मया। तथापि त्वं स्नेहं मिय निरुपमं यत्प्रकुरुषे कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति।।४।। परित्यक्ता देवा विविधविधिसेवाकुलतया मया पञ्चाशीतेरिधकमपनीते तु वयसि। इदानीं चेन्मातस्तव यदि कृपा नापि भविता निरालम्बो लम्बोदरजननि कं यामि शरणम्।।५।। श्वपाको जल्पाको भवति मधुपाकोपमगिरा निरातङ्को रङ्को विहरति चिरं कोटिकनकै:। तवापर्णे कर्णे विशति मनुवर्णे फलिमदं जनः को जानीते जनिन जपनीयं जपविधौ।।६।। चिताभस्मालेपो गरलमशनं दिक्पटधरो जटाधारी कण्ठे भूजगपतिहारी पशुपति:। कपाली भूतेशो भजति जगदीशैकपदवीं भवानि त्वत्पाणिग्रहणपरिपाटीफलमिदम्।।७।। न मोक्षस्याकाङ्का भवविभववाञ्छापि च न मे न विज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छापि न पुन:। अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातु मम वै मृडानी रुद्राणी शिव शिव भवानीति जपत:।।८।। नाराधितासि विधिना विविधोपचारैः किं रुक्षचिन्तनपरैर्न कृतं वचोभिः। श्यामे त्वमेव यदि किञ्चन मय्यनाथे धत्से कृपामुचितमम्ब परं तवैव।।९।।

> आपत्सु मग्नः स्मरणं त्वदीयं करोमि दुर्गे करुणार्णववेशि। नैतच्छठत्वं मम भावयेथाः क्षुधातृषार्ता जननीं स्मरन्ति।।१०।। जगदम्ब विचित्रमत्र किं परिपूर्णा करुणास्ति चेन्मिय। अपराधपरम्परापरं न हि माता समुपेक्षते सुतम्।।११।। मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नी त्वत्समा न हि। एवं ज्ञात्वा महादेवि यथायोग्यं तथा कुरु।।१२।।

।।इति श्रीशङ्कराचार्यविरचितं देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

विजय सूक्तं

(मुकदमे, चुनाव, परीक्षा या जीवन के किसी भी क्षेत्र में जब पराजय की अनुभूति होने लगे तो उसे विजय में बदलने के लिए विजय सूक्त का पाठ व हवन अचूक अस्त्र का सा काम करता है। किसी भी कार्य में विजय और सफलता प्राप्ति के लिए इसके नित्य प्रति ११ पाठ करने चाहिए एवं हवन भी करे।)

मन्त्र इस प्रकार है -

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकं मृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञोऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम्। तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्ययणममुष्याः पुत्रमसौयः। सग्राह्माः पाशान्मामोचि। तस्येद वर्चस्तेजः प्राणमायुर्निवेष्टयादमीमेनमधराञ्चं पादयामि।।१।।

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकं मृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञोऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम्। तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौयः। सोऽभूत्या पाशान्मामोचि। तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्निवेष्ट-यामीदमेनमधराञ्चं पादयामि।।२।।

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकं मृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञोऽस्माकं पश्वोऽस्माकं वीरा अस्माकम्। तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौयः। सोऽभूत्याः पाशान्मामोचि। तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्निवेष्टयादमीमेनमधराञ्चं पादयामि।।३।। जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकंमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञोऽस्माकं पश्वोऽस्माकं प्रजाऽस्माकं वीरा अस्माकम्। तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौयः। सनिभूत्या पाशान्मामोचि। तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्निवेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि।।४।।

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकंमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञोऽस्माकं पश्वोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम्। तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौयः। स पराभूत्याः पाशान्तमोचि। तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्निवेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि।।५।।

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकंमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञोऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम्। तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौतः। सदेवजातीनां पाशान्मामाचि। तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्निवेष्टयामादमेनमधराञ्चं पादयामि।।६।।

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकंमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञोऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम्। तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौयः। स बृहस्पतः पाशान्मामोची। तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्निवेष्टया-मीदमेनमधराञ्चं पादयामि।।७।।

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकं मृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञोऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम्। तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौयः। प्रजापतेः पाशान्मा मोचि। तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्निवेष्टया-मीदमेनमधराञ्चं पादयामि।।८।।

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकं मृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञोऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम्। तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौयः। स ऋषीणां पाशान्मामोचि। तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्निवेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि।।९।।

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकंमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञोऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम् तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौयः स आर्षेयाणां पाशान्मामोचि तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्निवेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि।।१०।।

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकं मृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञोऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम्। तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणमयुष्याः पुत्रमसौयः। सोऽङ्गिरसां पाशान्मामोचि। तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्निवेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि।।११।।

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकंमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञोऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजाअस्माकं वीर अस्माकम्। तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौयः सोऽभूत्याः पाशान्मा मोचि। तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्निवेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि।।१२।।

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकं मृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञोऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम्। तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौयः। सोऽभूत्याः पाशान्मामोचि। तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्निवेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि।।१३।।

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकं मृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञोऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजाअस्माकं वीरा अस्माकम्। तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौयः। स अथर्वणानांपाशान्मामोचि। तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्निवेष्टयामी-दमेनमधराञ्चं पादयामि।।१४।।

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकंमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञोऽस्माकं पश्वोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम्। तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौयः। स वनस्पतीनां पाशान्मामोचि। तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्निवेष्ट-यामीदमेनमधराञ्चं पादयामि।।१५।।

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकंमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञोऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम्। तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौयः। स वान पत्यानां पाशान्मामोचि। तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्निवेष्टया–मीदमेनमधराञ्चं पादयामि।।१६।।

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकंमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञो ३ ऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम्। तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौयः। स ऋतूनां पाशान्मामोचि। तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्निवेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि।।१७।।

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकं मृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञो ३ ऽस्माकं पश्चोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकं । तस्मादमु निर्भजामोऽमुमामुष्यायण-ममुष्याः पुत्रमसौयः। स आर्तवनां पाशान्मा मोचि। तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्निवेष्ट-यामीदमेनमधराञ्चं पादयामि।।१८।।

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकं मृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञो ३ ऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम्। तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायण–ममुष्याः पुत्रमसौयः। स मसानां पाशान्मामोचि। तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्निवेष्टया–मीदमेनमधराञ्चं पादयामि।।१९।।

जितमस्माकं मुद्भित्रमस्माकंमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञो ३ ऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम्। तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायण–ममुष्याः पुत्रमसौयः। स सोऽधमासनां पाशान्मामोचि तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्निवेष्टया–मीदमेनमधराञ्चं पादयामि।।२०।।

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकंमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञो ३ ऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम्। तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः

जग-दीपिका

पुत्रमसौय:। सोऽहोरात्रयो पाशान्मामोचि। तस्येदं वर्चस्तेज: प्राणमायुर्निवेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि।।२१।।

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकंमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञो ३ ऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम्। तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौयः सोह्रोःसयतोः पाशान्मामोचि। तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्निवेष्टयामीदमेनमधराञ्चं पादयामि।।२२।।

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकं मृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञो ३ ऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम्। तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायण–ममुष्याः पुत्रमसौयः। सद्यावा पृथिव्योः पाशान्मामोचि। तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्निवेष्टया–मीदमेनमधराञ्चं पादयामि।।२३।।

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकंमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञो ३ ऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम्। तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौयः। स सइन्द्राग्न्योः पाशान्मामोचि। तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्निवेष्टया–मीदमेनमधराञ्चं पादयामि।।२४।।

जितमस्माकमुद्भित्रमस्माकं मृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञो ३ ऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम्। तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायण-ममुष्याः पुत्रमसौयः। स समित्रावरुणयो पाशान्मामोचि। तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्निवेष्टया-मीदमेनमधराञ्चं पादयामि।।२५।।

जितमस्माकमुद्भित्रमस्माकंमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञो ३ ऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम्। तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौयः। स राज्ञोवरुणस्य पाशान्मामोचि। तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्निवेष्टया–मीदमेनमधराञ्चं पादयामि।।२६।।

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकंमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञो ३ ऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम्। तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौयः। स मृत्योः षड्वीशात् पाशान्मामोचि। तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्निवेष्टया–मीदमेनमधराञ्चं पादयामि।।२७।।

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकंमभ्यष्ठां विश्वाः पृतना आरतीः। तदग्निराहतदुसोम आ हपूषामाधात् सुकृतस्व लोके अगन्म स्वः स्वरगन्म स सूर्यस्य ज्योतिषागन्म। वस्योभूयाय वसुमान् यज्ञो वसु वंशिषोय वसुमान् भूयास वसुमयिधेहि।।२८।।

।।इति विजय सूक्तं।।

अथ शिव अनुष्ठान प्रयोग

किसी भी मन्त्र अथवा स्तोत्र के द्वारा विशिष्ट कार्य की सिद्धि अपेक्षित होने पर उसके पूर्वाङ्ग का स्वरूप भी विशिष्ट ही होना चाहिए। ऐसी शास्त्राज्ञा है। 'महिम्न:स्तोत्र' से लक्ष्मी-प्राप्ति, दारिद्रचनाश, शिवकृपा-प्राप्ति, रोग-निवृत्ति जैसी कामनाओं की पूर्ति के लिए 'विशिष्ट पूर्वाङ्ग विधान' इस प्रकार है –

इसमें पहले १. गुरुस्तोत्र, २. संकटनाशन गणेशस्तोत्र, ३. श्रीतुलसीदासकृत शिवस्तोत्र के साथ अन्य कामनानुसारी स्तोत्र का पाठ करके 'मिहम्न:स्तोत्र' का पाठ और बीजमन्त्रों का लोम-विलोम सम्पुट-पाठ किया जाता है। यदि भय-असंतोष आदि के निवारण की अपेक्षा हो तो 'अष्टोत्तरशत-भैरव-नामाविल' का आद्यन्त में पाठ करना उत्तम है। विद्या एवं ज्ञानप्राप्ति के लिए 'सरस्वत्यष्टक' 'रिवरुद्रपितामह,' से प्रारम्भ और 'तव नौमि सरस्वित,' तक का आद्यन्त में पाठ करे। 'हनुमान चालीसा' और बगलामुखी स्तोत्र का पाठ भी आदि-अन्त में करने से वाद-विवाद आदि में विजय प्राप्त होती है।

अन्य कामनापूरक प्रयोग - जिस प्रकार 'दुर्गासप्तशती' के किसी एक मन्त्र का स्वतन्त्र रूप से बीजमन्त्र लगाकर जप करने से कार्य-सिद्धि होती है, उसी प्रकार महिम्न:स्तोत्र के श्लोकों के प्रयोग करने का भी विधान मिलता है। यथा-

- १. **सर्व कामना पूर्ति के लिए -** 'ऐं हीं श्रीं हौं जूं सः' इन बीजमन्त्रों का प्रत्येक श्लोक के साथ लोम-विलोम पाठ करने से सिद्धि होती है।
- २. **दाम्पत्य सुख के लिए -** 'ऐं हीं श्रीं' का लोम-विलोम करके 'नमो नेदिष्ठाय。' इत्यादि का जप।
- ३. **समृद्धि-प्राप्ति के लिए -** स्वर्णाकर्षणभैरव के मन्त्र का सम्पुट लगाकर 'यदृद्धिं सुत्राम्णो_॰' इत्यादि का जप।
- ४. **संतित-सुख के लिए -** 'ऐं हीं श्रीं' का आदि में और अन्त में 'श्रीं हीं ऐं' का सम्पुट लगाकर 'हिरस्ते साहस्त्रम्,' पद्य का जप।
- ५. **मानसिक पीड़ा-निवारण के लिए -** 'ऐं हीं श्रीं' 'कृशपरिणति चेतः' इत्यादि पद्य और 'श्रीं हीं ऐं' का जप।
- ६. विजय के लिए 'श्रीं हीं ॐ नमो नेदिष्ठाय。' इत्यादि पद्य और अन्त में 'ॐ हीं श्रीं' जोड़कर जप।
- ७. **सम्मान-प्राप्ति के लिए -** आदि में 'श्रीं हीं क्लीं' और अन्त में 'क्लीं हीं श्रीं' बीजमन्त्र लगाकर 'भव: शर्वो रुद्रः' इत्यादि पद्य का जप।

- ८. विद्याप्राप्ति के लिए 'विशुद्धज्ञानदेहायः' इत्यादि का सम्पुट लगाकर 'महिम्नः स्तोत्र' का नित्य पूरा पाठ।
- ९. पुत्रप्राप्ति प्रयोग नारी निराहार (प्रातःकाल कुछ भी नहीं लेकर) स्नानादि करके पित के साथ प्रतिदिन गेहूं के आटे के ११ पार्थिवेश्वर बनाये और उनके ऊपर बताये अनुसार 'मिहम्न-स्तोत्र' के श्लोकों से पार्थिव-पूजा करके ११ पाठ से अभिषेक करे। अभिषेक-जल ग्रहण करे और पुत्र-प्राप्ति के लिए प्रार्थना करे। यह प्रयोग २१ अथवा ४१ दिन तक करे। अवश्य ही कामना पुरी होगी।

शिव महिम्न एवं ताण्डव स्तोत्र का अनुष्ठान भी अद्भुत प्रभाव वाला है, ४१ दिन तक लगातार ११ पाठ महिम्न व ११ पाठ ताण्डव स्तोत्र का करे, शिवपूजा व अभिषेक आवश्यक है, लगातार जल व दूध धारा चलती रहे। पाठ पूर्ण होने पर नित्य पान पत्ता पर एक दाना पीली सरसों व एक अखण्डीत चावल दाना मनोकामना करते हुए भगवान शिव को अर्पण करे। अप्रत्यक्ष रूप से लाभ होता है।

श्री शिवमानस पूजा

रत्नैः किल्पतमासनं हिमजलैः स्नानं च दिव्याम्बरं नानारत्निवभूषितं मृगमदामोदाङ्कितं चन्दनम्। जातीचम्पक बिल्वपत्ररचितं पुष्पं च धूपं तथा दीपं देव दयानिधे पशुपते हृत्किल्पतं गृह्यताम्।।१।।

सौवर्णे नवरत्नखण्डरिचते पात्रे घृतं पायसं भक्ष्यं पञ्चविधं पयोदिधयुतं रम्भाफलं पानकम्। शाकानामयुतं जलं रुचिकरं कर्पूरखण्डोज्जवलं ताम्बूलं मनसा मया विरचितं भक्त्या प्रभो स्वीकुरु।।२।।

छत्रं चामरयोर्युगं व्यजनकं चादर्शकं निर्मलं वीणाभेरिमृदङ्गकाहलकला गीतं च नृत्यं तथा। साष्टाङ्ग प्रणित: स्तुतिर्बहुविधा ह्येतत्समस्तं मया सङ्कल्पेन समर्पितं तव विभो पूजां गृहाण प्रभो।।३।।

आत्मा त्वं गिरिजा मितः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः। सञ्चारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणिसर्वा गिरो यद्यत्कर्म करोमि तत्तदिखलं शम्भो तवाराधनम्।।४।।

करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा श्रवणनयनजं वा मानसं वापराधम्। विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो।।५।।

।।इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचिता शिवमानस पूजा समाप्त।।

श्री शिवमहिम्नः स्तोत्रम् पुष्पदन्त उवाच

महिम्नः पारं ते परमविदुषो यद्यसदृशी, स्तुतिर्ब्रह्मादीनामपि तदवसन्नास्त्वयि गिरः। अथावाच्यः सर्वः स्वमतिपरिणामावधि गृणन्, ममाप्येष स्तोत्रे हर निरपवादः परिकरः।।१।। अतीत: पन्थानं तव च महिमा वाङ्मनसयो, रतद्वयावृत्त्या यं चिकतमिमधत्ते श्रुतिरिप। स कस्य स्तोतव्यः कतिविधगुणः कस्य विषयः, पदे त्वर्वाचीने पतित न मनः कस्य न वचः।।२।। मधुस्फीता वाच: परमममृतं निर्मितवत, स्तव ब्रह्मन् किं वागपि सुरगुरोर्विस्मयपदम्। मम त्वेतां वाणीं गुणकथनपुण्येन भवतः पुनामीत्यर्थेऽस्मिन् पुरमथन बुद्धिर्व्यवसिता।।३।। तवैश्वर्यं यत्तज्जगदुदयरक्षाप्रलयकृत्, त्रयीवस्तुव्यस्तं तिसृषु गुणभिन्नासु तनुषु। अभव्यानामस्मिन् वरद रमणीयामरमणीं, विहन्तुं व्याक्रोशीं विदधत इहैके जडिधय:।।४।। किमीहः किं कायः स खलु किमुपायित्रभुवनं, किमाधारो धाता सूजित किमुपादान इति च। अतर्क्यैश्वर्ये त्वय्यनवसरदुःस्थो हत्धियः, कुतर्कोऽयं कांश्चिन्मुखरयति मोहाय जगतः।।५।। अजन्मानो लोका: किमवयववन्तोऽपि जगता, मधिष्ठातारं किं भवविधिरनादृत्य भवति। अनीशो वा कुर्याद् भुवनजनने कः परिकरो, यतो मन्दास्त्वां प्रत्यमरवर संशेरत इमे।।६।। त्रयी सांख्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णविमति, प्रभिन्ने प्रस्थाने परिमदमदः पथ्यमिति च। रुचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिलनानापथजुषां, नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव।।७।। महोक्षः खट्वाङ्गं परशुरजिनं भस्म फणिनः, कपालं चेतीयत्तव वरद तन्त्रोपकरणम्। सुरास्तां तामृद्धिं दधित च भवद्भ्रप्रणिहितां, न हि स्वात्मारामं विषयमृगतृष्णा भ्रमयित।।८।। ध्रुवं कश्चित् सर्वं सकलमपरस्त्वध्रुविमदं, परो ध्रौव्याध्रौव्ये जगित गदित व्यस्तविषये। समस्तेऽप्येतस्मिन् पुरमथन तैर्विस्मित इव, स्तुवञ्जिह्नेमि त्वां न खलु ननु धृष्टा मुखरता।।९।। तवैश्वर्यं यत्नाद् यदुपरि विरिञ्चो हरिरधः, परिच्छेतुं यातावनलमनलस्कन्धवपुषः। ततो भिक्तश्रद्धाभरगुरुगृणदुभ्यां गिरिश यत्, स्वयं तस्थे ताभ्यां तव किमनुवृत्तिर्न फलित।।१०।। अयत्नादापाद्य त्रिभुवनमवैरव्यतिकरं, दशास्यो यद् बाहूनभृत रणकण्डूपरवशान्। शिर:पद्मश्रेणीरचितचरणाम्भोरुहबले: , स्थिरायास्त्वद्भक्तेस्त्रिपुरहर विस्फूर्जितमिदम्।।११।। अमुष्य त्वत्सेवासमधिगतसारं भुजवनं, बलात् कैलासेऽपि त्वदधिवसतौ विक्रमयत:। अलभ्या पातालेऽप्यलसचलिताङ्गष्ठशिरसि, प्रतिष्ठा त्वय्यासीद् ध्रुवमुपचितो मुह्यति खल:।।१२।। यदृद्धिं सुत्राम्णो वरद परमोच्चैरपि सती, मधश्चक्रे बाण: परिजनविधेयत्रिभुवन:। न तच्चित्रं तस्मिन् वरिवसितरि त्वच्चरणयो, र्न कस्याप्युन्नत्यै भवति शिरसस्त्वय्यवनिः।।१३।।

अकाण्डब्रह्माण्डक्षयचिकतदेवासुरकृपा, विधेयस्याऽऽसीद्यस्त्रिनयनविषं संहृतवत:। स कल्माषः कण्ठे तव न कुरुते न श्रियमहो, विकारोऽपि श्लाघ्यो भुवनभयभङ्गव्यसनिनः।।१४।। असिद्धार्था नैव क्वचिदिप सदेवासुरनरे, निवर्तन्ते नित्यं जगति जयिनो यस्य विशिखाः। स पश्यन्नीश त्वामितरसुरसाधारणमभूत्, स्मरः स्मर्तव्यात्मा नहि वशिषु पथ्यः परिभवः।।१५।। मही पादाघाताद् व्रजति सहसा संशयपदं, पदं विष्णोभ्रीम्यद्भजपरिघरुग्णग्रहगणम्। मुहुद्यौदी:स्थ्यं यात्यनिभृतजटाताडिततटा, जगद्रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैव विभुता।।१६।। वियद्व्यापी तारागणगुणितफेनोद्गमरुचिः, प्रवाहो वारां यः पृषतलघुदृष्टः शिरसि ते। जगद् द्वीपाकारं जलिधवलयं तेन कृतिम, त्यनेनैवोन्नेयं धृतमिहम दिव्यं तव वपु:।।१७।। रथः क्षोणी यन्ता शतधृतिरगेन्द्रो धनुरथो, रथाङ्गे चन्द्रार्कौ रथचरणपाणिः शर इति। दिधक्षोस्ते कोऽयं त्रिपुरतृणमाडम्बरविधि, विंधेयै: क्रीडन्त्यो न खलु परतन्त्रा: प्रभुधिय:।।१८।। हरिस्ते साहस्रं कमलबलिमाधाय पदयो, यदेकोने तस्मिन् निजमुदहरन्नेत्रकमलम्। गतो भक्त्युद्रेक: परिणतिमसौ चक्रवपुषा, त्रयाणां रक्षायै त्रिपुरहर जागर्ति जगताम्।।१९।। क्रतौ सुप्ते जाग्रत्त्वमसि फलयोगे क्रतुमतां, क्र कर्म प्रध्वस्तं फलति पुरुषाराधनमृते। अतस्त्वां सम्प्रेक्ष्य क्रतुषु फलदानप्रतिभुवं, श्रुतौ श्रद्धां बद्धवा दृढपरिकरः कर्मसु जनः।।२०।। क्रियादक्षो दक्षः क्रतुपतिरधीशस्तनुभृता, मृषीणामार्त्विज्यं शरणद सदस्याः सुरगणाः। क्रतुभ्रेषस्त्वत्तः क्रतुफलविधानव्यसनिनो, ध्रुवं कर्तुः श्रद्धविधुरमभिचाराय हि मखा:।।२१।। प्रजानाथं नाथ प्रसभमभिकं स्वां दुहितरं, गतं रोहिद्भृतां रिरमयिषुमृष्यस्य वपुषा। धनुष्पाणेर्यातं दिवमपि सपत्राकृतमम्ं, त्रसन्तं तेऽद्यापि त्यजित न मृगव्याधरभस:।।२२।। स्वलावण्याशंसाधृतधनुषमह्नाय तृणवत्, पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वा पुरमथन पुष्पायुधमपि। यदि स्त्रेणं देवी यमनिरत देहार्धघटना, दवैति त्वामद्भा बत वरद मुग्धा युवतय:।।२३।। श्मशानेष्वाक्रीडा स्मरहर पिशाचाः सहचरा, श्चिताभस्मालेपः स्नगपि नुकरोटीपरिकरः। अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलं, तथापि स्मर्तृणां वरद परमं मङ्गलमिस।।२४।। मनः प्रत्यक्चित्ते सविधमवधायात्तमरुतः, प्रहृष्यद्रोमाणः प्रमदसलिलोत्सङ्गितदृशः। यदालोक्याह्लादं हृद इव निमज्यामृतमये, दधत्यन्तस्तत्त्वं किमपि यमिनस्तत् किल भवान्।।२५।। त्वमर्कस्त्वं सोमस्त्वमिस पवनस्त्वं हुतवह, स्त्वमापस्त्वं व्योम त्वमु धरणिरात्मा त्विमिति च। परिच्छन्नामेवं त्विय परिणता बिभ्रतुं गिरं, न विद्यस्तत्तत्त्वं वयिमह तु यत्त्वं न भविस।।२६।। त्रयीं तिस्रो वृत्तीस्त्रिभुवनमथो त्रीनिप सुरा, नकाराद्यैर्वर्णैस्त्रिभिरभिद्धत् तीर्णविकृति। तुरीयं ते धाम ध्वनिभिरवरुन्धानमणुभिः, समस्तं व्यस्तं त्वां शरणद गृणात्योमिति पदम्।।२७।। भवः शर्वो रुद्रः पशुपतिरथोग्रः सहमहां, स्तथा भीमेशानाविति यदभिधानाष्टकमिदम्। अमुष्मिन् प्रत्येकं प्रविचरति देव श्रुतिरपि, प्रियायास्मै धाम्ने प्रविहितनमस्योऽस्मि भवते।।२८।। नमो नेदिष्ठाय प्रियदव दिवष्ठाय च नमो, नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर मिहष्ठाय च नमः।
नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन यविष्ठाय च नमो, नमः सर्वस्मै ते तिदिद्मिति शर्वाय च नमः।।२९।।
बहुलरजसे विश्वोत्पत्तौ भवाय नमो नमः, प्रबलतमसे तत्संहारे हराय नमो नमः।
जनसुखकृते सत्त्वोद्रिक्तौ मृडाय नमो नमः, प्रमहिस पदे निस्त्रैगुण्ये शिवाय नमो नमः।।३०।।
कृशपिरणित चेतः क्लेशवश्यं क्ष चेदं, क्ष च तव गुणसीमोल्लङ्घिनी शश्वदृद्धिः।
इति चिकतममन्दीकृत्य मां भिक्तराधाद्, वरद चरणयोस्ते वाक्यपुष्पोपहारम्।।३१।।
असितगिरिसमं स्यात् कज्जलं सिन्धुपात्रे, सुरतरुवरशाखा लेखनी पत्रमुर्वी।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं, तदिप तव गुणानामीश पारं न याति।।३२।।
असुरसुरमुनीन्द्रैरिचतस्येन्दुमौले, ग्रीथतगुणमिहम्नो निर्गुणस्येश्वरस्य।
सकलगुणवरिष्ठः पुष्पदन्ताभिधानो, रुचिरमलघुवृत्तैः स्तोत्रमेतच्चकार।।३३।
अहरहरनवद्यं धूर्जटेः स्तोत्रमेतत्, पठित परमभक्त्या शुद्धिचतः पुमान् यः।
स भविति शिवलोके रुद्रतुल्यस्तथात्र प्रचुरतरधनायुः पुत्रवान् कीर्तिमांश्च।।३४।।

महेशान्नापरो देवो महिम्नो नापरा स्तुति:। अघोरान्नापरो मन्त्रो नास्ति तत्त्वं गुरो: परम्।।३५। दीक्षा दानं तपस्तीर्थं ज्ञानं यागादिका: क्रिया:। महिम्न: स्तवपाठस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम।।३६।।

कुसुमदशननामा सर्वगन्धर्वराजः, शिशुशशिधरमौलेर्देवदेवस्य दासः। स खलु निजमिहम्नो भ्रष्ट एवास्य रोषात्, स्तवनिमदमकार्षीद् दिव्यदिव्यं मिहम्नः।।३७।। सुरवरमुनिपूज्यं स्वर्गमोक्षेकहेतुं, पठित यदि मनुष्यः प्राञ्जलिर्नान्यचेताः। व्रजित शिवसमीपं किन्नरैः स्तूयमानः, स्तवनिमदममोघं पुष्पदन्तप्रणीतम्।।३८।।

आसमाप्तमिदं स्तोत्रं पुण्यं गन्धर्वभाषितम्।
अनौपम्यं मनोहारि शिवमीश्वरणनम्।।३९।।
इत्येषा वाङ्मयी पूजा श्रीमच्छङ्करपादयोः।
अर्पिता तेन देवेशः प्रीयतां मे सदाशिवः।।४०।।
तव तत्त्वं न जानामि कीदृशोऽसि महेश्वर।
यादृशोऽसि महादेव तादृशाय नमो नमः।।४१।।
एककालं द्विकालं वा त्रिकालं यः पठेन्नरः।
सर्वपापविनिर्मुक्तः शिवलोके महीयते।।४२।।
श्रीपुष्पदन्तमुखपङ्कजनिर्गतेन, स्तोत्रेण किल्विषहरेण हरप्रियेण।
कण्ठस्थितेन पठितेन समाहितेन सुप्रीणितो भवति भूतिपर्महेशः।।४३।।
।।इति शिवमहिम्नः स्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

शिवताण्डवस्तोत्रम्

जटाटवीगलज्जलप्रवाहपावितस्थले गलेऽवलम्ब्य लिम्बतां भुजङ्गतुङ्गमालिकाम्। डमड्डमड्डमड्डमिन्ननादवड्डमर्वयं चकार चण्डताण्डवं तनोतु नः शिवः शिवम्।।१।। (जिन्होंने जटारूपी अटवी (वन) से निकलती हुई गंगाजी के गिरते हुए प्रवाहों से पवित्र किये गये गले में सर्पों की लटकती हुई विशाल माला को धारणकर, डमरू के डम-डम शब्दों से मण्डित प्रचण्ड ताण्डव (नृत्य) किया, वे शिवजी हमारे कल्याण का विस्तार करें।।१।।)

जटाकटाहसम्भ्रमभ्रमन्निलम्पिनर्झरीविलोलवीचिवल्लरीविराजमानमूर्द्धिन। धगद्धगद्धगज्ज्वलल्ललाटपट्टपावके किशोरचन्द्रशेखरे रित: प्रतिक्षणं मम।।२।। (जिनका मस्तक जटारूपी कड़ाह में वेग से घूमती हुई गंगा की चंचल तरंग-लताओं से सुशोभित हो रहा है, ललाटिंग धक्-धक् जल रही है, सिर पर बाल चन्द्रमा विराजमान हैं, उन (भगवान शिव) में मेरा निरंतर अनुराग हो।।२।।)

धराधरेन्द्रनिन्दिनीविलासबन्धुबन्धुरस्फुरिद्दगन्तसन्तितप्रमोदमानमानसे। कृपाकटाक्षधोरणीनिरुद्धदुर्धरापिद क्वचिद्दिगम्बरे मनो विनोदमेतु वस्तुनि।।३।। (गिरिराजिकशोरी पार्वती के विलासकालोपयोगी शिरोभूषण से समस्त दिशाओं को प्रकाशित होते देख जिनका मन आनिन्दित हो रहा है, जिनकी निरन्तर कृपादृष्टि से कठिन आपित्त का भी निवारण हो जाता है, ऐसे किसी दिगम्बर तत्त्व में मेरा मन विनोद करे।।३।।)

जटाभुजङ्गपिङ्गलस्फुरत्फणामणिप्रभाकदम्बकुङ्कुमद्रवप्रलिप्तिदिग्वधूमुखे। मदान्धिसन्धुरस्फुरत्त्वगुत्तरीयमेदुरे मनो विनोदमद्भुतं बिभर्तु भूतभर्तिर।।४।। (जिनके जटाजूटवर्ती भुजंगमों के फणों की मणियों का फैलता हुआ पिंगल प्रभापुंज दिशारूपिणी अंगनाओं के मुख पर कुंकमराग का अनुलेप कर रहा है, मतवाले हाथी के हिलते हुए चमड़े का उत्तरीय वस्त्र (चादर) धारण करने से स्निग्धवर्ण हुए उन भूतनाथ में मेरा चित्त अद्भुत विनोद करे।।४।।)

सहस्रलोचनप्रभृत्यशेषलेखशेखरप्रसूनधूलिधोरणीविधूसराङ्घ्रिपीठभू:। भुजङ्गराजमालया निबद्धजाटजूटक: श्रियै चिराय जायतां चकोरबन्धुशेखर:।।५।। (जिनकी चरणपादुकाएं इन्द्र आदि समस्त देवताओं के (प्रणाम करते समय) मस्तकवर्ती कुसुमों की धूलि से धूसरित हो रही हैं; नागराज (शेष) के हार से बंधी हुई जटावाले वे भगवान चन्द्रशेखर मेरे लिए चिरस्थायिनी सम्पत्ति के साधक हों।।५।।) ललाटचत्वरज्वलद्धनञ्जयस्फुलिङ्गभा निपीतपञ्चसायकं नमन्निलिम्पनायकम्।
सुधामयूखलेखया विराजमानशेखरं महाकपालि सम्पदे शिरो जटालमस्तु न:।।६।।
(जिसने ललाट-वेदी पर प्रज्विलत हुई अग्नि के स्फुलिंगों के तेज से कामदेव को नष्ट कर डाला था, जिसे इन्द्र नमस्कार किया करते हैं, सुधाकर की कला से सुशोभित मुकुटवाला वह (श्रीमहादेवजी का) उन्नत विशाल ललाटवाला जटिल मस्तक हमारी सम्पत्ति का साधक हो।।६।।)

करालभालपट्टिकाधगद्धगद्धगज्जवलद्धनञ्जयाहुतीकृतप्रचण्डपञ्चसाय के। धराधरेन्द्रनिन्दिनीकुचाग्रचित्रपत्रकप्रकल्पनैकशिल्पिन त्रिलोचने रितर्मम।।७।। (जिन्होंने अपने विकराल भालपट्ट पर धक्-धक् जलती हुई अग्नि में प्रचण्ड कामदेव को हवन कर दिया था, गिरिराजिकशोरी के स्तनों पर पत्रभंगरचना करने के एकमात्र कारीगर उन भगवान् त्रिलोचन में मेरी धारणा लगी रहे।।७।।)

नवीनमेघमण्डलीनिरुद्धदुर्धरस्फुरत्कुहूनिशीथिनीतमः प्रबन्धबद्धकन्धरः। निलम्पनिर्झरीधरस्तनोतु कृत्तिसिन्धुरः कलानिधानबन्धुरः श्रियं जगद्धुरन्धरः।।८।। (जिनके कण्ठ में नवीन मेघमाला से घिरी हुई अमावास्या की आधी रात के समय फैलते हुए दुरूह अन्धकार के समान श्यामता अंकित है; जो गजचर्म लपेटे हुए हैं, वे संसार भार को धारण करनेवाला चन्द्रमा (के संपर्क) से मनोहर कान्तिवाले भगवान् गंगाधर मेरी सम्पत्ति का विस्तार करें।।८।।)

प्रफुल्लनीलपङ्कजप्रपञ्चकालिमप्रभावलिम्बकण्ठकन्दलीरुचिप्रबद्धकन्धरम्। स्मरिच्छदं पुरिच्छदं भविच्छदं मखिच्छदं गजिच्छदान्धकिच्छदं तमन्तकिच्छदं भजे।।९।। (जिनका कण्ठदेश खिले हुए नील कमल समूह की श्याम प्रभा का अनुकरण करनेवाली हिरणी की-सी छिव वाले चिह्न से सुशोभित है तथा जो कामदेव, त्रिपुर, भव (संसार), दक्षयज्ञ, हाथी, अन्धकासुर और यमराज का भी उच्छेदन (संहार) करनेवाले हैं, उन्हें मैं भजता हूं।।९।।)

अखर्वसर्वमङ्गलाकलाकदम्बमञ्जरीरसप्रवाहमाधुरीविजृम्भणामधुव्रतम्। स्मरान्तकं पुरान्तकं भवान्तकं मखान्तकं गजान्तकान्धकान्तकं तमन्तकान्तकं भजे।।१०।। (जो अभिमान रहित पार्वती की कलारूप कदम्बमंजरी के मकरन्दस्रोत की बढ़ती हुई माधुरी के पान करनेवाले मधुप हैं तथा कामदेव, त्रिपुर, भव, दक्षयज्ञ, हाथी, अन्धकासुर और यमराज का भी अन्त करनेवाले हैं, उन्हें मैं भजता हूँ।।१०।।) जयत्वदभ्रविभ्रमभ्रमद्भुजङ्गमश्रवसिद्धिर्निगमत्क्रमस्फुरत्करालभालहव्यवाट्। धिमिद्धिमिद्धिमिद्धिमद्ध्वनन्मृदङ्गतुङ्गमङ्गलध्विनिक्रमप्रवर्तितप्रचण्डताण्डवः शिवः।।११।। (जिनके मस्तक पर बड़े वेग के साथ घूमते हुए भुजंग के फुफकार ने से ललाट की भयंकर अग्नि क्रमशः धधकती हुई फैल रही है, धिमिधिमि बजते हुए मृदंग के गम्भीर मंगल घोष के क्रमानुसार जिनका प्रचण्ड ताण्डव हो रहा है, उन भगवान् शंकर की जय हो।।११।।)

दृषद्विचित्रतल्पयोर्भृजङ्गमौक्तिकस्रजोर्गरिष्ठरत्नलोष्ठयोः सुहृद्विपक्षपक्षयोः।
तृणारिवन्दचक्षुषोः प्रजामहीमहेन्द्रयोः समप्रवृत्तिकः कदा सदाशिवं भजाम्यहम्।।१२।।
(पत्थर और सुन्दर बिछौनों में, सांप और मुक्ता की माला में, बहुमूल्य रत्न तथा मिट्टी के ढेले में, मित्र या शत्रुपक्ष में, तृण अथवा कमललोचना तरुणी में, प्रजा और पृथ्वी के महाराज में समान भाव रखता हुआ मैं कब सदाशिव को भजूंगा?।।१२।।)

कदा निलम्पनिर्झरीनिकुञ्जकोटरे वसन् विमुक्तदुर्मितः सदा शिरःस्थमञ्जलिं वहन्। विलोललोललोचनो ललामभाललग्नकः शिवेति मन्त्रमुच्चरन् कदा सुखी भवाम्यहम्।।१३।। (सुन्दर ललाट वाले भगवान् चन्द्रशेखर में दत्तचित्त हो अपने कुविचारों को त्याग कर गंगाजी के तटवर्ती निकुंज के भीतर रहता हुआ सिर पर हाथ जोड़ डबडबायी हुई विह्लल आँखों से 'शिव' मन्त्र का उच्चारण करता हुआ मैं कब सुखी होऊंगा?।।१३।।)

इमं हि नित्यमेवमुक्तमुत्तमोत्तमं स्तवं पठन् स्मरन् ब्रुवन्नरो विशुद्धिमेति सन्ततम्। हरे गुरौ सुभिक्तमाशु याति नान्यथा गितं विमोहनं हि देहिनां सुशङ्करस्य चिन्तनम्।।१४।। (जो मनुष्य इस प्रकार से उक्त इस उत्तमोत्तम स्तोत्र का नित्य पाठ, स्मरण और वर्णन करता रहता है, वह सदा शुद्ध रहता है और शीघ्र ही सुरगुरु श्रीशंकरजी की अच्छी भिक्त प्राप्त कर लेता है, वह विरुद्धगित को नहीं प्राप्त होता; क्योंकि श्रीशिवजी का अच्छी प्रकार का चिन्तन प्राणिवर्ग के मोह का नाश करनेवाला है।।१४।।)

पूजावसानसमये दशवक्त्रगीतं यः शम्भुपूजनपरं पठित प्रदोषे। तस्य स्थिरां रथगजेन्द्रतुरङ्गयुक्तां लक्ष्मीं सदैव सुमुखीं प्रददाित शम्भुः।।१५।। (सायंकाल में पूजा समाप्त होने पर रावण के गाये हुए इस शम्भु-पूजन-संबंधी स्तोत्र का जो पाठ करता है, भगवान् शंकर उस मनुष्य को रथ, हाथी, घोड़ों से युक्त सदा स्थिर रहनेवाली अनुकूल सम्पत्ति देते हैं।।१५।।)

।।इस प्रकार श्रीरावणकृत शिवताण्डवस्तोत्र सम्पूर्ण हुआ।।

लिङ्गाष्ट्रकम्

ब्रह्ममुरारिसुरार्चितलिङ्गं निर्मलभासितशोभितलिङ्गम्। जन्मजदु:खविनाशकलिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम्।।१।। देवमुनिप्रवरार्चितलिङ्गं कामदहं करुणाकरलिङ्गम्। रावणदर्पविनाशनलिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम्।।२।। सर्वस्गन्धिस्लेपितलिङ्गं बुद्धिविवर्धनकारणलिङ्गम्। सिद्धसुरासुरवन्दितलिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम्।।३।। कनकमहामणिभृषितलिङ्गं फणिपतिवेष्टितशोभितलिङ्गम्। दक्षस्यज्ञविनाशनलिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम्।।४।। कुङ्कमचन्दनलेपितलिङ्गं पङ्कजहारसुशोभितलिङ्गम्। सञ्चितपापविनाशनलिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम्।।५।। देवगणार्चितसेवितलिङ्गं भावैर्भिक्तिभिरेव च लिङ्गम्। दिनकरकोटिप्रभाकरलिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम्।।६।। अष्टदलोपरि वेष्टितलिङ्गं सर्वसमुद्भवकारणलिङ्गम्। अष्टदरिद्रविनाशितलिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम्।।७।। सुरगुरुसुरवरपुजितलिङ्गं सुरवनपुष्पसदार्चितलिङ्गम्। परात्परं परमात्मकलिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम्।।८।। पुण्यं लिङ्गाष्टकमिदं यः पठेच्छिवसन्निधौ। शिवलोकमवाप्नोति मोदते।।९।। शिवेन सह

श्रीरुद्राष्ट्रकम्

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपं। निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहं।।१।। निराकारमोंकारमूलं तुरीयं गिरा ग्यान गोतीतमीशं गिरीशं। करालं महाकाल कालं कृपालं गुणागार संसारपारं नतोऽहं।।२।। तुषाराद्रि सङ्काश गौरं गभीरं मनोभूत कोटि प्रभा श्रीशरीरं। स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारु गंगा लसद्भालबालेन्दु कंठे भुजंगा।।३।।

चलत्कुंडलं भ्रू सुनेत्रं विशालं प्रसन्नाननं नीलकंठं दयालं। मृगाधीशचर्माम्बरं मुंडमालं प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि।।४।। प्रचंडं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं अखंडं अजं भानुकोटिप्रकाशं। त्रयः शूल निर्मूलनं शूलपाणिं भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यं।।५।। कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी सदा सज्जनानन्ददाता पुरारी। चिदानंद संदोह मोहापहारी प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी।।६।। न यावद् उमानाथ पादारविन्दं भजंतीह लोके परे वा नराणां। न तावत्सुखं शान्ति सन्तापनाशं प्रसीद प्रभो सर्वभृताधिवासं।।७।। न जानामि योगं जपं नैव पूजां नतोऽहं सदा सर्वदा शंभु तुभ्यं। जरा जन्म दुःखौघ तातप्यमानं प्रभो पाहि आपन्नमामीश शंभो।।८।। रुद्राष्ट्रकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये। ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भः प्रसीदति।।९।। ।।इति श्रीगोस्वामितुलसीदासकृतं श्रीरुद्राष्टकं सम्पूर्णम्।।

द्वादशज्योतिर्लिङ्गस्तोत्रम्

सौराष्ट्रदेशे विशदेऽतिरम्ये ज्योतिर्मयं चन्द्रकलावतंसम्।
भिक्तप्रदानाय कृपावतीर्णं तं सोमनाथं शरणं प्रपद्ये।।१।।
श्रीशैलशृङ्गे विबुधातिसङ्गे तुलाद्रितुङ्गेऽिप मुदा वसन्तम्।
तमर्जुनं मिल्लकपूर्वमेकं नमामि संसारसमुद्रसेतुम्।।२।।
अवन्तिकायां विहितावतारं मुक्तिप्रदानाय च सज्जनानाम्।
अकालमृत्योः परिरक्षणार्थं वन्दे महाकालमहासुरेशम्।।३।।
कावेरिकानर्मदयोः पिवत्रे समागमे सज्जनतारणाय।
सदैव मान्धातृपरे वसन्तमोङ्कारमीशं शिवमेकमीडे।।४।।
पूर्वोत्तरे प्रज्विलकानिधाने सदा वसन्तं गिरिजासमेतम्।
सुरासुराराधितपादपद्मं श्रीवैद्यनाथं तमहं नमामि।।५।।
याम्ये सदङ्गे नगरेऽतिरम्ये विभूषिताङ्गं विविधैश्च भोगैः।
सद्भित्तमुक्तिप्रदमीशमेकं श्रीनागनाथं शरणं प्रपद्मे।।६।।
महाद्रिपार्श्वे च तटे रमन्तं सम्पूज्यमानं सततं मुनीन्द्रैः।
सुरासुरैर्यक्षमहोरगाद्यैः केदारमीशं शिवमेकमीडे।।७।।

सह्याद्रिशीर्षे विमले वसन्तं गोदावरीतीरपवित्रदेशे। यद्दर्शनात् पातकमाश् नाशं प्रयाति तं त्र्यम्बकमीशमीडे।।८।। सुताम्रपर्णीजलराशियोगे निबध्य सेतुं विशिखैरसंख्यै:। श्रीरामचन्द्रेण समर्पितं तं रामेश्वराख्यं नियतं नमामि।।९।। डाकिनीशाकिनिकासमाजे निषेव्यमाणं पिशिताशनैश्च। सदैव भीमादि पद प्रसिद्धं तं शङ्करं भक्तहितं नमामि।।१०।। सानन्दमानन्दवने वसन्तमानन्दकन्दं हतपापवृन्दम्। वाराणसीनाथमनाथनाथं श्रीविश्वनाथं शरणं प्रपद्ये।।११।। इलापुरे रम्यविशालकेऽस्मिन् समुल्लसन्तं च जगद्वरेण्यम्। वन्दे महोदारतरस्वभावं घृष्णेश्वराख्यं शरणं प्रपद्ये।।१२।। ज्योतिर्मयद्वादशलिङ्गकानां शिवात्मनां प्रोक्तमिदं क्रमेण। स्तोत्रं पठित्वा मनुजोऽतिभक्त्या फलं तदालोक्य निजं भजेच्च।।१३।। ।।इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं द्वादशज्योतिर्लिङ्गस्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

शिवरामाष्ट्रक

शिवहरे शिव राम सखे प्रभो त्रिविध ताप निवारण हे विभो।
अज जनेश्वर यादव पाहि मां शिव हरे विजयं कुरु मे वरम्।।१।।
कमललोचन राम दयानिधे हर-गुरो गजरक्षक गोपते।
शिव तनो भव शङ्कर पाहि मां शिव हरे विजयं कुरु मे वरम्।।२।।
सुजनरञ्जन मङ्गलमन्दिरं भजित तं पुरुष: परमं पदम्।
भवित तस्य सुखं परमाद्धुतं शिव हरे विजयं कुरु मे वरम्।।४।।
भविवमोचन माधव मापते सुकिवमानसहंस शिवारते।
जनकजारत राघव रक्ष मां शिव हरे विजयं कुरु मे वरम्।।५।।
अविन-मण्डल-मङ्गल मापते जलद-सुन्दर राम रमापते।
निगम कीर्ति-गुणार्णव गोपते शिव हरे विजयं कुरु मे वरम्।।६।।
पतित-पावन-नाम-मयी-लता तव यशो विमलं परिगीयते।
तदिप माधव मां किमुपेक्षसे शिव हरे विजयं कुरु मे वरम्।।७।।
अमरतापरदेव रमापते विजयतस्तव नामधनोपमा।
मिय कथं करुणार्णव जायते शिव हरे विजयं कुरु मे वरम्।।८।।

जग-दीपिका

हनुमतः प्रियचापकर प्रभो सुरसरिद्धृतशेखर हे गुरो। मम विभो किमु विस्मरणं कृतं शिव हरे विजयं कुरु मे वरम्।।९।। अहरहर्जन रञ्जन सुन्दरं पठित यः शिवराम-कृतं-स्तवम्। विसित रामरमाचरणाम्बुजे शिव हरे विजयं कुरु मे वरम्।।१०।। ।। इति रामाष्टकं ।।

दारिद्रयदहनशिवस्तोत्रम्

विश्वेश्वराय नरकार्णवतारणाय कर्णामृताय शशिशेखरधारणाय। कर्पूरकान्तिधवलाय जटाधराय दारिद्र्यदु:खदहनाय नमः शिवाय।।१।। गौरीप्रियाय रजनीशकलाधराय कालान्तकाय भुजगाधिपकङ्कणाय। गङ्गाधराय गजराजविमर्दनाय दारिद्रचदुःखदहनाय नमः शिवाय।।२।। भक्तिप्रियाय भवरोगभयापहाय उग्राय दुर्गभवसागरतारणाय। ज्योतिर्मयाय गुणनामसुनृत्यकाय दारिद्रचदुःखदहनाय नमः शिवाय।।३।। चर्माम्बराय शवभस्मविलेपनाय भालेक्षणाय मणिकुण्डलमण्डिताय। मञ्जीरपादयुगलाय जटाधराय दारिद्रचदुःखदहनाय नमः शिवाय।।४।। पञ्चाननाय फणिराजविभूषणाय हेमांशुकाय भुवनत्रयमण्डिताय। आनन्दभूमिवरदाय तमोमयाय दारिद्रचदु:खदहनाय नम: शिवाय।।५।। भानुप्रियाय भवसागरतारणाय कालान्तकाय कमलासनपूजिताय। नेत्रत्रयाय शुभलक्षणलिक्षताय दारिद्रचदुःखदहनाय नमः शिवाय।।६।। रामप्रियाय रघुनाथवरप्रदाय नागप्रियाय नरकार्णवतारणाय। पुण्येषु पुण्यभरिताय सुरार्चिताय दारिद्रचदुःखदहनाय नमः शिवाय।।७।। मुक्तेश्वराय फलदाय गणेश्वराय गीतप्रियाय वृषभेश्वरवाहनाय। मातङ्गचर्मवसनाय महेश्वराय दारिद्रचदु:खदहनाय नम: शिवाय।।८।।

वसिष्ठेन कृतं स्तोत्रं सर्वरोगनिवारणम्। सर्वसम्पत्करं शीघ्रं पुत्रपौत्रादिवर्धनम्। त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नित्यं स हि स्वर्गमवाप्नुयात्।।९।। ।। इति महर्षिवसिष्ठविरचितं दारिद्रचदहनशिवस्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

वन्दे शिवं शङ्करम् श्री शिवस्तुतिः

वन्दे देवमुमापतिं सुरुग्रुरं वन्दे जगत्कारणं वन्दे पन्नगभुषणं मुगधरं वन्दे पशुनां पतिम्। वन्दे सूर्यशशाङ्कविह्ननयनं वन्दे मुकुन्दिप्रयं वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शङ्करम्।।१।। वन्दे सर्वजगद्विहारमतुलं वन्देऽन्धकध्वंसिनं वन्दे देवशिखामणिं शशिनिभं वन्दे हरेर्वल्लभम्। वन्दे नागभुजङ्गभूषणधरं वन्दे शिवं चिन्मयं वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शङ्करम्।।२।। वन्दे दिव्यमिचन्त्यमद्वयमहं वन्देऽर्कदर्पापहं वन्दे निर्मलमादिमूलमनिशं वन्दे मखध्वंसिनम्। वन्दे सत्यमनन्तमाद्यमभयं वन्देऽतिशान्ताकृतिं वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शङ्करम्।।३।। वन्दे भूरथमम्बुजाक्षविशिखं वन्दे श्रुतित्रोटकं वन्दे शैलशरासनं फणिगुणं वन्देऽधितूणीरकम्। वन्दे पद्मजसारथिं पुरहरं वन्दे महाभैरवं वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शङ्करम्।।४।। वन्दे पञ्चमुखाम्बुजं त्रिनयनं वन्दे ललाटेक्षणं वन्दे व्योमगतं जटासुमुक्टं चन्द्रार्धगङ्गाधरम्। वन्दे भस्मकृतित्रपुण्डुजिटलं वन्देष्टमूर्त्यात्मकं वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शङ्करम्।।५।। वन्दे कालहरं हरं विषधरं वन्दे मृडं धूर्जीटं वन्दे सर्वगतं दयामृतिनिधिं वन्दे नृसिंहापहम्। वन्दे विप्रसुरार्चिताङ्घ्रिकमलं वन्दे भगाक्षापहं वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शङ्करम्।।६।। वन्दे मङ्गलराजताद्रिनिलयं वन्दे सुराधीश्वरं वन्दे शङ्करमप्रमेयमतुलं वन्दे यमद्वेषिणम्। वन्दे कुण्डलिराजकुण्डलधरं वन्दे सहस्राननं वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शङ्करम्।।७।। वन्दे हंसमतीन्द्रियं स्मरहरं वन्दे विरूपेक्षणं वन्दे भूतगणेशमव्ययमहं वन्देऽर्थराज्यप्रदम्। वन्दे सुन्दरसौरभेयगमनं वन्दे त्रिशूलायुधं वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शङ्करम्।।८।। वन्दे सूक्ष्ममनन्तमाद्यमभयं वन्देऽन्धकारापहं वन्दे फूलननन्दिभृङ्गिविनतं वन्दे सुपर्णावृतम्। वन्दे शैलसुतार्धभागवपूषं वन्देऽभयं त्र्यम्बकं वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शङ्करम्।।९।। वन्दे पावनमम्बरात्मविभवं वन्दे महेन्द्रेश्वरं वन्दे भक्तजनाश्रयामरतरुं वन्दे नताभीष्टदम्। वन्दे जहनुसुताम्बिकेशमनिशं वन्दे गणाधीश्वरं वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शङ्करम्।।१०।। ।। इति श्रीशिवस्तुतिः सम्पूर्णा ।।

बिल्वाष्ट्रकम्

त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रयायुधम्। त्रिजन्मपापसंहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।१।। त्रिशाखैर्बिल्वपत्रेश्च ह्यच्छिद्रैः कोमलैः शुभैः। शिवपूजां करिष्यामि बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।२। अखण्डबिल्वपत्रेण पूजिते नन्दिकेश्वरे। शुद्धयन्ति सर्वपापेभ्यो बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।३।। शालग्रामशिलामेकां विप्राणां जातु अर्पयेत्। सोमयज्ञमहापुण्यं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।४।।

दिन्तकोटिसहस्राणि वाजपेयशतानि च। कोटिकन्यामहादानं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।५।। लक्ष्म्याः स्तनत उत्पन्नं महादेवस्य च प्रियम्। बिल्ववृक्षं प्रयच्छामि बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।६।। दर्शनं बिल्ववृक्षस्य स्पर्शनं पापनाशनम्। अघोरपापसंहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।७।। मूलतो ब्रह्मरूपाय मध्यतो विष्णुरूपिणे। अग्रतः शिवरूपाय बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।८।। बिल्वाष्टकिमदं पुण्यं यः पठेच्छिवसिन्धौ। सर्वपापविनिर्मुक्तः शिवलोकमवाप्नुयात्।।९।।

अमोघशिवकवचम्

शिव अमोघ कवच अनेकानेक उपद्रवों की शान्ति करता है एवं रोग नाश हेतु रामबाण प्रयोग है।

।।अथ ध्यानम्।।

वज्रदंष्ट्रं त्रिनयनं कालकण्ठमरिंदमम्। सहस्रकरमप्युग्रं वन्दे शम्भुमुमापतिम्।। ऋषभ उवाच

अथापरं सर्वपुराणगृह्यं निःशेषपापौघहरं पवित्रम्। जयप्रदं सर्वविपद्विमोचनं वक्ष्यामि शैवं कवचं हिताय ते।। नमस्कृत्य महादेवं विश्वव्यापिनमीश्वरम्। वक्ष्ये शिवमयं वर्म सर्वरक्षाकरं नृणाम्।।१।। शुचौ देशे समासीनो यथावत्कल्पितासन:। जितेन्द्रियो जितप्राणश्चिन्तयेच्छिवमव्ययम्।।२।। हृत्पुण्डरीकान्तरसंनिविष्टं स्वतेजसा व्याप्तनभोऽवकाशम्। अतीन्द्रियं सूक्ष्ममनन्तमाद्यं ध्यायेत् परानन्दमयं महेशम्।।३।। ध्यानावधृताखिलकर्मबन्धश्चिरं चिदानन्दनिमग्नचेता:। षडक्षरन्याससमाहितात्मा शैवेन कुर्यात् कवचेन रक्षाम्।।४।। मां पातु देवोऽखिलदेवतात्मा संसारकूपे पतितं गभीरे। तन्नाम दिव्यं वरमन्त्रमूलं धुनोतु मे सर्वमघं हृदिस्थम्।।५।। सर्वत्र मां रक्षतु विश्वमूर्तिज्यीतिर्मयानन्दघनश्चिदात्मा। अणोरणीयानुरुशक्तिरेकः स ईश्वरः पातु भयादशेषात्।।६।। यो भूस्वरूपेण बिभर्ति विश्वं पायात् स भूमेर्गिरिशोऽष्टमूर्ति:। योऽपां स्वरूपेण नृणां करोति संजीवनं सोऽवत् मां जलेभ्य:।।७।।

कल्पावसाने भुवनानि दग्धवा सर्वाणि यो नृत्यति भूरिलील:। स कालरुद्रोऽवतु मां दवाग्नेर्वात्यादिभीतेरखिलाच्च तापात्।।८।। प्रदीप्तविद्युत्कनकावभासो विद्यावराभीतिकुठारपाणि:। चतुर्मुखस्तत्पुरुषस्रिनेत्रः प्राच्यां स्थितं रक्षतु मामजस्रम्।।९।। कुठारवेदाङ्करापाशशूलकपालढक्काक्षगुणान् दधानः। चतुर्मुखो नीलरुचिस्रिनेत्रः पायादघोरो दिशि दक्षिणस्याम्।।१०।। कुन्देन्दुशङ्करफटिकावभासो वेदाक्षमालावरदाभयाङ्कः। त्र्यक्षश्चतुर्वक्त्र उरुप्रभावः सद्योऽधिजातोऽवतु मां प्रतीच्याम्।।११।। वराक्षमालाभयटङ्कहस्तः सरोजिकञ्जल्कसमानवर्ण:। त्रिलोचनश्चारुचतुर्मुखो मां पायादुदीच्यां दिशि वामदेव:।।१२।। वेदाभयेष्टाङ्क्ष्मपाशटङ्ककपालढक्काक्षकशूलपाणि:। सितद्युतिः पञ्चमुखोऽवतान्मामीशान ऊर्ध्वं परमप्रकाशः।।१३।। मूर्द्धानमव्यान्मम चन्द्रमौलिर्भालं ममाव्यादथ भालनेत्र:। नेत्रे ममाव्याद् भगनेत्रहारी नासां सदा रक्षतु विश्वनाथ:।।१४।। पायाच्छुती मे श्रुतिगीतकीर्तिः कपोलमव्यात् सततं कपाली। वक्त्रं सदा रक्षतु पञ्चवक्त्रो जिह्नां सदा रक्षतु वेदजिह्नः।।१५।। कण्ठं गिरीशोऽवतु नीलकण्ठः पाणिद्वयं पातु पिनाकपाणिः। दोर्मूलमव्यान्मम धर्मबाहुर्वक्षःस्थलं दक्षमखान्तकोऽव्यात्।।१६।। ममोदरं पातु गिरीन्द्रधन्वा मध्यं ममाव्यान्मदनान्तकारी। हेरम्बतातो मम पातु नाभिं पायात् कटी धूर्जिटरीश्वरो मे।।१७।। ऊरुद्वयं पातु कुबेरिमत्रो जानुद्वयं मे जगदीश्वरोऽव्यात्। जङ्घायुगं पुङ्गवकेतुरव्यात् पादौ ममाव्यात् सुरवन्द्यपाद:।।१८।। महेश्वरः पातु दिनादियामे त्रियम्बकः पातु तृतीययामे। दिनान्त्यामे।।१९।। वृषध्वजः पात् पायान्निशादौ शशिशेखरो मां गङ्गाधरो रक्षतु मां निशीथे। गौरीपतिः पातु निशावसाने मृत्युञ्जयो रक्षतु सर्वकालम्।।२०।। अन्तःस्थितं रक्षतु शङ्करो मां स्थाणुः सदा पातु बहिःस्थितं माम्। तदन्तरे पातु पतिः पशूनां सदाशिवो रक्षतु मां समन्तात्।।२१।। तिष्ठन्तमव्याद्भुवनैकनाथः पायाद् व्रजन्तं प्रमथाधिनाथः। वेदान्तवेद्योऽवतु मां निषण्णं मामव्ययः पातु शिवः शयानम्।।२२।।

मार्गेषु मां रक्षतु नीलकण्ठः शैलादिदुर्गेषु पुरत्रयारिः। अरण्यवासादिमहाप्रवासे पायान्मृगव्याध उदारशिकतः।।२३।। कल्पान्तकाटोपपटुप्रकोपः स्फुटाट्टहासोच्चिलताण्डकोशः। घोरारिसेनार्णवदुर्निवारमहाभयाद् रक्षतु वीरभद्रः।।२४।। पत्त्यश्वमातङ्गघटावरूथ सहस्रलक्षायुतकोटिभीषणम्। अक्षौहिणीनां शतमाततायिनां छिन्द्यान्मृडो घोरकुठारधारया।।२५।। निहन्तु दस्यून् प्रलयानलार्चिर्ज्वलत् त्रिशूलं त्रिपुरान्तकस्य। शार्दूलिसंहर्षवृकादिहिंस्नान् संत्रासयत्वीशधनुः पिनाकम्।।२६।। दुःस्वप्नदुस्शकुनदुर्गतिदौर्मनस्यदुर्भिक्षदुर्व्यसनदुस्सहदुर्यशांसि। उत्पाततापविषभीतिमसद्ग्रहार्तिव्याधींश्च नाशयतु मे जगतामधीशः।।२७।।

ॐ नमो भगवते सदाशिवाय सकलतत्त्वात्मकाय सकलतत्त्वविहाराय सकललोकैककर्त्रे सकललोकैकभर्त्रे सकललोकैकहर्त्रे सकललोकैकग्रवे सकललोकैकसाक्षिणे सकलनिगमगुह्याय सकलवरप्रदाय सकलदुरितार्त्तिभञ्जनाय सकलजगदभयंकराय सकललोकैकशङ्कराय शशाङ्कशेखराय शाश्वतनिजाभासाय निर्गुणाय निरुपमाय नीरूपाय निराभासाय निरामयाय निष्प्रपञ्चाय निष्कलङ्काय निर्द्वन्द्वाय निस्सङ्गाय निर्मलाय निर्गमाय नित्यरूपविभवाय निरुपमविभवाय निराधाराय नित्यशुद्धबुद्धपरिपूर्णसिच्चदानन्दाद्वयाय परमशान्तप्रकाशतेजोरूपाय जय जय महारुद्र महारौद्र भद्रावतार दु:खदावदारण महाभैरव कालभैरव कल्पान्तभैरव कपालमालाधर खट्वाङ्गखड्गचर्मपाशाङ्कशडमरुशूलचाप-बाणगदाशक्तिभिन्दिपालतोमरमुसलमुद्गरपट्टिशपरशुपरिघभुशुण्डीशतघ्नीचक्राद्यायुध-भीषणकर सहस्रमुख दंष्ट्राकराल विकटाट्टहासविस्फारितब्रह्माण्डमण्डलनागेन्द्रकुण्डल नागेन्द्रहार नागेन्द्रवलय नागेन्द्रचर्मधर मृत्युञ्जय त्र्यम्बक त्रिपुरान्तक विरूपाक्ष विश्वेश्वर विश्वरूप वृषभवाहन विषभूषण विश्वतोमुख सर्वतो रक्ष रक्ष मां ज्वल ज्वल महामृत्यु-भयमपमृत्युभयं नाशय नाशय रोगभयमुत्सादयोत्सादय विषसर्पभयं शमय शमय चोरभयं मारय मारय मम शत्रुनुच्चाटयोच्चाटय शूलेन विदारय विदारय कुठारेण भिन्धि भिन्धि खड्गेन छिन्धि छिन्धि खट्वाङ्गेन विपोथय विपोथय मुसलेन निष्पेषय निष्पेषय बाणै: संताडय संताडय रक्षांसि भीषय भीषय भूतानि विद्रावय विद्रावय कृष्माण्डवेतालमारीगण-ब्रह्मराक्षसान् संत्रासय संत्रासय मामभयं कुरु कुरु वित्रस्तं मामाश्वासयाश्वासय नरकभयान्मामुद्धारयोद्धारय संजीवय संजीवय क्षुतृङ्भ्यां मामाप्याययाप्यायय दुःखातुरं मामानन्दयानन्दय शिवकवचेन मामाच्छादयाच्छादय त्र्यम्बक सदाशिव नमस्ते नमस्ते नमस्ते।

ऋषभ उवाच

इत्येतत्कवचं शैवं वरदं व्याहृतं मया। सर्वबाधाप्रशमनं रहस्यं सर्वदेहिनाम्।।२८।। यः सदा धारयेन्मर्त्यः शैवं कवचमुत्तमम्। न तस्य जायते क्वापि भयं शम्भोरनुग्रहात्।।२९।। क्षीणायुर्मृत्युमापन्नो महारोगहृतोऽपि वा। सद्यः सुखमवाप्नोति दीर्घमायुश्च विन्दित।।३०।। सर्वदारिद्र्यशमनं सौमङ्गल्यविवर्धनम्। यो धत्ते कवचं शैवं स देवैरिप पूज्यते।।३१।। महापातकसंघातैर्मुच्यते चोपपातकैः। देहान्ते शिवमाप्नोति शिववर्मानुभावतः।।३२।। त्वमिप श्रद्धया वत्स शैवं कवचमुत्तमम्। धारयस्व मया दत्तं सद्यः श्रेयो ह्यवाप्स्यसि।।३३।।

।। इति श्रीस्कान्दे महापुराणे एकाशीतिसाहस्र्यां तृतीये ब्रह्मोत्तरखण्डे अमोघशिवकवचं सम्पूर्णम्।।

श्री रामाष्ट्रकम्

कृतांत देव वन्दनं दिनेश वशं नन्दनम्, सुशोभि भाल चन्दनं नमामि राममीश्वरम्।।१।।
मुनीन्द्र यज्ञ कारकं शिला विपति हारकम्, महाधनुविदारकं नमामि राममीश्वरम्।।२।।
स्वतातवाक्य कारिणं तपोवने विहारिणम्, करे सचापधारिणं नमामि राममीश्वरम्।।३।।
कुरंग मुक्त सायकं जटायुमोक्ष दायकम्, प्रविद्धकीश नायकं नमामि राममीश्वरम्।।४।।
प्लवंग संग सम्मतिं निबद्धनिम्नगा पतिम्, दशास्यवंश सङ्क्षतिं नमामि राममीश्वरम्।।५।।
विदीनदेव हर्षणं कपीप्सितार्थ वर्षणम्, स्वबन्धुशोक कर्षणं नमामि राममीश्वरम्।।६।।
गतारि राज्य रक्षणं प्रजाजनार्तिभक्षणम्, कृतास्त मोह लक्षणं नमामि राममीश्वरम्।।७।।
हताखिलाचलाभरं स्वधाम नीत नागरम्, जगत्तमोदिवाकरं नमामि राममीश्वरम्।।८।।
इदं समाहितात्मना नरो रघूत्तमाष्टकम्, पठेन्निरन्तरं भयं भवोद्भवं न विन्दते।।९।।
।। इति रामाष्टकम्।।

श्री राम स्तुति

श्री रामचन्द्र कृपालु भज मन, हरण भव-भय दारूणं। नवकंज-लोचन कंज-मुख, कर-कंज पद कंजारूणं।। कंदर्प अगणित अमित छिब, नवनील-नीरज सुंदरम। पटपीत मानहूं तिड़त रुचि शुचि नौमि जनक सुतावरं।। भजु दीनबंधु दिनेश दानव-दैत्यवंश-निकंदनम। रघुनंद आनंदकंद कौशलचन्द्र दशरथ-नंदनम।। सिर मुकुट कुंडल तिलक चारू, उदारू अंग विभूषणं। आजानुभुज शर-चाप धर, संग्राम जित खरदूषणं।। इति वदित तुलसीदास शंकर शेष मुनि-मन रंजनम्। मम हृदय-कंज निवास कुरू, कामादि खलदल-गंजनम्।। मनु जाहि राचेउ मिलिहि सो बरू सहज सुंदर सांवरो। करूनानिधान सुजान सीलु सनेहु जानत रावरो।। एहि भांति गौरि असीस सुनि सिय सहित हिय हरषी अली। तुलसी भवानिहिं पूजि-पुनि-पुनि मुदित मन मंदिर चली।। सौ जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हरषि न जाइ कहि। मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे।।

श्री राम अवतार

भये प्रकट कृपाला दीन दयाला कौशल्या हितकारी। हरषित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रूप निहारी।। लोचन अभिरामा तनु घनश्यामा निज आयुध भुजचारी। भूषण बनमाला नयन बिशाला शोभा सिन्ध् खरारी।। कह दुई कर जोरी अस्तुति तोरी केहि बिधि करो अनंता। माया गुन ग्यानातीत अमाना वेद पुरान भनंता।। करूणा सुख सागर सब गुन आगर जेहि गावहि श्रुति संता। सो मन हित लागी जन अनुरागी भयउ प्रकट श्री कंता।। ब्रह्मांड निकाया निर्मित माया रोम रोम प्रति बेद कहे। मम उर सो बासी यह उपहासी सुनत धीर मित थिर न रहै।। उपजा जब ग्याना प्रभु मुसुकाना चरित बहुत बिधि किन्ह चहे। किह कथा सुहाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुत प्रेम लहे।। माता पुनि बोली सो मित डोली तजहुँ तात यह रूपा। कीजे शिशुलीला अति प्रियसीला यह सुख परम अनुपा।। सुनि बचन सुजाना रोदन ठाना होई बालक सुर भूपा। यह चरित जे गावहि हरिपद पावहिं ते न परिह भवकूपा।।

श्रीरामचन्द्र स्तुति

नमामि भक्त वत्सलं कृपालु शील कोमलं, भजामि ते पदांबुजं अकामिनां स्वधामदम्।।१।।
निकाम श्याम सुन्दरं भवाम्बुनाथ मन्दरं, प्रफुल्लकंज लोचनं भवादि दोष मोचनम्।।२।।
प्रलंब बाहु विक्रमं प्रभोऽप्रमेय वैभवं, निषंग चाप सायकं धरं त्रिलोक नायकम्।।३।।
दिनेश वंश मण्डनं महेश चाप खण्डनं, मुनीन्द्र संत रंजनं सुरारि वृन्द भंजनम्।।४।।
मनोज वैरि वंदितं अजादि देव सेवितं, विशुद्ध बोध विग्रहं समस्त दूषणापहम्।।५।।
नमामि इन्दिरा पितं सुखाकरं सतां गितं, भजे सशिक्त सानुजं शचीपितं प्रियानुजम्।।६।।
त्वदंघ्रि मूल ये नराः भजन्ति हीन मत्सराः, पतंति नो भवार्णवे वितर्क वीचि संकुले।।७।।
विविक्त वासिनः सदा भजन्ति मुक्तये मुदा, निरस्य इंद्रियादिकं प्रयांति ते गितं स्वकम्।।८।।
तमेकमद्भुतं प्रभुं निरीहमीश्वरं विभुं, जगद्गुरुं च शाश्वतं तुरीयमेव केवलम्।।९।।
भजामि भाव वल्लभं कुयोगिनां सुदुर्लभं, स्वभक्त कल्प पादपं समं सुसेव्य मन्वहम्।।१०।।
अनूप रूप भूपितं नतोऽहमुर्विजा पितं, प्रसीद मे नमामि ते पदाब्ज भिक्त देहि मे।।११।।
पठन्ति ये स्तवं इदं नरादरेण ते पदं, व्रजन्ति नात्र संशयं त्वदीय भिक्त संयुताः।।१२।।
।। इति रामचन्द्र स्तृति ।।

श्रीमद्भागवतान्तर्गत गजेन्द्रकृत भगवान् का स्तवन गजेन्द्रमोक्ष स्तोत्रं

श्रीशुक उवाच

एवं व्यवसितो बुद्ध्या समाधाय मनो हृदि। जजाप परमं जाप्यं प्राग्जन्मन्यनुशिक्षितम्।।१।।
गजेन्द्र उवाच

ॐ नमो भगवते तस्मै यत एतिच्चदात्मकम्। पुरुषायादिबीजाय परेशायाभिधीमिह।।२।। यिस्मिन्निदं यतश्चेदं येनेदं य इदं स्वयम्। योऽस्मात्परस्माच्च परस्तं प्रपद्ये स्वयम्भुवम्।।३।। यः स्वात्मनीदं निजमाययार्पितं क्वचिद् विभातं क्व च तत् तिरोहितम्। अविद्धदृक साक्ष्युभयं तदीक्षते स आत्मूलोऽवतु मां परात्परः।।४।।

कालेन पञ्चत्विमतेषु कृत्स्नशो लोकेषु पालेषु च सर्वहेतुषु। तमस्तदाऽऽसीद् गहनं गभीरं यस्तस्य पारेऽभिविराजते विभुः॥५॥

न यस्य देवा ऋषयः पदं विदुर्जन्तुः पुनः कोऽर्हति गन्तुमीरितुम्। यथा नटस्याकृतिभिर्विचेष्टतो दुरत्ययानुक्रमणः स मावतु।।६।। दिदृक्षवो यस्य पदं सुमङ्गलं विमुक्तसङ्गा मुनयः सुसाधवः। चरन्त्यलोकव्रतमव्रणं वने भूतात्मभूताः सुहृदः स मे गितः।।७।।

न विद्यते यस्य च जन्म कर्म वा न नामरूपे गुणदोष एव वा। तथापि लोकाप्ययसम्भवाय यः स्वमायया तान्यनुकालमृच्छति।।८।।

तस्मै नमः परेशाय ब्रह्मणेऽनन्तशक्तये। अरूपायोरुरूपाय नम आश्चर्यकर्मणे।।९।। नम आत्मप्रदीपाय साक्षिणे परमात्मने । नमो गिरां विदूराय मनसश्चेतसामिप।।१०।। सत्त्वेन प्रतिलभ्याय नैष्कर्म्यण विपश्चिता। नमः कैवल्यनाथाय निर्वाणसुखसंविदे।।११।। नमः शान्ताय घोराय मूढाय गुणधर्मिणे। निर्विशेषाय साम्याय नमो ज्ञानघनाय च।।१२।। क्षेत्रज्ञाय नमस्तुभ्यं सर्वाध्यक्षाय साक्षिणे। पुरुषायात्ममूलाय मूलप्रकृतये नमः।।१३।। सर्वेन्द्रियगुणद्रष्ट्रे सर्वप्रत्ययहेतवे। असताच्छाययोक्ताय सदाभासाय ते नमः।।१४।। नमो नमस्तेऽखिलकारणाय निष्कारणायाद्भुतकारणाय। सर्वागमाम्नायमहार्णवाय नमोऽपवर्गाय परायणाय।।१५।।

गुणारणिच्छन्नचिदूष्मपाय तत्क्षोभविस्फूर्जितमानसाय। नैष्कर्म्यभावेन विवर्जितागम-स्वयंप्रकाशाय नमस्करोमि।।१६।।

मादृक्प्रपन्नपशुपाशिवमोक्षणाय मुक्ताय भूरिकरुणाय नमोऽलयाय। स्वांशेन सर्वतनुभृन्मनिस प्रतीतप्रत्यग्दृशे भगवते बृहते नमस्ते।।१७।।

आत्मात्मजाप्तगृहवित्तजनेषु सक्तै र्दुष्प्रापणाय गुणसङ्गविवर्जिताय। मुक्तात्मभिः स्वहृदये परिभाविताय ज्ञानात्मने भगवते नम ईश्वराय।।१८।।

यं धर्मकामार्थविमुक्तिकामा भजन्त इष्टां गितमाप्नुवन्ति। किं त्वाशिषो रात्यिप देहमव्ययं करोतु मेऽदभ्रदयो विमोक्षणम्।।१९।।

एकान्तिनो यस्य न कंचनार्थं वाञ्छन्ति ये वै भगवत्प्रपन्नाः। अत्यद्भुतं तच्चरितं सुमङ्गलं गायन्त आनन्दसमुद्रमग्नाः।।२०।।

तमक्षरं ब्रह्म परं परेशमव्यक्तमाध्यात्मिकयोगगम्यम्। अतीन्द्रियं सूक्ष्मिमवातिदूरमनन्तमाद्यं परिपूर्णमीडे।।२१।।

यस्य ब्रह्मादयो देवा वेदा लोकाश्चराचराः। नामरूपविभेदेन फलव्या च कलया कृताः।।२२।। यथार्चिषोऽग्नेः सवितुर्गभस्तयो निर्यान्ति संयान्त्यसकृत् स्वरोचिषः। तथा यतोऽयं गुणसम्प्रवाहो बुद्धिर्मनः खानि शरीरसर्गाः।।२३।।

स वै न देवासुरमर्त्यितिर्यङ् न स्त्री न षण्ढो न पुमान् न जन्तुः। नायं गुणः कर्म न सन्न चासन् निषेधशेषो जयतादशेषः।।२४।।

जिजीविषे नाहिमहामुया किमन्तर्बिहश्चावृतयेभयोन्या। इच्छामि कालेन न यस्य विप्लवस्तस्यात्मलोकावरणस्य मोक्षम्।।२५।। सोऽहं विश्वसृजं विश्वमविश्वं विश्ववेदसम्। विश्वात्मानमजं ब्रह्म प्रणतोऽस्मि परं पदम्।।२६।।

योगरन्धितकर्माणो हृदि योगाविभाविते। योगिनो यं प्रपश्यन्ति योगेशं तं नतोऽस्म्यहम्।।२७।। नमो नमस्तुभ्यमसह्यवेगशिक्तत्रयायाखिलधीगुणाय। प्रपन्नपालाय दुरन्तशक्तये कदिन्द्रियाणामनवाप्यवर्त्मने।।२८।।

नायं वेद स्वमात्मानं यच्छक्त्याहंधिया हतम्। तं दुरत्ययमाहात्म्यं भगवन्तमितोऽस्म्यहम्।।२९।।

श्रीशुक उवाच

एवं गजेन्द्रमुपवर्णितनिर्विशेषं ब्रह्मादयो विविधलिङ्गभिदाभिमानाः। नैते यदोपससृपुर्नि-खिलात्मकत्वात् तत्राखिलामरमयो हरिराविरासीत्।।३०।। तं तद्वदार्त्तमुपलभ्य जगन्निवासः स्तोत्रं निशम्य दिविजैः सह संस्तुवद्भः। छन्दोमयेन गरुडेन समुद्धमानश्चक्रायुधोऽभ्यगमदाशु यतो गजेन्द्रः।।३१।। सोऽन्तःसरस्युरुबलेन गृहीत आर्त्तो दृष्ट्वा गरुत्मित हरिं ख उपात्तचक्रम्। उत्क्षिप्य साम्बुजकरं गिरमाह कृच्छान्नारायणाखिलगुरो भगवन् नमस्ते।।३३।। तं वीक्ष्य पीडितमजः सहसावतीर्य सग्राहमाशु सरसः कृपजोज्जहार। ग्राहाद् विपाटितमुखादरिणा गजेन्द्रं सम्पश्यतां हरिरमूमुचदुस्त्रियाणाम्।।३३।।

मधुराष्ट्रकम्

अधरं मधुरं वदनं मधुरं नयनं मधुरं हिसतं मधुरम्।
हृदयं मधुरं गमनं मधुरं मधुराधिपतेरिखलं मधुरम्।।१।।
वचनं मधुरं चिरतं मधुरं वसनं मधुरं विलतं मुधरम्।
चिलतं मधुरं भ्रमितं मधुरं मधुराधिपतेरिखलं मधुरम्।।२।।
बेणुर्मधुरो रेणुर्मधुरः पाणिर्मधुरः पादौ मधुरौ।
नृत्यं मधुरं सख्यं मधुरं मधुराधिपतेरिखलं मधुरम्।।३।।
गीतं मधुरं पीतं मधुरं भुक्तं मधुरं सुप्तं मुधरम्।
रूपं मधुरं तिलकं मधुरं मधुराधिपतेरिखलं मधुरम्।।४।।
करणं मधुरं तरणं मधुरं हरणं मधुरं रमणं मुधरम्।
विमतं मधुरं शिमतं मधुरं मधुराधिपतेरिखलं मधुरम्।।५।।

गुञ्जा मधुरा माला मधुरा यमुना मधुरा वीची मधुरा।
सिललं मधुरं कमलं मधुरं मधुराधिपतेरिखलं मधुरम्।।६।।
गोपी मधुरा लीला मधुरा युक्तं मधुरं भुक्तं मधुरम्।
दुष्टं मधुरं शिष्टं मधुरं मधुराधिपतेरिखलं मधुरम्।।७।।
गोपा मधुरा गावो मधुरा यष्टिर्मधुरा सृष्टिर्मधुरा।
दिलतं मधुरं फिलतं मधुरं मधुराधिपतेरिखलं मधुरम्।।८।।
।। इति मधुराष्टकं सम्पूर्णम्।।

श्रीकृष्णाष्टकम्

भजे ब्रजैकमण्डनं समस्त पाप खण्डनं, स्वभक्त चित्तरंजनं सदैव नन्दनन्दनम्।।११।। सुपिच्छ गुच्छ मस्तकं सुनादवेणु हस्तकं, अनङ्गरंग सागरं नमामि कृष्ण नागरम्।।२।। मनोज गर्व मोचनं विशाल लोल लोचनं, विधृत गोप शोचनं नमामि पद्म लोचनम्।।३। करारविन्दभूधरं स्मितावलोक सुन्दरं, विधूप गोप शोचनं नमामि पद्म लोचनम्।।४।। करारविन्दभूधरं स्मितावलोक सुन्दरं, महेन्द्रमान दारणं नमामि कृष्णवारणम्।।५।। कदम्बसून कुण्डलं सूचारु गण्ड मण्डलं, ब्रजांगनैक बल्लभं नमामि कृष्ण दुर्लभम्।।६।। यशोदया समोदया सगोपया सनन्दया, यृतं सुखैकदायकं नमामि गोप नायकम्।।७।। सदैव पादपंकजं मदीय मानसे निजं, दधान मुक्तमालकं नमामि नन्द बालकम्।।८।। समस्त दोष शोषणं समस्त लोक पोषणं, समस्त गोप मानसं नमामि नन्दलालकम्।।९।। भ्वोभरावतारकं भवाब्धि कर्ण धारकं, यशोमती किशोरकं नमामि चित्तचोरकम्।।१०।। द्रगन्त कान्त भंगिनं सदासदाल संगिनं, दिने दिने नवं नवं नमामि नन्द सम्भवम्।।११।। गुणाकरं सुखाकरं कृपाकरं दयाकरं, सुरद्विषन्निकन्दनं नमामि गोपनन्दनम्।।१२।। नवीन गोप नागरं नवीनकेलि लम्पटं, नमामि मेघसुन्दरं तिडत्प्रभालसत्पटम्।।१३।। समस्त गोप नन्दनं हृदम्बुजैक मोदनं, नमामि कुंजमध्यगं प्रसन्न भानुशोभनम्।।१४।। निकाम काम दायकं दृगन्त चारु सायकं, रसालवेणुगायकं नमामि कुंजनायकम्।।१५।। विदग्ध गोपिका मनो मनोज्ञतल्प शायिनं, नमामि कुंजकानने प्रबद्धविह्नपायिनम्।।१६।। किशोर कान्ति रंजितं दृगंजनं सुशोभितं, गजेन्द्रमोक्षकारिणं नमामि श्री विहारिणम्।।१७।। यदा तदा यथा तथा तथैव कृष्ण सत्कथा, मया सदैव गीयतां तथा कृपा विधीयताम्।।१८।। प्रमाणिकाष्टक द्वयं जपत्यधीत्य यः पुमान्, भवेत्सनन्दनन्दने भवे भवे सुभिक्तमान्।।१९।। ।। इति कृष्णाष्टकम्।।

श्रीकृष्ण स्तुति

श्री कृष्णचन्द्र कृपालु भजु मन, नन्दनन्दन यदुवरम्। आनन्दमय सुखराशि व्रजपति, भक्तजन संकटहरम्।। शिर मुकुट कुंडल तिलक उर, वनमाला, कौस्तुभ सुन्दरम्। आजानु भुज पट पीत धर, कर लकुटि सुख मुरली धरम।। वृषभानुजा सह राजिहं प्रिय, सुमन सुभग सिंहासनम्। लिलततादि सिखजन सेविहं, लिए छत्र चामर-व्यंजनम्।। पूतना-तृण-शकट-अघ-बक, केशि व्योम विमर्दनम्। रजक-गज-चाणूर-मृष्टिक, दुष्ट कंस निकन्दनम्।। गो-गोप-गोपीजन सुखद, कालीय विषधर गंजनम्। भव भय हरण अशरणशरण, ब्रह्मादि मुनि मन रंजनम्।। श्याम-श्यामा करत केलि, कालिन्दी तट नट नागरम्। सोई रूप मय हिय बसहु नित, आनन्दघन सुख सागरम्।। इति वदित "संत" सुजान, श्री सनकादि मुनिजन सेवितम्। भव भीति हर मम दीन बन्धो, जयित जय सर्वेश्वरम्।।

श्री कृष्णावतार

भये प्रकट गोपाला दीनदयाला यशुमित के हितकारी। हर्षित महतारी रूप निहारी मोहन मदन मुरारी।। कंसासुर जाना अति भय माना, पूतना बेगि पठाई। सो मन मुसुकाई हर्षित धाई, गई जहाँ यदुराई।। तेहि जाई उठाई हृदय लगाई पयोधर मुख में दीन्यौ। तब कृष्ण कन्हाई मन मुसकाई प्राण तासु हर लीन्यो।। जब इन्द्र रिसाये मेघ बुलाये, वशीकरण ब्रज सारी। गउअन हितकारी सुरमुनि तारी नख पर गिरवरधारी।। मारे अति कंसासुर हंकारे बच्छासुर बकासुर आयो बहुत डरायो ताको वदन विदारो।। तेहि दीन जानी प्रभु चक्रपानी ताहि दीन्ह निज लोका। ब्रह्मा सुन आये अति सुख पाये मगन भये गये शोका।। यह छंद अनुपा है रस रूपा जो नर याकूं गावे। तेहि सम नहिं कोई त्रिभुवन सोई मनवांछित फल पावे।। ॐ तत्सत

प्रमाण संग्रह

यजादि में प्रशस्त आसन

शमी काश्मरी शल्लः कदंबो वरणस्तथा। पञ्चासनानि शस्तानि श्राद्धे देवार्चने तथा।। (श्राद्धकल्पलता)

(शमी, गम्भारी (खम्भारी), शोणवृक्ष, कदंब और वरुणद्रुम (खैर) इन पांच प्रकार के वृक्षों के आसन श्राद्ध और देवार्चन में प्रशस्त कहे गये हैं।)

> कौशेय कम्बलं चैव अजिनं पट्टमेव च। दारुजं तालपत्रं वा आसनं परिकल्पयेतु।।

(रेशम, कंबल, मृगचर्म, काष्ठ और तालपत्र इनका आसन शुभ कार्यों के लिए बनाना चाहिये।)

यज्ञादि में त्याज्य आसन

आयसं वर्जियत्वा तु कांस्यसीसकमेव च। (देवीभागवत)

(यज्ञादि में लोहे का, कांसे का और सीसे का आसन छोड़कर काष्ट्र, वस्त्र आदि के आसन उपादेय हैं।)

विभिन्न आसन के विभिन्न फल

कृष्णाजिने ज्ञानसिद्धिमीक्षश्रोर्व्याघ्रचर्मणि। वंशाजिने व्याधिनाशः कम्बले दुःखमोचनम्।। अभिचारे नीलवर्णं रक्तं वश्यादिकर्मणि। शान्ति के कम्बल प्रोक्तः सर्वेष्टं चित्रकम्बलम्।। वंशासने तु दारिद्र्यं पाषाणे व्याधिसम्भवः। धरणयां दुःखसम्भूतिदौर्भाग्यं छिद्रदारुजे।। तुणे धनयशोहानिः पल्लवे चित्तविभ्रमः।।

(काले मृगचर्म पर ज्ञानिसिद्धि होती है, व्याघ्र चर्म पर मुक्तिप्राप्ति, वंशवल्कल पर व्याधि से मुक्ति तथा कम्बल पर दुःखनिवृत्ति होती है। अभिचार कर्म में (मारण, मोहन, उच्चाटन आदि में) नीला आसन, किसी को वश में करने के लिए किये जा रहे कर्म में लाल आसन होना चाहिए। ग्रह पीड़ा, महामारी आदि की शान्ति के निमित्त किये जा रहे कर्म में कम्बल का आसन कहा गया है। चित्र कम्बल समस्त कार्यों के लिए कहा गया है। बांस के आसन पर दरिद्रता, पत्थर पर व्याधि, भूमि पर दुःख, छिद्रवाले काठ पर दौर्भाग्य, तृणासन पर धन और यश का नाश तथा पल्लवासन पर चित्त-भ्रम होता है।)

आसन का परिमाण

चतुर्विशत्यङ्गुलैस्तु दीर्घं काष्ठासनं मतम्। षोडशाङ्गुलविस्तीर्णमुत्सेधे चतुरङ्गुलम्।। पञ्चाङ्गुलं वा कुर्यात् नोच्छ्रितं चात्र कारयेत्।। वस्त्रं द्विहस्तान्नो दीर्घ सार्द्धहस्तान्न विस्तृतम्।। त्र्यङ्गुलं तु तथोच्छायं पूजाकर्मणि संश्रयेत्। सर्वेषां तैजसानां च आसनं श्रेष्ठमुच्यते।।

(कालीपुराण)

(काठ के आसन का परिमाण चौबीस अंगुल लम्बा, सोलह अंगुल चौड़ा और चार अंगुल ऊंचा माना गया है। अथवा पांच अंगुल ऊंचा करे। यज्ञ में इससे ऊंचा नहीं बनवाना चाहिये। वस्न का आसन दो हाथ से अधिक लम्बा और डेढ़ हाथ से अधिक चौड़ा नहीं होना चाहिये। पूजादि कर्म में तीन अंगुल ऊंचा आसन का ग्रहण उचित है। पूर्वोक्त लोह, कांसा और सीसे को छोड़ कर सभी धातुओं का आसन श्रेष्ठ कहलाता है।)

कर्म-विशेष में पित के समीप पत्नी के बैठने का निर्णय

जातके नामके चैव ह्यन्नप्राशनकर्मणि। तथा निष्क्रमणे चैव पत्नी पुत्रश्च दक्षिणे।। गर्भाधाने पुंसवने सीमन्तोन्नयने तथा। वधूप्रवेशने चैव पुनःसन्धान एव च।। प्रदाने मधुपर्कस्य कन्यादाने तथैव च। कर्मस्वेतेषु भार्यां वै दक्षिणे तूपवेशयेत्।।

(धर्मप्रवृत्तौ)

व्रतबन्धे विवाहे च चतुर्थी-सहभोजने। व्रते दाने मखे श्राद्धे पत्नी तिष्ठति दक्षिणे।। सर्वेषु धर्मकार्येषु पत्नी दक्षिणतः शुभा। अभिषेके विप्रपादक्षालने चैव वामतः।। सीमन्ते च विवाहे च तथा चातुर्थकर्मणि। मखे दाने व्रते श्राद्धे पत्नी दक्षिणतो भवेत्।। 'श्राद्धे यज्ञे विवाहे च पत्नी दक्षिणतः शुभा।'

(अत्रिसंहिता १/१३८)

सर्वेषु धर्मकार्येषु पत्नी दक्षिणतः शुभा। अभिषेके विप्रपादक्षालने चैव वामतः।। वामे पत्नी त्रिषु स्थाने पितॄणां पादशौचने। रथारोहणकाले च ऋतुकाले सदा भवेत्।। वामे सिन्दूरदाने च वामे चैव द्विरागमे। वामेऽशनैकशय्यायां भवेज्जाया प्रियार्थिनी।।

(संस्कारगणपति)

आशीर्वादेऽभिषेके च पादप्रक्षालने तथा। शयने भोजने चैव पत्नी तूत्तरतो भवेत्।।

(धर्मप्रवृत्तौ)

(ब्राह्मणों द्वारा आशीर्वाद प्राप्त करने के समय, अभिषेक के समय, ब्राह्मणों के पाद-प्रक्षालन के समय, शयन के समय और पित के साथ भोजन करते समय पत्नी को सर्वदा अपने पित से उत्तर अर्थात् वाम भाग में बैठना चाहिये।)

> शान्तिकेषु च सर्वेषु प्रतिष्ठोद्यापनादिषु। वामे ह्यु पविशेत्पत्नी व्याघ्रस्य वचनं यथा।।

तथा -

'पत्नी वामे सदा प्रोक्ता मूलाश्लेषाविधानयो:।'

(उपर्युक्त 'शान्तिकेषु च सर्वेषु' और 'पत्नी वामे सदा प्रोक्ता' ये दोनों श्लोक निर्मूल और निराधार हैं। इसलिए इन दोनों श्लोकों के द्वारा जिन कार्यों में पत्नी को पित के वाम भाग में बैठने के लिए कहा है, वह सर्वथा अप्रामाणिक है।)

> यज्ञादि में प्रौढपाद बैठने का निषेध स्नानं दानं जपं होमं भोजनं देवतार्चनम्। प्रौढपादो न कुर्वीत स्वाध्यायं पितृतर्पणम्।। (अत्रिसंहिता ३१८)

विविध प्रकार के यन्त्रों का विविध फल

सुवर्णरचितं यन्त्रं सर्वराजवशंकरम्। रजतेन कृतं यन्त्रमायुरारोग्यकामदम्।। ताम्रेण रचितं यन्त्रं सर्वैश्वर्यप्रदं मतम्। क्लृप्तं मरकते यन्त्रं सर्वशत्रुविनाशनम्।। लोहत्रयोद्धवं यन्त्रं सर्वसिद्धिकरं महत्।

यज्ञादि में वरण-सामग्री

यज्ञानुष्ठानादि में आचार्यदि समस्त ऋत्विजों को वरण में कौन-कौन सामग्री देना चाहिये, इस विषय में लिखा है कि -

भाजनं भाजनाधारश्छत्रोपानत् कमण्डलु। आसनं वसनं मुद्रा कर्णभूषोपवीतकम्।। एतद् दशविधं देयं पदं वरणसिद्धये। पदाभावे त्रयं देयं पात्रवस्त्राङ्गुलीयकम्।। तदभावेऽथ ताम्बूलं दत्त्वा किश्चित्प्रकल्पयेत्।। वरणाङ्गोपहाराणां पात्राङ्गुलीयवाससाम्।। सर्वेषां निष्क्रयद्रव्यं यथोपपन्नमृत्विजे।

(परशुरामकारिका)

(लोटा, गिलास आदि, चौकी आदि, छाता, जूता (स्वदेशी जूता अथवा खड़ाऊं), कमण्डलु, कुशासन अथवा ऊर्णासन, वस्त्र (धोती, दुपट्टा, अंगोछा आदि), द्रव्य, कानों का आभूषण और यज्ञोपवीत – यह दश प्रकार का (वरणसामान) ब्राह्मणों को देना चाहिये। पद के अभाव में पात्र, वस्त्र और सुवर्ण की अंगूठी – ये तीन प्रकार की वस्तु देनी चाहिये और इनके अभाव में ताम्बूल (पान) देकर ही वरण का सङ्कल्प करना चाहिये। यदि समस्त वरण-सामग्री प्रस्तुत न हो, तो उपस्थित ऋत्विजों को वरण का मुल्य देना चाहिये।)

वस्त्रयुग्मं महावस्त्रं केयूरं कर्णभूषणम्। अङ्गुलीयं ततश्चैव मणिबन्धस्य भूषणम्।। कण्ठाभरणयुक्तानि प्रारम्भे धर्मकर्मणः। पुरोहिताय दत्त्वाऽथ ऋत्विग्भ्यश्चापि दापयेत्।।

(लिङ्गपुराण)

पञ्चामृत और उसका प्रमाण

(गोदुग्ध, गोदिध, गोघृत, शक्कर और सहत - इन पांचों वस्तुओं से बना हुआ पञ्चामृत भगवान् को प्रिय होता है।)

> शर्करा मधु दुग्धं च घृतं दिध समांशकम्। पञ्चामृतिमदं प्रोक्तं देहशुद्धौ विधीयते।।

> > (महानिर्माणतन्त्र)

(चीनी, सहत, दुग्ध, घृत और दिध ये सब चीजें बराबर मात्रा में एकत्रित करने पर पञ्चामृत कहा जाता है, जिसका विधान शरीर-शुद्धि के लिए कहा गया है।)

> क्षीराद् दशगुणं दध्ना घृतेनैव दशोत्तरम्। मधुना तद्दशगुणं सितया तु ततोऽधिकम्।।

> > (स्कन्दपुराण)

(दुग्ध से दश गुना दिध, दिध से दश गुना घृत, घृत से दश गुना सहत और सहत से दश गुना चीनी मिलाने से पञ्चामृत होता है।)

षडङ्ग

गोमूत्रं गोमयं सर्पिः क्षीर दिध च रोचना। षडङ्गमेतत् परमं मङ्गल्यं सर्वदा गवाम्।। (विष्णुसंहिता २३/५८, ५९)

(गोमूत्र, गोबर, गोघृत, गोदुग्ध, गोदिध और गोरोचन – ये गौओं की छ: वस्तुएं षडङ्ग कही जाती है, जोकि सर्वदा परम माङ्गलिक होती हैं।)

पञ्चगव्य और उसका प्रमाण

गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दिध सिर्पः कुशोदकम्। निर्दिष्टं पञ्चगव्यन्तु पवित्रं मुनिपुङ्गवैः।।

(वशिष्ठः)

गोशकृद् द्विगुणं मूत्रं दुग्धं दद्याच्चतुर्गुणम्। घृतं चाष्टगुणं चैव पञ्चगव्ये तथा दिध।।

(वसिष्ठसंहिता)

(पञ्चगव्य में गोबर, गोबर से दूना गोमूत्र, उसका चौगुना गोदुग्ध, अठगुना घृत और दही देना चाहिये।)

(किसी आचार्य का यह भी मत है कि – दुग्ध १ तोला, गोमूत्र १ तोला, घृत १ तोला, गोबर २ तोला और दिध ८ तोला – इस हिसाब से पञ्चगव्य बनाना चाहिये।)

पञ्चगव्य के देवता

गोमुत्रे वरुणो देवो हव्यवाहस्तु गोमये। क्षीरे शशधरो देवो वायुर्दिध्न समाश्रित:।। भानुः सर्पिषि संदिष्टो कुशे ब्रह्माधिदेवता:। जले साक्षाद्धरिः संस्थः पवित्रं तेन नित्यशः।।

(गोमूत्र में वरुण देवता रहते हैं, गोबर में अग्नि देवता का वास है, दूध में चन्द्रमा स्थित है, दही में वायुदेव स्थित हैं, घी में सूर्यदेव रहते हैं, कुश में ब्रह्मादि देवताओं का निवास है एवं जल में साक्षात् विष्णु रहते हैं, इसलिए जल नित्य पवित्र हैं।)

दक्षिणा का महत्त्व

'दक्षिणावन्तो अमृतं भजन्ते दक्षिणावन्तः प्रतिरन्त आयुः।' (ऋग्वेद १/१२५/६)

(ब्राह्मणों को दक्षिणा देनेवाले मनुष्य अमरता और दीर्घायु को प्राप्त करते हैं।) 'दक्षिणाभिर्हि यज्ञः स्तूयतेऽथो यो वै कश्चन दक्षिणां ददाति स्तूयते एव स:।'

(शतपथब्रा。 ९/४/१/११)

(दक्षिणा देने से ही यज्ञ और यजमान की प्रशंसा होती है।) 'एषा ह वै यज्ञस्य पुरोगवी यद्दक्षिणा।'

(यह जो दक्षिणा है वह यज्ञ की पुरोगवी अर्थात् अग्रगण्य है।) यज्ञो दक्षिणया सार्धं पुत्रेण च फलेन च। कर्मिणां फलदाता चेत्येवं वेदविदो विदु:।।

(देवीभागवत ९/४५/५०)

(दक्षिणा से युक्त यज्ञ पुत्ररूप फल के साथ किर्मयों (कर्मकर्ता यजमानों) को फल प्रदान करता है, ऐसा वेदवेत्ता पुरुष जानते हैं।)

दक्षिणा ही यज्ञ का शुभ कर्म है

'शुभो वा एता यज्ञस्य यद्दक्षिणाः।'

(ताण्ड्यब्राह्मण, १६/१/१४)

(यज्ञादि के अन्त में जो दक्षिणा दी जाती है, वही यज्ञ का शुभ कर्म है।)

ब्रह्मवैवर्तपुराण में दक्षिणारहित यज्ञ करनेवाले को पापी और पुण्यहीन कहा गया है-यत्कर्म दक्षिणाहीनं कुरुते मूढधीः शठः।

स पापी पुण्यहीनश्च...।।

(गणपतिखण्ड २३/३७)

(जो मूर्ख मनुष्य दक्षिणाहीन कर्म करता है वह पापी और पुण्यहीन कहा जाता है।) भीष्म पितामह कहते हैं -

> यज्ञाङ्गं दक्षिणा तात वेदानां परिबृंहणम्। न यज्ञा दक्षिणाहीनास्तारयन्ति कथंचन।।

> > (महाभारत, शान्तिपर्व ७६/११)

(तात! दक्षिणा यज्ञों का अङ्ग है, वही वेदोक्त यज्ञों का विस्तार एवं उनमें न्यूनता की पूर्ति करनेवाली है। दक्षिणाहीन यज्ञ किसी प्रकार भी यजमान का उद्धार नहीं कर सकते।)

'यज्ञोऽदक्षिणो रिष्यति तस्मादाहुर्दातव्यैव यज्ञे दक्षिणा भवत्यप्यल्पिकापि।'

(ऐतरेय ब्रा॰ ६/५/९)

(दक्षिणारिहत यज्ञ नष्ट हो जाता है, अत: कहा गया है कि यज्ञ में थोड़ी-बहुत दक्षिणा अवश्य देनी चाहिये।)

'तस्मात् नादक्षिणेन हविषा यजेत।'

(शतपथब्राह्मण १/२/३/४)

(अत: दक्षिणारहित और हिव-रहित यज्ञ नहीं करना चाहिये।)

यज्ञादि में तत्काल दक्षिणा देने की आवश्यकता

कृत्वा कर्म च तस्यैव तूर्णं दद्याच्च दक्षिणम्। तत्कर्म फलमाप्नोति वेदैरुक्तमिदं मुने।।

(ब्रह्मवैवर्तपुराण)

(हे मुने! कर्म कराकर ब्राह्मणों को शीघ्र दक्षिणा देने से ही उस कर्म का फल यजमान को प्राप्त होता है, ऐसा वेदों में कहा है।)

कृत्वा कर्म च कर्ता च तूर्णं दद्याच्च दक्षिणाम्। तत्क्षणं फलमाप्नोति वेदैरुक्तमिदं मुने।

(देवीभागवत ९/४५/५३)

(हे मुने! कर्म कराकर ब्राह्मणों को शीघ्र दक्षिणा देने से यजमान को तत्काल फल की प्राप्ति होती है, ऐसा वेदों में कहा है।)

यज्ञादि आचार्यादि को दैनिक दक्षिणा देनी चाहिये

आचार्यो यदि तुष्टः स्यात् सर्वशान्तिर्भविष्यति। आचार्यदक्षिणा तस्माद्दीयतां प्रतिवासरम्।। ऋत्विग्भ्यो दक्षिणां दद्यात् यथाशक्ति ततः परम्।

(आचार्य यदि प्रसन्न हैं तो कर्म में सब प्रकार की शान्ति निश्चित है। अत: आचार्य को प्रतिदिन दक्षिणा देनी चाहिये, पश्चात् अन्य ऋत्विजों को भी यथाशिक्त दक्षिणा देनी चाहिये।)

देवकार्यों में रजत दक्षिणा का निषेध

'यदश्रुशीर्यत तद्रजतं हिरण्यमभवस्माद्रजतं हिरण्यमदक्षिणयमश्रुजं हि यो बर्हिषि ददाति पुराऽस्य संवत्सराद् गृहे रुदन्ति तस्माद् बर्हिषि न देयम्।' (तैत्तिरीयशाखा १/५/१/२)

(अग्निदेव के रुदन करने से जो अश्रुधारा गिरी, वही रजत (चांदी) हिरण्य श्वेत कान्तिवाला द्रव्य हुआ, अतः यज्ञ में चांदी की दक्षिणा देना निषिद्ध है। जो यजमान अग्नि की अश्रुधारा से उत्पन्न हुई चांदी को दक्षिणारूप में ब्राह्मणों को देता है, उसके घर में एक वर्ष पर्यन्त देवता, पितृ और ऋषि रुदन करते हैं। अतः रजत की दक्षिणा नहीं देनी चाहिये।)

देवालय के लिए प्रतिमा का परिमाण

सौम्या तु हस्तमात्रा वसुदा हस्तद्वयोच्छ्रिता प्रतिमा। क्षेमसुभिक्षाय भवेत् त्रि-चतुर्हस्तप्रमाणा वा।। (बृहत्संहिता ५७/४७)

घर के लिए प्रतिमा का परिमाण

अङ्गष्ठ पर्वादारभ्य वितस्तिर्यावदेव तु। गृहेषु प्रतिमाकार्या नाधिका शस्यते बुधै:।। (भविष्य पुराण)

सप्ताङ्गुलं समारभ्य यावच्च द्वादशाङ्गुलम्। गृहेष्वर्चा समाख्याता प्रासादे वाऽधिका शुभा।।

घर में प्रतिमा रखने का विचार

गृहे लिङ्गद्वयं नार्च्यं शालग्रामद्वयं तथा। द्वे चक्रे द्वारकायास्तु नार्च्यं सूर्यद्वयं तथा। शिक्तत्रयं तथा नार्च्यं गणेशत्रयमेव च। दो शङ्ख्वौ नार्चयेच्चैव भग्नां च प्रतिमां तथा। नार्चयेच्च तथा मत्स्यकूर्मादिदशकं तथा। गृहेऽग्निदग्धा भग्नाश्च नार्च्याः पूज्या वसुन्धरे।। एतासां पूजनान्नित्यमुद्वेगं प्राप्नुयाद् गृही। शालग्रामाः समाः पूज्याः समेषु द्वितयं न हि।। विषमा नैव पूज्यास्तु विषमेष्वेक एव हि। शालग्रामिशला भग्ना पूजनीया सचक्रका।। खिण्डता स्फुटिता वापि शालग्रामिशला शुभा।

(पद्मपुराण)

(पूर्व श्लोक में दो लिङ्ग घर में नहीं रखना चाहिए परन्तु स्कन्द पुराण का वाक्य देखे-)

लिङ्गपूजन की संख्या का विचार

चत्वारो ब्राह्मणैः पूज्यास्त्रयो राजन्यजातिभिः। वैश्यैद्वविद सम्पूज्यौ तथैकः शूद्रजातिभिः।।

(स्कन्दपुराण)

(चार लिङ्गों का पूजन ब्राह्मणों को, तीन लिङ्गों का पूजन क्षत्रियों को, दो लिङ्गों का पूजन वैश्यों को और एक लिङ्ग का पूजन शूद्रों को करना चाहिये।)

शालग्राम और द्वारिकाचक्र के पूजन का अधिकारी

शालग्रामशिलां वापि चक्राङ्कितशिलां तथा। ब्राह्मणः पूजयेन्नित्यं क्षत्रियादिर्न पूजयेत्।

(प्रयोगपारिजात)

शालग्राम की मूर्ति दान करने का महत्व

दद्याद् भक्ताय यो देवि शालग्रामशिलां नर:। सुवर्णसहितां दिव्यां पृथिवीदानफलं लभेत्।।

(वाराहपुराण)

(हे देवि! जो भक्त के लिए सुवर्ण के सिहत शालग्राम को देता है, उसको समस्त पृथ्वी के दान करने का फल प्राप्त होता है।)

प्रतिष्ठा के अधिकारी

चातुर्वर्णैस्तथा विष्णुः प्रतिष्ठाप्यः सुखार्थिभिः। भैरवोऽपि चतुर्वर्णैरन्त्यजानां तथा मतः।। मातरः सर्वलोकैस्तु स्थाप्याः पूज्याः सुरोत्तमाः। लिङ्ग गृही यतिर्वापि संस्थाप्य तु यजेत्सदा।। (देवीपुराण)

हवनीय द्रव्य (शाकल्य प्रमाण)

तिलार्धं तण्डुलाः प्रोक्तास्तण्डुलार्धं यवास्तथा। तण्डलैस्निगुणं चाज्यं यथेष्टं शर्करा मता।। तिलाधिक्ये भवेल्लक्ष्मीर्यवाधिक्ये दरिद्रता। घृताधिक्ये भवेन्मुक्तिः सर्वसिद्धिस्तु शर्करा।। आयुःक्षयं यवाधिक्यं यवसाम्यं धनक्षयम्। सर्वकामसमृद्धर्थं तिलाधिक्यं सदैव हि।।

हवनीय द्रव्य का एकादश विभाग आवश्यक है

पञ्चभागास्तिलाः प्रोक्तास्त्रिभागास्तण्डुलास्तथा। द्वौ भागौ च यवस्योक्तौ भागैकं गुग्गुलादिकम्। रुद्रभागैः कृते होमे जायते सिद्धिरुत्तमा।

द्रव्य अभाव में प्रतिनिधि द्रव्य

घृतार्थे गोघृतं ग्राह्यं तदभावे तु माहिषम्। आजं वा तदभावे तु साक्षात्तैलमपीष्यते।। तैलाभावे ग्रहीतव्यं तैलं जर्तिलसम्भवम्। तदभावेऽतसीस्नेहः कौसुम्भः सर्षपोद्भवः।। वृक्षस्नेहोऽथवा ग्राह्यः पूर्वालाभे परः परः। तदभावे यवब्रीहिश्यामाकान्यतमोद्भवः।।

(मण्डनः)

गव्याज्याभावतछागामहिष्यादेर्घृतं क्रमात्। तदभावे गवादीनां क्रमात् क्षीरं विधीयते।। तदभावे दिध ग्राह्यमलाभे तैलमपीष्यते। दध्यलाभे पयो ग्राह्यं मध्वलाभे तथा गुड:। घृतप्रतिनिधिं कुर्यात् पयो वा दिध वा नृप।। (विष्णुधर्मोत्तरपुराण)

आज्य शब्द का अर्थ

घृतं वा यदि वा तैलं पयो दिध च यावकम्। संस्कारयोगादेतेषु आज्यशब्दोऽभिधीयते।। (यज्ञपार्श्वपरिशिष्ट)

घृत के उत्तम, मध्यम और अधम का निर्देश उत्तमं गोघृतं प्रोक्तं मध्यमं महिषीभवम्। अधमं छागलीजातं तस्माद् गव्यं प्रशस्यते।। (पिङ्गलामत)

घृतादि के अभाव में तिल ग्राह्य है
यत्र यत्र च सङ्कीर्णमात्मानं मन्यते द्विजः।
तत्र तत्र तिलैहींमो गायत्र्या वाचनं तथा।।
(याज्ञः स्मृः, प्रायः ३०९)

तिल का महत्त्व

तिलान् ददाति यः प्रातस्तिलान् स्पृशति खादति। तिलस्नायी तिलाञ्जुह्वन् सर्वं तरित दुष्कृतम्।। (यमस्मृति)

तिलाः पुण्याः पवित्राश्च सर्वपापहराः स्मृताः। शुक्लाश्चैव तथा कृष्णा विष्णुगात्रसमुद्भवाः।। (स्मृतिकौस्तुभ)

कर्म-विशेष में अग्नि के भिन्न-भिन्न नाम (अनेकानेक मतेन)

प्रत्येक कर्म के लिए अग्नि के अलग-अलग नाम हैं। अतः जिस कर्म के लिए जिस अग्नि का आचार्यों ने नाम-निर्देश किया है, उसी अग्नि का सिविध आवाहन एवं स्थापन कर हवन करना चाहिये।

अनेक आचार्यों ने अपने-अपने ग्रन्थों में अग्नि के नाम लिखे हैं, जिनमें से कितपय आचार्यों के प्रमाण उद्धृत किये जाते हैं।

आचार्य वाचस्पति ने अग्नि के २७ नाम इस प्रकार बतलाये हैं -

लौकिके पावको ह्यग्निः प्रथमः परिकीर्तितः। अग्निस्तु मारुतो नाम गर्भाधाने प्रकीर्तित:।। पुंसवे चमसो नाम शोभनः शुभकर्मस्। सीमन्ते ह्यनलो नाम प्रगल्भो जातकर्मणि।। पार्थिवो नामकरणे प्राशनेऽन्नस्य वै शुचि:। सभ्यनामा तु चूडायां व्रतादेशे समुद्भवः।। गोदाने सूर्यनामा स्यात् केशान्ते याजकः स्मृतः।। वैश्वानरो विसर्गे स्याद् विवाहे ब्रह्मदः स्मृत।। चतुर्थीकर्मणि शिखी धृतिरग्निस्तथापरे। आवसथ्यस्तथाधाने वैश्वदेवे त पावकः।। ब्रह्माग्निर्गार्हपत्यः स्याद्दक्षिणाग्निस्तथेश्वरः। विष्णराहवनीयः स्यादग्निहोत्रे त्रयो मताः।। लक्षहोमेऽभीष्टदः स्यात्कोटिहोमे महाशनः। एके घृतार्चिषं प्राहुरग्निध्यानपरायणाः।। रुद्रादौ तु मुडो नाम शान्ति के शुभकृत्तथा। पौष्टिके वरदश्चैव क्रोधाग्निश्चाभिचारिके।। वश्यार्थे वशकृत्प्रोक्तो वनदाहे तु पोषकः। उदरे जठरो नाम क्रव्याद: शवभक्षणे।। समुद्रे वाडवो ह्यग्निर्लये संवर्तकस्तथा। सप्तविंशतिसंख्याका अग्नयः कर्मसु स्मृताः।।

अन्य मतेन -

लौकिके पावको ह्याग्नः प्रथमः परिकीर्तितः। अग्निस्तु मारुतो नाम गर्भाधाने विधीयते।। पुंसवने चन्द्रनामा शुभकर्मणि शोभनः। सीमन्ते मङ्गलो नाम प्रगल्भो जातकर्मणि।। नाम्नि स्यात् पार्थिवो ह्याग्नः प्राशने च शुचिस्तथा। सभ्यनामाय चूडायां व्रतादेशे समुद्भवः।। गोदाने सूर्यनामा च केशान्ते ह्याग्नरुच्यते। वैश्वानरो विसर्गे तु विवाहे योजकः स्मृतः।। चतुर्थ्यां तु शिखी नाम धृतिरग्निस्तथापरे। प्रायश्चिते विधुश्चैव पाकयज्ञे तु साहसः।। लक्षहोमे तु वहिः स्यात् कोटिहोमे हुताशनः। पूर्णाहुत्यां मृडो नाम शान्ति के वरदस्तथा।। पौष्टिके वलदश्चैव क्रोधाग्निश्चाभिचारिके। वश्यर्थे शमनो नाम वरदानेऽभिदूषकः।। कोष्ठे तु जठरो नाम क्रव्यादो मृतभक्षणे।

(गोभिलपुत्रकृतसंग्रहे)

(लौकिक कर्म में 'पावक' अग्नि कहा गया है, गर्भाधान में 'मारुत' अग्नि का विधान है, पुंसवन में 'चन्द्र' अग्नि कहा गया है, अन्यान्य शुभ कर्मों में 'शोभन' अग्नि कहा गया है, सीमन्तोन्नयन में 'मङ्गल' अग्नि कहा गया है, जातकर्म में 'प्रगल्भ' अग्नि कहा गया है, जातकर्म में 'प्रार्थिव' अग्नि कहा गया है। अन्नप्राशन में 'शुचि', चूड़ाकरण में 'सभ्य', न्नतबन्ध (उपनयन) में, 'समुद्भव', गोदान–संस्कार में 'सूर्य', समावर्तन–संस्कार में 'अग्नि', विसर्ग (साग्निक पुरुषद्वारा करणीय कर्म) में 'वैश्चानर' तथा विवाह में 'योजक' अग्नि कहा है। चतुर्थीकर्म (विवाह के बाद चतुर्थी होम) में 'शिखीं', अपर अर्थात् धृतिहोम आदि में 'धृति', प्रायश्चित में 'विधु', पाकयज्ञ में (पाकाङ्गक होम में यानी वृषोत्सर्ग, गृहप्रतिष्ठा आदि में) 'साहस' अग्नि अभिहित है। लक्षहोम में 'वह्नि', कोटिहोम में 'हुताशन', पूर्णाहुति में 'मृड', शान्तिकर्म में 'वरद', पौष्टिक कर्म में 'बलद', आभिचारिक कर्म (मारण, मोहन, उच्चाटन आदि) में 'क्रोध', वशीकरण में 'शमन', वरदान में 'अविदूषक', उदर में 'जठर' और मृत (शव) के भक्षण में 'क्रव्याद' अग्नि शास्त्रों में अभिहित है।)

अन्यच्च -

लौकिके पावको ह्यग्निः प्रथमः परिकीर्तितः। अग्निस्त मारुतो नाम गर्भाधाने प्रकीर्तित:।। पुंसवे चमसो नाम सीमन्ते मङ्गलाभिधः। प्रगल्भो जातसंस्कारे शोभनः शुभकर्मणि।। पार्थिवो नामकरणे प्राशनेऽन्नस्य वै शुचि:। सभ्यनामा त् चुडायां व्रतादेशे सम्द्भवः।। गोदाने सूर्यनामा स्यात् विवाहे योजकः स्मृतः। वैश्वानरो विसर्गे स्यात् शान्ति के वरदः स्मृत:।। चतुर्थीकर्मणि शिखी धृतिरग्निस्तथापरे। आवसथ्यस्तथाऽऽधाने वैश्वदेवे त पावकः॥ ब्रह्माग्निर्गार्हपत्य: स्याद्दक्षिणाग्निस्तथेश्वर:। विष्णराहवनीयः स्याद्दिग्नहोत्रे त्रयोऽग्नयः।। प्रायश्चिते विधिश्चैव पाकयज्ञेषु साहसः। देवानां हव्यवाहस्तु पितृणां कव्यवाहनः।। लक्षहोमेऽभीष्टदः स्यात् कोटिहोमे महाशनः। पूर्णाहृतौ मुडो नाम पौष्टिके बलवर्द्धन:।। मृतदाहे तु क्रव्याद: क्रोधाग्निश्चाभिचारिके। वश्यार्थे वशकृत्प्रोक्तो वनदाहे तु पोषक:।।

(विधानपारिजात)

(लौकिक में पावक, गर्भाधान में मारुत, पुंसवन में चमस, सीमन्त में मङ्गल, जातकर्म में प्रगल्भ, शुभकर्म में शोभन, नामकरण में पार्थिव, अन्नप्राशन में शुचि, चूड़ाकरण में सभ्य, व्रतादेश में समुद्भव, गोदान में सूर्य, विवाह में योजक, विसर्ग में वैश्वानर, शान्तिकर्म में वरद, चतुर्थीकर्म में शिखी, दूसरे धृति होमादि में धृति, आधान (अग्न्याधान) में आवसथ्य और वैश्वदेव में पावक अग्नि होता है। अग्निहोत्र में तीन अग्नि प्रसिद्ध है—गार्हपत्याग्नि में ब्रह्मा, दक्षिणाग्नि में शिव (ईश्वर) और आहवनीयाग्नि में विष्णु। प्रायश्चित में विधि, पाकयज्ञ में साहस, देवताओं का हव्यवाह, पितरों का कव्यवाह, लक्षहोम में अभीष्टद, कोटिहोम में महाशन, पूर्णाहुति में मृड, पौष्टिक में बलवर्धन, मृतदाह में क्रव्याद, अभिचार—कर्म में क्रोधन, वशीकरण में वशकृत् और वनदाह में पोषक नाम का अग्नि कहा गया है।

कोटिहोमादि में अग्नि के नाम

शुभो ग्रहिवधौ ह्यग्निर्लक्षहोमे पराजित:। कोटिहोमे शिवो विह्न सर्वकामप्रदायक:।। (देवीपुराण)

अन्यत्र कहा है -

'लक्षहोमे तु विह्नः स्यात् कोटिहोमे हुताशनः।'

नवग्रहों की अग्नि के नाम

आदित्ये किपलो नाम पिङ्गलः सोम उच्यते। धूमकेतुस्तथा भौमे जाठरोऽग्निर्वुधे स्मृतः।। बृहस्पतौ शिखी नाम शुक्रे भवति हाटकः। शनैश्चरे महातेजा राहुकेत्वोर्हुताशनः।। (संस्कारगणपति)

अग्निहोत्र की अग्नि के नाम

आवसथ्याहवनीयौ दक्षिणाग्निस्तथैव च। अन्वाहार्यो गार्हपत्य इत्येते पञ्च वह्नय:।। (शारदातिलक)

कर्म-विशेष की अजात अग्नि में विचार

सर्वतः पाणिपादश्च सर्वतोऽक्षिशिरोमुखः। विश्वरूपो महानिगः प्रणीतः सर्वकर्मसु।। (गृह्यसंग्रह)

यज्ञादि में उत्तम अग्नि

उत्तमोऽरणिजन्योऽग्निर्मध्यमः सूर्यकान्तजः। उत्तमः श्रोत्रियगृहान्मध्यमः स्वगृहादिजः।। (प्रयोगरत्न)

यज्ञादि में त्याज्य अग्नि

चाण्डालाग्निरमेध्याग्निः सूतकाग्निश्च कर्हिचित्। पतिताग्निः चिताग्निश्च च शिष्टग्रहणोचितः।। (देवलः)

विभिन्न अग्नियों के धूएं का फल

यज्ञधूमोद्धवं त्वभ्रं द्विजानां च हितं सदा। दावाग्निधूमसम्भूतमभ्रं वनहितं स्मृतम्। मृतधूमोद्भवं त्वभ्रमशुभाय भविष्यति। अभिचाराग्निधूमोत्थं भूतनाशाय वै द्विजा:।।

अग्नि का स्वरूप जानकर ही हवन करना चाहिये

अविदित्वा तु यो ह्यग्निं होमयेदिवचक्षणः। न हुतं न च संस्कारो न स कर्मफलं लभेत्।। ज्ञात्वा स्वरूपमाग्नेयं योऽग्नेराराधनं चरेत्। ऐहिकाऽऽमुष्मिकैः कामैः सारिथस्तस्य पावकः।। आहूयैव तु होतव्यं यो यत्र विहितो भवेत्। (शुभकर्मनिर्णय)

अग्नि का ध्यान

सप्तहस्तश्चतुःशृङ्गः सप्तजिह्वो द्विशीर्षकः। त्रिपात्प्रसन्नवदनः सुखासीनः शुचिस्मितः।। मेषारूढो जटाबद्धो गौरवर्णो महौजसः। धूमध्वजो लोहिताक्षः सप्तार्चिः सर्वकामदः।। शिखाभिर्दीप्यमानाभिरूर्ध्वगाभिस्तु संयुतः। स्वाहां तु दक्षिणे पार्श्वे देवीं वामे स्वधां तथा। विभ्रद्दक्षिणहस्तैस्तु शक्तिमन्नं स्नु चं स्नु वम्। तोमरं व्यजनं वामे घृतपात्रं च धारयन्।। आत्माभिमुखमासीन एवंरूपो हुताशनः। स्वस्तिकाभीतिमुच्चे – दींधैर्दीभिर्यारयन्तं जप

इष्टं शक्तिं स्वस्तिकाभीतिमुच्चै - दींघैंदींभिर्यारयन्तं जपाभम्। हेमाकल्पं पद्मसंस्थं त्रिनेत्रं ध्यायेद् विह्नं विह्नमौलं जटाभि:।। (शारदातिलक ५/३४)

अग्नि के मुख आदि का विचार

सधूमोऽग्निः शिरो ज्ञेयो निधूर्मश्चक्षुरेव च। ज्वलत्कृशो भवेत्कर्णः काष्ठलग्नश्च नासिका।। अग्निर्ज्वालायते यत्र शुद्धस्फटिकसन्निभः। तन्मुखं तस्य विज्ञेयं चतुरङ्गुलमानतः।। (शारदातिलकटीका, ५ पटल)

अग्नि की जिह्वा के नाम

काली कराली च मनोजवा च सुलोहिता या च सुधूम्रवर्णा। स्फुलिङ्गिनी विश्वरुची च देवी-लेलायमाना इति सप्त जिह्वाः।।

(मुण्डकोपनिषद् १/२/४)

कराली धूमिनी श्वेता लोहिता नीललोहिता। सुवर्णा पद्मरागा च सप्त जिह्वा विभावसो:।।

(गृह्यसंग्रह)

हिरण्या कनका रक्ता कृष्णा तदनु सुप्रभा। बहुरूपाऽतिरिक्ता च विह्नजिह्ना च सप्त च।।

(परशुरामकारिका)

कर्म-भेद से अग्नि की जिह्वाओं के नाम

विवाहे वारुणी जिह्वा मध्यमा यज्ञकर्मसु। उत्तरा चोपनयने दक्षिणा पितृकर्मसु।। प्राचीना सर्वकार्येषु ह्याग्नेयी सर्वकर्मसु। ऐशानी चोग्रकार्येषु ह्येतद् होमस्य लक्षणम्।।

(संग्रहे)

अग्नि को प्रज्वलित करने का विचार

न पाणिना न शूर्पेण न च मेध्याजिनादिभिः। मुखेनोपधमेदग्निं मुखादेव व्यजायत।। षटकेन भवेद् व्याधिः शूर्पेण धननाशनम्। पाणिना मृत्युमाप्नोति कर्मसिद्धिर्मुखेन तु।।

(देवीभागवत ११/२२/५-६)

(यज्ञाग्नि को न तो हाथ से दहकावे न सूप से और न पवित्र मृगचर्म आदि से (आदि पद से वस्त्र का ग्रहण है)। मुख से ही यज्ञाग्नि को धौंके, क्योंकि वह मुख से उत्पन्न हुआ है-'मुखादग्निरजायत'।

वस्त्र (चर्म आदि) से अग्नि धौंकने पर व्याधि (रोग) होती है, सूप से धौंकने पर धन-नाश होता है, हाथ से धौंकने पर मरण होता है, किन्तु मुख से धौंकने पर कर्मसिद्धि होती है।) होतव्ये च हुते चैव पाणिशूर्पस्प्यदारुभिः। न कुर्यादिग्निधमनं कुर्याद्वा व्यजनादिना।। मुखेनैके धमन्त्यग्निं मुखाद्ध्येषोऽध्यजायत। नाग्निं मुखेनेति च यल्लौिकके योजयन्ति तम्।

(कात्यायन स्मृति ९/१४-१५)

(हाथ, सूप, स्पय और लकड़ियों से हवन करना हो और हवन किया गया हो – ऐसी यज्ञाग्नि में अग्निधमन न करे (अग्नि को न धौंके) यदि धौंके तो पंखे आदि से। कुछ लोग मुख से अग्नि को धौंकते हैं, क्योंकि वह मुख से ही उत्पन्न हुआ है। 'मुख से अग्नि की उत्पत्ति हुई' ऐसी श्रुति है। 'नाग्ने मुखेनोपधमेन नग्नों नेक्षेत च स्त्रियम्।' (मनुः /५३) यह स्मृतिवचन भी मुख से अग्नि को धौंकने का निषेध करता है, उसकी लौकिक अग्नि में योजना करते हैं अर्थात् लौकिक अग्नि को मुख से नहीं धौंकना चाहिये। (बांस की बनी हुई धौंकनी के द्वारा मुख से।)

न पक्षकेणोपधमेन्न शूर्पेण न पाणिना। मुखेनैव धमेदिग्नं मुखादिग्नरजायत।। (कूर्मपुराण, उत्तरार्ध १६/८८)

विभिन्न वस्तुओं से अग्नि के जलाने का विभिन्न फल

(वस्त्र द्वारा अग्नि को प्रज्वलित करने से रोग होता है, सूप द्वारा अग्नि को प्रज्वलित करने से धनक्षय होता है, हस्त द्वारा अग्नि को प्रज्वलित करने से मृत्यु होती है और मुख द्वारा अग्नि को प्रज्वलित करने से समस्त प्रकार के कर्मों की सिद्धि होती है।)

> जुहूतश्चाथ पर्णेन पाणिशूर्पपटादिना। न कुर्यादिग्निधमनं तथा च व्यजनादिना।। पर्णेनैव भवेद् व्याधिः शूर्पेण धननाशनम्। पाणिना मृत्युमाप्नोति पटेन विफलं भवेत्। व्यजनेनातिदुःखाय आयुः पुण्यं मुखाद्धमात्। मुखेन धमयेदिग्नं मुखादिग्नरजायत।। अग्निं मुखेनेति तु यल्लौिकके योजयेश्च तत्। वेणोरिग्नप्रसूतित्वाद्वेणुरग्नेश्च पातनः। तस्माद्वेणुधमन्येव धमेदिग्नं विचक्षणः।।

> > (देवलः)

आहुति शब्द का अर्थ

'देवोद्देशेन वह्नौ मन्त्रेण हविः प्रक्षेप आहुतिः।'

(देवता के उद्देश्य से मन्त्र द्वारा अग्नि में जो हिवर्द्रव्य डाला जाता है, उसे आहुति कहते हैं।)

'ह्वयति देवाननया सा आहूति:। जुहोति प्रक्षिपति हविरनया इति वा। आहूतयो वै नामैता यदाहुतय:, एताभिर्देवान् यजमानो ह्वयति तदाहृतीनामाहृतित्वम्।'

(ऐतरेयब्राह्मण १/१/२)

(जिससे देवताओं को बुलाया जाये उसे 'आहूति' कहते हैं। अथवा जिससे हिवर्द्रव्य का अग्नि में प्रक्षेप किया जाये उसे 'आहुति' कहते हैं। आहुति को आहुतित्व इसलिये है कि इसके द्वारा यजमान देवताओं को बुलाता है।)

होम शब्द का अर्थ

(देवतोद्देश्यपूर्वक मुख्य रूप से हिवर्द्रव्य के प्रक्षेपात्मक त्याग को 'होम' कहते हैं। होम का लक्षण इस प्रकार लिखा है -

'उपविष्टहोमाः स्वाहाकारप्रदानाः जुहोतयः।'

(कात्यायनश्रौतसूत्र १/२/७)

(जिस कर्म-विशेष में बैठकर स्वाहाकारपूर्वक हिवर्द्रव्य का त्याग किया जाये, उसे 'होम' कहते हैं।)

।।कामना भेद से मुद्रा का विधान।। (कामना भेद से हवन मुद्रा)

तिस्रो मुदास्तु सम्प्रोक्ता मृगी हंसी च सूकरी। सूकरी करसङ्कोचाद् हंसी मुक्तकनिष्ठिका।। कनिष्ठा तर्जनीहीना मृगीमुद्रा तिलाहुतौ। शान्तिकर्मणि सर्वत्र मृगी हंसी शुभे उभे।। अभिचारेषु सर्वेषु सूकरी तु प्रकीर्तिता।

(आहुति के प्रदान में तीन मुद्राएं कही गई है – मृगी, हंसी और सूकरी। हाथ के संकोच से सूकरी-मुद्रा होती है। किनष्ठिका अंगुली हटा देने से हंसी-मुद्रा होती है। किनष्ठिका और तर्जनी रहित (तिलाहुति) में जो मुद्रा है वह मृगी-मुद्रा कहलाती है। सभी शान्ति

कर्मों में मृगी और हंसी दोनों मुद्राएं शुभ हैं। समस्त आभिचारिक कर्मों में सूकरी-मुद्रा प्रशस्त कही गई है।)

> 'यज्ञे शान्तिकार्येषु मृगी हंसी प्रकीर्तिता।' (कुलतन्त्रप्रकाश)

यज्ञ में और समस्त शान्ति-कर्म में मृगी और हंसी-मुद्रा करनी चाहिये। (कहीं-कहीं मयूरी कुक्कुटी मुद्रा भी लिखा है।)

कुण्ड के ऊपर की मेखला में गिरे हुए हवनीय प्रदार्थ को अग्नि में डालना चाहिये

(हवन के समय कुण्ड के ऊपर की मेखला में जो हवनीय द्रव्य गिरे, उसे अग्नि में डालना चाहिये। क्योंकि वह हविर्द्रव्य कुण्ड की परिधि के परिस्तरणान्तर्गत होने के कारण अग्नि में डालने के योग्य है।)

कुण्ड के बाहर गिरे हुए हवनीय द्रव्य का गङ्गा आदि नदी में प्रक्षेप उचित है

ऋत्विजां जुह्वतां वह्नौ बहि: पतित यद्धवि:। स जेयो वारुणो भाग: प्रक्षेप्यो विमले जले।।

(शौनकः)

हवन के मन्त्र का निर्णय

'यस्य देवस्य यो होमस्तस्य मन्त्रेण होमयेत्।' (जो होम जिस देवता के उद्देश्य से हो, उसका उसी के मन्त्र से हवन करना चाहिये।)

हवन करने की विधि

उत्तानेन तु हस्तेन अङ्गुष्ठाग्रेण पीडितम्। संहताङ्गुलिपाणिस्तु वाग्यतो जुहुयाद्धवि:।।

(उत्तान (सीधे) हाथ से अंगूठे के अग्रभाग से हिवर्द्रव्य को दबाकर हाथ की अंगुलियों को सटाकर मौन होकर हवन करना चाहिये।)

> पाण्याहुतिर्द्वादशपर्वपूरिका कांसादिना चेत् स्रुवमात्रपूरिका। दैवेन तीर्थेन च हूयते हविः स्वङ्गारिणि स्वर्चिषि तच्च पावके।।

(कात्यायनस्मृति ९/११)

(यदि पाण्याहुति हो अर्थात् हाथ से आहुति दी जाये तो हाथ की अंगलियों के बारहों पर्व (पंउरियां) पूरे होने चाहिये। कांसे की चम्मच आदि से दी जाये, तो केवल स्नुव के बराबर होनी चाहिये। उस हिवका सुन्दर दहकते हुए अंगारवाले तथा खूब अधिक ज्वालावाले अग्नि में दैवतीर्थ (अंगुलियों के अग्रभाग) से हवन किया जाता है।)

> आहुतिस्तु घृतादीनां सुवेणाधोमुखेन च। हुनेत् तिलाद्याहुतीश्च दैवेनोत्तानपाणिना।।

> > (भविष्यपुराण)

(अग्नि में घृत की आहुति देने के लिए स्रुवा का मुख नीचे करना चाहिये और तिल आदि की आहुति देने के लिए अपने हाथ को उत्तान (सीधा) करके देवतीर्थ से आहुति डालना चाहिये।)

आहुति के प्रक्षेप का समय

मन्त्रेणोङ्कारपूर्तेन स्वाहान्तेन विचक्षणः। स्वाहावसाने जुहुयाद् ध्यायन् वै मन्त्रदेवताम्।।

(देवयाज्ञिक)

(ॐकार से पवित्र तथा स्वाहान्त मन्त्र से स्वाहा के अवसान में मन्त्र एवं देवता का ध्यान करता हुआ विद्वान् आहुति दे।)

मन्त्रेणोङ्कारपूतेन स्वाहान्तेन विचक्षणः। स्वाहावसाने जुहुयाद् ध्यायन्वै मन्त्रदेवताम्।।

(ॐकारपूर्वक (ॐकार है पूर्व में जिसके) स्वाहान्त (स्वाहा है अन्त में जिसके ऐसे) मन्त्र से विद्वान् पुरुष को मन्त्रदेवता का ध्यान करते हुए 'स्वाहा' के बाद अग्नि में हविष्का प्रक्षेप (त्याग) करना चाहिये।

> स्वाहावसाने जुहुयात् स्वाहया सह वा हिवः। त्यागान्ते ब्रुवते केचिद् द्रव्यप्रक्षेपणं बुधाः।

(कर्मकौमुदी)

(होता स्वाहा के अन्त से हवन करे अथवा स्वाहा के साथ करे। कुछ विद्वानों का मत है कि हविर्द्रव्य का अग्नि में प्रक्षेप करके ही 'स्वाहा' शब्द कहना चाहिये।)

स्वाहान्ते जुहुयात् होता स्वाहया सह वा हवि:। त्यागान्ते बुवते केचित् द्रव्यप्रक्षेपणं बुधा:।।

(परशुरामकारिका)

(होता को स्वाहा के अन्त में हवन करना चाहिये (अग्नि में हिवष्का त्याग करना चाहिये) अथवा स्वाहा के साथ ही कुछ विद्वान हिवष्के त्याग (अग्नि में प्रक्षेपण) के बाद 'स्वाहा' कहते हैं।)

स्वाहा कुर्यान्न मन्त्रान्ते न चैव जुहुयाद्धवि:। स्वाहाकारेण हुत्वाऽग्नौ पश्चान्मन्त्रं समापयेत्।। (कात्यायनस्मृति १७/१४)

(मन्त्र के अन्त में स्वाहा न करे और न हिवष्का हवन करे। स्वाहाकार से अग्नि में हवन करके बाद में मन्त्र को समाप्त करे।)

'आदौ द्रव्यपरित्यागः पश्चाद्धोमो विधीयते।'

(देवयाज्ञिक:)

(प्रथम द्रव्य का परित्याग कर पश्चात् हवन करना चाहिये।) सकारे सूतकं विद्याद्धकारे मृत्युमादिशेत्। आहुतिस्तत्र दातव्य: यत्र आकार दृश्यते।।

(दुर्गार्चनसृति)

(स्वाहा में स् व् आ और ह आ ये पांच अक्षर हैं। सकार में सूतक जानना चाहिये और हकार में मृत्यु कहना चाहिये। अत: आहुति उस समय देनी चाहिये जिस समय हकारोत्तरवर्ती आकार दिखाई देता है अर्थात् स् के उच्चारण में आहुति सूतक के दोष से दुष्ट हो जाती है, हकार के उच्चारण में मृत्यु का भय होता है, इसलिये हकारोत्तरवर्ती आकार के उच्चारण के समय आहुतिप्रक्षेप करना चाहिये।

कुछ आचार्यों का 'स्वेच्छया जुहुयाद्धविः' यह भी मत है, किन्तु यह मत ठीक नहीं है। स्वेच्छाचार से भयङ्कर अनवस्था दोष हो जाता है। अतः उपर्युक्त देवयाज्ञिक, विष्णुधर्म, कर्मकौमुदी एवं परशुरामकारिका आदि के ही मत मान्य और अनुकरणीय हैं।)

आहुति देने का विचार

प्रश्न -

अधोमुख ऊर्ध्वपाद: प्राङ्मुखो हव्यवाहन:। तिष्ठत्येव स्वभावेन आहुति: कुत्र दीयते?।।

(कारिका)

(अग्नि (जो हवनीय द्रव्य चरु आदि को तत्तत् देवताओं को पहुंचाता है) स्वभावत: ही अधोमुख (नीचे की ओर मुखवाला) ऊर्ध्वपाद (ऊपर की ओर पैरवाला) रहता है। उसका मुंह पूर्व की ओर रहता है, ऐसी स्थिति में आहुति कहां दी जाये?)

उत्तर -

सपवित्राम्बुहस्तेन वहः कुर्यात्प्रदक्षिणम्। हव्यवाट् सलिलं दृष्टा बिभेति सम्मुखो भवेत्।।

(कारिका)

(हाथ में पिवत्री और जल लेकर कर्ता अग्नि की प्रदक्षिणा करे। हव्यवाहन (अग्नि) जल को देखकर डर जाता है और सम्मुख (हवनकर्ता के सामने) हो जाता है। इसलिये सामने होम करना चाहिये।)

विधिहीन अग्नि में हवन करने से हानि

क्षुत्तृट्क्रोधसमायुक्तो हीनमन्त्रो जुहोति यः। अप्रवृद्धे सधूमे वा सोऽन्धः स्याज्जन्मजन्मिन।। स्वल्पे रूक्षे सस्फुलिङ्गे वामावर्ते भयानके। आर्द्रकाष्ठैश्च सम्पूर्णे फूत्कारवित पावके।। कृष्णार्चिषि सदुर्गन्धे तथा लिहित मेदिनीम्। आहुतिर्जुहुयाद्यस्तु तस्य नाशो भवेद् ध्रुवम्।।

(ब्रह्मपुराण)

(जो पुरुष भूख, प्यास से व्याकुल तथा क्रोध युक्त होकर मन्त्ररहित, पूर्णरूप से न सुलगी हुई (ज्वाला-माला विहीन) अथवा धूएं से व्याप्त अग्नि में हवन करता है, वह प्रत्येक जन्म में अन्धा होता है। जो पुरुष स्वल्प रूखी (धूमिल वर्ण की) चिनगारियों से भरी, जिसकी ज्वालाएं बाईं ओर लपक रही हों, जो देखने में भयानक प्रतीत होती हों, जो गीली लकड़ियों से भरी हों, जिसमें फुफकार का शब्द हो रहा हो, जिसकी ज्वालाएं काली हों, जिसमें से दुर्गन्ध निकल रही हों तथा जो ज्वालाएं भूमिका स्पर्श कर रही हों, ऐसी अग्नि में आहुतियां डालता है, उसका अवश्य नाश होता है।)

अन्धो बुधः सधूमे च जुहुयाद्यो हुताशने। यजमानो भवेदन्धः सपुत्र इति च श्रुतिः।।

(बहवचपरिशिष्ट)

(जो विद्वान धूमवाली अग्नि में हवन करता है, वह अन्धा होता है और जो यजमान सधूम अग्नि में हवन करता है, वह पुत्र के सहित अन्धा होता है।)

> अप्रबुद्धे सधूमे च जुहुयाद्यो हुताशने। यजमानो भवेदन्धः सोऽपुत्र इति नः श्रुतम्।।

> > (वायुपुराण ७५/६२)

(जो यजमान अग्नि के ठीक-ठीक न जलने पर और धूम के रहते हुए अग्नि में हवन करता है, वह अन्धा और पुत्रहीन होता है, ऐसा हमने सुना है।)

प्रज्विलत अग्नि में हवन करना चाहिये योऽनर्चिषि जुहोत्यग्नौ व्यङ्गारिणि च मानवः। मन्दाग्निरामयावी च दरिद्रश्च स जायते।।

तस्मात्सिमद्धे होतव्यं नासिमद्धे कदाचन।।

(छन्दोगपरिशिष्ट)

(जो मनुष्य तेजहीन अग्नि तथा अङ्गारहीन अग्नि में आहुति देता है वह मन्दाग्नि इत्यादि रोगों से दुखी तथा दरिद्रता को प्राप्त होता है। अत: प्रज्वलित अग्नि में ही हवन करना सर्वथा उचित है।)

> योऽनर्चिषि जुहोत्यग्नौ व्यङ्गरिणि च मानवः। मन्दाग्निरामयावी च दरिद्रश्च स जायते।। तस्मात्सिमिद्धे होतव्यं नासिमद्धे कदाचन। आरोग्यमिच्छतायुश्च श्रियमात्यन्तिकीं पराम्।।

(कात्यायनस्मृति ९/१२-१३)

(जो पुरुष तेजरहित अग्नि और अङ्गार-रहित अग्नि में आहुित डालता है, वह मन्दाग्नि आदि रोगों से दुखित और दिरद्रता को प्राप्त होता है। अत: आरोग्य, दीर्घायु और विशिष्टरूप में लक्ष्मी की प्राप्ति के इच्छुक को प्रज्वलित अग्नि में ही हवन करना चाहिये।)

यदा लेलायते ह्यर्चिः सिमद्धे हव्यवाहने। तदाज्यभागावन्तरेणाहुतीः प्रतिपादयेत्।। (मुण्डकोपनिषत्)

आहुति की संख्या निर्णय

अनुक्त संख्या यत्र स्याच्छष्टोतरं स्मृतम्। अष्टाविंशति रष्टौ वा यथा शक्ति विधियते।।

अग्नि में हवनार्थ स्थान का विचार सर्वकार्यप्रसिद्धयर्थं जिह्वायां तत्र होमयेत्। चक्षः कर्णादिकं ज्ञात्वा होमयेद्देशिकोत्तमः।। अग्निकर्णे हुतं यस्तु कुर्याच्चेद् व्याधितो भयम्। नासिकायां महद्दुःख चक्षुषोर्नाशनं भवेत्।। केशे दारिद्रचदं प्रोक्तं तस्माज्जिह्वासु होमयेत्। यत्र काष्ठं तत्र क्षोत्रे यत्र धूमस्तु नासिके।। यत्राल्पज्वलनं नेत्रं यत्र भस्म तु तच्छिरः। यत्र च ज्वल्तो वह्निस्तव जिह्वा प्रकीर्तिता।।

(वनदुर्गाकल्प)

(समस्त कार्यों की सिद्धि के लिए अग्नि की जिह्वा में होम करना चाहिये। श्रेष्ठ आचार्य चक्षु (नेत्र), कर्ण, नासिका, सिर आदि की पहचान कर हवन करे। अग्नि के कान में यदि हवन करे तो उसे व्याध का भय होता है, नासिका में हवन करे तो महादुःख होता है, नेत्रों में हवन करे तो विनाश होता है। केशों में किया गया हवन दारिद्रयप्रद कहा गया है। इसलिए जिह्वाओं में हवन करना चाहिये।

जहां काठ है वहां अग्नि के कान कहे गये हैं, जहां धूंआ है वहां अग्नि की नासिका कही गई है, जहां अग्नि कम जलती है वहां अग्नि के नेत्र कहे गये हैं, जहां भस्म है वहां अग्नि का सिर कहा गया है और जहां अग्नि ज्वालायुक्त है, वहां अग्नि की जिह्वा कही गई है।) अन्यत्र भी लिखा है –

यत्र काष्ठं तत्र कर्णौ हुनेच्चेद् व्याधिकृन्नरः। धूमस्थानं शिरः प्रोक्तं मनोदुःखं भवेदिह।। यत्राल्पज्वलनं नेत्रं यजमानस्य नाशनम्। भस्मस्थाने तु केशःस्यात् स्थाननाशो धनक्षयः। अङ्गारे नासिकां विद्यान्मनोदुःखं विदुर्बुधाः। यत्र प्रज्वलनं तत्र जिह्वा चैव प्रकीर्तिता।। गजवाजिप्रदात्री तु वहिः शुभफलप्रदः।।

(जहां काठ है वहां कान है वहां यदि मनुष्य हवन करे तो वह हवन व्याधिकारी होता है। धूम का स्थान सिर कहा गया है वहां हवन करने से मानसिक कष्ट होता है। जहां अग्नि का ज्वलन बहुत थोड़ा हो वहां नेत्र हैं वहां हवन करने से यजमान का नाश होता है। भस्म के स्थान में अग्नि के केश हैं वहां हवन करने से स्थान का नाश और धन का नाश होता है। अङ्गार में अग्नि की नासिका जाननी चाहिये वहां हवन करने से मानस दुःख होता है। जहां अग्नि की ज्वाला हो वहां जिह्वाएं कही गई हैं। गज और अश्व की तरह शब्द करनेवाला विह्न शुभ फल प्रदान करता है। जैसे हाथी चिंघाड़ता है और घोड़ा हिनहिनाता है वैसा दहकते हुए शब्द करनेवाला अग्नि शुभ फलदायक है।)

यज्ञादि में विद्ववास का विचार आवश्यक है

अग्ने: स्थापनवेलायां पूर्णाहुत्यामथापि वा। आहुतिर्विह्निवासश्च विलोक्यौ शान्तिकर्मणि।।

(अग्नि की स्थापना के समय अथवा पूर्णाहुति के अवसर पर तथा शान्ति कर्म में होमाहुति और अग्निवास का विचार अवश्य करना चाहिये।)

कतिपय कार्यों में विद्ववास का विचार अनावश्यक है

दुर्गाहोमविधौ विवाहसमये सीमन्तपुत्रोत्सवे गर्भाधानविधौ च वास्तुसमये विष्णोः प्रतिष्ठादिषु। मौञ्जीबन्धनवैश्वदेवकरणे संस्कारनैमित्तिके होमे नित्यभवे न दोषकथनं चक्रस्य वहनेरिप।। (संस्कार भास्कर)

> विवाहयात्राव्रतगोचरेषु, चूडोपनीतग्रहणादिकेषु। दुर्गाविधानेषु सुतप्रसूतौ नैवाग्निचक्रं परिचिन्तनीयम्।। अभिचारिकहोमेषु दुर्गाहोमे च गोचरे। क्षुद्रहोमे तथोत्पाते नाग्निचक्र विचिन्तयेत्।। गर्भाधानदिसंस्काराद् यावञ्च पितृमेधकम्। अग्निचक्रं च नालोक्यं प्राप्तकाले यथोचितम्। नवरात्रादिहोमेषु तथा शान्त्यादिहोमसु। वास्तुहोमे तथान्येषु प्राप्तकाले चरेत्सुधी:।।

मखे यागहोमे महारुद्रकुण्डे शते चिण्डका-लक्षकोटिश्च होमे।
गृहे शान्ति के पौष्टिके स्थिण्डिले न विलोक्यं बुधैरिग्निचक्रं मुनीन्द्रैः।।
लक्षकोटिहवने मखेऽखिले चातिरुद्रकरणे महाविधो।
वापी-कूप-भवने सुरालये देवखात-सुरपूजनकुण्डके।।
सम्प्रदिष्टकरणादिकचण्ड्यां मन्त्रजाप्यविधिशान्तिकपौष्टे।

स्रुव

खादिरस्य स्नुवः कार्यो हस्तमात्रप्रमाणतः। अंगुष्ठपर्वखातं स्यात् सर्वकामार्थसिद्धये।।

हवन में स्नुव के धारण का प्रकार मूले हानिकरं प्रोक्तं मध्ये शोककरं तथा। अग्रे व्याधिकरं प्रोक्तं स्नुवं धारयते कथम्।।

किनिष्ठाङ्गुलिमानेन चतुर्विंशतिकाङ्गुलम्। चतुरङ्गुलं परित्यज्य अग्रे चैव द्विरष्टकम्।। चतुरङ्गुल च तन्मध्ये धारयेच्छङ्ख्यमुद्रया। हीयते यजमानो वै स्नुवमूलस्य दर्शनम्।। तस्मात् सङ्गोपयेन्मूलं होमकाले स्नुवस्य तु।।

(मत्स्यपुराण)

अग्रे धृतोऽर्थनाशः स्यान्मध्ये चैव मृतप्रजा। मूले च म्रियते होता स्रुवस्तु कुत्र धार्यते।। अग्रमध्याञ्च यन्मध्यं मूलमध्याञ्च मध्यतः। स्रुवं धारयते विद्वान् ज्ञातव्यं चसदा बुधैः।। तर्जनीं च बहिः कृत्वा कनिष्ठां च बहिस्ततः। मध्यमाऽनामिकाऽङगुष्ठैः स्रुवं धारयते द्विजः।।

(संस्कारभास्कर)

(होमादि कर्म में यदि स्रुवा अगले भाग में पकड़ा जाये तो धन का नाश होता है, यदि बीच में पकड़ा जाये तो मृत संतान होती है और यदि पिछले भाग में पकड़ा जाये तो होता की मृत्यु होती है। ऐसी अवस्था में स्रुव का धारण कहां पर किया जाये? अगले भाग का मध्य तथा मूल (पिछले) भाग का जो मध्य है उससे स्रुव को विद्वान पुरुष धारण करते हैं। इसकी विद्वानों को सदा जानकारी रखनी चाहिये। तर्जनी अंगुली को तथा किनष्ठिका अंगुली को बाहर कर मध्यमा, अनामिका और अंगुष्ठ से ब्राह्मण स्रुव को धारण करते हैं।)

स्रुव में रहनेवाले देवताओं के नाम अग्निं सोमं च सूर्यं च रुद्रं चैव प्रजापितम्। षष्ठं च यमदैवत्यं देवताश्च स्रुवे सदा।।

स्रुव के भेद और उनका विभिन्न फल सौवर्णे राजतस्ताम्नः खादिरो वा स्रुवो भवेत्। आद्यमैश्वर्यसिद्धर्थं राजतं कीर्तिवर्धनम्। ताम्रं शान्तिकरं प्रोक्तं खादिरं वसुवर्धनम्।

प्रणीता

प्रणीता वारणा ग्राह्या द्वादशांगुलसम्मिता। खातेन हस्ततलवदाकृत्या पद्मपत्रवत्।। (वारण (वरने की लकड़ी) काष्ठ का बारह अंगुल का 'प्रणीता-पात्र' होता है। वह हथेली के सदृश खुदा हुआ कमल के पत्र की तरह होता है।)

प्रोक्षणी

वारणं पाणिमात्रं च द्वादशांगुलविस्तृतम्। पद्मपत्राकृतिर्वापि प्रोक्षणीपात्रमीरितम्।।

(कर्मप्रदीप)

(वारण काष्ठ का हथेली के सदृश बारह अंगुल चौड़ा और कमल के पत्र के आकार का 'प्रोक्षणी पात्र' कहा गया है।)

स्प्रय - तलवार के आकार का २४ अंगुल।

स्तुची - हथेली के सदृश मुख हो, हंस के मुख की तरह नाली हो, ३६ अंगुल की। अरिण - शमी वृक्ष के ऊपर पिप्पल हो उसकी डाली (शाखा) से बनाई जाती है, २४ अंगुल लम्बा, ६ अंगुल चौड़ी, ४ अंगुल ऊँची होती है।

यज्ञ में दान करने का महत्व

राजानो धर्मशीलाश्च महायज्ञैर्यजन्ति ते। सर्वदानानि दीयन्ते यज्ञेषु नृपनन्दन।। आदावत्रं तु यज्ञेषु वस्त्रं ताम्बूलमेव च। काञ्चनं भूमिदानं च गोदानं प्रददन्ति च।। सुयज्ञैर्वेष्णवं लोकं ते प्रयान्ति नरोत्तमा:। (पद्मपुराण, भूमिखण्ड ९६/२४-२६)

रात्रि में दान करने का निषेध

रात्रौ दानं न कर्तव्यं कदाचिदिप केनिचत्। हरन्ति राक्षसा यस्मात्तरपाद्दादुर्भयावहम्।।

अन्यत्र लिखा है -

रात्रौ स्नानं न कर्तव्यं दानं चैव विशेषत:। नैमित्तिकं तु कुर्वीत स्नानं दानं च रात्रिषु।।

कुण्ड का स्वरूप

प्राच्यां शिर: समाख्यातं बाहू कोणे व्यवस्थितौ। ईशानाग्नेयकोणे तु जङ्घे वायव्यनैर्ऋते।। उदरं कुण्डमित्युक्तं योनिर्योनिर्विधीयते। (अग्निपुराण ३४/३६-३७)

कुण्डस्वरूपं जानीयात् परमं प्रकृतेर्वपुः। प्राच्यां शिरः समाख्यातं बाहू दक्षिणसौम्ययोः।। उदरं कुण्डमित्युक्तं यौनिः पादौ तु पश्चिमे। (शारदातिलक ३/९०-९१)

कुण्डादि के विधिहीन निर्माण से हानि

खाताधिके भवेद् रोगो हीने धेनुधनक्षय:। वक्रकुण्डे तु सन्तापो मरणं छिन्नमेखले।। मेखलारहिते शोको ह्यधिके वित्तसंक्षय:। भार्याविनाशनं प्रोक्तं कुण्डं योन्या विना कृतम्।। अपत्यध्वंसनं प्रोक्तं कुण्डं यत्कण्ठवर्जितम्।

(परशुराम:)

मानहीने महाव्याधिरधिके शत्रुवर्धनम्। योनिहीने त्वपस्मारो वाग्दण्डः कण्ठवर्जिते।। (सिद्धान्तशेखर)

(जो यज्ञकुण्ड शृंगाररिहत हो (भलीभांति सजाया न गया हो), जिसकी मेखला जर्जरित हो (छिन्न-भिन्न हो) वह कुण्ड यजमान के लिए विनाशकारी होता है। यदि कुण्ड में दरार पड़ गई हो तो मरण होता है। यदि कुण्ड परिमाण-सूत्र से बड़ा हो तो मित्रों से द्वेष होता है और यदि वह परिमाण-सूत्र से छोटा हो तो दारिद्रय होता है।)

शान्तिक पौष्टिक हवन में अनेक कुण्ड हो सकते हैं

महारुद्र, विष्णुयज्ञादि में तथा शान्तिक-पौष्टिक हवन में अनेक कुण्डों का विधान कहा गया है।

'पवमान पद्धति' में पांच कुण्डों के निर्माण के लिए लिखा है – शान्तिके पौष्टिके होमे कुर्यात् कुण्डानि पञ्च च। एकमेव भवेत् कुण्डमित्याहुरथ केचन।।

(शान्तिक तथा पौष्टिक होम में पांच कुण्ड बनाने का विधान है, परन्तु किसी आचार्य ने एक कुण्ड बनाने के लिए भी कहा है।)

यज्ञ-मण्डप के मध्य में कुण्ड न होने से हानि

'मध्ये विहीनं यत्कुण्डं प्रजाक्षयकरं विदु:।' (यज्ञ-मण्डप के मध्य में कुण्ड न होने से यजमान के सन्तान की हानि होती है।)

कुण्ड-मण्डप के सम्बन्ध में कुछ आवश्यक बातें कुण्डों के भेद

(चतुरस्र कुण्ड, योनिकुण्ड, अर्धचन्द्र कुण्ड, त्रिकोण कुण्ड, वृत्त कुण्ड (वर्तुल कुण्ड), षडस्र कुण्ड, पद्म कुण्ड और अष्टास्र कुण्ड – ये आठ प्रकार के कुण्ड होते हैं।)

एक कुण्ड

(एक कुण्ड के यज्ञ में मण्डप के मध्य में ही कुण्ड होता है। एक कुण्ड के यज्ञ में चतुरस्र अथवा पद्म कुण्ड का निर्माण होता है, किन्तु कामनाभेद से अन्य कुण्ड का भी निर्माण किया जा सकता है।

पाँच कुण्ड

(पांच कुण्ड के यज्ञ में पूर्व में चतुरस्र, दक्षिण में वृत्तार्ध (अर्धचन्द्र), पश्चिम में वृत्त (वर्त्तुल), उत्तर में पद्म और मध्य में चतुरस्र कुण्ड (आचार्यकुण्ड) होता है।

नव कुण्ड

(नव कुण्ड के यज्ञ में पूर्व में चतुरस्न, अग्निकोण में योनिकुण्ड, दक्षिण में अर्धचन्द्र (वृत्तार्ध), नैर्ऋत्यकोण में त्रिकोण, पश्चिम में वृत्त (वर्त्तुल), वायव्यकोण में षडस्न, उत्तर में पद्मकुण्ड, ईशान कोण में अष्टास्त्र (अष्टकोण) और मध्य में चतुरस्न कुण्ड (आचार्यकुण्ड) होता है।

चार कुण्ड

(चार कुण्ड के यज्ञ में बीच में प्रधानवेदी होती है। पूर्व में चतुरस्र, दक्षिण में अर्धचन्द्र, पश्चिम में वृत्त और उत्तर में पद्मकुण्ड होता है।)

वन कुण्डों की योनि का विचार

(नव कुण्ड के यज्ञ में पूर्व में चतुरस्र कुण्ड की योनि दक्षिण दिशा में उत्तराग्र होती है। अग्निकोण में योनिकुण्ड होता है। इसमें योनि नहीं होती। दिक्षण में अर्धचन्द्र कुण्ड की योनि दिक्षण दिशा में उत्तराग्र होती है। नैर्ऋत्य कोण में त्रिकोण कुण्ड की योनि पश्चिम दिशा में पूर्वाग्र होती है। पश्चिम में वृत्त कुण्ड की योनि पश्चिम दिशा में पूर्वाग्र होती है। वायव्य कोण में षडस्र कुण्ड की योनि पश्चिम दिशा में पूर्वाग्र होती है। उत्तर में पद्मकुण्ड की योनि पश्चिम दिशा में पूर्वाग्र होती है। ईशानकोण में अष्टास्र कुण्ड (अष्टकोण) की योनि पश्चिम दिशा में पूर्वाग्र होती है। मध्य में चतुरस्र कुण्ड की योनि पश्चिम दिशा में पूर्वाग्र होती है।

पाँच कुण्डों की योनि का विचार

(पांच कुण्ड के यज्ञ में मध्य के कुण्ड की (चतुरस्र कुण्ड की) योनि पश्चिम दिशा में पूर्वाग्र होती है।

पूर्व में चतुरस्र कुण्ड की योनि दक्षिण दिशा में उत्तराग्र होती है। दक्षिण में अर्धचन्द्र कुण्ड की योनि दक्षिण दिशा में उत्तराग्र होती है। पश्चिम में वृत्त कुण्ड की योनि पश्चिम दिशा में पूर्वाग्र होती है। उत्तर में पद्मकुण्ड की योनि पश्चिम दिशा में पूर्वाग्र होती है।)

चार कुण्डों की योनि का विचार

(पूर्व में चतुरस्र कुण्ड की योनि दक्षिण दिशा में उत्तराग्र होती है। दक्षिण में अर्धचन्द्र कुण्ड की योनि दक्षिण दिशा में उत्तराग्र होती है। पश्चिम में वृत्त कुण्ड की योनि पश्चिम दिशा में पूर्वाग्र होती है। उत्तर में पद्मकुण्ड की योनि पश्चिम दिशा में पूर्वाग्र होती है।

कुण्ड में मेखला और रंग का विचार

(प्रत्येक कुण्ड में तीन-तीन मेखला होती हैं। ऊपर की मेखला का सफेद रंग, मध्य की मेखला का लाल रंग और नीचे की मेखला का काला रंग होता है।)

कुण्डों का अलग-अलग फल

(चतुरस्र कुण्ड समस्त प्रकार की सिद्धि को देनेवाला है। योनिकुण्ड पुत्र को देनेवाला है। अर्धचन्द्र कुण्ड (वृत्तार्ध कुण्ड) शुभ फल को देनेवाला है। त्रिकोण कुण्ड शत्रु का नाश करने वाला है। वृत्तकुण्ड (वर्तुल कुण्ड) शान्ति-स्थापन करनेवाला है। षडस्र कुण्ड मृत्युच्छेदन करनेवाला (मृत्यु को दूर करनेवाला) है। पद्मकुण्ड वृष्टि को देनेवाला है। अष्टास्र कुण्ड रोग को हटानेवाला है।)

वर्णभेद से कुण्ड निर्माण की व्यवस्था

(एक कुण्ड के यज्ञ में वर्णभेद से ही कुण्ड बनाना चाहिये। जैसे- ब्राह्मण के लिए चतुरस्र, क्षत्रिय के लिए वृत्त (वर्त्तुल), वैश्य के लिए अर्धचन्द्र (वृत्तार्ध) और शूद्र के लिए त्रिकोण कुण्ड कहा गया है। अथवा वर्णचतुष्टय के लिए चतुरस्र या वृत्त कुण्ड कहा गया है।

स्त्री यदि यज्ञ करे, तो उसके लिए योनिकुण्ड अथवा चतुरस्र कुण्ड कहा गया है।)

विविध यज्ञों के कुण्डादि का विचार

- विष्णुयाग में १,५ और ९ कुण्डों के निर्माण का विधान कुण्ड-मण्डप के ग्रन्थों में मिलता है।
- २. प्रतिष्ठा और तुलादानादि के लिए ७ कुण्ड का विधान 'नारदपञ्चरात्र' में और चार कुण्ड का विधान 'दानमयूख' में मिलता है।
- ३. एक कुण्ड के विष्णुयाग में, एक कुण्ड के महाविष्णुयाग में और एक कुण्ड के अतिविष्णुयाग में ६ हाथ (५८ अङ्गुल और ६ यव) का कुण्ड होता है।
- ४. विष्णुयाग में ५ कुण्ड एक-एक हाथ (चौबीस अङ्गुल) लंबे और चौड़े होते हैं।
- ५. महाविष्णुयाग में ५ कुण्ड दो-दो हाथ (चौंतीस अङ्ग्ल) लंबे और चौड़े होते हैं।
- ६. अतिविष्णुयाग में ५ कुण्ड चार-चार हाथ (अड़तालीस अङ्गुल) के लंबे और चौडे होते हैं।
- रुद्रयाग में भी विष्णुयाग की तरह १, ५ और ९ कुण्ड होते हैं। कुछ लोग रुद्रयाग में रुद्रपदेन ११ कुण्ड बनाते हैं।

- नवग्रहयाग में सूर्य की प्रधानता होने के कारण मध्य का कुण्ड ही प्रधानकुण्ड ۷. (आचार्यकुण्ड) होना चाहिये, यह 'शान्तिमयुख' का मत है।
- कोटिहोम में १००, १०, २ अथवा १ कुण्ड होता है।
- सौ कुण्डों के यज्ञ में सभी कुण्ड वृत्त, पद्म अथवा चतुरस्र होते हैं। दस कुण्डों के यज्ञ में सभी कुण्ड वृत्त, चतुरस्र अथवा पद्म होते हैं। दो कुण्डों के यज्ञ में दोनों कुण्ड वृत्त, चतुरस्र अथवा पद्म होते हैं। एक कुण्ड के यज्ञ में वृत्त, चतुरस्र अथवा पद्म कुण्ड होता है।
- कोटिहोम में प्रधानकुण्ड नैर्ऋत्यकोण में होना चाहिये, यह 'शान्तिमयूख' आदि का मत है।
- १२. कोटिहोम में प्रधानवेदी पूर्व दिशा में होती है।
- १३. कोटिहोम में अग्निस्थापन प्रधानकुण्ड में ही करना चाहिये और प्रधानकुण्ड से ही अग्नि ले जाकर अन्य कुण्डों में अग्निस्थापन करना चाहिये।
- कोटिहोम में १०० कुण्ड हों, तो प्रत्येक कुण्ड एक-एक हाथ लंबा और चौड़ा १४. होता है। कोटिहोम में दस कुण्ड हों, तो प्रत्येक कुण्ड छ: हाथ लंबे और चौड़े होते हैं। कोटिहोम में एक कुण्ड हो, तो आठ हाथ का अथवा दस हाथ का अथवा सोलह हाथ का होता है।

आहुतियों के हिसाब से कुण्ड का प्रमाण

५० से कम आहुति में कुण्ड नहीं होता, किन्तु स्थिण्डिल होता है। ५० से ९९ तक आहुति में २१ अङ्गल का (बंधी हुई मुट्ठी भर हाथ का) कुण्ड होता है।

१०० से ९९९ तक आहुति में २२१/२ अङ्गल (अरितनमात्र) का कुण्ड होता है।

(एक हजार) आहुति में १ हाथ का कुण्ड होता है। १०००

(दस हजार) आहुति में २ हाथ का कुण्ड होता है। 80000

(एक लाख) आहुति में ४ हाथ का कुण्ड होता है। (दस लाख) आहुति में ६ हाथ का कुण्ड होता है। १०००००

१००००००

१०००००० (एक करोड़) आहुति में ८ हाथ का कुण्ड होता है।

शारदातिलक का कहना है कि कोटिहोम में १० हाथ का कुण्ड होना चाहिए -'दशहस्तमितं कुण्डं कोटिहोमेऽपिद्दश्यते।'

किसी आचार्य का मत है कि कोटिहोम में १६ हाथ का कुण्ड होना चाहिये।

यज के कलशों पर नारिकेल के स्थापन का क्रम

अधोमुखं शत्रुविवर्धनाय ऊर्ध्वस्य वक्त्रं बहुरोगवृद्ध्यै। प्राचीमुखं वित्तविनाशनाय तस्माच्छुभं सम्मुखनारिकेलम्।। (यज्ञ मीमांसा)

(यदि नारिकेल (नारियल) अधोमुख रखा जाये, तो उससे शत्रुओं की वृद्धि होती है, यदि ऊपर को मुख करके रखा जाये, तो उससे बहुत से रोगों की वृद्धि होती है तथा यदि पूर्व की ओर मुख करके रखा जाये, तो उससे धन नाश होता है। इसलिए नारियल को सम्मुख रखना शुभ है।)

ब्रह्मा का आसन दक्षिण दिशा में क्यों होता है?

प्रश्न -

उत्तरे सर्वपात्राणि उत्तरे सर्वदेवता:। उत्तरेऽपां प्रणयनं किमर्थं ब्रह्म दक्षिणे।।

(उत्तर दिशा में समस्त यज्ञपात्र रखे जाते हैं, उत्तर दिशा में समस्त देवता रहते हैं और उत्तर दिशा में जल का प्रणयन होता है, तो ब्रह्मा का आसन दक्षिण दिशा में किसलिये रखा जाता है?) उत्तर –

यमो वैवस्वतो राजा वसते दक्षिणा दिशि। तस्य संरक्षणर्थाय ब्रह्मा तिष्ठति दक्षिणे।। दक्षिणे दानवाः प्रोक्ताः पिशाचोरगराक्षसाः। तेभ्यः संरक्षणार्थाय ब्रह्मा स्थाप्यस्तु दक्षिणे।।

(कारिका)

(दक्षिण दिशा में समस्त दानव, पिशाच, नाग और राक्षसादि रहते हैं, अत: उनसे सुरक्षित रखने के लिए ही ब्रह्मा को दक्षिण दिशा में स्थापित करना चाहिये।)

ब्रह्मा, आचार्य और प्रणीता के लिए तीन कुशा का आसन उचित है

ब्रह्माऽऽचार्यप्रणीतानामासनं च त्रिभिः कुशैः। न द्वाभ्यां नैकदर्भेण ऋषयो बहवो विदुः।।

यज्ञादि में कुश धारण की आवश्यकता स्नाने होमे जपे दाने स्वाध्याये पितृ कर्मणि। करौ सदभौं कुर्वीत तथा सन्ध्याभिवादने।।

बिना दर्भेण यत्स्नानं यच्चदानं विनोदकम्। असंख्याता च य जप्यं तत्सर्वं निष्फलं भवेत्।। 'कुश स्थाने च दूर्वा: स्युर्मङ्गस्याभिवृद्धये।'

कुश के भेद

कुशाः काशास्तथा दूर्वा यवपत्राणि व्रीहयः। बल्वजाः पुण्डरीकाश्च कुशाः सप्त प्रकीर्तिताः।।

सुवर्ण के पवित्री, श्रेष्ठता

अन्यानि च पवित्राणि कुशदूर्वात्मकानि च। हेमात्मक पवित्रस्य कलां नाहन्ति षोडशीम्।

पवित्र में दर्भ की संख्या का विचार

चतुर्भिदर्भ पिञ्जूलै ब्राह्मणस्य पिवत्रकम्। एकैक न्यूनमुदिष्टं वर्णे-वर्णे यथाक्रमम्।। सर्वेषां वा भवेद द्वाभ्यां पिवत्रं ग्रंथितं नवम्। चतुर्भिः शान्ति के कार्य पौष्टिके पञ्चभिस्तथा।। पैतृके तु त्रिदर्भाश्च द्वौ दभौं नित्यकर्मणि।

(मार्कण्डेय)

पवित्र धारण का स्थान

द्वयोस्तु पर्वणोर्मध्ये पवित्रं धारयेत् बुध:। अनामिकाग्रपर्वे तु निसर्गेण पवित्रकम्।। नोच्छिष्टं तत्पवित्रं स्याद् भुक्तोच्छिष्टं विवर्जयेत्। (रत्नावली, आचारमीमांसा)

हाथ से पवित्र और जपमाला के गिरने पर कर्तव्य पवित्रे पतिते ज्ञाते तथा जपमणाविप।

जपादि करते समय हाथ से माला के गिरने अथवा टूट जाने पर प्रायश्चित

ततोऽपरां नवां मालां तज्जातीयां वरानने।
गृहणीयातु कृते चैवं न विघ्नैरिभभूयते।।
'प्रमादात्पितता हस्ताच्छतमष्टोत्तरं जपेत्।'
(वैशम्पायनसंहिता)

१०८ बार गायत्री जाप करे तथा ब्राह्मण को भोजन कराना चाहिए।

जप-गणनार्थ विहित वस्तु

लाक्षा कुसीदं सिन्दूरं गोमयं च करीषकम्। एभिर्त्रिर्माय गुटिकां जपसख्यां तु कारयेत्।।

(यामले)

जप-गणनार्थ निषिद्ध वस्तु

नाक्षतैर्हस्तपर्वैर्वा न धान्यैर्न च पुष्पकै:। न चन्दनैर्मृत्तिकया जपसंख्यां तु कारयेत्।।

(यामले)

यज्ञादि में आशौच की प्राप्ति पर विचार

(यज्ञ में मधुपर्क के बाद, व्रत और सत्र (बहुत दिनों में होनेवाला जप-यज्ञादि) में सङ्कल्प के बाद, विवाह में नान्दीश्राद्ध के बाद, श्राद्ध में पाकारम्भ होने पर आशौच (जननाशौच और मरणाशौच) की प्रवृत्ति तत्तत्कर्म के लिए नहीं होती, किंतु व्यवहार में अस्पृश्यत्व और कर्मान्तर में अनिधकार होता है।)

व्रत-यज्ञ-विवाहेषु श्राद्धे होमेऽर्चने जपे। आरब्धे सूतकं न स्यादनारब्धे तु सूतकम्। प्रारम्भो वरणं यज्ञे सङ्कल्पो व्रतसत्रयोः। नान्दीश्राद्धं विवाहादौ श्राद्धे पाकपरिक्रिया।।

(लघुविष्णुः)

(व्रत, यज्ञ, विवाह, श्राद्ध, होम, पूजन और जप का आरम्भ होने पर सूतक नहीं लगता, यिद इनका आरम्भ न हुआ हो तो सूतक लगता है। वरण होने पर यज्ञ का आरम्भ है, व्रत और सत्र (बहुत दिनों में पूर्ण होनेवाले जप-यज्ञादि) संकल्प होने पर आरम्भ माना

जाता है, विवाह आदि में नान्दीश्राद्ध (आभ्युदियक श्राद्ध) आरम्भ माना जाता है और श्राद्ध में पाकपिक्रया आरम्भ है।)

> गृहीतमधुपर्कस्य यजमानाश्च ऋत्विजः। पश्चादशौचे पतिते न भवेदिति निश्चयः।।

> > (ब्रह्मपुराण)

ऋत्विजां दीक्षितानां च यज्ञियं कर्म कुर्वताम्। सित्रव्रतिब्रह्मचारिदातृब्रह्मविदां तथा।। दाने विवाहे यज्ञे च संग्रामे देशविप्लवे। आपद्यपि हि कष्टायां सद्यःशौचं विधीयते।।

(याज्ञवल्क्यस्मृति, प्रायः २८, २९)

(ऋत्विज, यज्ञ में दीक्षित, यज्ञिय कर्म करनेवाले, दीर्घ सत्र का अनुष्ठान करनेवाले, कृच्छ्र, चान्द्रायण प्रभृति व्रत में तत्पर रहनेवाले, ब्रह्मचारी, दानी और ब्रह्मज्ञानी – ये तत्काल शुद्ध हो जाते हैं। दान में, विवाह में, यज्ञ में, संग्राम में, देश-विप्लव में और बहुत बड़ी आपत्ति आने पर सद्य: शौच से शुद्धि हो जाती है।

ऋत्विजों को, यजमान को, यजमान की स्त्री को और आचार्य को कर्म के मध्य में जनन अथवा मरण का आशौच नहीं लगता, किन्तु कर्म की पूर्ति होने पर ही उन्हें आशौच लगता है।)

(यज्ञ में और विवाह के अवसर में तत्काल शुद्धि होती है। विवाहोत्सव तथा यज्ञ आदि के मध्य में यदि जननाशौच या मरणाशौच का प्रसंग आ जाये, तो पूर्व संकल्पित यज्ञादि में कोई विघ्न नहीं उपस्थित होता, ऐसा अत्रि मुनिजी का कथन है।)

यज्ञे विवाहकाले च देवयागे तथैव च। सद्यःशौचं समाख्यातं दुर्भिक्षे वाप्युपद्रवे।।

(उशन:संहिता ६/५८)

यज्ञ प्रवर्तमाने तु जायेताथ म्रियेत वा। पूर्वसङ्कल्पिते कार्ये न दोषस्तत्र विद्यते।। यज्ञकाले विवाहे च देवयागे तथैव च। हूयमाने तथा चाग्नौ नाशौचं नापि सूतकम्।।

(दक्षस्मृति ६/१९, २०)

(यज्ञ हो रहा हो ऐसे प्रसंग में यदि जननाशौच अथवा मरणाशौच हो जाये, तो पूर्व संकल्पित यज्ञादि कर्म में कोई दोष नहीं होता। जब यज्ञकृत्य हो रहा हो, विवाह हो रहा

हो और देवयाग हो रहा हो तथा अग्नि में आहुतियां गिर रही हों, ऐसे अवसर पर न तो जननाशौच होता है और न मरणाशौच ही होता।)

विवाहोत्सवयज्ञेषु अन्तरा मृतसूतके।
सद्यःशुद्धिं विजानीयात् पूर्वसङ्कल्पितं चरेत्।।
देवद्रोण्यां विवाहे च यज्ञेषु प्रततेषु च।
कल्पितं सिद्धमन्नाद्यं नाशौचं मृतसूतके।।
(आपस्तम्बस्मृति १०/१५, १६)

(विवाह, उत्सव और यज्ञ में यदि मरण निमित्त आशौच और जनन (जन्म) निमित्त सूतक हो जाये, तो तत्काल शुद्धि हो जाती है, अतः पूर्व सङ्कल्पित कर्म करना चाहिये। देवद्रोण (तीर्थ अथवा प्याऊ), विवाह और बड़े यज्ञों में निर्मित अन्नादि में मरण एवं जननिमित्त आशौच नहीं लगता है।)

नित्यमन्नप्रदस्यापि कृच्छ्रचान्द्रायणादिषु। निर्वृत्ते कृच्छ्रहोमादौ ब्राह्मणादिषु भोजने।। गृहीतनियमस्यापि न स्यादन्यस्य कस्यचित्। निमन्त्रितेषु विप्रेषु प्रारब्धे श्राद्धकर्मणि।। निमन्त्रितस्य विप्रस्य स्वाध्यायादि-रतस्य च। देहे पितृषु तिष्ठत्सु नाशौचं विद्यते क्वचित्।। (याज्ञवल्क्यस्मृतौ (३/२८, २९) मिताक्षरायाम्)

(नित्य अन्नदान में, कृच्छू, चान्द्रायण आदि व्रत करने में, कृच्छूहोमादि कर्म के निष्पन्न होने पर ब्राह्मणादिके भोजन कराने में एवं किसी भी नियम के ग्रहण करने में तथा अन्य किसी नियम-विशेष के ग्रहण करने में, ब्राह्मणों को निमन्त्रित करने में, श्राद्धकर्म के प्रारम्भ करने में, ब्राह्मणों के वेदादि के स्वाध्याय के निरत होने में और पितृकार्य में निरत रहने में आशौच नहीं लगता है।)

> यज्ञादि में स्पर्शास्पर्श का दोष नहीं होता देवयात्राविवाहेषु यज्ञप्रकरणेषु च। उत्सवेषु च सर्वेषु स्पृष्टास्पृष्टं न विद्यते।। (अत्रिस्मृति २४६) तीर्थे विवाहे यात्रायां संग्रामे देशविप्लवे। नगरे ग्रामदाहे च स्पृष्टास्पृष्टं न विद्यते।।

आशाौचादि में देवता का स्पर्श होने पर विचार

सङ्कल्पितव्रतापूर्तौ देवनिर्माल्यङ्घने। अशुचौ देवतास्पर्शे गायत्रीजपमाचरेत्।। (महानिर्वाणतन्त्र)

यज्ञादि में प्राप्त हुई सुवर्ण की प्रतिमा के विक्रयादि का विचार

सुबाहु का प्रश्न -

देवानां प्रतिमां विप्र गृहीत्वा ब्राह्मणः स्वयम्। आत्मोपयोगं कुरुते क्रीत्वा वा प्रविभज्य च।। तिलधेन्वादयश्चैव कथं भव्या विजानता?

(ब्रह्मवैवर्तपुराण)

(हे ब्राह्मण! दान के रूप में प्राप्त होनेवाली सुवर्ण की देवप्रतिमा, तिल और सुवर्ण की गौ आदि का यदि कोई ब्राह्मण स्वयं क्रय-विक्रय करे अथवा विभाजन कर उनको अपने उपयोग में लावे तो क्या यह कार्य श्रेष्ठ कहा जायेगा?)

विश्वामित्र का उत्तर -

दानकाले तु देवत्वं प्रतिमानां प्रकीर्तितम्। धेनूनामपि धेनुत्वं श्रुत्युक्तं दानयोगत:।। विप्रस्य व्ययकाले तु द्रव्यं तदिति निश्चय:।

(ब्रह्मवैवर्तपुराण)

(दान के समय में देवताओं की प्रतिमाओं में 'देवत्व' और सुवर्ण की गौओं की मूितयों में 'धेनुत्व' रहता है, बाद में नहीं रहता, ऐसा वेद में कहा है। किन्तु दान में प्राप्त हुई देवता की प्रतिमा एवं सुवर्ण की गौ को जब ब्राह्मण विक्रय करता है, तो उस समय देव-प्रतिमा तथा गौ की 'द्रव्य' के रूप में गणना होती है।)

पूर्णाहुति की विधि

घृतेनापूर्य सुग्गर्त्तमूर्ध्ववक्त्रसुचि सुवम्। निधायाधोमुखं न्यस्येत् सुवाग्रे कुसुमाक्षतम्।। पश्चाद् वामपुरोदक्षकराभ्यां शङ्खमुद्रया। गृहीत्वा सुक्सुवौ मन्त्री सु वाग्रन्यस्तलोचनः।। ऋजुकायः प्रसन्नात्मा समपादः समुत्थितः। स्थिरधीर्जुहुयादग्नौ यवप्रमितधारया।। पूर्णाहुतिरियं प्रोक्ता सर्वकामप्रपूरणो।

(संग्रहे)

अन्यद्दार्ढ्यं समानीयाधिश्रिते सुक्सुवावुभौ। तौ प्रतप्य च संभागैं: कुशै: सम्मृज्य सिञ्चयेत्।। पुन: प्रतप्यमाज्यं च निदध्यात्तत्र स्रक्सुवौ। आज्यमुद्वास्योत्प्यावेक्ष्यापद्रव्यनिष्कृति:।। चतुर्गृहीतमाज्यं तद् गृहीत्वा सुचिमध्यत:। वस्त्रताम्बूलपूगादिफलपुष्पसमन्विताम्।। अधोमुखसुच्छन्नां गन्धमाल्यैरलङ्कृताम्। पूर्वं दक्षिणहस्तेन पश्चाद् वामेन पाणिना।। गृहीत्वाथ स्रुवं कर्ता शङ्खसन्निभमुद्रया।

(प्रयोगदर्पण)

(दूसरे दृढ़ अधिश्रित (तपाये हुए) स्नुक और स्नुवा को लेकर उन्हें तपाकर समार्जन कुशों से उनका समार्जन कर उन पर सिञ्चन करे। फिर उन्हें तपाकर उनमें घृत का उद्घासन (एक प्रकार का संस्कार) कर गलाकर देखकर अपद्रव्य (निकृष्ट पदार्थ) हटाकर चार बार ग्रहण किये गये उस घृत को स्नुक में लेकर वस्त्र, पान, सुपारी आदि फल और पुष्प से युक्त अधोमुख स्नुव से आच्छादित गन्ध, चन्दन, अक्षत, माला आदि से विभूषित स्नुक पहले दाहिने हाथ से फिर बाएं हाथ से शंखमुद्रा के द्वारा स्नुव को पकड़ कर यजमान पूर्णाहुति करे।)

आज्यं द्वादशकृत्वस्तु गृहीत्वा पूरयेत् स्नुचम्। तथा चाज्याहुति: कार्या सा पूर्णाहुतिरिष्यते।। स्नुवपूर्णाहुतिवां स्यादित्येके याज्ञिका विदु:। (विधानपारिजात)

पूर्णाहुति के पूजन का श्लोक

कल्याणदात्रीं कल्याणीं सर्वकामप्रपूरणीम्। हवनस्य फलप्राप्त्यै पूर्णाहुत्यै नमो नमः।।

(मैं समस्त कार्यों को पूर्ण करनेवाला और सभी का कल्याण करनेवाली कल्याणस्वरूपिणी पूर्णाहुति देवी को हवन के फल की प्राप्ति के लिए प्रणाम करता हूं।)

पूर्णाहुति खड़े होकर ही करना चाहिये

मूर्धानं दिवमन्त्रेण संस्रुवेण च धारयेत्। दद्यादुत्थाय पूर्णां तु नोपविश्य कदाचन।। (अग्निपुराण)

पूर्णाहुति का महत्व

'पूर्णाहुत्या सर्वान् कामानवाप्नोति।' (पूर्णाहुति से मनुष्य समस्त कामनाओं को प्राप्त करता है।)

पूर्णाहुति कहां-कहां नहीं करना चाहिये

विवाहे व्रतबन्धे च शालायां चौलकर्मणि। गर्भाधानादिसंस्कारे पूर्णाहुतिं न कारयेत्।।

(विवाह, यज्ञोपवीत, शाला, चूड़ाकर्म और गर्भाधानादि संस्कारों में पूर्णाहुति नहीं करना चाहिये।)

> विवाहादिक्रियायां च शालायां वास्तुपूजने। नित्यहोमे वृषोत्सर्गे न पूर्णाहुतिमाचरेत्।।

(मदनरत्ने)

गर्भाधानादिसंस्कारे विवाहे व्रतबन्धके। नित्यहोमे वृषोत्सर्गे न पूर्णाहुतिरिष्यते।।

मात्स्येऽपि

शतान्ते वा सहस्रान्ते सम्पूर्णाहुतिरिष्यते। उतिष्ठन्मनसा ध्यात्वा विह्नमाज्यफलेन च।। इति वचनाच्छत सहस्र संख्याऽऽहुति विशिष्टेषुकर्मसु अन्ते पूर्णाहुतिर्लभ्यते न तु न्यून संख्याहुति विशिष्ट होमेष्विति।।

पान, पक्वान्न, ऋतुफल, सुपारी आदि से की जानेवाली पूर्णाहुति में ब्राह्मण-भोजन की संख्या का विचार

(जिस अनुष्ठान में नागवल्ली (पान) से पूर्णाहुित की जाय, उसमें पांच ब्राह्मणों को, जिस अनुष्ठान में पक्वान्न से पूर्णाहुित की जाये, उसमें दश ब्राह्मणों को, जिस अनुष्ठान में ऋतुफल से पूर्णाहुित की जाये, उसमें बीस ब्राह्मणों को, जिस अनुष्ठान में सुपारी से पूर्णाहुित की जाये, उसमें इक्कीस ब्राह्मणों को, जिस अनुष्ठान में श्रीफल (नारियल) से पूर्णाहुित की जाये, उसमें इक्यावन ब्राह्मणों को अथवा सौ ब्रह्माणों को अथवा इससे भी अधिक ब्राह्माणों को और जिस अनुष्ठान में घृत की धारा से पूर्णाहुित की जाये, उसमें दो सौ ब्राह्मणों को अथवा पांच सौ ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिये। उपर्युक्य 'नागपल्ली इषुप्रोक्ता' ये दोनों श्लोक बृहस्पितसंहिता में नहीं है। अतः 'नागवल्ली इषुप्रोक्ता' के आधार पर ब्राह्मण–भोजन की संख्या का निर्णय करना सर्वथा शास्त्रविरुद्ध

यज्ञादि में बलि का विचार

और अप्रामाणिक है।

बलिस्तु त्रिविधो ज्ञेयस्तान्त्रिकः स्मार्त एव चे। वैदिकंश्चेति...।। वैदिकं तु बिलं दद्यादोदनं स्वित्रमाषवत्। सरोचनमितक्रूरदैवते वटकान्वितम्।। (बिल तीन प्रकार की होती है – तान्त्रिक, स्मार्त्त और वैदिक। पकाये हुए माष (उड़द) से युक्त ओदन (भात) वैदिक बिल कही जाती है। अतिक्रूर देवता के लिए सिन्दूर और वटक (बड़ा) से युक्त ओदन की बिल देनी चाहिये।)

अवभृथस्नान का महत्त्व

'महापातक्यिप यत: सद्यो मुच्येत किल्बिषात्।' (भागवत १०/७५/२१)

यज्ञादि में जलपात्रा की आवश्यकता

शान्तिकं पौष्टिकं वापि जलयात्रां विना बुध:। कुरुते यदि वा मोहात्कर्म तस्य च निष्फलम्। तडागादिप्रतिष्ठासु देवतायतनादिषु। लक्षहोमे कोटिहोमे-ऽयुतहोमे तथैव च।। व्रतोत्सर्गे महादाने यज्ञे वा वितते शुभे। जलयात्रां पुरा कृत्वा श्रेष्ठं कर्म समाचरेत्।।

ॐ तत्सत्, ॐ तत्सत्, ॐ तत्सत्

श्री गणपतिजी की आरती

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा। माता जाकी पार्वती पिता महादेवा।।

एकदन्त दयावन्त चार भुजाधारी। मस्तक सिन्दूर सोहे मूषक की सवारी।।

पान चढ़े, पुष्प चढ़े और चढ़े मेवा। लड्डुवन का भोग लगे संत करे सेवा।।

अंधन को आँख देत, कोढ़ियन को काया। बांझन को पुत्र देत, निर्धन को माया।।

दीनन की लाज राखो, शँभु सुत वारी। कामना को पूरी करो जाऊँ बलिहारी।।

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा। माता जाकी पार्वती पिता महादेवा।।

श्री भगवान विष्णुजी की आरती

ॐ जय जगदीश हरे, प्रभु जय जगदीश हरे। भक्त जनों के संकट क्षण में दूर करे।।ॐ।।

जो ध्यावें फल पावै, दुःख बिन से मनका। सुख-संपत्ति घर आवै, कष्ट मिटै तनका।।ॐ।।

मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी। तुम बिन और न दूजा, आस करूँ जिसकी।।ॐ।।

तुम पूरण परमात्मा, तुम अंतर्यामी। पार ब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी।।ॐ।।

तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्ता। मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता।।ॐ।।

तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति। किस विधि मिलूं दयामय, तुम को मैं कुमती।।ॐ।।

दीनबंधु दुख:हर्ता, तुम ठाकुर मेरे। अपने हाथ उठाओ, द्वार खड़ा तेरे।।ॐ।।

विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा। श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, संतन की सेवा।।ॐ।।

तन-मन-धन प्रभु सबकुछ है तेरा। तेरा तुझ को अर्पण क्या लागे मेरा।।ॐ।।

श्याम सुंदरजी की आरती जो कोई नर गावे। कहत शिवानंद स्वामी, मनवांछित फल पावे।।ॐ।।

श्री महालक्ष्मीजी की आरती

ॐ जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता। तुमको निशदिन ध्यावत, हर विष्णु धाता।।ॐ।।

उमा, रमा, ब्रह्माणी तुम ही जग माता। सूर्य, चंद्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता।।ॐ।।

दुर्गा रूप निरंजनि, सब सुख संपत्ति दाता। जो कोई तुमको ध्यावत, ऋद्धि-सिद्धि धन पाता।।ॐ।।

तुम पाताल निवासिनी, तुम ही शुभदाता। कर्म प्रभाव प्रकाशिनी, जग निधि की त्राता।।ॐ।।

जिस घर में तुम रहती सब सद्गुण आता। सब संभव हो जाता, मन नहीं घबराता।।ॐ।।

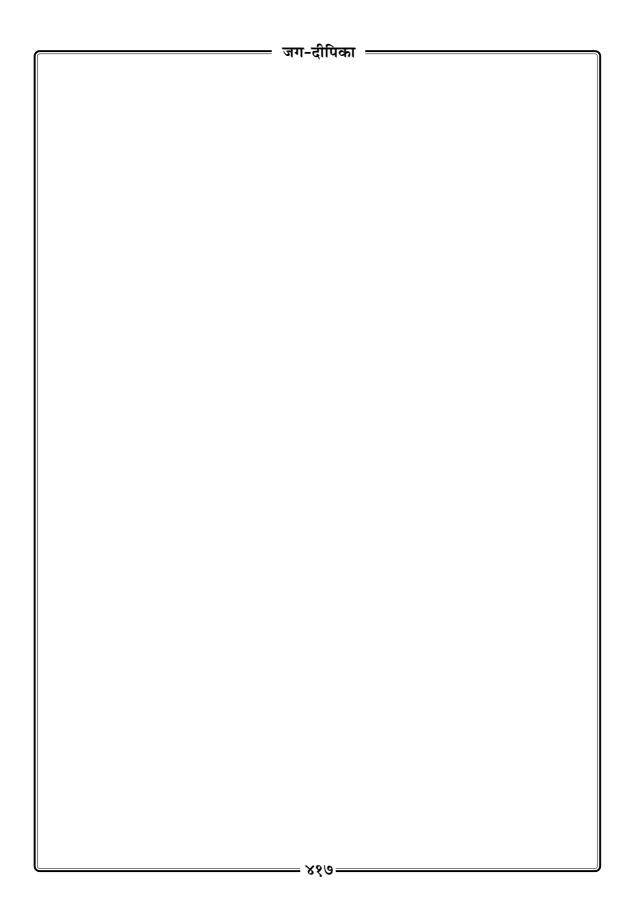
तुम बिन यज्ञ न होवे, वस्त्र न हो पाता। खान-पान का वैभव, सब तुम से आता।।ॐ।।

शुभ-गुण मंदिर सुंदर, क्षीरोनिधि जाता। रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहीं पाता।।ॐ।।

महालक्ष्मीजी की आरती, जो कोई नर गाता। उर आनंद समाता, पार उतर जाता।।ॐ।।

श्री शिव शंकरजी की आरती

शीश गंग अर्धंग पार्वती सदा विराजत कैलासी। नंदी भृंगी नृत्य करत है, गुण भक्तन शिव के वासी।। शीतल मंद सुगंध पवन जहां, बैठे हैं शिव अविनाशी । करत गान गंधर्व सप्त स्वर, राग रागिनी अतिगासी।। यक्ष-रक्ष भैरव जहां डोलत. बोलत है वन के वासी। कोयल शब्द सुनावत सुंदर, भ्रमर करत है गुंजासी।। कल्पद्रुम अरू पारिजात तरू, लाग रहे हैं लक्षासी। कामधेनु कोटिक जहां डोलत, करत दुग्ध की वर्षासी।। सूर्यकांत सम पर्वत शोभित, चंद्रकांत भव के वासी। छहों तो ऋतु नित फलत रहत है, पुष्प चढ़त है वर्षासी।। देव मुनिजन की भीड पड़त है, निगम-रहत जो नितगासी। ब्रह्मा-विष्णु जाको ध्यान रहत है, कछ शिव हमको फरमासी।। ऋद्धि-सिद्धि के दाता शंकर, सदा आनंदित सुखराशी। जिनको सुमिरण सेवा करता, टूट जाय यम की फांसी।। त्रिशूलधरजी को ध्यान निरंतर, मन लगाय कर जोगासी। दूर करो विपदा शिव तन की, जन्म-जन्म शिव पदपासी।। कैलासी काशी के वासी, अविनाशी मेरी सुध लीजो। सेवक जान सदा चरनन को. अपनो जान दरस दिजो।। आप तो प्रभुजी सदा सयाने, अवगुण मेरे सब ढिकयो। सब अपराध क्षमा कर शंकर, किंकर की विनती सुनिये।। अभयदान दीजो प्रभु मोहे, सकल सृष्टि के हितकारी। भोलेनाथ बाबा भक्त निरंजन, भव भंजन शुभ सुखकारी।। कालहरो हर कष्ट हरो-हर दु:ख हरो दारिद्र हरो। नमामि शंकर भजामि भोलेबाबा, हर हर शंकर आप शरणम्।।



श्री गणेशाय नमः श्री सरस्वत्यै नमः श्री वेदपुरुषाय नमः श्री शाकम्भर्यै नमः श्री हनुमते नमः श्री मातृपितृ चरणकमलाभ्यां नमः

भूमिका

सर्व माङ्गल्य मङ्गल्यं वरेण्यं वरदं विभुम् । नारायणं नमस्कृत्यं सर्व कर्माणि कारयेत्।।

परम पिता जगदीश्वर एवं जगत जननी माँ भगवती शाकम्भरी का वन्दन करते हुए, कुछ लेखनीबद्ध करने जा रहा हूँ। सनातन धर्म का मूल वेद हैं। वेदों में तीन काण्ड हैं। कर्मकाण्ड, उपासनाकाण्ड, ज्ञानकाण्ड, परन्तु तीनों में मुख्य स्थान कर्मकाण्ड को ही प्राप्त है। चतुष्टय पुरुषार्थ अर्थात् धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष प्राप्ति का साधन कर्मकाण्ड को माना गया है। प्रत्येक मनुष्य सुखी जीवन जीने के लिए अनेक तरह से भागदौड़, परिश्रम करता है, परन्तु जब तक किसी देवता का अनुग्रह नहीं रहता है तब तक सफलता अर्थात् परिश्रमता का साध्य होना मुश्किल है। इसलिए वेदों में और शास्त्र पुराणों में सद्भिष्ट कार्य हेतु देव अनुष्ठान का मार्ग मिलता है। यदि शास्त्र विधि के द्वारा मनुष्य देव अर्चना अनुष्ठान कर्म करता है तो निश्चत ही संकल्प कार्य सिद्ध होता है इसमें तिनक भी संशय नहीं है। भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जन को गीता में उपदेश दिया है –

यः शास्त्र विधि मुत्सृज्य वर्तते काम कारतः। न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परां गतिम्।। तस्मा छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्य व्यवस्थितौ। ज्ञात्वा शास्त्र विधानोक्तं कर्म कर्तु मिहाईसि।।

(गीता, १६/२३-२४)

विधिहीन एवं श्रद्धा से रहित किया हुआ कर्म अनुष्ठान असुरों को प्राप्त होता है। हमारे हिन्दू धर्म के शास्त्रों में यज्ञ-अनुष्ठान कैसे करना चाहिए, क्यों करना चाहिए इसके अनेक प्रसंग प्राप्त होते हैं।

मैं अपने आप को बहुत सौभाग्यशाली समझता हूँ कि मुझे मेरे पिताजी स्व. पण्डित जगदीशप्रसादजी शास्त्री से कर्मकाण्ड-ज्योतिष विद्या का ज्ञान प्राप्त हुआ। उसी ज्ञान को मैंने लेखनीबद्ध करने का प्रयास इस 'जग-दीपिका' ग्रन्थ के माध्यम से किया है। इसमें मेरा कुछ भी नहीं है, मैंने तो केवल ज्ञान के जो भी मोती इधर-उधर बिखरे हुए थे उनको एक धागे में पिरोकर माला बनाने का काम किया है। हमारे ऋषि-मुनि, विद्वानों ने मानव जाति के कल्याण हेतु अनेक ग्रन्थों की रचना करके संपूर्ण समाज को कल्याण का मार्ग

दिखाया है। उनसे ऋणमुक्ति असंभव है। मैं यहाँ उन सभी की हृदय से वंदना करता हूँ। साथ ही कर्मशैली एवं मुंबई का मार्ग मुझे पितृव्य पं. महेशजी शर्मा से मिला, उनके चरणों में प्रणाम करता हूँ। इस ग्रन्थ के लिए मुझे मेरे मित्रों परम स्नेही पं. विनोद, पं. रिव, पं. राजेन्द्र एवं पं. दौलत शर्मा का भी समय-समय पर सहयोग प्राप्त हुआ। इन सभी के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ। इस ग्रन्थ को तैयार करने का विशेष उत्साह मुझे मेरी धर्मपत्नी संजुदेवी से मिला। उनके प्रति आभार व्यक्त करना मात्र औपचारिकता होगी। फिर भी यह कहना आवश्यक है कि उनकी प्रेरणा और सहयोग के बिना इसे पूर्ण करना संभव नहीं था।

मुझे पिताजी के साथ ज्यादा रहने का अवसर नहीं मिला, इस कारण मैं अपने आपको दुर्भाग्यशाली मानता रहा हूँ। परन्तु इस ग्रन्थ के रूप में जो कुछ मैंने अर्पण करने का प्रयास किया है उसके मूल में पिताजी का आशीर्वाद व उनका दिया हुआ ज्ञान ही है। इसलिए इस ग्रन्थ को मैं अपने पूज्य पिताजी पण्डित स्व. जगदीशजी शास्त्री की पुण्य स्मृति में समर्पित करते हुए स्वयं को गौरवान्वित अनुभव करता हूँ। इस अवसर पर पिताजी की स्मृति को कोटि–कोटि प्रणाम। उनके साथ मैं दादाजी स्व. पं. सुगनचन्दजी शर्मा का भी पुण्य स्मरण करता हूँ।

इस ग्रन्थ के लिये 'जग-दीपिका' नाम का सुझाव मुझे मेरे अनुज भ्राता व्याकरणाचार्य वेदविभूषण पं. पवन दीक्षित से मिला। उन्हें मेरा स्नेह आशीष।

'जग-दीपिका' के संकलन एवं सम्पादन कार्य को हर प्रकार से शुद्ध रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है, फिर भी मुद्रण दोष की त्रुटियों का रह जाना स्वाभाविक है। इसके लिए विद्वत जन मुझे क्षमा करेंगे।

शास्त्रों में कहे गये इन वचनों के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूँ -

पूर्णमदः पूर्ण मिदं पूर्णाद् पूर्ण मुदच्यते। पूर्णस्य पूर्ण मादाय पूर्ण मेवावशिष्यते।। गच्छतः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः। हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सज्जनाः।।

मु.पो. मोहनवाड़ी, वाया - नवलगढ़, जिला - झुन्झुनू (राजस्थान), मालाड (पूर्व), मुंबई-४०००९७ मो.: ०९८२०३९९६२८, ०९५९४३९५५५२ - सम्पादक एवं संकलनकर्ता पण्डित राजेश जगदीश शास्त्री (शारद नवरात्र, प्रतिपदि, सम्वत् २०७३)

(दिनांक्च: १-१०-२०१६)







स्व. श्री जगदीशप्रसादजी शास्त्री

'पितृ वंदना'

यत्पाद द्वय सेवानान्मनुजनो मोहार्णवं लङ्घयन ख्यातिं याति परामिला तल इह प्राज्यं श्रियं धारयन्। भव्यं भव्य गुणान्वितं बुधवरं सर्वार्थदम् मंगलम् श्रीमन्तं (जगदीश जी) पितरञ्च सन्त शरणं नित्यं नमस्कुर्महे।।

> पिता स्वर्गः पिता धर्मः पिता हि परमं तपः। पितरि प्रीति मापन्ने प्रीयन्ते सर्व देवताः।।

कुल का गौरव बढ़ानेवाला प्रयास

परम् सौभाग्य का विषय है कि इस "जग-दीपिका" नामक ग्रन्थ के माध्यम से मुझे मेरे पूर्वजों व अग्रजों की स्तुति करने का अवसर मिला। यह अपने आप में पूर्वजों की प्रसन्नता का सूचक है। यह अवसर मुझे मेरे बड़े भ्राता व इस ग्रन्थ के संपादक-संकलनकर्ता पं. श्रीमान् राजेशजी ने प्रदान किया। इसके लिए मैं सदैव उनका ऋणी रहूँगा।

मेरे दादाजी स्व. श्री सुगनचन्दजी दीक्षित के आठ पुत्रों में सबसे बड़े बेटे मेरे ताऊजी स्व. श्री जगदीशप्रसादजी शास्त्री थे। जिनकी पिवत्र प्रेरणा से तथा जिनकी पुण्य स्मृति में यह ग्रन्थ प्रकाशित किया जा रहा है। आपने राजकीय संस्कृत महाविद्यालय चिराना में परमपूज्य गुरुदेव मथुराप्रसादजी के सान्निध्य में शिक्षा ग्रहण की थी। इसके साथ ही आपको ज्योतिष में भी महारत हासिल थी। मोहनवाड़ी गाँव से लेकर कोलकता, मुम्बई, सूरत, वापी आदि महानगरों तक भी आपके द्वारा की गयीं ज्योतिष पर आधारित चमत्कारिक भविष्यवाणियाँ आज भी सुनने को मिलती हैं तथा बहुत से लोग आपसे प्रेरित हैं।

सनातन धर्म में जिस प्रकार यह कथा प्रचलित है कि एक दिव्य वटवृक्ष गया, काशी व हरिद्वार तीनों तीथों में विद्यमान है अर्थात् उसी एक वृक्ष की जड़ तीनों जगह फैली हुई है। उसी प्रकार आपने विद्या प्राप्ति के पश्चात् गाँव से लेकर कोलकता, मुम्बई, वापी आदि शहरों में पौरोहित्य रूपी वटवृक्ष लगाया था। आज भी आपके द्वारा लगाये गये इस वृक्ष के फल हमें प्राप्त हो रहे हैं।

कोलकता महानगर में इस वृक्ष को आपके छोटे भाई पं. श्री श्रवणकुमार जी तथा आपके बहनोई स्व. पं. श्री विश्वनाथजी ने संरक्षण प्रदान किया। इसी महावृक्ष की मुम्बई महानगर की शाखा को तथा वापी जैसे महानगरों में न केवल संरक्षण दिया अपितु इसे और भी अधिक पुष्पित एवं पल्लिवित किया आपके छोटे भाई पं. श्री महेशजी व आपके ज्येष्ठ पुत्र पं. श्री राजेशजी ने। यह संपूर्ण परिवार के लिए गौरव का विषय है।

मुझे इस बात का गर्व है कि मेरा जन्म आपके परिवार में हुआ। आपके ज्येष्ठ पुत्र पं. श्री राजेश शास्त्री ने आपके द्वारा दी गई शिक्षा व गुणों को अपने जीवन में उतारा है। तथा आपकी ही प्रेरणा से उन्होंने इस ग्रन्थ का संपादन-संकलन किया है। भाईसाहब ने आपके द्वारा पढ़ाये-सिखाये गये इस पौरोहित्य ज्ञान को जन-जन तक पहुँचाने का जो यह प्रयास किया वह बहुत ही सराहनीय है। ईश्वर से प्रार्थना है कि वह हमें शान्ति एवं बुद्धि प्रदान करे ताकि हम सभी आपके द्वारा बताये सन्मार्ग पर चल सकें व इसी प्रकार आपकी प्रेरणा से सत्कर्म करते रहें। मैं बहुत सौभाग्यशाली हूँ कि मेरे जन्म के समय घूँटी की परम्परा आपके द्वारा निभाई गई। मैं इतना कुछ लिख सका, यह आपकी उसी कृपा का फल है।

नीतिशतक में कहा भी गया है -

परिवर्तिनि संसारे, मृतः को वा न जायते। स जातो येन जातेन, याति वंशः समुन्नतिम्।।

अर्थात् इस परिवर्तनशील संसार में सभी जन्म लेनेवाले मृत्यु को प्राप्त होते हैं। लेकिन जन्म लेना उन्हीं का सार्थक है जिनके कर्मीं से वंश, परिवार उन्नित को प्राप्त होता है।

> (विदुषामनुचर:) - पं. पवन दीक्षित

श्री गणेशाय नमः श्री सरस्वत्यै नमः श्री वेदपुरुषाय नमः श्री शाकम्भर्यै नमः श्री हनुमते नमः श्री मातृपितृ चरणकमलाभ्यां नमः

भूमिका

सर्व माङ्गल्य मङ्गल्यं वरेण्यं वरदं विभुम् । नारायणं नमस्कृत्यं सर्व कर्माणि कारयेत्।।

परम पिता जगदीश्वर एवं जगत जननी माँ भगवती शाकम्भरी का वन्दन करते हुए, कुछ लेखनीबद्ध करने जा रहा हूँ। सनातन धर्म का मूल वेद हैं। वेदों में तीन काण्ड हैं। कर्मकाण्ड, उपासनाकाण्ड, ज्ञानकाण्ड, परन्तु तीनों में मुख्य स्थान कर्मकाण्ड को ही प्राप्त है। चतुष्टय पुरुषार्थ अर्थात् धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष प्राप्ति का साधन कर्मकाण्ड को माना गया है। प्रत्येक मनुष्य सुखी जीवन जीने के लिए अनेक तरह से भागदौड़, परिश्रम करता है, परन्तु जब तक किसी देवता का अनुग्रह नहीं रहता है तब तक सफलता अर्थात् परिश्रमता का साध्य होना मुश्किल है। इसलिए वेदों में और शास्त्र पुराणों में सद्भिष्ट कार्य हेतु देव अनुष्ठान का मार्ग मिलता है। यदि शास्त्र विधि के द्वारा मनुष्य देव अर्चना अनुष्ठान कर्म करता है तो निश्चित ही संकल्प कार्य सिद्ध होता है इसमें तिनक भी संशय नहीं है। भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को गीता में उपदेश दिया है –

यः शास्त्र विधि मुत्सृज्य वर्तते काम कारतः। न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परां गतिम्।। तस्मा छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्य व्यवस्थितौ। ज्ञात्वा शास्त्र विधानोक्तं कर्म कर्तु मिहाईसि।।

(गीता, १६/२३-२४)

विधिहीन एवं श्रद्धा से रहित किया हुआ कर्म अनुष्ठान असुरों को प्राप्त होता है। हमारे हिन्दू धर्म के शास्त्रों में यज्ञ-अनुष्ठान कैसे करना चाहिए, क्यों करना चाहिए इसके अनेक प्रसंग प्राप्त होते हैं।

मैं अपने आप को बहुत सौभाग्यशाली समझता हूँ कि मुझे मेरे पिताजी स्व. पण्डित जगदीशप्रसादजी शास्त्री से कर्मकाण्ड-ज्योतिष विद्या का ज्ञान प्राप्त हुआ। उसी ज्ञान को मैंने लेखनीबद्ध करने का प्रयास इस 'जग-दीपिका' ग्रन्थ के माध्यम से किया है। इसमें मेरा कुछ भी नहीं है, मैंने तो केवल ज्ञान के जो भी मोती इधर-उधर बिखरे हुए थे उनको

एक धागे में पिरोकर माला बनाने का काम किया है। हमारे ऋषि-मुनि, विद्वानों ने मानव जाति के कल्याण हेतु अनेक ग्रन्थों की रचना करके संपूर्ण समाज को कल्याण का मार्ग दिखाया है। उनसे ऋणमुक्ति असंभव है। मैं यहाँ उन सभी की हृदय से वंदना करता हूँ। इस ग्रन्थ को तैयार करने में मुझे अनेक मित्रों और अनुजों का सहयोग मिला, उन सभी के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ। इस ग्रन्थ को तैयार करने का विशेष उत्साह मुझे मेरी धर्मपत्नी संजुदेवी से मिला। उनके प्रति आभार व्यक्त करना मात्र औपचारिकता होगी। फिर भी यह कहना आवश्यक समझता हूँ कि उनकी प्रेरणा और सहयोग के बिना इसे पूर्ण करना संभव नहीं था।

मेरे द्वारा संपादित-संकलित इस ग्रन्थ को वाणिज्य (व्यापार) कर्म में दक्ष श्री मुरारीजी शर्मा एवं उनकी धर्मपत्नी सुधादेवी शर्मा ने अपने पूज्य पिताजी स्व. जयनारायणजी शास्त्री की पुण्य स्मृति में प्रकाशित करने की इच्छा व्यक्त की। मैं उनकी इस मंगल प्रेरणा का सम्मान करता हूँ तथा भगवान आशुतोष एवं माँ जगदम्बा से प्रार्थना करता हूँ कि समस्त परिवार जनों का भविष्य उज्जवल हो एवं आयुष्य-आरोग्यता की प्राप्ति हो। मैं उनकी उत्तरोतर वृद्धि की कामना करता हूँ।

'जग-दीपिका' के संकलन एवं सम्पादन कार्य को हर प्रकार से शुद्ध रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है, फिर भी मुद्रण दोष की त्रुटियों का रह जाना स्वाभाविक है। इसके लिए विद्वत जन मुझे क्षमा करेंगे। शास्त्रों में कहे गये इन वचनों के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूँ –

पूर्णमदः पूर्ण मिदं पूर्णाद् पूर्ण मुदच्यते। पूर्णस्य पूर्ण मादाय पूर्ण मेवावशिष्यते।।

गच्छतः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः। हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सज्जनाः।।

मु.पो. मोहनवाड़ी, वाया - नवलगढ़, जिला - झुन्झुनू (राजस्थान), मालाड (पूर्व), मुंबई-४०००९७ मो.: ०९८२०३९९६२८, ०९५९४३९५५५२ - संकलनकर्ता एवं सम्पादक पण्डित राजेश जगदीश शास्त्री (शारद नवरात्र, प्रतिपदि, सम्वत् २०७३) (दिनांक्ष: १-१०-२०१६)



पूज्य पिताजी स्व. पण्डित जयनारायण शास्त्री

प्रकाशक की ओर से दो शब्द

परम पिता जगदीश्वर की अनुकम्पा व अपने पूज्य माताजी-पिताजी के आशीर्वाद से ही हमें जीवन में कुछ सद्कर्म करने का अवसर मिला है। प्रत्येक प्राणी का कर्तव्य है कि सनातन धर्म की रक्षा करे, सत्कर्म करे क्योंकि धर्म कार्य अनुष्ठान से ही प्राणी संस्कारवान बनता है। संस्कार से हीन मानव पशु के समान होता है।

भौतिक सुख-साधन हेतु मनुष्य निरन्तर प्रयास करता है परन्तु देवकृपा व माता-पिता के आशीर्वाद और अनुग्रह के बिना इस संसार में अभीष्ट फल की प्राप्ति करना असम्भव है। आज हमें जीवन में जो भी प्राप्त हुआ है, वह सब कुछ माता-पिता का दिया हुआ प्रसाद है।

पण्डित राजेश शास्त्री (दीक्षित) के सहयोग से हम अपने पूज्य पिता स्व. पण्डित जयनारायण शास्त्री एवं पूज्यनीय माता स्व. जानकीदेवी शर्मा की पुण्य स्मृति में 'जग-दीपिका' (देवार्चनानुष्ठान प्रयोग:) ग्रन्थ का प्रकाशन कर रहे हैं। शास्त्रों में कहा गया है-

पिता स्वर्गः पिता धर्मः पिता हि परमं तपः। पितरि प्रीति मापन्ने प्रीयन्ते सर्व देवताः।।

१०/७४, जुहू रजनीगंधा, गुलमोहर क्रास रोड-११, जेवीपीडी स्कीम, विले पार्ले (प.), मुंबई-४०००४९ - मुरारी शर्मा सुधादेवी शर्मा ग्राम मनाना, वाया बुहाना, जिला झुन्झुनूं (राजस्थान)

श्री मुरारी शर्मा एवं श्रीमती सुधादेवी शर्मा

श्री मुरारी शर्मा मूल रूप से राजस्थान के निवासी हैं। आपका जन्म शेखावाटी अंचल स्थित झुन्झुनू जिले के ग्राम मनाना में स्व. पं. जयनारायण शास्त्री एवं स्व. श्रीमती जानकीदेवी शर्मा के यहाँ किनष्ठ पुत्र के रूप में हुआ। युवावस्था में आप मुम्बई आ गये और यहीं अपने भाग्य का निर्माण करने के लिए संघर्षरत हो गये। श्री मुरारी शर्मा पिछले ३५ साल से मुम्बई में प्रवास कर रहे हैं और यार्न व्यवसाय में एक सफल व्यापारी के रूप में प्रतिष्ठित हैं। परिवार से अच्छे संस्कार प्राप्त होने की वजह से आप समाज सेवा के क्षेत्र में भी तन-मन-धन से यथायोग्य कार्य कर रहे हैं और प्रतिष्ठा प्राप्त कर रहे हैं।

श्री मुरारी शर्मा की धर्मपत्नी श्रीमती सुधादेवी एक धर्मनिष्ठ और विदुषी महिला हैं। धर्मग्रन्थों तथा साहित्यिक पुस्तकों को पढ़ने में आपकी विशेष रुचि है। परिवार के लिए पूर्ण रूप से समर्पित श्रीमती सुधादेवी भी अपने पित के सेवाभावी कार्यों में पूर्ण रूप से सहयोग करती हैं।

श्री मुरारी शर्मा और श्रीमती सुधादेवी शर्मा को संतान रत्न के रूप में एक पुत्र और एक पुत्री है। पुत्र गौरव शर्मा शिक्षा-दीक्षा पूरी होने के बाद अब अपने पिता के कारोबार में सहयोग करते हैं। उनका विवाह सिलवासा निवासी श्री महेश शर्मा की पुत्री पूजा से हुआ है। बेटा गौरव और पुत्रवधू पूजा दोनों अपने माता-पिता का बड़ा ही आदर-सम्मान करते हैं। पुत्री गरिमा का विवाह मुम्बई निवासी श्री अतुल शर्मा के साथ हुआ है। अतुल शर्मा पेशे से सी.ए. हैं।

श्री मुरारी शर्मा और श्रीमती सुधादेवी शर्मा का सुखी एवं सम्पन्न परिवार मनुष्य एवं धर्म की सेवा में रत रहकर मुम्बई में राजस्थान की माटी की महक को बिखेर रहा है।

0

स्वस्त्यस्तु विश्वस्य खलः प्रसीदतां ध्यायन्तु भूतानि शिवं मिथो धिया। मनश्च भद्रं भजतादधोक्षजे आवेश्यतां नो मितरप्यहैतुकी।। (श्री भागवत ५/१८/९)

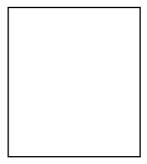
(नाथ! विश्व का कल्याण हो, दुष्टों की बुद्धि शुद्ध हो, सब प्राणियों में परस्पर सद्भावना हो, सभी एक दूसरे का हित चिन्तन करें। हमारा मन शुभ मार्ग में प्रवृत्त हो और हम सबकी बुद्धि निष्काम भाव से भगवान श्री हिर में प्रवेश करे।)

स्वस्त्यस्तु विश्वस्य खलः प्रसीदतां ध्यायन्तु भूतानि शिवं मिथो धिया । मनश्च भद्रं भजता दधोक्षजे आवेश्यतां ने मितरप्य हैतुकी

(श्री मद्भागवत ५/१८/९)

"नाथ" विश्व का कल्याण हो, दुष्टों की बुद्धि शुद्ध हो, सब प्राणियों में परस्पर सद्भावना हो। सभी एक दूसरे का हित चिन्तन करे, हमारा मन शुभ मार्ग में प्रवृत्त हो और हम सब की बुद्धि निष्काम भाव से भगवान श्री हिर में प्रवेश करे।

शुभमस्तु
कल्याणमस्तु
पूर्णमदः पूर्ण मिदं पूर्णाद् पूर्ण मुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्ण मादाय पूर्ण मेवावशिष्यते।।
गच्छतः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः।
हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधित सज्जनाः।।
ॐ तत्सत्



''पितृ वंदना''

यत्पाद द्वय सेवानान्मनुजनो मोहार्णवं लङ्घयन ख्यातिं याति परामिला तल इह प्राज्य श्रियं धारयन्। भव्यं भव्य गुणान्वितं बुधवरं सर्वार्थदम् मंगलम् श्री मन्तं (जगदीश जी) पितरञ्च सन्त शरणं नित्यं नमस्कुर्महे "

पृष्ठ	 अशुद्धवाक्यं	 शुद्धवाक्यं	पृष्ठ	अशुद्धवाक्यं	शुद्धवाक्यं
११	भक्तवासं	भक्तावासं	२०७	दक्षि हस्तोपरि	दक्षिणहस्तोपरि
११	जपदे	जपेद्	२११	२९ कर्पूर	२८ कर्पूर
३६	पषट्	वषट्	२१७	पद्मनीमीं	पद्मिनीमीं
४१	स्वयंकर	स्वयं करे	२३१	रुपेण	रूपेणा
५३	भवत्	भवत	२३४	सर्वाङ्ग	सर्वांङ्गे
५३	भवत्	भवत	२३६	शशधर	शशिधर
५५	यनेभ्य:	जनेभ्य:	२४४	पुष्टटानाम्पतये	पुष्ट्टानाम्पतये
५७	यच्छान	यच्छान:	२४९	न्न्यम्ममि	न्न्यमस्मन्नि
७६	विश्वेवेदा	विश्ववेदाः	२५१	सिचंतं	सिञ्चंतं
८६	संस्थाय	संस्थाप्य	२५३	जपेन	जपेत्
१००	बुवन्तु	ब्रुवन्तु	२६०	समिधीमहिउशन्तु	समिधीमहिउशन्नु
(सभी जगह बुवन्तु की जगह ब्रुवन्तु पढ़ें)			२६०	नृदस्वाथाभय	नुदस्वाथाभयं
१०१	बुवन्तु	ब्रुवन्तु 	२६१	कलशम्य	कलशस्य
(सभी जगह बुवन्तु की जगह ब्रुवन्तु पढ़ें)			२६२	भृङ्गभृद्	खङ्गभृद्
१०१	श्री	श्री: ्	२६३	नुदस्वाधावयं	नुदस्वाथाभयं
१०५	वसो	वसो:	२६३	यही	यदी
१०६	वषटकार:	वषट्कार:	२६३	प्रजा	प्रजात
१०८	મુમૂર્વ:	भुर्भूव:	२६४	सर्पेपि	सर्पेति
१११	बध्नानि	बध्नामि	२६४	ञ्जयन्ती	जयन्ती
११४	ॐ पत्नी	ॐ तं पत्नी	२६४	नमस्तेऽस्तु	नमस्तेऽअस्तु
१९५	सर्वांग	सर्वांगे (सर्वांङ्गे)	४०१	बनकुण्डो	नवकुण्डों
२०१	नमम	न मम			